# Poor Presentation.

*Presented with honour.*

*To*

## SRIMATI GAUR MAHA SABHA
## and
## Sri Sanadhya Maha Mandal.

*With the best Compliments of Srotriya*
*Pandit Chholey Lall Sharma*
*Phulera Jaipur State.*

## सादर अर्पण

तुच्छ भेंट

**श्रीमती गौड़ महासभा और श्री सनाढ्य**
**महामण्डल की सेवा में**

# जातिगंगा

के

सौजन्य प्रेम, आदर बुद्धि, गुणग्राहकता तथा भ्रातृस्नेहादि
गुणों के कृतज्ञता स्वरूप में उपकार बुद्धि से
रचकर ब्राह्मण जात्युद्धार स्वरूप में भेंट

निवेदक—

**श्रोत्रिय छोटेलाल शर्म्मा गौड़**
फुलेरा ज़िला जयपुर

# तुच्छ भैंट
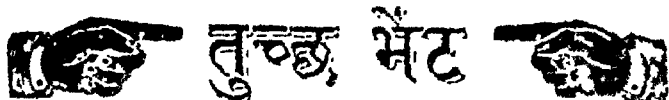
परम पूज्य ! परमतंत्र !! परम मित्र !!! श्री सनाढ्य महा मण्डल के सभ्य सभासदो ! सन् १९१४ के मथुरावाले महोत्सव पर शुभ कामना युक्त आप के मण्डल का प्रस्ताव जो श्रीमती गौड़ महासभा के आगरेवाले उत्सव समय विचारार्थ भेजा गया था जिस का मर्मांश यह था कि "जब गौड़ व सनाढ्यों के खान पान व बेटी व्यवहार प्रायः परस्पर एक हैं तब दोनों ही ब्राह्मण जातियों की संस्थायें अलग अलग क्यों हों ? अतएव ऐसी दशा में श्रीमती गौड़ महासभा व श्री सनाढ्य महामण्डल दोनों ही एक ब्राह्मण मण्डल व ब्राह्मण सभा अथवा अन्य किसी नाम को धर कर देशहित, देशसेवा, कुरीति निवारण, विद्या विनोद आदि आदि सार्वदेशिक कार्य्यों में एक होकर समूह शक्ति से क्यों न कार्य्य करें ? इस प्रस्ताव को कार्य्य में परिणित करने के शुभ उद्देश्य से श्रीमती गौड़ महासभा ने एक सेलेक्ट कमेटी स्थापित किया थी आप के **दासानुदास** (मुझ) को भी उस कमेटी का सभासद किया था, परन्तु शोक ! के साथ कहना पड़ता है कि उस कमेटी के सुयोग्य मंत्री पं० गोबिन्द प्रसाद जी बैरिस्टर ने साल भर के ३६५ दिन में क्या किया ? कुछ ज्ञात नहीं हुआ, अस्तु !

आप का चरण सेवक मैं, ब्राह्मण मात्र को अपना भाई मानता हूं, अतः केवल गौड़, सनाढ्य, पलीवाल और तगा ब्राह्मणों पर ही अपनी तुच्छ सम्मति प्रकट न करके ब्राह्मण मात्र के निर्णय का यह ग्रन्थ रचकर सेवा में सादर भेंट करता हूं, आशा है कि सुदामा जी के तंदुलवत इस तुच्छ भेंट को स्वीकार करके मुझे अनुग्रहीत करेंगे । ब्राह्मण जाति सेवक—

**श्रोत्रिय छोटेलाल शर्म्मा गौड़ फुलेरा**

# विनीत निवेदन
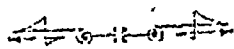
प्रियवर गौड़ सभ्य जनो ! विचार शील बन्धुवर्गो !! श्रीमती गौड़ महासभा के सभ्य सभासदो !!! आप को ज्ञात होगा कि ईस्वी सन् १९१४ के आगरे वाले जलसे पर आप ने मुझ से तुच्छबुद्धि दास को श्रीमती गौड़ महासभा की Executive एगज़ीक्यूटिव कमेटी व Select सेलेक्ट कमेटी का सभासद बनाकर सनाढ्य, पल्लीवाल और तगा ब्राह्मण निर्णय विषयक जिस गहन व जटिल प्रश्न को सेलेक्ट कमेटी के सुपुर्द किया था तथा मुझे जाति अन्वेषण कर्ता जानकर जिस महान कार्य्य का भार मुझ पर डाला था, यद्यपि मैं अपने को उस के योग्य तो नहीं समझता था तथापि जाति गंगा की आज्ञा को शिरोधार्य्य कर के जो कुछ अल्पसेवा मुझ से बन पड़ी है उस का फलरूप यह छोटासा ग्रन्थ सेवा में भेंट है। आशा है कि श्रीमती गौड़ महासभा सार को ग्रहण कर असार को परित्याग करेगी तो मैं अपने को कृतकृत्य समझूंगा।

नम्र सेवक—

श्रोत्रिय छोटेलाल शर्म्मा गौड़

मेम्बर सेलेक्ट और एगज़ीक्यूटिव कमेटी

श्रीमती गौड़ महासभा कुरुक्षेत्र।

# विशेष सूचना

सम्पूर्ण हिन्दू जातियों को सूचना दी जाती है कि यद्यपि हमने जाति अन्वेषणार्थ अनेकों शहरों में भ्रमण किया विज्ञापन बांटे, व्याख्यान दिये, शास्त्रार्थ किये कई अखबारों द्वारा सर्व साधारण को सूचना दी और इस प्रकार से यह चाहा था कि हमारे ग्रन्थों द्वारा किसी जाति व व्यक्ति विशेष का जी न दुखे और सर्व साधारण से अपनी २ जाति विषय में प्रमाण भेजने की याचना की गई थी परन्तु सशोक कहना पड़ता है कि दस पांच जातियों के अतिरिक्त किसी ने भी अपनी जाति विषयक कोई प्रमाण न भेजे अतएव आशा है कि तारीख १ पहली जून सन् १९१६ तक सब लोग अपनी २ जाति विषयक प्रमाण मण्डल कार्य्यालय को भेज देंगे अन्यथा जो कुछ लिखा जायगा उस के हम जुम्मेवार नहीं होंगे।

विनीत निवेदक

**महामंत्री**

हिन्दू धर्म वर्ण व्यवस्था मण्डल

डाकखाना फुलेरा

ज़िला जयपुर

# अर्द्ध मूल्य

विदित हो कि जाति अन्वेषण प्रथम भाग जिस ने हिन्दी-साहित्य में बड़ा आदर पाया है और जो हाथों हाथ बिका जारहा है जिस के लिये भारत के प्रसिद्ध प्रसिद्ध समाचार पत्रों ने बड़ी बड़ी उत्तम उत्तम समालोचनायें की हैं तथा हजारों ही प्रशंसा पत्र व काशी तक के विद्वानों के प्रतिष्ठा पत्र प्राप्त हुये हैं इस सर्वोपयोगी ग्रन्थ की थोड़ी सी प्रतियें रह गयी हैं अतः सर्व साधारण के लाभ के लिये इस ग्रन्थ का मूल्य २) से १) निम्न लिखित प्रकार से घटा दिया है।

(१) नागरी प्रचारिणी पुस्तकालय, सरस्वती भवन, व पबलिक लाइब्रेरियों को जाति अन्वेषण प्रथम भाग एक रुपये में मिलेगा।

(२) स्कूल व पाठशालाओं के विद्यार्थी और उपदेशक लोगों को जाति अन्वेषण प्रथम भाग एक रुपये में मिलेगा।

(३) जाति सभाओं के मंत्रियों व अन्य पबलिक संस्थाओं के मंत्रियों को जाति अन्वेषण प्रथम भाग २) की जगह १॥) में मिलेगा।

(४) जो सज्जन इस ब्राह्मण निर्णय ग्रन्थ के साथ साथ जाति अन्वेषण प्रथम भाग को भी मंगवावेंगे उन्हें ये दोनों ग्रन्थ एक साथ केवल ३॥) मात्र में देंगे। डाक व्यय अलग लगेगा—

(५) जो सज्जन इस ब्राह्मण निर्णय ग्रन्थ की दो प्रतियें व जाति अन्वेषण प्रथमभाग की दो प्रतियें कुल चार प्रतियें एक साथ खरीदेंगे उन्हें ये चारों प्रतियें केवल ७) में देंगे।

(६) सर्व साधारण से जाति अन्वेषण प्रथम भाग का मूल्य पूर्ववत २) ही लिये जावेंगे।

निवेदक

**महामंत्री हिं० ध० व० व्यवस्था मंडल**

**फुलेरा ज़ि० जयपुर**

# * ग्रन्थ मिलने के पते *

सर्व साधारण को सूचना दी जाती है कि हमारे ज्योतिष विषयक ग्रन्थ हमारे यहां तथा हमारे निम्न लिखित एजेन्टों के यहां मिलेंगे।

पं० ओमदत्त शर्म्मा मैनेजर श्रौत्रिय पुस्तकालय
डाक० फुलेरा ज़ि० जयपुर

२ पं० क्षेत्रपाल जी शर्म्मा मालिक सुख संचारक
कम्पनी मथुरा।

३ पं० शिवनारायण जी झा जाट लाइट इन्फैन्ट्री नं० ६ झांसी

४ बा० द्वाराराम जी चूड़ामणि महतो मु० नवादविंड
डा० बेगमपुर जि० पटना।

५ बा० दीनेश्वर जी बुकसेलर व समाचारपत्र एजेन्ट
कसगंज अतरौर।

६ पं० जयदेव प्रसाद जी व पंडित दानीराम जी
बलभद्र संस्कृत पाठशाला बल्देव जि० मथुरा।

७ बा० महादेव लाल जी महतो प्रधान कोइरी
हितकारिणी महती सभा दानापुर (बिहार)

८ बा० लक्ष्मीनारायण जी उस्ता मैनेजर श्री शि-
ल्पवत् ज्ञात्युन्नति सभा अजमेरी दरवाज़ा जयपुर।

९ क्षेत्रपाल शर्म्म गैराड को कासगंज यू० पी०

## * आवश्यकता *

मण्डल के ग्रन्थ विक्रयार्थ सर्वत्र एजेन्टों की आवश्यकता है एजेन्सी के नियम व कमीशन के सुभीते आदि विषय में जानना हो तो निम्न लिखित पते से पत्र व्यवहार करें :-

महामंत्री, हिन्दू ध० व० व्य० मंडल फुलेरा ज़ि० जयपुर

* हरिः ओ३म् शिवाय नमः *

# भूमिका
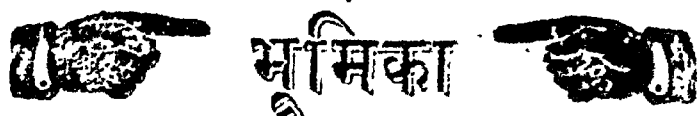
पाठक वृन्द! आप जानते हैं कि आजकल प्रत्येक नीच से नीच व ऊंच से ऊंच हिन्दू जातियें अपनी अपनी जाति की कान्फरेन्स व महासभायें बनाकर शर्म्मा, वर्म्मा और गुप्त बनने के क्षेत्र में विद्यमान हैं परन्तु वास्तव में उन की आदि स्थिति क्या है? वे आदि से अपने किन पूर्वजों की सन्तान हैं? शास्त्रधारानुसार उन्हें क्या २ करने का अधिकार है तथा किन २ कर्म्मों के करने के वे अनधिकारी हैं? जिस पथ को उन्होंने ग्रहण किया है वह पथ उन्हें उन्नति क्षेत्र के उच्च शिखर पर पहुंचाने को शक्त है या नहीं? उन के पुरुषाओं की कार्य्यावलियें क्या २ हैं? उन के गोत्र, प्रवर, शाखा शिखा व सूत्रादि का पता कहीं पर है या नहीं? आदि आदि स्थितियों को जानना व तद्विषयक विवर्णों का पाठ करना एक मात्र हिन्दू जाति के लिये एक महान कठिन दृश्य था क्योंकि जिस जाति को अपने भूत का सम्यक ज्ञान नहीं है उस जाति के लिये आनेवाले काल में उन्नति का पथ बड़ा ही संकटाकीर्ण होगा ऐसी दशा में प्रत्येक जाति के लिये उस का शृंखलाबद्ध इतिहास होने की आवश्यक्ता थी।

वर्तमान काल में प्रायः लोगों के विचार हैं कि सब से पूर्व एक ही ब्राह्मण जाति थी, किन्हीं २ का कहना है कि भारतवर्ष में सब दस ही प्रकार के ब्राह्मण हैं, किन्हीं २ का कहना है कि सब ८४ प्रकार

के ब्राह्मण हैं, किन्हीं २ ऐतिहासिक विद्वानों ने सब ६१ प्रकार के ब्राह्मण लिखे हैं, बड़े २ सिविलियन महाशक्ति शाली अंग्रेज अफसरों ने भी अपने ग्रन्थों में ७० प्रकार के ही ब्राह्मणों से अधिक नहीं लिखे हैं पर हमने इस ब्राह्मण निर्णय ग्रन्थ में २२४ प्रकार के ब्राह्मणों का वर्णन किया है और यथाशक्ति उन का विवरण सूक्ष्म क्रम से विस्तृत रूप में दिया है जिस में सम्पूर्ण भारतवर्ष के ब्राह्मण आगये हैं यदि हमारा इतना महान उद्योग करने पर भी कोई ब्राह्मण जाति इस ग्रन्थ में छुटगयी हो अथवा अब्राह्मण जाति लिखी गयी जान पड़े तो उस की सूचना आने पर पुनरावृत्ति में हम उचित संशोधन करदेंगे ।

यद्यपि हिन्दू जाति का क्रमबद्ध इतिहास तो कहीं नहीं मिलता है किन्तु कई ऐतिहासिक सामग्रियें ऐसी मिली हैं जिन के आधार पर हम अपनी पूर्वावस्था का बहुत कुछ ज्ञान प्राप्त कर सक्ते हैं हां यवन काल के प्रारम्भ से तो प्रत्येक प्रकार का विवर्ण मिलता है परन्तु बौद्धकाल से पूर्व की घटनाओं का वृत्तान्त केवल रामायण व महाभारत के अतिरिक्त और कुछ नहीं मिलता है । हमनें इस ग्रन्थ में ब्राह्मण जाति के विवर्ण को पूरा करने के लिये वेद वेदांग तथा पुराणादि का आश्रय लेने के अतिरिक्त हिन्दी, उर्दू, मरहाटी तथा अंगरेजी इतिहासों के प्रमाण शिला लेखों का संग्रह, High Court and Subordinate Courts हाईकोर्ट व सबार्डिनेट कोर्टस के फैसले, काशी व जगद्गुरु शंकराचार्य्यादि महात्माओं की व्यवस्थायें तथा मनुष्यगणना रिपोर्ट व सरकारी गजेटियर्स के हवालों को संग्रह करके बड़े २ नामांकित पण्डित व विद्वानों की सम्मत्याधार पर यह ग्रन्थ हमने निर्माण किया है इस के अतिरिक्त जहां जहां कोई विवादास्पद विषय आपड़े थे उस को हमनें मंडल के विद्वानों जिन की नामावलि हमने इस ग्रन्थ के अन्त में दियी है उन में से कतिपय योग्य

विद्वानों से भी परामर्श करके उन सब विषयों को हमने लिखा है अतएव यह सब कुछ करके ही हमने जाति गंगा की सेवा किया है। जो सब ब्राह्मण जाति के लिये गौरव की सामग्री है और उस को पढ़ कर ब्राह्मण जाति के नवयुवकों में उत्साह और आत्म सन्मान के भाव सञ्चारित हों यह ही हमारी अभिलाषा है।

यह हम जानते हैं कि इतिहास लिखना कोई खेल नहीं है इस के लिये बड़े २ मनन व अनुशीलन की आवश्यक्ता है तथा लेखक में प्रगाढ़-पाण्डित्यता व बहुश्रुतता होनी चाहिये परन्तु शोक है कि इन सब ही बातों का हम में अभाव है तथापि यह ग्रन्थ निर्माण करके जो जाति गंगा की सेवा हमने किया है उस का आदर करना एक मात्र ब्रह्ममण्डल की कृपा पर निर्भर है क्योंकि जाति गंगा को सब कुछ सामर्थ्य है और इस ही कारण जातिगंगा का महात्म्य विद्वानों ने ऐसा वर्णन किया है :—

**ज्ञातिर्गंगा प्रयागं भृगुरपिच गया पुष्करं सर्व तीर्थम्।**
**ज्ञातिर्माता पिताचे प्रहरति दुरितं पावकः पाप हारी॥१॥**
**ज्ञातिचिन्ता मणिर्वै सुरतरु सदृशी काम धेनुर्नराणाम्**
**नास्तिज्ञातिपरंकिं त्रिभुवनभवने ज्ञाति गंगा प्रसिद्धा**

भावार्थ :—जाति गंगा की सेवा के अर्थ यदि कोई उद्यत होता है तो मानो पुष्कर, गया और प्रयागादि की तीर्थ यात्रा कर लिया, जाति गंगा की कृपा से ही बड़े २ पाप दूर होजाते हैं क्योंकि जाति गंगा माता व पिता है, अपनी जाति हितचिन्ता ही मनुष्य के लिये कामधेनु व कल्पवृक्ष है और जाति गंगा की सेवा से बढ़ कर मनुष्य के लिये कोई कर्तव्य नहीं है।

अतएव मुझ ब्राह्मण अबोध बालक ने "छोटे मुंह बड़ी बात" के अनुसार यह ग्रन्थ सेवा में इस आशा से भेट किया है कि यह देश के लिये उपकारी सिद्ध हो।

यद्यपि जाति अन्वेषण प्रथम भाग में हमने जाति अन्वेषण द्वितीय भाग छाप कर ग्राहकों की सेवा में भेट करने की सूचना दियी थी पर शोक के साथ लिखने में आता है कि वह प्रतिज्ञा पूरी न हो सकी कारण यह है कि श्रीमती गौड़ महासभा व श्री सनातन महामण्डल के कतिपय सभ्यों के अनुरोध से उनकी आज्ञाओं को शिरो-धार्य्य करके सब से प्रथम ब्राह्मण निर्णय का यह ग्रन्थ हमें तय्यार करना पड़ा अतएव भविष्यत में जाति अन्वेषण द्वितीय भाग जिस के लिये हमारे हजारों ग्राहक अनुग्राहक गण टक टकी लगाये बाट जोह रहे हैं उन्हें हम आश्वासन देते हुये निवेदन करते हैं कि अब की बार जाति अन्वेषण द्वितीय भाग सेवा में शीघ्र ही भेट किया जायगा।

विनीत सेवक

**श्रोत्रिय छोटे लाल शर्म्मा गौड़**

महामन्त्री हिन्दू धर्म वर्ण व्यवस्था मण्डल

फुलेरा ज़ि० जयपुर

# विषयानुक्रमणिका

पाठक ! यहां से आगे विशेष सूची देने की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि ३२४ प्रकार की ब्राह्मण ज्ञातियें जिन का विवर्ण इस ग्रन्थ में है वे सब की सब अकारादि अक्षर क्रमानुकूल अपने अपने वर्ग में लिखी गयी हैं वहां देखलेना क्योंकि भारत वर्ष की ब्राह्मण ज्ञातियों में से कोई भी इस ग्रन्थ से नहीं छूटी है।

## चित्र सूचीपत्रम्

### नाम चित्र



### विज्ञापन

विदित हो कि पत्रों पर पत्र व आवेदन निवेदन पत्र मंडल कार्य्यालय में आने पर हमने सार्वजनिक पबलिक पुस्तकालयों को अपना जाति अन्वेषण प्रथम भाग २) के स्थान में एक रुपये में ही देना निश्चय कर दिया है अतः थोड़ी सी कापियें शेष रह गयी हैं ।

**महामंत्री**

हिन्दू धर्म वर्णव्यवस्था मंडल

फुलेरा ज़िला जयपुर

अन्वेषण कर्ता श्रोत्रिय पंडित छोटेलाल शर्मा।
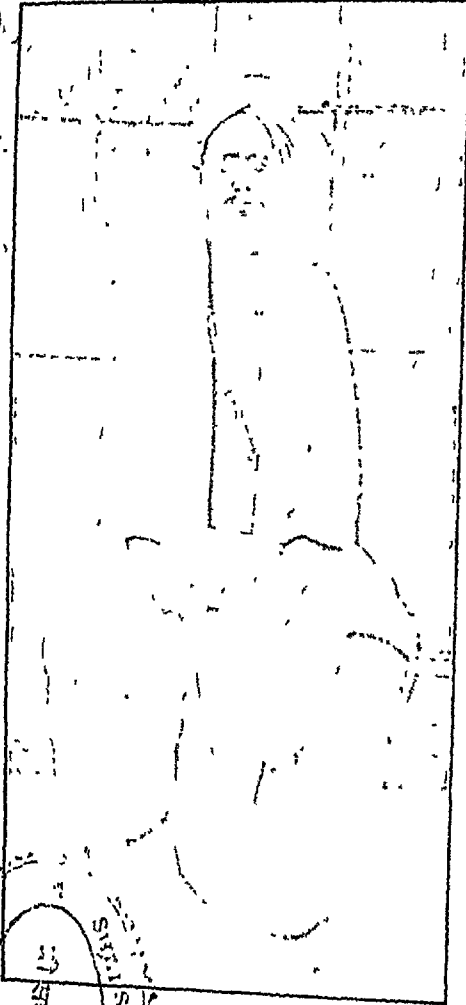
Shrotriya Pandit Chhote Lal Sharma.

आर्ट प्रिंटिंग वर्क्स कासगंज मे छपा।

# समर्पण

॥ ओ३म् सच्चिदानन्देश्वराय नमः ॥

हे जगन्नियन्ता जगदीश्वर ! जगदाधार प्रभो ! सम्पूर्ण व सुख के दाता भगवन् ! अनन्य भाव से चरणारविंद में मस्तक रखता हुआ व आप के चरणारविंद की रज का प्रसाद लेता हुआ आज अपने बीस वर्ष के अतुल परिश्रम व जात्युत्पत्ति अनुसन्धान व ब्राह्मण जाति के परस्पर ईर्षा द्वेष अहंकार व स्ववर्ग दम्भ के आभास का यह "ब्राह्मण मीमांसा" नामक छोटासा द्वितीय ग्रन्थ आपकी सेवा में भेंट करता हुआ आशा करता हूं कि प्रभो ! मेरे जैसे दीन दुखिया की इस तुच्छ भेंट को स्वीकृत कर के मेरा आदर करना, यह आप की परम उदारता है, क्योंकि जाति अन्वेषण प्रथम भाग की स्वीकृति कर के जो आपने अनुग्रह की है उस के लिये कोटिशः धन्यवाद है, भगवन् ! उपरोक्त ग्रन्थ को भी आप ही के चरणारविन्द में समर्पण किया था उस की स्वीकृति कर के जो आपने मेरा आदर किया है यह सब आप की परम उदारता व कृपालुता है, क्योंकि भगवन् ! जाति अन्वेषण प्रथम भाग के छप कर उपस्थित होते ही चहुं ओर से

यू० पी० आर्ट प्रिंटिंग वर्क्स, कासगंज में मास्टर
रघुनन्दनलाल गुप्त द्वारा मुद्रित।

# ब्राह्मण मीमांसा

## प्रार्थना

ओं आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढा नड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम् ।

यजु० अ० २२ मंत्र २२ ॥

हे भगवन् ! आप की कृपा से इस भारतवर्ष में ब्रह्मवर्चसी ब्राह्मण उत्पन्न हों, और बड़ी २ सेना वाले, शूर वीर, महारथी तथा बड़े २ बाण व तोपों के चलानेवाले और क्षत्रिय भी आपकी कृपा से उत्पन्न हों, दूधवाली गाय व उन के पालने वाले वैश्यादि भी आप ही की कृपा से उत्पन्न हों, कृषी व प्रजा के अन्य उपयोगों के लिये बड़े सुदृढ़ बैल व तेज चलनेवाले घोड़े उत्पन्न हों, तथा हे प्रभो ! हमारी गृहिणी गृह

कार्य्यों में दक्ष भी आप की कृपा से ही हों, और सम्पूर्ण हमारे यज-मानों के बड़े २ वीर पुत्र उत्पन्न हों, और हे भगवन्! नित्य जब जब आवश्यकता हो हमारे इस देश में वर्षा वर्षती रहे जिस से सदैव अन्नादि फल पुष्कल रूप से उत्पन्न हों, हे भगवन्! जो कुछ हमने आपसे अपने देश के हित के लिये मांगा व मांगना भूल गये हैं या जिस की आप हम लोगों के लिये आवश्यकता समझते हैं वे सब सुख और पदार्थ प्रदान करने की कृपा कीजिये।

चौपाई।

वन्दौं प्रथम महीसुर चरना। मोह जनित संशय सब हरना॥

हे भगवन्! पृथिवी के सम्पूर्ण देवी देवता ऋषि मुनि व आप्त पुरुषों के चरणारविंद की कृपा से माया मोह युक्त मेरे जितने सन्देह व भ्रम हैं वे सब आप की कृपा से दूर हों जिस से मैं इस लोकोपकारी कार्य्य में किसी की मिथ्या प्रशंसा व निन्दा न करूं वरन साहित्य सेवा व ऐतिहासिक दृष्टि को रखता हुआ उपकार बुद्धि से निष्पक्ष लेख लिख सकूं, परन्तु यह सब होना एकमात्र आप ही की कृपा पर निर्भर है, क्यों कि हे भगवन्! वर्त्तमान काल की देशस्थिति के जानने वाले आप ही हैं, प्रभो! परस्पर कलह, राग द्वेष, जड़ता तथा जातिदम्भ व ऊंचता नीचता के भावों ने देश को नाश कर दिया है! अतः हे प्रभो! आप मुझ को वह बुद्धि दीजिये कि मैं देश की कुछ सेवा कर सकूं, हे पिता! आप सम्पूर्ण प्राणीमात्र को एक दृष्टि से भेद रहित दशा से देखते हैं तद्वत मुझ पर भी कृपा कीजिये कि मैं सम्पूर्ण प्राणीमात्र को समदृष्टि से पक्षपात रहित होकर देखूं, हे अन्नदाता जी महाराज! आज सम्पूर्ण हिन्दू जातियें मेरी ओर टकटकी लगाये देखती हुयीं प्रतीक्षा कर रही हैं कि देखें मंडल से उन के हित के लिये

क्या क्या व्यवस्थायें निकलती हैं ! प्रभो ! इतने महान भार का बोझ मेरे मस्तक पर आ पड़ा है, अतएव उसका पूरा होना एक मात्र आपकी अनुग्रह पर निर्भर है, पिता मुझपर ऐसी दया कीजिये कि मैं अपनी ग्रन्थावलि द्वारा आप की आज्ञाओं के अनुसार शास्त्र सम्मत व्यवस्था देख सकूं, हे परमात्मन् ! मेरे हाथ से किसी का बुरा न हो वरन् असहाय हिन्दू जाति के चरणरज की सेवा करने के योग्य मैं बन सकूं, हे परम पूजनीय पिता ! शूद्र जातियों के साथ व अछूत जातियों के साथ बड़ा ही अन्याय हो रहा है, प्रभो ! उन की सन्तानों को पेट भर कर खाना तो दूर रहा, किन्तु रात दिन में एक बार भी पेट भर के चने भी चबने को नहीं मिलते है, तिस पर भी उन की स्त्रियें एक ही धोती में रात व दिन निकाल देती हैं, रात को निद्रा के समय आधी धोती बिछाती हैं तो आधी ओढ़ लेती हैं, रात सब किसी के लिये आराम करने को है परन्तु हे प्रभो ! उन दीन हीन जातियों के लिये आराम तो कहां किन्तु बिना कौड़ी पैसे ठाकुर टुकरे, रईस जागीरदार आदिकों द्वारा बेगार में फांसी जाती हैं इन्कार करने पर जूतों से पिटती हैं, सामने देखने पर काठ में ठोक दी जाती हैं, यह ही नहीं किन्तु ऐसी दीन अवस्था में वे हिंदुओं के कूवों पर भी चढ़ने नहीं दी जाती हैं, कहां तक कहें प्रभो ! जो कुछ उन के साथ अनीति व अन्याय हो रहा है उस सब को यहां लिखते नहीं बन आता, कारण आप सर्वज्ञ हैं आपसे कुछ छिपा हुआ नहीं है। हे परम माननीय दयालो ! उन की ऐसी अवस्था में उनका कौन हितैषी हो सकता है? उन को कौन सुव्यवस्था दे सकता है? उन के कष्ट निवारणार्थ किस किस को चिन्ता हो सकती है? तो उत्तर मिलता है कि नहीं केवल एक मात्र आपको ॥

भगवन् ! आजकल के समय में रुपैयेवाले की चलती है जिस जाति के पास रुपैया है वही जाति जाति है वही जाति उच्चवर्णीय है उस ही जाति को सम्पूर्ण उत्तम कर्म करने के अधिकार प्राप्त हो जाते हैं, क्योंकि लाख पचास हज़ार की थैलियें बांध कर शूद्रवर्णी कालीप्रसाद की तरह काशी चले जाइये और अपने को क्षत्रिय वर्ण में लिखवालाइये। परन्तु पिता ! जो जाति धन हीन मुख मलीन, व असहाय है उसे सन्मार्ग बतलाने वाला व सुव्यवस्था देकर उच्चवर्णी करने वाला एक भी तय्यार नहीं है, ऐसी अवस्था में प्रभो ! उन जातियों का भार मैंने अपने सिर पर लेलिया है अतः हे प्रभो ! मेरे हाथ से शास्त्र सम्मत निष्पक्ष सुव्यवस्थायें निकलें जिस से देश का कल्याण हो ॥

पिता ! भारत की हिन्दू प्रजा का धार्मिक राज्य आज कल हमारे भाई ब्राह्मणों के हाथ में है वेही भारत के मुखिया हैं वेही भारत माता के सुपुत्र हैं, परन्तु प्रभो ! करूं तो क्या करूं ? भारत के मुखिया लोग आंख मूंदे पड़े हैं तब इन असहाय हिन्दू जातियों का उद्धार करे तो कौन करे। इसलिये प्रभो यह भार आप की सत्ता ने मुझ पर छोड़ा है, परन्तु इस के उठाने में मुझे शक्त करने वाले, मेरे लिये, एक मात्र आप ही हैं।

हे आनन्द कन्द श्रीकृष्णचन्द्र जी महाराज ! हे श्री भगवान श्री रामचन्द्र जी महाराज ! गीता के इन वाक्यों की पूर्ति प्रायः होती रहती है कि :—

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानम धर्म्मस्य तदाऽत्मानं सृजाम्यहम्॥
परित्राणाय साधूनां विनाशायच्च दुष्कृताम् ।
धर्म संस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे ॥

भगवद्गीता अ० ४ श्लो० ७, ८ )

इस ही का सारभूत महात्मा तुलसीदास जी ने भी कहा है कि:--

चौपाई

जब जब होहि धर्म की हानी। बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी।
तब तब हम धर विविध शरीरा। हतत सत्य कर सज्जन पीरा॥

भगवान् कहते हैं जब जब पापियों की व राक्षसों तथा अभिमानियों की वृद्धि होती है तब तब हम नाना रूपों में प्रगट होकर उन के हनन द्वारा सज्जनों की रक्षा करते हैं।

अतएव हे प्रभो! आप ने समय समय पर प्रकट हो कर धर्म की रक्षा की है अपने प्रह्लाद भक्त की रक्षा व हिरण्याक्ष राक्षस के हनन के अर्थ नरसिंहावतार होनेवाले भी आपही थे, रावणादि राक्षसों के अत्याचारों की इति श्री कर के धर्म मार्ग मर्य्यादा के स्थापन करने वाले भी आप ही थे, कंसादि राक्षसों के पापों से पृथिवी को कृष्णावतार रूप से उद्धार करने वाले भी आप ही थे, वाम मार्ग की प्रवृत्ति व हत्याकांड के प्रसार के समय बुद्धावतार लेकर देश की रक्षा करने वाले भी आप ही थे, वैदिक धर्म का नाश व जैन धर्म के अत्याचारों से दुखित प्रजा को देखकर उन के असाध्य कष्ट को श्री शंकराचार्य्य जी के अवतार द्वारा दूर करनेवाले भी आप ही थे, ईसाई व मुसल्मीन धर्म की वृद्धि, हिंदू जातिका ह्रास व वेदों का अनादर होते देख कर ऋषि दयानन्द द्वारा देश का कल्याण करांने वाले भी एक मात्र आप ही थे, अतः अनन्य भाव से कर जोड़ कर विनती करता हूं कि हे दीनानाथ दीन हितकारी प्रभो! आज कल का समय भी हिन्दू जाति के लिये एक बड़ा दुख दायक हृदय बिदारक दृश्य है अतएव इन सबका उद्धार मुझसे हो सकना बालू पर भींति बनाने के समान है, हां! आप सर्व शक्तिमान और कारण बिन ही कृपाल हैं अतः

मेरा विश्वास, मेरी श्रद्धा मेरी अनन्य विनती एक मात्र आपसे यह ही है कि मुझ जैसे अधम जीव से हिंदू जाति की सेवा बन जाना एक मात्र आपही की नैमित्तिक कृपापर निर्भर है, अस्तु! ओं शम् !!!

दुखित हृदय—

**श्रोत्रिय छोटेलाल शर्म्मा**

महामंत्री हिन्दू धर्म वर्ण व्यवस्था मण्डल

फुलेरा—जयपुर
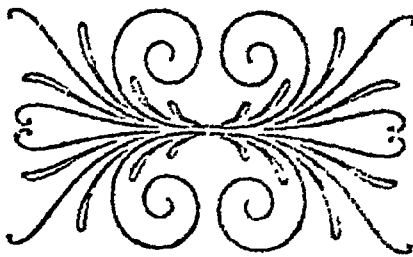
श्रीमती गौड़ महासभा के आगरा वाले महोत्सव पर कतिपय ब्राह्मणों की ओर से विनीत निवेदन, जो सन् १९१४में विचारार्थ छपा कर बांटा गया, उस की नक़ल।

# एक परमावश्यक प्रस्ताव

नमो ब्रह्मण्य देवाय गो ब्राह्मण हितायच।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः॥

माननीय ब्रह्म वृन्द !

यह कहते हृदय विदीर्ण होता है कि:—

जो ब्राह्मण परोपकारादि गुणों के कारण से देवता के समान पूजे जाते थे और जिन्हें भूदेव अर्थात् इस वसुन्धरा का देवता कहा जाता था, जो संसार के शिक्षादाता गुरू थे, जीव मात्र की उन्नति के पथप्रदर्शक थे, वह अब कालके कराल आक्रमण से, कर्त्तव्य विमुख होने के कारण उन्नति के उच्चतम शिखिर से स्खलित हो कर अवनति के गहरे गर्त्त में पतित हो रहे हैं।

परम दुःखकी बात है कि जिन्हें समयोचित (वृटिश राज्य की कृपा से) स्वोन्नति के साधनों को सब से पहिले प्राप्त कर उन्नति के मार्ग का अग्रगन्ता बनना चाहिये था, अधिकांश अद्यावधि अपने आश्रित अथवा शिष्यों के डंके की चोट समयोचित उन्नति की ओर जाने के शब्द सुनकर भी प्रगाढ़ निद्राभिभूत ही होरहे हैं। हा! कष्ट!!

यद्यपि कहीं २ (पंजाब, बंगाल) के ब्राह्मणों ने अब कुछ चेतनता लाभकर अपनी जागृति के लक्षण दिखाये हैं सही, पर अब भी सर्वत्र बहुत कुछ सुधार की आवश्यकता है। समय बता रहा है कि अन्यान्य जातियों की भांति जब तक ब्राह्मण मात्र अपने अवान्तर भेद त्याग एक संघशक्ति का पुनः संगठन न करेंगे तब तक इन की यथोचित उन्नति असम्भव ही है।

आप यह तो भली भांति जान चुके हैं कि आरम्भ में ब्राह्मण मात्र एक ही थे। पीछे से देशभेदादि कारणों से दशविधि विख्यात हुये। अनन्तर इस ही प्रकार मुख्य देशों की अनेक अवान्तर जातियें हो गईं।

हा खेद! ऐसी अवस्था जानकर भी अजान बनकर अपनी बहुसंख्यक समूह शक्ति की एकता के समयोचित प्रयत्नों से पश्चातपद हो रहे हैं! कभी यह गति आपकी प्रशंसनीय नहीं कही जा सकती।

भला अभी सर्वदेशीय, कालान्तर से देश आचारादि विभेद प्राप्त, ब्राह्मण बन्धुओं से सम्मिलन की आशा कहां? जब कि एक देशीय, एक से आचार विचार, खान पान, रीति व्यवहार

और तो क्या, रोटी बेटी भी एक रखने वाले " सनाढ्य और गौड़ ब्राह्मण " भी अलग अलग !

नाम मात्र भर की विभिन्नता रूपी दोष को भी विदूरित करने की तो बात बहुत दूर, विपरीत विभिन्नता वर्द्धक प्रयत्नों में ही तत्पर देख पड़ते हैं ! क्या आप से अब इस भिन्नता को अभिन्नता और अनैक्य को ऐक्य में अति सत्वर (अति शीघ्र) अविलम्ब परिवर्त्तन कराने के लिये कुछ और युक्ति प्रमाण उपस्थित करने की आवश्यकता है ? आपकी दोनों संस्थायें "सनाढ्य महामण्डल" और "गौड़ महासभा" एक "ब्राह्मण महामण्डल" होकर कितना सुपुष्ट हो जायगा। सोही अब एक बार विचारिये ! सोचिये, धनबल, जनबल, और विद्याबुद्धिबल, अब से कहीं अधिक एकत्र होने पर आप क्या नहीं कर सकेंगे ? ऐसी बात ही फिर कौन सी होगी जिसे आप की सम्मिलित शक्ति कर न सकेगी ?

फिर इतने सुशिक्षित, विचारवान, बुद्धिमान धनवान, पुरुषों की एकत्रता होतेही धन का जो वर्त्तमान ( पृथक २ प्रत्येक कार्य में दोहरा व्यय होने से) अपव्यय होरहा है । बात की बात में अब से आधे से भी कम हो जायगा । और इसी की बचत से आप वर्त्तमान से बहुत कुछ अधिक उन्नति के उपायों का अवलम्बन कर एक दो सोपान ऊँचे चढ़ने योग्य ही बन जायगे । यों तो कहने को बहुत कुछ कहा जा सकता है । पर हम अब आप का अधिक समय नष्ट न कर अपने बहुकालीन हृदयगत इस प्रस्ताव की ओर आपका ध्यान आकर्षित कर देने भर की ढिठाई करते हुये आप से क्षमा चाहते हैं । हां एक बात और कहनी उचित प्रतीत

होती है कि यदि आप विचार पूर्वक इस परमोचित विचारणीय सम्मेलन कार्य में सफल मनोरथ हो सकेंगे (जो कुछ भी कठिन नहीं है ) तो फिर आप का यह सम्मेलन देश भर के लिये आदर्श होगा। और शीघ्र पञ्चगौड़ोंका सम्मेलन हो सकेगा अनन्तर शनैः२ ब्राह्मण मात्र एक हो फिर पूर्वकालीन ब्राह्मणों के गौरव को प्राप्त हो जांयगे। यों फिर जगदुपकार के श्रेय के मूल आप ही कहे जांयगे। अतः ऐसे सम्भवनीय आनन्ददायी सुलभ साधन को सुयोग पाकर अब आप न चूकें यही अन्तिम प्रार्थना है॥

ब्राह्मणों की एकता के इच्छुक विनीत—

छबीलेराम शर्म्मा, वकील,
रामचन्द्र शर्म्मा, हेडक्लर्क कलक्टरी (सनाढ्य),
चिरंजीलाल शर्म्मा गौड़, सब डिपुटी इन्सपेक्टर,
ज्योतिःस्वरूप शर्म्मा सारस्वत, अलीगढ़॥
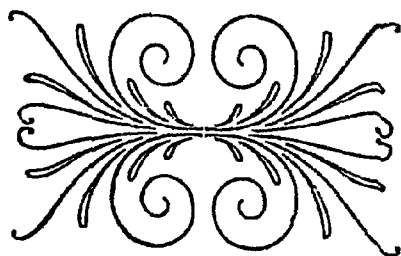
# जाति बंधन और देश स्थिति

पाश्चात्य देश जिस प्रकार से सम्पूर्ण विदेशियों को जाति बंधन से स्वच्छन्दता प्राप्त है उस प्रकार से आज कल हमारे इस भारत वर्ष देश में स्वच्छन्दता नाम को भी नहीं है, आज यह देश अपने प्रत्येक कार्य्यों में जिस तरह परतंत्र है उस ही तरह यह अपने जाति बंधन के कारण भी लोहे की बड़ी मोटी दृढ़ जंजीर से जकड़ा हुवा दरिद्र दशा को प्राप्त हो रहा है, क्योंकि देश में अविद्या का प्रचार होने के कारण अज्ञानवश बहुतसी जाति व उपजातियें ऐसी पैदा होगयीं हैं कि जो आचार, विचार, धर्म्म, अधर्म्म व सदाचार तथा ऋषि महर्षियों के वाक्यों की तनिकसी भी परवाह न करके मनमानी कार्य्यवाहियें करने लग गयीं, जिस से देश में व्यभिचार की वृद्धि के कारण अनेकों ऐसी जातियें व उपजातियें पैदा होगयीं कि जिन में से कोई लोमज, कोई अनुलोमज, कोई प्रतिलोमज, कोई संकर, कोई वर्ण संकर, कोई दोगले, कोई जारज ( नुत्फ़े-हराम ) और कोई कैसे और कोई कैसे, ऐसी वर्ण संकरी सृष्टि होने से अनेकों जाति व उपजातियें देश में पैदा होगयीं ।

परन्तु ऐसे भावों ने देश को बड़ी हानि पहुंचायी और जाति बंधन की श्रृंखला ( ज़ंजीर ) ऐसी दृढ़ होगयी कि जिसमे देश में उलटे भाव उत्पन्न होगये, क्योंकि हिन्दू राजा व महाराजाओं के समय में महाविद्वान पंडितों की धर्म्म सभा द्वारा समयानुकूल जाति बंधन की व्यवस्था बांधी गयी थी वही व्यवस्था मुसलमान बादशाहों के समय तितिर बितिर होगयी और देशमें अनाचार की वृद्धि होती देख काशी के विद्वानों ने समयानुकूल "शीघ्रबोध" नामक काशीनाथ भट्टाचार्य्य के द्वारा

व्यवस्था निकाली, क्योंकि मुसलमानों के मतानुसार कुँवारी लड़की से विवाह करना उचित ( जाइज ) था परंतु विवाही हुयी से विवाह करना अनुचित ( नाजाइज ) समझा गया था, अतएव जब हिंदुवों की कुँवारी लड़कियों को मुसलमान लोग जबरदस्ती छीन झपट कर विवाह करने लगे तब "शीघ्रबोध" नामक ग्रन्थ द्वारा यह व्यवस्था निकली थी, कि:-

अष्टवर्षा भवेद् गौरी नववर्षा च रोहिणी ।
दशवर्षा भवेतकन्या तत ऊर्ध्वं रजस्वला ॥
माता चैव पिता तस्या ज्येष्ठो भ्राता तथैव च ।
त्रयस्ते नरकं यान्ति दृष्ट्वा कन्यां रजस्वलाम् ॥

अर्थात् इन भयानक वाक्यों द्वारा यह आज्ञा हुयी कि कन्या की दशवें वर्ष के पश्चात् रजस्वला संज्ञा होजाती है तब तक उस का विवाह न कर देने से रजस्वला कन्या को देखकर उसके माता पिता व बड़ा भाई आदि घोर नरक को चले जाते हैं, इस व्यवस्था से देश का बड़ा उपकार हुवा, परन्तु इस व्यवस्था में समयानुकूल कुछ हेर फेर होने की आवश्यकता प्रतीति होती है, क्योंकि विशेष नहीं तो जब सृष्टिक्रमानुसार ( Naturally ) कन्या विवाह योग्य हों तब ही उन का विवाह होना व किया जाना नीतिसंगत प्रतीत होता है जिस से विधवाओं की संख्या न्यून हो ।

इस ही तरह एक समय वह था कि जब बादशाह अलाउद्दीन खिलजी ने यह घोषणा प्रकाशित की थी कि:-"प्रत्येक हिन्दू विधवाओं का विवाह करदेना चाहिये" परन्तु उच्च हिन्दू जाति को यह सहन न हुवा और इस आज्ञा का प्रतिकार होने लगा अन्त में जब कुछ सुनाई न हुयी तब इस ही धर्म्म रक्षा के लिये लाखों क्षत्रिय वीर हताहत हुये, अतएव भारत की पठित समाज का लक्ष्य इस ओर होने से सहज ही में विधवाओं की संख्या कम होजायगी और ऐसी दशा में वर्णसंकरी सृष्टि का अभाव भी होजायगा। इसलिये बृटिश गवर्नमेंट

के मुराज्य में फेरों की गुनहगार यानी नाममात्र की विवाही हुयी विधवाओं की दशा पर विचार करना समयानुकूल कितना आवश्यक है यह भारत की पठित मंडली से कुछ छिपा हुवा नहीं है ।

इस ही तरह जाति बंधन की कड़ाई जो आज कल प्रचलित है उस में भी सुधार होने की तथा समयानुकूल कुछ ढीला करने की आवश्यकता है, क्योंकि "यथा राजा तथा प्रजा" के अनुकूल प्राचीन प्रणाली की कड़ाई देशके लिये लाभकारी ही नहीं किन्तु नाशकारक है, यद्यपि हमारे देश के लिये इस बात की तो आवश्यकता अभी नहीं है कि हिन्दू सन्तान को भंगी चमार कपड़े पहिनावें व खाना खिलावें, वरन समय के अनुकूल कुछ न कुछ नियमों में परिवर्तन अवश्य होना चाहिये क्योंकि एक समय था कि यहां के देशवासी हिन्दू लोग भंगी आदि अस्पर्शनीय और म्लेच्छादिकों से छूना तक भी बुरा समझते थे आज वे ही हज़ारों हिन्दू पढ़े लिखे अस्पर्शनीय म्लेच्छों के साथ हाथ मिलाकर व उन के साथ बड़े २ भोजों में सम्मिलित होकर व जीमकर अपने तईं कृतकृत्य मानते हैं ॥

यह ही नहीं किन्तु जो हिन्दू मद्य मांस का खाना व चमड़े का पानी पीना पाप समझते हैं वेही आज नलों के द्वारा खुलम खुल्ला रीतिसे रुपया खरच कर के नल का पानी पीते, अस्पताल की दवाइयें लेते, रेल में ज़बरदस्ती ठूंस ठूंस कर भंगी चमार आदिकों के साथ बिठाये जाते हैं, यह ही नहीं किन्तु छोटे २ स्टेशनों पर Loading, Un-loading मालके चढ़ाने उतारने में भंगी पल्लेदारी करते हैं, यदही हमारा देश लोभ के कारण लाखों मन विदेशी चीनी प्रति मास खाता है, अनेकों पवित्र उच्च कुलीन हिन्दू वेश्यावों के साथ अभक्ष्य पदार्थ भी खालें तो खैर ! परन्तु इन सब का हमारे देशी लोग विचार न करके जाति बंधन की कड़ाई केवल उस के साथ दिखलावेंगे, जिस ने बाज़ार की कोई बनी हुयी वस्तु खाली अथवा विद्याग्रहणार्थ व व्यापारार्थ विदेश यात्रा किया है । भारत वर्ष में हज़ारों कान्यकुब्ज व नागर ब्राह्मण ऐसे होंगे जो मिठाई आदिकों के लिये तरसते होंगे, परन्तु जाति बंधन के कारण खाने से उन्हें रुकना पड़ता है, अतएव समयानुकूल जाति

बंधन के नियमोपनियमों में हेर फेर करने की कितनी आवश्यकता है यह पाठक स्वयं निर्धार करें यह ही आशा है।

जाति बंधन की कड़ाई के कारण से पुराने विचारों के मनुष्य तनिक तनिक सी बातों में मनुष्यों को जातिच्युत करके उन्हें सदैव के लिये विधर्मी हो जाने की उत्तेजना देते हैं, यह उचित नहीं है। अतएव

जाति च्युत

जाति से पतित करने के लिये क्या क्या कारण व क्या क्या दशायें होनी चाहिये इन के जानने की भी देश के लिये बड़ी आवश्यक्ता है, इस विषय में Hindu Law हिन्दू लॉ के आधार पर कुछ कारण व दशायें यहां दिखायी जाती हैं, यथा :-

१ ईसाई व मुसलमान हो जाने पर ( Hindu Law पृष्ठ १४६ )।
२ विजातीय व विधर्मिन विधवा के साथ विवाह करलेने पर।
३ जान बूझकर यज्ञोपवीत फेंक देने पर।
४ अन्त्यजों के हाथ का भोजन कर लेने पर।
५ गो मांस भक्षण कर लेने पर।
६ मद्य पीलेने पर।
७ नीचतम जातियों के यहां की पुरोहिताई तथा पाधाई करने पर।
८ विजातीय हिन्दू जाति के यहां की दालरोटी आदि सखरा भोजन कर लेने पर।
९ प्रत्यक्ष रूप से ईसाई, मुसलमानादिकों का स्पर्श किया हुवा अन्न जल ग्रहण करने पर।
१० शास्त्रोक्त अवधि, ब्राह्मण १६ वर्ष तक, क्षत्रिय २२ वर्ष तक और वैश्य २४ वर्ष तक यज्ञोपवीत धारण न करने पर।
११ मुसलमानी व ईसाइन को घर में रख लेने पर।
१२ व्यभिचारार्थ स्त्री के बाहर चली जाने पर।
१४ विधवा के गर्भस्थापन होजाने पर।
१५ नीच जाति की स्त्री को अपनी स्त्री बना लेने पर।
१६ नीच जातियों के यहां का भोजनादि स्वीकार कर लेने पर।
१७ गोत्र के गोत्र में विवाह कर लेने पर॥

१८ अपनी पुत्री, भगिनी, मावसी, दोहिती, पुत्र की स्त्री, छोटे भाई की स्त्री, अपनी भुवा आदि के साथ गुप्त सम्भोग करने पर।
१९ गर्भपात व भ्रूण हत्या करने व करवा डालने पर।
२० ब्रह्महत्या कर डालने पर।
२१ किसी जीव को स्वयं मार डालने व मरवा डालने पर।
२२ शास्त्र वर्जित अभक्ष्य पदार्थों के भक्षण करने पर।
२३ अस्पर्शनीय जातियों के साथ सहवास करने से।
२४ सन्ध्योपासन न करने पर।

नोटः— परन्तु शास्त्र में इन सब के प्रायश्चित्त लिखे हैं तदनुसार नियमित समय तक दण्ड भोगकर तथा व्रत यज्ञादि करके वह मनुष्य शुद्ध हो सक्ता है, सदैव के लिये आजन्म किसी को जातिच्युत नहीं करना चाहिये॥

परन्तु इन उपरोक्त हेतुओं में से कई हेतु ऐसे हैं कि जिन्हें जब कोई शक्तिशाली, बहुकुटुम्ब व इष्टमित्रों वाला प्रभावशाली पुरुष करता है तो कोई उसे जातिच्युत करने का उद्योग नहीं करता, परन्तु जब कोई साधारण असहाय मनुष्य इन में से कोई भी कर्म्म कर बैठता है, तो तत्क्षण वह जातिच्युत कर दिया जाता है, यह भारतवर्ष की जाति बंधन की कसौटी है। साथ ही में एक बड़ा भारी अन्याय देश में यह भी है कि जब कोई स्त्री व्यभिचार करती है तो वह जातिच्युत होजाती है पर जब कोई पुरुष व्यभिचार करता है तो उसके लिये क्या? विधवा के गर्भ स्थिति होजाय तो वह जातिच्युत करदी जावे परन्तु जबकि सधवा (सस्त्रीक) पुरुष या रंडवा विधवा के गर्भस्थापन कर देता है, तो उसको भी कुछ दण्ड होना चाहिये या नहीं? इस की मीमांसा भारत के सपूत नवयुवकों के भविष्यत विचारों परही निर्भर है। क्योंकि गर्भस्थिति की दशा में विधवा को जातिच्युत की सज़ा देना मानों उसे सदा के लिये वेश्या व ईसाइन मुसल्मानिन बनाकर व गोभक्षण कराना है, अतएव इस का विचार भी भारत के नेताओं के महान् विचारों पर ही छोड़ता हूं, क्योंकि ऐसा देखा जाता है कि प्रायः जातिच्युत मनुष्य अपने अपमान के कारण ईसाई व मुसलमान सदा के लिये होकर

गोभक्षक बन जाते हैं, इसलिये यह विषय भी विचार कोटि योग्य है।

जब कि एक हिन्दु जातिच्युत किया जाता है तो उसके साथ सर्वसाधारण का व्यवहार ऐसा होता है।

१ जातिच्युत मनुष्य के साथ उस के इष्ट मित्रादिगण भोजन व्यवहार नहीं कर सकते हैं।

२ जातिच्युत मनुष्य अपने इष्ट मित्रों के घर पर दो चार दिन के लिये भी नहीं ठहर सकता है और न वह किसी के भोजन व्यवहार में ही बुलाया जाता है।

३ जातिच्युत मनुष्य के बालक बालिकाओं के सम्बन्ध को कोई स्वीकार नहीं करता है।

४ जातिच्युत मनुष्य की लड़की भी अपने श्वसुराल से अपने पिता के घर पर प्रत्यक्ष रूप से न आसकेगी अन्यथा वह भी जातिच्युत कर दीजावेगी।

५ जातिच्युत मनुष्य के कामों को नाई, धोबी व पाधे भी करने से वञ्चित रहेंगे।

६ जातिच्युत मनुष्य के साथ विवाह आदि उत्सवों व मृतक संस्कारों में भी उसकी जातिवाले सम्मिलित नहीं होंगे।

७ जातिच्युत मनुष्य को मंदिरों में जाने का अधिकार भी न होगा।

८ जातिच्युत मनुष्य के साथ कोई हुक्का व पानी भी नहीं पीवेगा यह ही नहीं किन्तु उस के स्पर्श किये भोजन पदार्थ भी कोई ग्रहण नहीं करेगा और न उसे अपने स्वजाति बन्धुओं के साथ भोजनार्थ एक पंक्ति में ही बैठने का अधिकार होगा।

# जाति निर्णय निदान

जिस प्रकार प्रत्येक वस्तु व रोग का निदान करके रोगी की चिकित्सा कियी जाती है और निदान ही पर रोगी के मरण व जीवन का भरोसा होता है, तैसे ही हम भारतवासियों के हमारे प्रत्येक कार्य्य व व्यवहार में जाति निदान कर लेने की भी आवश्यकता पड़ती है, क्योंकि हम भारतवासी अपने प्रत्येक व्यवहार में जाति बंधन की एक मोटी शृंखला से जकड़कर बंधे हुये हैं अतएव इस के यथार्थ व अयथार्थ निदान पर ही हम हिन्दुओं का सर्वस्व निर्भर है, आज कल ऐसा समय आया है कि नीच से नीच जातियें भी वर्म्मा शर्म्मा व गुप्त बनकर लोगों का धर्मभ्रष्ट करती हैं, अतएव ऐसे कठिन समय में हमें प्रत्येक की जाति व वर्णादि निश्चय कर लेने चाहियें परन्तु यह विषय बड़ा अगाध व गहन है, तथापि इस के जानने व निश्चय करने के मोटे मोटे साधन ये हैं कि नक़ली वर्म्मा, शर्म्मा व गुप्त बनने वालों से ये प्रश्न करने चाहियें ।

१ आप की जाति क्या है ?
२ आप अपने निर्वाहार्थ क्या जीविका करते हैं ?
३ आप का कुल नाम क्या है ?
५ आप के यज्ञोपवीत है या नहीं ?
६ यदि है तो आप को यज्ञोपवीत दिलानेवाले आचार्य्य आर्य्य सामाजिक हैं या सनातन धर्म्मी ?
७ आप का गोत्र क्या है ?
८ आप का प्रवर क्या है ?
९ आप का वेद, उपवेद, शाखा, शिखा और सूत्र क्या क्या हैं ?
१० आप की जाति की उत्पत्ति किस तरह से है ?

अतएव जाति व वर्ण निश्चय करने के लिये इन प्रश्नों का उत्तर लेलेना एक कसौटी है, यदि इन उत्तरों में यज्ञोपवीत कराने वाला गुरु आचार्य्य आर्य्य समाजी है तो उस के जनेऊ का कोई महत्व व गौरव नहीं क्योंकि सामाजिक भाई तो जिस को चाहें उस को यज्ञोपवीत पहिना देते हैं ॥

गोत्र, प्रवर, शाखा, शिखा, सूत्र, वेद व उपवेद का जानना भी प्रत्येक वर्म्मा शर्म्मा व गुप्त बनने वालों के लिये अत्यावश्यक है, क्योंकि प्रत्येक कर्म्म व संस्कार तथा पूजन पाठादि में इन की आवश्यकता होती है। इस प्रकार इन प्रश्नों के उत्तर लेने से सहज में ही नक़ली व असली वर्ण निश्चय हो जाने से हम धोखे से बचेंगे।

एक समय का दृष्टान्त है कि एक गांव में किसी रईस के यहां ब्राह्मण भोजन व रुपैया २ दक्षिणा का बुलाया था, अतएव कोई नीच जाति का मनुष्य फोकट में मालखाने व रुपैया दक्षिणा लेने के लालच से तिलक छापे लगाकर व एक सूत का जनेऊ गले में डालकर पंगत में जाबैठा, परन्तु जब लोगों ने उसे एक नवीन सा विदेशी अपरिचित मनुष्य देखा तो उसकी जाति व वर्ण निश्चय करने के लिये उस से इस कसौटी के कई प्रश्न किये गये तब वह उत्तर न दे सका। परन्तु जब उस से पूछा कि आप की जाति क्या है? तब वह उत्तर देता है कि ब्राह्मण, फिर उस से पूछा गया कि कौन ब्राह्मण? तो उत्तर मिला कि गौड़ ब्राह्मण, फिर उससे पूछा गया कि कौन गौड़? तो वह कहता है कि या अल्ला गौड़ों में भी कौन गौड़! ऐसा उत्तर मिलने पर वह उस पंक्ति से, मोचीपद्म द्वारा पूजन किया जाकर, निकाल दिया गया।

अतएव प्रत्येक मनुष्य जो अपने तई ब्राह्मण व क्षत्रिय बनते हैं, उन के लिये यह आवश्यक है कि अपने गोत्र, प्रवर, शाखा, शिखा और सूत्रादि का पता लगाते हुये, अपनी उत्पत्ति का निश्चय करें, तो वे ब्राह्मण व क्षत्रिय माने जा सकते हैं, अन्यथा नहीं।

पूर्वकाल में ऐसी पृथा थी कि प्रत्येक जाति अपने गोत्र, प्रवर, शाखा, शिखा, सूत्र, वर्ण उत्पत्ति को याद रक्खा करते थे, परन्तु कुछ समय

के पश्चात् सृष्टि के बढ़ने से इस पृथा के क्रम का लेखा रखने के लिये भाट कापड़ी व चारण तथा शुक्ल लोग नियत किये गये जिस में भाट व शुक्ल लोग तो ब्राह्मण और वैश्य समुदाय के गोत्रादि का लेखा रखते थे और चारण लोग राजपूतक्षत्री वंश का लेखा व गोत्रादि विवर्ण तथा प्रत्येक कुल का वंशवृक्ष व समय२ की खास २ घटनायें तथा उस कुलके वृद्ध जनों की सूक्ष्म जीवनी अपनी २ वही में रखा करते थे और डूम डाढ लोग शूद्र जाति की कीर्ति व बड़ाई गाया करते थे-ये राय भाट व कापड़ी तथा शुक्ल लोग आज कल के जैसे मूर्ख गंवार नहीं होते थे वरन बड़े २ कवि व विद्वान होते थे, इस के लिये राजा महाराजा लोगों की ओर से इन के लिये जमीन व जागीर कूये कोटी व गांव अलग निकाल दिये गये थे कि जिस से आर्य्य हिन्दू जाति की Ethnology वंशावली का क्रम नष्ट न हो। और सामान्यगृहस्थियों ने अपने २ राय भाट कापड़ी व शुक्ल लोगों के लिये जन्म मरण व विवाह शादी के प्रत्येक उ-त्सव पर इन लोगों की लाग याने दस्तूर बांधदिये थे जिस से ये लोग जो अपने २ यजमानों की Ethnology वंशावली का विवर्ण रखते हैं उन्हें आजीविकार्थ इधर उधर न भटकना पड़े यह पृथा आज तक चलीजारही है परन्तु इस का फल उल्टा हुवा अर्थात कूये, कोटी, जमीन जायदात व गांव आदि के होने के कारण भारत के राय, भाट, कापड़ी, चारण और शुक्ल लोग निरक्षर भट्टाचार्य्य रह गये और भारत की एथनालोजी का क्रम बिगड़ कर लापता होगया। इस ग्रन्थ के तय्यार करने के बीस वर्ष के समय में हमने अनेकों राय, भाट, चारण शुक्ल बड़वे और कापड़ियों से जाति विवर्ण विषयों में बात चीत किया पर शोक किसी से सन्तोष जनक कुछ भी पता न लगा अतएव भारत के राजे महाराजे रईस व सेठ साहूकारों का यह कर्तव्य है कि दान दक्षिणा देते समय यदि ये बड़वे राय, भाट, चारण, कापड़ी और शुक्ल लोग वि-द्वान व अपने अपने कर्तव्य को पालन करने वाले न प्रतीत हों तो इन की लाग व आजीविकायें सब उस पर के जो लोग इस कर्म में अनुभव रखते हों उन्हें देदेनी चाहियें, ऐसा करने से भारत में विद्या की वृद्धि व हिन्दू सन्तान के वृद्ध जनों की वंशावलि का ठीक २ पता रहेगा। और हिन्दू जाति का इतिहास क्रमानुकूल बना रहेगा।

परन्तु शोक के साथ कहना पड़ता है कि जैसे नागनाथ वैसे सर्प-नाथ, जैसे भूतनाथ वैसे प्रेतनाथ हैं अर्थात् जैसे ही देवता वैसे ही पुजारी हैं अर्थात् भारत में इन भाट, बड़वे, राय, कापड़ी और कुछ आदिकों का जितना सत्कार होना चाहिये उतना नहीं होता है हमने अपने नेत्रों से देखा है कि अग्रवाल बनियों के भाटों को महिनों दुकान दुकान चक्कर लगाने पड़ते हैं जब जाकर उन का चिट्ठा होता, ऐसी दशा में विचारों के प्राण भारी आजाते हैं तब वे भी यदि कुछ करें तो क्या करें किस भरोसे व उत्साह पर वे लोग विद्या पढ़ें और सम्यक् प्रकार से वंशवृक्ष रखकर मुख्य घटनायें व जीवनियें लिखें तथा जातियों का सांगोपांग इतिहास रक्खें तो किस आशा से ? अतएव ऐसी दशा में इन दोनों यजमान व राय भाटादिकों का यह कर्तव्य है कि यजमान लोग विद्वान राय भाटादि का सत्कार करें मूर्ख का नहीं ऐसी दशा में ये लोग स्वयं पढ़ेंगे तो देश का बड़ा उपकार होगा और भविष्यत में हमें अपने पूर्वजों का सिलसिले वार वृत्तान्त मिल सकेगा।

# वीर्य्य प्रधान प्रकरणम्
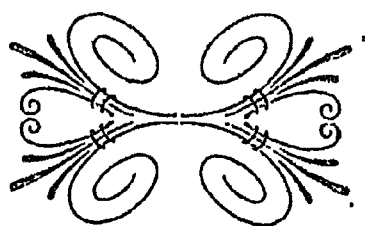
प्रिय पाठको ! आप में से जिन्हों ने निष्पक्ष भाव व न्याय दृष्टि से देखा होगा तो प्रायः जन समुदाय आप को ऐसा मिला होगा जो सदैव अपने को ऊंच व दूसरे को नीच मानते व अपने से सम्पूर्ण अन्य जातियों को तुच्छ मानते हुये उन्हें घृणित दृष्टि से देखा करते हैं, पुराण व स्मृतियों में उन की उत्पत्ति दो भिन्न २ वर्ण व जातियों के संयोग से होने के कारण उन्हें संकर, व वर्ण संकर, दोगले, व हरामज़ादे कहकर तथा उन्हें शूद्र व नीच बतलाकर परस्पर वैमनस्य बढ़ाया करते हैं ऐसी दशा में उन दो भिन्न वर्णोत्पन्न जातियों के चित्तपर कितना आघात व चोट पहुंचती होगी ! इसको भले प्रकार वेही जातियें जान सकती हैं जिनको प्रायः ऐसी विपत्तियोंका सामना करना पड़ता है ऐसी अवस्था में प्रायः वे जातियें अपने मनही मन में रोया करती हैं यहां तक कि अपने दुःखमयी मनोभावों को मन की मन में रख कर दूसरों के सन्मुख उनके कठोर वाक्यों को सहन करती हुयी तलमलाकर व हाथ पांव पीटकर रह जाती हैं, ऐसी अनीति व अन्याय का होना यह उन जातियों की अनभिज्ञता का कारण है अन्यथा शास्त्रों में कोई ऐसी बात नहीं है कि जिस का प्रमाण न मिल सके।

प्रायः आज कल बहुतसी ऐसी जातियें हैं जो कोई ब्राह्मण पिता व क्षत्रियाणी माता द्वारा पैदा हुयी हैं, इस ही तरह कोई जाति ब्राह्मण व वैश्या द्वारा, कोई ब्राह्मण व शूद्रा द्वारा, कोई क्षत्रिय व ब्राह्मणी द्वारा, कोई क्षत्रिय व वैश्या द्वारा, कोई क्षत्रिय व शूद्रा द्वारा, कोई वैश्य व ब्राह्मणी द्वारा, कोई वैश्य व क्षत्रियाणी द्वारा, कोई वैश्य व शूद्रा द्वारा, कोई शूद्र व ब्राह्मणी द्वारा, कोई शूद्र व क्षत्रियाणी द्वारा और कोई शूद्र व वैश्या द्वारा और इस ही तरह कोई किसी और कोई किसी द्वारा पैदा

हुयी हैं, अतएव ऐसी स्थिति में विचारी जातियों को अपनी उत्पत्ति सुन कर लज्जित होना पड़ता है परन्तु यह उन की अनभिज्ञता का कारण है क्योंकि लिखा है किः—

शूद्रैव भार्य्या शूद्रस्य सा चस्वाच विशः स्मृते।
तेचस्वा चैव राज्ञश्च ताश्चस्वा चाग्रजन्मनः ॥

मनु०

यह मनुजी महाराज के धर्मशास्त्र का वाक्य है कि स्त्रियों के अभाव में व काम इच्छुक मनुष्य अपने से नीचे २ वर्णों की स्त्रियों के साथ विवाह कर सकते हैं अर्थात् शूद्र शूद्रा के साथ, वैश्य वैश्या व शूद्रा के साथ, क्षत्रिय क्षत्रिया, वैश्या और शूद्रा के साथ और ब्राह्मण ब्राह्मणी क्षत्रिया, वैश्या और शूद्रा के साथ विवाह करलें परन्तु व्यभिचार द्वारा भ्रूण हत्यायें न करें ऐसी प्रथा आपत्तिकाल में थी कि ब्राह्मण ब्राह्मण और क्षत्रिय की कन्या के साथ विवाह कर सकता है, क्षत्रिय क्षत्रिय और वैश्य, और वैश्य वैश्य तथा शूद्र की स्त्री ग्रहण कर सकते हैं अतएव यदि क्षत्रिय ने आपद्धर्म पाल कर यदि शूद्रा से सन्तान उत्पन्न कर लियी तो कुछ हानि नहीं कियी।

महाभारत के पीछे २ का समय भारत वर्ष के लिये शान्ति का न रहा जैसा कि "भारत विप्लव" प्रकरण में दिखलाया जा चुका है क्योंकि इस देश में परशुराम जी तथा मुसलमानी बादशाहों के अत्याचार के कारण वर्णाश्रम व्यवस्था कई वार नष्ट हुयी और भारत की जातियें सदैव अस्थिर और अशान्ति की दशा में पड़ी रहती थीं अतएव भारत की इचल विचल हज़ारों वर्षों की स्थिति में जातियों की तो किसने चलायी चारों वर्णों की दशा ही उलट पलट तथा अस्तव्यस्त होगयी थी आज कल की सी शान्ति व स्वतंत्रता अनुमान ५ हज़ार वर्ष से भारत में नाम मात्र को भी न थी क्योंकि एक २ दिन में लाखों क्षत्रिय व ब्राह्मणादि का हनन होता था चित्तौड़ में जितने क्षत्रिय मारे गये थे उनके जनेऊवों का बोझ ७४॥ साढ़े चौहत्तरमन पक्का हुआ था, सन् १२६८ ई० के लगभग पाली के क़तले ग्राम में क़तल किये गये ब्राह्मण

व क्षत्रियादि के जनेऊवों का बोझ ६ मन पड़ा हुआ था अतएव ब्राह्मण ब्राह्मण के ही विवाह करें क्षत्रिय क्षत्रिय के घर ही विवाह करे यह सम्भव नहीं था, वरन जिस को जिस वर्ण की स्त्री हाथ लगी उसने उस ही के साथ विवाह करके सन्तानोत्पत्ति किया जिससे उन संतानों के दूसरे दूसरे नाम होगये वेही आज अनेकों जाति अपने अलग अलग नामों से जुदी २ कही जाती हैं।

अब विचारणीय विषय यह रहगया कि इस प्रकार की पैदा हुयी सन्तानों को क्या क्या कर्म्म करने के अधिकार हैं तथा ये जातियें किस किस वर्ण में मानी जावें ? इस का उत्तर धर्म्मशास्त्र से यों मिलता है कि:-

सजाति जानन्तरजाः षट् सुता द्विजधर्मिणः ।
शूद्राणान्तु सधर्म्माणः सर्वेऽपध्वंसजाः स्मृताः
मनु० अ० १० श्लो० ४१

द्विजातियों के समान जाति वाले अर्थात् १ ब्राह्मण से ब्राह्मणी में २ क्षत्रिय से क्षत्रिया में, ३ वैश्य से वैश्या में, ४ ब्राह्मण से क्षत्रिया में ५ ब्राह्मण से वैश्या में और ६ क्षत्रिय से वैश्या में उत्पन्न हुये ये छः प्रकारके पुत्र द्विज संज्ञक हैं, अतएव इन्हें सम्पूर्ण कर्म द्विज धर्मानुकूल करने का अधिकार है।

कोष में द्विज नाम ब्राह्मण का भी है, और द्विज नाम ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तीनों के मिलेहुये समुदाय का भी है, अतएव ऐसी स्थिति में ये जातियें ब्राह्मण वर्ण में मानी जांय अथवा अन्य किसी वर्ण में ? इस का उत्तर धर्मशास्त्र में मिलता है कि:-

तपोबीजप्रभावैस्तु तेगच्छन्ति युगे युगे ।
उत्कर्षं चापकर्षञ्च मनुष्येष्विहजन्मतः॥
मनु० अ० १० श्लो० ४२

तप प्रभाव से ( विश्वामित्रवत् ) और बीजप्रभाव से ( ऋष्यशृंगादिवत् ) सब युगों में उत्कर्षता व नीचता को प्राप्त होते रहते हैं।

इससे भी बीजप्रधानता सिद्ध होती है। पुनः और देखिये:-

बीजमेके प्रशंसन्ति क्षेत्रमन्ये मनीषिणः।
बीजक्षेत्रे तथैवान्ये तत्रेयं तु व्यवस्थितिः ॥ ७० ॥

मनु० अ० १० श्लो० ७०

कोई वीर्य्य प्रधान कहते हैं और कोई क्षेत्र को प्रधान बतलाते हैं और कोई दोनों ही को प्रधान बतलाते हैं, परन्तु इन में मुख्य प्रधानता किस की है इस विषय की व्यवस्था यह मिलती है कि :-

अक्षेत्रे बीजमुत्सृष्टमन्तरैव विनश्यति।
अबीजकमपि क्षेत्रं केवलं स्थण्डिलं भवेत् ॥ ७१ ॥
यस्माद्बीजप्रभावेण तिर्य्यग्जा ऋषयोऽभवन्।
पूजिताश्च प्रशस्ताश्च तस्माद्बीजं प्रशस्यते ॥ ७२ ॥

मनु० अ० १० श्लो० ७१, ७२

ऊपर में बोया हुआ बीज भीतर ही नाश को प्राप्त हो जाता है और अच्छा खेत भी हो परन्तु बीज अच्छा न हो तो भी पैदा नहीं होता है ॥ ७१ ॥ तो भी बीज के प्रभाव से तिर्यक योनि अर्थात् हरिणी से पैदा हुये शृंगादि ऋषि सर्वत्र पूज्य व प्रतिष्ठित हुये अतएव बीज प्रधान है ७२

इसही नियम को पं० हरिकृष्ण जी शास्त्री ने भी माना तथा वर्ण संकर जाति विवेकाध्याय के रचयिता ने भी माना है पुनः और भी लिखा है कि:—

ब्रीहयः शालयो मुद्गास्तिला माषास्तथा यवाः।
यथाबीजं प्ररोहन्ति लशुनानीक्षवस्तथा ॥ ३९ ॥
अन्यदुप्तं जातमन्यदित्येतन्नोपपद्यते।
उप्यते यद्धि यद्बीजं तत्तदेव प्ररोहति ॥ ४० ॥

मनु० अ० ९ श्लो० ३९, ४०

अर्थः- साठी, धान, मूंग, तिल, उड़द, यव ये सब जैसे खेत में बोये जाते हैं वैसेही उत्पन्न होते हैं। वैसेही लहसुन व गन्ने आदि जो कुछ पृथिवी में बोये जायंगे वैसेही पैदाहोंगे इसलिये बीज प्रधान है। पुनः-

बीजस्य चैव योन्याश्च बीजमुत्कृष्टमुच्यते ।
सर्वभूतप्रसूतिर्हि बीजलक्षणलक्षिता ॥ ३५ ॥

यादृशं तूप्यते बीजं क्षेत्रे कालोपपादिते ।
तादृग्रोहति तत्तस्मिन्बीजं स्वैर्व्यञ्जितं गुणैः ॥ ३६ ॥

मनु० अ० ६ श्लो० ३५. ३६

भा०-बीज व क्षेत्र में बीज प्रधान कहा जाता है क्योंकि सम्पूर्ण जीवों की उत्पत्ति बीजों के लक्षण ही से जानी जाती है अर्थात् जैसा बीज होता है उस ही जाति का उस में फल लगता है।

पुत्रं प्रत्युदितं सद्भिः पूर्वजैश्च महर्षिभिः ।
विश्वजन्यमिमं पुण्यमुपन्यासं निबोधत ॥ ३१ ॥

मनु० अ० ६ श्लो० ३१

अर्थः- पुत्र के निर्णय विषय महर्षियों का यह कहा हुआ वाक्य है कि "भर्त्तुः पुत्रं विजानन्ति" पुत्र भर्त्ता का होता है अतएव पिता का पुत्र हुआ, इसलिये सिद्ध हुवा कि जिस का बीज है उस ही का पुत्र कहाता है और उसकी जाति पिता के तुल्य होती है।

अब अनेकों प्रमाणों से भले प्रकार दिखला चुके हैं कि वीर्य्य प्रधान लियाजाता है इन धर्म्मशास्त्रादि के वाक्यों के अतिरिक्त श्रीमद्भागवत जिस को हिन्दू लोग पञ्चम वेद मानते हैं उस में एक आख्यायिका इस प्रकार से है कि बृहस्पति जीकी स्त्री तारा का गुप्त सम्बन्ध चन्द्रमा के साथ होगया तिस से वह गर्भिणी हुयी और पुत्र का जन्म हुआ तिस का नाम बुध रक्खागया उस को चन्द्रमा तो कहता था कि यह मेरा

चन्द्रमा ने बृहस्पति जी की स्त्री अपनी गुरु पत्नि के साथ विषय किया, जिस से बुध नाम पुत्र उत्पन्न हुआ तब बृहस्पति जी बुध को अपना पुत्र मान उस का नामकर्ण संस्कार करने लगे, तब चन्द्रमा ने कहा कि यह पुत्र मेरा है इस का नाम करण मैं करूंगा अन्त में चन्द्रमा व बृहस्पति जी में पुत्र विषयक विवाद बढ़ा तब सम्पूर्ण देवता व ऋषिगण ने एकत्रित होकर निश्चित किया कि "जिसका वीर्य्य उसही का पुत्र है" तदनुसार वह बुध नामक पुत्र चन्द्रमा को दिया गया* अतएव वर्ण निश्चय करने के लिये वीर्य्य प्रधानता का नियम लेना ही शास्त्र सम्मत है।

ब्राह्मण्यां ब्राह्मणाज्जातो ब्राह्मणःस्यान्नसंशयः।
क्षत्रियायां तथैवस्याद्वैश्यायामपि चैवहि ॥

महाभा० अनुशासन पर्व अ० ४७ श्लो० २८

अर्थः-" ब्राह्मणी क्षत्रिया वैश्यासु ब्राह्मणाज्जातो ब्राह्मणः" अर्थात् ब्राह्मण के वीर्य्य से ब्राह्मणी में, क्षत्रियाणी में, वैश्या में, जो सन्तान पैदा हो वह ब्राह्मण होती है, इस ही तरह क्षत्रिय के वीर्य्य से क्षत्रिया में, वैश्या में, व शूद्रा में पैदा हुयी सन्तान क्षत्रिय होती है तैसे ही वैश्य के वीर्य्य से वैश्या और शूद्रा में पैदा हुयी सन्तान वैश्य वर्ण में होती है।

ओ३म्
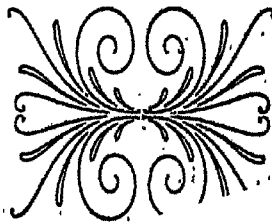
# ब्राह्मण निर्णय

ब्राह्मण :-यह हिंदू धर्म्मानुकूल वर्णाश्रम क्रम से सर्वोच्च वर्ण है, इस ही को लोगों ने जाति भी मान रक्खी है। और इस वर्ण के लोगों को ब्राह्मण जाति कहकर भी पुकारते हैं, प्रजापति ब्रह्मा जी के मुखसे उत्पन्न होने के कारण ब्राह्मण नाम पड़ा, इसकी व्युत्पत्ति ऐसी होती है कि " ब्राह्मणो विप्रस्य प्रजापतेर्वा अपत्यम् " अर्थात् जो विप्र प्रजापति की सन्तान हैं वे ब्राह्मण कहाये, अथवा " ब्रह्म वेदस्तमधीते स ब्राह्मणः " अर्थात् जो सांगोपांग वेद को पढ़ाता है वह ब्राह्मण कहाता है। कोपकार ने ब्राह्मण के छः नाम लिखे हैं यथाः-

आश्रमोऽश्री द्विजात्यग्र जन्मभूदेव वाड़वाः ।
विप्रश्च ब्राह्मणोऽसौ षटकर्मा यागादिभिर्वृतः ॥

अमर कोप ब्रा० व० द्वि० कां० श्लो० ४ ।

अर्थ :-द्विज, अग्रजन्मा, भूदेव, वाडव, विप्र और ब्राह्मण ये ६ नाम ब्राह्मण के हैं। इस ही जाति पर मीमांसा करना है, इसही जाति के कर्तव्याऽकर्तव्य, लक्षण, कर्म्म, धर्म्म तथा उत्पत्त्यादि की मीमांसा रूपी यह " ब्राह्मण मीमांसा " ग्रन्थ है । अन्य अन्य कोषों में ब्राह्मण शब्द के पर्य्यायवाची कई शब्द लिखे हैं यथा :-

शब्द रत्नावलि में लिखा है कि द्विज, सूत्रकण्ठः, ज्येष्ठ वर्णः, अग्रजातकः, द्विजन्मा, वक्त्रज, मैत्रः, वेदव्यासः, नयः, गुरुः ये नाम ब्राह्मण के हैं, इस ही तरह राज निघंटु में लिखा है कि ब्रह्मा, षटकर्म्मा, और द्विजोत्तम ये नाम ब्राह्मण के हैं।

इन्हीं के विषय में नाना ग्रन्थों के सिद्धान्त देते हैं अर्थात् उपनिषदों में ब्राह्मण शब्द पर शास्त्रार्थ इस प्रकार से चला है :-

| ब्राह्मण जन्म से होता है वा गुण कर्म स्वभाव से ? |
|---|

यह एक बड़ा जटिल तथा विवादास्पद विषय है, अर्थात् आर्य्य सामाजिकों का कहना है कि 'कर्म से ब्राह्मण होता है" यानी कोई भंगी भी हो और वह ब्राह्मण के कर्म करे तो वह ब्राह्मण हो जाता है, पर हिन्दुओं का कहना है, कि ब्राह्मण जन्म ही से होता है, परन्तु हमारे विचार में दोनों ही ठीक नहीं क्यों कि हमारे शास्त्रीय अनुभव से ये दोनों ही ठीक नहीं, बल्कि ब्राह्मण जन्म तथा गुण, कर्म इन तीनों से माना जाना चाहिये, हां कहीं कहीं जो गुण कर्म के प्रमाण मिलते हैं वे इस युग के आधारानुसार नहीं हैं किन्तु जिस समय ब्रह्मसृष्टी उत्पन्न हुयी थी वे वाक्य उस समय के हैं इसलिये लिखा है कि :-

| ब्राह्मण किस को कहना चाहिये |
|---|

वज्र सूचि उपनिषद में ब्राह्मण शब्द की कसौटी बतला कर ऋषि ने ब्राह्मणत्व का खूब ही अच्छा निर्णय किया है और शंका समाधान करते हुये आख्यायिका द्वारा यह समझाया है कि मनुष्यों में क्या ब्राह्मण, शरीर को कहते हैं? क्या ब्राह्मण जीव का नाम है? क्या ब्राह्मण देह का नाम है? क्या ब्राह्मण किसी प्रकार के वर्ण (रंग रूप) विशेष का नाम है? क्या ब्राह्मण कर्म का नाम है? अथवा ब्राह्मण कोई ऐसी जाति है कि जिस के देखने मात्र से ही ब्राह्मणत्व का निश्चय होजाय? क्या पंडित हो जाने से ब्राह्मण कहाया जासकता है? क्या धर्म करने से ब्राह्मण होसकता है? इत्यादि २ प्रश्नों को लेकर ऋषि ने इस जटिल गूढ़ प्रश्न को निर्णयकर के सुलभ कर दिया है, तिस आख्यायिका का भावार्थ यहां दिया जाता है।

यहां जिज्ञासु का प्रश्न है कि:-

## ( १ ) को ब्राह्मणो ?

प्र० ब्राह्मण कौन कहाया जा सकता है? क्यों कि मनुष्य शरीर सब एकसे हैं ब्राह्मण के शरीर में ऐसी कौनसी भिन्नता रक्खी गई है

जिस के देखने मात्र से ही ब्राह्मण जान लिया जाय ? अतः जिज्ञासु पूछता है कि अधिति भगवन् ! "को ब्राह्मणो ? किं जीवः ?" कि भगवन् कहिये कि ब्राह्मण कौन है ? क्या शरीर में जो जीव है उसे ब्राह्मण समझना चाहिये ?

उत्तर :—जीवो ब्राह्मण इति चेत्तर्हि सर्वस्यापि जनस्य जीवस्यैक रूपत्वात्तस्माज्जीवो ब्राह्मणो न भवत्येव ।

उत्तरः—जीव ब्राह्मण नहीं है, क्यों कि प्राणीमात्र में जीव सब में एकसा है, सब को एकसा सुख दुःख प्रतीत होता है, जीव के‡ जो लक्षण शास्त्र में वर्णित हैं वे सब ही जीवों पर एकसे संघटित होते हैं; मनुष्य के जीव में व पशु के जीव में जो भिन्नता है वह केवल इन्द्रीय संसर्ग की है अर्थात् मनुष्य पंच ज्ञानेन्द्रिय व पंच कर्म्मेन्द्रिय तथा मन इन ग्यारह इन्द्रियों का स्वामी है, तो पशुओं में ज्ञानेन्द्रियों का अभाव है, अन्यथा क्षत्रिय का जीव, वैश्य का जीव व शूद्र का जीव, तथा महाशूद्र व भंगी तक के जीव में कुछ भी भेद नहीं है, अतः सिद्ध हुवा कि जीव ब्राह्मण नहीं है । वेदान्त विषय को लेने से जीव जीव सब एक हैं, आवागमन के विषय को लेने से भी जीव जीव सब एक ही प्रमाणित होते हैं, इस सब हमारे कथन की पुष्टि में महाभारत में ऐसा प्रमाण मिलता है कि:-

सप्तव्याधादशारण्ये मृगाः कालिंजले गिरौ ।
चक्रवाकाः शरद्वीपे हंसाः सरसि मानसे ॥
तेऽपिजाताः कुरुक्षेत्रे ब्राह्मणा वेदपारगाः ।

अर्थः—दशारण्य में सप्तव्याध व कालिंजल पर्वत पर ७१० मृग

---

‡ जीव के लक्षण ये हैं :—

इच्छा द्वेष प्रयत्न सुख दुःख ज्ञानान्यात्मनो लिङ्गम्

न्याय द० अ० १ आ० १ सू० १० ।

अर्थ :-इच्छा द्वेष, प्रयत्न, सुख, दुख, ज्ञान और मन की चंचलता ये सब जीव के लक्षण हैं ।

तथा मानसरोवर झील पर हंस और शरद्वीप में चक्रवाक ये कुरुक्षेत्र में पैदा हुये थे वेदान्त प्रवीण ब्राह्मण थे।

पुनः

अधीत्य चतुरो वेदान् साङ्गोपांगेन तत्वतः।
शूद्रात्प्रति ग्रह ग्राही ब्राह्मणो जायते खरः॥
खरो द्वादश जन्मानि षष्ठि जन्मानि सूकरः।
श्वानाः सप्त जन्मानि इत्येवं मनुरब्रवीत॥

आ० मे० वि० सार।

अर्थः—सांगोपांग वेद वेदांगों का ज्ञाता ब्राह्मण शूद्र के यहां का दान लेलेवे तो वह ब्राह्मण बारह जन्म तक गधे की योनि, साठ जन्म तक सूअर तथा सात जन्म तक कुत्ते की योनि को प्राप्त होता है, अतएव यदि जीव ब्राह्मण होता तो ऐसे ऐसे अनेकों विधान ब्राह्मण जीव के लिये नहीं होते, इस के यह ही निश्चय होता है कि जीव ब्राह्मण नहीं है।

## दूसरा प्रश्नः—

[२] किं जातिर्ब्राह्मण इति ?

(२) प्र० क्या जाति ब्राह्मण है ?

उत्तर—जातिर्ब्राह्मण इति चेत्तर्हि अन्य जातौ समुद्भवा बहवो महर्षयः संति ऋष्य शृंगो मृग्यां जातः कौशिकः कुशस्तम्बात् गौतमाः शश पृष्ठे वाल्मीकि वल्मीक्यां, व्यासः कैवर्तकन्यायां, पराशरश्चांडालि गर्भोत्पन्नः, वशिष्ठो वेश्यायां, विश्वामित्रः क्षत्रियाम्, अगस्तयः कलशाज्जातो, मांडव्यो मांडुकि गर्भोत्पन्नः, मातंगो मातंगी पुत्रः, अचलो हस्तिनि गर्भोत्पन्नः, भारद्वाजः शूद्री गर्भोत्पन्नः, नारदो दासी पुत्रः, इति श्रूयते पुराणे तेषां जाति विनापि सम्यग् ज्ञानविशेषाद्ब्राह्मणत्वं स्वीकियते तस्माज्जात्या ब्राह्मणो न भवत्येवेति।

भावार्थः—यदि यह माना जाय कि जाति ही ब्राह्मण होती है तो यह भी उचित नहीं, क्योंकि अन्य अन्य नीच जातियों में पैदा हुये बहुत ऋषी

श्वर हैं। जैसे ऋष्य शृंग मुनि हरिणी के पेट से पैदा हुये थे, कौशिक ऋषि दर्भ के गुच्छे से पैदा हुये थे, गौतम ऋषि शशा के पेट से, वाल्मीकि मुनि वल्मीकि ( मिट्टी के ढेर से ), व्यास जी कैवर्त कन्या यानी भील की कन्या से, पराशर चांडालिनी ( भंगिन से ), वशिष्ठजी वेश्या नाम रंडी से, विश्वामित्र जी क्षत्रिया से, अगस्त्य ऋषि फूल से, मांडव्य ऋषि मांडुकी से, मातंग ऋषि मातंगी से, अचल मुनि हथिनी से, महर्षि नारद दासी से, भारद्वाज ऋषि शूद्री से, आदि आदि अनेकों उदाहरण पुराणों में ऐसे मिलते हैं कि जिन की ब्राह्मण जाति में उत्पत्ति नहीं है, तथापि वे अपने कर्म प्राबल्य से अत्यन्त ब्राह्मणता को पाये हैं। इसलिये सार यह निकला कि जाति ब्राह्मण नहीं होती है। इस ही की पुष्टि में महाराष्ट्र ब्राह्मण विद्वान पं० पांडोबा गोपाल जी ने अपना जातिनिबंध सन् १८८४ में गणपति कृष्ण जी के छापेखाने में छपा कर प्रसिद्ध किया, उस महाराष्ट्र ( मरहठी ) भाषा के ग्रन्थ के पृष्ठ १४२ में ऐसा लिखा है कि:-

हस्तिन्या मचलो जाता उलूक्यां केशपिंगलः
अगस्त्योऽगस्तिपुष्पाच्च: कौशिकाः कुशिसम्भवः
कपिलः कपिलाज्जातः शलगुल्माच्च गौतमः।
द्रोणा चार्य्यास्तु कलशा, तित्तिरीस्तित्तिरी सुतः
रेणुकाऽजनयद्रामः मृष्यशृंगमुनिं मृगी ॥
कैवर्तिन्य जनद्व्यासं कौशिकं चैव शूद्रिकाः।
विश्वामित्रं च चाराडाली वशिष्ठं चैव उर्वशी ॥
नतेषां ब्राह्मणी माता लोका चाराच्च ब्राह्मणाः॥

अर्थ—अचलमुनि हथनी के पेट से पैदा हुये, अगस्त्य ऋषि अगस्ति के फूल से, कौशिक ऋषि कुशा घास से, कपिल मुनि बंदरी से, गौतम मुनि शालगुल्म नामक बल्लि से, द्रोणाचार्य्य जी द्रोण से, तित्तिर ऋषि तित्तरी से, परशुराम जी महाराज रेणुका नाम धूल से, शृंगी ऋषि हिरनी से, व्यास जी महाराज कोलनी से, विश्वामित्र चांडालनी

से * तथा वशिष्ठ ऋषि उर्वशी नाच गान करने वाली अप्सरा से, इत्यादि इन में एक की भी ब्राह्मणी माता नहीं थी, परन्तु ये सब श्रेष्ठ ऋषि कैसे मान लिये गये ? अतःजाति ब्राह्मण नहीं ऐसा सिद्ध होता है।

पुनः जिज्ञासु प्रश्न करता है कि।

## ३ किं देह ?

३ क्या देह अर्थात् शरीर ब्राह्मण है ?

उत्तरः—देहो ब्राह्मण इति चेत्तर्हि चांडाल पर्य्यन्तानां मनुष्याणां देहस्य जरा मरण दर्शनात्तस्माद्देहो ब्राह्मणो न भवत्येव पुनर्देहो ब्राह्मण इति चेत्तर्हि पितृ मातृ शरीर दहनात पुत्राणां ब्रह्म हत्यादिदोष संभवःतस्माद्देहो ब्राह्मणो न भवत्येव।

अर्थ—यदि इस देह को ब्राह्मण मानें तो भी ठीक नहीं, क्योंकि ब्राह्मण से लेकर चांडाल पर्य्यन्त देह देह सब की एक सी होती हैं, तब देह ब्राह्मण कैसे हो सक्ती है ? पुनः यदि देह ही ब्राह्मण मानी जाय तो मृतक माता पिता की देह को जलाना नहीं चाहिये और ऐसी दशा में मृतक के पुत्रादिकों को ब्रह्महत्या का पाप लगना चाहिये, परन्तु पाप नहीं लगता है, कारण-यह देह जो है मिट्टी मानी गयी। अतःसिद्ध हुआ कि देह ब्राह्मण नहीं है।

पुनःजिज्ञासु प्रश्न करता है कि :-

## ४ किं वर्णः ?

४ क्या काले, पीले, हरे, लाल आदि आदि रंगों में से ब्राह्मण का कोई मुख्य रंग होता है, जिस को देखकर ब्राह्मण पहिचान लिया जाय ?

उत्तरः—वर्णो ब्राह्मण इति चेत्तर्हि ? ब्राह्मण वर्ण दर्शनाभावात् संकर दर्शनात् तस्माद्वर्णो ब्राह्मणो न भवत्येव।

उ० ब्राह्मण का कोई ऐसा विशेष रंग माना जाय तो स्वरूप व रंग प्रायः ब्राह्मण व शूद्र के मिल जाते हैं अर्थात् प्रायःशूद्र व ब्राह्मण दोनों में

---

* एक विद्वान ने क्षत्रिया से लिखा है।

केवल उन का रंग मात्र देखकर कोई यह नहीं बतासक्ता कि अमुक पुरुष ब्राह्मण है व अमुक पुरुष शूद्र है, अतः वर्ण व रंग से भी कोई मनुष्य ब्राह्मण नहीं माना जा सक्ता है।

पुनः जिज्ञासु शंका करता है कि:-

## ५ किं कर्म्मः ?

क्या ब्राह्मण कैसे कोई षट कर्म करने लग जाय, तो क्या वह कर्म करने से ब्राह्मण हो जायगा ?

उत्तर :-कर्म ब्राह्मण इति चेत्तर्हि ब्राह्मणःशतवर्षाणि जीवति क्षत्रियस्तदर्धं वैश्यस्तदर्धं, शूद्रस्तदर्धं मिति नियमाभावात् तस्मात्कर्म्म ब्राह्मणो न भवत्येव।

यदि कर्म ही ब्राह्मण मान लिया जाय तो ब्राह्मण की आयु सौवर्ष क्षत्रिय की ५० वर्ष वैश्य की २५ तथा शूद्र की १२ वर्ष की होनी चाहिये, परन्तु ऐसा हम नहीं देखते क्योंकि सैकड़ों वे मनुष्य जिन्हें हम ब्राह्मण मान रहे हैं वे १२ व २५ वर्ष में ही मर जाते हैं, तो सैकड़ों वे मनुष्य जिन्हें हम शूद्र मान रहे हैं वे सौ सौ वर्ष से अधिक भी उमर के जीते हुये देखे जाते हैं अतः कर्म ब्राह्मण नहीं ऐसा सिद्ध होता, है।

पुनःजिज्ञासु प्रश्न करता है कि:-

## ६ किं पाण्डित्यम् ?

६ क्या पण्डित हो जाना ब्राह्मणत्व है ? तो उत्तर मिलता है कि:-

उत्तर :-पाण्डित्यं ब्राह्मण इति चेत्तर्हि क्षत्रिय वैश्य शूद्रादयपि पद पदार्थ वाक्य प्रमाण विज्ञानाः बहवस्सन्ति तस्मात्पाण्डित्येन ब्राह्मणो न भवत्येव।

यदि यह माना जाय कि पढ़ लिख कर पंडित होजाने से ब्राह्मण हो जाता हो तो यह भी ठीक नहीं क्योंकि बड़े बड़े गूढ़ पदों व वाक्यों के पद पदार्थ व विज्ञानादि को जानने वाले आज कल अनेक क्षत्रिय वैश्य व शूद्र पण्डित हैं पर वे ब्राह्मण नहीं माने जाते हैं, अतएव पण्डित हो जाना ब्राह्मण नहीं कहाया जा सक्ता।

पुनः जिज्ञासु शंका करता है कि :-

## ७ किं धार्मिनयम् ?

क्या धार्मिक होना ब्राह्मणपन है ?

उत्तर :—धर्माद् ब्राह्मण इति चेत्तर्हि क्षत्रिय वैश्य शूद्रादयाश्चा-पूर्तादि धर्म कारिणो बहवस्सन्ति तस्माद्धर्मा ब्राह्मणो न भवत्येव ।

यदि यह माना जाय कि धर्म करने से ब्राह्मण हो जाता है तो सैंकड़ों क्षत्रिय वैश्य व शूद्रादि धर्म करते हैं पर ब्राह्मण नहीं होते हैं, अतएव सिद्ध होता है कि धर्म करने से भी ब्राह्मण नहीं हो सक्ता है ।

पुनः जिज्ञासु कहता है कि:- हे भगवन् यदि ।

**ब्राह्मणत्वं न शास्त्रेण न संस्कारैर्नजातिभिः ।**
**न कुलेन न वेदेन कर्म्मणा न भवेदतः ।**

ब्राह्मणत्व शास्त्र पढ़ने से भी नहीं आता है, संस्कार करने से भी नहीं आता है, ब्राह्मण कुल में पैदा होने से भी नहीं आता है, वेद पढ़लेने से भी नहीं आता है, कर्म करने से भी ब्राह्मणत्व नहीं आता है। तो फिर ब्राह्मणत्व काहे से आता है ? इस का उत्तर ऋषि देते हैं कि:-

**निर्ममो निरहंकारो निःसंगो निःपरिग्रहः ।**
**राग द्वेष विनिर्मुक्तस्तंदेवा ब्राह्मणं विदुः ॥**
**सत्यं व्रत तपो ब्रह्म ब्रह्म चेन्द्रिय निग्रहः ।**
**सर्व भूतेदया ब्रह्म एतद्ब्राह्मण लक्षणम् ॥**

अर्थः—जो मोह, अहंकार, संग, परिग्रह, राग, द्वेप आदि से मुक्त है उस को मैं ब्राह्मण कहता हूं ।

जो मनुष्य सत्य, तप, इन्द्रिय निग्रह युक्त व सम्पूर्ण प्राणियों पर दयावान है वही यथार्थ में सच्चा ब्राह्मण कहाया जासका है ।

## ॥ मूर्ख निन्दा ॥

मूर्ख पुत्राद पुत्रत्वं वरं वेद विदो विदुः ।
तथापि ब्राह्मणो मूर्खः सर्वेषां निद्य एवहि ॥२६॥

अर्थः-मूर्ख पुत्र के उत्पन्न होने से अपुत्र रहना भला है, तथापि ब्राह्मण वर्ण में मूर्ख होना अति ही निन्दनीय है ॥ २६ ॥

भावार्थः-ये सब श्लोक हिमुताद्रिखंड में लिखे हैं तथा श्री वेंकटेश्वर स्टीम प्रेस मुम्बई के छपे ब्रा० मा० के पृष्ठ ८७ में भी लिखे हैं पुनः और भी देखिये किः—

पशुवच्छूद्रवच्चैव न योग्यः सर्व कर्मसुः ।
यथाशूद्रस्तथा मूर्खः ब्राह्मणो नात्र संशयः ॥ २७ ॥

अर्थः- यदि वह मूर्ख है तो वह पशुवत् शूद्रवत् है और सम्पूर्ण उत्तम कर्मों के अयोग्य है जैसा शूद्र है वैसा ही मूर्ख ब्राह्मण को भी निः सन्देह रूप से समझना ।

भावार्थ- शास्त्र का मत ऐसा है कि मनुष्य को अपने ताईं ब्राह्मण कहाकर मूर्ख कदापि न रहना चाहिये परन्तु दुःख के साथ कहना पड़ता है कि ब्राह्मण जाति ने भीख के टुकड़े मांग कर खालेना ही अपना परम कर्तव्य मानलिया है ब्राह्मणों ने पठन पाठन से अपना मुंह मोड़ लिया है क्योंकि युक्तप्रदेश में सन् १९०१ की मनुष्य गणना के अनुसार कुल ब्राह्मणों की संख्या ४७५५२५८ है उन में पढ़े लिखे अनुमान १० फ़ी सैकड़ा मानेगये हैं ऐसी दशा में ब्राह्मण जाति के लिये लज्जा की बात है ऐसी शोचनीय दशा में शास्त्रकार की आज्ञा है कि मूर्ख ब्राह्मणों का सर्वथा त्याग होना चाहिये क्योंकि वे पशु व शूद्र के बराबर हैं और इस प्रमाण के अनुसार मूर्ख ब्राह्मण व शूद्र में कुछ भी भेद नहीं है ।

पुनः—

नच पूज्यो नदानार्हो निंद्यश्च सर्वकर्मसु ।
कर्षकस्तु द्विजः कार्य्यो न विप्रो वेद वर्जितः ॥ २८ ॥

अर्थ-जो ब्राह्मण खेती करते हैं वे दान व पूजा के योग्य नहीं हैं क्योंकि सम्पूर्ण उत्तम कर्म्मों में ये निन्दनीय हैं ।

वह मूर्ख ब्राह्मण पूजा करने व दान देने योग्य नहीं है आपत्ति काल में खेती करने वाले को भी ब्राह्मण मानलें परन्तु वेद के न जानने वाले को कभी ब्राह्मण न मानें ॥ ३८ ॥

भावार्थः-आजकल भारतवर्ष में पात्र कुपात्र का विचार नहीं, योग्य अयोग्य का विचार नहीं, मूर्ख पण्डित का विवेक नहीं, परन्तु भेड़िया-धसान की तरह नाम मात्र को कोई भी ब्राह्मण कैसा भी क्यों न हो लोग आंख मींच करके जो विवेक रहित कार्य्य कररहे हैं उन के अर्थ इस श्लोक का अभिप्राय यह है कि मूर्ख को दान देने में धर्म के स्थान में बड़ा पाप लगता है शास्त्र मर्य्यादा नष्ट होती है ऋषियों के पवित्र वाक्यों का उल्लंघन होता है और दाता भी नरक को जाता है जिस ही सिद्धान्त की पुष्टी आगे के श्लोक से भी होती है ।

विना विप्रेण कर्तव्यं श्राद्धं पित्रोश्चटेनवै ।
नतु मूर्खेण विप्रेण श्राद्धं कार्य्यं कदाचनः ॥ ३९ ॥

अर्थः- पिता के श्राद्ध में योग्य ब्राह्मण न मिलें तो कुशा ( डर्भघास ) रखकर ही गौग्रासादि निकालदें परन्तु मूर्ख ब्राह्मण को बुलाकर श्राद्ध न करे ॥ ३९ ॥ पुनः और भी देखिये :-

पद्म पुराण में नारद जी व मान्धाता राजा के सम्वाद की कथा का प्रसंग इस विषय का चला है कि—

श्राद्ध में कैसे ब्राह्मण को जिमाना चाहिये ?

इस प्रसंग में मान्धाता राजा श्री नारद जी से पूछते हैं —

मान्धातोवाच—

कीदृशेभ्यः प्रदातव्यं भवच्छ्राद्धं महामुने ।
द्विजेभ्यः किं गुणिभ्योवा तन्मे व्याख्यातु महर्षि ॥

अर्थ-भगवन् ! आप के श्राद्ध में कैसे ब्राह्मणों को निमन्त्रण करना चाहिये ? और कैसों को नहीं ? अतएव उन ब्राह्मणों के गुण अवगुण

कहने वाले एकमात्र आप ही समर्थ हैं तब महर्षि नारद जी महाराज बोले :—

### नारदो वाच

श्राद्धे त्वथ महाराज ! परीक्षेद्ब्राह्मणां बुधः ।
कुलशील वयो रूपै विद्यया भिजनेनच ॥ १ ॥
तेषा मन्ये पङ्क्ति दूषास्तथान्ये पङ्क्तिपावनाः ।
अपाङ्क्तेयास्तु ये राजन् ! कीर्तियिस्यामि तान् शृणु. २

अर्थ-हे राजन् ! श्राद्ध में बुलाने के लिये ब्राह्मणों की परीक्षा करना चाहिये, कुलशील स्वभाव, रूपवान, विद्यादि गुण देखना चाहिये ॥ १ ॥ ब्राह्मणों में दो प्रकार के ब्राह्मण होते हैं पङ्क्तिदोषी और पङ्क्ति पावन, परन्तु हे राजन् ! जो अपाङ्क्तेय अर्थात् उत्तम कर्मों की पंगत में जो बैठने योग्य नहीं हैं उन ब्राह्मणों के गुण अवगुणों की कीर्ति को मैं तुम्हें सुनाता हूं सो तुम सुनों ।

कितवो भ्रूणहा यक्ष्मी पशुपालो निराकृतिः ।
ग्रामप्रेष्यो वार्द्धुषिको गायनः सर्व विक्रयी ॥ १ ॥
अगार दाही गरदः कुण्डाशी सोमविक्रयी ।
सामुद्रिको राजदूतस्तैलिकः कूटकारकः ॥ २ ॥
पित्रा विवद मानश्च यस्य चोप पतिर्गृहे ।
अभिशस्तस्तथास्तेनः शिल्पं यश्चोप जीवति ॥ ३ ॥
पर्वकारश्च सूची च मित्रध्रुक पारदारिकः ।
अव्रतानामुपाध्यायः काण्ड पृष्टस्तथैवच ॥ ४ ॥
श्वभिश्च यः परिक्रामेद्यः श्वना दष्ट एवच ।
परिवित्तिस्तु यश्च स्यात् दुश्चर्म्मा गुरुतल्पगः ॥ ५ ॥

कुशीलवो देवलको नक्षत्रैयश्च जीवति।
ईदृशा ब्राह्मणा ये च अपांक्तेयास्तु ते मताः ॥ ६ ॥
रक्षांसि गच्छते हव्यं यदेषान्तु प्रदीयते।
श्राद्धे भुक्त्वा महाराज ! दुश्चर्म्मा गुरुतल्पगः ॥ ७ ॥
श्राद्धं नाशयते यस्य पितरोऽपि न भुञ्जते।
सोम विक्रयिणो दत्तं विष्ठा तुल्यं भवेन्नृप ॥ ८ ॥
भिषजेशोणित समं नष्टं देवल के तथा।
अप्रतिष्ठं वार्द्धुषिके निष्फलं परि कीर्तितम् ॥ ९ ॥
वहु वाणिज के दत्तं नेह नामुत्र तद्भवेत्।
भस्मनीय हुतं हव्यं तथा पौनर्भवे द्विजे ॥ १० ॥
ये तु धर्म व्यपेतेषु चरित्रा पगतेषु च।
हव्यं कव्यं प्रयच्छन्ति तेषां तत् प्राय नश्यति ॥ ११ ॥
ज्ञान पूर्व्वन्तु ये तेभ्यः प्रयच्छन्त्यल्प वुद्धयः।
पुरीषं भुञ्जते तस्य पितरः प्रेत्य निश्चितम् ॥ १२ ॥
एतान् विद्धि महावाहो अपांक्तेयान् द्विजाधमान्।
शूद्राणामुपदेशन्तु ये कुर्वन्त्यल्प वुद्धयः ॥ १३ ॥
षष्टिं काणाः शतं खञ्जः श्वित्री यावत्प्रपश्यति।
पङ्क्तयां समुप विष्टायां तावद्दूषयते नृप ॥ १४ ॥
यद्वेष्टित शिराभुंक्ते यद्भुंक्ते दक्षिणा मुखः।
सोपान त्कश्च यद्भुंक्ते सर्व विद्यात्तदा सुरम् ॥ १५ ॥
असूयते च यद्दत्तं यच्च श्रद्धाविवर्ज्जितम्।
सर्वं तदसुरेन्द्राय ब्रह्मा भागमकल्पयत् ॥ १६ ॥

श्वानश्च पंक्ति दूषाश्च नावेक्षेरन् कथञ्चन।
तस्मात् परिवृते दद्यात्तिलांश्चान्ने विकिरयेत्॥ १७॥
तिलैर्विरहितं श्राद्धं कृतं क्रोधवशेन च।
यातुधानाः पिशाचाश्च विप्रलुम्पन्ति तद्धवि॥ १८॥
अपांक्तयो यतः पंक्तयां भुञ्जानो ननुपश्यति।
तावत् फलाद् भ्रंशयति दातारं तस्य बालिशं॥ १९॥

अर्थः- छली, भ्रूण हत्यारे, रुपये ब्याजू देकर ब्याज द्वारा निर्वाह करने वाले, यक्ष्मारोग वाले, पशुपाल कर जीविका करने वाले, गांव के सेवक, गाना बजाना करने व स्वांग भरकर नाचने वाले और दुकान्दारी करने वाले ब्राह्मण श्राद्ध में जिमाने योग्य नहीं हैं॥ १॥

अग्नि लगाने वाले, विषदेने वाले, कुंडे में खाने वाले, शराब बेचने वाले, हस्तरेखा देखने वाले, हलकारागीरी करने वाले, तेल बेचने वाले और चावलों को कूटने वाले ब्राह्मण श्राद्ध में बुलाने योग्य नहीं हैं॥ २॥

पिता से लड़नेवाला, और जिस की स्त्री व्यभिचारिणी यानी उपपति वाली हो, और जो शिल्प विद्या करके जीविका करता हो वह ब्राह्मण श्राद्ध में न्योतने लायक नहीं है॥ ३॥

पर्वकार, दर्जी का काम करने वाले, मित्रद्रोही, व्यभिचारी, ब्रह्मचर्यादि व्रतों के न पालने वालों को पढ़ाने वाले और शस्त्र से आजीविका करने वाले ब्राह्मण श्राद्ध में जिमाने योग्य नहीं हैं॥ ४॥

कुत्ते के समान घर घर भटकने वाले, कोढ़ी, और अपने गुरु की स्त्री के साथ भी भोग करने वाले ब्राह्मण श्राद्ध में जीमने को बुलाने योग्य नहीं हैं॥ ५॥

बुरे स्वभाववाले, मन्दिरों के पुजारी, ग्रहगोचर बतलाकर टेवा-जन्मपत्री द्वारा आजीविका करनेवाले नक्षत्र जीवी यानी ज्योतिषी, आदि आदि गुण वाले ब्राह्मण अपांक्तेय कहाते हैं॥ ६॥

प्रश्नः—यदि ऐसे गुणवाले ब्राह्मणों को श्राद्धादि में दानादि से सत्कार किया जावे तो उसका क्या फल होगा?

उत्तरः—हे राजन्! जो ऐसे गुण वाले ब्राह्मणों को दान देते हैं उन का वह दान राक्षसों को मिलता है ॥ ७ ॥

ऐसे ब्राह्मणों को श्राद्ध में जिमानेवालों का श्राद्ध नाश हो जाता है और पितृश्वर भी उस श्राद्ध के भोजन को नहीं करते हैं तथा हे राजन्! जो लोग शराब वेचने वाले ब्राह्मणों को श्राद्ध में जिमाते हैं उनका श्राद्ध का भोजन विष्टा के बराबर होजाता है ॥ ८ ॥

और हे राजन्! वैद्यों व हकीमों को श्राद्ध में जिमाना रुधिर के समान है और मन्दिरों के पुजारियों को जिमाना सब कुछ किया कराया नष्ट कर देना है तथा हे राजन्! व्याजवृत्ति करने वालों को जिमाना सब कुछ किया कराया निष्फल कर देना है ॥ ९ ॥

और व्यापार करने वाले ब्राह्मण को श्राद्धादि में जिमाना मानो राख में घी होमने के बराबर है, तैसे ही पुनर्विवाह से उत्पन्न हुये ब्राह्मण को श्राद्ध में जिमाना भी राख में घी होमने के समान ही है ॥ १० ॥

जो धर्मविमुख हैं और कुचरित्री हैं ऐसे ब्राह्मणों को भी हव्य कव्य देना मानो सब कुछ नाश कर देने के बराबर है ॥ ११ ॥

इसलिये हे राजन्! श्राद्ध में ब्रह्म कर्मनिष्ठ ब्राह्मण को जिमाना चाहिये और जो उपरोक्त गुणवाले अपांक्तेय ब्राह्मणों को जिमाते हैं उन के पितर भोजन के स्थान में पुरीष * खाते हैं ॥ १२ ॥

हे महाबाहो! उन ब्राह्मणों को भी अपांक्तेय और द्विजाधम जानो जो शूद्रों को उपदेश करते हैं ॥ १३ ॥

काणा, चांयला, लूला, लंगड़ा ये भी श्राद्ध में बैठने योग्य नहीं हैं १४

जो सिरपर पगड़ी आदि पहिने जीमते हैं, दक्षिण दिशा की ओर मुख करके जीमते हैं, जो जूते पहिने जीमते हैं, ये सब राक्षस के बराबर हैं ॥ १५ ॥

जो निन्दक हैं, दूसरों से ईर्षा करनेवाले हैं वे भी श्राद्ध में आने योग्य नहीं हैं ॥ १६ ॥

पंक्ति दूषक ब्राह्मणों को कुत्ते के समान मानना चाहिये उन्हें केवल शुष्क अन्न व तिल देदेने चाहियें ॥ १७ ॥

---

* गू, मैला।

जो अपांक्तेय ब्राह्मणों को श्राद्धादि में दान देता है वह दान निष्फल हो जाता है और वह दाता मूर्ख है ॥ १८–१९ ॥

प्रश्न–पंक्तिपावन ब्राह्मण यानी श्राद्धादि उत्तम कर्मों में बुलाने योग्य ब्राह्मण कैसे होते हैं ? इस का उत्तर महर्षि नारद जी महाराज यों देते हैं कि :—

## पंक्ति पावन

इमेहि मनुजः श्रेष्ठ ! विज्ञेया पंक्ति पावनाः ।
विद्या वेद व्रतस्नाता, ब्राह्मणा सर्व एवहि ॥ १ ॥
सदाचार परश्चैव विज्ञेयाः पंक्ति पावनाः ।
माता पित्रोर्तश्च वश्यः श्रोत्रियो दश पूरुषः ॥ २ ॥
ऋतुकालाभिगामीच धर्म्मपत्नीषु यः सदा ।
वेद विद्या व्रतस्नातो विप्रः पंक्तिं पुनात्युत ॥ ३ ॥
अथर्व्वशिरसोऽध्येता ब्रह्मचारी यत व्रतः ।
सत्यवादी धर्मशीलः स्वकर्म निरतश्चयः ॥ ४ ॥
येच पुण्येषु तीर्थेषु अभिषेक कृतश्रमाः ।
मखेषु च समस्तेषु भवन्त्यव भृतप्लुतः ॥ ५ ॥
अक्रोधना ह्यचपलाः क्षान्ता दान्ता जितेन्द्रियाः ।
सर्व्वभूत हितायेच श्राद्धेश्वेतन्निमन्त्रयेत् ॥ ६ ॥
एतेषु दत्त मक्षय्य मेते वै पंक्ति पावनाः ।
यतयो मोक्षधर्मज्ञा योगाः सुचरितव्रताः ॥ ७ ॥
ये चेतिहासं प्रयताः श्रावयन्ति द्विजोत्तमान् ।
ये च भाष्यविदः केचिद् ये च व्याकरणारताः ॥ ८ ॥

अधीयते पुराणं ये धर्म शास्त्राणि चाप्युत ।
अधीत्य च यथान्यायं विधिवत्तस्य कारिणः ॥ ९ ॥
उपपन्नो गुरुकुले सत्यवादी सहस्रदः ।
अग्रयाः सर्वेषु वेदेषु सर्व प्रवचनेषुच ॥ १० ॥
यावदेते प्रपश्यन्ति पंक्तयां तावत् पुनन्तिच ।
ततोहि पावनात् पंक्तया उच्यन्ते पंक्ति पावनाः ॥ ११

अर्थ—हे राजन ! जो ब्राह्मण वेद विद्या में निपुण हों, ब्रह्मचर्य्यादि व्रतों का पालन किये हुये हों वेही श्राद्ध में बुलाने योग्य हैं ॥ १ ॥

जो सदाचारी हों, ब्रह्मविद्या के जाननेवाले हों, माता पिता के आज्ञाकारी हों, तथा श्रोत्रिय पद वाले हों वे श्राद्धादि कर्म्मो में बुलाने योग्य हैं ॥ २ ॥

जो धर्म्मानुकूल एक ही पत्नी वाले हों तथा अपनी पत्नी से भी ऋतुकाल के दसमें स्त्री संग करने वाले हों तथा वेद विद्या कर के व्रतस्नाती हों ऐसे ब्राह्मण श्राद्धादि कर्म्मो में जिमाने योग्य होते हैं ॥ ३

जो अथर्व वेद तक चारों वेदोंको सांगोपांग जानने वाला, ब्रह्मचारी हो, सत्यवादी हो, धर्मात्मा, शीलवान और जो अपने ब्रह्मकर्म को अक्षरशः पालन करनेवाला हो ऐसे ब्राह्मण को श्राद्ध में बुलाना चाहिये ॥ ४ ॥

जो बड़े बड़े पुण्य तीर्थों पर बड़े बड़े अभिषेक व यज्ञादि कर्म्म कराकर अवभृत स्नान करता हो वह ब्राह्मण श्राद्धादि में सम्मिलित किये जाने योग्य होता है ॥ ५ ॥

हे राजन् ! जिसे क्रोध न आता हो, जो मितभाषी हो, शान्त स्वभाव हो तथा जो जितेन्द्रिय हो और सम्पूर्ण जीवों पर मन, वचन, कर्म्म से दया रखने वाला हो उसे श्राद्ध में जिमाना चाहिये ॥ ६ ॥

ऐसे मोक्ष धर्म्मी ब्राह्मणोंको श्राद्धादि में बुलाना चाहिये ॥ ७ ॥

और हे राजन् ! जो इतिहास विद्या के जानने वाला हो, जो महाभाष्य का जानने वाला हो तथा जो व्याकरण शास्त्र में पारंगत हो वह ब्राह्मण श्राद्धादि में आदरणीय होता है ॥ ८ ॥

जो पुराणों के ज्ञाता, धर्म्मशास्त्र के वेत्ता, न्याय शास्त्र परायण हैं वह श्राद्धादि में आने के योग्य होते हैं ॥ ६ ॥

जो गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त, सत्यवादी आदि आदि गुणों युक्त हो वह श्राद्धादि में माननीय कहा जा सक्ता है ॥ १० ॥

इस प्रकार जो विवेक कर के ब्राह्मणों को श्राद्धादि में बुलाता है वे ब्राह्मण पंक्तिपावन कहाते हैं और ऐसे ही उपरोक्त गुणयुक्त ब्राह्मण श्राद्धादि के हव्य कव्य पदार्थ देने योग्य कहाते हैं ॥ ११ ॥

पुनः इस से आगे और भी कहा है कि :-

तस्मात् सर्व प्रयत्नेन परीक्ष्या मन्त्रयेद्द्विजान् ।
स्वकर्म निरतां शान्तान् कुले जातान् बहुश्रुतान् ॥ १२ ॥
यस्य मित्र प्रधानानि श्राद्धानि च हवींषित्र ।
न प्रीणाति पितॄन् देवान् स्वर्गञ्च न स गच्छति ॥१३
ब्राह्मणो ह्यनधीयानस्तृणादिरिव शाम्यति ।
तस्मिन्श्राद्धं न दातव्यं न हि भस्मनि हूयते ॥ १४ ॥
ऋषिणां समये नित्यं ये चरन्ति महीपते ।
निश्चिताः सर्व धर्म्मज्ञा स्तान्देवा ब्राह्मणान् विदुः ॥१५॥
स्वाध्याय निष्ठानिरता ज्ञाननिष्ठा स्तथैवच ।
तपोनिष्ठाश्च बोध्याः कर्मनिष्ठाश्च पार्थिवः॥ १६ ॥
पद्मपुराण स्वर्ग खंड अ० ३५

अतः हे राजन्! सम्यक् प्रकार से ब्राह्मणों की परीक्षा करके जो कुलीन हों, अपने षट कर्म्मों में रत हों तथा बहुश्रुत हों ऐसे ब्राह्मणों को श्राद्ध में जिमाना चाहिये ॥ १२ ॥

जिस के मित्रादि यज्ञादि कर्म्मों में प्रधान हों और वह उन की शिफ़ारिश से बुलाया जाय तो यजमान के पितर स्वर्ग को नहीं जाते हैं ॥ १३ ॥

जो ब्राह्मण पढ़ा लिखा न हो वह फूस की तरह से नष्ट हो जाता है अतः ऐसे ब्राह्मण को श्राद्ध में नहीं देना चाहिये क्योंकि भस्म में हवन करने से क्या लाभ ? ॥ १४ ॥

हे राजन् ! जो नित्य ऋषियों के मार्ग में चलते हैं वे निश्चित रूप से ब्राह्मण हैं ॥ १५ ॥

ऐसे ही जो स्वाध्यायी हैं, और निरन्तर ज्ञाननिष्ठ हैं और हे पार्थिव ! जो तपोनिष्ठ भी हैं तथा कर्म निष्ठ भी हैं वे ब्राह्मण श्राद्ध में आने योग्य हैं ॥ १६ ॥

नोट :- जिन्हें विशेष देखना हो पद्मपुराण स्वर्गखण्ड श्राद्ध पात्र निर्णय नामक ३५ वें अध्याय को तथा मनुस्मृति अध्याय ३ के श्लोक १८७ से १८४ तक देखें ।

पुनः और देखिये :-

यदिशूद्रां व्रजेद्विप्रो वृषली पतिरेव सः ।
स भ्रष्टो विप्रजातेश्च चाण्डालात् सोऽधमः स्मृतः ॥ १ ॥
विष्ठा समश्च तत्पिण्डो मूत्रं तस्य च तर्पणम् ।
तत्पितृणां सुराणाञ्च पूजने तत्समं सति ॥ २ ॥
कोटि जन्मार्जितं पुण्यं सन्ध्यार्चातपसार्जितम् ।
द्विजस्य वृषली भोगान्नश्यत्येव न संशयः ॥ ३ ॥
ब्राह्मणश्च सुरा पीति विभोजी वृषली पतिः ।
हरिवासर भोजीच कुम्भी पाकं व्रजेद् ध्रुवम् ॥ ४ ॥
ब्रह्म वै० पु० प्रकृति खं० अ० ३१ श्लो० ११७ से २०० ॥

अर्थ-यदि कोई ब्राह्मण किसी शूद्रा स्त्रीसे गुप्त प्रेम करे तो वह उस शूद्रा का पति ही कहाता है और ब्राह्मणत्व से भ्रष्ट हो जाता है और चाण्डाल से भी अधिक नीच हो जाता है ॥ १ ॥ ऐसा ब्राह्मण यदि पिण्डदान करता है तो उस का पिण्ड विष्ठा के सदृश हो जाता है तथा उस के हाथ का तर्पण मूत्र की धार के समान माना जाता है और उस का पितृ पूजन

तथा देव पूजन सब समान हैं ॥ २ ॥ परन्तु जो ब्राह्मण शूद्रा के साथ सम्भोग करते हैं उन का कोटि जन्मों का तप संध्यादि का फल नष्ट हो जाता है ॥ ३ ॥ हे राजन ! ऐसे गुणों युक्त ब्राह्मण या मद्य पीने वाला, शूद्रा का पति, हरि वासर भोजी तथा दिन भोजी, ब्राह्मण निश्चय पूर्वक कुम्भी पाक नरक में पड़ता है ॥ ४ ॥ पुनः—

न गृह्णन्ति सुरास्तेषां पितरः पिण्ड तर्पणाम् ।
स्वेच्छया तद्द्विजातेश्च त्रिसन्ध्य रहितस्यच ॥ ५ ॥

अर्थात्—ऐसे कर्म्मयुक्त ब्राह्मणों के हाथ से देव व पितर न पिंड दान व तर्पण भी नहीं लेते हैं जो स्वेच्छा पूर्वक त्रिसन्ध्या नहीं करते हैं ॥ ५ ॥

भाव:— देखा जाता है कि आज कल अंध परंपरानुसार पितृ श्राद्ध में मूर्ख व पंडित का कुछ विवेक ही नहीं किया जाता है जो आंटे आगया उसे ही जिमा दिया, मूर्ख लोग एक एक दिन में चार चार जगह श्राद्ध जीम आवें पर पण्डित को एक नोता भी न आवे तब ही तो धर्म का ह्रास होता जाता है, हाय ! भगवन् !! क्या कभी भारत में सदाचार की प्रवृत्ति फिर भी होगी ?

पुनः—

आहारादधिकं चान्यं न दातव्यम पंडित ।
दाता नरक माप्नोति ग्रहीतातु विशेषतः । ६ ।

अर्थः— मूर्ख को दान भी देना तो केवल भोजन मात्र अन्न देना दूसरे पदार्थ व भोजन से अधिक देने से दाता नरक को जाता है और लेने वाला घोरनर्क में पड़ता है ।

भा०— इस का अभिप्राय यह है कि आपत्ति काल में जीवरक्षार्थ केवल भोजन के तुल्य अन्न मात्र मूर्ख को देना चाहिये विशेष देने में वह मूर्ख उस का सदुपयोग न जान कर दाता सहित नरक में पड़ता है। इस ही भावार्थ की पुष्टि में लिखा है "दरिद्रान् भर कौन्तेय" अर्थात् दरिद्र को दान देनाचाहिये, परन्तु आज कल इस का कुछ विवेक नहीं करते हैं यह उन का अज्ञान है क्योंकि लिखा है कि "वृथा वृष्टिः समुद्रेषु वृथा

दीर्घस्य दीर्घता " अर्थात् समुद्र में वर्षा बरसे तो क्या लाभ ?. तथा बढ़े हुये को यानी धाये हुये मस्त को खिलाये तो क्या ? किन्तु भूखे को खिलाना चाहिये ।

पुनः-

सुमूर्खस्यच विप्रस्य यस्मान्न मुदरेगतम् ।
पच्यन्ते नरके घोरे सर्वे दैतस्यपूर्वजाः ॥४१॥

अर्थ :- जो श्राद्ध का अन्न मूर्ख ब्राह्मण के उदर में गया तो उस के सम्पूर्ण पितृगण नरक में पड़जाते हैं ।

भावार्थ :- यहां पर शास्त्र का मत है कि किसी भी काल में श्राद्ध में मूर्ख ब्राह्मण को जिमाने से उस यजमान के सम्पूर्ण पितृगण नर्क में पड़ जाते हैं परन्तु हाय भारत ! तुझ में व तेरे यजमानों में विवेक बुद्धि किञ्चित भी न रही अर्थात् वे लोग सब धान बाईस पंसेरी तोलने लगे और वे श्राद्धादि शास्त्रोक्त कर्म करते भी हैं परन्तु भगवन् ? वे शास्त्र मर्यादा भूले हुये हैं, क्या सदैव वे भूले ही रहेंगे ! क्या इस भारत में सच्चे उपदेष्टावों का अभाव ही बना रहेगा ? क्या हम सदैव अज्ञानी ही बने रहेंगे ? अस्तु !

लोभादि से रहित जो हैं वे ब्राह्मण कहाते हैं जिन के चित्तों में रागद्वेष की निवृत्ति हो चुकी है जिन्हों ने क्षमा, दया, दम, दान, सत्य, शौच, स्मृति और पापों से घृणा को धारण किया है वे ब्राह्मण कहाते हैं॥१०॥ तथा विद्या विज्ञान वेद व ईश्वर पर जिनकी श्रद्धा है तथा गायत्र्यादि मंत्रों के ज्ञाता जो हैं वे ब्राह्मण कहाते हैं ।

पुनः शास्त्रों में द्वादश महाव्रत लिखे हैं उन से भी ब्राह्मणत्व की मीमांसा का अच्छा बोध होता है यथा :—

ज्ञानञ्च सत्यं च दमं श्रुतं च
ह्यमात्सर्य्यं तितिक्षाऽनसूया ।
यज्ञश्चदानं च धृतिः शमश्च
महाव्रता द्वादश ब्राह्मणस्य ॥

श्रीमद्भागवत सप्तस्कन्धे

अर्थात् ब्राह्मणों के ये १२ महाव्रत हैं जिन्हें लक्षण भी कहसके हैं जैसे १ ज्ञानाभ्यास २ सत्य भाषण ३ इन्द्रिय दमन ४ शास्त्र श्रवण करना ५ दूसरे से डाह न करना ६ लज्जा रखना ७ सुख दुःख समान जानना ८ द्वेष रहित होना ९ यज्ञ करना कराना १० दान देना लेना ११ धैर्य्य रखना और १२ मन को जीतलेना । परन्तु हा ! शोक इन महाव्रतों में से ब्राह्मण जाति ने केवल दसवें व्रत की एक शाखा दान लेने मात्र को ही मुख्यतया ग्रहण करलिया है अस्तु ! ब्राह्मणत्व के क्या लक्षण हैं ? इस का उत्तर पुराणों से यों मिलता है कि:-

विशाखयूप उवाच

विप्रस्य लक्षणं ब्रूहि त्वद्भक्तिः कात्र तत्कृता ।
यतस्त वानु ग्रहेण वाग्वाणाः ब्राह्मणा कृताः ॥

अर्थ—विशाखयूप बोले कि हे भगवन ! ब्राह्मण के लक्षण क्या है सो कहो ? क्योंकि आप ही के वाक् बाण से ब्राह्मण उत्पन्न किये गये हैं तब इस प्रश्न के उत्तर में कल्कि जी महाराज कहते हैं ॥

कल्किरुवाच

यो धर्म्मो ब्राह्मणानां हि सा भक्तिर्मम पुष्कला ।
तयाहं तोषितः श्रीपः सम्भवामि युगे युगे ॥ १ ॥
ऊर्ध्वन्तु त्रिवृतं सूत्रं सधवा निर्म्मितं शनैः ।
तन्तुत्रयमधोवृत्तं यज्ञ सूत्रं विदुर्बुधाः ॥ २ ॥
त्रिगुणं तद्ग्रन्थि युक्तं वेदप्रवर सम्मितम् ।
शिरोधरान्नाभिमध्यात् पृष्ठार्द्ध परिमाणकम् ॥ ३ ॥
यजुर्विदां नाभिमितं सामगानां मयं विधिः ।
वामस्कन्धेन विधृतं यज्ञ सूत्रं बलप्रदम् ॥ ४ ॥
मृद्भस्म चन्दनाद्यैस्तु धारयेत्तिलकं द्विजः ।
भाले त्रिपुण्ड्रं कर्म्मांगं केशपर्य्यन्त मुज्ज्वलम् ॥ ५ ॥

पुराड्रमंगुलि मानन्तु त्रिपुराड्रं तत्रिधाकृतम् ।
ब्रह्मविष्णु शिवावासं दर्शनात् पाप नाशनम् ॥ ६॥
ब्राह्मणानां करे स्वर्गा वाचो वेदा करे हरिः ।
गात्रे तीर्थानि यागाश्च नाडीषु प्रकृतिस्त्रिवृत् ॥ ७॥
सावित्री कराठ कुहरा हृदयं ब्रह्म सङ्गतम् ।
तेषां स्तनान्तरे धर्म्मः पृष्ठेऽधर्म्मः प्रकीर्तितः ॥ ८ ॥
भूदेवा ब्राह्मणा राजन् ! पूज्या वन्द्याः सदुक्तिभिः ।
चातुराश्रम्य कुशला ममधर्म प्रवर्तकाः ॥ ९ ॥
बालाश्चापि ज्ञान वृद्धास्तपो वृद्धा मम प्रियाः ।
तेषांवचः पालयितु मवतारा कृता मयाः ॥ १० ॥
महाभाग्यं ब्राह्मणानां सर्वपाप प्रणाशनम् ।
कलिदोपहरं श्रुत्वा मुच्यते सर्वतो भयात् ॥ ११ ॥

कल्किपुराण चतुर्थाध्याये ।

भगवान कहते हैं कि :-

अर्थ :- जो ब्राह्मणों का धर्म है उस ही में मेरी पूर्ण भक्ति जानना, इसलिये प्रत्येक युग में मैं ब्राह्मधर्म के अर्थ ही पैदा होता हूं ॥ १ ॥

त्रिवृत सूत्र का यज्ञोपवीत ब्राह्मणों का सूत्र है उसे यज्ञसूत्र भी कहते हैं ॥ २ ॥

उस जनेऊ का परिमाण तीन गांठ ब्रह्मा विष्णु और महेश की होनी चाहियें जो यज्ञोपवीत शिर से लेकर नाभि तक होती हुयी आधी पीठ पर आनी चाहिये ॥ ३ ॥

उस यज्ञोपवीत को बायें स्कन्द पर पहिनना ब्राह्मणों के लिये बल प्रद है ॥ ४ ॥

जिन के मस्तक पर मृत्तिका व भस्म लगी हुयी है तथा चन्दनादि के तिलक लगे हुये हैं व सम्पूर्ण ललाट पर त्रिपुराड्र धारण कर रक्खे हैं ॥ ५ ॥

जिन के उपरोक्त तिलक होते हैं उन के मस्तक पर ब्रह्मा, विष्णु और महेश विराजे रहते हैं ऐसे ब्राह्मणों के दर्शन करने से पाप नाश हो जाते हैं ॥ ६ ॥

हे राजन्! उपरोक्त गुण वाले ब्राह्मणों के हाथ में सम्पूर्ण स्वर्ग है, वाणी में वेदरूपी भगवान् और शरीर में सम्पूर्ण तीर्थ व यज्ञादि हैं ॥ ७ ॥

गायत्री मंत्र जिन के कण्ठ में परिपूर्ण होरहा है, जिन के हृदय में ब्रह्म की स्थिति होरही है ॥ ८ ॥

भगवान् कहते हैं कि हे राजन्! ऐसे भूखे ब्राह्मणों को वन्दना करना चाहिये क्योंकि वे चारों आश्रमों में कुशल तथा मेरे धर्म के प्रवर्तक हैं ॥ ९ ॥

हे राजन्! चाहे ब्राह्मण बालक हो, चाहे युवा हो, चाहे वृद्ध हो, उन में ज्ञानवृद्ध व तप वृद्ध ही मेरे प्रिय हैं उन्हीं के लिये मैंने अवतार लिया है ॥ १० ॥

ऐसे ब्राह्मणों की कृपा से सब पाप दूर हो जाते हैं और कलि के दोष से भी मनुष्य मुक्त हो जाता है ॥ ११ ॥

पुनः और देखिये :-

विष्णुमन्त्र विहीनश्च त्रिसन्ध्य रहितोद्विजः ।
एकादशीविहीनश्च विषहीनो यथोरगः ॥ १ ॥
हरेर्नैवेद्य भोजी च धावको वृषवाहकः ।
शूद्रान्न भोजी विप्रश्च विषहीनो यथा रगः ॥ २ ॥
शवदाही च शूद्राणां यो विप्रो वृषली पतिः ।
शूद्राणां सूप कारीच शूद्रयाजी च यो द्विजः ॥ ३ ॥
असि जीवी मसीजीवी विषहीनो यथोरगः ।
यो विप्रोऽवीरान्नभोजी ऋतुस्नातान्नभोजकः ॥ ४ ॥
भगजीवी वार्द्धुषिको विषहीनो यथोरगः ।
यः कन्या विक्रयी विप्रो यो हरेर्नाम विक्रयी ॥ ५ ॥

यो विद्या विक्रयी विप्रो विषहीनो यथोरगः।
सूर्य्योदये च द्विर्भोजी मत्स्य भोजी च यो द्विजः॥ ६॥
शिला पूजादिरहितो विषहीनो यथोरगः।

ब्रह्मवैवर्त पुराण प्रकृति खण्ड २१ अध्यायः।

अर्थ :- जो ब्राह्मण विष्णुमंत्र विहीन है तथा तीनों काल की संध्या करने से रहित है और एकादशी विहीन है तो उस का शरीर विषरूप है॥ १॥

ठाकुर का भोग खाने वाला, हलकारागीरी करने वाला, गाड़ी चलाने वाला, और शूद्रों के यहां का धान्य खाने वाला जो ब्राह्मण है उस का शरीर विषरूप है॥ २॥

जो शूद्रों के मुर्दों को ढोने वाला, हो, शूद्री का पति हो, और जो शूद्र जाति के यहां की वृत्ती करता है॥ ३॥

स्याही द्वारा आजीविका करने वाला दफ्तरी, अस्त्र शस्त्र बेचकर जीविका करने वाला, जो पति विहीन स्त्री का भोजन करने वाला, ब्राह्मण है उस का शरीर विष तुल्य है॥ ४॥

अड्डाखोल कर भड़वाई खाने वाला, व्याज खाने वाला, कन्या वेचने वाला और जो भगवान का नाम कागजों पर लिख लिख कर वेचने वाले हैं वे भी नष्ट ब्राह्मण ही हैं॥ ५॥

जो ब्राह्मण पढ़ायी लेकर पढ़ाते हैं, तथा मत्स्यादि खाते हैं वे सब विषवत हैं॥ ६॥

पाठक! ज़रा सोचिये तो सही ये सब ही वर्जित कर्म्म आज कल ब्राह्मणों में कैसे विशेष रूप से हैं फिर भी वे ब्राह्मण ही माने जाते हैं राजपूताने तथा अन्य प्रान्तों में लड़की का रुपैया लेने वाले अनेकों हैं, दफ्तरी गीरी करने वाले भी बहुत हैं, पढ़ायी लेकर पढ़ाने वाले तथा मछलियें खाने वाले ब्राह्मणों की तो इस देश में कमी ही नहीं है परन्तु भारत के ब्राह्मण नेता लोग ऐसे कर्म्म करने वाले ब्राह्मणों को भी ब्राह्मण ही मान्ते हैं परन्तु यह पक्षपात व अन्याय है। अस्तु। इस पक्षपात तथा अन्याय को देखकर वे हिन्दू जातियें जिन्हें हम नीच समझ

कर ठुकराते रहते हैं उन के कलेजों पर कितनी चोट पहुंचेगी यह भगवान ही भले प्रकार जान सके हैं !!!

अध्यापनं अध्ययनं यजनं याजनं तथा ।
दानं प्रतिग्रहश्चैव षट् कर्माण्यग्रजन्मनः ॥

मनु० अ० १० श्लो० ७५

अर्थः–मनु धर्म शास्त्र के अनुसार पढ़ना पढ़ाना यज्ञ करना और कराना दान देना और लेना ये ६ कर्म ब्राह्मण के हैं।

पुनः–

ब्राह्मणस्यतु यो धर्म्मस्तं ते वक्ष्यामि केवलम् ।
दममेव महाराज ! धर्म्ममाहुः पुरातनम् ॥ १ ॥
स्वाध्यायाभ्यसनञ्चैव तत्र कर्म समाप्यते ।
तञ्चेद्वित्तमुपागच्छेद्वर्तमानं स्वकर्म्मणि ॥ २ ॥
अकुर्वाणं विकर्म्माणि शान्तं विज्ञान तर्पितम् ।
कुर्वीतोपेत्य सन्तानमथ दद्याद्यजेत च ॥ ३ ॥

पद्मपुराण स्वर्गखण्डे अ० २६

अर्थः–हे महाराज ! ब्राह्मण के जो धर्म्म हैं उन्हें मैं कहता हूं सो सुनो कि धर्म्म का पुरातन लक्षण एक "दम" यानी इन्द्रियों को पापाचरण से रोककर धर्म्माचरण में प्रवृत्त करना ही ब्रह्मकर्म है॥ १ ॥

जिसे नित्यप्रति वेदादि शास्त्र पढ़ते रहने का अर्थात् स्वाध्याय करने का जिन्हें व्यसन है वे ब्राह्मण कहाते हैं ॥ २ ॥

जो विज्ञानी होकर करने योग्य कर्म्मों को करता है और नहीं करने योग्य कर्म्मों को नहीं करता है वह ही ब्राह्मण कहाता है ॥ ३ ॥

पुनः और भी कहा है कि :–

योऽनधीत्य द्विजो वेदमन्यत्र कुरुते श्रमम् ।
सजीवन्नेव शूद्रत्वमाशु गच्छति सान्वयः ॥

मनु० अ० २ श्लो० १६८

अर्थ :- जो ब्राह्मण वेद को न पढ़ कर अन्यविद्या में श्रम करता है वह जीते जी कुल सहित शूद्र होजाता है।

पाठक ! आज इस धर्म्म शास्त्र की आज्ञानुकूल आप को लाखों ब्राह्मण ऐसे मिलेंगे जिन्हें देवनागरी भाषा भी पढ़ना नहीं आता तो वेद की तो क्या दशा ? क्योंकि वे तो प्रायः फार्सी दांस, उर्दू लाला और अंग्रेजी बाबू हैं ऐसी स्थिति में हमें कहना पड़ता है कि आज कल के ब्राह्मणों का ब्राह्मणाऽभिमान केवल दिखावे का है यथार्थ में वे सब शूद्र हैं अतः विचारी शूद्र जाति व अन्त्यज जाति जिन में से हजारों के आचरण यथार्थमें ब्राह्मण व क्षत्रिय वैश्यों के से हैं वे ब्राह्मण, क्षत्रिय व वैश्य क्यों नहीं माने जांय ?

इस ही तरह आज कल हजारों ही ब्राह्मण नाना प्रकार के रसों को बेचते हैं, अनेकों हलवायी गीरी करते हैं, कितने ही दूध दही की दुकानें करते हैं, कितने ही बजाजी करते हैं, कितने ही पत्थर बेचते हैं ! कितने ही घी तेल व गुड़ शक्कर का व्यापार करते हैं और. कितने ही घास पात फल बेचते और ये सब कर्म्म ब्राह्मण को अति शूद्र करने वाले हैं फिर भी ये लोग निधड़क रूप से ब्राह्मण ही माने जाते हैं, परन्तु ऐसी न्याय परायणता इस देश में अन्य जातियों के साथ नहीं दिखलायी जाती यह ही कारण है कि शूद्र व अन्त्यज जातियों के लाखों गलों पर अन्याय रूपी आरा चलाया जारहा है इस दुख से वे दुखित होकर आहभर कर चीखती हैं पर भारत माता के सुपूतों में उनके आह भरे रुदन पर करुणा करने वाले एक दो ही हैं अतः हे प्रभो ! भारत से यह अन्याय कब दूर होगा ! क्योंकि इस कठिन समय में इन असहाय हिन्दू जातियों की रक्षा करने वाले एक मात्र आप ही हैं।

---

# ब्राह्मणों के निन्दित कर्म्म

( मानव धर्म्म शास्त्र से उद्धृत )

सर्वान् रसान पोहेत कृतान्नञ्चतिलैः सह।
अश्मनो लवणं चैव पशवो येच मानुषाः ॥ ८६

सर्वंचतान्तवं रक्तंशाणक्षौमाविकानिच ।
अपिचेत्स्युररक्तानि फलमूले तथौषधीः ॥ ८७ ॥
अपः शस्त्रं विषं मांसं सोमं गंधांश्च सर्वशः ।
क्षीरं क्षौद्रं दधि घृतं तैलं मधु गुडं कुशान् ॥ ८८ ॥

अर्थः– सम्पूर्ण रसों को और पकाये अनाज को, पत्थर को, नमक को, और मनुष्यों के पालने योग्य पशुवों को न बेचे ॥ ८६ ॥

सम्पूर्ण रंगे हुये कपड़े, तथा सन के कपड़े, रेशमी व ऊनी कपड़े तथा सफेद कपड़े, फल, मूल तथा औषधि इन को भी ब्राह्मण न बेचे ॥ ८७ ॥

जल, शस्त्र, विष, मांस, सोमवल्ली, सब प्रकार के गंध, दूध, शहद और दही तथा घी, तेल और गुड़ तथा घास इन को ब्राह्मण न बेचे ॥ ८८ ॥

देखो मनुस्मृति अध्याय १० श्लो० ८६ से ६४ तक

भारत माता के सुपूत ब्राह्मणो ! जरा परमेश्वर को हाज़िर नाज़िर समझ कर के तथा पक्षपात रहित हो के विचारिये तो सही उपरोक्त निन्दित कर्म्मों को करने वाले आप की जाति में कितने अधिक हैं और फिर भी आप उन्हें ब्राह्मण ही मानते हैं तो ऐसी दया आप अन्य जातियों के साथ क्यों नहीं दिखलाते हैं क्या उन के साथ इस पक्षपात व अन्याय के विरुद्ध परमात्मा के यहां दुहाई नहीं मचेगी! क्या तुम्हारी तरह परमात्मा भी पक्षपात व अन्याय करता है ! कदापि नहीं । ब्राह्मण का शरीर पवित्र किस तरह होता है ! तो इस का उत्तर पद्मपुराण से यों मिलता है यथाः–

यथादेह पवित्रत्वं विप्रादीनां यतो भवेत् !
देवर्षे ! शृणु तत्सर्वं नराणामानुपूर्विकम् ॥ १ ॥
जातके मृतकेऽस्नाते जलौकाभिः क्षतेतथा ।
अपवित्रो द्विजातीनां देहः सन्ध्यादि कर्मसु ॥ २ ॥

अपूत तनुरुत्सर्गे नरो मूत्र पुरीषयोः ।
अस्पृश्य स्पर्शने चैव ब्रह्मयज्ञ जपादिषु ॥ ३ ॥
रक्तपाते नख शृंग दन्तखड्गादिभिःक्षते ।
विप्रादेरशुचिः कायः शस्त्राद्यैः कराटकादिभिः ॥ ४ ॥
भुक्त हस्ता ननोच्छिष्टेऽपवित्रः कृतमैथुने ।
शयने ब्राह्मणादीनां शरीरे क्षुर कर्म्मणि ॥ ५ ॥
ज्वरादिभिश्चतुःषष्टि रोगैर्युक्ते द्विजन्मनाम् ।
वपुर प्रयतं पूजा दान होम जपादिषु ॥ ६ ॥
धूमोद्गारे वमौ श्राद्ध पतितान्नादिभोजनैः ।
तथा च रेतस्खलनेमर्त्यदेहा पवित्रता ॥ ७ ॥
अपवित्रं द्विजातीनां वपुः स्याद्राहुदर्शने ।
गर्हितदानग्रहणे पतिते पातकादिभिः ॥ ८ ॥
अशौचान्तेन शुद्धिःस्याज्जातके मृतके द्विजः ।
सर्व वर्णा श्रमादीनां तनोः सन्ध्यादि कर्मसु ॥ ९ ॥
पाद्मोत्तर खण्डे १०९ अध्याय ।

अर्थः-हे देवर्षि ! जिस प्रकार ब्राह्मणादि का देह पवित्र हो सक्ता है सो तुम सुनो ॥ १ ॥

पैदा होने व मरण काल के सूतक में जो ब्राह्मणों को अपवित्रता होती है वह जल में स्नान करके सन्ध्योपासन करने से दूर होती है ॥ २ ॥

शौच व लघुशंका याने टट्टी पिशाब जाने में जो यज्ञोपवीत कान पर न टांके अस्पर्श वस्तु के साथ स्पर्श होजाय तो स्नानकरके सन्ध्योपासन करने से पवित्र होता है ॥ ३ ॥

खून गिरजायं, नख व बाल कटावे तथा दांत आदि टूट जांय तथा

अस्त्र शस्त्रों का प्रयोग शरीर पर हो तो वह ब्राह्मण शरीर स्नान संध्या से शुद्ध होता है ॥ ४ ॥

झूंठे हाथ व झूंठे मुंह तथा मैथुन यानी स्त्री सम्भोग करके भी ब्राह्मण का शरीर अपवित्र हो जाता है वह भी स्नान सन्ध्या से शुद्ध होजाता है ॥ ५ ॥

चौसठ प्रकार के ज्वरों से पीड़ित हो चुकने आदि पर भी ब्राह्मण स्नान सन्ध्या से शुद्ध होता है ॥ ६ ॥

धूमोद्गार करने पर, कै करने पर पतित का अन्नादि ग्रहण करने पर तथा वीर्य्यपात करने पर मृत्यु लोक में ब्राह्मण का देह स्नान संध्या से शुद्ध होता है ॥ ७ ॥

ग्रहण के दिन राहु दर्शन करने पर व गर्हित दान ग्रहण करने पर तथा पतित पातकों का संसर्ग करने पर ब्राह्मण स्नान संध्या से शुद्ध होता है ॥ ८ ॥

सम्पूर्ण प्रकार की अशौच जन्म व मरण की से ब्राह्मणों की शुद्धि स्नान संध्या से होती है ॥ ९ ॥

पुनः आगे संध्या का महात्म्य और भी लिखा है यथा :-

यो विप्रस्तपसायुक्तः सपरं स्वर्ग माप्नुयात् ।
सर्वेषां मुत्तमं श्रेष्ठ विमुक्तिफलदायकम् ॥ १० ॥
ब्राह्मणस्यतपो वक्ष्ये तन्मे निगदतः शृणु ।
सायं प्रातश्च यः सन्ध्या मुपास्ते स्कन्न मानसः ॥ ११ ॥
जपन हि पावनीं देवीं गायत्रीं वेद मातरम् ।
तपसो भावितोदेव्या ब्राह्मणः पूतकिल्विषः ॥ १२ ॥
नसीदेत् प्रतिगृह्णन् सत्वयि पृथिवीं स सागराम् ।
द्वेसन्ध्ये ह्युपतिष्ठेत् गायत्रीं प्रयतः शुचिः ॥ १३ ॥
यस्तस्य दुष्कृतं नास्ति पूर्वतः परतोपिऽवा ।
यज्ञदान रतो विद्वान् सांगवेदस्य पाठकः ॥ १४ ॥

गायत्रीं ध्यान पूतस्य कलां नार्हन्तिषोडषीम् ।
एवं किल्विष युक्तस्तु विनिर्दहति पातकम् ॥ १२ ॥
उभे सन्ध्ये ह्युपासीत तस्मान्नित्यं द्विजोत्तमः ।

पद्मपुराण उत्तर खण्ड अ० १०,६

अर्थः-जो ब्राह्मण तप करके युक्त हैं उन्हें स्वर्ग प्राप्ति होती है और यह ब्रह्मतप जो संध्या है वह ब्राह्मण के लिये मुक्तिफल देनेवाली है ॥ १० ॥

हे राजन्! मैं ब्राह्मण के तप को कहता हूं कि जो ब्राह्मण सायं प्रातः काल की संध्या करता है वह अत्यन्त सुख को प्राप्त करता है ॥ ११ ॥

वेद माता गायत्री देवी की अर्थात् जो गायत्री मंत्र का जप करते हैं उन ब्राह्मणों के पाप दूर होकर वे पवित्र हो जाते हैं ॥ १२ ॥

विशेष दानादि के लोभ में ब्राह्मण न पड़े किन्तु दोनों काल की संध्या व गायत्री जपता हुवा पवित्र रहे ॥ १३ ॥

जो दुष्कर्मयुक्त नहीं हैं जो यज्ञ दान तथा वेद पढ़ने में रत हैं ॥ १४ ॥

गायत्री के नित्य ध्यान करने से, दोनों काल की नित्य संध्या करने से जो पवित्र हो गये हैं वे उत्तमोत्तम ब्राह्मण कहाते हैं ॥ १५ ॥

नोटः-पद्मपुराण में भी दोहीकाल की संध्या कही है ।

॥ संध्या करना भी ब्राह्मणों का मुख्य धर्म्म है ॥

सायं प्रातः द्विजः सन्ध्यामुपासीत समाहितः ।
कामाल्लोभात् भयान्नमोहात् त्यक्त्वैनां पतितो भवेत् ॥

कूर्म पुराण षटशास्त्र संहितायां उत्तर भाग अ० १२ श्लो० १६

अर्थः-सायंकाल और प्रातः काल की संध्या जो ब्राह्मण सम्यक हित के साथ नहीं करता है वरन काम से लोभसे अथवा मोहादि से दोनों समय संध्या करना छोड़ देता है वह जीते जी ही पतित होजाता है

पुनः और भी देखिये

नोप तिष्ठति यः पूर्वां नो पास्ते यस्तु पश्चिमाम् ।
स शूद्रवद्बहिष्कार्य्यः सर्वस्माद्द्विज कर्म्मणः ॥

मनु० अ० २ श्लो० १०३

अर्थः—जो ब्राह्मण प्रातःकाल और सायंकाल की संध्या नहीं करता है वह शूद्र के समान द्विजों के सम्पूर्ण कर्म्मों से बाहिर कर दिया जाना चाहिये।

संध्या विचारः

संध्या कितने काल की करनी चाहिये ? इस विषय में आज कल विवाद है एक समुदाय कहता है कि दो काल की संध्या होनी है दूसरा समुदाय तीन काल की सन्ध्या बतलाता है परन्तु इस विषय पर हमें दोनों प्रकार के विधान युक्त प्रमाण मिले और ये दोनों ही प्रकार के प्रमाण हमने यहां लिख दिये हैं अतएव जिन्हें मनुस्मृति पद्मपुराण और कूर्म्मपुराण के मत माननीय होवें द्विकाल संध्या करें परन्तु जिन्हें ब्रह्मवैवर्त पुराण का मत मानना हो वे त्रिकाल संध्या करसक्ते हैं और इसमें कोई हानि भी नहीं है क्योंकि "अधिकस्य अधिकंफलम्" इससे त्रिकाल संध्याभी माननीय है परन्तु विशेष प्रमाण द्विकाल संध्या ही के मिले हैं।

पुनः—

यावज्जीवन पर्य्यन्तं यस्त्रिसन्ध्यं करोतिच ।
सच सूर्य्य समो विप्रस्तेजसा तपसा सदा ॥ १ ॥
तत्पादपद्म रजसा सद्यः पूता वसुन्धरा ।
जीवन्मुक्तः सतेजस्वीसन्ध्या पूतोहियो द्विजः ॥ २ ॥
तीर्थानिच पवित्राणि तस्य संस्पर्श मात्रतः ।
ततः पापानि यान्त्येव वैनतेया दिवोरगाः ॥ ३ ॥

अर्थः—जो ब्राह्मण अपने जन्म भर त्रिकाल की सन्ध्या करता रहता है वह तप और तेज में सूर्य्य के समान हो जाता है ॥ १ ॥

उस के चरणारविन्द की रज ही पृथिवी को पवित्र करने की शक्तिवान् हो जाती है और वह जीता हुआ ही तेजस्वी कहाता है ॥ २ ॥

ऐसे ब्राह्मण के स्पर्श मात्र ही से सम्पूर्ण तीर्थादि पवित्र होजाते हैं और मनुष्यों के सम्पूर्ण पाप दूर हो जाते हैं ॥ ३ ॥

जात कर्म्मादिभिर्यस्तु संस्कारैः संस्कृतः शुचिः ।
वेदाध्ययनसम्पन्नः पट्सुकर्म्मस्ववस्थितः ॥ १ ॥
शौचाचार परोनित्यं विघसाशी गुरुप्रियः ।
नित्त्यव्रती सत्त्यरतः सवै ब्राह्मण उच्च्यते ॥ २ ॥
सत्त्यंदान मथाऽद्रोह आनृशंस्यं कृपा घृणा ।
तपश्च दृश्यते यत्र स ब्राह्मण इति स्मृतः ॥ ३ ॥

अर्थ :- जिस के जात कर्म्मादि षोड़ष संस्कार हुये हैं और जो संस्कारों द्वारा पवित्र हैं तथा जो वेदाध्ययन सम्पन्न षट् कर्म्मी हैं वे ब्राह्मण कहाते हैं ॥ १ ॥

जो शौच तथा आचार विचार युक्त हैं, विद्या के प्रेमी गुरु के प्रिय हैं, जो नित्य व्रतादि कर के पवित्र हैं, सत्यरत हैं वे ही ब्राह्मण कहाते हैं ॥ २ ॥

जो सत्य, दान, दया आदि युक्त हैं, और चुगली चांट आदि से घृणा करने वाले हैं और जो तपस्वी हैं वे ब्राह्मण कहाते हैं ॥ ३ ॥

ब्राह्मणस्य स्वधर्मश्च त्रिसन्ध्यमर्च्चनं हरेः ।
तत्पादोदक नैवेद्य भक्षणञ्च सुधाधिकम् ॥ ७२ ॥
अन्नं विष्ठा जलं मूत्रमनिवेद्य हरेर्नृपः ।
भवन्तिशूकराः सर्वे ब्राह्मणा यदि भुञ्जते ॥ ७४ ॥
कृष्ण जन्म दिने चैव शिवरात्रौ सुनिश्चितम् ।
तथाराम नवम्याञ्च यत्नतः पुण्य वासरे ॥ ७४ ॥
करोत्यशुद्धां सन्ध्याञ्च सन्ध्यां वा न करोतियः ।
त्रिसन्ध्यं वर्जयेद्योवा सन्ध्या हीनश्च योद्विजः ॥ ७५ ॥
ब्रह्मवै० पु० श्री कृ० खं० अ० ५१ ॥

अर्थ :- ब्राह्मण का स्वधर्म तीनों काल की सन्ध्या करना है अतः ऐसे तीनों काल की संध्या करने वाले ब्राह्मण के पाद प्रक्षालन का जल नैवेद्य और अमृत के बराबर हो जाता है ॥ ७२ ॥

जो अन्न के खेत में विष्ठा करते हैं, जल में मूतते हैं हे राजन्! इन सब का अन्न यदि ब्राह्मण खाय तो वह सूअर का जन्म लेता है ॥ ७३ ॥

जो कृष्ण जन्माष्टमी और शिवरात्री के दिन तथा रामनवमी के दिन जो भोजन करते हैं ॥ ७४ ॥

तो इन सब का पाप तीनों काल की सन्ध्या करने से दूर हो जाता है ॥ ७५ ॥

तत्र नारायण क्षेत्रे कुरुक्षेत्रे हरेः पदे ।
वाराणस्यां वदर्याञ्च गङ्गासागर सङ्गमे ॥ १ ॥
पुष्करे भास्करक्षेत्रे प्रभासे रास मराडले ।
हरिद्वारे च केदारे सोमे वदर पाचने ॥ २ ॥
सरस्वतीनदीतीरे पुराये वृन्दावने वने ।
गोदावर्य्याञ्च कौशिक्यांत्रिवेरायाञ्चहिमालये ॥३॥
एतेष्वन्येषु यो दानं प्रति गृह्णाति कामतः ।
सच तीर्थ प्रतिग्राही कुम्भीपाकं प्रयाति च ॥ ४ ॥

ब्रह्म वै० पुरा० प्रकृतिखंड अ० ३० श्लो० २०९
से २१२ तक ॥

अर्थ :- यहां नारायण क्षेत्र में कुरुक्षेत्र है तिसके तथा बनारस के ब्राह्मण, बदरीनाथ के पंडे ब्राह्मण और त्रिवेणी जी के संगम, प्रयाग के पंडे ॥ १ ॥

पुष्कर के पंडे, भास्कर क्षेत्र के पंडे, प्रभास क्षेत्र के पंडे, हरद्वार के पंडे, केदारनाथ जी के पंडे ॥ २ ॥

सरस्वती जी के पंडे, वृन्दावन के पंडे, गोदावरी, कौशिकी तथा त्रिवेणी के पंडे ॥ ३ ॥

इन के अतिरिक्त अन्य अन्य तीर्थों के पंडे जो तीर्थ स्थानों पर दान लेते हैं वे सब कुम्भीपाक नरक में पड़ते हैं ॥ ८ ॥

देखो ब्रह्मवैवर्त पुराण प्रकृतिखण्ड अ० ३० श्लो० २०६ से २१२

पुनः और देखिये :-

धर्मराजोवाचः-

पण्डितो विश्रुतः पुत्रः सर्वे नाम्नायुधिष्ठरः ।
वैशंपायन मागम्य प्रांजलिः परिपृच्छति ॥
केचते ब्राह्मणाः प्रोक्ताः किंवा ब्राह्मण लक्षणं ।
एतदिच्छामिभोज्ञातुं तद्भवान् व्याकरोतुमे ॥

( महाभारते )

भावार्थः-राजा युधिष्ठर के ज्ञानोपदेश लेते समय सभा में पूर्व से ही धर्मराज जी भी बैठे हुये कथा श्रवण कर रहे थे तब ही महाराज वैशम्पायन जी का भी वहां आगमन हुवा जो ज्ञान में बड़े ही उच्चतम कोटि को पहुंचे हुये थे तब युधिष्ठिरजी के संकेत से धर्म राज ऋषि ने हाथ जोड़कर प्रश्न किया कि भगवन्? ब्राह्मण किन को कहना चाहिये? ब्राह्मण के क्या क्या लक्षण हैं? यह सन्देह निवृत करने के लिये आप ही इस सभा में तो समर्थ हैं अतएव सब उपस्थित मुमुक्षुजनों के कल्याणार्थ महाराज वैशम्पायन जी उत्तर देते हैं किः-

वैशम्पायनो वाच ।

क्षांत्यादिभिर्गुणैर्युक्त स्त्यक्त दण्डोनिरामिषः ।
न हन्ति सर्व भूतानि प्रथमं ब्रह्म लक्षणम् ॥

अर्थात् शान्त स्वभावादिगुण युक्त होना दया व आर्द्र चित्तता मांसादि रहित अन्न फल मूल कन्दादि का भोजन करना, मन, वचन, कर्म से किसी भी प्राणिको कष्ट नहीं पहुंचाना यह ब्राह्मण का पहिला लक्षण है।

नोटः-इस आधारानुसार ये ब्राह्मण जो ब्राह्मण वर्ण के अभिमानी होते हुये भी मांस मछली खाते हैं उन के साथ उन ब्राह्मणों का जो

मांस को स्पर्श भी नहीं करते हैं व स्पर्शमात्र को ही पाप समझते हैं उनका व इन का जो मांस खाते हैं खान पान एक होने से शास्त्र मर्य्यादा नष्ट होगी अतः ब्राह्मण मात्र की एकपंक्ता व सम्मेलन के नियमों में खान पान एक करने के विषय में विशेष ज़ोर न देकर खान पान विषय को समयानुकूल एक ओर रख कर विचार होने में हम भी सहमत हैं।

पुनः—

यदासर्वं परद्रव्यं पथि वा यदिवागृहे।
अदत्तं नैव गृह्णाति द्वितीयं ब्रह्मलक्षणं॥

अर्थात दूसरे का धन व वस्तु घर में व मार्ग में कहीं पर भी हो परन्तु उसके स्वामी के बिना दिये नहीं लेना यह ब्राह्मण का दूसरा लक्षण है। इस ही आशय की पुष्टि में अन्यत्र यह भी प्रमाण मिलता है कि:—"मातृ वत् परदारेषु परद्रव्येषु लोष्टवत् आत्मवत् सर्व भूतेषु यः पश्यति सः पण्डितः" अर्थात् जो अपनी मा व बहिन के समान परस्त्रियों को समझे पराये द्रव्य को मिट्टी के समान जाने प्राणी मात्र को अपने शरीर के तुल्य समझे कि जिस प्रकार से कांटे के भी चुभ जाने से अपने को कष्ट होता है तैसे ही दूसरे प्राणियों को भी कष्ट होता है ऐसा जो जानता है वह ही ब्राह्मण कहाता है यह ब्राह्मणत्व का द्वितीय लक्षण कहाता है।

पुनः—

त्यक्त्वा क्रूरस्वभावंतु निर्ममो निष्परिग्रहः।
मुक्तश्चरतियो नित्यं तृतीयं ब्रह्मलक्षणम्॥

अर्थात् क्रूर स्वभाव का त्याग ममता तथा परिग्रह रहितता, सांसारिक विषय भोग वासना से विरक्तता और नित्य मुक्त होकर जीवन व्यतीत करना ब्राह्मण का तीसरा लक्षण कहाता है।

पुनः—

देव मानुष नारीणां तिर्यग्योनिगतेष्वपि।
मैथुनंहि सदात्यक्तञ्चतुर्थं ब्रह्मलक्षणम्॥

अर्थात् देवयोनि में, मनुष्ययोनि में और पशुयोनि में भी स्त्री के साथ मैथुन में रत नहीं होना ब्राह्मणत्व का चौथा लक्षण है।

पुनः—

सत्यं शौचं दयाशौचं शौचमिन्द्रिय निग्रहः।
सर्वभूतदयाशौचं तपः शौचञ्चपञ्चमम्॥

अर्थात् मन से वचन से व कर्म से शौच रहना, तैसे ही मन वचन व कर्म्म से दया धर्म रखकर शौचरहना, पञ्चज्ञानेन्द्रिय व पञ्च कर्मेन्द्रिय तथा एक मन इन ग्यारहों इन्द्रियों को धर्माचरण में लगाकर अधर्म्माचरण से रोककर शौच होना, सम्पूर्ण प्राणी मात्र पर दया रखकर शौच होना, और ब्रह्मचर्य्यादि व्रत में तपस्वी रह कर तप शौच होना ब्राह्मणत्व का पांचवा लक्षण है।

पुनः—

पञ्चलक्षणसम्पन्नः ईदृशोयो भवेद्विजः।
तमहं ब्राह्मणं ब्रूयां शेषाः शूद्रा युधिष्ठिरः॥

अर्थात् हे युधिष्ठिर इस प्रकार उपरोक्त लक्षण युक्त जो हैं उन्हें मैं ब्राह्मण कहता हूं अन्यथा अन्य सब शूद्र हैं।

पाठक! उपरोक्त श्लोकों पर विचार व सम्यक मीमांसा करके मैं ब्राह्मण जाति का जी नहीं दुखाना चाहता हूं क्योंकि लिखते चित्त घबराता है, लेखनी रुकती है, हृदय धड़कता है, कलेजा फटता है, चित्त में नाना प्रकार को शंकायें पैदा हो रही हैं कि मेरी यह मीमांसा मेरे ही भाई ब्राह्मण वर्ग के विरुद्ध पड़ेगी और प्रायः वे लोग इस से चिड़कर मेरे लिये छिद्रान्वेषी बनने का उद्योग करेंगे, परन्तु क्या करूं? सत्य छिपाया जा नहीं सक्ता है परन्तु मेरी मीमांसा से यह न समझा जावे कि यह मेरा तर्क वितर्क ब्राह्मण जाति का जी दुखाने के लिये है अथवा ब्राह्मणों की निन्दा करने के अभिप्राय से है वरन सत्य व धर्म को आगे रखकर लिखते हैं कि हमारे ब्राह्मण भाइयों की दशा बड़ी शोचनीय है उन में नाम मात्र का अहंकार व ब्राह्मणत्व रहगया है सच्चा कहने

वाला निन्दक कहा जाता है पर हमारी उत्कण्ठा यह है कि ब्राह्मण अपनी असली स्थिति को सम्भालकर ब्राह्मण बने अन्यथा जिस प्रकार से आज कल ब्राह्मण, ब्राह्मण नहीं हैं वैसी ही दशा अन्य वर्णों की, उपवर्णों की व जातियों की व उपजातियों की जाननी चाहिये, और जब एक ब्राह्मण उपरोक्त कर्मों के विरुद्ध करता हुआ भी ब्राह्मण ही रहता है तो अन्य क्षत्रिय समुदाय जो परशुराम जी के भय से व मुसल्मानी अत्याचार से अपने क्षात्र धर्म से विमुख हो गये हैं वे पुनः क्षत्रिय क्यों नहीं माने जांय? उन्हीं के ऊपर विशेष तर्क वितर्क क्यों? इस ही तरह बहुत सा समुदाय व जातियें जो यथार्थ में वैश्य थीं परन्तु अब वैश्य धर्म से अलग हैं वे भी वैश्य क्यों न मानी जायं? और इस ही तरह वे क्षत्रिय व वैश्य जो उपरोक्त किसी कारण विशेष से आजकल प्रत्यक्ष रूप से क्षत्रियत्व व वैश्यत्व के कार्य्य में प्रवृत्त नहीं हैं वे भी क्षत्रिय व वैश्य क्यों नहीं माने जांय? ऐसे ही वे क्षत्रिय वैश्य और शूद्र जो अपनी असली स्थिति से अलग होकर शूद्र धर्म में चले रहे हैं उन्हें भी उनकी अपनी पूर्व की उपाधियां क्यों न देदी जायें यह विचारणीय विषय है न्याय दया, निष्पक्षता सब के साथ एकसी की जानी चाहिये इसही तरह जिन जातियों को किन्हीं २ विद्वानों ने संकर वर्णों में लिखा है उन्हें भी उनके असलीवर्ण की उपाधि देदेना ही न्याय संगत है अन्यथा विवश कहना पड़ता है कि प्रसिद्ध प्रचलित सर्वमान्य ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्यों के अतिरिक्त सैकड़ों अन्य जातियें जो हैं उनके साथ बड़ा अन्याय हो रहा है जिस से भविष्यत् में इस जाति का सर्वनाश हो जाना सम्भव है, हमें शोक के साथ कहना पड़ता है कि दूसरे की आंख की तो छिपकी भी हम टीका टिप्पणी करें परन्तु अपनी आंख के छप्पे की चरचा तक भी नहीं यह सरासर अन्याय पक्षपात व परस्पर के ईर्ष्या द्वेष का फल है, किञ्चित् काल के लिये मान लीजिये सनाढ्य ब्राह्मण नहीं, पल्लीवाल ब्राह्मण नहीं, तगा ब्राह्मण नहीं, भूमिहार ब्राह्मण नहीं, कान्यकुब्ज ब्राह्मण नहीं, सारस्वत ब्राह्मण नहीं तो फिर ब्राह्मण कौन? इस प्रश्न का उत्तर देना बड़ा विचित्र है अर्थात् इन सब के लिये उचित तो यह है कि हम छोटे छोटे से दोषों के व कुरीतियों के लिये एक दूसरे को ब्राह्मण नहीं मानें व अपने से दूसरे को नीच व अपने को ऊंच मानें यह उचित कर्तव्य नहीं है क्योंकि यों तो थोड़े व बहुत दोष

सब ही तरह के ब्राह्मणों में मिले हैं वे सब दोष यहां लिखे जांय तो ब्राह्मण मात्र हमारे शत्रु होकर कचहरी में भागने लगें और एक दूसरे समुदाय की पोल निकलकर उनका भांडा फूट जायगा और ऐसा होने से द्वेषी समुदाय को उत्तेजना मिलेगी अतः क्षमा चाहते हैं क्योंकि कोई ब्राह्मण समुदाय हुक्का पीकर जगत की झूंठ खाते हैं तो कोई मांस खाकर पतित हैं तो कोई शराब पीकर महापापी हैं तो कोई खेती व नौकरियें आदि आदि करके असली ब्राह्मण नहीं हैं अतः सारांश यह है कि हम को ब्राह्मण जाति के प्रति परस्पर ऊंच नीच व राग द्वेष के भाव त्याग कर, ब्राह्मण जाति के हित के लिये गौड़ महासभा, सनाढ्य महा मण्डल पल्लीवाल महासभा, तगाकान्फ्रेन्स व भूमिहार महासभा तथा कान्यकुब्ज महामंडल आदि आदि ब्राह्मण संस्थाओं को एक साथ मिलकर "ब्राह्मण महामण्डल" स्थापित करना चाहिये और इस ही ब्राह्मण मण्डल के झंडे के नीचे भारतवर्ष के ब्राह्मण मात्र को आजाना चाहिये साथ ही में परस्पर के खान पान व योनि सम्बन्ध पर विशेष ज़ोर न दिया जाकर जिस प्रकार यह व्यवहार चलरहा है तैसे ही चलने देना चाहिये किन्तु विद्योन्नति, देशोन्नति, कुरीतिनिवारण, देश सेवा, राजभक्ति, स्वदेशाऽभिमान, स्वदेशप्रियता, स्वदेशानुराग, स्वजाति हित-चिन्ता, परस्पर ऐक्यता आदि आदि सर्वमान्य विषयों के लिये ब्राह्मण मात्र को मिलकर काम करना ही कल्याणकारक होगा, अलग अलग रहने से जो काम बुढ़िया के चरखे की तरह से व बैलगाड़ी के पहिये की तरह चरक चूं चरक चूं चलरहे हैं वे एक दम डाक गाड़ी के इञ्जिन की तरह चलने से ब्राह्मण जाति का बड़ा उपकार होगा।

पुनः महाभारत में वैशम्पायन जी ने और भी कहा है किः—

अहोरात्रं चरेत्कान्तिं तं देवा ब्राह्मणं विदुः।
परित्यज्य गृहावासं ये स्थिता मोक्षकांक्षिणः ॥८८॥
कामेष्वसक्ताः कौन्तेय ब्राह्मणास्ते युधिष्ठिरः।
अहिंसानिर्म्ममत्वं वासतः कृत्यस्य वर्ज्जनम् ॥८९॥
रागद्वेष निवृत्तत्वमेतद्ब्राह्मण लक्षणम्।
क्षमा दया दमो दानं सत्यशौचं स्मृतिर्घृणा ॥८९॥

विद्या विज्ञानमास्तिक्य मेतद्ब्राह्मण लक्षणं ।
गायत्री मात्रसारोपि चरत्विप्रः सुयंत्रितः ॥९१॥
महाभारते, ब्राह्म० मा० पृ० ३७ तथा ज्ञा०
भे० विं० सा० पृ० १२३ ॥

अर्थात्—घर का निवास छोड़ कर जिन्हों ने भोग विलास, पुत्रैषणा, कामेषणा और वित्तैषणा को त्याग कर के मोक्ष की इच्छा किया है वह ब्राह्मण कहाता है ॥ ८८ ॥

हे युधिष्ठिर ! जो काम में आसक्त नहीं हैं, अहिंसा धर्म के पालन करने वाले हैं, ममतारहित हैं वे ब्राह्मण हैं ॥ ८९ ॥

जिन के रागद्वेष की निवृत्ति हो गयी है, तथा जो क्षमा, दया, दम, दान, सत्य, शौच, स्मृति और सदाचरण से घृणा आदि आदि गुण युक्त हैं वे ब्राह्मण कहाते हैं ॥ ९० ॥

जो विद्या, विज्ञान, आस्तिक्यता, आदि आदि गुणों कर के युक्त हैं वे ब्राह्मण कहाते हैं ॥ ९१ ॥

पाठक ! अब आपने पूर्णतया जानलिया होगा कि ब्राह्मण किस को मानना चाहिये और आज कल ब्राह्मण कौन है ? अब ज़रा इस नीचे लिखे विवरण पर ध्यान दीजियेगा ।

## क्या यह न्याय है?

पाठक ! लिखते हृदय फटता है, याद करते हृदय कम्पायमान् होता है, जिह्वापर आते ही अवाक ( गूंगे ) हो जाते हैं, मस्तिष्क में विचारों को लाते ही एक दम भूल जाते हैं, हाथ में कलम पकड़ते ही लेखिनी थर थर कांपने लगती है कहां तक कहें भारत की हिन्दू जाति की अधोगति को देख कर लिखना पड़ता है कि उपरोक्त गुण सम्पन्न ब्राह्मण आज भारत में एक भी नहीं है तब शास्त्र मर्य्यादा के अनुसार आज कोई भी ब्राह्मण नहीं है ऐसा मानना पड़ेगा परन्तु शोक के साथ कहना पड़ता है कि ब्राह्मणों ने अपने लाभ के लिये इन शास्त्रीय वचनों पर हड़ताल फेर दियी तथा ब्राह्मण नाम मात्र को भी ब्राह्मण ही मानने मनवाने लगे अर्थात् भारत के अकेले एक युक्त प्रदेश में ४७,४४,२५४ ब्राह्मण हैं वे सब के सब ब्राह्मण माने व मनवाये जाते हैं ? सो क्यों ?

उत्तर

# निजहानि ! निजहानि !! निजहानि !!!

स्वजाति पक्षपात ! स्वजाति पक्षपात !! स्वजाति पक्षपात !!!

## स्वार्थान्धता ! स्वार्थान्धता !! स्वार्थान्धता !!!

## सङ्कीर्णता ! सङ्कीर्णता !! सङ्कीर्णता !!!

# अन्याय ! अन्याय !! अन्याय !!!

## जातिदम्भ ! जातिदम्भ !! जातिदम्भ !!!

## हम उच्च ! हम उच्च !! हम उच्च !!!

## सब नीच ! सब नीच !! सब नीच !!!

आदि आदि भावों ने इस देश का सत्यानाश करडाला क्योंकि जब शास्त्रानुसार ब्राह्मण एक भी नहीं है और जब उन के साथ सम्पूर्ण प्रकार की रियायतें होती हैं तो भारत की वे जातियें जिन्हें हमने शूद्र, अतिशूद्र, नीच, अतिनीच, तथा अन्त्यज व अछूत मान रक्खा है तथा जिन में से कई जातियें जिन की उत्पत्ति किसी ने दोगली, किसी ने संकर, किसी ने लोमज, किसी ने अनुलोमज और किसी ने प्रतिलोमज लिखमारी है और वे अपने को कोई ब्राह्मण वर्ण में, कोई क्षत्रिय वर्ण में और कोई वैश्य वर्ण में बतलाती हैं तथा प्रत्यक्ष रूप से उन के आचरण भी पवित्र हैं उन के साथ ही शास्त्र के वचनों की कड़ाई क्यों की जाय ? और उन्हें भी उच्च वर्ण की उपाधि क्यों न देदी जाकर उन का साहस क्यों न बढ़ाया जाय ? क्या वे मनुष्य नहीं हैं ? क्या वे परमात्मा की ओर से नहीं पैदा हुये हैं ? जो उन के साथ अन्याय किया जाता है । अतएव जब ब्राह्मण जाति के साथ सब तरह की रियायत किपी जाती है तो शूद्र व अन्त्यज जातियों के साथ भी अवश्य करनी चाहिये अन्यथा हम विवश कहेंगे कि :—

## अन्याय है ! अन्याय है !! अन्याय होरहा है !!!

# ब्राह्मणों में ऊंचता नीचता

## ( उच्चश्रेणी नीचश्रेणी )

यों तो आज कल भारत वर्ष में सर्वत्र ऊंचता नीचता के झगड़े व बिवाद चल रहे हैं प्रत्येक ब्राह्मण अपने को ऊंच व दूसरे को नीच मान्ता है यह भारत वासियों में अद्भुतता है परन्तु ऐतिहासिक विद्वानों ने और विशेष कर जाति विषयक ग्रन्थकारों ने अपने अपने ग्रन्थों में कुछ थोड़ासा इस विषय का निर्णय किया है कि अमुक ब्राह्मण उच्च श्रेणी के हैं और अमुक ब्राह्मण नीच श्रेणी के हैं तथा इन को ब्राह्मण मानने न मानने विषय में भी विवाद है उस सब का सारांश यहां ज्यों का त्यों दिया जाता है यथाः—

१ नीच शूद्र व जाति पतितों के यहां का दान पुण्य लेने से व उन के यहां पाठ पूजन आदि करने कराने से ऐसी दशा में ब्राह्मणों की एक अलग ही जाति बन जाती है और वे नीच श्रेणी के "वर्ण ब्राह्मण" नाम से कहाते हैं जिस का अर्थ यह है कि वे वर्ण मात्र को ब्राह्मण हैं जैसे बंगाल प्रान्त में नीचे लिखी जातियों के ब्राह्मण ही अलग होते हैं जिन का खान पानादि संसर्ग यहां उच्च ब्राह्मणों के साथ नहीं है।

| | |
|---|---|
| १ सोनार बनिया | ( स्वर्णकार वैश्य ) |
| २ ग्वाला | ( गोपाल ) |
| ३ कालु | ( तैल्यकार ) |
| ४ धोपा=धोबी | ( रजक ) |
| ५ बागड़ी | ( लफकड़कांट ) |
| ६ कैवर्त | ( कैवर्त ) इन के पुरोहित व्यासोक्ति ब्राह्मण कहाते हैं। |

## मैथिल देश में ।

१ तत्व = कोरी आदि तन्तुवाय
२ तेली = तैलयकार ( इन के पुरोहितादि तेलिया ब्राह्मण कहाते हैं )
३ कलारा = कसेरा, कंसकार
४ सुनार = स्वर्णकार

## गुजरात व राजपूताना में

१ अभीर ब्राह्मण = अहीरों के ब्राह्मण
२ कुम्बीगौड़ = वे गौड़ जो कुन्बियों के यहां की पाधाई करते हैं
३ गूजरगौड़ = वे गौड़ जो गूजरों के यहां की यजमान वृत्ति करते हैं
४ चमर गौड़ = वे गौड़ जिन के यहां चमारों की वृत्ति है
५ मोची गौड़ = वे गौड़ जो मोचियों की यजमानी करते हैं
६ गन्धर्प गौड़ = गन्धर्प जाति के यहां की वृत्ति करने वाले गौड़
७ कोली गौड़ = कोरी व कोली जाति की वृत्ति करने वाले गौड़
८ गुड़िया = चमार, ढेढ और बलाइयों के यहां की वृत्ति करने वाले गौड़

यह लेख जो हमने लिखा है वह एक जाति विषय के ज्ञाता विद्वान का मत H. C. S. के पृष्ठ १२५ से अनुवाद किया है उस सर्वस्व से हम सहमत नहीं क्योंकि उपरोक्त प्रकरण में कई जातियें ऐसी हैं जो कोई ब्राह्मण वर्ण में हैं कोई क्षत्रिय वर्ण में तो कोई वैश्य वर्ण में अतएव इन के पाधा पुरोहित लोग नीच नहीं माने जाने चाहियें हां जो यथार्थ में नीच शूद्र हैं उन के याचक ब्राह्मण अवश्य नीच हैं इन उपरोक्त जातियों की उच्चता नीचता विषयक विवर्ण मण्डल की ग्रन्थावलि से मिलेगा वहां देखकर विद्वान लोग स्वयं निर्णय करलें अथवा भविष्यत में हम मीमांसा पूर्वक निर्णय और होंगे ।

२ भट्टाचार्य्य जी की तथा प्रायः इस ब्राह्मण समुदाय की यह भी सम्मति है कि जो लोग Public Shrines पब्लिक पूज्य स्थानों व तीर्थों की तीर्थ पुरोहिताई करते हैं वे बहुत ही नीच श्रेणी के ब्राह्मण माने जाते हैं। जैसे :-

| | |
|---|---|
| १ गयावाल | ( गयागुरु ) |
| २ चौबे | ( मथुरा के चौबे ) |
| ३ पोकर सेवक | ( पुष्कर के सेवक यानी भोजक ) |
| ४ गंगापुत्र | ( गंगापुत्र बनारस के ) |
| ५ पंडा | उड़ीसा के पंडा ( जगन्नाथ पुरी के ) |
| ६ पंडाराम | ( दक्षिण के पंडा श्री त्र्यम्बकेश्वर के ) |
| ७ प्रयागवाल | ( प्रयाग में त्रिवेनी जी के पंडे ) |
| ८ दीवास | ( वल्लभाचार्य्य के पश्चिम में ) |
| ९ गोयलर | ( गुजरात के महादेव जी के मन्दिर के ) |
| १० अम्बलवसी | ( मलाबार के प्रसिद्ध मंदिर के ) |
| ११ नुम्बी | ( कर्नाटा के मंदिर के पुजारी ) |

इन के नीचत्व के कई कारणों में से विद्वानों ने यह मुख्य कारण माना है कि इन उपरोक्त में दो चार को छोड़ कर कई तो ब्राह्मण ही नहीं हैं अर्थात् आदि में शूद्र ओड़, मेर आदि आदि नीच जातियों में से ये थे, परन्तु किन्हीं २ कारण विशेषों से इन्हें तीर्थ सेवा व तीर्थ पुरोहिताई मिलगयी और ये लोग ऊंची से ऊंची व नीची से नीची जातियों तक का दान प्रतिग्रह व चढ़ावा लेने लगे, जिस से विद्वानों ने इन का पद Very low status बहुत ही नीच माना है।

३ ब्राह्मणों की नीचता की तीसरी कसौटी विद्वानों ने यह लिखी है कि जो उच्च वर्णों के यहां जन्म मरण के समय स्यापड़ सूतक में तथा शास्त्र वर्जित दान पुण्य भी ले लेते हैं जैसे मृतक के वस्त्र व कफनादि लेने वाले व १२ दिन के भीतर मृतक का भोजन छादन ग्रहण करने व शय्यादानादि लेनेवाले, महापात्र, महाब्राह्मण, कट्टयाह, आचारी, अग्रदानी, अग्रभिक्षु, सवालखी, मोरीपोरा, डाकोत, शनिश्चरिया, जोतगी आदि।

४ खेती व नीच कामों की नौकरियें करने से भी ब्राह्मण नीच माने जाते हैं जैसे :-

१ त्रिगुल = दक्षिण में कृष्णानदी के किनारे किनारे
२ सोपारा = थेसीन के जिले में हैं
३ सभोदरा = गुजरात में
४ भारेला = भड़ोंच में
५ मस्तानी = उड़ीसा में
६ हरयाना = हांसी हिसार की ओर के गौड़
७ वागड़ा तथा वारागांव } राजपूताना के

# ब्राह्मणों का गौरव

भारत वर्ष में जो हजारों हिन्दु जातियें आज विद्यमान हैं वे सबकी सब चारों वर्णों के अन्तर्गत हैं, उन चारों वर्णों में सर्व श्रेष्ठ ब्राह्मण वर्ण है, इस वर्ण की हिन्दु जाति में बहुत ही प्रतिष्ठा व मान्य है क्योंकि ब्राह्मण अपने से अन्य जाति के चरणारविन्द में प्रणाम करने को सिर कभी नहीं झुकावेंगे, परन्तु जब कोई किसी जाति का मनुष्य ब्राह्मण को प्रणाम, पालागन करता है तो वह उसे आशीर्वाद देता है कि "जयहो" परन्तु जब कोई राजा महाराजा व उच्चपदस्थ पुरुष ब्राह्मण को पालागन व प्रणाम करता है तो वह अपने दोनों हाथों को उठाकर आशीर्वाद देता है "श्री जी का कल्याण हो" ब्राह्मणों से प्रणाम व पालागन करने के भी अनेकों ढंग हैं अर्थात् जब कि ब्राह्मण जिसे प्रणाम किया जाता है वह उच्चपदस्थ है या अद्वितीय विद्वान व योगी महात्मा है तो उस को प्रणाम करने के लिये लोग अपने दोनों हाथों को दांये बांये करके उस ब्राह्मण के चरणारविन्द में सिर रखते हुये उस के पांवों को स्पर्श करेंगे, यदि कोई सिर न रक्खेगा तो उस के पैरों में सिर झुका कर अपने दहिने हाथ से उस का दहिना पैर और बांये हाथ से उसका बांयां पैर स्पर्श करके अपनी उंगलियों को अपनी आंख व मस्तक पर लगायेगा इस ही तरह सम्पूर्ण जातियों को साधारण पालागन के लिये दोनों हाथ जोड़कर कहना चाहिये 'पांव लागूं' व 'प्रणाम महाराज' ब्राह्मण जाति के अतिरिक्त अन्य किसी भी जाति को ब्राह्मणों के साथ नमस्कार व नमस्ते न करना चाहिये किन्तु ब्राह्मण दूसरे ब्राह्मण को परस्पर नमस्ते कर सकते हैं। जब कोई मनुष्य किसी साधारण ब्राह्मण से साधारण रीत्यानुसार प्रणाम करता है तो वह ऐसा कहता है "राम राम" महाराज। जिन लोगों को ब्राह्मणों के चरणारविन्द में विशेष ही प्रीति होती है

वे लोग अपनी हार्दिक प्रीति को प्रकट करने के लिये ब्राह्मण के पैरों को धोकर "विप्रचरणामृत" पीते हैं ।

शास्त्र व्यवस्था ऐसी है कि सम्पूर्ण जातियों को अपनी प्रीत्यानुसार व ब्राह्मण की योग्यतानुसार ब्राह्मण से प्रणाम व पालागन अवश्य करना चाहिये, शास्त्र की आज्ञा है कि हिन्दु जाति के प्रत्येक मरन जीवन विवाह शादी आदि उत्सवों पर ब्राह्मण भोजन कराना चाहिये परन्तु ब्राह्मण को केवल ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य इन वर्णों के यहां भोजन करने का अधिकार है न कि शूद्र के यहां क्योंकि शूद्र के यहां का भोजन व दान प्रतिग्रह लेने से ब्राह्मण का ब्रह्मतेज जाता रहता है और वह ब्राह्मणत्व से पतित हो जाता है और प्रायश्चित से शुद्ध होजाता है। जब कि कोई क्षत्रिय वैश्य व शूद्र वर्णस्थ जाति ब्राह्मण के घर जीमने आवे तो उन्हें उसे "प्रसाद" कहना चाहिये और जीम कर चलते समय ब्राह्मण को कम से कम १) प्रसाद की दक्षिणा देना चाहिये ऐसी ही शास्त्र व्यवस्था है शूद्र वर्णस्थ जातियों को ब्राह्मणों के साथ एक ही पंक्ति में भोजन एक साथ नहीं करना चाहिये ब्राह्मणों के जीमण समय शूद्रादि जातियें अलग दूसरे मकान में ठहरी रहें ऐसी ही प्रणाली है परन्तु ब्राह्मणों को न अपनी उच्छिष्ट किसी को खिलाना चाहिये और न शूद्रादि जातियों को उच्छिष्ट खाना चाहिये क्योंकि उच्छिष्ट का देना व खाना महापातक माना गया है। कोई भी जाति हो, उसे जब ब्राह्मण भोजन करे तो ब्राह्मणों के जीम चुकने पर" भोजन दक्षिणा" देनी चाहिये, इस ही तरह का वर्ताव क्षत्रियादि तीनों वर्णस्थ जातियों की स्त्रियों को ब्राह्मण स्त्रियों के साथ करना चाहिये। ब्राह्मणियों को अन्य वर्णस्थ जातियों की स्त्रियें "माताजी" पंडितानी जी, बाई जी व देवी जी अथवा माजी कह कर सम्बोधन करना चाहिये और अपने को उन के प्रति दासी भाव रखना चाहिये ।

पाठक ! इस विषय की आलोचना कहां तक की जाय ? क्योंकि ब्राह्मणों का पूजन विषयक पूरा २ विवरण लिखने से यह ग्रन्थ बढ़जायगा अतएव इतना ही लिखा है, शास्त्रों ने ब्राह्मणों के प्रति बहुत कुछ लिखा है, इस ही तरह सम्पूर्ण जातियों ने ब्राह्मणों के प्रति उन का मान्य व

मर्य्यादा तथा प्रतिष्ठा को बढ़ाने के लिये कुछ कमी न रक्खी, परन्तु शोक के साथ नहीं २ महान दुःख के साथ कहना पड़ता है कि ब्राह्मणों ने अपने हाथों अपने पैरों में कुल्हाड़ी मारलियी यानी वे ब्राह्मण जो अपनी विद्या बुद्धि जप तप और कर्म काण्ड के लिये इपरोक्त रीत्यानुसार पूज्य थे वेही अपने आलस्य प्रमाद और अविद्या के कारण आज जिस दरिद्रता व अपमान को प्राप्त हैं, इतनी और कोई अन्य जाति न होगी, ब्राह्मणों ने भीख के टुकड़े खाना ही अपना कर्तव्य समझ लिया और विद्या शून्य होकर निरक्षर भट्टाचार्य्य बन बैठे और निषिद्ध से निषिद्ध कर्म के लिये ब्राह्मण जाति के लोग व लुगाइयें सहज ही में प्राप्त होने लगीं, यानी आज कल रसोइये, चौकीदार, सिपाही, पनिहारे पानीपांडे, कुली, मजदूर, आदि सम्पूर्ण दास कर्मों के लिये सर्वत्र ब्राह्मण जाति ही दृष्टि पड़ती है, ब्राह्मणियें भी वह काम करती हैं जिस को सुनकर रोमाञ्च खड़े होते हैं।

साथही में जहां ब्राह्मण डूबे वहां यजमान भी डूबगये अर्थात् यजमान भी आंखें मीच कर ब्राह्मणों से दास कर्म कराने लगे जिस से थोड़े काल में ब्राह्मण व यजमान दोनों ही पतितसे होते जाते हैं अतएव राजे महाराजे सेठ साहूकार व ज़मींदार, तथा ताल्लुकेदार आदि कों का यह धर्म्म है कि वे निरक्षर भट्टाचार्य्य ब्राह्मणों को आजीविकायें व उन्हें दान दक्षिणा देकर अपने तांई नरक का सामान इकट्ठा न करें क्योंकि ऐसा करने से ब्राह्मणों को मूर्ख रखने व आलसी बनादेने का पाप यजमानों पर लगता है आज कल बहुत से महन्त व गुसाईं तथा गिरी पुरी भारती ऐसे हैं जिन के लाखों रुपयों की आजीविकायें हैं पर वे स्वयं मूर्खानन्द होने के कारण उस रुपिये को व्यभिचारादि कुकर्मों व संड मुसंडों के खाने खिलाने में लगाते हैं अतएव इस का समुचित प्रबंध करना सम्पूर्ण हिन्दू जातियों का मुख्य कर्तव्य है क्योंकि ब्राह्मणों ने अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिये श्लोक बनाडाले कि :-

अविद्वांश्चैव विद्वांश्च ब्राह्मणो दैवतं महत् ।
प्रणीतश्चाप्रणीतश्च यथाग्निर्दैवतं महत् ॥

म० सं० अ० ९ श्लो० ३१७

ब्राह्मण विद्वान् हो चाहे अविद्वान् हो वह बड़ा देव है, इसही तरह संस्कार किये हुये अग्नि व असंस्कार किये हुये अग्नि भी शुद्ध है, अतएव ब्राह्मण पूजनीय है।

पाठक! जब अविद्वान् भी देव है और विद्वान् भी देव है तो ऐसी दशा में विद्याभ्यासार्थ कोई भी उद्योग नहीं करेगा क्योंकि यहां तो गधी व घोड़ी दोनों बराबर हैं अतएव यह श्लोक स्वार्थियों का रचा हुआ है। पुनः-

स्मशानेष्वपितेजस्वी पावको नैवदुष्यति।
हूयमानश्च यज्ञेषु भूयएवाभिवर्द्धते॥
एवं यद्यपि निष्टेषु वर्तते सर्वं कर्मसु।
सर्वथा ब्राह्मणाः पूज्या परमंदेवतं हितत्॥

म० सं० अ० ६ श्लो० ३१८

अग्नि को स्मशान भूमि में जाने से भी दोष नहीं लगता है और यज्ञ में तो हविषादि के कारण वृद्धि होती रहती है इसही तरह ब्राह्मण चाहे कैसे भी खोटे कर्म क्यों न करता हो सर्वदा पूजनीय है क्योंकि वह बड़ा देव है।

हाय! पक्षपातरहित न्याय दृष्टि से देखा जाय तो ये श्लोक अधर्मियों ने अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिये रचलिये हैं। पुन:-

अनाचारा द्विजा पूज्या न च शूद्र जितेन्द्रियः।
अभक्ष्य भक्षका गावः कोलाः सुमतयोनच॥

पद्मपुराणे

ब्राह्मण अनाचारी यानी पापी, हत्यारा, व्यभिचारी, चोर, जुवारी छिनला, मद्यपी, मांसाहारी आदि कैसा भी कुकर्मी क्यों न हो वह श्रेष्ठही है पर शूद्र यदि जितेन्द्रिय, धर्मात्मा, सत्यवादी, निरामिषी, अक्रोधी, विरागी, ईर्षा, राग, द्वेष, मोह अहंकार आदि सम्पूर्ण दुर्व्यसनों से रहित पूर्ण महात्मा भी क्यों न हो वह पूजनीय नहीं होसकता। इस ही तरह गाय कितना भी अभक्ष्य भक्षण क्यों न करे पर वह पूजनीय है

और सूअरी कितना भी सात्विकी भोजन क्यों न करे वह पूजनीय नहीं। पाठक! कहिये जितेन्द्रिय पूर्णमहात्मा शूद्र पूजनीय क्यों नहीं? अतएव शूद्रों से द्वेष करनेवालों की यह प्रवृत्ति है सो मानने योग्य नहीं। पुनः—

सर्वेऽपि ब्राह्मणाः श्रेष्ठा पूजनीयाः सदैवहि ।
अविद्योवा सविद्योवा नात्र कार्याविचारणा॥
स्तेयादि दोषलिप्तायेब्राह्मणाःब्राह्मणोत्तमाः ।
आत्मभ्यो दोषिणास्तेच न परेभ्यः कदाचन॥

ब्राह्मण विद्वान् हो चाहे मूर्ख हो परन्तु वह सर्वदा पूजनीय है और उसकी अविद्वानता व अधर्माचरणों का विचार तक भी न करना चाहिये यदि ब्राह्मण चोरी आदि दुष्कर्मों में भी लिप्त हो तो भी वह ब्राह्मण ब्राह्मणोत्तम है और वह अपना ही चोर है दूसरे का नहीं।

सज्जन गृहस्थो! पक्षपातरहित होकर इन श्लोकों को पढ़ो और याग्यवल्क्य स्मृति, मनुस्मृति आदि धर्मशास्त्रों को देखो कि ऐसे श्लोकों से कितना अधर्म का प्रचार हुआ क्योंकि ब्राह्मण लोगों पर भय न रहा और वे दुष्कर्म करने में निर्द्वन्द्व होगये जिस से देश में विद्या का अभाव, ज्ञान की शून्यता और अन्धकार की प्रवृत्ति होकर यह देश भूखों मरने लगा, आज कल ऐसे ऐसे वाक्यों के आधारों पर ही प्रत्यक्ष देख लीजिये कि पहिले ब्राह्मणों का कितना गौरव था! और अब कितने दर दर भीख मांगते फिरते हैं और यहां तक कि भीख भी उन्हें नहीं मिलती है तिस से उन्हें ईसाई व मुसलमान होना पड़ता है। अतएव सरकारी रिपोर्टों को देखेंगे तो मालूम हो जायगा कि भारत की सम्पूर्ण जातियों में से सब से दीन ब्राह्मण जाति है अतएव ब्राह्मण जाति के सुधार की कुंजी क्षत्रिय वैश्य आदि ज्ञातियों के हाथ में है क्योंकि शोक के साथ कहना पड़ता है कि दुष्कर्मों का अड्डा आजकल का ब्राह्मण समुदाय है। यथा:—

गवर्नर हालवेल साहब अपनी रिपोर्ट में लिखते हैं कि जितनी

प्रकार के अपराध मेरे साम्हने आये उन में एक भी ऐसा नहीं जो ब्राह्मणों से छुटा हो।

मिस्टर वार्ड साहब अपनी रिपोर्ट में लिखते हैं कि ब्राह्मण ठगीका धन्दा करते हैं मिस्टर रैनाल्ड साहब ने अपनी पुलिस रिपोर्ट में तथा Colonel Medoz Taylar C.S.I. कर्नल मेडोज़ टेलर सी. ऐस. आई. ने अपनी रिपोर्ट में बद्रीनाथ ब्राह्मण व गणेश ब्राह्मण के लिये लिखा है कि ये दोनों ठगों के गिरोहों के बड़े सरदार थे।

पाठक! ये सब लिखने से हमारा यह ही अभिप्राय है कि ब्राह्मण जाति का सुधार हो जिस से देश में सुख सौख्य की वृद्धि हो।

उपरोक्त श्लोक सब मिथ्या व कपोल कल्पित स्वार्थियों के रचे हुये हैं क्योंकि धर्म्मशास्त्रो में अनेकों प्रमाण मिलते हैं, जिस का पूरा विवरण व शास्त्रो के प्रमाण देखने हों तो ब्राह्मण लक्षण, ब्राह्मणधर्म, ब्राह्मण कर्म्म आदि आदि लेखों में अनेकों प्रमाण लिख आये हैं तहां देख लेना तथा मनुस्मृती चतुर्थ अध्याय को देख लीजियेगा।

# हिन्दू धर्म

भारत में नित्य प्रति दिनों दिन, हिन्दू जाति का ह्रास ही ह्रास होता चला जाता है अर्थात् हिन्दू धर्म की डोरि एक मात्र सनातन धर्मी पौराणिक पण्डितों के हाथ में है जिन्हें पूजन पाठ करने कराने द्वारा तथा कथा भागवत बांचकर एकमात्र जीविका करने का परिज्ञान है: देशस्थिती क्या है ? देश काल क्या है ? वर्तमान जिस प्रणाली से हिन्दू धर्म की नाव चल रही है इस का परिणाम देश पर क्या है ? वे कौन कौन से उपाय व साधन हैं जिन के द्वारा हिन्दू सन्तान का भला हो सक्ता है ? वर्तमान राज्यस्थिती से हमें किनर तरह से क्या क्या लाभ व किन किन तरह से क्या क्या हानियें हो सक्ती हैं ? जिस प्रणाली से हिन्दू धर्म के नेता आनरेबल मेम्बर लोग हिन्दू धर्म की नैय्या को चलाना चाहते हैं उस में रुकावटें पैदा करने वाले पुराने ढर्रे के लोगों के करतूत कितने हानि प्रद हैं ! आदि आदि बातों का परिज्ञान रखकर हमें हिन्दू धर्म को चलाना है, वर्तमान काल की स्थिती को देखते हुये लम्बी धोती, तिलक माला और छूतछात मात्र सेही काम नहीं चलेगा वरन हिन्दू जाति को अन्य जातियों के समक्ष मनुष्य बनकर हिन्दू जाति को विश्वास पात्र बनाना है।

आजकल एक एक जिले में हम कई कई सम्प्रदायों का प्रादुर्भाव नाना प्रकार की समाजें, संस्थायें, समितियें, अञ्जुमनें, सभायें तथा परिषद् व कान्फरेन्स होती हुई देखते हैं, जो अपनी अपनी मति के अनुसार काम कर रही हैं, परन्तु हिन्दू धर्म के झंडे के नीचे इतनी अनगिनत संस्थाओं के होते हुये भी वास्तव में कोई कार्य्य नहीं होता है, एक संस्था का काम किसी न किसी अंश में दूसरी संस्था के विरुद्ध है, प्रत्येक नेता व सभा के लीडर जो कार्य्य करते हैं वे अपनी सम्मति के समक्ष विश्वभर की सम्मति को तुच्छ समझते हैं।

इतनी अधिक समाज व संस्थाओं के होने से कार्य्य कर्तृत्व शक्ति अनेकों भागों में बट जाती है जिस एकत्रित शक्ति का सदुपयोग हटकर दुरुपयोग होता रहता है, देश सुधार के लिये आवश्यक यह है कि हिन्दू सम्प्रदाय में से भिन्न भिन्न धर्म्म, भिन्न भिन्न संस्कार, भिन्न भिन्न शास्त्र, भिन्न भिन्न मत, भिन्न भिन्न रीतियें और रिवाज, भिन्न भिन्न भेद आदि आदि प्रकार की भिन्नभाव की बातायें हटानी चाहिये असहिष्णुता को नाश करके, एक ऐसी संस्था को जन्म देना चाहिये जिस में कि व्यक्तिगत स्पृहाओं तथा क्षुद्र बातोंओं के प्रति वैमनस्य हटकर सार्वजनिक अभिप्राय, सार्व लौकिक जीवन और राष्ट्रीय स्पृहाओं का शासन रहे, 'अनेक भेद डालने वाली वस्तुयें जो हमारे समाज में रह गयी हैं,' या बीच में से आकर प्रवेश कर गयी हैं उन को नष्ट कर देना चाहिये, जाति भेद की कड़ाई व शास्त्र मर्य्यादा की अक्षरशः पाबन्दी में ही हिन्दू धर्म्म है तो यह कड़ाई व पाबन्दी सब से पहिले सर्वोच्च ब्राह्मण समुदाय के साथ होनी चाहिये, क्योंकि हम देखते हैं कि ब्राह्मण वर्ण के लोग दूध दही, नमक व शराब आदि तक का व्यापार करें जो कि शास्त्र विरुद्ध है तो उन्हें कोई कुछ न कहे, नीच से नीच कामों की नौकरी भी ब्राह्मण करें शूद्र व नीचों का दान प्रतिग्रह भी लेलेंवें पर उन के लिये सब मुआफ़ी हैं हां कड़ाई या शास्त्र नियम की पाबन्दी जो कुछ है व अक्षरशः अन्य जातियों के साथ है, ऐसा नहीं होना चाहिये। बंगाल के कुलीन, विहार के श्रोत्रिय और युक्त प्रदेश के कान्यकुब्ज मांस मछली खांय पर वे ब्राह्मण ही माने जांय परन्तु इस के विपरीत अन्य जातियें तनिक तनिक से दोष व उन के सम्बन्ध में विरुद्ध लेखों के कारण धिक्कारी जावें तथा घृणित व नीच बतलायी जावें, सो क्यों? मैला खाने वाली गऊ व मुर्दाढोहनेवाले तथा पानी पांडे की उत्तमता में कुछ फ़र्क न पड़ा किन्तु एक शूद्र यदि उत्तम कर्म कर रहा है सदाचारी है तो वह भी अपवित्र है।

"पतिव्रत धर्म्म" पतिव्रत धर्म्म की सब ठौर पुकार है, परन्तु स्त्रीव्रत धर्म्म को तो कोई पूछता तक नहीं! पति की चिता पर स्त्री का ही जलना धर्म्म क्यों है? और स्त्री की चिता पर पुरुष का जलना धर्म्म

क्यों नहीं ? प्राचीन शास्त्रों में महमान का दूसरा नाम "गोघ्न" भी है जिस का अर्थ गाय के मारने वाले के हैं, आये हुये अतिथि के लिये बैल के मांस का शोरबा महमान को देना आवश्यक था, हिन्दू धर्म के अनुसार आज कल इस महा पाप को कौन करने का साहस करेगा ? छप्पन लाख मूर्ख भिखारी हिन्दुवों के धन को हरण करके मजे उड़ावें जब विधर्म्मी सम्प्रदायों की शंकायें हिन्दूधर्म्म पर आरोपित कियी जाती हैं, तो उन का उत्तर देकर हिन्दू धर्म्म किसी को अपने में मिला नहीं सक्ता, किन्तु अपने में से कुछ रत्नों को खो बैठता है, ऐसी दशा में हमें तर्क शास्त्र विधर्म्मी जनों से सीखना चाहिये और देश में ऐक्यता के बीज बोकर देश में से नाना विचार नानासम्मतियें व परस्पर बैर को हटाकर कार्य्य करना चाहिये, हमारे हिन्दूधर्म्म के सम्बन्ध में हमारे अधिष्ठातावों के कैसे विचार हैं उन पर भी हमारे हिन्दूधर्म्म के नेतावों को ध्यान देना चाहिये। लार्ड जॉर्ज हेमिल्टन जब कि वे Secretary of State for India सेक्रटरी आफ स्टेट फार इन्डिया थे उन्हों ने White Hall Chapple ह्वाइट हाल चैपल गेलरी में इन्डिन एम्पायर प्रदर्शनी खोलते समय तारीख ५ अक्टूबर १६०४ को वक्तृता दियी थी* उस में कहा था कि हिन्दुस्तान के केवल एक नगर में इतने प्रकार के भिन्न भिन्न जाति और मज़हब के लोग मिलेंगे जितने कि कुल यूरुप भर में न मिलेंगे। इस ही जाति व मजहब के भेद से हमारा साम्राज्य शुरू हुवा और इस ही के कारण वह प्रबल हुवा।

इस ही तरह Sir Jhon Strechee सर जान स्ट्रेची अपनी पुस्तक इन्डिया नामक में लिखते हैं कि "इन परस्पर विरोधी सम्प्रदायों के साथ साथ रहने के कारण हम लोगों की राजनैतिक स्थिती खूब मजबूत है ,, ( 2nd. ED. p. 241 )

केपटन लायन Captain Lyon की किताब, जो पश्चिमोत्तर सरहद्दी प्रान्त के बारे में लिखी गयी है और सरकार द्वारा छपाई गयी है, साफ़ २ यह कहती है कि धार्मिक तथा परस्पर जातीय घृणा से अंगरेज़ी सरकार बराबर लाभ उठाती है।

---

* देखो states man d.23 rd. August 1904 or या नवजी० मार्च १६१५

Sir Bamfield Fuller सर बम फील्ड फुलर भूतपूर्व लेफ्टि-नेन्ट गवर्नर ईस्टर्न सर्कल बंगाल ने भी एक बार अपनी वक्तृता में कहा था कि "मुसलमान लोग हमारे प्रिय भाई हैं" लार्ड कर्जन की वक्तृता जो उन्होंने हाउस आफ कामन्स में दियी थी उस में कहा था कि "एक कारण जिस से उन्होंने बंगाल को अलहिदा किया था यह था कि वे मुसलमानों का पक्ष करना चाहते थे" इस पर लार्ड मेकडानल्ड ने लार्ड कर्जन को फटकारा था" अस्तु !

यह सब उपरोक्त श्रीयुत गोविन्दराम जी एम. ए. के लेख से उद्धृत करके हिन्दू धर्म्म के नेताओं से विन्ती है कि वे लोग देश काल को देखें बृटिश गवर्नमेन्ट के सुराज्य में सुनीति सीखें और हिन्दू धर्म्म को एक सर्वमान्य धर्म्म बनावें क्योंकि हिन्दू धर्म्म महामंडल बनारस तो थाही अब उसे कुछ करते धरते न देखकर "भारत वर्षीय अखिल हिन्दू सम्मेलन हरद्वार" का और जन्म हुआ, परन्तु हुआ क्या ? वही ढाक के तीन पात, अर्थात् आठ वर्ष की लड़की व अठारह वर्ष का लड़का विवाह योग्य हैं,, जिस में भारत के सब ही प्रसिद्ध हिन्दू समाचार पत्रों ने टीका टिप्पणियें कियी हैं ! अस्तु !

अतएव हम पाठकों को आशा दिलाते हैं कि हिन्दू धर्म्म वर्ण व्यवस्था मण्डल फुलेरा-जयपुर की ओर से बाल विवाह, पुनर्विवाह और ईसाई मुसलमानों की शुद्धि ये तीनों विषय विचाराधीन हैं। विद्वानों की सम्मतियें ली जारही हैं छपेहुये "फार्म सम्मति दाता विद्वानों को )॥ का टिकट डाकमहसूल मात्र आने पर मुफ्त भेजे जा सक्ते हैं अतएव निश्चय हो जाने पर देश के लिये कल्याणप्रद सुव्यवस्थायें निकलनेकी दृढ़ आशा है क्योंके मण्डल के प्रधान महामहोपाध्याय पं० शिवदत्त जी शास्त्री हेड संस्कृत प्रोफेसर लाहोर एक उदार चित्त व अनुभवी विद्वान हैं। अतः ईसाई मुसलमानों की शुद्धि विषयक उन की सम्मति आगयी है।

❀ महामन्त्री ❀

## परस्पर ब्रह्मद्वेष

**क्या** हे भ्रातृवर्ग ! ब्रह्मवंश शिरोमणियों !! ज़रा विचारिये कि आप सर्वोपरि, ब्राह्मण धर्म में हैं, सम्पूर्ण हिन्दू मात्र शिखा धारी मात्र को आप ही के बताये पथ पर चल कर अपने जीवन की साफल्यता प्राप्त करनी है, क्योंकि आप सृष्टि के अग्रजन्मा हैं आप ही के ब्राह्मण वर्ण की ओर चहुंओर से टकटकी लगी हुयी है, कि देखें आप यथार्थ में शास्त्र मर्य्यादा की ओर आते हैं या नहीं ? परन्तु वर्तमान काल की आप की स्थिति को देख कर अत्यन्त दुख के साथ कहना पड़ता है कि यदि आप अपनी प्राचीन मर्य्यादा पर न आये और परस्पर के रागद्वेष, व अहंकार तथा ऊंचता नीचता के भावों पर हठवश अड़े रहे तो कहिये इस का परिणाम क्या होगा ? आप के विचारार्थ आप की प्यारी श्रीमती गौड़ महासभा में यह विषय पेश है कि :-

### सनाढ्य, पल्लीवाल और तगा ब्राह्मण जो अपने को गौड़ ब्राह्मण बतलाते हैं वे वास्तव में अपने कला कलाप से गौड़ ब्राह्मण हैं या नहीं ?

इस ही प्रश्न के निर्णय का भार दास के ऊपर रक्खा गया है आप जानते हैं कि सन् १९१४ के दिसम्बर वाली २७ वीं गौड़ महासभा के आगरे वाले जलसे पर " उपरोक्त "तीनों प्रकार के ब्राह्मण सम्मिलित हो सकते हैं या नहीं ?" के पेश होते ही कतिपय आगरे के अदूरदर्शी महात्मा गण पूर्वापर विचार न करके सहसा महा युद्ध करने को प्रस्तुत होगये थे और ऐसी दशा में इन तीनों का सम्मेलन हास्यास्पद सा प्रतीति होने लगा था, अतएव :-

कहना पड़ता है कि :—

जेवरी ( रस्सी ) जलगयी पर बल नहीं गया, अर्थात् "गुड़ खांय और गुल गुलों से परहेज़ करें" ठीक यह ही दशा हमारे कतिपय गौड़ सज्जनों की थी यानी गौड़ व सनाढ्यों के परस्पर अनेकों सम्बन्ध, बेटी व्यवहार और खानपान के एक होते हुये भी टांय टांय तो मचही गयी, इस ही टांय टांय के उत्तर में श्रीमती गौड़ महासभा के प्रधान परम माननीय पण्डित किशोरीलाल जी गोस्वामी ने सब को यह चेलेञ्ज दिया था कि "सभा के बीच में कोई ऐसा मनुष्य हो जो यह प्रमाणित कर सके कि उस का कुछ भी सम्बन्ध सनाढ्यों के साथ नहीं है तो वह साम्हने आवे" परन्तु वहां ऐसा कोई भी न निकला तिस पर भी वहां विरोध का वारापार ही नहीं था !

पाठक ! हमारी सम्मति इन तीनों के एकत्रित हो जाने के पक्ष में थी, अंतः हम आप को विश्वास दिलाते हैं कि वहां की कार्य्य कारिणी सभा के एक नाटेले व मोटेसे, सज्जन ने हमें यह कहा कि "आप तो हमारी पक्ष में नहीं हुये अन्यथा आप को यहां से बहुत कुछ लाभकराते" परन्तु हाय ! क्या हम अपना ईमान बेचने आगरे गये थे वा स्वजाति सेवा करने ! अस्तु बलिहारी है ऐसे ब्रह्मत्व की !!

इस सब का मुख्य कारण भारत का जाति भेद व परस्पर का

**ब्राह्मणों में द्वेष**

ईर्षा द्वेष व ऊंच नीच भावों की उत्पत्ति ने ब्राह्मणों में परस्पर फूट व कलह पैदा कर दिया, जिस का परिणाम देश पर यह हुआ कि भाई भाई का शत्रु व पिता पुत्र का भी शत्रु बन बैठा क्योंकि:—

ओं ब्राह्मणस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः ।
ऊरूः तदस्य यद्वैश्यः पदाभ्यां शूद्रो अजायत ॥

यजुर्वेद अ० ३१ मंत्र ११

अर्थात् ब्राह्मण ब्रह्मा जी के मुख से पैदा हुये हैं अतः परस्पर भाई हैं ऐसा सिद्ध होता है परन्तु ब्राह्मणों में ऊंच नीच का भेद होना यह कहीं आर्ष ऋषि प्रणीत ग्रन्थों में कुछ नहीं मिलता है, हिमालय से लेकर कन्या कुमारी तक के सब ब्राह्मण मात्र एक हैं, और सम्पूर्ण

को षट कर्म करने के समान अधिकार है, तब छुटाई बड़ाई कैसी ? परन्तु जाति भेद के साथ ब्राह्मणों के भी छोटे मोटे सब भेद मिलाकर १०२ होगये * और वे परस्पर द्वेष भाव के कारण एक दूसरे से घृणा व निन्दा करते हुये अपने को उच्च व अन्य सब को नीच मानने लगे हैं क्योंकि कितनेक दक्षिणी ब्राह्मण गुजराती ब्राह्मणों के हाथ का अन्न

खान पान

नहीं खाते हैं, कितनेक गुजराती ब्राह्मण दक्षिणियों के यहां का स्पर्श किया भोजन नहीं करते हैं, इस ही तरह कान्यकुब्ज ब्राह्मण गौड़ों के हाथ का व गौड़ कान्यकुब्जों के यहां का भोजन नहीं करते हैं, इस ही तरह गुजराती दक्षिणी हिन्दुस्तानी ब्राह्मणों के हाथ का, व हिन्दुस्तानी ब्राह्मण गुजराती दक्षिणी ब्राह्मणों के हाथ का भोजन नहीं करते हैं ऐसी ही दशा भारत के सम्पूर्ण ब्राह्मणों की है अतएव ऐसी दशा में एक ब्राह्मण समुदाय अपने को ऊंच व दूसरे को नीच मानता है, यही कलह का एक मात्र कारण है ।

क्योंकि लिखा है :-

स्त्रीत्वं पुंस्त्वं द्वयोर्जाति रितराभ्रान्ति मूलका ।
वेदाप्रमाणं नेच्छन्ती ह्यागमं नैवचापरे ॥

अर्थात् सृष्टि के आदि में पुरुष व स्त्री दो ही जातियें थीं अन्य सब बातें संदेह पैदा करने वाली हैं, ऐसी दशा में वेद व पुराणों के प्रमाणों की भी आवश्यका नहीं है क्योंकि :-

तेभ्यः सारांश मादाय संक्षेपा द्वर्णयाम्यहम् ।
सृष्ट्यारम्भे ब्राह्मणस्य जातिरेका प्रकीर्तिता ॥

महाभारते

अर्थात् वेदादि आर्ष ग्रन्थों का सार मात्र लेकर संक्षेप में वर्णन करता हूं क्योंकि सृष्टि की आदि में तो एक ही ब्राह्मण जाति थी, अतः व्यास जी महाराज की आज्ञा ऐसी है कि :-

---

* इस ग्रंथ में सूक्ष्म रूप से अनुमान ३२४ मुख्य मुख्य ब्राह्मण जातियों का विवर्ण दिया है ।

भुंज्याश्च भोजनीयाश्च सर्व देशेषु ब्राह्मणाः ।
योनि सम्बन्ध कृत्यञ्च स्वशाखा सूत्रसंज्ञया ॥

स्कन्द पुराण सह्याद्रिखण्ड उत्तरार्द्ध अध्याय १ श्लो० ७

अर्थात् सम्पूर्ण देशों में ब्राह्मण मात्र को परस्पर एक दूसरे के यहां भोजन करना चाहिये पर विवाह सम्बन्ध अपनी अपनी शाखा व सूत्र में करने चाहियें ! इस से सिद्ध होता है कि पूर्व काल में अब का जैसा वितण्डा वाद नहीं था कि " सातकन्नौजिये व नौचूल्हे" अर्थात् सात कन्नौजिये ब्राह्मणों को रसोई बनाने को ९ चूल्हे चाहियें, इस ही तरह के भावों की वृद्धि से अन्य ब्राह्मणों ने उपरोक्त शास्त्र मर्य्यादा को उल्लङ्घन करके मन माने द्वेष व अहंकार को बढ़ाया जिस से देश का सर्वनाश होता चला जारहा है । क्योंकि शास्त्र मर्य्यादा तो यह थी कि :-

गृहस्थो पंक्ति भेदेन पात्र भेदेन मस्करी ।
नारी पुरुष भेदेन रौरवं नरके व्रजेत् ॥

स्कन्दपुराण सह्याद्रिखण्डे

अर्थात् गृहस्थी हो कर ब्राह्मण ब्राह्मण से पंक्तिभेद करे अथवा नारी पुरुष से भेद करे तो वे दोनों रौरव नरक में पड़ते हैं ।

वर्तमान काल के प्रचलित धर्म शास्त्रों में जहां अनेकों बातों का निषेध है तहां ब्राह्मणों के इस परस्पर प्रचलित भोजन व्यवहार के विषय में ज़रासा भी उल्लेख नहीं हैं इस से प्रमाणित होता है कि ये सब केवल आडम्बर व मिथ्या अहंकार का फल है ।

जब इस प्रकार परस्पर खान पानादि में वैर बढ़ा तब एक ब्राह्मण समुदाय दूसरे ब्राह्मण समुदाय को अपने से छोटा व नीच मानने लगा ऐसी धींगा धींगी व ब्राह्मण का परस्पर कलह देखकर जयपुर के स्वर्गवासी महाराज जयसिंह जी ने ब्राह्मणों की एक बड़ी भारी सभा कराकर पूछा था कि " खानपान के जो इतने भेद ब्राह्मणों में पड़े हुये हैं वे शास्त्र धारानुसार हैं या नहीं ? इस पर उपस्थित विद्वानों में से कोई भी इस भेदभाव को शास्त्रों से प्रमाणित न कर सका अतएव इस ही कारण

से छन्याति ब्राह्मणों की उत्पत्ति हुयी अर्थात् इस राज्य में विशेष रूप से गौड़, गूजर गौड़, सनाढ्य, दाहिमा, खंडेलवाल और पारीक ब्राह्मणों की बस्ती अधिक है अतः इन छहों नाम वाले ब्राह्मणों का खान पान कच्ची पक्की यानी सखरी निखरी रसोई एक करदियी और इन का नाम " छन्याति " ब्राह्मण रखदिया।

आपस की फूट

अब खानपानादि विषय में भारत में द्वेष बढ़ना हो गया तब आधुनिक ग्रन्थों में अपने अपने प्रति नाना प्रकार के मिथ्या प्रशंसा युक्त वाक्य व दूसरों के प्रति उपालम्भ युक्त मान मर्य्यादा भंग करने वाले वाक्यों की रचना होने लगी क्योंकि गौड़ों ने अपने ही भाई दधीच ब्राह्मणों को जी दुखाने के लिये शिवपुराण के इस श्लोक को लिखा :-

दधीचि गौतमादीनां शापेन दग्धचेतसां ।
द्विजानां जायते श्रद्धा नैव वैदिक कर्म्मणि ॥

शिव पुराण विंध्येश्वर संहिता अ० २१ श्लो० ४३

इस का अर्थ वर्तमान काल के दाहिमा ब्राह्मणों पर घटाया कि दधीचि और गौतम ऋषि के वंशजों को वैदिक कर्म्मों में वेद मंत्र उच्चारण करने में अधिकार नहीं है क्योंकि ये शाप से शूद्र धर्म्म के अधिकारी होगये है * अन्यथा यहां दधीचि व गौतम कोई अन्य ही हुये हैं इस ही द्वेष के प्रतिफल में यह रचना हुयी कि :-

सारका पारखा खंडा गौड़ा गूजर संज्ञकाः ।
पञ्चविप्रानपूज्यन्ते वाचस्पति समायदि ॥

अर्थात् ( सारका ) सारस्वत ( पारखा ) पारीक पुरोहित ( खंडा ) खंडेलवाल ब्राह्मण ( गौड़ा ) आदिगौड़ ब्राह्मण ( गूजर ) गूजरगौड़ ब्राह्मण इन पांचों ब्राह्मणों को यदि ये विद्या व तप में बृहस्पति जी के बराबर भी हों तो भी इन का आदर नहीं करना चाहिये।

---

* यह अर्थ चौबे हरअचन्द्र व पं० मुन्नालाल जी ज्योतिषी जयपुर वालों का है।

इस ही परस्पर द्वेष ने यहां तक ज़ोर पकड़ा कि गौड़ व दाधीचों का मुक़द्दमा करीब ८ वर्ष तक जयपुर में चलता रहा और इस परस्पर के द्वेषसे नाना प्रकार की झूंठी व जी दुखाने वाली टिप्पणियें होती ही रहीं तथा परस्पर विरुद्ध मन घड़ंत कल्पनाओं का तो वारापार ही नहीं था कहां तक कहें लिखते पत्थर का हिया भी दाड़िमसा दरकता है दुख भी यह कहते बहुत होता है कि गौड़ों ने उपरोक्त श्लोक के उत्तर में यह रचना किया कि :-

विप्रद्रोही दाहिमो ते न दीजिये दान।
कुटुम्ब सहित नरका चढ़ो साथ लियो यजमान।

अर्थ-तो सीधा ही है और प्रश्न होता है कि ऐसे मिथ्या व कटु वाक्यों की रचना क्यों हुयी? उत्तर:-

कलह! कलह!! कलह!!!
स्वार्थान्धता! स्वार्थान्धता!! स्वार्थान्धता!!!

इस पर दाहिमा ब्राह्मण समुदाय में गौड़शब्द की व्युत्पत्ति ऐसी किया कि "गुदेभव गौड़ः" अर्थात् मलमार्ग नाम गुदा से उत्पत्ति होने से गौड़ ब्राह्मण कहाये।

पुनः सनाढ्य ब्राह्मण समुदाय से द्वेष रखने वालों ने यह घड़ंत घड़ी कि:-

"सन्यासी पुत्र सनाढ्यः"

अर्थात् किसी सन्यासी ने किसी स्त्री के साथ भोग किया जिस से सनाढ्य ब्राह्मण उत्पन्न हुये पुनः द्वेषियों ने गूजरगौड़ ब्राह्मण पर भी अपनी सफ़ाई किया कि:-

गंगवाने की गूजरी अरु गूगोर का गौड़।
दोनों ने मिलकर संगमकीना निकाला गूजरगौड़॥

अर्थात् गंगवाने की गूजरी से गूगोर का एक गौड़

फंस गया जिन दोनों की सन्तान गूजर गौड़ ब्राह्मण कहायी *

और भी देखिये कि स्वार्थी समुदाय ने अपनी ही मान प्रतिष्ठा ना-दकर दूसरे ब्राह्मणों की निन्दा में मनमाने ग्रन्थ गढ़ इन फैलाया है यथाः-

> अभीर कंका यवनाश्च भृंगा ।
> नारास्तथा मालवदेशविप्राः ॥
> श्राद्धे विवाहे खलुयज्ञकर्मणि ।
> ते वर्जिता यद्यपि शम्भुतुल्या ॥

ब्रा० उ० श्लो० ५८

अर्थात् अभीर ब्राह्मण, कंक ब्राह्मण, यवन ब्राह्मण, भृंग ब्राह्मण, नारा ब्राह्मण और मालवीय ब्राह्मण इन सब को यदि ये विद्या व तप में शम्भुतुल्य भी हों तो भी श्राद्ध में व विवाह में और यज्ञादि कर्मों में इन्हें न बुलावे । सो क्यों ? उत्तरः-जातिदम्भ, स्वार्थता, अहंकार ईर्षा व परस्पर डाह, जब इस प्रकार से भी ये हेषाग्नि शान्त न हुयी तब यह महोर छाप लगायी गयी किः-

> स्वे स्वे देशे प्रपुज्यन्ते नान्य देशे विशेषतः ।
> येषु तीर्थेषु ये देवा येषु तीर्थेषु ये द्विजाः ॥

ब्रा० उ० मा०

अर्थात् अपने अपने देश के ब्राह्मण व तीर्थ अपने अपने यहां पूजे जाने चाहिये जिस तीर्थ पर जो ब्राह्मण है, उस तीर्थ की पुरोहिताई उन ब्राह्मणों की व जिस तीर्थ पर जो देवता है वह देवता भी उस ही तीर्थ का माना जाना चाहिये अन्य का नहीं सो क्यों ?

पाठक ! जहां भारत के नेता लोग Indian Nation जातीयता के उच्चभावों को लिये हुये हैं तहां आप के देश के ब्राह्मण समुदाय में

---

* यह दोहा प्रायः लोगों ने हमें हमारे जाति अन्वेषण की यात्रा में पेश किया था पर इस की सत्यता का प्रमाण किसी ने नहीं दिया अतः यह असत्य जान पड़ता है

परस्पर इतना द्वेष ? कहिये तो इस द्वेष का परिणाम देशस्थिती पर क्या होगा ?

ऊंचता नीचता

जहां देश में उपरोक्त उपालम्भयुक्त मिथ्या आख्यायिकायें व वाक्यों की रचना हुयी तहां ऊंचता नीचता के भावों की उत्पत्ति से भी देश खाली न रहा और प्रत्येक ब्राह्मण समुदाय ने अपने को उच्च व अन्य को नीच प्रमाणित करने के अभिप्राय से मन घड़ंत रचनायें कर डाली और अपने आप मन मानी प्रशंसा करने लगे।

मनमानी प्रशंसा

क्योंकि परस्पर के जातिदम्भ व ऊंचता नीचता के भाव व ब्राह्मणों के परस्पर सैकड़ों भेद हो जाने के कारण लोगों को अपने वर्ग व समुदाय को उच्च सिद्ध करने के निमित्त नाना प्रकार की गाथायें व आधुनिक ग्रन्थ रचना की सूझी और प्रत्येक ब्राह्मण समुदाय "अपनी अपनी बांसुरी और अपना अपना राग" ठीक इसही लोकोक्ति के अनुसार प्रत्येक मनुष्य ने जब देखा कि उन के भेद उपभेदों का विवरण नहीं नहीं नाम मात्र गणना का उल्लेख भी किसी आर्षग्रन्थ व शास्त्र में नहीं मिलता है, तब अपने अपने वर्ग के सम्बन्ध में नवीन नवीन कल्पनायें करके जाति निबन्ध ग्रन्थों की रचना की जाने लगी और ऐसी दशा में लोग पाग आधुनिक नाना पुस्तक व निबन्धों को देखकर भ्रम में पड़ने लगे जिस से परस्पर के द्वेष को दृढ़ होने की उत्तेजना मिली यथा :-

गौड़ों ने अपने को बड़ा बतलाने के लिये अपनी उत्पत्ति खेंचातान से गुड़ संकोचने व गुड़ "रक्षायाम्" धातु से अपने को सर्व श्रेष्ठ व तपवारिष्ट तथा वेदों की रक्षा करनेवाले मानकर दूसरों से घृणा कियी।

कान्यकुब्जों ने कान्यकुब्ज वंशावलि रचकर अपनी प्रशंसा में ऐसी रचना कियी कि:-

कान्याकुब्ज द्विजाः श्रेष्ठा धर्म कर्म परायणाः ।
प्रलये नापि सीदंति यदि कन्या न जायते ॥ ७३॥

कान्यकुब्ज चिंतामणि पृष्ठ २८ का श्लोक ७३ छापाखाना कल्याण मुम्बई गंगविष्णु श्रीकृष्णदास ने संवत १९५६ शाके १८२१ में छापी।

अर्थः- कान्यकुब्ज ब्राह्मण जो हैं वे श्रेष्ठ तथा धर्म कर्म में परायण हैं यदि इन के कन्या न हो तो मरण काल में भी दीन वचन नहीं बोलते।

प्रिय देश के शुभ चिन्तको! भगवान को स्मरण करते हुये निर्मल भाव से विचारिये तो सही ऐसी घड़ंत घड़ने से कहिये देश का क्या भला होगा? दूसरे शब्दों में इस श्लोक का यह भाव है कि कान्यकुब्ज ब्राह्मण ही श्रेष्ठ व धर्म कर्म में परायण हैं तथा सर्वोच्च हैं। प्रथम तो यह श्लोक किसी शास्त्र का नहीं, पुराण का नहीं व किसी लड़े पड़े से ग्रंथ का भी नहीं है अतएव अप्रमाणीय है। दूसरे ऐसी घड़ंत से देश को व जाति को लाभ भी क्या? श्रेष्ठता व अश्रेष्ठता सत्कर्मों के करने व न करने से आती है न कि अपने मुंह मीयां मिट्ठू कह कर अपने को श्रेष्ठ बतलाने से, क्योंकि घी परोसा हुवा तो अंधियारे में ही दीखजाता है अतएव इस कहने की कोई आवश्यक्ता नहीं थी कि "कान्यकुब्ज ब्राह्मण श्रेष्ठ हैं" पुनः आपने कान्यकुब्ज ब्राह्मणों को ही धर्म कर्म में परायण बतलाया है अतएव प्रश्न होता है कि ऐसी रचना क्यों हुयी तो उत्तर मिलता है कि:-

## स्वात्मप्रशंसा! स्वात्मप्रशंसा!! स्वात्मप्रशंसा!!!

हम कान्य कुब्जों को बुरा नहीं कहते किन्तु हमारे जाति अन्वेषण में प्रायः लोगों ने हमें बतलाया है कि " प्रायः कान्यकुब्ज खेती करने वाले, विवाह में लड़कों को एक प्रकार बेचदेकर यानी ठहरावा करके दहेज लेने वाले हैं तथा मांस प्रिय बतलाये गये हैं, तब धर्म्म परायण कहां? अतएव ग्रन्थकर्ता को विचार करना चाहिये था कि थोड़े व बहुत दोष व त्रुटियें तथा गुण सब ही में हैं और सब ही में होते हैं अतएव एक ही समुदाय को धर्मपरायण बतलाना असंगत सिद्ध होता है।

पाठको मैं छिद्रान्वेषणी नहीं हूं और न देश के शुभचिन्तकों को छिद्रान्वेषणी होना ही चाहिये क्योंकि मनुष्य मात्र ही दोषी स्वाभाविक है तदर्थ एक विद्वान का कहना है कि "To error is human and to forgive is Divine" अर्थात् भूल होना मनुष्यता का धर्म है और क्षमा करना परमात्मा का काम है ऐसी दशा में सब ही कान्यकुब्ज तो न धर्म परायण ही होसक्ते हैं और न सब उपरोक्त दोषी ही

कहे जासके हैं क्योंकि कान्य कुब्ज मण्डल के सभ्यों में से कतिपय विचारशील तनमन से ऐसी ऐसी अनेकों कुरीतियों व कुप्रथावों को समूल नष्ट करने के प्रयत्न में हैं ! क्योंकि इस दहेज ही की कुप्रथावों से कान्य कुब्ज कन्यावों का कुंवारपन में ही बुढ़ापा आजाता है व कहीं कहीं गरीब कान्यकुब्जों की लड़कियें तो कुंवारपन में ही बुड्ढी हो कर मरी सुनी गयी हैं सो क्यों ? उत्तर :–

# लोभ ! लोभ !! लोभ !!!

पाठक ! कान्यकुब्ज चिंतामणि के ग्रन्थकर्ता ने स्वात्म प्रशंसा ही नहीं कियी किन्तु अन्य ब्राह्मणों को साफ साफ बुरा भी कहा है उपरोक्त श्लोक के आगेही का ७४ वा श्लोक इस प्रकार से है :–

कान्य कुब्जा द्विजाः सर्वे मागधं माथुरं विना ।
कुलनाम करो नास्ति कर्मणा जायते कुलम् ॥ ७४ ॥

अर्थात् सम्पूर्ण ब्राह्मण कान्यकुब्ज हैं केवल मागध व गयावाल नहीं । प्रथम तो सम्पूर्ण ब्राह्मण कान्यकुब्ज नहीं हैं जैसी कि हमने इस ग्रन्थ में मुख्य मुख्य ब्राह्मणों की एक छोटी सूची दियी है । दूसरे यह श्लोक भी तो आधुनिक घड़ंत है हम नहीं जानते मागध व गयावाल ब्राह्मणों ने ग्रन्थकर्ता जी का क्या बिगाड़ा था ? तब ऐसी रचना क्यों हुयी, उत्तर :–

# द्वेषसे ! द्वेषसे !! द्वेषसे !!!

हमारी जाति यात्रा के भ्रमण में प्रायः हम से यह प्रश्न होता था कि "ब्राह्मणों में सर्वोच्च ब्राह्मण समुदाय कौनसा है ?" तब हम कहा

श्रेष्ठता व कुलीन अकुलीनता

करते थे कि " तुलसी की माला में न कोई मणिया छोटा है न बड़ा है" बरन सब एक ही ब्रह्म की संतान परस्पर भाई हैं छुटाई व बड़ाई, उच्चता व नीचता, श्रेष्ठता व अश्रेष्ठता कुलीनता व अकुलीनता आदि २ अपने अपने गुण कर्मों से आती है न कि जन्म से, और इस कुलीनता अकुलीनता के झगड़े ने बंगाल व युक्त प्रदेशस्थ इस ब्राह्मण समुदाय को रसातल में

पहुंचा दिया* और शास्त्र मर्यादा का लोप करके केवल मूर्खानन्द भाटाचार्यों के समुदाय में "हम कुलीन हैं! हम कुलीन हैं!! हम कुलीन हैं!!! यह अहंपद घुस गया क्योंकि शास्त्रों में जो कुलीनता के लक्षण मिलते हैं उन का विशेष रूप से अभाव होते हुये भी केवल डिंवधारी बने हुये हैं। क्योंकि :-

साग्नि होत्राश्च सर्वज्ञा यज्ञकर्म रतास्तथा।
ते भवन्ति सदा विप्राः कुलीना मुनयः शुभा३४॥
वृत्त्याध्ययन शीलैश्च येषांछिन्नातु सन्ततिः।
जाता कुलेसपिंडाम तमकुलाश्च तुतेस्मृताः ३५॥
मिश्रस्कन्धे पृ० १७।

अर्थ-जो नित्य अग्निहोत्रादि षट कर्म करनेवाले हैं, सम्पूर्ण प्रकार के विवेक के ज्ञाता हैं उन्हें मुनियों ने कुलीन कहा है ॥ ३४ ॥ परन्तु जो सद्वृति, वेदाध्ययन, शीलादि गुणों से विमुख हैं उन्हें अकुलीन कहते हैं ॥ ३५ ॥

पुनः

न जार जातस्य ललाट शृंग,
कुलप्रसूते नच भाल चन्द्रः।
यदा यदा मुञ्चति वाक्य वाणं।
तदा तदा जाति कुल प्रमाणम् ॥

जैसे आज कल कुलीन अकुलीन माने जाते हैं तत्सम्बन्ध में ऋषि कहते हैं कि अकुलीन के सिर पर तो कोई सींग नहीं खड़े हुये हैं और कुलीन के ललाट में कोई चन्द्रमा नहीं है जिस से कुलीन अकुलीन

* इस का पूरा २ हृदयविदारक दृश्य हमारी रची "जाति अन्वेषण" नामक पुस्तक के प्रथमभाग जिसमें ३५० जातियों का विवर्ण दिया गया है देखलेना चाहिये।

बहिष्कार किये जांय, किन्तु ज्योंही उनके मुख से शब्द निकले कि त्यों ही उनकी कुलीनता व अकुलीनता की निश्चय हो जाती है अतः आज कल का प्रचलित कुलीनता अकुलीनता का झगड़ा क्यों नहीं दूर होता है ? तो उत्तर मिलता है कि :-

# मूर्खता ! मूर्खता !! मूर्खता !!!

औदिच्य ब्राह्मणों ने अपनी बड़ाई में एक "औदिच्य प्रकाश" नामक पुस्तक रचडाली और कितनेही झूंठे २ श्लोक रचदिये, यथा :-

उदीच्यां स्थापयामास ते सुरानतु मानुषाः ।
उदीच्या ऋषयः सर्वे सदा स्वाचार वर्तिनः ॥

अर्थात् औदिच्य ब्राह्मण जो हैं वे उदीची दिशा में स्थापन किये गये थे वे मनुष्य नहीं थे किन्तु साक्षात देवता थे और उस उत्तर दिशा में वे सब ऋषिगण थे तथा आचार विचार के नियमों से युक्त थे । इस आधार पर औदिच्य ब्राह्मण गण सम्पूर्ण ब्राह्मणों से अपने को उच्च ही नहीं किन्तु अपने को देवता व ऋषि मानते हैं सो क्यों ? उत्तर :-

# जातिदम्भ ! जातिदम्भ !! जातिदम्भ !!!

सनाढ्य ब्राह्मणों " सनाढ्य संहिता" नामक पुस्तक रचकर अपने ही को तपवरिष्ट, तप युक्त व तपोनिधि मानने लगे और अपनी दृष्टि में अन्य सब ही को लघुमानने व समझने लगे । जिस से अन्य ब्राह्मणों ने भी इन के प्रति कटु मिथ्या वाक्यों की रचना किकी जिस से परस्पर फूटने अपना घर कर लिया ।

सगे ब्राह्मण भी अपने को दान न लेने वाले मानकर अन्य सम्पूर्ण दान लेने वाले ब्राह्मणों को तुच्छ व हेच समझने लगे जिस से परस्पर कलह की वृद्धि हुयी ।

पल्लीवाल ब्राह्मण आदि से ही बड़े धनाढ्य हैं और प्रायः लेन देन का काम किया करते हैं अतएव "बोहरे" करके सर्वत्र प्रसिद्ध होगये,

हैं और अपने धनाऽभिमान में आकर साधारण श्रेणी व स्थिति के गौड़ों के यहां के खान पान से भी परहेज करते हैं तब योनि सम्बन्ध तो कहां ? पर यह धनान्ध होने के कारण उन का एक मात्र अभिमान है क्योंकि यथार्थ में वे भी सो गौड़ सम्प्रदाय में से ही हैं।

नागर ब्राह्मणों की तो बात ही न पूछिये उन्हों ने स्वात्म प्रशंसा में एक "नगरखंड" नामक पुस्तक रचकर केवल अपने को आचार विचार युक्त सदाचारी माना है और उन की दृष्टि में सम्पूर्ण ब्राह्मण भ्रष्ट हैं।

श्रीमाली ब्राह्मणों ने एक बैठे ठाले "श्रीमाल महात्म्य" नामक पुस्तक रचडाला और उस में अपनी लम्बी चौड़ी प्रशंसा लिख कर ब्राह्मणों में अपने को सर्वोच्च सर्वश्रेष्ट व कर्मकाण्डी तथा वेद पाठी मानने लगे।

सारस्वत ब्राह्मणों ने "सारस्वत सर्वस्व" की रचना करके अपने ही को एक मात्र सृष्टि के आदि ब्राह्मण मान लिया है और तत्सम्बन्ध में अपने को बड़ा व दूसरों को छोटा मानने का प्रयत्न किया है और ब्राह्मण मात्र को सारस्वत ही बतलाया, पर यह खैंचातान सर्वमान्य नहीं है।

सर्यूपारी ब्राह्मणों ने सृष्टि के सब से प्रथम व आदि तथा उत्तमोत्तम अपने ही को मान लिया है और वर्त्तमान काल के सम्पूर्ण ब्राह्मणों की सृष्टि सर्यूपारियोंहीं से बतलाई गई है।

भारत की ब्राह्मण जाति के पारस्परिक द्वेष की यहां ही इति श्री नहीं हुयी, किन्तु इस द्वेष ने बड़े २ कुल व जाति की वंशपरंपरा का नाश तथा जाति की महत्वता को वट्टा लगा दिया क्योंकि वर्तमान में "भूमिहार" ब्राह्मणों के विषय में जो घड़ंत लोगों ने घड़ी उस को सुनकर निष्पक्ष न्यायशील मनुष्य का हृदय कम्पायमान हो जाता है और भारतवासियों के परस्पर द्वेष की लीला को देखकर लिखते हुये रुदन आते हुये एक मात्र भगवान से करजोड़कर विन्ती है कि हे प्रभो! आजकल हमारा भारतवर्ष बड़ी ही निकृष्ट व दरिद्रावस्था में पहुंचा हुआ मरा नहीं है किन्तु मरकर सदा के लिये नष्ट होने वाला है, हिंदु जाति आप के यथार्थ पथ विमुख हो गयी है अतः ऐसी दशा में एक मात्र

आप ही लाज रखने वाले हैं" क्योंकि आजकल हिंदु जाति की दिन प्रति दिन कमीही कमी होती जाती है क्योंकि हमारे सामाजिक नियम ही इस दुर्दशा के मुख्य कारण हैं।

कहने का प्रयोजन यह है कि भूमिहार ब्राह्मणों को राजे, महाराजे, ताल्लुकेदार व बड़े २ ज़मीदार देखकर आज कल के भिखमंगे ब्राह्मणों ने इस भूमिहार ब्राह्मण जाति को नीचा दिखाने व छोटी जाति बतलाने के अभिप्राय से जहां उपरोक्त परस्पर द्वेष भाव युक्त अनेकों मिथ्या कल्पनायें, किस्से कहानियें, श्लोक व छन्दादि की रचना कियी तैसे ही इस जाति को भी द्वेषी समुदाय ने अछूता नहीं छोड़ा अर्थात् आप जानते हैं कि अंग्रेज ग्रन्थ कर्ता महाशय गण कितने भी अनुभवी क्यों न हो जायें किन्तु हमारी देशभाषा, रीति भांति, देश प्रणाली तथा हमारे शास्त्रों के मर्म के ज्ञाता वे वैसे नहीं हो सकते जैसे कि हमारा देश वासी कोई ब्राह्मण विद्वान हो सकता है कारण वे विदेशी व भारत के किसी प्रान्त व जिले में चिरकाल वासी हैं और वे भी मनुष्य होने के कारण अल्पज्ञ हैं ऐसी अवस्था में उनसे भी भूल होना सम्भव है और आज कल इतिहास विषयक ग्रन्थ जो अंग्रेजों के बनाये हुये हैं वे सर्व मान्य व सर्व तन्त्र सिद्धान्त वेदों की तरह नहीं माने जा सके, हां यह अवश्य मानेंगे कि जो कुछ उन्हों ने लिखा है वह सब कुछ निष्पक्ष भाव से जैसा कुछ हमारे भाइयों ने उन्हें समझा दिया व अपना लेख दे दिया तैसा उन्हों ने लिख मारा, यथा:—

कि "राम के यज्ञ में एक हज़ार ब्राह्मणों की आवश्यक्ता ब्रह्मभोज के लिये थी उस में एक हज़ार ब्राह्मण न प्राप्त हो सके तब मन्त्री आदि ने अन्य नीच जातियों के लोगों को बुला कर भोज से पहिले दिन उन्हें जनेऊ पहिना कर असली ब्राह्मणों के साथ जिमा दिया वे भूमिहार ब्राह्मण कहाये"।

यह मिस्टर जाहन बीम के लेख का सारांश मात्र है बस इस ही को देखकर भारत के द्वेषी समुदाय ने भूमिहारों के ब्राह्मणत्व विषयक शंका उपस्थित कर दियी और तदनुसार एक दो अन्य लेखकों ने लेख भी छापदिये और फिर मुआफी मांगते रहे सो क्यों? तो कहना

पड़ता है कि एक मात्र अपकार व अनभिज्ञता द्वारा उन्हों ने अपनी संकीर्णता का परिचय दिया क्योंकि इन के ब्राह्मणत्व के पोषक हम ने कई प्रमाण इस ही ग्रन्थ में भूमिहार" स्थम्भ में लिखे हैं।

पुष्करणे ब्राह्मण जाति के साथ भी बड़ा ही निन्दनीय लेख, किसी विदेशी विद्वान ने, यह लिख मारा है कि "ये असल में जाति से ओड़ थे और पृथिवी खोदने का काम करते थे तदनुसार पुष्कर का तालाव खोदने से ब्राह्मणों ने प्रसन्न होकर इन्हें पुष्करणे ब्राह्मण कहकर सम्बोधन किया" इस आधारानुसार तो पुष्करणे ब्राह्मण ब्राह्मण ही नहीं हैं ऐसा सिद्ध होता है परन्तु यह सब द्वेषवर्धक लीलायें हैं जिस का विस्तारपूर्वक विवर्ण इस ही ग्रन्थ में इस ही जाति के साथ दिया गया है।

इस ही तरह कोकनस्थ व चित्तपावन ब्राह्मणों के प्रति भी द्वेष की खूब भरमार हुयी है कि ये लोग पहिले कैवर्त्त थे, यथा :-

ज्ञाति मच्छसि हेरामः ज्ञाति कैवर्तिकीतिच ।
सिंधुतीरे कृतोवासो व्याधधर्मे विशारदा ॥

ब्रा० मा० पृ० ३१४ श्लो० १५

हे राम हमारी जाति कैवर्त है और हम सिंधु नाम समुद्र के तीर रह कर व्याधधर्म में रत यानी हत्याकाण्ड में प्रवृत रहते हैं।

पुनः ये और भी निन्दित कर दिये गये, यथा :-

शाप प्रभावान्ते सर्वे कुत्सिताश्च दरिद्रणः ।
सेवां सर्वत्र कर्तारः इदंनिश्चय भाषणम् ॥

ब्रा० मा० पृ० ३१६ श्लो० २७

शाप प्रभाव से वे सब ब्राह्मण कुत्सित व दरिद्री होगये और सर्वत्र सेवा में लगकर जीवन निर्वाह करने लगे, जब इस प्रकार के निन्दित वाक्यों की घड़ंत इन के सम्बन्ध में हुयी तब इन्हों ने बृहत्पाराशरी में निम्नलिखित तीन श्लोक जोड़ दिये यथाः-

कौकणाश्चित्त पूर्णास्ते चित्तपावन संज्ञकः ।
ब्राह्मणेषुच सर्वेषु यतस्ते उत्तमामताः ॥ १ ॥
एतेषां वंशजाः सर्वे विज्ञेया ब्राह्मणाः खलुः ।
माध्यंदिनाश्च देशस्था गौड़ द्रविड़ गुर्जराः ॥ २ ॥
कर्णाट तैलंगाद्याश्च चित्तपूर्णस्य वंशजाः ।
अतश्चित्तस्य पूर्णोयो निंद्यात्तत्यत्तणोभवेत् ॥ ३ ॥
महाराष्ट्रीय भाषा जा० भे० वि० सा० पृष्ट ६१ ।

अर्थः—कोकन ब्राह्मणों की चित्त पावन संज्ञा भी है ये सम्पूर्ण ब्राह्मणों में उत्तम हैं ॥१॥ इन को निश्चय पूर्वक ब्राह्मण मानना चाहिये ये माध्यन्दिनी शाखा के गौड़ द्रविड़ और गुर्जर देश के ब्राह्मण हैं ॥ २ ॥ कर्णाटक और तैलंग ब्राह्मणों से आदि लेकर सब ही चित्तपावन ब्राह्मण वंश में से हैं इसलिये जो इन की निन्दा करैगा उन का ततक्षण सर्व नाश हो जयगा । बलिहारी है ! बलिहारी है !! बलिहारी है !!!

इसी तरह द्वेषियों ने कर्कल ब्राह्मणों के प्रति लिख दियाः—

निषिद्ध कर्म निरता मत्स्य भक्षण तत्पराः ।
कन्या विक्रय काराश्च इन्द्रियाणां निग्रहात् ॥१४॥
कलभाषि पालनाच्च कर्कलाख्या प्रकीर्तिता ॥

अर्थः—निषिद्ध कर्म्मों में रत रहने के कारण व मछली खाने में सदैव तत्पर रहने से तथा कन्या विक्रय करने से तथा इन्द्रियों के निग्रह न करने से तथा कल भाषा के पालन से ये कर्कल कहाये ।

इस में विचारणीय यह है कि प्रथम तो निषिद्ध कर्म आजकल कौन सा ब्राह्मण समुदाय नहीं करता है ? कौन ब्राह्मण समुदाय में लड़कियां नहीं बेचते हैं ? बंगाल के बंगाली व भारत के कान्यकुब्ज ब्राह्मण मास मछली के खाने वाले व लड़कियों ही का नहीं किन्तु वे लड़कों का भी ठहरावा करके रुपया लेनेवाले हैं पर इन को शक्तिशाली जानकर लोग चुप कर जाते हैं पर "गरीब की जोरू सब की भाभी".

के समान विचारे कर्कश ही निषिद्ध कर्मी आदि आदि कटुवाक्यों से सम्बोधन किये गये हैं, सो क्यों ? उत्तर, द्वेष ! द्वेष !! द्वेष !!!

इस ही तरह पलाशे ब्राह्मणों के प्रति द्वेषियों ने लिख मारा किः–

कैवर्तकस्य भिल्लस्य पिता भवति यो नरः ।
मातायां गोलकी नारी पालाश ज्ञातिरुच्यते ॥

अर्थात् गोलकी माता व कैवर्त पिता के संयोग से पलाशे ब्राह्मण पैदा हुये ।

इस ही को देख कर द्वेषी समुदाय ने शेणावी ब्राह्मणों पर भी कलम चलायी किः–

सूर्य वंशश्च क्षत्रश्च पिता भवति यो नरः ।
मातायां ब्राह्मणी नारी शेणावे ज्ञातिरुच्यते ॥

अर्थात् किसी सूर्य्यवंशी क्षत्रिय का संयोग किसी ब्राह्मणी से हो गया उन दोनों की सन्तान शेणावी कहाये ।

पाठक ! इन दोनों श्लोकों की घड़ंत एक सी है अतः यह मिथ्या है ।

इस ही तरह महाराष्ट्र सम्प्रदाय में एक काराष्ट्र नाम का ब्राह्मण समुदाय है जिस का प्रचलित नाम " कराढ़े " ब्राह्मण है उन के प्रति द्वेष का उद्गार जो निकला वह इस प्रकार से है, यथाः–

सर्व लोकाश्च कठिना दुर्जनाः पापकर्मिणः ।
तद्देशजाश्च विप्रास्तु काराष्ट्रा इति नामतः ॥
पाप कर्मरता नष्टा व्यभिचारसमुद्भवाः ।
खरस्य ह्यस्थियोगेन रतद्विंश विभावकं ॥

यह श्लोक लिख कर ग्रन्थकार ने यह हवाला नहीं दिया कि यह श्लोक कहां के हैं, खैर ! इस का अर्थ ऐसा है कि सम्पूर्ण देशों की अपेक्षा अधिक कठोर दुर्जन व पाप कर्म्मी काराष्ट्र देश है उस में पैदा हुए ब्राह्मण काराष्ट्र कहाये जो व्यभिचार द्वारा पैदा हुये तथा पाप कर्म में रत व नष्ट हैं और गधे की हड्डी द्वारा वीर्य्य प्रक्षेप किये गये हैं ।

परन्तु हमारी सम्मति में ही नहीं किन्तु न्यायपक्ष चाहने वाले विद्वान कोई भी इन श्लोकों को यथार्थ न कह कर मिथ्या घड़ंत बतलावेंगे क्योंकि दुष्ट देश में पैदा हो जाने से ही सम्पूर्ण मनुष्य दुष्ट हो जायं यह असंगत है और कोई २ मनुष्य दुष्ट हों या जाति मात्र ही दुष्ट हो? दुष्टता व दयालुता का होना कुछ काल के लिये मान लिया भी जा सकता है पर जब तक सूर्य्य चन्द्र रहें सदा के लिये माने यह उचित नहीं है, कोई देश व कोई जाति ऐसी नहीं है जिस में दुष्ट व दयालु न हों अतएव यदि ये श्लोक सच्चे भी हों कि ये यथार्थ में दुष्टता ही करते थे तो क्या आज कल भी वैसे ही हैं? दूसरे ये श्लोक ही मन घड़ंत किसी द्वेषी की करामात होने से अमाननीय हैं क्योंकि आज कल इस जाति में भी अनेकों योग्य व दयालुस्वभाव पुरुष हैं अतएव प्रश्न होता है कि ऐसी घड़न्त क्यों हुयी तो उत्तर मिलता है कि:—

परस्पर द्वेष ! परस्पर द्वेष !! परस्पर द्वेष !!!

क्योंकि गधे के गुप्तभाग की हड्डी से वीर्य्य प्रक्षेप द्वारा सन्तानोत्पत्ति के भाव भी समझ में नहीं आते और प्रतीति होता है कि इन श्लोकों का जानने वाला तर्कशास्त्र का ज्ञाता नहीं था यदि थोड़ी देर के लिये माना जाय कि ऐसा इस जाति में होता ही था और यह सत्य है तो कदाचित इस जाति ने भी यह कर्म्म व क्रिया पुराना इत्तर के लोक के फकीर हिंदुवों के परम माननीय श्रद्धेय गुरु महीधर से सीखी होगी क्योंकि उन्हों ने वेद का भाष्य करते हुये "हरिः ओं गणानान्त्वा गणपतिꣳहवा" इत्यादि गणेश जी के मंत्र के भाष्य में आप ने घोड़े का लिंग स्त्री की योनि में वीर्य्य प्रक्षालनार्थ अर्थ किया है, अतः यदि महीधर का भाष्य सच्चा है तो कदाचित इस ब्राह्मण जाति में गधे की बात भी सच्ची होगी और ऐसी दशा में यह जाति नीच क्यों मानी जाय ! क्यों कि इन्हों ने वेद की आज्ञा का पालन किया और यदि महीधर का भाष्य झूठा है तो इस जाति में "गधे की राम कहानी" भी झूठी है तब ऐसी दशा में भी यह ब्राह्मण जाति निर्दोष है परन्तु लोक के फकीर हिन्दुलोग तो इन दोनों ही को मिथ्या कहने के लिये तय्यार नहीं हैं सो क्यों? तो उत्तर मिलता कि :— हठ ! हठ !! हठ !!!

पक्षपात ! पक्षपात !! पक्षपात !!!

# आर्तनाद !

आरत के ब्राह्मणो ! पवित्र विचार शील बन्धुजनो ! स्वजाति बन्धु वर्गो ! पूर्व के प्रकरण में परस्पर द्वेषभाव व ईर्षा द्वेष का हृदय विदारक दृश्य Scene दिखाया जाचुका है कि आप की क्या दशा है ! आप सब लोग किस पंथ पर हैं ! जो मार्ग आप ने ग्रहण किया है वह प्रशंसनीय है या नहीं ? देश स्थिती पर इस आप के परस्पर कर्तव्य का क्या फल होगा ? भारतवर्ष के हिंदू मात्र टकटकी लगाये हुये आप ही की ओर निहार रहे हैं कि देखें क्या होता है ? आप को कृपा पूर्वक विचार करना है जब आप एक ही ब्रह्मा के पुत्र हैं तो फिर अपने को अलग अलग कैसे समझते हैं ? एक ही पिता की संतान आप परस्पर भाई हैं ; परन्तु जो दृश्य आप को दिखाया जाचुका क्या उसके आधार पर आप ब्राह्मण मात्र भाई भाई ठहर सके हैं ? क्या यह ही आप का भ्रातृ स्नेह है कि एक दूसरे को बुरा कहें, एक दूसरे के लिये उपालम्भ युक्त मिथ्या आख्यायिकायें रचें और उन के जी दुखायें और अपने को श्रेष्ठ व कुलीन कहो तथा दूसरे अपने भाईयों को नीच व अकुलीन बतलाओ, कहो यह आप का कर्तव्य कहां तक समीचीन है ? क्योंकि आप एक प्रान्त के वासी तो सब के सब हैं ही नहीं कि आप के आचार विचार रंग ढंग खान पान, बोलचाल एकसी हों तब जहां आप ने किसी को अपने से भिन्न देखा उसे भला बुरा कहना आरम्भ कर दिया, यदि किसी एक देश के ब्राह्मण ने खेती करके समयानुसार निर्वाह करना उचित समझा तो आपने किसी दूसरे समय के निर्मित ग्रन्थों से उन की खबर लेडाली, इसही तरह समय ने ब्राह्मणों से नौकरी, दुकान्दारी, शिल्पकारी व अन्य नाना प्रकार के धंधे

करवाये और ऐसी दशा में उन्हें यह धन्दे अपने उदर पोष-
णार्थ अपनी असहाय दशा में करने पड़ते हैं तब उन्हें आप देखते;
ही झट प्राचीन काल यानी सतयुग, व द्वापर व त्रेता के बने शास्त्रों को
निकालकर किसी को शूद्र कहने लगे तो किसी को पतित व किसी
को कुछ तो किसी किसी को कुछ कहते हुये उन के पीछे पड़ गये
और नाना प्रकार के प्रलाप उन के विरुद्ध गाना आरम्भ कर दिये
ऐसी दशा में आप सब ही अपने अपने मनों में सोचें कि कहां वह
क्षत्रियों का राज्य! कहां वह ब्राह्मणों का मान्य! कहां वह समय!
कहां वे सम्वत! कहां उस समय की सी विद्या! कहां वे ऋषिगण!
कहां वे उस समय के तपवरिष्ठ ब्राह्मण! कहां वह काल! कहां वह
वैसी ही देश की स्थिती! कहां उस समय के से आय व्यय! कहां
वह राम राज्य! कहां उस समय का सा धर्मबल, कहां उस समय का
सा सत्यप्रेम! कहां वह स्वदेशानुराग! कहां उस समय का सा ब्राह्मणों
का सत्कार! कहां उस समय का सा कला कौशल! कहां उस समय
की सी सौजन्यता व प्रीति! आदि आदि कहां तक कहें उस समय की व
अब की स्थिती में तो पृथिवी आकाश का सा भेद है, हां केवल हैं तो
उस समय के निर्मित ग्रन्थ रहगये हैं, तदनुसार इस समय कौन चल
सक्ता है? हां पूर्व काल से लेकर आजतक हां भीख की झोली तो
ब्राह्मण मात्र के हाथ में रहगयी है, परन्तु शोक के साथ कहना पड़ता
है कि समय आता है और आप की झोली भी ठोकरों से ठुकरायी
जावेगी और आप को सदा के लिये पछताना पड़ेगा, क्योंकि हिन्दू
मात्र के मुखिया व नेता आप हैं और आप के होते हुये हिन्दू समाज
में बुराइयां आवें तो कहो उस दोष के भागी आप होंगे या नहीं?
ऐसी दशा में हिन्दू जाति का भार आप पर है या नहीं? परन्तु जब
आप भाई भाई को बुरा कहें परस्पर लड़ें व ईर्षा द्वेष करें तो कहिये
आप शिखाधारी मात्र का क्या उद्धार कर सकेंगे, ऐसी दशा में ब्राह्मण
वर्ण के अतिरिक्त तीनों वर्णों तथा अन्य जातियें जिन्हें आपने सब धान

बाईस पंसेरी के अनुसार शूद्र मानरक्खा है उन सब का क्या उद्धार कर सकेंगे? और जब आप स्वयं सन्मार्ग पर नहीं हैं तब उन सम्पूर्ण जातियों को सुपथ पर आप क्या चलासकेंगे? आप उन सब के यहां से दान पुण्य लेने के लिये तय्यार हैं फिर भी वे नीच के नीच ही कैसे? जिस प्रकार आप अपनी जाति के ब्राह्मणों में शास्त्रोक्त ब्रह्मकर्म के विरुद्ध अनेकों कर्म करते हुवों को देखते हैं और फिर भी उन की देखी अन देखी कर जाते हैं तो शास्त्रोक्त कर्म विधि की कड़ाई अन्य जातियों के साथ ही क्यों? जब आप अपनी जाति व वर्ग वालों के अनेकों कर्तव्य व आचरणों को शास्त्र विरुद्ध पाते हुये भी उन्हें ब्राह्मण वर्ण से नहीं गिराते हैं तो कायस्थ, खत्री, कुर्मी, जाट, अहीर, गूजर माहोर, माली, मुराव, कोरी, नाई, बारी, काछी, सैनी, चमर गौड़, महाजन, कलवार, कलाल, दुसाध, तेली, गडरिये, दर्जी, लुहार, कुम्हार सुनार, बढ़ई, कोरी, मोची, किसान, तम्बोली, कसेरे, ठठेरे, छींपा, पटुवा, कम्बोहा, रैन, विश्नोई हलवाई, डंगी, रावा, भरतिया, बागवान, सोइरी, लोधा, खागी, गोर्छा, कहार, गुडिया, गोंड, वरमाही, मल्लाह, केवट, बिंड, सोछिया, तियार, चाई, कढेरा, भड़भूजा, तारखर, सेजवारी, ओढ़, नागरू, कोल, खारवार, घासिया, पहरी, मेव, खांगर और कपडिया, आदि आदि आदि आदि जातियों, में तनिक तनिक से दोष के पाते ही आप उन्हें क्यों दबोचते हैं? क्या इन की उन्नति करना आप का काम नहीं है! क्या इन को सन्मार्गपर लाना व इन के साधारण दोषों को Overlook देखे अनदेखे करके इन्हें उचित अधिकार देना आप का काम नहीं है!

प्यारे भ्रातृगणों! शोक के साथ कहना पड़ता है कि आप सब लोग प्रायः लम्बी धोती लटकाकर व लम्बे २ तिलक छापे करके चलने वाले सज्जन हैं किन्तु वर्तमान काल की राज्यसत्ता के नियमों से आप बिलकुल अनभिज्ञ हैं ऐसी दशा में आप राज्यस्थिती के अनुसार देश की

आवश्यकता को नहीं समझते हैं अन्यथा आप तो इन्हीं जातियों को क्या किन्तु इनसे भी नीचतम जातियों के साथ सहानुभूति प्रकट करते होते—आप के देश के अगुवा भारतमाता के सुपूत ब्राह्मण वंश शिरोमणि प्रजा के प्रतिनिधि लोग जो लाट साहब की कौंसिल के मेम्बर हैं उन से पूछिये कि हिन्दु जाति के भले के लिये हमें क्या करना है!

अतएव आवश्यक यह है कि यदि कुछ काल के लिये आप विशेष अग्रसर नहीं हो सक्ते हैं तो ब्राह्मणमात्र को तो परस्पर का भेदाभाव छोड़कर जात्योन्नति, विद्योन्नति धर्मोन्नति, आदि आदि विषयों में एक मत होजाना चाहिये, अन्यथा समय आवेगा कि आप के सनातनधर्म को ऐसा धक्का लगेगा कि फिर उसका उभरना कठिन होजायगा, क्योंकि जितने आप में अधिक भेद होंगे उतनी उतनी ही आप की पारस्परिक सहानुभूति कम होगी।

दुश्चरित्र व दुष्कर्मों के कारण जिन २ समुदाय को आपने दस्यु, म्लेच्छ, अनार्य्य और यवन आदि कहा हैं उनकी परस्पर सहानुभूति परस्पर ऐक्यता की ओर तो टुक ध्यान देकर उन से शिक्षा ग्रहण कीजिये क्या आप नहीं जानते हैं कि एक मुसल्मान से किसी हिन्दू की तकरार होजाय तो अड़ोसी पड़ोसी मौहल्ले पलिये के व रास्ते के चलने फिरने वाले सब ही मुसल्मान उस की मदद को दौड़ते हैं, परन्तु यदि एक हिंदू किसी मुसलमान द्वारा पीटा जाता हो तो सब हिंदू उसे पिटते देखते रहेंगे, सो क्यों? उत्तर; वह हमारी सम्प्रदाय का नहीं है, वह हमारी जाति का नहीं है, वह हमारे वर्ण का नहीं है, वह हमारे कुल का नहीं है वह हमारे वर्ग का नहीं है आदि आदि अतएव ऐसी स्थिती में हिन्दू धर्म का भविष्यत क्या होगा यह ही शोचनीय विषय है!

देखिये श्रीमती बृटिशगवर्नमेन्ट के ऐसे कड़े सुप्रबंध होते हुये भी

आप के शत्रुगण हिन्दुवों को सताने से नहीं चूकते हैं। आर्य्यमित्र ता० ८ मार्च सन् १६१५ में इस प्रकार छपा है कि:—

हाफ़िज़का कटरा आगरा जहां पुलिस की चौकी है उस ही के दर्वाज़े पर ता:६।३।१५ को यह नोटिश लगाया गया था।

"बिस्मिल्लाह रहमान उर्रहीम इमाम महदी पैदा होगये-तुम अन्दर एक माह के मन्दिर वगैरः पूजा पाठ छोड़कर मुसल्मान होजावो बाद मियाद गुज़रने के क़तले आम शुरू होगा, जैसा कि जवाबहो कोतवाली शहर आगरे पर चस्पां करो, बाद क़तल करने के तुम्हारी बहू बेटी ख़ाकरोबों (भंगियों) को देदी जावेंगी, फ़क्त. कमतरीन मस्तान शाह।

अत: क्या ब्राह्मण जाति के लिये यह आवश्यक नहीं है कि अपने आधुनिक भेदों को ही अपनी जाति न मानकर, परस्पर प्रीति का सञ्चार करे।

वर्तमान काल में जो ब्राह्मणों के ६०२ भेद हैं उन में से मुख्य मुख्यही की नामावलि देने से भी ३२५ तरह के ब्राह्मणों की सूची इस पुस्तक में लिखी गयी है, ऐसी दशा में ब्राह्मण जाति का भविष्यत क्या होगा यह ही हम को सोच है! अस्तु !! भगवत् इच्छा !!!

हम वीस वर्ष से जाति विषय का अन्वेषण कररहे हैं पर ब्राह्मणों के इन भेदों का पता संस्कृत के एक भी धर्म शास्त्र व पुराण में नहीं मिला, अतएव ऐसी दशा में इन नामों पर हम इतने अडे सो क्यों? उत्तर:

**मूर्खता ! मूर्खता !! मूर्खता !!!**

यदि भारत वर्ष के किसी विद्वान को इन ३२५ प्रकार के ब्राह्मणों के भेदों के विवरण का पता वेद वेदांगों में मिले तो वे सज्जन शास्त्रार्थ के मैदान में खड़े होकर प्रमाणित करदें कि सत्य क्या है! अन्यथा रागद्वेष में जीवन नष्ट करने से क्या लाभ?

# पतितोद्धार

प्यारे भ्रातृगणो ! आप पूर्व प्रकरण के अनेकों स्थलों में देख आये होंगे कि भारत में ब्राह्मणों की क्या दशा है ? कैसे घृणित व निन्दित कर्म ब्राह्मण जाति कर रही है जिस के कारण से आज उन पर उंगली उठाई जाती है और विचार शील पुरुषों को लज्जित होना पड़ता है परन्तु उन सब शास्त्र विरुद्ध कर्मों के होते हुये उन का ब्राह्मणत्व ज्यों का त्यों बना रहता है, हां जो कुछ शास्त्र नियमों की कड़ाई व अक्षर अक्षर की नियम बद्धता शूद्र व पतित जाति के साथ होती है वह किसी से छिपी हुई नहीं है । न्याय यह है कि परमात्मा के यहां से हर मनुष्य को मनुष्यत्व प्राप्त करने के लिये ईश्वर प्रदत्तत्त्व प्राप्त है, प्रत्येक मनुष्य को पूर्णतया यह अधिकार है कि वह अपने को नीची दशा से ऊंची दशा में चढ़ावे, हर मनुष्य का यह कर्तव्य है कि मनुष्य जन्म पा कर के स्वात्मविकास प्राप्त करे, देश सेवा, राज सेवा, स्वजाति सेवा, ईश्वराराधन और स्वोन्नति करने में जीवन भर न चूके, जिस प्रकार से प्रत्येक मनुष्य अपने अपने उदर पोषणार्थ अपनी अपनी शक्ति के अनुसार नाना भांति के उद्योग करते रहते हैं वैसे ही उन्हें उपरोक्त साधनों को पूरे पूरे प्राप्त करने का अधिकार है, क्योंकि स्वाभाविकी Naturally परमात्मा के यहां से मनुष्य मनुष्य सब एक से हैं और सब को सब कुछ स्वत्व प्राप्त करने के अधिकार हैं, यह नहीं कि यदि मनुष्य नीचावस्था में पड़ा है तो जीवन भर वह उस ही अवस्था में पड़ारहे और अपने आप को ऊंचा चढ़ावे ही नहीं, स्वाभाविकी बात तो यह है कि प्रत्येक मनुष्य सदैव अपना सुख सौख्य चाहता रहता है परन्तु अत्याचार व पक्षपात तथा घृणा का दबाव सदैव पड़ते रहने से उसे अपनी आत्मोन्नति की सुध बुध ही नहीं रहती है, उन्नति किस चिड़िया का नाम है ? हमें प्राप्त होसकेगी या नहीं ? तथा उसके

प्राप्त करने के क्या २ साधन हैं ? आदि आदि विचार ही उसके हृदय में नहीं आने पाते हैं। कारण वह अत्याचारों से सदा के लिये निराश हो बैठता है। ऐसी दशा में पतित जातियों को आत्मज्ञान करा देना, मनुष्य धर्म जतला देना व उनके उन्नत्यर्थ उन्हें उन्नति के साधन बतला कर उन्हें खड़े करदेना ही हमारा मुख्य काम होना चाहिये और हमें समझना चाहिये कि उन्हें गिरी हुयी दशा से उठाना मानो अपने मनुष्य जन्म की साफल्यता प्राप्त करना है, क्योंकि करोड़ों मनुष्यों को लाभ पहुंचेगा, उन का जीवन सन्मार्ग में प्रवृत होगा, लाखों ही पापों से व हत्या काण्डों से वे जातियें बचेंगी, तब ऐसी दशा में आर्य्य भूमि के सच्चे नेतावों के लिये इस से बढ़कर कौनसा महान, कौनसा पवित्र, कौनसा पुण्य और कौनसा सत्कर्म हो सक्ता है ? कोई नहीं, क्यों कि तड़फते हुये हृदयों को शान्ति मिलेगी और वे आजन्म हमारे ऋणी रहेंगे जिससे उन के आशीर्वाद से हमारा भी भगवान भला करेंगे।

देश के शुभ चिन्तको ! आप के लिये पतितोद्धार से बढ़ कर कोई पुण्य कार्य्य नहीं है, जो लोग अपने तुच्छ स्वार्थ के लिये, तथा अपने क्षणिक से लाभ के लिये, व अपने आनन्द बिहार में विक्षेप पड़ने के डर से पतितोद्धार के विरुद्ध मत प्रकाशित करते हैं उन में आप न मिलें, क्योंकि समय आता है कि ऐसे विचार वाले बुड्ढे इस संसार से पयान कर जावेंगे और आज कल के नवशिक्षित समुदाय की सृष्टि ज़ोर पकड़ेगी और पतितोद्धार का अंकुर जो आज कल लगा ही है वह भी तब तक पेड़ हो जायगा। संसार में उस से बढ़कर कोई नीच नहीं है कि जो अपने तनिक से लाभ के लिये करोड़ों मनुष्यों को दीन हीन मुख मलीन पशुवत सदा के लिये बना रक्खे।

इस के अतिरिक्त हम ने अपने जाति अन्वेषण व वीस वर्ष के परिभ्रमण, तथा शास्त्रावलोकन द्वारा निश्चय किया है कि आज कल कई जातियें ऐसी हैं जो यथार्थ में पतित, अछूत व शूद्र वर्ण में नहीं हैं किन्तु संकीर्ण हृदयी स्वार्थियों ने उन्हें नीच व अछूत बनादिया है और भेड़िया धसान की तरह हिन्दू मात्र ने भी वैसा ही मान लिया है उदाहरण के लिये देखिये :—

चमार — इस जाति का पूर्ण विवर्ण तो प्रमाणों सहित अन्य ग्रन्थ में लिखेंगे परन्तु यहां इतना ही कहना पर्य्याप्त होगा कि ये लोग अछूत नहीं हैं और नीच वर्ण में नहीं हैं वरन क्षत्रिय वर्ण में हैं।

कोरी — इस जाति को लोगों ने अछूत मान कर बड़ी घृणा का प्रसार किया है, परन्तु यह अन्याय और पक्षपात है, क्योंकि यथार्थ में यह जाति ब्राह्मण वर्ण में है, और ये ब्राह्मण धर्म्मानुसार चल सके हैं।

दुसाध — इस जाति के साथ भी हिंदू जाति का व्यवहार बड़ा दुःखोत्पादक व असहनीय है क्यों कि यह जाति क्षत्रिय भूषण दुशासन के वंश में से है।

कहार — इस ही तरह कहार जाति के साथ भी बड़ा अन्याय हो रहा है इन को किसी ने शूद्र वर्ण में तथा किसी ने कुछ, व किसी ने कुछ का कुछ लिख मारा है, परन्तु ये लोग क्षत्रिय वर्ण में हैं क्यों कि प्रसिद्ध रूप से इन के निर्वाण, चावा, देवड़ा, रवानी, खीची, हाड़ा, दहिया, चौहान, राठोड़, चाहज, और सीसोदिया आदि आदि भेदों ही से क्षत्रियत्व प्रकट है। शेष भविष्यत में लिखेंगे।

उपरोक्त लेख संकेत मात्र लिखकर भारत वर्ष के विद्वानों के प्रति अर्पण किया है और आशा कियी जाती है कि जिस किसी विद्वान को यह हमारा लेख मिथ्या जान पड़े वह अपने प्रमाणादि लिख कर इस का खंडन मण्डल को भेज देवें तिस पर सादर विचार किया जायगा, अन्यथा उपरोक्त हमारा लेख ठीक समझा जायगा और, भविष्यत में इस ही की पुष्टि में लेख लिखे जावेंगे।

# आर्य्य समाज और हम

## जय शिव !

पाठक वृन्द ! आप में से जिन जिन सज्जनों ने हमारे रचे जाति अन्वेषण प्रथम भाग को देखा होगा वे भले प्रकार से जानते होंगे कि हम किस सिद्धान्त व मन्तव्य के सनातन धर्म्मी हैं ? स्वदेश सेवा, स्वदेशानुराग, स्वदेशाऽभिमान, स्वदेश--प्रियता तथा जात्युद्धार आदि आदि विषयों पर जो लेख हमने निष्पक्षता व उपकार बुद्धि से लिखे हैं वे किसी से छिपे हुये नहीं हैं क्योंकि उस कार्य के लिये अनेकों स्थानों से महा संस्कृतज्ञ विद्वानों के जो प्रशंसापत्र हमारे पास आये हैं उन्हें ही छापने से एक अलग पोथा होजायगा । अस्तु !

हमारा आर्य्य समाजों से कोई सम्पर्क नहीं है, सनातन धर्म्मी भी हम लीक के फकीर व पक्षपाती तथा दुराग्रही हठी नहीं हैं कि बिना किसी हेतु के ही आर्य्य समाज व ऋषि दयानन्द को बुरा कहें व गाली दें अथवा सनातन धर्म्मी होते हुये सनातन धर्म की पोल व सनातन धर्म के तान्त्रिक व शाक्तिक मांस मदिरा व व्यभिचारादि का समर्थन करें व यज्ञादिकों का आश्रय लेकर वाममार्ग की प्रवृत्ति में हिंसा काण्ड का प्रचार करें, ऐसे हम सनातन धर्म्मी भी नहीं हैं

**हम हैं क्या ?**

किन्तु हम हैं क्या ? इस प्रश्न का उत्तर यह है कि हम हैं निष्पक्ष सनातन धर्मी, इतिहास लेखक हैं,

अतएव उपकार बुद्धिसे हिन्दू जाति के उद्धार के निमित्त हम अपने को एक सच्चे व निष्पक्ष इतिहास लेखक बनाना चाहते हैं, तिस के समर्थन में हमारे पास अनेकों पौराणिक संस्कृतज्ञ विद्वान व अनेकों प्रतिष्ठित आर्य्य समाजिक नेतावों के भी प्रशंसा पत्र आये हैं यथा स्थल पर हमने दोनों ही संस्थावों के दोषों को प्रकट करके दोनों ही संस्थावों को उपकार बुद्धि व गुण ग्राहकता से फटकारा है न किसी का पक्ष किया है और न किसी को झूठा दोष ही लगाने का उद्योग किया है वरन संकीर्ण भावों को त्याग कर उदार विचारों को ग्रहण किये हैं।

यद्यपि आर्य्य समाज के सिद्धान्त व कतिपय मन्तव्यों से हमारा मत भेद अवश्य है तथापि हम यह मुक्त कण्ठ से अवश्य कहेंगे कि आर्य्य समाज के प्रत्येक कर्त्तव्य में देश सेवा व देशहित टपकता है परन्तु इस के विपरीति हमारे प्यारे सनातन धर्म मण्डल में स्वार्थ त्याग का अभाव है यह ही कारण है कि आर्य्य समाज बबूले की तरह से देशोपकारी अनेकों कार्य्य करती चली जा रही है परन्तु यदि कोई हम से पूछे कि श्रीभारत धर्म महामण्डल, जिस की शक्ति आर्य्य समाजों से कितनी ही बढ़चढ़ कर है, उस ने देश हित के लिये क्या क्या किया? तो इस के उत्तर के लिये हमें लज्जित होकर चुप हो जाना पड़ता है। अस्तु।

**स्वार्थ व संकीर्णता**

यह तो प्रत्यक्ष है कि उपरोक्त दोनों ही संस्थावों में सब ही प्रकार के ऊंच व नीच, उदार व संकीर्ण, परोपकारी व स्वार्थी, भले व बुरे सब ही प्रकार के मनुष्य होते हैं और उनके चित्तों में प्रायः दूसरे के सुकर्तव्य को देखकर ईर्षा द्वेष

उत्पन्न होता रहता है और पराये अशकुन के लिये अपनी नाक कटा देना यह उनका परम कर्तव्य होता है कहने का प्रयोजन यह है कि जिस प्रकार से अन्य योग्य पुरुषों की जीवनी व फोटो हमने इस ग्रन्थ में दिये हैं तदनुसार ही पं० भीमसेन जी शर्म्मा इटावा निवासी को एक योग्य पुरुष समझ कर उन का फोटो व जीवनी इस ग्रन्थ में देना हमने निश्चय कियी थी तदर्थ पं० भीमसेन जी से हमारा पत्र व्यवहार हुआ, तब उन्हों ने हमें उन की जीवनी लिख कर उनके पास अवलोकनार्थ भेजने का हमें आदेश किया तदनुसार पंडित जी की जीवनी लिखकर अवलोकनार्थ हमने कलकत्ते उन के पास भेज दियी उस के पहुंचते ही पंडित जी की क्रोधाग्नि बढ़ी और उन्हों ने अपने कार्ड तारीख ११–९–१५ के अनुसार हमें ऐसा लिखा :—

कि "हमें अनुमान होता है कि आप समाजी मत के तथा स्वामी दयानन्द जी के पक्षपाती हैं।"

पाठक ! जैसी कुछ जीवनी हमने लिख कर पंडित जी के पास भेजी थी उस में जहां जहां आर्य्य समाज व उस के संस्थापक का प्रसंग आया था तहां तहां सभ्यता पूर्वक आर्य्य समाज के संस्थापक को हमने "ऋषि दयानन्द" लिख कर सम्बोधन किया था सम्भव है कि हमारे ये ही वाक्य पं० भीमसेन जी के उपरोक्त अनुमान के कारण हों परन्तु अन्य सनातनियों की तरह से बाबा दयानन्दादि कठोर वाक्यों का प्रयोग करना हम उचित नहीं समझते हैं, अतएव ऐसी दशा में पं० भीमसेन जी हमारे प्रति चाहे हमें आर्य्यसमाजी मानें चाहे सनातनी यह उन की कृपा है।

परन्तु हमने सद्भाव व इनके साथ हमारा हार्दिक प्रेम होने के ही कारण से हमने उन की जीवनी व फोटो इस ग्रन्थ में सनाढ्य जाति के साथ दियी है तहां पाठक स्वयं देख सक्के हैं कि हमने वहां क्या आर्य्य समाजिकपन किया है ? हां पंडित जी के साथ प्रेम होने के कारण से ही पंडित जी की फोटो व जीवनी देकर हमने अनुमान ३०) का भार अपने ऊपर लिया है और जब इन की जीवनी व फोटो के विषय में पत्र व्यवहार हुआ था तब पंडित भीमसेन जी के पुत्र चिरंजीव पं० ब्रह्मदेव शर्म्मा मिश्र इटावा ने अपने पिता पं० भीमसेन जी के चित्र छपाई के समग्र व्यय देने की हम से प्रतिज्ञा कियी थी परन्तु इस उदारता के विपरीत पं० भीमसेन जी ने हमारी भेजी हुयी जीवनी को शोधकर जो हमारे पास लौटायी तो उसे भी बैरंग भेजी और अपने पुत्र की उपरोक्त प्रतिज्ञा के विपरीत चित्र छपाई का व्यय हम से लिया अतएव इस से प्रकट होता है कि आप के पुत्र में आप की अपेक्षा उदार भाव विशेष हैं ।

इधर तो पं० भीमसेन जी हमें आर्य्य समाजी समझें और उधर आर्य्यसमाज हम से महान द्वेष करे तब हम आर्य्यसमाजी कैसे कहे व माने जा सक्के हैं ?

हमारा आर्य्यसमाजों से तनिकसा भी सम्बन्ध नहीं है इस की पुष्टि में आर्य्यसमाजिकों के वर्ताव का निम्न लिखित वृत्तान्त पाठकों के विचारार्थ हम नीचे मुद्रित करते हैं ।
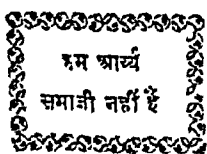
**हम आर्य्य समाजी नहीं हैं**

अतएव हमें यह आवश्यक्ता पड़ी कि सर्व साधारण को हम यह

**क्या हम आर्य्य समाजी हैं ?**

निश्चय कर दें कि हम वैान हैं ? किस संस्था के अन्तर्गत हैं ? और पं० भीमसेन जी शर्म्मा इटावा वालों का कथन कहां तक यथार्थ है ?

हम ऊपर कह आये हैं कि जहां आर्य्य समाजादि संस्थाओं में सत्पुरुषों का समागम व उदार चित्त महानुभावों का समुदाय है तहां इस के विरुद्ध गुणों को रखने वालों की कमी भी वहां नहीं है अर्थात् आर्य्य समाज को एक देश हितैषिणी संस्था समझ कर हम सदैव यह ही सोचा करते थे कि ' हम अपने ग्रन्थ ऋषि दयानन्द के वैदिक प्रेस अजमेर में छपवावें तो उत्तम हो क्योंकि हमारा पैसा किसी विधर्मी प्रेस कम्पनी को न जा कर यदि वैदिक यन्त्रालय अजमेर में जाय तो उत्तम हो " इस शुभ उद्देश्य को लेकर हम सन् १९११ से १९१५ तक सदैव यह प्रयत्न करते रहे कि " ऋषि दयानन्द के वैदिक प्रेस अजमेर में अपने ग्र.न्थ छपवावेंगे " तदनुसार जब जब हम फुलेरे से अजमेर जाया करते थे तब तब ही समाजिक वैदिक प्रेस के मैनेजर पं० हरिश्चन्द्र जी से मिलकर अपनी ग्रन्थावलि के छापने के विषय में निवेदन किया करते थे, उस के उत्तर में पंडित हरिश्चन्द्र जी हम से कहा करते थे कि " कुछ ठहर जावो आज कल काम बहुत है " कभी कहते थे आज कल सत्यार्थ प्रकाश छप रहा है इस के छप चुकने पर आप का काम कर देंगे, कभी कहा करते थे कि आज कल आदमियों की कमी है एक दो कम्पोजीटर आ जाने दो तब आप का काम लेंगे, कभी कहते थे कि संस्कार विधि छप रही है इस के पूर्ण

होने पर देखा जायगा, तात्पर्य्य यह है कि वे इस ही तरह के हीला हवाला बतलाकर हमें टरका दिया करते थे कारण यह कि हम सनातन धर्मी थे, सशोक कहना पड़ता है कि इन मैनेजर साहब के कपट युक्त व्यवहार को न समझ कर हम उन के कथन पर भरोसा करते रहे, और अजमेर से फुलेरे आने पर इन मैनेजर साहब के कथनानुसार हम पत्र द्वारा भी इनसे पूछते रहे ऐसा हमने आठ दस बार किया होगा और यह महाशय सदैव हमें चाल ही का जवाब देते रहें उन सब पत्रों को हम अपने यहां पढ़ कर चाहे जहां डाल दिया करते थे कारण यह कि इन पत्रों को Reference हवाले के लिये रखने की कोई आवश्यक्ता उस समय नहीं समझी गयी थी, अब जब हमें यह प्रतीत हुआ तब उन सब पत्रों को अपने रद्दी कागजों में ढूंढा तो निम्न लिखित पत्र मिले यथा :—

वैदिक प्रेस अजमेर

नं० २८४ ता० २६—१०—१९१२

श्रीयुत पं० छोटेलाल जी शर्मा,

फुलेरा ।

महाशय! नमस्ते ।

कृपा पत्र ता० २३—१०—१९१२ का प्राप्त हुआ, उत्तर में लेखनीय यह है कि वर्तमान में यंत्रालय को छपाई की अधिकता

के कारण अवकाश बिलकुल नहीं है आप अपनी जाति माला को अन्यत्र छपवा लेवें।

भवदीय

हरिश्चन्द्र त्रिवेदी

प्रबन्धकर्त्ता

पाठक! इस पत्र के अनुसार भी हम इस ही आशा में रहे कि हमारा रुपैया वैदिक प्रेस अजमेर में जाय तो अच्छा है तदनुसार समय समय पर हम उद्योग करते रहे तब फिर हमारे एक पत्र का उत्तर आर्य्य-समाजिक प्रेस अजमेर से यों आया :—

वैदिक प्रेस अजमेर

सं० ४४२

ता० १३। ६। १९१३

महाशय नमस्ते

कृपा पत्र तारीख ४—६—१९१३ का प्राप्त हुआ उत्तर में निवेदन यह है कि इस समय कार्य्य की अधिकता के कारण हम आप की पुस्तक नहीं ले सकते।

आप का

हरिश्चन्द्र त्रिवेदी

प्रबन्धकर्त्ता

पाठक वृन्द ! इस उत्तर के पश्चात् भी हमने आर्य्य समाज को वैदिक संस्था समझ कर अपने ग्रन्थ आर्य्य समाजिक प्रेस अजमेर में ही छपवाने की आकांक्षा बनाये रक्खी और तदनुसार हम डेढ़ दो वर्ष तक समाजिकों की लचलची बातों में फँसे रहे, प्रतीक्षा करते रहे, अन्त को इस तरह जब ४ व ५ वर्ष का महाकाल व्यतीत हो गया और आर्य्य समाजिक प्रेस अजमेर ने न तो हमारे ग्रन्थ ही छापे और न इनकारी का साफ साफ उत्तर ही दिया, तब विवश हम ने अपना काम सन १९१५ में अन्यत्र कराया और एक वर्ष में अनुमान १७००) रुपयों की छपाई भिन्न भिन्न प्रेसों से करा डाली और एक वर्ष में दो ग्रन्थ छपवा कर हमने प्रकाशित कर दिये, यदि यही सब काम वैदिक प्रेस अजमेर में छपता तो कई सौ रुपयों का लाभ. श्री स्वामी दयानन्द जी के प्रेस को होता परन्तु यह सब हानि पं० हरिश्चन्द्र जी त्रिवेदी मैनेजर की कार्य्य कुशलता के कारण से ही स्वर्गवासी स्वामी दयानन्द जी के प्रेस को सहनी पड़ी, यदि ऐसे समय में स्वामी दयानन्द जी होते तो उन के प्रेस मैनेजर के इस कर्तव्य को देखकर उन्हें दुःख अवश्य होता क्यों कि संकीर्णता व द्वेषादि से वे स्वयं मुक्त थे देखें परोपकारिणी सभा क्या करती है ?

यदि हमें पूर्व से ही साफ साफ उत्तर जैसा कि आगे के छपे पत्र संख्या २०५ से विदित होता है मिल जाता तो चार वर्ष तक हम अपने पुस्तक प्रकाशन कार्य्य को न रोकते और इस चार वर्ष के काल में हम अपने आठ ग्रन्थ प्रकाशित करसके होते परन्तु शोक ! आर्य्य समाजिक Policy पॉलिसी भरे उत्तरों से चार वर्ष

तक हमें व्यर्थ रुकना पड़ा और यह हानि व लोकोपकार में बाधा व्यर्थ ही आर्य्य समाज के कारण से हमें सहनी पड़ी अस्तु !

अब पाठक इस बात के जानने के उत्सुक होंगे कि उपरोक्त आर्य्य-समाजिक पत्रों का गुप्त रहस्य कैसे खुला ? तो इस का उत्तर यह है कि जब अन्य प्रेसों से हम ने अपना ग्रन्थ "जाति अन्वेषण" प्रथम भाग छपवा लिया तो उसे तय्यार करा कर एक दफतरी की मार्फत वैदिक प्रेस की Cutting Machine कटिंग मेशीन से कटवाने के लिये कटाई देकर पुस्तकें भिजवायीं सो ढाई ढाई सौ का सेट दो बार वैदिक प्रेस से कट कर तो आया, पर पुस्तकों के वैदिक प्रेस में जाने से प्रेस के मैनेजर पं० हरिश्चन्द्र की दृष्टि ग्रन्थ पर पड़ी और वे उस पर हमारा नाम व महामंत्री का पद देख कर बड़े क्रोधित हुये और दफतरी को हुकुम दिया कि "हमारी मेशीन से ऐसी पुस्तकों को मत काटो व ऐसी पुस्तकों को प्रेस में मत आने दो" जब यह समाचार हमारे कानों तक पहुंचा तो वैदिक प्रेस कमेटी के सेक्रेटरी मास्टर कन्हैया लाल जी के पास हम गये और आर्य्यसमाज भवन केसरगंज में वार्तालाप हुआ तहां ही उपरोक्त हरिश्चंद्र जी मैनेजर भी थे तब उपरोक्त मास्टर साहबने अपने समक्ष पं० हरिश्चंद्र जी से इस बारे में कहने की हमें सुसम्मति दियी तदनुसार हमने पं० हरिश्चंद्र जी से इस ही विषय में पुनः निवेदन किया कि "पुस्तक दाम लेकर काटने में कोई हानि नहीं है" तो इस पर आप ने सभ्यता छोड़ कर जिस प्रकार का हमें उत्तर दिया उस प्रकार के उत्तर से वैदिक प्रेस कमेटी के सेक्रेटरी मास्टर साहब को भी शोक हुआ, तब इन्हों ने इस विषय का

(गुप्तरहस्य कैसे खुला)

विवर्ण वैदिक प्रेस कमेटी के प्रधान बाबू रामविलास जी सारड़ा को कहने की सुसम्मति दियी तदनुसार हम सारड़ा जी से मिले जिन्हों ने पत्र द्वारा सब कुछ लिखकर भेजने की हमें अनुमति दियी तब सब कुछ विवर्ण आदि से अन्त तक का लिखकर ता० १५—३—१५ को पत्र नं० १०८० रजिस्ट्री द्वारा बाबू रामविलास जी सारड़ा प्रधान वैदिक प्रेस कमेटी अजमेर को भेजा। पुनः जब तारीख २५-३-१५ तक कोई उत्तर नहीं आया, तब एक पत्र नं० ११२२ तारीख २६ मार्च सन् १६१५ को मास्टर कन्हैयालाल जी बी० ए० मंत्री वैदिक प्रेस कमेटी अजमेर तथा एक Reminder याद दिलाने का पत्र नं० ११२३ उस ही दिन उपरोक्त प्रधान सारड़ा जी को भेजा जिस का उत्तर हमारे पास प्रेस से यह आया।

वैदिक यन्त्रालय अजमेर

ता० ८। ४। १६१५

श्रीयुत महामन्त्री हिन्दू धर्म्म वर्ण व्यवस्था
मण्डल फुलेरा,
जयपुर।

महाशय नमस्ते !

आपके पत्र ता० १५। ३। १५ के उत्तर में श्री प्रधान जी

की आज्ञानुसार लेखनीय यह है कि अनेक कारणों से हम आप के साथ व्यवहार नहीं करना चाहते ।"

पाठक ! यह ही उत्तर आर्य्य समाज की पॉलीसी का गूढ़ रहस्य भरा था, अतएव इस बर्ताव की चर्चा हमने अपने कतिपय मित्रों के सन्मुख कियी तो उन से हमें उत्तर मिला कि "आप प्रायः सत्य कहकर व लेख द्वारा लिखकर समाजियों की पोल खोला करते हैं आप ने ही फरुखाबाद गुरुकुल की टीका टिप्पणी कर के अपने अपील नामक ट्रैक्ट द्वारा फरुखाबाद से गुरुकुल को वृन्दावन भिजवा दिया है यह ही कारण है कि आर्य्य समाजिक भी आप से द्वेष रखते हैं" यदि यथार्थ में इस द्वेष का यही कारण हो तो समाजियों को उचित था कि हमारे लेखों का उत्तर लेखों द्वारा मिलना चाहिये था न कि साहित्य का जवाब थपेड़े से, अतएव यदि हमारी पुस्तक समाजिक मेशीन द्वारा काटदी जाती तो ऋषि दयानन्द के नाम को बट्टा नहीं लग जाता, यदि ऐसा बर्ताव हमें सनातन धर्म्मी समझकर हमारे साथ किया गया हो तो ऐसे समाजिक कर्तव्य से समाजियों की संकीर्णता का परिचय मिलता है, माना कि हम आर्य्य सामाजिक नहीं हैं तो क्या हमारे साथ द्वेष करना आर्य्य समाज का उचित कर्तव्य है ? कदापि नहीं । क्योंकि इस ही तरह सन् १८७५ में जब सब से पहिले पहल सत्यार्थ प्रकाश लाजरस कंपनी बनारस में छपा था उस समय ऋषि दयानन्द के पास घर का प्रेस नहीं था अतएव उस

समय यदि डाजरस कंपनी के मैनेजर यह समझकर कि " सत्यार्थ प्रकाश में सम्पूर्ण मतों का खंडन है" उसे न छापें तो कहो उस समय ऋषि दयानन्द की आत्मा को कितना कष्ट पहुंचता ? इस ही तरह यदि हमारी पुस्तकें समाजिक वैदिक प्रेस अजमेर में कटही जातीं तो कहो समाज की क्या हानि थी ? इस से प्रमाणित होता है कि वैदिक प्रेस के मैनेजर ही नहीं किन्तु वैदिक प्रेस कमेटी के प्रधान सारड़ा जी सरीखों में भी Commercial Rules व्यापारिक नियमोंकी विज्ञप्ति की न्यूनता है अन्यथा लाखों आर्यों के होते हुये ऋषि दयानन्द का प्रेस उस ही तरह बुढ़िया के चरखे की तरह चले यह कब सम्भव हो सक्ता है यदि इस प्रेस में कार्य्य कुशल मैनेजर व कार्य्य कर्तागण उदार नीति व विचार वाले होते तो आज इस प्रेस में बड़े बड़े एन्जिन धधकते होते हजारों मनुष्य काम करते होते, अनेकों भाषावों में कार्य्य करने के लिये यह प्रेस सबल होता, प्रेस सम्बन्धी उन उन सामानों का यह आगार होता जो सामान हजारों प्रेसों में से किसी एक आध में ही होते हैं परन्तु ऐसा हम नहीं पाते किन्तु समाजिकों की कार्य्यवाहियों से यह भी प्रतीति होता है कि वैदिक प्रेस अजमेर में छोटे विचार व छोटी छोटी तनख्वाह के मुल्य कर्मचारीगण हैं यही कारण है कि वैदिक प्रेस अजमेर के छपे हुये ऋषिकृत ग्रन्थों में ही अशुद्धियें भरी पड़ी हैं तदनुसार सन् १९१२ में तारीख: ६, ७, ८, ६ और

१० नवम्बर को अजमेर में एक ऋषि उत्सव हुवा था जिस में एक यह भी विषय था कि :—

## ऋषि कृत पुस्तकों में जो छापे की अशुद्धियां हैं उन के दूर करने पर विचार।

पाठक! विचारिये तो सही जब घर का ही प्रेस, घर के ही मैनेजर, घर के ही कार्य्यकर्ता तो फिर महर्षि दयानन्द जी के ग्रन्थों में अशुद्धियें क्यों? इस का उत्तर लोगों ने हमें यह दिया कि वैदिक प्रेस में मैनेजर आदि लोग शिफारिशी व साधारण योग्यता के मनुष्य हैं इस ही लिये वैदिक प्रेस के काम में अशुद्धियें होती रहती हैं कदाचित ऐसा ही हो। यदि वास्तव में ऐसा ही है तो श्री स्वामी जी की स्थानापन्न श्रीमती परोपकारिणी सभा को इस प्रेस में ऐसा मैनेजर रखना चाहिये जो संस्कृत अंग्रेजी का पूर्ण ग्रेजुएट परम अनुभवी व गम्भीर विचार वाला हो जिस से ऋषि दयानन्द के स्मारक प्रेस की उन्नति दिन दूनी और रात चौगुनी हो क्योंकि प्रेस मैनेजर लोग जब तक खानगी लड़ाइयों से मुक्त व तू तू मैं मैं से अलग रहकर निरन्तर रूप से Press business प्रेस के कार्य्यों को बढ़ाने वाले न होंगे तब तक प्रेस की उन्नति हो नहीं सक्ती,

साथ ही प्रेस मैनेजरों को प्रेस की उन्नत्यर्थ गम्भीर भावों को

मैनेजरों के लक्षण

लिये हुये निरपेक्ष व स्वतंत्र विचार धारण करने चाहियें, उन्हें Party Spirit पार्टी स्पिरिट व साम्प्रदायिक पक्षपात से मुक्त हो कर प्रेस सञ्चालन की व्यवस्था करना चाहिये यह जो कुछ लिखा गया है यह इन उद्देश्यों से है कि क्या हम आर्य्यसमाजी हैं? आर्य्य समाजी हम से कितना द्वेष करते हैं? सामाजिक वैदिक प्रेस अजमेर की उन्नति किस प्रकार हो सक्ती है? आदि आदि।

उपरोक्त विवर्ण को पढ़ने से पाठक समझ गये होंगे कि वैदिक प्रेस कमेटी अजमेर के प्रधान बाबू राम बिलास जी सारडा का उत्तर कहां तक समीचीन है? आप के गुरु स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के ये विचार कि वैदिक मिशन के "ओ३म्" का झंडा अरब के रेगिस्तानों में, रोम व जेरूशिलम के गिरजों पर, चीन व जापान के उच्चतम मन्दिरों के शिखिरों पर उड़ता रहे, यह कैसे सम्भव होसक्ता है? दुःख के साथ कहना पड़ता है कि ऋषि दयानन्द के प्रेस में व्यक्तिगत द्वेष, घृणा और साम्प्रदायिक टंटा अनुदार भावों के साथ घुसता चला जा रहा है, परन्तु ऐसा होना भविष्यत में आर्य्य समाजिक

उन्नति को बाधक होगा, इसलिये देश के कल्याण के लिये आर्य-समाज एक सार्वदेशिक संस्था प्रमाणित हो यह ही हमारी शुभ-कामना है।

# ब्राह्मण जातियें

पाठक वृन्द ! जाति अन्वेषण प्रथम भाग के पृष्ठ ५८ में आप ने देखा होगा कि आप के भारत वर्ष में १०२ प्रकार की ब्राह्मण जातियें हैं उन में से जिस ब्राह्मण जाति की लोक संख्या दस हज़ार से कम थी उस ब्राह्मण जाति को हमने इस ग्रन्थ में लिखने से छोड़ दियी है, तिस परभी हमें अनुमान ३२५ ब्राह्मण जातियें इस ग्रन्थ में लिखनी पड़ी हैं। हमारे जाति अन्वेषण की यात्रा में प्रायः विवेकी विद्वान लोग यह शंका किया करते थे कि सृष्टि की रचना हुयी तब न तो आज कल का सा जाति भेद था और न एक एक समुदाय के ही हज़ारों भेद थे और न उस समय चारों वर्णों ही की स्थापना हुयी थी तब अकेले ब्राह्मणों के ही १०२ भेद कैसे हो गये? इस प्रश्न का उत्तर देदेना यद्यपि एक सरल बात नहीं है, तथापि ब्राह्मण जाति के इतने भेद होकर उनकी सैकड़ों ही जातियें बनगयीं हैं उसके अनेकों कारणों में से कुछेक मुख्य कारण निम्न लिखित हैं यथा :-

( १ ) दूर दूर देश व भिन्न भिन्न आश्रमों में निवास करने के कारण; जैसे :-

अंठा, वंग, कलिंग, कालिंग, कान्यकुब्ज, सौवीर, सौराष्ट्र, महाराष्ट्र, उत्कल, मगध, मालवा, नैपाल, केरल, चोरल, गौड़, मल, पांचाल, सिंहल, मत्स्य, द्रविड़, द्राविड़, कर्णाटक, राटिंव, सूरसैन, कौंकण, टौंकण, पाण्ड्य, पुलिंध्र, आंध्र, द्रौण, दशार्ण, विदेह, विदर्भ, मैथिल, कैकेय, कोशल, कुंतलमैश्रव, जावल, सर्वसिंधु, शालभद्र, मध्यदेश, पर्वत, काश्मीर, पुण्ड्राहार, सिंधु, पारसीक, गांधार, गुर्जर वाल्हीक, आदि आदि देशों का विवर्ण पुराण व प्राचीन ऐतिहासिक ग्रन्थों में मिलता है अतएव बहुत सी ब्राह्मण जातियें तो इन देशों में निवास

करने के कारण से उस ही देश के नाम से प्रसिद्ध हुयी, जैसे कान्यकुब्ज देश में निवास करने से कान्यकुब्ज व कन्नोजिये, गौड़ देश के ब्राह्मण गौड़, मिथला के ब्राह्मण मैथिल, शूरसेन नाम मथुरा प्रान्त के ब्राह्मण माथुर चौबे, बंगदेश के बंगाली, महाराष्ट्र देश के मरहटे ब्राह्मण, उत्कलदेश के उत्कल, मगध देश के मागध, मालवा के मालवी, नेपाल के नेपाली, कौकण देश के कोंकन, आंध्र देश के आंध्र, पांचाल देश के पांचाल, द्रविड़ के द्रविड़, सिंध देश के सिंधी, काश्मीर के कश्मीरी आदि आदि।

(२) ब्राह्मणों की अनेकों जातियें हो जाने का दूसरा कारण यह है कि भिन्न भिन्न दूर दूर देशों में रहने व अन्य विजातियों के साथ सहवास हो जाने के कारण उन के आचार विचार व सदाचार के नियमों में भेद होजाने से संसर्ग दोष आगये थे ही ब्राह्मण समुदाय आज हज़ारों ही वर्षों के महा काल व्यतीत हो जाने से अलग अलग एक एक ब्राह्मण जातियें बन गयीं जो वास्तव में सब एक ही वंशज जाति थीं, उन के आचार विचार शास्त्र विरुद्ध होने से एक ब्राह्मण समुदाय दूसरे ब्राह्मण समुदाय को अपने से भिन्न व विजातीय ब्राह्मण मानने लगा और धर्म्म रक्षार्थ ऐसा मानना उचित भी था, क्योंकि शास्त्र धारानुसार उन ब्राह्मण जातियों के आचार विचार पर दृष्टि दें तो वे जातियें ब्राह्मण ही नहीं हैं, ऐसा निश्चय हो जाता है, क्योंकि प्रायः एक हम देखते हैं कि बंगाल के ब्राह्मण, पंजाब के ब्राह्मण, कान्यकुब्ज, कश्मीरी और सारस्वत इन ब्राह्मण समुदायों में विशेषता मांसाहारियों की है. कश्मीर में ब्राह्मणोंके यहां गृह कार्य्यों में मुसलमान तक नौकर रक्खे जाते हैं, पंजाब में ब्राह्मण लोग अंगरखी, कुर्ता, पजामा पहिने व खाट पर बैठे ही भोजन कर लिया करते हैं तथा उनका पहिनाव भी मुसलमानों के सदृश होता है उन में कितनेक तो मांस खाते भी हैं तथा कितनेक मांस नहीं भी खाते हैं, उन में कितनेक तो शूद्रादि से स्पर्श होजाने की दशा में स्नान तक भी नहीं करना चाहते हैं, गुजरात में ब्राह्मण लोग कुनबी व कुणबी यानी कुर्मी* जाति के यहां का पानी पीलेते हैं। सार-

* कुर्म्मी जाति का विवर्ण जाति अन्वेषण प्रथम भाग में लिख आये हैं वहां देख लेना।

स्वत ब्राह्मण लोग खत्रियों के यहां का बना कच्चा भोजन करते हैं, मुम्बई में सारस्वत ब्राह्मण बनियों के यहां का बना सखरा भोजन करते हैं, बेलगांव, धारवाड़ मलाबार आदि प्रान्तों के ब्राह्मणों की दशा तो विचित्र ही है, परन्तु मलाबार के पास के नाम्बूरी ब्राह्मण दक्षिणी ब्राह्मणों के यहां का भोजन नहीं करते हैं, तिकडील ब्राह्मण नामर जाति ‡ की स्त्रियों को स्वस्त्री ग्रहण करलेते हैं, महाराष्ट्र ब्राह्मण गृहस्थ व भिक्षुक ब्राह्मण समुदाय में कुछ भेद नहीं मानते हैं, क्योंकि वहां भिक्षुक ब्राह्मण समुदाय की लड़की गृहस्थ ब्राह्मण समुदाय में व गृहस्थ समुदाय की भिक्षुक ब्राह्मण समुदाय में ब्याही जासक्ती हैं, परन्तु यह पृथा द्रविड़ व तैलंग ब्राह्मणों में नहीं है, नाम्बूरी ब्राह्मण क्षत्रियों के हाथ का बना भोजन स्वीकार करलेते हैं, मारवाड़ी श्रीमाली ब्राह्मणों मे व सिंधुवाल सारस्वत ब्राह्मणों में विधवा विवाह होता है, पंजाब में गौड़ व सारस्वत लोग अपने से तीन वर्ण की कन्या को अपनी स्त्री ग्रहण कर लेते हैं, पंजाब में गौड़ ब्राह्मणों की विधवाओं का वेश्यावत व्यवहार होता है, सिंधु और राजपूताने में ब्राह्मण लोग कलाल, सुनार, नाई और माली और तेली आदि जातियों के यहां का पक्वान्न भोजन स्वीकार करते हैं, नैपाली ब्राह्मणों में विधवा के साथ वेश्यावत व्यवहार होता है और ये लोग शूद्रा स्त्रियों को अपनी स्त्री बनाकर सन्तानोत्पत्ति करलेते हैं, वे वहां क्षत्रिय वर्ण में कही जाती हैं, बंगाल में कुलीन ब्राह्मणों में एक एक के १०, १५, २०, ५०, और १०० तक स्त्रियें होती हैं जिस एक के मरजाने से सब की सब विधवा होकर क्या क्या उत्पात करती हैं तथा अपने नाम मात्र पति के जीते जी ही वे क्या क्या करती हैं कुछ कहने में नहीं आसक्ता है, इस ही तरह कुलीन कान्यकुब्ज व मैथिलों में भी इस कुपृथा से कुफल लगते हैं, राजपूताना के बागड़ा व बारागांव ब्राह्मण एक मात्र जाटों के सदृश माने जाते हैं, दाहिमा ब्राह्मणों में पूरी मिठाई के साथ दाल बनती है जो सखरे निखरे का विचार न रखकर विवाह शादियों में आलू के शाकवत् परोसी जाती है, पारीख पिरोत व पुष्करणे ब्राह्मणों में हाड़ का चूड़ा पहिना जाता है जिसे हाथीदांत का चूड़ा

‡ यह दक्षिण प्रान्तस्थ एक क्षत्रिय जाति है।

कहते हैं. बीकानेर में ब्राह्मण लोग चमड़े का जलपीते हैं, हांसी हिसार की ओर के हरियाणे ब्राह्मण बिलकुल कृषक ही होते हैं।

नोट :- देखो महाराष्ट्रीय भाषाके "प्राचीन व अर्वाचीन" इतिहास में बालशास्त्री रावजी शास्त्री चीरसागर का उपरोक्त मत है।

३ ब्राह्मणों के भिन्न २ भेद होजाने के कारणों में से तीसरा कारण ब्राह्मणों की विषयाशक्तता है अर्थात् स्वजातीय व विजातीय, स्ववर्णस्थ व अन्य वर्णस्थ, कन्या व विधवा के संग प्रकट व गुप्त सम्भोग करके सन्तानोत्पत्ति करने से वे वीर्यप्रधानता से ब्राह्मण मानी जाकर ब्राह्मणों की एक अलग जाति कर दी गयी, जैसे :- गोलक, रुण्डगोलक, गूजर गौड़, आभीर गौड़, आदि आदि।

४ चौथा कारण-ब्राह्मणों की गुण विशिष्टता के कारण पूर्व काल में क्षत्रिय राजाओं द्वारा ब्राह्मणों को सन्मान सूचक उपाधियें मिलती थीं वेही उपाधियें समय पाकर एक जाति विशेष समझी व मानी जाने लगीं, जैसे :- चातुर्वेदी, चौबे, वाजपेयी, अग्निहोत्री, मिश्र, पाठक, जोषी, द्विवेदी, त्रिवेदी, दुबे, तिवाड़ी, दीक्षित, शुक्ल, सनाढ्य, भट्ट, अवस्थी, होता, उद्गाता, आचार्य्य, उपाध्याय आदि आदि।

नोट :— इन सब का ही अलग अलग विवर्ण इस ग्रन्थ में मिलेगा।

५ ब्राह्मणों की अनेकों जातियें हो जाने का चौथा कारण यह है कि राज्य की ओर से विशेष सन्मान व ग्राम दक्षिणायें मिलने से भी कई ब्राह्मण समुदायों की एक एक जाति विशेष बन गयी, ऐसे दानी राजाओं में से प्रसिद्ध राजा भोज, युधिष्ठिर, व जन्मेजय तथा बंगाल में राजा बल्लसेन आदि हुये हैं, जिनके ग्रामादि दानों के कारण ब्राह्मण समुदाय उन्हीं ग्रामों के नामों से पुकारे जाने लगे थे, वेही समय पाकर आजकल ब्राह्मणों की एक निराली ही जाति समझी जाने लगी, जैसे :- पालीवाल, पोहकरने, पुष्करणे, नारनौलिये, पाटणिये, इन्दोरिये, आदि आदि।

यदि शास्त्र मर्य्यादा व सृष्टि की आदि स्थिती को देखें तब तो आजकल का ब्राह्मण भेद निरर्थकता प्रतीति होता है, परन्तु उपरोक्त क्रमानुसार आचार विचार के नियमों में उल्लंघनता आजाने से ब्राह्मणों का जाति भेद मानना सर्वदा सर्वथा उचित है, अतएव विशेष अनुसन्धान के पश्चात इस ग्रन्थ में केवल वेही जातियें लिखी गयी हैं, जिन्हें हम ब्राह्मण मान्ते हैं और तद्गत ही हमें अपने विचार की पुष्टि में प्रमाण भी मिले हैं, हां इस ग्रन्थ में अनुमान दस पांच ऐसी जातियें भी लिख दियीगयी हैं जो यथार्थ में ब्राह्मणवर्ण नहीं हैं किन्तु लोगों को मिथ्या विश्वास दिलाने के लिये वे ब्राह्मण बनती हैं, जैसे भोजक, डूसर आदि आदि उन सब का विस्तार पूर्वक विवर्ण इस ही ग्रन्थ में मिलेगा।

१ अग्निहोत्री :— यह एक ब्राह्मण जाति है इस के विषय में जाति अन्वेषण प्रथम भाग में लिखा जा चुका है, शास्त्रों में द्विजों के लिये जैसे अन्य नैत्तिक कार्य्यों के करने की आज्ञा है तैसे ही सायं प्रातः नित्य हवन करना ब्राह्मणों का एक मुख्य कर्तव्य था, पूर्वकाल में ब्राह्मण सब नित्य अग्निहोत्र करने वाले थे और एक भी अग्निहोत्र रहित नहीं था जैसा कि उपनिषदों में एक आख्यायिका है कि एक राजा के यहां एक ऋषि गये तब राजा उनका अतिथ्य सत्कार करणार्थ उद्यत हुआ परन्तु ऋषि ने उस के यहां भोजनादि ग्रहण करना अस्वीकार किया इस पर वह राजा ऋषि के प्रति कहता है कि :—

नमेस्तेनो जनपदे न कदर्य्योन च मद्यपः।
नानाहिताग्निर्नाविद्वान् न च स्वैरी स्वैरिणि कुतः॥

हे भगवन्! मेरे राज्य में न तो कोई चोर है, न शराबी है, न छली है, न कोई अग्निहोत्र रहित है, न कोई मूर्ख है, न कोई व्यभिचारी ही है, तब व्यभिचारिणी स्त्री तो कहां। अतएव भारतवर्ष में ऐसा समय था तब तो

सब ही अग्निहोत्री थे, तब इस नाम को ब्राह्मण लोग अपने अपने नाम के अन्त में नहीं लगाते थे, परन्तु ज्योंही ब्राह्मणों में अग्निहोत्र का अभाव हुआ कि जो लोग अग्निहोत्र करने वाले थे उन का महत्व बढ़ गया और सर्वसाधारण की अपेक्षा वे लोग गौरव दृष्टि से देखे जाने लगे, यहां तक कि इस देश में जैन धर्म्म का प्रचार बढ़ा और जैनी राजा लोगों ने आगजलाने में पाप समझ कर अग्निहोत्र के प्रचार को बन्द कराया, इस ही तरह की रुकावट मुसल्मानी राज्य में भी बहुत कुछ हुयीं, परन्तु उस समय में भी जिस २ ब्राह्मण कुल ने अग्निहोत्र नहीं त्यागा वे उस की याद में अपने नाम के अन्त में "अग्निहोत्री" शब्द लगाकर अपना पूर्व परिचय दिया करते हैं, इस ही को लोगों ने एक जाति भी मानलियी है।

परन्तु आज कल तो विशेषता उन ब्राह्मणों की है जो नाममात्र के अग्निहोत्री हैं या हुक्कादास व चिलमचट्ट हैं अथवा सिगरेट सिगारों का धूंवा उड़ाकर मनमाने अग्निहोत्री बने हुये हैं।

२ अगस्त्य ब्राह्मण :—इन के विषय में "जाति अन्वेषण" प्रथम भाग पृष्ट ८३ में लिखा जा चुका है।

३ अग्रभिक्षु :—इस ब्राह्मण जाति के विषय में "जाति अन्वेषण" प्रथम भाग पृष्ठ ८५ में लिख आये हैं।

४ अग्रदानी :—जाति अन्वेषण प्रथम भाग देखिये, शेष सप्तखण्डी ग्रन्थ में।

५ अग्निमंतुर :—यह दक्षिण प्रान्तस्थ तैलंग ब्राह्मण समुदाय का एक भेद है, ये लोग तैलंग देश में विशेष हैं सदाचार के नियमों से गिरे हुये हैं।

६ अडाडजा :—यह मदरास प्रान्त की एक ब्राह्मण जाति का नामहै।

७ अढ़ाईघर :—जाति अन्वेषण प्रथम भाग पृष्ठ ६५ में लिखा जा चुका है। यह सारस्वत ब्राह्मणों के सर्वोच्च कुल का नाम है।

८ अतित :—जाति अन्वेषण प्रथम भाग में देखिये।

९ अथर्ववेदी :—देखो जाति अन्वेषण प्रथम भाग।

१० अद्वैत ब्राह्मण :—यह बंगाल के बारेन्द्र ब्राह्मण समुदाय का नाम है, जो महात्मा चैतन्य स्वामी के सम्प्रदाय में से हैं इन का विशेष समुदाय सन्तीपुर में है।

११ अधिकारी ब्राह्मण :—जाति अन्वेषण प्रथम भाग के पृष्ठ ६६ में लिख आये हैं।

१२ अन्ध्रः—जा० अन्वे० प्र० भाग के पृष्ठ ६७ में इनके विषय में सूक्ष्म रूप से लिखा जा चुका है। तिस के अतिरिक्त अन्ध्र नाम उत्तम तैलंग ब्राह्मणों का भी है और ये पञ्च द्रविड़ ब्राह्मणों में से हैं, तथाः—

महाराष्ट्रांध्र द्राविड़ाः कर्णाटाश्चैव गुर्जराः।
द्राविड़ाः पञ्चधाप्रोक्ताविंध्यादक्षिण वासिनः॥

इस ही श्लोक का पाठ भेद ऐसा भी मिला है।

कर्णाटकाश्चतैलंगा द्रविड़ाः महाराष्ट्रकाः।
गुर्जराश्चेतिपञ्चैव द्रविड़ा विंध्य दक्षिणे॥

सह्माद्रिखराडे

इस उपरोक्त प्रमाणानुसार अंध्र नाम तैलंग देश का है और उस तैलंग देश में रहने वाले ब्राह्मण अन्ध्र व तैलंग कहाये इस के अतिरिक्त यह नाम देश भेद के कारण से पड़ा है अर्थात् प्राचीन काल में अंध्र व कालिंग ये दो राज्य थे जैसे आज कल जयपुर और जोधपुर, यह अंध्र देश वर्तमान काल के निजाम राज्य के एक पूर्वी भाग का नाम है, अतः उन तैलंग ब्राह्मणों का नाम अन्ध्र ब्राह्मण भी होगया जिस प्रकार जोधपुर का दूसरा नाम मारवाड़ है और तहां के गौड़ ब्राह्मण कलकत्ता मुम्बई में मारवाड़ी ब्राह्मण कहे जाते हैं, तैसे ही निजाम राज्य

में तैलंग ब्राह्मणों का नाम अंध्र ब्राह्मण प्रसिद्ध हो गया और यह ही कारण है कि उपरोक्त श्लोकों में पाठान्तर भी मिला है, शेष सप्तखण्डी ग्रन्थ में लिखेंगे।

१३ अन्यवल–जाति अन्वेषण प्रथम भाग के पृष्ठ ६७ में लिख आये हैं। शेष सप्त खण्डी ग्रन्थ में लिख सकेंगे।

१४ अन्तर्वेदी:—इन का विवर्ण जाति अन्वेषण प्रथम भाग में लिख आये हैं शेष सप्त खन्डी ग्रन्थ में।

१५ अन्य ब्रह्म क्षत्रियः—देखो जाति अन्वेषण प्रथम भाग पृष्ठ ६८ में लिख आये हैं।

१६ अनावला:—कहीं यह ब्राह्मण अनावला, कहीं अनाव्रल व कहीं भाटेला भी कहाते हैं इन के विषय में जाति अन्वेषण प्रथम भाग में लिख आये हैं, तहां विवर्ण देख लेना चाहिये।

१७ अभीर ब्राह्मण :– ये लोग कहीं आभीर ब्राह्मण तो कहीं अभीर ब्राह्मण कहाते हैं, इनके विषय में जाति अन्वेषण के पृष्ठ १०१ में जो कुछ लिखा जा चुका है तिस के अतिरिक्त पं० हरिकृष्ण जी वेंकटराम शास्त्री ने गजानन नामक ब्राह्मण के मुख से सुनकर लिखा है कि " जब श्रीरामचन्द्र जी महाराज तापी के तट पर विन्ध्याचल पर्वत के समीप अपने पिता जी का सांवत्सरिक श्राद्ध करने आये, तब उन्हें वहां ब्राह्मण नहीं मिले. तब वे बड़े शंकित हुये. इतने ही में पांच भील उस मार्ग से वहां आये, उन्हें श्रीरामचन्द्र जी ने कहा, कि:–

तदारामोऽब्रवीत्तान्वै यूयं भूमौ द्विजातयः।
भवत्वभिल्ल नामानश्चाभीरा परनामकाः॥ ११॥

मिश्र० ब्रा० मा० श्लो० ११ पृ० २३८

अर्थात् हे भीलो! तुम जगत में अभिल्ल ब्राह्मण व भिल्ल ब्राह्मण अथवा अभीर ब्राह्मण कहावोगे।

परन्तु दूसरे विद्वानों की राय इस के विरुद्ध भी है अर्थात् विद्वानों का यह आशय है कि अहीर जाति को ही अभीर व आभीर भी कहते हैं,

जिन्हें लोग प्रायः शूद्र व महाशूद्र वर्णों में मान्ते हैं, अतः जिन ब्राह्मणों ने इन के यहां का दान प्रतिग्रह लेना स्वीकार कर लिया उन की निकृष्टता बोध करने के निमित्त उन का नाम उस ही जाति के साथ रखदिया गया, जैसे अभीर ब्राह्मण व आभीर ब्राह्मण।

ये लोग प्रायः खान्देश में हैं तहां इन का पद सामान्य है उस ही देश के समीपी विद्वान पंडित पांडोबागोपाल जी ने अपने जाति निबंध के पृष्ठ ७६ में ऐसा लिखा है कि :-

यांची उत्पत्ति अहीर लोकापासून आहे असे म्हणतात त्यांची वृत्ति अहीर लोकांत असते ॥

अर्थात् अभीर ब्राह्मणों की उत्पत्ति अहीर से है और इनकी यजमान वृत्ति भी अहीरों ही की है।

भट्टाचार्य्य जी ने इन के विषय यह ही लिखा है कि जिन के यहां अहीर जाति के यहां की यजमान वृत्ति है वे अभीर ब्राह्मण कहाते हैं।

हमारे जाति अन्वेषण के भ्रमण में विद्वानों ने हमें यह ही विश्वास दिलाया है कि बाप ब्राह्मण व मा अहिरिन द्वारा जो सन्तान हुयी वह आभीर ब्राह्मण कहायी, इन्हें त्रिकर्म करने का अधिकार है क्योंकि विद्वानों ने इन्हें संकर वर्णी बतलाया है।

१८ अम्मा को दागा :—देखो जाति अन्वेषण पृष्ठ ६६ में लिख आये हैं।

१९ अमतरा के पाठक :—यह कान्यकुब्ज ब्राह्मणों का एक भेद है पूर्व में अमतरा एक ग्राम है, तहां के कान्यकुब्ज लोग पाठक कहाते हैं, वेही उस ग्राम के संकेत से अमतरा के पाठक कहाने लग गये।

२० अम्बलपशी :—जा० अन्वे० पृष्ठ ६८में भी देखिये, यह जाति ट्रावनकोर के ज़िले में मन्दिर के पुजारियों की ज़ाति है। विद्वानों ने इन्हें नीच श्रेणी के ब्राह्मण लिखकर बड़ी भूल कियी है, यथार्थ में ये साधारण ब्राह्मण समुदाय में उत्तम हैं। इन में विद्या का अभाव है।

२१ पैरवत्तवकालु :—इन का विवर्ण जाति अन्वेषण प्रथम भाग पृष्ठ १०६ में लिखा जा चुका है।

२२ अरवेलु :—जाति अन्वेषण प्रथम भाग में लिख आये हैं।

२३ अराढ्य :— जाति अन्वेषण प्रथम भाग पृष्ठ ११० देखो।

२४ अवस्थी :— जाति अन्वेषण प्रथम भाग देखिये।

२५ अविनाशी :— यह एक ब्राह्मण जाति है आज कल तो ये नाम मात्र के अविनाशी रह गये हैं, परन्तु किसी काल में इन के पूर्व पुरुषा गण योग विद्या में निपुण हो कर अपने शरीर को अविनाशी वत् कर लेते थे, तदर्थ यह समुदाय अविनाशी ब्राह्मण करके प्रसिद्ध हुआ।

२६ अशूद्रप्रतिग्राही :— इस ब्राह्मण समुदाय का कुछ विवर्ण जाति अन्वेषण में लिखा जा चुका है, तदरिक्त किसी काल में यह जाति शास्त्र धारानुसार शूद्रों के यहां का दान पुण्य प्रतिग्रह न लेती थी इस से इन्हें "अशूद्र प्रतिग्राही" की पदवी मिली थी परन्तु आज कल इस का अर्थ विपरीत देखने में आया है जो लोग शूद्र व अति शूद्रों के यहां का प्रतिग्रह दान लेते हैं वे अशूद्र प्रतिग्राही कहाते हैं।

२७ अष्टसहस :—यह द्रविड़ स्मार्त ब्राह्मणों का एक भेद है, इन का विवर्ण कुछ जाति अन्वेषण में भी लिख आये हैं अन्य द्रविड़ ब्राह्मणों की अपेक्षा ये लोग प्रायः सुन्दर होते हैं, बंगाल के शाक्तिकों की तरह ये लोग अपनी आंखों के भौंहों पर गोपी चन्दन का व मलिया गिरी चन्दन का एक गोल सा चिन्ह लगाते हैं।

२८ अटवंश :—जाति अन्वेषण प्रथमभाग के पृष्ठ १०२ में लिख आये हैं।

२९ अष्टकुली नागर :-यह नागर ब्राह्मणों की जाति का एक भेद वड़नगरा सम्प्रदाय में से हैं, नागर ब्राह्मणों में अष्टकुली नागर बड़े प्रतिष्ठित समझे जाते हैं, इन आठ कुल के आदि ऋषि-१ कश्यप २ कौंडिन्य ३ औशनस ४ शार्कव ५ द्विप ६ वैजाप ७ कापिष्ठल और

८ ऋषि थे, इन्हीं आठों के वंशज अष्टकुली नागर कहाते हैं तथाः-

**तत्र ये नागराः सर्वे वेद वेदांग पारगाः ।**
**श्रेष्ठास्तेष्वपि संप्रोक्ताः श्रेष्ठाश्चाष्टकुलोद्भवाः ॥ २१ ॥**

अर्थात् यह उस समय का है जब कि इन्द्र हाटक क्षेत्र में यज्ञार्थ उत्तम ब्राह्मणों की खोज में थे तब शौनक ने विष्णु से पूछा है कि सर्वोत्तम ब्राह्मण कौन है ? " इस प्रश्न के उत्तर में विष्णु ने कहा है कि वहां जो नागर ब्राह्मण हैं वे सब वेद वेदांग में पारंगत हैं तथा उन में भी जो अष्टकुली हैं वे अतिश्रेष्ठ हैं । आनर्त नामक राजा इन अष्टकुली ब्राह्मणों को दान देते थे अतः ये लोग हिमालय पर्वत पर जाकर उग्रतप करने लगे तब विष्णु की आज्ञा से इन्द्र इन ब्राह्मणों को लेने गये, तब उन ब्राह्मणों ने कहा कि वहां ही बहुत नागर ब्राह्मण हैं तब इंद्र कहने लगे कि :-

**तत्र ये ब्राह्मणा सन्ति वेद वेदांग पारगाः ।**
**अपिते द्वेष संयुक्ताः शेषास्ते त्यक्त सौहृदाः ॥३४॥**

अर्थात् वहां वेद वेदांग में पारंगत नागर ब्राह्मण तो हैं पर वे द्वेषी हैं और उन में से कुछ लोग दयाहीन हैं, इसलिये तुम ही मेरे लिये अति योग्य हो, वे सब ब्राह्मण इंद्र के साथ आकर एकोदिष्ट श्राद्ध कराने लगे और सम्पूर्ण प्रकार से सम्मलित हुये कर्मनिष्ठ ब्राह्मण अष्ट कुली नागर कहाये ।

३० असोप :—यह एक मारवाड़ प्रान्तस्थ दाहिमा ब्राह्मण जाति का भेद है, दाधीच ब्राह्मण समुदाय का ही यह एक कुल नाम है । इस वंश के लोग जोधपुर राज्य में विशेष रूप से हैं तथा वहां ये प्रतिष्ठित ब्राह्मण माने जाते हैं ।

३१ अहमदावादी श्रीमाली :—जाति अन्वेषण प्रथम भाग पृष्ठ १०३ में लिख आये हैं ।

३२ अहिवासी ;—यह एक ब्राह्मण जाति है युक्त प्रदेशान्तर्गत व्रजमण्डल में ये लोग विशेष रूप से हैं, इनका फैलाव व गांवों के गांव अलीगढ़ के ज़िले में तथा अलवर व भरतपुर रियासतों में बहुत है, व्रजमण्डल में इस जाति की प्रतिष्ठा व जाति पद अन्य तीर्थ पुरोहित व तीर्थ पंडों की अपेक्षा उच्च है क्योंकि युक्त प्रदेशीय हिन्दू जाति का लोकमत सर्वथा सर्वदा इस जाति के सम्बन्ध में हमें ऐसा ही मिला है, हमने अपनी जाति यात्रा के भ्रमण में मथुरा व आगरा आदि आदि कई ज़िलों में इस जाति के सम्बन्ध में अन्वेषण किया तो इन के उपरोक्त विषय का लोकमत सर्वत्र प्राप्त हुवा, यह जाति गौड़ ब्राह्मण सम्प्रदाय के अन्तर्गत है, इन का मुख्य स्थान मथुरा जी के ज़िले में बलदेव जी है, तहां के ये लोग अधिष्ठाता अर्थात् मुख्य अधिकारी हैं, आनंद कंद श्री-कृष्ण चन्द्र भगवान के बल्देवजी भाई थे, तिन ही की याद में यह बल्देव तीर्थ प्रसिद्ध हुवा, बलदेवजी का दूसरा नाम दाऊ जी भी है, अतएव आज कल भी यात्री लोग कोई दाऊजी कहते हैं तो कोई बलदेव जी कह कर इस तीर्थ को पुकारते हैं; यहां बलदेव जी का बड़ा विशाल मंदिर है और इस मंदिर के नीचे बादशाही ज़माने से पांच ग्राम मुआफी में हैं जिन के नाम १ छिबरड २ खेहरा ३ अरतोनी ४ नूरपुर और ५ बलदेव हैं इन की आय हज़ारों रुपये वार्षिक की है, इस मंदिर के पुजारी सब से प्रथम स्वर्गवासी पं० कल्याण प्रसाद जी थे, उन्हीं के वंश में यहां आज इस जाति के चारसौ घर हैं और सब ही उस आजीविका के भागीदार हैं, पूर्वकाल में इस जाति की विद्या स्थिति अच्छी थी, परंतु मुसलमानी राज्य में संस्कृत विद्या का लोप सा होकर व हिंदु धर्मानुसार शिक्षा का सुप्रबंध न होने के कारण इन में विद्या का अभाव होगया, तथा इन के आजीविका विशेष होने के कारण ये आलसी भी होगये थे, परंतु अब इन लोगों ने बलभद्र नाम्नी एक संस्कृत पाठशाला भी चला रक्खी है, तहां उस पाठशाला के उपाध्याय पं० जयदेव प्रसाद जी सनाढ्य एक सुयोग्य संस्कृतज्ञ विद्वान हैं, वर्तमान काल में शास्त्रोक्त आचार विचार व सदाचारों के नियमों की प्रायः ब्राह्मण जाति में शिथिलता है परंतु इन के साथ हम अपने कुछेक घंटों के सहवास से ही कह सक्ते हैं कि इनके आचार अनुकरणीय हैं, अतः भगवान इन्हें चिरायु करे।

भाषा के एक इतिहास लेखक ने इस जाति के विषय यह लिखा है

नाम निर्णय

कि "ये सर्पवंशी थे, क्योंकि अहि नाम सर्प का है अतः सर्प वंशी अहि वंशी कहाये जिस का बिगड़ कर अहि वासी बन गया।" परन्तु यह मनघड़ंत अटकल पच्चू विचार ठीक नहीं, क्योंकि यदि यह लेखक विद्वान होता तो उसे श्रीमद्भागवत दशमस्कन्ध पूर्वार्द्ध के अध्याय १७ वे में तथा ब्रह्मवैवर्त पुराण श्रीकृष्णखंड अध्याय १६ में तथा विष्णु पुराण में भी इस ब्राह्मण जाति के विषय बहुत कुछ विवरण मिल जाता, अतएव शास्त्र विरुद्ध होने से उपरोक्त लेख ग्राह्य नहीं हो सका। हम ने उपरोक्त शास्त्रोक्त आख्यायिका को श्लोक बद्ध यहां स्थानाऽभाव से न लिखकर उस का केवल सारांश व सूक्ष्म भाव ले लिया है।

संस्कृत व्याकरणानुसार अहिनाम सर्प का है, तथा वस निवासे

अहिवासी ब्राह्मण

धातु से भाव में घञ प्रत्यय करने से वास शब्द बनता है, जिस की व्युत्पत्ति इस प्रकार से होती है कि "अहेर्वासः अहिवासः। अहिवासोऽस्यास्तीति अहिवासी" अर्थात सर्प का वास जिस के समीप है वह अहिवासी है, गरुड़ जी से डरे हुये कालिय सर्प ने इस जाति के पूर्व पुरुषा महात्मा सौभरि ऋषि जी के समीप में आकर वास किया था और सर्पराज को उपरोक्त ऋषि जी के आश्रम के अतिरिक्त कहीं आश्रय ही नहीं मिला था, अतएव उस स्मृति में सौभरि ऋषि का दूसरा नाम अहिवासी प्रसिद्ध हुआ, तदर्थ को लिये हुये ही इन की सन्तान अहिवासी ब्राह्मण कहायी। इस ही भावार्थ को लेते हुये एक प्रसिद्ध विद्वान अपने ग्रन्थ के पृष्ठ ७२ में अहिवासी ब्राह्मणों का वर्णन करते हुये लिखते हैं कि :-

**Ahiwasi** :- The name is derived from *Ahi* "The dragoon" and *Was* "Dwelling. Their legends connects them with the Rishi Saubhari.

अर्थात् यह नाम दो शब्दों के योग से बना है अहि नाम सर्प का तथा वास नाम वासस्थान का है अतएव सर्प के वासस्थान का नाम

अहिवास हुआ और तिस के समीप वास करने वाले ब्राह्मण अहिवासी कहाये।

मिस्टर Dowson डौसन साहब अपनी क्लासीकल डिक्सनेरी में लिखते हैं कि:-When Saubhari Rishi retired to the forest was wrath, because birds used to drop offial and dirt upon his hermitage, at that time *Garud* engaged in one of his periodical attacks on the snakes. The great dragoon Ahi or Kaliya rescued the Victims and Garud in his wrath pursued him. Ahi sought everywhere for protection and at last he was advised to seek refuge with the Rishi Saubhari.

अर्थात् जब सौभरि ऋषि तपस्यार्थ वन को गये तब उन की कुटि पर पक्षीगण कूड़ा कर्कट व अन्य अपवित्र वस्तुवें डाल जाया करते थे, तिस से ऋषि जी बड़े दुःखी हुये, उन ही दिनों में गरुड़ जी उन पक्षीगणों को रोकने के लिये नियत किये गये, परन्तु कालिया नामक सर्प उन को बचाया करता था; तिन गरुड़ जी का स्वाभाविकी क्रोध उस पर बढ़ा और वह जीवनरक्षार्थ इधर उधर भगा भगा फिरता रहा और अन्त में महात्मा सौभरि ऋषि ने उसे आश्रय दिया, तिस से सौभरि ऋषि की सन्तान अहिवासी कहायी।

मिस्टर R. Burn I. C. S. Census Superintendant आर वर्न आई० सी० एस० सुपरिण्टेन्डेन्ट मनुष्य गणना विभाग युक्त प्रदेश ने अपनी रिपोर्ट के पृष्ठ २४८ में इस जाति को उच्च ब्राह्मण समुदाय में लिखा है यद्यपि प्रायः देखा जाता है, व जनश्रुति द्वारा सुना भी है तथा भट्टाचार्य्य जी सरीखे प्रसिद्ध अनुभवी विद्वानों का ऐसा मत है कि प्रायः तीर्थ पुरोहित व पंडे लोग सब से सब प्रकार का, दान प्रतिग्रह लेते रहते हैं, अतः वे नीच श्रेणी के ब्राह्मण माने जाते हैं, परन्तु यह जाति युक्त प्रदेश की बावन कमैटियों द्वारा सर्व सम्मति से उच्च ब्राह्मण समुदाय की श्रेणी में मानी गयी है और यह ही कारण है कि विशेष छान बीन के पश्चात् सन् १६०१ की मनुष्य गणना के सुपरिन्टे-

न्डेन्ट साहब ने इन्हे अन्य नीच श्रेणी के ब्राह्मणों के साथ न लिख कर उच्च श्रेणी के ब्राह्मणों में बहु लोकमतानुसार लिखा है, क्योंकि अन्य साधारण तीरथ पंडों व पुरोहितों में तथा इन में एक बड़ा अन्तर है ।

मिस्टर C. S. Growse सी. एस. ग्राउज़ भूतपूर्व कलेक्टर मथुरा ने मथुरा memoir मेमायर में इन लोगों को ब्राह्मण समुदाय में माना है ।

मिस्टर Whiteway अपनी सेटलमेन्ट रिपोर्ट के पृष्ठ २७२ में लिखते हैं कि ये लोग अपने पहिराव से तत्काल पहिचान लिये जाते हैं अर्थात् पुरुषों के मस्तक पर एक विशेष रूप की पगड़ी से तथा स्त्रियें अपने मस्तक के बालों से पहिचानली जाती हैं, पूर्व काल में ये लोग बड़े बड़े व्यापार भी करते थे राजपूताने से नमक गाड़ी बैलों द्वारा लेजाना तथा पश्चिमोत्तर देश से गुड़ शक्कर राजपूताने को लेजाना, इन का एक मुख्य धन्दा था, परन्तु रेल के फैलाव के कारण यह व्यापार बन्द हुआ और आज कल इन का मुख्य धन्दा पठन पाठन व ब्राह्मण वृत्ति तथा कृषी का रहगया । मथुरा के ज़िले में दाऊ जी के प्रसिद्ध मन्दिर बल्देव जी के पंडे भी येही हैं ।

महात्मा सौभरि ऋषि.

Hindu Saint
Mahatma Saubhari Rishi.

Lakshmi Art, Byculla, Bombay.

पाठक ! सन्मुख चित्र में जिस सौम्य मूर्त्ति के आप दर्शन कर रहे हैं वे ब्रह्मवंशे शिरोमणि ब्रह्मर्षि सौभरि ऋषि हैं, आप के उग्रतप तथा आप के ब्रह्मतेज व ध्यानावस्थिता की साक्षात चित्रमयी मूर्ति के दर्शनों से आज हम अपने को परम पावन मान्ते हैं, योग स्थिति के जिस आसन में आप विराज रहे हैं उस परम पुनीत दर्शन से सतयुग की याद आजाती है कि उस समय में व इस समय में कितना अन्तर हो गया है ? आप ही आदिवासी ब्राह्मणों के पूर्वज हैं, यद्यपि आप का चित्र जो हमें प्राप्त हुआ वह पूर्वकाल के किसी अनुभवी शिल्पी की हस्त लिपिका है उस ही को हम ने वर्त्तमान यन्त्रों में छपवाकर प्रकाशित किया है, इस प्राचीन हस्तरचित चित्र के लिये पं० परमानन्द जी वैद्य व पं० दानीराम जी शर्म्मा तथा पं० जयदयाल जी शर्म्मा अध्यापक बलभद्र संस्कृत पाठशाला बल्देव के हम बड़े कृतज्ञ हैं, कि जिन्हों ने यह अलभ्य चित्र हमें देने की कृपा कियी ।

ब्रह्मर्षि जी का आश्रम वृन्दाबन के समीप सुनरख नाम ग्राम में जमुना जी के तटपर था, ये महात्मा जी यमुना जल में निमग्न होकर हज़ारों वर्ष तपस्या करते रहे थे, एक समय उस ही जल में एक मच्छ व मछली दोनों सम्भोग कर रहे थे उस ही समय महात्मा सौभरि जी की दृष्टि अकस्मात उन पर पड़ी और उन के मन में भी गृहस्थी होने की आकांक्षा उत्पन्न हुयी और तदनुसार महात्मा जी तप से निवृत हो कर चक्रवर्ती राजा मान्धाता के यहां न्याय याचना करने के लिये पधारे मान्धाता राजा इन की अति वृद्ध अवस्था देख कर के बड़े धर्म्म संकट में पड़ा, कि ऐसे जर्जर वृद्ध ऋषि को कौन कन्या दूं ? अन्त को ऋषि का निरादर न हो ऐसा समझ कर राजा बोला कि भगवन् ! अन्तःपुर में ५० कन्यायें हैं उन में से जो आप को पसन्द करेगी उसे ही मैं आप की सेवा में अर्पण कर दूंगा । इस उत्तर का मर्मांश ऋषि स्वयमेव अपने योगबल से जानकर मार्ग में ही कलेवर पलट कर एक नवयोवन सुन्दर युवा बालक होगये, अतः अन्तःपुर में पहुंचतेही पचासों की पचासों कन्यायें, उन महात्मा की मनोहर मूर्त्ति पर मुग्ध होकर विवाह करने को उद्यत होगयीं, तद्वत राजा ने अपनी पचासों कन्याये उन महात्माजी को

व्याहदियीं, महात्माजी उन कन्यायों को ले अपने आश्रमपर आकर विश्व-कर्माजी से उन सब पत्नियों के लिये नाना भांति के सुन्दर सुंदर महल व आभूषणादि बनवाकर गृहस्थ धर्म पालन करने लगे, उन पचासों कन्याओं से महात्मा सौभरि ऋषि ने ५ हज़ार पुत्र उत्पन्न किये और कुछ काल इस तरह गृहस्थी रह कर अंत कों फिर आप को गृहस्थाश्रम से वैराग्य उत्पन्न हुआ और तत्काल ही सब कुछ त्याग के वनको चले गये और पुत्रों को वहां छोड़ गये तथा उन की स्त्रियें भी उनहीं के साथ वन को चलीं गयीं और सब के सब वहां तपस्या करने कराने लगे उन के जो पांच हज़ार पुत्र आश्रम पर रह गये थे वे सब के सब अहिवासी ब्राह्मण नाम से प्रसिद्ध हुये जिस की आख्यायिका श्रीमद्भागवता नुसार इस प्रकार से है।

रमणक नाम का एक द्वीप था तहां अनेकों प्रकार के सर्पों का समूह था चूंकि गरुड़ व सर्प का स्वाभाविकी वैर है तदनुसार प्रायः गरुड़ जी उस द्वीप में जाकर सर्पों को खाडाला करते थे इस दुःख से वहां का सर्प समुदाय दुःखित होकर सब के सब सर्प ब्रह्माजी के समीप गये और अपना दुःख ब्रह्माजी से कह सुनाया, इस पर ब्रह्माजी ने यह निश्चय किया कि प्रत्येक पर्व पर एक एक सर्प इन की भेट कर दिया करो एक पर्व के दिन ऐसा हुआ कि उस गरुड़जी की भेट को एक कालिया नाग खागया इस कृत्य को देख कर गरुड़जी बड़े क्रोधा-यमान हुये और दोनों में बड़ा युद्ध चला फिर वह कालिया सर्प गरुड़-जी से अति पीड़ित होकर महात्मा सौभरि ऋषिजी के शरण में आकर उस ही आश्रम में बसने लगा, अतः उस परोपकारी कृत्य की स्मृति में सौभरि ऋषिजी का नाम अहिवासी हुआ।

इन ब्राह्मणों का गोत्र काश्यप बताया गया है इन के प्रवर तीन हैं १ वत्सार, २ नैवध्रु, और ३ कश्यु। इन का वेद ऋग्वेद, शाखा आश्वलायन, शिखा दक्षिण और सूत्र कात्यायन है।

गोत्र प्रवर आदि

इन की अल्ल व भेद सब तो ७२ हैं परन्तु उन में अभी तक ६४-का पता लगा है जिन में से कई अल्ल तो गांवों के नाम से हुयी जान पड़ती हैं तो कई अपने उत्तमकर्म्मों से यथा :-

| | | |
|---|---|---|
| १ तगारे | २३ औरंवले | ४५ ब्योहैय्या |
| २ भटेले | २४ बलरावत | ४६ भदूरिया |
| ३ रमैय्या | २५ कुरकट | ४७ वाधतना |
| ४ सोती | २६ बरसानिया | ४८ रितवार |
| ५ गोदाने | २७ कुम्हरिया | ४९ सिरोलिया |
| ६ दीघिया | २८ पचोरी | ५० करोतिया |
| ७ काठ | २९ इटोरिया | ५१ किलकिले |
| ८ काकर | ३० जरूले | ५२ पीढ़वार |
| ९ निकुते | ३१ वादर | ५३ गलजीते |
| १० सिहैया | ३२ नालोठिया | ५४ अभैय्या |
| ११ वर्गला | ३३ भारे | ५५ गलवले |
| १२ दुरकी | ३४ बुंदावलिया | ५६ रोसरीया |
| १३ पलावार | ३५ दामर | ५७ विसदे |
| १४ तसीये | ३६ भुरक | ५८ ठगपुरिया, |
| १५ सेथरिया | ३७ चोचदीया | ६० ओगान |
| १६ पलिहा | ३८ सतीया | ६१ साथिया |
| १७ परसैया | ३९ कारिया | ६२ डडरोलिया |
| १८ सिकरोरिया | ४० मावड़ | ६३ नायकवार |
| १९ गुधेनिया | ४१ टिकुलिहा | ६४ सोहार |
| २० वहरांच | ४२ लामे | ६५ पाडे |
| २१ नन्दीसरिया | ४३ बंटाढार | |
| २२ जैंतिया | ४४ पधान | |

---

नोट :-जाति अन्वेषण प्रथम भाग में इस जाति को हमने नागवासी ब्राह्मण लिखा था परन्तु शोधक ने यह समझकर कि नागवासी ब्राह्मण तो कहीं सुनने में नहीं आये, हां नागवंशी क्षत्रिय तो होते हैं ऐसा समझ कर शोधक ने नागवासी ब्राह्मण के स्थान में नागवंशी क्षत्रिय कर दिया था।

Ahiwasi Vanshmani Pandit Shridhar Sharma Vaidya Raj Buldeo (Muttra.)

आहिवासी वंशमणि पं. श्रीधर शर्म्मा वैद्यराज, वल्देव ( मथुरा. )

लक्ष्मी आर्ट, मायखळा, मुंबई.

प्रिय पाठक ! सम्मुख जिस चित्रको आप देखरहे हैं वह अहिवासी वंश भूषण श्रीमान् पण्डित श्रीधरजी शर्म्मा वैद्यराज का है, आप का शुभ जन्म वृजमण्डलान्तर्गत प्रसिद्ध तीर्थ बलदेव जी में ज्योतिर्विद पंडित दयाकृष्ण जी राजवैद्य के यहां मिती पोष शुक्ल १५ बुधवार सम्वत १८९३ को हुआ था, आप के पिता ज्योतिर्विदजी दुर्दैव वश आप को एक ९ वर्ष का बालक छोड़ कर सम्वत १९०२ में इस असार संसारको सदा के लिये परित्याग करके चल बसे थे, उस समय आपको साधारणसाही विद्याभ्यास था परन्तु आप एक समझदार बालक थे यद्यपि पितृकष्ट से सब कुछ भार आप पर आपड़ा था तथापि विद्याग्रहण की एक प्रबल आकांक्षा आप के चित्त में थी तदनुसार कुछ काल में ही परम वैश्नव महात्मा सुखरामदासजी से आपने स्वल्प काल में ही व्याकरण तथा साहित्य ग्रन्थ पढ़ कर के पूर्ण योग्यता प्राप्त कर लियी थी।

सम्वत १९०७ में जब आप १४ वर्ष के थे आपका पहिला विवाह हुआ था, इस पहिले विवाह से आप के एक पुत्र उत्पन्न हुआ था. परन्तु उस स्त्री का देहान्त होगया तदनन्तर आप को दूसरा विवाह करना पड़ा आप को वैद्य विद्या भी सीखने की बड़ी आकांक्षा थी तदनुसार आप ने महाबन में आयुर्वेद चिकित्सा शिरोमणि पण्डित ज्वालानाथ जी से चरक शुश्रुत और वागभट्टादि वैद्यक ग्रन्थ पढ़े और उन के सत्संग से वैद्यक में पूर्ण योग्यता प्राप्त कर लियी और काल ज्ञान तथा अरिष्ट विज्ञान में आप ने बड़ा भारी अनुभव प्राप्त कर लिया था जिस से आप को दूर दूर से चिकित्सार्थ बुलावे आया करते थे। एक समय छत्तीसगढ़ राज्यान्तर्गत किला कांकेर के राजा नरहरिदेव जी के असाध्य रोगी होजाने से उन की चिकित्सार्थ बुलावा आया और आप वहां पधारे सम्पूर्ण वैद्यों में आप का निदान सर्वोपरि रहा क्योंकि वहां आप को अन्य वैद्यों के साथ शास्त्रार्थ भी करना पड़ा था जिस से आप का ही पक्ष प्रबल रहा था और उस समय लोगों ने आप को पीयूषपाणि कह कर सम्बोधन किया था आप की स्वाभाविकी प्रकृति में आर्द्रता व उदारता विशेष रूप से भरी थी तदनुसार आप प्रायः गरीबों को

धर्म्मार्थ औषधि प्रदान व इन की चिकित्सा मुफ्त किया करते थे तथा आप की कमाई का विशेष भाग प्रायः धर्म्मार्थ औषधि प्रदान में ही जाता था, आप वल्लभाचार्य्य सम्प्रदाय के श्रीवैश्नव थे, आप की दृष्टि सदा परमार्थ पर ही रहा करती थी। आप के इस यश को सुन कर प्रायः रियासतों से बुलावे आया ही करते थे जिस प्रभाव से कोटा व बूंदी आदि रियासतों में आप को स्थायी रूप से मिली हुयी आजीविकायें आज तक विद्यमान हैं, आप को सदैव ही अपनी स्वजात्युद्धार व कुरीति निवारण की बड़ी प्रबल चिन्ता बनी रहती थी आप ही के सद्-उद्योग से आप की स्वज्ञाति में अनेकों कुरीतियों का मूलोच्छेद होकर सुरीति प्रचार हुआ था तदर्थ आप को धन्यवाद है, आपने अपनी जाति में विद्या का अभाव देख कर अपने भ्रातृवर्गों से अनुरोध करके बलभद्र नामक संस्कृत पाठशाला स्थापित करायी, आप जैसे योग्य वैद्य थे तैसे ही आप धर्म्मशास्त्री भी थे आप की विद्या की प्रशंसा सुन कर दूर दूर से विद्यार्थी गण इन के पास पढ़ने को आया करते थे आप ने अपने औषधालय में एक पुस्तकालय भी स्थापित किया था आप कोटे में गोस्वामी श्रीरघुनाथलालजी की चिकित्सा करने गये थे तभी आप का स्वास्थ्य विगड़ गया था तहां से आकर कुछ ही दिनों के पश्चात सम्वत १९६२ के मार्गशिर कृष्ण ५ को मध्यान्होत्तर हरिस्मरण करते हुये ७० वर्ष की अवस्था में परलोक गमन कर गये आप के पुत्र भी यथा नाम तथा गुण के सदृश हैं अर्थात् आप के पुत्रों में से श्रीयुत पं० परमानन्दजी ने अपनी वैद्यक विद्या व धर्म्मार्थ गरीबों की चिकित्सा तथा विना मूल्य औषधि प्रदानता के कारण लोगों को अपने पिताजी के वियोग दुःख को भुलादिया है आप भी पिताजी के सदृश ही रियासतों में प्रायः चिकित्सार्थ जाते रहते हैं, आगरा जिले की सेमरा रियासत के महामान्य ताल्लुकेदार राय बहादुर शाह दुर्गाप्रसाद जी सरीखों के यहां के Family Doctor घरू वैद्य आप ही हैं, आप की देश हितैषिता व स्वजाति सेवा के भावों को जान कर हम आप की मंगल कामना के लिये प्रार्थना करते हुये आप से आशा करते हैं कि भविष्यत में आप के सुकार्य्यों की और भी कीर्त्ति सुनने का सावकाश हमें मिलेगा तो अन्य किसी ग्रन्थ में हम विशेष लिखने का उद्योग करेंगे। ओ३म् शम्!

३३ अवदीच्य :—यह एक ब्राह्मण जाति है कहीं ये औदीच्य कहाते हैं तो कहीं उदीच्य कहाते हैं अतएव इन का विवर्ण औदीच्य प्रकरण में लिखेंगे तहां देखलेना चाहिये हां जाति अन्वेषण प्रथम भाग के पृष्ठ १३६ में भी लिख आये हैं तिस के अतिरिक्त इन का विवर्ण इस ग्रन्थ में मिलेगा।

---

## पृष्ठ १३० की जाति नं० ३ का पुनरुत्थान।

३ अंग्रभिक्षु :—यह एक ब्राह्मण जाति है, इस जाति के विषय में जाति अन्वेषण प्रथम भाग के पृष्ठ ८५ में बहुत कुछ लिखा जाचुका है परन्तु वह सब प्रचलित लोकस्थिति व लोकमत के अनुसार लिखा गया था, पर उस लोकमत व शास्त्र सम्मति में पृथिवी आकाश का सा भेद है, अतएव जिन्हें लोकाचार के अनुसार मानना हो वे हमारे पूर्व कृत निर्णयानुसार मानें और जिन्हें शास्त्र मत पर निश्चय हो तब इन के सम्बन्ध में शास्त्र मत ऐसा मिला है कि :—

ये लोग श्रोत्रिय वेदपाठी ब्राह्मण के वंशज हैं अतएव इन्हें किसी ने महाब्राह्मण, किसी ने महापात्र, किसी ने कट्टहा जिस का अपभ्रंश कट्ट—याह है, देश भाषा के कारण इस ब्राह्मण जाति के नाम अग्रदानी, आचारी और अग्रभिक्षु भी हैं, अतः ये सब नाम परस्पर पर्य्यायवाची हैं, शास्त्रों में एकादशा श्राद्धादि में वेद पाठी श्रोत्रिय ब्राह्मणों को ही बुलाना लिखा है क्योंकि वे पंक्तिपावन * ब्राह्मण माने गये हैं यथा :—

**एकादशेभ्यो विप्रेभ्यो दद्यादेकादशेहनि।**

निर्णयसिंधौ भविष्य

अर्थ एकादशा के दिन ग्यारह ब्राह्मणों का दानादि से सत्कार करना चाहिये।

---

* इस ही ग्रन्थ के पृष्ठ ४३ में पंक्तिपावन ब्राह्मणों के अनेकों प्रमाण दिये जाचुके हैं तहां देख लेना।

पुनः और भी देखिये।

एकादशसु विप्रेषु प्रेतमावाह्य भोजयेत्।
तत्राधाय च शय्यादि दद्यादाद्यमिति स्मृतम् ॥

निर्णय सिंधौ।

अर्थ :-उन एकादश ब्राह्मणों में पूर्व से बुलाये हुये ब्राह्मण को प्रेत का आह्वाहन करके भोजन करावे और उस ही को शय्यादानादि देवे।

पुन :-

मृतक दान गृहीतान्नां प्रज्ञानां न प्रतिग्रहः।
विषशीताप हौ मन्त्रः वन्हि किं दोष भाजनौ ॥

गरुड़ पुराण प्रेतकल्पे।

अर्थात् मृतक का दान लेने वाले विद्वानों को पाप नहीं लगता है क्योंकि वे विद्वान लोग अपने तपयज्ञ द्वारा शुद्ध होते रहते हैं, जैसे विच्छू सर्प किसी को काट खाय और ओझे लोग अपने मन्त्र से उस विष को उतार देते हैं तो उस से वह मन्त्र दूषित नहीं हो जाता है, तैसे ही शीत को हरण करने के लिये अग्नि काम में लियी जाती है पर उस के शीत निवारण कर देने से वह अग्नि दूषित नहीं होती है तैसे ही ब्राह्मण भी मृतक दान ले चुकने के उपरान्त प्रायश्चित से शुद्ध ही हो जाता है क्योंकि प्रेत कर्म व श्राद्धादि में दान केवल पात्र को ही देना लिखा है अतएव यह ब्राह्मण जाति पात्र ही नहीं समझी गयी थी वरन "महापात्र" कही जाकर सम्बोधन कियी गयी थी. यथा :-

पात्रे दत्ता खगः श्रेष्ठः अहन्यहनि वर्द्धयेत् ॥
अपात्रे साच गोर्दत्ता दातार नरकं नयेत् ॥

गरुड़ पुराणे।

अर्थ-भगवान गरुड़ जी से कहते हैं कि मृतक के अर्थ जो गोदानादि देने हों वह पात्र देख कर देना चाहिये क्योंकि पात्र ब्राह्मण को दिया हुआ दान प्रति दिन बढ़ता रहता है वह ही कुपात्र को दिया हुआ दान दाता को नर्क में पहुंचा देता है।

अतएव इन प्रमाणों के आधार से भी यह निश्चय होता है कि पूर्व काल में जो ब्राह्मण वेदज्ञ कर्म काण्डी श्रोत्रिय थे वेही महापात्र, महाब्राह्मण आदि शब्दों द्वारा सन्मानित किये गये थे।

राजपूताना और मुम्बई प्रदेश में विद्वानों का ऐसा मत है कि यह जाति द्रोणाचार्य्य के वंश से है तिस ही के उपलक्ष्य में ये लोग आचार्य्य कहाते हैं और आचार्य्य कहाते कहाते भाषा भाषियों द्वारा आचारी कहाने लग गये।

यह हम प्रायः देखते रहते हैं कि प्रत्येक मृतक कर्म्म में बड़े बड़े कर्म्म काण्डी श्रोत्रिय ब्राह्मण विद्वान बुलाये जाते हैं इस ही पृथा के अनुकूल यह जाति अपनी उत्पत्ति से उत्तम ब्राह्मण सिद्ध होती है, क्योंकि पूर्व काल में इन के पूर्वज बड़े बड़े वेदज्ञ थे तदर्थ मृत पितृ की सद्गति के अर्थ श्रोत्रिय ब्राह्मण ही बुलाये जाते थे व बुलाये जाते हैं परन्तु समय के हेर फेर से वेही श्रोत्रिय वंशज निरे मूर्ख से रह गये इस लिये उन में से विवेक बुद्धि भी जाती रही जिस से लोक मत में उन के प्रति घृणा उत्पन्न होगयी और वे नीच जाति माने जाने लगे।

परन्तु धर्म्म शास्त्र में ऐसा लिखा है कि :-

अग्र्याः सर्वेषु वेदेषु सर्व प्रवचनेषुच।
श्रोत्रियान्यय जाश्चैव विज्ञेयाः पंक्ति पावनाः॥

मनु० अ० ३ श्लो० १८४

अर्थात् जो कुल परम्परा से वेद वेदांगों के ज्ञाता श्रोत्रिय विद्वान हैं वे पितृ कर्म्मों में आने के अधिकारी, पंक्तिपावन ब्राह्मण कहाते हैं इस आधारांनुसार जब हम देखते हैं कि परम्परा से मृत कर्म्मों में ये ब्राह्मण बुलाये जाकर अन्न, भोजन, वस्त्र, आभूषण व धन धान्य से चारों वर्णों द्वारा सन्मानित किये जाते हैं तो ये श्रोत्रिय वंशज उत्तम ब्राह्मण अवश्य हैं ऐसा निश्चय होता है यह दूसरी बात है कि सर्वसाधारण लोग इन्हें पतित ब्राह्मण बतलाते हैं परन्तु जब उत्तमोत्तम कोटि तक के ब्राह्मण विद्वान भी एकादशा आदि श्राद्धों में इन ब्राह्मणों को सम्पूर्ण प्रकार से पूजते हैं तो इस परम्परा को देखकर निश्चय होता है कि निस्सन्देह यह ब्राह्मण जाति उच्चतम कोटि के ब्राह्मण वंश में से है, यदि यह शंका

कियी जाय कि अब तो ये लोग प्रायः निरक्षर मूर्ख समुदाय हैं तब श्रोत्रिय वंशज कैसे ? इस का उत्तर तो यह है कि आजकल की तो दशा ही विचित्र है अर्थात् आजकल जो वंश वेदपाठी व श्रोत्रिय कहाते हैं वेही केवल नाम मात्र के वेदपाठी व श्रोत्रिय रहगये हैं और उन में लाखों में से दो चारही यथार्थ श्रोत्रिय होंगे तब ऐसी दशा में यह शंका केवल इन पर ही आरोपित नहीं हो सक्ती ।

जैसा हम ऊपर लिख आये हैं इन के नाम अग्रभिक्षु, अग्रदानी, महाब्राह्मण, महापात्र, कष्टहा ( कट्टया ) और आचारी आदि आदि हैं तो इन नामों वं पदवियों के अर्थों से ही प्रतीति होता है कि यथार्थ में पूर्वकाल में यह एक सर्वोच्च ब्राह्मण वंश था जिसके उपलक्ष्य में ऋषियों ने इस वंश को अन्य ब्राह्मणों की अपेक्षा महाब्राह्मण, अन्य दानपात्रों की अपेक्षा महापात्र, अन्यभिक्षुकों की अपेक्षा अग्रभिक्षु, अन्य दान ग्राहियों की अपेक्षा अग्रदानी और अपने मंत्र बल से मृतप्राणी की, तथा मृतप्राणी के जीवित कुटुम्बी जनों की आत्माओं को शान्ति देने और उन के कष्ट दूर करने के कारण यह जाति "कष्टहा" कह कर के भी सम्बोधन कियी गयी थी जिस का अर्थ कष्ट को दूर करने वाले के हैं इस ही शुद्ध शब्द का बिगड़ा हुआ रूप "कट्टया" है अतएव इन सब आधारों से यह जाति उच्च ब्राह्मण वंश में प्रतीति होती है ।

यदि इस जाति पर यह शंका हो कि ये लोग मृतक के दस दिन के भीतर ही सूतक में मृतक के घर के पदार्थ व धन धान्यादि लेते रहते हैं इस से यह जाति ब्राह्मण नहीं हो सक्ती ? इस का उत्तर यह है कि दान लेना केवल ब्राह्मण का कर्म्म है और जब परम्परा से बड़े बड़े ब्राह्मण विद्वान लोग इन्हें दान देते रहते हैं तब ये ब्राह्मण अवश्य हैं ऐसा निश्चय होता है, अशौच में दान लेने के लिये ऐसा प्रमाण मिलता है कि :—

आद्य श्राद्धमशुद्धोपि कुर्यादेकादशेहनि ।
कर्तुस्तात्कालि की शुद्धीरशुद्धयः पुनरेवसः ॥

निर्णय सिंधौ हेमाद्रौ शंखः

अर्थात् मृतक के कर्म्म काण्ड कराने के लिये यजमान की तात्कालिक शुद्धि हो जाती है और फिर उस कर्म्म के अनन्तर वह अशुद्ध होजाता है अतएव तात्कालिक शुद्धि हुये यजमान का दानादि लेना अनुचित नहीं जान पड़ता है।

Mr. William Crooke B. A. Late Collector writes.

मिस्टर विलियम क्रूक बी० ए० भूतपूर्व कलेक्टर फ़ैज़ाबाद अपने जाति अनुसन्धान ग्रन्थ के पृष्ठ ४०२ में लिखते हैं कि राजा दशरथ के स्वर्गवास हो जाने पर जिन ब्राह्मणों ने वशिष्ठ जी की आज्ञा से एकादशादि के दिन दानादि लिये थे उन्हें श्री रामचन्द्र जी ने महापात्र व महाब्राह्मण कह कर सम्बोधन किया था " तब से उन ब्राह्मणों का बंश आज तक कहीं महाब्राह्मण, कहीं महा पात्र, कहीं आचारी, कहीं अग्रदानी, कहीं कट्टयाह, कहीं अग्रभिक्षु और कहीं कुछ व कहीं कुछ कहा जाता है।

इस जाति में दानादि की आमद विशेष होने से आज कल प्रायः ये लोग निरक्षर भट्टाचार्य्य आल्सी हो गये हैं और अनेकों कुरीतियों का भी इन में प्रवेश होगया है अतः लोग उन्हें पतित ब्राह्मण ही मान्ते हैं। पंजाब में तो यह लोग गधे पर भी चढ़ते हैं * इस ही तरह अनेकों अन्य अन्य कुरीतियें भी हैं वह सब पूर्ण विवरण इस जाति के किसी योग्य पुरुष की फोटो के साथ सप्त खण्डी ग्रन्थ में देंगे।

३४ आचारी :—इस जाति के विषय में जाति अन्वेषण प्रथम भाग में लिखा जा चुका है तहां देख लेना।

३५ आचार्लु:—मदरास प्रदेश में यह एक ब्राह्मण जाति है मिस्टर आनन्दाचार्लु हाईकोर्ट के योग्य जज हैं, इस जाति के विषय जाति अन्वेषण प्रथम भाग में लिख आये हैं।

---

* देखो C. & W. C's C&T Page 403.

३६ आदिगौड़ः—यह गौड़ ब्राह्मणों में का एक मुख्य भेद है गौड़ सम्प्रदाय में जिन का गमना ऽऽ गमन दूसरे देशों में नहीं हुआ थे वस्तुतः गौड़ कहाये जाकर उन के नाम के आरम्भ में इस " आदि " संकेत को ऋषियों ने लगाया कि " आदि काल से गौड़ ब्राह्मण ये ही हैं " अर्थात् इनकी सृष्ट्युत्पत्त्यादि के समय से ब्राह्मण संज्ञायें बंधने के समय तक यह जाति अपरिवर्तनशील थी या यों कहिये कि जिन की स्थिति व कर्म्मादि में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं हुआ वे आदि गौड़ कहाये, पं० लक्ष्मणप्रसाद जी आचर्य्य ने हमें ऐसी सम्मति दियी कि " सृष्टि की आदि में जो ब्राह्मण थे वे आदि गौड़ कहाये थे अर्थात् जो सृष्टि की आदि से शुद्ध, सदाचारी, जितेन्द्रिय, शम, दम, दया युक्त थे वे आदि गौड़ कहाये। पं० शिवनारायण जी ने दम्भदर्पण पृष्ठ ५५ में लिखा है कि ऐसी किम्वदन्ति ( कहावत है ) कि " पहिले गौड़ पीछे और " अर्थात् सम्पूर्ण ब्राह्मण आदि गौड़ों से निकले हैं ऐसा सिद्ध होता है। पुनः—

आदिशब्दोपाधिदत्ता ब्रह्मणात्तु स्वयंभुवा ।
वेदोपि दत्तस्ते नैव ह्यादि गौड़स्तुतोमतः ॥ *

अर्थात् जिन गौड़ ब्राह्मणों को ब्रह्मा जी ने आदि में वेद पढ़ाया वे आदि गौड़ ब्राह्मण कहाये ।

प्राचीन काल से स्यमन्त पञ्चक राम ह्रद तीर्थ के तीर्थ पुरोहित भी गौड़ ब्राह्मण चले आ रहे हैं वे ही कुरुक्षेत्र वासी उपाधिधारी गौड़ दूर देशों में जाकर आदि गौड़ कहाये ।

अतएव आदि गौड़ ब्राह्मणों का आदि मुख्य स्थान कुरुक्षेत्र प्रसिद्ध हुआ, तिस के सम्बन्ध में ऐसा लेख मिलता है कि :—

ब्रह्मवेदिः कुरुक्षेत्रं पञ्चराम ह्रदान्तरम् ।
धर्मक्षेत्रं कुरुक्षेत्रं द्वादश योजनावधि ॥

महाभारते

* आदि गौड़ प्रदीपिका ।

भावार्थः-जहां परशुराम जी महाराज का स्थापित किया स्यमन्त पञ्चक तीर्थ स्थान है, अथवा जो कौरव पाण्डुवों के महाभारत युद्ध की पवित्र भूमि है उस को धर्मक्षेत्र व कुरुक्षेत्र भी कहते हैं जिस का आज कल का प्रसिद्ध नाम दिल्ली मंडल है अतएव सिद्ध हुआ कि दिल्ली मण्डल के रहने वाले आदि गौड़ ब्राह्मण हैं। लिखा है:-

ततोयुयुधिरे वीराः कुरु पाण्डु वसोमकाः।
कुरुक्षेत्रे तपःक्षेत्रे शृणुत्वं पृथिवीपते॥
महाभारत भीष्म पर्व अ० १ श्लो० २॥

भा०-वैशम्पायन जी बोले कि हे राजन्! तप प्रधान कुरुक्षेत्र में सोमवंशी कौरव पाण्डव वीर युद्ध करते हैं उन का वर्णन सुनो।

गौड़ किसे कहते हैं? इस प्रश्न का उत्तर जानना हो तो इस ही ग्रन्थ में गौड़ प्रकरण में लिखा है तहां देख लेना।

शास्त्रों में ऐसा लेख मिलता है कि:-

सारस्वत, कान्यकुब्ज, गौड़, मैथिल और उत्कल ये पंच गौड़ कहाये जब गौड़ ब्राह्मणों के पांच भेद देश भेद के कारण से हुये तब गौड़ों के नाम के पहिले आदि शब्द लगा कर "आदि गौड़" ऐसी संज्ञा कियी क्योंकि गौड़ तो उपरोक्त पांचोही हैं परन्तु जो आदि से गौड़ ही हैं वे आदि गौड़ कहाये जब कान्यकुब्ज देश के रहनेवाले कान्यकुब्ज (कन्नौजिये) सरस्वती के किनारे २ पंजाब के रहने वाले सारस्वत, गौड़ देश के रहने वाले गौड़, मिथला में के गौड़ मैथिल और आर्कट उड़ीसा की ओर के रहने वाले गौड़ उत्कल कहाने लगे तब कुरुक्षेत्र की ओर के रहने वाले गौड़ों की संज्ञा राजा जन्मेंजय ने "आदि गौड़" कियी विशेष रूप से ये ब्राह्मण दिल्ली प्रान्तर्गत राजपूताना व युक्तप्रदेश में हैं, राजपूताना के आदि गौड़ प्रायः तम्बाकू पीने वाले हैं, तथा उन में वेद के अध्ययन का प्रचार बहुत कम हैं, लड़के के विवाह में जब नकाशी होती है माता जी के वाहन गर्दभ जी को बुलवाकर उस का पूजन करते हैं और फिर घोड़े पर चढ़ने के पूर्व दूल्हा गधे पर चढ़ाया

जाकर फिर घोड़े पर चढ़ाया जाता है तथा बुद्धियापुराण की रीत्यानु-सार उस दूल्हा को रूड़ी का पूजन भी करना पड़ता है राजपूताने में रूड़ी उस जगह का नाम है जहां सब तरह का कूड़ा कचरा व मैला हो इस के अतिरिक्त इन लोगों में वण देवता का पूजन भी होता है राज-पूताने में कपास के डंठलों की लकड़ी को वण बोलते हैं इस वण को ये ब्राह्मण, देवता मानकर जलाते नहीं हैं । ऐसी २ विचित्र २ रीतियें इस जाति में अनेकों हैं उन सबको सप्तखण्डी ग्रन्थ में लिखेंगे।

३७ आदि तैलंग :—यह तैलंगी ब्राह्मणों में एक मुख्य भेद है, तैलंगी ब्राह्मणों के कई भेद हुए हैं उन में से जिनकी स्थिति अचल विचल नहीं हुई और जो अपने आचार विचार में स्थित रहे वे आदि शब्द द्वारा विभूषित किए जाकर "आदि तैलंग" कहाये इनकी मान प्रतिष्ठा उस देश में बढ़ी चढ़ी है क्योंकि अन्य तैलंगी ब्राह्मणों की अपेक्षा ये लोग विशेष विद्वान् व राज्य में उच्च पदस्थ हैं।

३८ आभीर गौड़ :—इन के विषय में जाति अन्वेषण प्रथम भाग में लिखा जाचुका है तहां देख लेना तथा वे गौड़ ब्राह्मण जिन्हों ने अहीर जाति के यहां की यजमान वृत्ति स्वीकार कियी वे आभीर गौड़ कहाये। परन्तु हमारे भ्रमण में अनेकों विद्वानों ने यह भी कहा है कि गौड़ ब्राह्मण व अहिरिन की सन्तान आभीर गौड़ कहायीं।

३९ आंध्र :—प्रायः लोगों ने समझ रक्खा है कि अंध्र व आंध्र एक ही जाति है, सो नहीं किन्तु अंध्र संकर वर्णी जाति है तो आंध्र शुद्ध ब्राह्मण समुदाय है, यथार्थ में आंध्र नाम तैलंग देश का है अतएव तैलंग ब्राह्मणों को आंध्र ब्राह्मण भी कहते हैं अंध्रों की उत्पत्ति के विषय जाति अन्वेषण प्रथम भाग के पृष्ठ ६७ में भी लिखा जाचुका है आंध्र व तैलंग ये दोनों पर्य्याय वाची शब्द हैं।

४० आयर :—इस ब्राह्मण जाति के विषय में जाति अन्वेषण पृष्ठ १२१ में लिखा जाचुका है।

४१ आयंगर :—जाति अन्वेषण में लिख आये हैं।

४२ इग्यापग्रामहोड़ :-यह म्होड़ ब्राह्मण समुदाय का एक भेद है यह ग्यारह ब्राह्मणों का एक वंश है, श्रीरामचन्द्रजी महाराज ने चारों दिशावों से ब्राह्मणों को बुलाकर म्होड़ क्षेत्र की पूजा करके वहां आये हुये अठारह हज़ार ब्राह्मणों की स्थापना श्री माता जी की आज्ञा से कान्यकुब्ज देश में कियी थी और मोहेरपुर का तांबा पत्र स्वर्णाक्षरों युक्त करके ब्राह्मणों को दिया था बहु काल उपरान्त बौद्धधर्मी आम नामक राजा उस प्रान्त का राजा हुआ उसने अपनी कन्या रत्न गंगा के विवाह में मोहेरपुर कन्यादान में देदिया तब वह रत्नगंगा वहां मोहेरपुर में आकर ब्राह्मणों से वह नगर छीनने लगी तब सबही ब्राह्मण मिलकर राजा से आवेदन निवेदन करने लगे पर एक न चली तब कान्यकुब्ज देश से कई ब्राह्मणों का समुदाय मोहेरपुर की रक्षा के लिये निकला उन में जो ग्यारह जितेंद्रिय वेदज्ञ म्होड़ थे वे श्री सेतुबन्ध रामेश्वर चले गये और श्री रामचन्द्र जी के भक्त श्री हनुमान जी का आराधन करने लगे तब हनुमान जी नें साक्षात होकर दो पुड़ियां उन ब्राह्मणों को दियीं कि एक से राजा का नगर जलनें लगेगा और दूसरी से अग्नि शान्त हो जायगी, तदनुसार ही उन ब्राह्मणों ने मोहेरपुर में आकर राजा को चमत्कार दिखाया और अपना मोहेरपुर छुड़ा लिया उन्हीं ग्यारह ब्राह्मणों की इग्यापण म्होड़ ऐसी संज्ञा हुयी।

४३ इन्दोरिया :—यह आदि गौड़ ब्राह्मणों की एक अल्ल यानी सासन है, प्रायः इस कुल को जोषी की पदवी है अतएव ये इन्दोरिये जोषी कहाते हैं, राजा जन्मेजय ने यज्ञ कराकर जिन्हें इन्दर गढ़ दक्षिणा में दिया वे इन्दोरिये जोषी कहाये, प्रायः इस वंश के पूर्वज लोग गणित विद्या के बड़े गणितज्ञ थे और निर्वाहार्थ लड़के पढ़ाया करते थे अतः इन को जोषी की पदवी मिली थी तब से ये लोग अबतक इन्दोरिये जोषी कहाते हैं। आज कल ये लोग प्रायः लड़कों को पढ़ाने का तथा ज्योतिष विद्या का काम करते हैं जिस से भी ये जोषी कहाते हैं।

४४ उड़िया:—जाति अन्वेषण प्रथम भाग में लिख आये हैं।

४५ उदेन्य:—यह सनाढय ब्राह्मण समुदाय में का एक भेद है।

४६ उप पाञ्चाल:—यह पाञ्चाल ब्राह्मणों की एक जाति का एक भेद है इन ब्राह्मणों में से जिन्हों ने शिल्प कर्म किया वे उप पांचाल कहाये, शास्त्रों में ऐसे प्रमाण मिलते हैं विराट विश्वकर्म्मा से पांच प्रकार के ब्राह्मण उत्पन्न हुये वे पांचाल संज्ञक हुये। पांचाल विषयक विवर्ण इस ही ग्रन्थ में आगे को लिखा गया है।

पुराणों में ऐसे भी प्रमाण मिलते हैं कि विश्वकर्म्मा एक ब्राह्मण ऋषि थे जिन्हों ने शूद्रा से सम्भोग कर के नौ पुत्र उत्पन्न किये उन्हें किसी किसी ने संकर वर्ण में बतलाया है परन्तु श्री मद भगवत महाभारत तथा धर्मशास्त्रों के प्रमाणों से वीर्य्य प्रधान्ता के नियमानुसार ये नौवों शिल्पीगण ब्राह्मण वर्ण में हैं यथा :-

बभूवः गर्भ कामिन्याः परिपूर्णः सुदुर्वहाः।
सासुश्राव च तत्रैव पुत्रान् नव मनोहरान् ॥८८॥
कृतशिक्षित शिल्पांश्च ज्ञानयुक्तोश्च शौनकः।
पूर्वप्राक्तनतोयोग्यान् बलयुक्तानाविचक्षणाम्॥८९
मालाकारः कर्म्मकंसः शंखकार कुविन्दकान्।
कुम्भकारः सूत्रधारः स्वर्ण चित्रकरांस्तथा ॥९०॥
ब्र० वै० पु० श्रीकृ० अ० ११ श्लो० ८८ से ९० तक

अर्थः—ये पुराण के सर्व मान्य श्लोक हैं, वहां ब्राह्मण विश्वकर्म्मा व घृताची गोप कन्या के सम्भोग द्वारा नौ पुत्र उत्पन्न हुये उनकी विस्तार पूर्वक कथा है कि घृताची गोप कन्या ने ब्राह्मण विश्वकर्म्मा से गर्भवती होकर भिन्न भिन्न ९ पुत्र उत्पन्न किये अर्थात् १ माली २ लुहार ३ कसेरे ठटेरे ४ शंखकार ५ कोरी वा हिन्दू जुलाहे ६ कुम्हार ७ सुतार बढ़ई ८ सुनार और ९ चितेरा, इन नवों पुत्रों को विश्वकर्म्मा ने शिल्प शास्त्र की शिक्षा देकर उन्हें अपने अपने धन्दों में लगाया अतएव ये ही नवों पुत्र उप पाञ्चाल ब्राह्मण संज्ञक कहाते हैं।

इस आधार को देख कर आज सम्पूर्ण वे मनुष्य जो उपरोक्त ९ वों धन्दों में से कोई एक को करते हैं वे भी अपने को ब्राह्मण मानने लगे हैं पर यह उचित नहीं क्योंकि शास्त्र व पुराणों में ये उपरोक्त पेशे करने वाले संकर वर्णी, दोगले व शूद्रों के समुदाय की उत्पत्ति का भी पता लगता है जिन का प्रसंग अन्य ग्रन्थ में लिखेंगे।

उपरोक्त नौवों को त्रिकर्म अर्थात् वेदाध्ययन, यजन और होम करने के अधिकार हैं। ये लोग अन्य शुद्धोत्पत्ति युक्त ब्राह्मणों के साथ नमस्कार नहीं कर सक्ते हैं।

आज कल शिल्पी जातियों का विषय बड़ा ही विवादास्पद है, अर्थात् तीन प्रकार के शिल्पी हैं १ ब्राह्मण विश्वकर्म्मा व गोप कन्या की सन्तान २ विराट विश्वकर्म्मा की सन्तान और ३ रे शूद्र वर्णी संकर वर्णस्थ शिल्पी समुदाय, अतएव इन शूद्रवर्णी संकरवर्णी शिल्पियों को ब्राह्मण बनना अनधिकार चेष्टा करना है और इसही तरह पाञ्चाल व उपपांचाल संज्ञक उपरोक्त शिल्पी ब्राह्मणों को शूद्र व नीच बतलाना भी सरासर एकमात्र भेड़ियाधसान है और यह अन्याय नहीं होना चाहिये।

४७ उपाध्यायः—जाति अन्वेषण प्रथम भाग में देखियेगा।

४८ उप्रेतिः—यह एक ब्राह्मण जाति है।

४९ ऊनेवालः—जाति अन्वेषण प्रथम भाग पृष्ठ १२९ में लिखा जा चुका है।

५० उत्कलः—जाति अन्वेषण पृष्ठ १२३ में देखो।

५१ उत्तरादिः—यह एक ब्राह्मण जाति है कामरूप देश देश कमख्या देवी की ओर यह ब्राह्मण जाति है।

५२ उलच कामेः—यह कर्णाटक ब्राह्मण जाति का एक भेद है ये लोग माइसोर राज्य में विशेष रूप से हैं।

५३ एलेदसः—यह एक नीच श्रेणी के ब्राह्मणों की जाति है ट्रावनकोर के ज़िले में ये लोग नायर जाति की पुरोहिताई व पंडिताई व पाधाई करते हैं तिस से इन का पद Degraded नीचा समझा जाता है क्योंकि नायर जाति को विद्वानों ने सत शूद्रवर्ण में लिखी है विद्वानों ने युक्त प्रदेश के कुन्बी गोड़ व इन का पद बराबर माना है।

५४ ऐवासीः—यह अहिवासी शब्द का अपभ्रंश रूप है विद्या के अभाव से लोग कहीं कहीं अहिवासी ब्राह्मणों को ही ऐवासी कहने लगे हैं।

५५ ओझा :—यह एक ब्राह्मण जाति का पद है इस के विषय बहुत कुछ विवर्ण जाति "अन्वेषण" प्रथम भाग नामक ग्रन्थ में जो कुछ लिखा जाचुका है उस के अतिरिक्त निष्पक्ष भाव व ऐतिहासिक दृष्टि से यहां लिखा जाता है।

यद्यपि यह नाम ब्राह्मण समुदाय में ही है ऐसा नहीं समझना चाहिये किन्तु यह एक प्रकार का लाभदायक धन्दा है, इसे चाहे जोही करसक्ते हैं, जैसे आज कल जो डाक्टरी करे वहही डाक्टर, जो हकीमा-

यत करे वही हकीम, जो दुकान करे वही दुकान्दार, जो हलवाईपना करे वही हलवाई, जो स्कूल मदरसों में पढ़ाने की नौकरी करें वही जोषी व मास्टर कहाता है इस ही तरह जो ओझापना करे वही ओझा या झा कहाता है विद्वान लोग इस धन्देवालों का मुख्य काम मंत्र, तंत्र, जंत्र, झाड़ फूकी करना व भूतनी प्रेतनी, डाकिनी, सांकिनी ओपरी परायी का इलाज करना कराना बतलाया है और इस धन्देको लाभदायक समझ कर प्रत्येक छोटी से छोटी जाति के मनुष्य करके ओझा जी कहाते हैं, बहुत से लोग जो सांप बिच्छू के काटे हुयों का इलाज करते हैं वे भी ओझे कहाते हैं।

Rev. Mr. Sherring M. A. L. L. B. Hindu Castes Vol. I of 1872 Page 137 पादरी शेरिंग साहब एम.ए.एल.एल.बी. लंडन रचित हिन्दू जातियों की पुस्तक सन् १८७२ की छपी के पृष्ठ १३७ का लेख हमारे उपरोक्त अन्वेषण को पुष्ट करता हुआ लिखता है कि "जब कोई हिन्दू बीमार हो जाता है तब ओझे लोग स्यानपत करने के लिये बुलाये जाते हैं वे वहां पहुंच कर वहां अपने सरोदे से निश्चय करते हैं कि इस बीमार पर अमुक जिन्द, भूत, प्रेत व देवतादि हैं, इन के निवारणार्थ अमुक अमुक सामग्री व बलिदान तथा मंत्र जपादि होने चाहियें, इस तरह बड़ी बड़ी दान दक्षिणा द्वारा ओझे आनन्द मनाते हैं पुनः आगे चलकर उपरोक्त रेवरेन्ड साहब लिखते हैं कि :-

Formerly Ojha was always a Brahman but his profession has become so profitable that sharp, clever shrewdmen in all the Hindu castes have taken to it and find employment proportioned it may be to the skill they display in excercising process.

अर्थात् पूर्व काल में ओझा लोग ब्राह्मण ही हुआ करते थे परन्तु उन का यह धन्दा इतना अधिक लाभदायक निकला कि सम्पूर्ण हिंदू जातियों के चालाक चुस्त व चलते पुरजे लोगों ने इस धन्दे को स्वीकार कर लिया और उस से लाभ उठाने लगे।

इस सिद्धान्त को लिये हुये आज अनेकों जातियों के लोग हमें-

मिले जो अपने नाम के अन्त में ओझा शब्द लगाकर ब्राह्मण बनरहे हैं और इस लोकोक्ति के अनुसार कि "कोई माने न चूने मैं लाडा की भुआ" के अनुसार चाहे संसार इन ओझों को ब्राह्मण न माने पर वे तो अपने तई ब्राह्मण कह ही रहे हैं।

Introduction to Popular Religion & Falklore.

इन्ट्रोडक्सन टू पापूलर रिलीजन एन्ड फाकलोर नामक पुस्तक के पृष्ठ ६६ में ओझा शब्द के अर्थ Devil Priest असुर पूजक व भूत पूजक के किये हैं।

मुंशी किशोरीलाल जी मुंसिफ़ दरजा दोयम लिखते हैं :-

ओझा करेली:—दंत कथा है कि एक मैथिल पंडित ब्राह्मण मैथुल रहनेवाला गांव करेली ज़िला तिरहुत ने अपना विवाह सरवरिया ब्राह्मणों में किया उस से जो सन्तान हुई वह "ओझा" कहायी अब ये लोग सरवरिया में सम्मिलित हैं :—

मिस्टर सी० एस. विलियम क्रूक लेट कलेक्टर सहारन पुर और फयजाबाद लिखते हैं कि :—

The Ojha Brahaman is a fallower of the Tantras the most debased form of modern Hinduism.

भा० ओझे ब्राह्मण तंत्र शास्त्र के अनुयायी हैं जो कि हिंदू धर्म में बहुत ही अप्रतिष्ठित व निन्दित सम्प्रदाय है।

पुनः वेही कलेक्टर साहब लिखते हैं कि :-

Next it is applied to a special class of inferior Brahmans who perform the some duties in the mare Hindrised races.

अर्थात् ओझा लोग एक नीच श्रेणी के ब्राह्मण हैं जो झाड़ा फूकी का काम करते रहते हैं बिहार बंगाल के ब्राह्मण लोग मांस शराब मछली आदि खाते पीते रहते हैं।

"मैथुन" शब्द की मीमांसा में उपरोक्त ग्रन्थ में यहां तक लिखा है कि:-

Maithun :- as the sole object of worship is a goddess and as none, but the female powers of creation are recognised by Brahmans of this class,

the ceremonies are considered null and void, unless the wife of the priest takes part in them, and repeats in act & word, every thing that he himself does and say. If the priest happens to be far away from his house, or if for any reason connot accompany him or if he happens to have no wife at the time when his services as are wanted, he engages a prostitute and lives with her, as her husband for such time as the ceremonies lasts. The Ojha Brahmans is so utterly unlike the Brahmans of Manu's code in manners & characters.

भा० मैथुन :-पूजन का मुख्य उद्देश्य देवी उपासना के अतिरिक्त और कुछ नहीं है परन्तु इस जाति के ब्राह्मण ( ओझे ) स्त्री के गुप्त भाग को ही प्रसिद्ध करते हैं यह पूजन रद्दी सी समझी जाती है जब तक कि पुरोहित की स्त्री इस में सम्मिलित होकर अपने पति के सदृश स्वयमेव पूजनादि न करे, यदि पुरोहित अपने घर से कहीं बाहिर दूर देश चले गये हों अथवा किसी कारण विशेष से वह स्त्री उस के संग पूजन में उपस्थित नहीं हो सक्ती है या उस के स्त्री ही न हो या जिस समय पूजन में स्त्री की आवश्यक्ता होती है वह किसी कारण से न आसकी तो वह पुरोहित एक रंडी को इस काम के लिये नौकर करके जब तक कि देवी का पूजन होता है वह उस का पति उतनी ही देर के लिये बनजाता है।

ओझे ब्राह्मण मनु धर्म्मशास्त्रोक्त ब्राह्मणों की अपेक्षा एक बिलकुल निरालेही ब्राह्मण होते हैं।

नोट :—शाक्त सम्प्रदाय व पंचमकारियों के विषय में तथा तान्त्रिक लोग मैथुन के साथ स्त्री की.....की पूजन कैसे करते हैं आदि आदि विषय जिन्हें देखने हों वे आर्य्य समाज के मुख्य ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश को मंगवाकर देखलें।

हमें विश्वासनीय श्रोतद्वारा ऐसा भी निश्चय हुआ है कि भारत वर्ष में कुछ थोडासा समुदाय उन उच्च ब्राह्मणों का भी है जिन के पूर्वज उपाध्याय गीरी करने से ही ओझे कहारहे हैं।

इन सब लेखों से यह भी प्रमाणित होता है कि अन्य हिन्दू जातीय ओझों की तरह कुछ ब्राह्मण वर्ण के लोग भी ओझे हैं चाहे उन का जातीय पद ऊंच हो या नीच परन्तु वे ब्राह्मण अवश्य हैं।

याज्ञवल्क्य स्मृती तथा मनुस्मृती अध्याय २ श्लोक १४१ में उपाध्याय शब्द आया है और यह उपाध्याय शब्द केवल ब्राह्मण के लिये ही प्रयोग होसक्ता है और उपाध्याय शब्द का ही बिगड़ा हुआ रूप ओझा या झा है इस से ब्राह्मण भी ओझे होते हैं ऐसा सिद्ध होता है।

जैसा उपरोक्त लिखा जाचुका है प्रायः ओझे लोग तान्त्रिक (शाक्त) सम्प्रदाय के भी हैं इन्हीं को पञ्चमकारी भी कहते हैं यथाः-

**मद्यंमांसञ्चमीनञ्च मुद्रा मैथुन मेवच।**
**ऐते पञ्चमकारस्युः सर्वदाहि युगे युगे॥**

अर्थात् मद्यपीना, मांसखाना, मछली खाना, मुद्रालेना, और निघड़क रूप से परस्त्री के साथ मैथुन करना ये पांचों जो कर्म्म करते हैं वे पञ्चमकारी कहाते हैं यथा :—

मिस्टर शेरिंग साहब अपने ग्रन्थ के पृष्ट ६३ में लिखते हैं कि :-
Brahmans of Ojha caste are also called Panch makari अर्थात् ओझा ब्राह्मण लोग पंच मकारी होते हैं और यहही कारण है कि यह ओझा नाम प्रायः बिहार प्रदेशस्थ मैथिल ब्राह्मणों के नामों के अन्त में लगा रहता है।

अब आजकल विवाद यह है कि आजकल नयी रोशनी व आर्य्य समाज के कारण हिन्दू मात्र नीचतम जाति के लोग भी अपने को वर्म्मा शर्म्मा और गुप्त बनाने के उद्योग में हैं इसही तरह आज सम्पूर्ण बढ़ई, लुहार, सुनार कसेरे, ठठेरे, आदि आदि शिल्पी गण भी अपने नाम के अन्त में ओझा शब्द लगाकर ब्राह्मण बन रहे हैं वे ब्राह्मण हैं या नहीं ! इस के उत्तर में इन शिल्पी जातियों की उत्पत्ति तीन प्रकार की निलती है एक तो संकर वर्णो, दूसरी बिराट विश्व कर्म्मा से और तीसरी ब्राह्मण विश्वकर्म्मा से अतएव विराट विश्व कर्म्मा की सन्तान

और ब्राह्मण विश्वकर्म्मा की सन्तान तो ब्राह्मण वर्ण में हैं परन्तु जो संकरधर्मी सुनार, बढ़ई, तथा लुहारादि हैं वे शूद्र वर्ण में माने जाने चाहिये पर सब धान बाईस पसेरी न तोल कर दो प्रकार के विश्वकर्म्म वंशी शिल्पियों को हम ब्राह्मण ठहराते हैं हमारी निज सम्मति में तो भारतवर्ष के शिल्पी मात्र बढ़ई, लुहार, सुनार, रथकार, कसेरे, ठठेरे, माली, कोरी, छीपी, कुम्हार तथा शंखकार ये सब ब्राह्मण विश्वकर्म्मा ऋषि की सन्तान हैं अतः हम वीर्य्य प्रधानता* के नियमानुसार इन शिल्पियों को ब्राह्मण वर्ण में मानकर त्रिकर्म करने की आज्ञा देते हैं अर्थात् यज्ञोपवीत धारण करने सन्ध्योपासनादि नैत्तिक पंच महायज्ञ करने, वेद पढ़ने, पर पढ़ाने की नहीं, दान देने पर दान लेने की नहीं, यज्ञ करने पर यज्ञ कराने की नहीं तथा सोलहवों संस्कार करने का अधिकार है जिन्हें विशेष देखना हो वे इस ही ग्रन्थ में पांचाल उपपांचाल, शैव पाञ्चाल, धीमान आदि आदि प्रकरणों में बहुत कुछ लिखा जाचुका है, तहां देख लेना।

(निज सम्मति)

इस के अतिरिक्त बर्तमान काल में मिल व कारखानों की अधिकता होने के कारण अनेकों शुद्ध ब्राह्मण जातियों के लोगों ने भी शिल्प कर्म्म बढ़ई, लुहार और सुनार आदि का काम करना स्वीकार करलिया है अतएव आज कल बहुत सा समुदाय उन ब्राह्मणों का भी है जो ब्राह्मण हो कर शिल्प कर्म्म में प्रवृत होगये हैं और लकड़ी लोहे आदि आदि धातुवों का व काष्ठका काम करते रहने से लोगों ने उन्हें बढ़ई लुहार सुनार आदि ही मानरक्खा है और इन का अपने तईं ब्राह्मण बतलाना एक नयी सी बात जान पड़ती है परन्तु यह सरासर भूल है यथाः-

यह एक अफसर का निष्पक्ष लेख है :—

The Baman Barhi and Ojha Gaur are properly Brahmans employed as Carpenters.

अर्थात् बामन बढ़ई और ओझा गौड़ खातीपने का काम करते हुए यथार्थ में ब्राह्मण ही हैं।

---

* वीर्य्य प्रधान प्रकरण इसही ग्रन्थ में पृष्ठ २१ से २८ तक में है तहां देख लेना॥

Mr. Nesfield M. A. Director of Public Instructions of United Provinces of Agra & Oudh ने अपने ग्रन्थ Caste System के पृष्ठ ६२, ६३, तथा ६४ में कई जगह इन लोगों को ब्राह्मण लिखा है।

Rev Mr. Sherring M. A. L. L. B. London अपने ग्रन्थ के पृष्ठ २१६ में लिखते हैं कि :—

In Benares again we have the Janeudhari (wearers of Brahmanical Cord) who eat no meat wear the Sacred Cord and regard themselves far superior to the others.

भा० बनारस (काशी) में फिर हमें ऐसा समुदाय मिलता है जो जनेऊधारी हैं मांस मदिरा आदि अभक्ष्य पदार्थ न खाकर पवित्रता से रहते हैं।

नोटः—यह ग्रन्थ सन् १८७२ का छपा है जब आर्य्य समाज भी इस देश में नहीं था उस समय भी काशी सरीखी नगरी में बढ़इयों के काम करने वाले समुदाय का यज्ञोपवीत होता था तब अब क्यों नहीं होना चाहिये अर्थात् अवश्य होना चाहिये।

इस ही उपरोक्त भावों को लेकर मिस्टर C. S. W. C. उन्नाव के भूत पूर्व कलेक्टर ने भी अपने ग्रन्थ में बढ़ई व खातियों के काम करने वालों में बहुत सा ऐसा समुदाय माना है जो यथार्थ में ब्राह्मण हैं।

हमने अपने भ्रमण व जाति अन्वेषण की यात्रा में शिल्प कर्म्म करने वाला बढ़ई, लुहार, सुनारादिकों का ऐसा समुदाय बहुतसा पाया जिन में यज्ञोपवीतादि के साथ साथ सम्पूर्ण रीति भांति ब्राह्मणत्व की पायी अतएव इन में ब्राह्मण भी हैं ऐसा हमें भी निश्चय हुवा है।

इस ही सम्बन्ध में पं० शिवनरायन जी झा जाटलाइट इन्फेन्ट्री नं० ६ झांसी तथा पं० नैंदालाल जी झा प्रधान "मैथिल सभा" जसवन्त नगर जिला इटावा के सम्बन्ध में हम अपने ग्रन्थ जाति अन्वेषण प्रथम भाग के पृष्ठ १३१ में जो कुछ हम लिख आये हैं उस को अब हम वापिस लेते हुये लिखने में आता है कि "ब्रजस्थ मैथिल" नामक एक छोटा सा समुदाय काष्ठ कर्म्म करने वालों का मथुरा, अलीगढ़, और

हाथरस आदि की ओर है जो अपने को ब्राह्मण होने का दावा करते हैं जिन के ब्राह्मत्व के लिये काशी से एक व्यवस्था निकली थी जिस पर स्वर्ग वासी स्वामी विशुद्धानन्द जी सरस्वती, पं० रामामिश्र जी शास्त्री तथा पं० शिवकुमारजी शास्त्री आदि २ प्रसिद्ध २ विद्वानों के हस्ताक्षर थे वह व्यवस्था भारत जीवन अंक २२ सन् १८८७ इस्वी में छपी थी तथा इस ही को पं० जयकृष्ण झा राज्य दरभंगा ने आर्य्य मित्र ता० २६ दिसम्बर सन् १९०५ में मुद्रित करायी थी उस व्यवस्था में ब्रजस्थ मैथिलों को केवल ब्राह्मण बताया गया है इस व्यवस्था को पं० शिवनरायन जी झा हमारे देने को अपनी अस्वस्थता के कारण उस समय नहीं भेज सके थे तदनुसार इन के विरुद्ध संकेत मात्र लिखदिया गया था अब वे स्वरचित पुस्तकें शीतल सन्तापहारिणी, मैथिल नयनामृतांजन तथा दम्भदर्पण लेकर अपने अन्य प्रमाणों के साथ आप हमारे पास आये, इन पुस्तकों में उपरोक्त व्यवस्था का उल्लेख ऊपर लेखानुसार ही छपा है कि दर्भंगा घाट पर काशीस्थ विद्वानों की सभा हुयी जिस में अनेकों मैथिल ब्राह्मण विद्वानों के साथ साथ उपरोक्त काशी के तीनों महाविद्वान भी उपस्थित थे जिस में सर्व सम्मति से यह निश्चय हुआ कि "जो मैथिल ब्राह्मण इन बढ़इयों के यहां भोजन कर आये हैं वे पतित हुये क्योंकि बढ़ई मैथिल ब्राह्मण नहीं हैं"

इस के अतिरिक्त इन ब्रजस्थ मैथिलों के अगुआ बाबू मेघाराज जी अपनी पुस्तक ब्रजस्थ मैथिल नामक के पृष्ठ ४१ में अपनी पुष्टि में मिस्टर एफ़. एस. ग्राउस साहब कलेक्टर मथुरा का यह लेख देते हैं कि :—

For example there are a *numerous* body of carpenters called Ojhas (the word being a corruption of Upadbyaya) who are admitted to be of Br.hmanical descent, and are invested with the Sacred Cord. But common interests forming a stronger bond of union than common origin, they are regarded as a species of the genus Barhi than of the genus Brahman; their claim however

to the latter title never being disputed if they choose to assert it.

भा०-अर्थात् यहां पर बहुत से ऐसे बढ़ई हैं जो ओझा नाम से सम्बोधन किये जाते हैं ( ओझा शब्द उपाध्याय का अपभ्रंश है ) (वे) ब्राह्मण सन्तान माने जाते हैं और यज्ञोपवीत से संस्कृत किये जाते हैं परन्तु मूल के अतिरिक्त प्रसिद्ध रूप से धन्दे का प्रभाव अधिक होने से वे ब्राह्मण नहीं कहे जाकर बढ़ई समझे जाते हैं परन्तु यदि वे ब्राह्मण होने का दावा करें तो वे ब्राह्मण माने जासक्ते हैं।

परन्तु यह प्रमाण बाबू मेवालाल के समुदाय के ब्राह्मणत्व का पोषक नहीं है क्योंकि आप की एक सभा अजमेर में है तो एक दो और कहीं भी होंगी तो होंगी इस से आप के समुदाय में कुछ ही मनुष्य काष्ठ का काम करने वाले हैं तदनुसार ही आप की सभा के विज्ञापन द्वारा, मिथला मोद २० । २४ उदगार फाल्गुण, आषाढ़ पूर्णिमा सन् १३१४ मासिक पत्र के पृष्ठ ४२४ पंक्ति १०।११ के द्वारा, तथा लाला वंशीधर अध्यक्ष वाम्बे मेशीन प्रेस आगरा के यहां का छपा हेन्डबिल व मजस्थ मैथिल नामक पुस्तक द्वारा आपने अपने में कुछ ही मनुष्य काष्ट जीविका करने वाले बतलाये हैं अतएव सिद्ध हुआ कि मिस्टर ब्राउस कलेक्टर का प्रमाण इन के पक्ष Favour में न हो कर पं० शिवनरायन जी झा के पक्ष में है क्योंकि इन के समुदाय में तो थोड़े से ही मनुष्य काष्ठ कर्म्म करने वाले हैं तो पं० शिवनरायन जी के समुदाय में बहुत से काष्ठ कर्म्म करने वाले हैं और मिस्टर ब्राउस साहब कलेक्टर भी बहुत सों के लिये ही लिखते हैं अतः यह प्रमाण पं० शिवनरायन झा के समुदाय का ब्राह्मण पोषक है।

अतएव काशी की उपरोक्त व्यवस्था व उपरोक्त प्रमाणों के आधार से इस मजस्थ मैथिल समुदाय के ब्राह्मणत्व पर हमें सन्देह हो गया है हां जिस प्रकार के पत्रादि इन्होंने हमें लाकर दिखलाये थे वैसे ही पत्रादि पं० शिवनरायन जी झा ने अपने ब्राह्मणत्व की पुष्टि में युनिवर्सिटी इलाहाबाद तथा अपनी पल्टन के कमांडिंग आफिसर का सर्टिफिकेट लाकर दिखलाया तिस में उन के पिताजी की भांति ब्राह्मण लिखी हुयी

थी जो ११७ वर्ष के प्राचीन सरकारी रेकर्ड को देखकर कमांडिंग आफि: सरने इनकी जाति ब्राह्मण लिखी है इस के अतिरिक्त आपने महाराष्ट्रीय भाषा के एक ग्रन्थ विश्व ब्रह्मकुलोत्साह जो पण्डित बालशास्त्री रावजीशास्त्री क्षीर सागर का छपाया हुआ है उस में का छपा काशी- स्थ विद्वानों का सम्मति पत्र भी दिखलाया उस की अविकल नक़ल हम आगे को इस अभिप्राय से देते हैं कि "शिल्प कर्म्म करने वाला समुदाय ब्राह्मण वर्णान्तर्गत उप ब्राह्मण वर्ण में है और इस ही तात्पर्य्य को लेते हुये वह व्यवस्था शिल्पीमात्र के लिये उपयोगी होगी इस लिये लोकोपकारार्थ उस का मुद्रित किया जाना हमने अत्यावश्यक समझा है।

इस व्यवस्था पर पाठकों को यह शंका होगी कि इस पर पं० शिव- कुमार जी, पं० रामिश्रजी शास्त्री तथा स्वामी विशुद्धानन्द जी सर- स्वती प्रभृति प्रसिद्ध प्रसिद्ध काशी के विद्वानों के हस्ताक्षर तो हैं ही नहीं" यद्यपि यह शंका उचितसी जानपड़ती है तथापि विचारणीय यह है कि यह व्यवस्था विक्रम सम्वत १८४५ की निकली हुयी है जिसे आज सम्वत १९७२ में १२७ वर्ष हो गये हैं तब उस समय पं० शिव- कुमार जी, पं० राममिश्र शास्त्री जी तथा स्वामी विशुद्धानन्द सरस्वती जी आदि आदि आधुनिक विद्वानों का काशी में जन्म भी नहीं हुआ था तब उस काल की व्यवस्था पर इन के हस्ताक्षर कैसे हो सक्ते हैं, इस लिये पं० शिवनरायण जी का मैथिल समुदाय ब्राह्मण वर्णान्तर्गत है ऐसा हमें निश्चय होगया है और इन्हें त्रिकर्म करने का अधिकार है।

हमें यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुयी कि इन दोनों ही संस्थावों का विवरण श्री महाराजा साहिब दर्भंगा के समक्ष व्यवस्थार्थ पेश है जिन में से दर्भंगास्थ मीमांसक शिरोमणि महामहोपाध्याय पं० श्री चित्र- धर जी मिश्र ने इन ब्रजस्थ मैथिलों को जो ब्राह्मण बनते हैं यह उत्तर दिया है कि "आप के देश के प्रायः सब ब्राह्मणादि लोग आप लोगों से अत्यन्त विरोध रखते हैं जब कभी आप लोगों का कार्य्य प्रस्ताव हुआ है तब सर्वदा सभाकमैटी द्वारा प्रतिवाद से कोलाहल मचाता है और श्री ५ श्रीमान् मिथिलेश व हम लोगों के पास ऐसी ऐसी चिट्ठियें

आने लगती हैं कि श्री ५ मान् के मन में सन्देह उत्पन्न हो जाता है, हम लोग भी लाचार हो जाते हैं" आदि आदि ।

पाठक ! इस पत्र के एक एक शब्द में बड़ा गूढ़ार्थ भरा हुआ है अत एव उपरोक्त आधारानुसार हम अपनी उस सम्मति को जिस में इस समुदाय को हमने ब्राह्मण मान लिया है हम बाधित होकर दर्भगाधिपति श्रीमहाराज के निर्णयपत्र व पं० मेवालाल शा० अजमेर के माने हुये व्रजस्थ मैथिल समुदाय का ब्राह्मणत्व माना जाना विचार कोटि में छोड़ते हैं । तब तक मण्डल में व श्रीमती गौड़ महासभा की सेलेक्टेड कमेटी द्वारा भी कई कई विषय निर्णय होकर अनेकों उपयोगी व्यवस्थायें निकलने की सम्भावना है ।

## पाठक वृन्द !

भारत के शिल्पी समुदाय के उपकारार्थ काशी की व्यवस्था की अविकल नकल आगे दी जाती है इस व्यवस्था के अधिकारी विश्वकर्मा वंशी शिल्पी गण ही हैं परन्तु आजकल ऐसा समुदाय भी नीचतम जातियों का बहुत है जो मिल व कारखानों में तथा रेलवे के वर्कशाप Work-Shop में बढ़ई लुहारादि का कार्य करते हैं वे भी आज अपनी नीचता से शर्मा कर ब्राह्मण बनना चाहते हैं अतः आजकल के नकली व असली विश्वकर्मा वंशियों का पता लगा कर ही इस व्यवस्था को मानना चाहिये जिस से धर्म की हानि न हो ।

व्यवस्था 
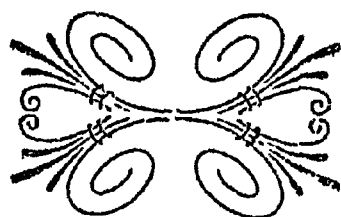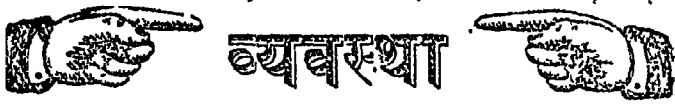
True Copy.

# ❀ श्री क्षेत्र काशीस्थ विद्वज्जनानाम् ❀

# ❀ सम्मति पत्रम् ❀

श्रुतिस्मृति पुराणज्ञैः काशीपुरनिवासिभिः ।
सर्व लोकोपकाराय क्रियते जातिनिर्णयः ॥१॥

सामान्यतः प्रजाद्विविधाः । विश्वकर्म ब्राह्मनिर्मिताः कश्यपब्रह्म-निर्मिताश्च । यद्यपि ॥ ब्राह्मणोस्य मुखमासीदित्यादिना विराडंगत्वं प्रतीयते तथापि आकाशाद्वायुरित्यादिवत् परंपरयातज्जन्यत्वं बोध्यं । आद्याः पंच विधा द्वितीयाश्चतुर्विधाः । तत्र मुखतः सृष्टाब्राह्मणावेदाय-ज्ञाश्चइतरे बाव्हादि सृष्टाः । तैश्च वृत्ति कर्मणि प्रति प्रार्थ्यमानश्चतुर्मुखः यजनादि त्रीणि कर्तव्यानि याजनादित्रीणि ॥ प्रजापालन कृषि वाणि-ज्य सेवादीनि च जीवनौपयोगिकानि ददौ ॥ तत्राद्या वैश्व कर्माणाय-जनादित्रयं कर्तव्यत्वेन प्रजापालनादिकंवृत्युपयोगित्वेन स्वीचक्रुः ॥ काश्यपेपुमध्ये ब्राह्मणायजनादित्रयं कर्तव्यत्वेनयाजनादित्रयं जीवनोपयो-गित्वेन एवं क्षत्रिय वैश्यौ आद्यत्रयं कर्तव्यत्वेन प्रजापालनादिकं वृत्यु-पयोगित्वेन शूद्रास्तुसेवामुभयार्थत्वेन वव्रुः ततः परस्परं कलहायमानाः ब्रह्मणावृत्यंतरंपरिकल्प्यपालनात्याजिता वैश्वकर्माणा इति स्थितिः । अंबष्ठादयस्तु अनुलोम प्रतिलोमजा अनंतावेदितव्याः ॥ अयंचार्थः

स्कान्दाग्नेयादि पुराणेषु मनुयाज्ञवल्क्यादिस्मृतिषु श्रुतावपि प्रसिद्धः ॥
तथाहिस्कांदस्कंद मैत्रेयस्य संवादे कल्पादौ ब्रम्हचत्रियविट् शूद्र पांचा-
लानां प्रभंजसाम् ॥ स्रोतसा सर्व जन्तूनां सृष्टि वद जगत्प्रभो इति
मैत्रेय प्रश्ने श्रीस्कंदः । विष्णु कर्णमूलोद्भूत तत्सत्हृतमधुकैटभमेदोमज्जा-
त्मिकां मेदिनीं विष्णवाज्ञया ब्राह्मणाः श्रादौप्रजामानसाश्च । सानगादि-
म्रूपीस्तथेत्यादिना विश्वकर्मादिसृष्टि मुक्त्वा । मेदोरूपत्वादस्पृश्यमेदि-
नीति नारदादिभिः प्रार्थितात् विश्वकर्मस्त्वमचैव ब्राह्मणान्मुखतः सृजे-
त्यादिना ब्राह्मणसृष्टिमुक्त्वा ॥ भूमावागंत्यतेसर्वे विश्वकर्म प्रसादतः
पवित्रां मेदिनीं कर्तुंचक्रुस्तेदुष्करंतपः ॥ तपः सामर्थ्यतः सर्वे स्वर्णाका-
रांचमेदिनीं ॥ पवित्रां कृतवंतोहि ब्राह्मणाः सफल क्रियः । तान्दृष्ट्वा-
थमुदंप्राप विश्वकर्मा जगत्प्रभुः ॥ ब्राम्हणासह तेषां सनामधेयंददौ
तदा ॥ यतः स्वर्ण कृता भूमिः स्वर्णकाराभविष्यथ ॥ पुनर्ददौ वरं
तेषां राज्यं वेदादिकंतथेत्यादिनातेभ्यो वरदान मुक्त्वा ॥ ततस्ते ब्राह्म-
णाः सर्वे राजानोभूमिमंडले ॥ राज्यं तपः प्रकुर्वाणा ब्राह्मयज्ञोभया-
न्विताः ॥ इत्यादिनातेषां यज्ञ पालनादि कर्म चोक्त्वा ॥ कदाचित्
कश्यपो धीमान्भूमिंदृष्ट्वासभार्यया ॥ पुष्कराख्यमहाक्षेत्रे स्थानं कृत्वा-
थसाग्निकः ॥ वेदिं करण योग्याय मृत्खंडनंच दृष्टवान् ॥ इत्यादिना-
कश्यपस्यमृदलाभमुक्त्वा ॥ तत्रगत्वा नमस्कृत्य ब्रह्माणं ब्रह्मवादिनमित्या-
दिनामृल्लाभम् ॥ गंगा यमुनयोर्मध्ये मृत्स्ना वेदिः प्रदलिप्तेत्यादिनामे-
दिन्यामृद्भावमुक्त्वा ॥ ततस्ते वैश्व कर्माणामृणगयांच महीमिमाम् ॥
स्वर्णाकारेण रहितां दृष्ट्वा चिन्ताकुलास्तदेत्यादिनान्योन्य कलहमुवैश्व-
कर्मणानिर्गमनं चोक्त्वा ॥ वेदाश्चमुखतस्तस्यब्राह्मणाश्चभवन्पुरा ॥ बा-
हुतः क्षत्रियाजाताऊर्वोर्वैश्यास्तथैवच पादाच्छूद्रा अजायंतवर्णाएवंक्रमेण-

हीत्यादिना कश्यपात्सर्वं वर्णसृष्टिमुक्त्वा ॥ स्वकीयागमनं दृष्ट्वाक्रोधताम्रात्तमानसः ॥ हा हा करो महानासीदृषि देवादिमंडले ॥ ऋषिदेवादयः ॥ सर्वे ब्रह्मा विष्णु पुरोगमाः ॥ कश्यपंत्र पुरस्कृत्यस्तुत्वातवंदेवाक्यगैः ॥ विश्वकर्मामनसेत्यादिनावैदिकस्स्तुतिंचोक्त्वा ॥ ततो ब्रह्मणाविश्वकर्मब्राह्मणानां ॥ युष्मत्स्थितिर्भूमंडले स्याद्भवंतो ब्रह्मवल्लभाइत्यादिनाभूमंडलनिवासं वृत्यर्थं कटक मुकुटादि निर्माण कौशल्यलाभम् ॥ कृतेचभवतां सर्वं ब्राह्मण्यंपाल्यते सदा ॥ त्रेतायां पंचकर्माणि ॥ द्वापरेतुचतुष्टयम् कलौत्रीण्येवकर्माणि पाल्यंतेधातुलोभतः ॥ करणे यदि निष्ठाचेत्सर्वत्रास्तिनसंशयः ॥ इत्यादिनायजनाद्यधिकारलाभादिकंच बहुधा प्रपंचितवान् ॥ अग्नि पुराणेप्ययमेवार्थ आख्यायिकांतरेण प्रति पादितः ॥ तथाहि ॥ अग्निः । कदाचित शंखदैत्योभूत्सिंधुपुत्रोमहाबल इत्यादिना शंख दैत्योत्पत्तिं ॥ महान् हिंस्रोमहागर्वीलोकान् जित्वावलात्स्वयम् ॥ ससर्वांल्लोकपालांश्च ब्रह्मादि सहितान् ऋषीन् ॥ इत्यादिनातस्य लोकपालादि जयम् ॥ तेभ्योवेदान्सुवर्णंच गृहीत्वाथययौ जलमित्यादिनातत्कृतवेदाद्यप हरणं ॥ स्थितवान्स्तत्रदैत्येशस्ततोऽशोकमिदंबभावित्यादितत्कृत जगत्पीडाम् ॥ ततोहंदैत्यराजंतंहत्वेत्यादिनास्वेनतत्संहरम् ॥ सुवर्णब्राह्मणान्पुनः ॥ संस्कृतान्पंचपंचभ्यो जिव्हाभ्यः सप्त जिव्हकः ॥ सृष्ट्वा तेभ्योवरंदेय सुवर्णे राज्यसंपदम् ॥ दत्वाभिवांछितान्कामानित्यादिनातेभ्यो वरदान मुक्त्वा ॥ अथते ब्राह्मणाः पंच वेद वेदांतपारगाइत्यादिनातेषां वेदाध्यायनयज्ञानुष्ठानादिकं मोक्तवान् ॥ एवं सुतसंहितायामपि ॥ हिरण्यगर्भोभगवान् ब्रह्मा विश्व जगत्पतिः ॥ आस्थायपरमांमूर्तितस्मिन्पद्मेसमुद्बभौ ॥ तस्मिन् वेदविदां श्रेष्ठाः ब्राह्मणाः परमेष्ठिनः ॥ महादेवाज्ञयापूर्ववासनासहिता मुखात् ॥ ब्राह्मणाब्राह्मणास्त्रीभिः सहजातास्तपोधनाः इत्यादिनातदुत्पत्त्यादिकं

णांचिप् एवं शिवादवराणामपि ॥ ब्रह्म चत्रिय विट् शूद्रावर्णास्त्वा-द्यास्त्रयोद्विजाः ॥ निषेकादिश्मशानांतातेषां वै मंत्रतः क्रिया इत्यादिना प्रतिपादितम् ॥ इत्थं मानवे धर्मशास्त्रेपि ॥ मुखबाहूरुपज्जानां पृथककर्माण्यकल्पयत् ॥ अध्यापनं चाध्ययनं यजनं याजनं तथा ॥ दानं प्रतिग्रहं चैव ब्राह्मणानामकल्पयत् ॥ अधीयीरंस्त्रयो वर्णाः स्वकर्मस्था द्विजातयः । प्रब्रूयाद्ब्राह्मणस्त्वेषां नेतराविति निश्चितम् ॥ सर्वेषां ब्राह्मणो विद्याद्वृत्त्युपायान्यथा विधि । प्रब्रूयादितरेभ्यश्च स्वयं चैव तथा भवेत् ॥ वैशेष्यात्प्रकृतिश्रेष्ठ्यान्नियमस्य च धारणात् । संस्कारस्य विशेषाच्च वर्णानां ब्राह्मणः प्रभुरित्यादिना प्रकटी कृतम् ॥ साक्षात्काश्यपवंश्यद्विवत्कजननादात्मास्यतो विप्रवत् ॥ षट् कर्मस्वपि तस्य हेम कृतिनां कर्मत्रये योग्यता। अस्त्येव श्रुतितः स्मृतेरनुभवात्साक्ष्यादि सत्वादिति श्रीकाशीपुर सूरिसाक्ष सहितं पत्रं कृतं प्रयत्नवत् ॥ १॥ पौराणाद्वचनान्महाजनमताच्छ्री शंकराचार्याज्ञया ॥ प्राक्पत्रादनुभूतितोऽखिलजनख्यातेः श्रुतेः पाठतः ॥ यागाद्याचरणं हिरण्यकृतिनामस्तिद्विजानामिति श्री काशीपुर सूरिसाक्ष-सहितंपत्रंकृतंप्रयत्नवत् ॥ २ ॥

## उक्तार्थे पंडितानां संमतानि ।

१ संमतोयमर्थः गोस्वामीरामजीवनस्य ।

२ संमतोयमर्थः गुसाई आनंदघन शर्मणः ।

३ श्री काशीनाथ शर्मणः संमतोयमर्थः ।

४ संमतोऽमयर्थोऽनंतभट्टस्य ।

५ शेष हरिरामरंतानांसंमतोऽयंपत्रार्थः ।

६ संमतोऽयमर्थोयज्ञेश्वरशास्त्रिणः ।

७ संमतोऽयमर्थोनंतशास्त्रिणः ।

८ संमतोऽयमर्थोव्यंकटराम शास्त्रिण: ॥
९ संमतोऽयमर्थो रामब्रह्म शास्त्रिण: ।
१० संमतोऽयमर्थोरांजणकरोपनामक भैरव भट्टस्य ।
११ सम्मतोऽयमर्थ: जयकृष्ण शास्त्रिण: ।
१२ सम्मतोऽयमर्थ: पौराणिक रघुनाथ भट्टस्य ।
१३ ,, ,, भास्कर नरसिंह शास्त्रिण: ।
१४ ,, ,, पौराणिक राजेश्वर भट्टस्य ।
१५ ,, ,, कोंडू श्रोत्रिय: ।
१६ ,, ,, व्यंकट शास्त्रिण: ।
१७ ,, ,, मुकुंद शास्त्रिण: ।
१८ ,, ,, महादेव पण्डितस्य ।
१९ ,, ,, भूमानंद स्वामिन: ।
२० ,, ,, सदाशिव शास्त्रिण: ।
२१ ,, ,, सदा शिवस्य ।

श्री कोंकण प्रांत सुवड्वास्तव्यादित; । देवाग्निजाति हटकरता: । भारद्वाजगोत्रकृष्णाजीनाम्नि प्रौढेऽधि काशीवसतीह कलिते कलहे देशे पत्रेष्यत्रवचागतेदेशात् ॥ सिद्धार्थिशरदितेन श्रावण शुक्ल द्वितीयायां । विद्वत्संमति पत्रमुप्रावत्साद्यसंयुतंरचितम् ॥ १ ॥ ईशास्य श्रुति शंभु मूर्तिधरणी संख्यांकवर्षेशके ॥ श्रीमद्विक्रमभूमिपस्य सकल श्री काशि विद्वद्वैर: ॥ यज्ञाद्याचरणं सुवर्ण कृतिनामस्तिद्विजानामिति स्कंदाग्नेय पुराण वाक्यवशत: पत्रं कृतंमत्नवत् ॥ १ ॥

भावार्थ:-सामान्यतया प्रजा दो प्रकार की १ विश्व ब्रह्म से निर्मित और दूसरी कश्यप ब्रह्म से निर्मित है आदि आदि ..................

स्कन्द और अग्नि पुराण में पाञ्चाली ब्राह्मणों का विवरण है तहां मैत्रेयी जी ने श्री स्कन्द जी से पूछा कि पाञ्चाल ब्राह्मणों की उत्पत्ति किस तरह से हुयी है ? इस के उत्तर में स्कन्द जी ने कहा कि विष्णु के कान के मैल से पैदा हुवा मधुकैटव दैत्य मेद व मज्जादि पृथिवी

पर सर्वत्र फैलाकर विघ्न कर रहा था तब विष्णु ने विश्वकर्म्मा को मैथुनी सृष्टी करने की आज्ञा दियी तदनुसार विश्वकर्म्मा से पहिले ब्राह्मण उत्पन्न हुये, वे ब्राह्मण पृथिवी पर आकर के पृथिवी को उस मेद मज्जादि के दोषों से पवित्र करणार्थ उग्र तप करने लगे जिस तप प्रभाव से पृथिवी स्वर्ण मयी हो गयी। जिस से उन तपस्वी ब्राह्मणों की संज्ञा स्वर्णकार हुयी, तब विश्वकर्मा जी ने प्रसन्न हो के उन्हें ब्राह्मण कहा, फिर उन ब्राह्मणिये स्वर्णकारों ने तप किया तब फिर विश्वकर्मा ने उन पर प्रसन्न हो के उन्हें वर दिया कि राज्य व वेदादि कर्म्म तुम करो, तिस से वे सब ब्राह्मण पृथिवी मंडल पर राज्य और तप तथा ब्रह्म यज्ञादि कर्म्मों में प्रवृत हुये।

फिर किसी समय कश्यपजी भूमि पर भार्य्या सहित विचरते पुष्कर क्षेत्र में आकर ठहरे आदि आदि........................

जब कश्यप जी पुष्कर क्षेत्र में आये तब यज्ञार्थ मृत्तिका न मिली क्योंकि उस समय स्वर्णमयी भूमि थी तब कश्यपजी ने ब्रह्मा जी से जाकर अपना यह सब मृत्तका का अभाव कष्ट कह सुनाया तब ब्रह्मा जी ने कहा कि जावो गंगा जमुना के किनारे २ के प्रान्तों में सर्वत्र मृत्तका हो जायगी तदनुसार स्वर्णमयी पृथिवी की मृन्मयी भूमि हो गयी इस से विश्वकर्म्मा जी बड़े क्रोधित हुये और परस्पर विश्वकर्म्मा जी तथा कश्यप जी में कलह उत्पन्न हुआ कि स्वर्णमयी भूमि की मृन्मयी भूमि कैसे कर दियी? तब कश्यप जी ने "विश्वकर्मा मनसा" इत्यादि ऋचाओं से स्तुति करके विश्वकर्म्मा को प्रसन्न किया और "ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत्" आदि क्रमानुसार कश्यप जी ने पुनः सृष्टि व वर्ण उत्पन्न करके उस समय के ब्राह्मणों की "विश्वकर्म्मा ब्राह्मण" संज्ञा कियी, इसलिये वे ब्राह्मण शिल्पकर्म्म में निपुण हुये और वे ब्राह्म धर्म्म पालने लगे वे पाञ्चाल शिल्पी ब्राह्मण त्रेता में तो पञ्चकर्म्म करते थे द्वापर में चार और कलियुग में तीन कर्म करने के अधिकारी हुये और इन ब्राह्मणों ने द्रव्य प्राप्ति की कामना से नाना प्रकार के शिल्प कर्त्तव्य करने आरम्भ किये और यज्ञादि त्रिकर्म्म करने के अधिकार प्राप्त किये।

अग्निपुराण में—शंखासुर राक्षस सम्पूर्ण पृथिवी को जीत कर सुवर्ण और वेदादिकों को लेकर समुद्र में डूबगया तब भगवान ने मत्स्यावतार धारण करके उस से वेद व सुवर्ण लाकर के इन ब्राह्मणों को दिये तिस से शिल्पीगण ब्राह्मण हुये ऐसा ही सूत संहिता में भी लिखा है। इत्यादि, इत्यादि, इत्यादि.........................

## ❀ सम्मति ❀

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| १ | इस | – में | – सम्मति | – है | गोस्वामी रामजीवन की |
| २ | ,, | ,, | ,, | ,, | आनन्दघन शर्म्मा गुसाईं की |
| ३ | ,, | ,, | ,, | ,, | श्री काशीनाथ शर्म्मा की |
| ४ | ,, | ,, | ,, | ,, | अनन्त भट्ट की |
| ५ | ,, | ,, | ,, | ,, | शेष हरिराम पंत की |
| ६ | ,, | ,, | ,, | ,, | यज्ञेश्वर शास्त्री की |
| ७ | ,, | ,, | ,, | ,, | अनन्तशास्त्री की |
| ८ | ,, | ,, | ,, | ,, | व्यंकटराम शास्त्री की |
| ९ | ,, | ,, | ,, | ,, | रामब्रह्म शास्त्री की |
| १० | ,, | ,, | ,, | ,, | रांजणकर उपनाम भैरवभट्ट की |
| ११ | ,, | ,, | ,, | ,, | जयकृष्ण शास्त्री की |
| १२ | ,, | ,, | ,, | ,, | पौराणिक रघुनाथ भट्ट की |
| १३ | ,, | ,, | ,, | ,, | भास्कर नरसिंह शास्त्री की |
| १४ | ,, | ,, | ,, | ,, | पौराणिक राजेश्वर भट्ट की |
| १५ | ,, | ,, | ,, | ,, | कोगड्डू श्रोत्रिय की |
| १६ | ,, | ,, | ,, | , | व्यंकट शास्त्री की |
| १७ | ,, | ,, | ,, | ,, | मुकन्द शास्त्री की |
| १८ | ,, | ,, | ,, | ,, | पं० महादेव जी की |
| १९ | ,, | ,, | ,, | ,, | भूमानन्द जी स्वामी की |
| २० | ,, | ,, | ,, | ,, | सदाशिव शास्त्री की |
| २१ | ,, | ,, | ,, | ,, | सदाशिव की |

शुभ मिती श्रावण शुक्ला द्वितीया विक्रम सम्वत् १९४५ का। पाठक वृन्द ! यह जो उपरोक्त व्यवस्था हमारे पास आयी थी उसे अविकल ज्यों की त्यों हमने छापदी है अतएव उपरोक्त व्यवस्था को देखने से तथा उपरोक्त अन्य प्रमाणों पर दृष्टि रखते हुये मुम्बई गवर्नमेन्ट की आज्ञा* पेशवा गवर्नमेन्ट का विवरण तथा पञ्च सरपञ्च विद्वानों की सम्मतियों आदि का विवरण इसही ग्रन्थ में ब्राह्मणिये सुनार, लुहार, बढ़ई, तथा पाञ्चाल, उपपाञ्चाल, शैव पाञ्चाल और ब्रह्मपाञ्चाल आदि आदि स्थानों में दिया गया है तिस सब के आधार से सुनार

---

* आज्ञा की असली नक़ल ब्राह्मणिये सुनारों, के प्रकरण के साथ इस ही ग्रन्थ में दीयी है

जाति में ब्राह्मणिये सुनार, ब्राह्मणिये लुहार, बामनबढ़ई, ओझाबढ़ई, सुनार, खाती, कसेरे, ठठेरे, ढिमाणा ( धीमान् ) आदि आदि शिल्प कर्म करने वाली जातियें त्रिकर्म्मी उपब्राह्मण हैं ऐसा सिद्ध होता है अन्य ब्राह्मणों को षट कर्म करने का अधिकार है तो इन्हें तीन कर्म करने का अधिकार है परन्तु ये उच्च दसों प्रकार के ब्राह्मणों के साथ समान भाव से नमस्कार करने के स्थान में पालागन करसक्ते हैं।

हमारी जाति यात्रा के अन्वेषण में प्रायः हमारे सन्मुख यह प्रश्न उपस्थित किया जाता था कि युक्त प्रदेश व राजपूताने के आगरा, अजमेर के आस पास के बढ़ई जो ब्राह्मण बन कर शर्म्मा लिखते हैं वे वास्तव में ब्राह्मण हैं या नहीं ? इस प्रश्न पर विचार करते हुये पूर्वोक्त प्रमाणादि के आधार व विश्वासनीय श्रोत द्वारा हमें ऐसा निश्चय होता है कि:-

१ कुछ तो यथार्थ में संकरवर्णी बढ़ई ही हैं जिन्हें ब्राह्मण न मान कर विद्वानों ने शूद्र वर्ण में माना है वे शूद्र माने जाने चाहियें।

२ कुछ नीचतम जातियें भी आज कल शिल्प कर्म करने लग गयी हैं अतः उन का पद शूद्रों से भी नीच मानना चाहिये।

३ विशेष समुदाय उन विश्वकर्म्मा वंशी ब्राह्मणों का है जो आदि से शिल्पी हैं उन्हें त्रिकर्म्मी उप ब्राह्मण मानना चाहिये वे युक्त प्रदेश व राजपूताने आदि आदि में कहीं बामन बढ़ई, कहीं सूत्रधार यानी सुतार, खाती, कहीं ओझा व झा तथा कहीं जनेऊधारी कहे जाकर पुकारे जाते हैं इन्हें उपब्राह्मण वर्ण में मानना चाहिये।

४ ओझा शब्द को नाम के अन्त में जोड़ देनेमात्र से व किसी के नाम के अन्त में ओझा शब्द देखकर सब को ब्राह्मण नहीं मानना चाहिये क्योंकि ओझे नाम वाले अनेकों ऐसे लोग हमें मिले हैं जो अस्पर्शनीय जाति के हैं और सब ही ब्राह्मण वर्णी उपाध्याय थे ऐसा हमें नहीं समझना चाहिये

अतएव धर्म्मरक्षार्थ आजकल यह जानना बड़ा ही कठिन है कि बढ़ईपने का काम करनेवाला समुदाय शूद्रवर्णी, संकरवर्णी, अस्पर्शनीय वंशज जाति बढ़ई बामन बढ़ई, ओझे गौड़ व जनेऊधारी बढ़ई हैं वा अन्य कोई, अतः ऐसी विवेचना भविष्यत् में करेंगे।
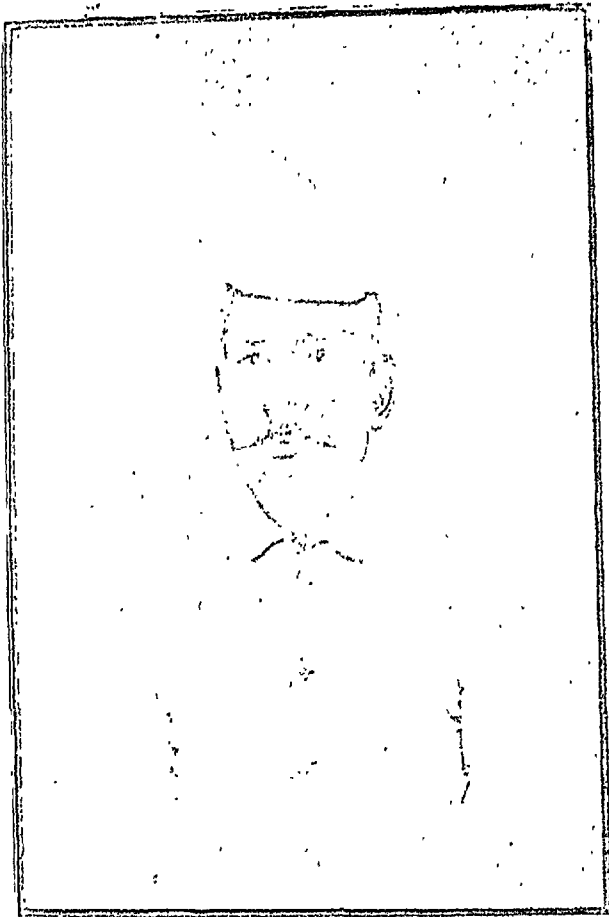
Brahma Vansh Bhushan Pandit Shiv Narayan Jha, Mainpuri.

ब्रह्मवंश भूषण पं. शिवनारायणजी झा, ( मैनपुरी. )

लक्ष्मी आर्ट, भायखला, मुंबई.

# पं० शिवनरायण जी झा

## की

# संक्षिप्त जीवनी

पाठक ! सन्मुख चित्र में जिस महामूर्ति का आप दर्शन कर रहे हैं वे स्वनामधन्य पंडित शिवनरायण जी झा हैं, आप के पिता पंडित भोलाराम जी झा एक परम उदार, साहसी, हढ़ी राजभक्त थे आप का शुभ जन्म सन् १८३२ ईस्वी में पं० कल्याणदत्त जी के यहां हुआ था आप ने ३६ वर्ष बृटिश गवर्नमेन्ट की सेवा बड़े प्रेम के साथ किंयी थी यद्यपि आप का सहवास प्रायः सैनिकों के साथ ही रहता था तथापि आप सनातन धर्म के एक कट्टर महापुरुष थे, आप के द्वार पर कोई भी साधू सन्यासी व महात्मा अतिथि क्यों न चला आवे वह कभी विमुख नहीं जाता था अर्थात् भोजनादि सत्कार के साथ साथ उन को मार्गव्ययादि के लिये भी प्रायः दक्षिणादि द्वारा सत्कार अवश्य किया जाता था, जब कभी आप से कोई पूछता कि अमुक साधू सन्यासी को क्या दिया ? तो इस के उत्तर में प्रायः आप कहा करते थे कि " परमेश्वर सब को सब कुछ देता है " अर्थात् आप अपने मुंह पर अपने दान को कभी नहीं लाया करते थे; यद्यपि आप की आयु का एक विशेष भाग सैनिक अवस्था में बीता परन्तु सैनिक होते हुये भी पूजन पाठ के ऐसे पक्के थे कि कभी आप ने पूजन किये बिना भोजन नहीं किया प्रायः प्रत्येक मास में ६ व १० दिन आप निर्जन-स्थान में रहकर ईश्वराराधन किया करते थे सब से बड़ी बात आप में यह थी कि आप सदैव अपने वचन व अपनी प्रतिज्ञा को पूरी किया करते थे आप ही के पुत्र उपरोक्त चित्र लिखित पण्डित शिवनरायण जी झा हैं।

आप का जन्म सम्वत १६३२ तदनुसार सन् १८७५ ईस्वी में भागलपुर में हुआ था आप शाण्डिल्य गोत्री हैं आप के ज्येष्ठ भ्राता का शुनाम श्रीमान् पं० रामनरायन झा तथा कनिष्ठ भ्राता का नाम पंडित हरनरायन झा है आप दोनों भी एक योग्य पिता के सुपुत्र हैं। आप लोगों का स्थान अनुमान एवं अनादि से मैनपुरी में है, परन्तु प्रायः इन के इष्ट मित्र इन्हें लकड़िया कहकर सम्बोधन करते हैं, समय के हेर फेर से आज भारत में कौनसा पेसा धन्दा व काम है जिसे ब्राह्मण वर्ण के लोग न करते हों? अर्थात् निर्वाहार्थ सब ही धन्दे करने पड़ते हैं तदनुसार आप की जाति के प्रायः मनुष्य शिल्पकर्म द्वारा जीविका करते हैं तिस से विद्या का भी अभावसा हो गया है अतः इन में से कई एक लोग भी अपने को अन्य काष्ठकर्मी शिल्पियों की तरह निरे शिल्पी समझने लगे थे और इन के प्रचलित धन्दे को देखकर लोग भी इन्हें ऐसे ही समझने थे परन्तु शास्त्रों की अन्वेषण करके तथा बड़े बड़े शास्त्रज्ञ विद्वानों से परामर्श करके व बड़ी बड़ी व्यवस्थावों को संग्रह करके स्वजाति हित, स्वजाति प्रेम व स्वजात्युन्नति का नाद फूकने वाले एक मात्र उपरोक्त चित्र लिखित पण्डित जी हैं अतः आप के सम्बन्ध में यह कहना उपयुक्त होगा कि:-

सजातो येन जातेन, याति वंशस्समुन्नतिम् ।
परिवर्तिन संसारे, मृतः को वा न जायते ॥

अर्थात् इस संसार में उस मनुष्य का जन्म धन्य है जिस से स्वजाति सेवा व स्वजात्योन्नति हो अन्यथा यह संसार परिवर्तनशील है अर्थात् अनेकों जन्मते व मरते रहते हैं परन्तु जिसने स्वजातिहित, स्वजाति सेवा, स्वजाति चिन्ता, स्वदेशानुराग, और स्वदेश हित में अपने जीवन को लगाया उस ही का जन्म कर मरना भला है; अतः विश्वकर्मी ब्राह्मणों की ब्राह्मण सभायें स्थापित कराने वाले व उन को अपनी आदि स्थिति पर लाने वाले आप ही चित्र लिखित पंडित जी हैं आप ने अपने स्वजाति अनुसन्धान में सैकड़ों रुपये व्यय किये

हैं बड़ी बड़ी दूर जाकर व्याख्यानादि दिये हैं। और अपने भाइयों को ओर निद्रा से जगाया है।

आप के पिता जी ने इन्हें बहुत कुछ तो इन के बचपन में ही सिखा दिया था अतः विद्याध्ययन में आप का भी प्रेम बढ़गया था तद्वत अल्पावस्था में अधिक परिश्रम करने से आप बीमार होगये अन्त को आप के स्कूल के हेड मास्टर ने आप को एक वर्ष के लिये स्कूल छोड़ कर यथेच्छया खेलने की अनुमति दियी तदनुसार एक वर्ष व्यतीति करके आप का सत्संग पं० रुद्रदत्त जी के साथ हुआ और उन से आप ने संस्कृत पढ़ी और अखबारों में लेख भी लिखने लगे।

आप का धर्म्मभाव व भक्ति भी बाल्यावस्था से इतनी बढ़ी चढ़ी थी कि आप अपने पिताजी की देखा देखी अतिशीत, अतिउष्ण और अतिवृष्टि आदि की परवाह न करके नित्य ग्राम से बाहिर शिव-आराधन के लिये जाया करते थे अन्त में समय पाकर आप का सत्संग आर्य्यसमाजी किसी उपदेशक महाशय से हुआ तिन के उप-देश से आप ने मूर्तिपूजन त्याग दिया और आर्य्य समाज के सभासद बनगये यहां तक कि दाऊदपुर आर्य्य समाज के आप मंत्री नियत हुये इन्हीं दिनों में आर्य्य समाज से निकाले हुये वर्तमान सनातन धर्मी अलाराम सागर अपने भरसक यह प्रयत्न किया करते थे कि आर्य्य समाजी राजद्रोही हैं अतः ये सरकारी सैन्य से पृथक करदिये जावें तदनुसार आप ने उपरोक्त पंडित जी को भी सैन्य से पृथक कराने का बहुत कुछ उद्योग किया परन्तु सफलीभूत न हुआ।

जब आप २१ वर्ष के थे तब पहिली जनवरी सन् १८६६ में आप के एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिस का नाम गंगाप्रसाद रक्खा गया आप की माता देवी चन्द्रकला ने अपने पुत्र को मातृ पितृ भक्त बना दिया है।

पं० शिवनरायन जी झा के अद्यावधि तीन पुत्र गंगाप्रसाद झा ब्रह्मानन्द झा तथा भूदेव झा हैं और चार कन्यायें हैं जिन के नाम सरस्वती देवी, भाग्यवती देवी, अनसूया देवी और देवी वेदवती जी हैं।

उपरोक्त अवसरों पर प्रायः पंडित जी के व्याख्यान हुआ ही करते थे तिस के अतिरिक्त एक समय आप को पं० दुर्गादत्त जी वृन्दावनी तथा पं० बाबूराम जी से सहस्रों मनुष्यों के सन्मुख शास्त्रार्थ में जुटना पड़ा और अन्त को आप ने अपना पक्ष सिद्ध कर दिखाया इस के सिवाय प्रायः आप अपने समुदाय की ओर से वेशधारियों यानी नकली ब्राह्मणों की कुतर्कों का भी सप्रमाण उत्तर देते रहते हैं और तदर्थ आप ने पुस्तकें निर्माण कियी हैं। मैनपुरी की "मैथिल सभा" आप ही के उपदेशामृत से सींचा हुआ पौधा है। आप सरकारी सैन्यों में काम करते हुये जहां जहां रहि आये हैं तहां तहां के लोग अब तक आप को हार्दिक प्रेम के साथ स्मर्ण करते रहते हैं। सदैव आप का चित्त यथाशक्ति उदारता व लोकोपकारिता में संलग्न रहता है।

वास्तव में देश के लिये ऐसे ऐसे महापुरुषों के लोकोपकारी आदर्शरूप जीवन से कितना लाभ होगा कुछ लिखने में नहीं आसकता है अतः परब्रह्मपरमात्मा से हमारी यह ही विन्ती है कि देश की आवश्यक्तानुसार सदैव ही ऐसे ऐसे रत्न उत्पन्न होते रहें जिस से देश में सदैव सुख सौख्य और सम्पदा बनी रहे तथा आप सकुटुम्ब आनन्द में सदा रहें यह ही अन्तिम हमारी मनोकामना है। ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

५६ ओरपालः— यह उरुपाल, शब्द का बिगड़ा हुवा रूप जान पड़ता है क्योंकि उरु का अर्थ है हृदय व पाल का अर्थ है पालनेवाला अर्थात् जो ब्राह्मण समुदाय अपने नेत्रों की भ्रकुटी को नीचे की ओर रखकर सदैव ध्यानावस्थित रहते थे उन्हें लोगोंने उरुपाल कहा था परन्तु वे ही उरुपाल कहाते कहाते ओरपाल प्रसिद्ध होगये। यह जाति भारतवर्ष के युक्तप्रदेश में हैं कर्म्म धर्म से गिरी हुयी है पर वर्ण से ब्राह्मण है।

५७ औडम्बरीः—यह एक ब्राह्मण जाति है इस का विवरण अन्वेषणाधीन है।

५८ औदिच्य ब्राह्मणः— इस जाति का विवरण जाति अन्वेषण प्रथम भाग के पृष्ठ १३६ से १३७ तक जो कुछ लिखा जाचुका है उसके अतिरिक्त यहां लिखा जाता है।

यह जाति विशेष रूप से गुजरात में तथा सामान्यतया सर्वत्र ही है, इस के अनेकों भेद हैं यह गुजराती ब्राह्मणों की जाति है इस जाति के अनेकों भेद हैं उन सब का उल्लेख सप्तखण्डी ग्रन्थ में करेंगे क्योंकि गौड़, सनाढ्य, कान्य कुब्ज, सारस्वत, मैथिल उत्कल आदि अनेकों मुख्य ब्राह्मणों के भेद व उपभेदों को एक ओर छोड़कर औदिच्य ब्राह्मणों के भेदों पर ही दृष्टि डालें तो इन के अनेकों भेद मिलते हैं, मिस्टर विल्सन ने अपनी अंग्रेजी किताब Hindu Castes में इन के १६० भेद लिखे हैं और पंडित वर हरिकेशजी ने इन्हीं के २८६ भेद माने हैं।

जिन में से ८४ भेद तो बहुत ही प्रसिद्ध माने जाते हैं अतएव जिस देश के हज़ारों जाति समुदायों में से एक औदिच्य ब्राह्मण समुदाय के ही इतने भेद हैं तो सम्पूर्ण प्रकार के अन्य ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य

और शूद्रों में कितने भेद होंगे यह विचार कोटि से बाहिर प्रतीत होता है तो जिस देश की ऐसी दशा है कि भाई भाई में भेद मानता और परस्पर ऊंचनीच के कारण वैरभाव रखता है उस भारत वर्ष का भविष्यत क्या होगा ! भगवान ही जाने !

औदिच्च्य ब्राह्मणों के निम्नलिखित मुख्य ७ भेद बड़े ही प्रतिष्ठित माने जाते हैं :-

१ टोलक्य ४ सहस्रोदिच्च्य
२ सिद्धपुरिया ५ खेरवार
३ सिहोरिया ६ उनावार ७ घरिया

सहस्रोदीच्य के तीन उपभेद ये हैं।

१ झालावाड़ी २ खेराड़ी ३ गोहेलवाड़ी।

इन उपरोक्त १० भेदों में परस्पर विवाह सम्बन्ध नहीं होते हैं यद्यपि ये लोग भोजनादि व्यवहार में विनारोक टोक सम्मिलित हैं तथापि भोजन के अतिरिक्त इन के सम्पूर्ण व्यवहार ऐसे हैं मानो ये सब परस्पर भिन्न जातियें हैं।

इनके उत्पत्ति विषय में ऐसी कथा स्कन्द पुराण में मिलती है जिस को अंगरेज विद्वानों ने भी मानी है उस कथा को अधिकल पुस्तक वृद्धिभयात न देकर उस का मर्मांश देते हैं। परन्तु ब्रा० मा० के रचयिताने अपने लिखित सम्पूर्ण श्लोकों की पुष्टि में स्कन्द पुराण के खंड अध्याय का नाम नहीं लिखा अतएव उन की सत्यता में सन्देह होता है क्योंकि उस का ही आशय हमने भी लिखा है।

यह औदिच्च्य शब्द संस्कृत उदीची से सम्बन्ध रखता है जिस का अर्थ उत्तर है अतएव उत्तर दिशा में स्थापित किये गये ब्राह्मण औदिच्च्य कहाये। ये औदीच्च ब्राह्मण पूर्व काल में कैसे थे इस के विषय ऐसा लिखा है कि :-

उदीच्या स्थापया मास तेसुरा नतु मानुपाः।
उदीच्या ऋषयः सर्वे सदा स्वाचार वर्तिनः।४४।

श्रुति स्मृति पुराणेषु प्रोक्तमस्ति धरापते ।
राज्ञः प्रतिग्रहंघोर मुदीच्यास्ते विषोपमम् ।४५।

ब्रह्माने तपोबल से वेद रक्षण करने के लिये ब्राह्मणों को उत्पन्न कर के उत्तर दिशा में स्थापित किया सो मूल राजा को गुरू जी कहते हैं कि वे ब्राह्मण नहीं हैं बरन वे ऋषि हैं और प्रतिग्रह लेने को विषके तुल्य समझते हैं ॥

जब मूल राजा ने औदीच्य ब्राह्मणों की ऐसी प्रशंसा सुनी तब उस ने अपने दूत भेज कर उत्तम खंड से ब्राह्मण बुलाये उनकी संख्या श्लोक बद्ध शास्त्रों में लिखी है परन्तु पुस्तक वृद्धिभयात यहां उन श्लोकों का भाव ही देते हैं ।

प्रयाग क्षेत्र से १२५, च्यवनऋषि के आश्रम से १००, सरयू नदी के तीर से १००, कान्यकुब्ज देश से २००, काशी से १००, और कुरुक्षेत्र से ७६, गंगाद्वार से १००, नैमिषारण्य से १००, और फिर बाकी कुरुक्षेत्र से बुलवाये सब मिलाकर वहां १०१६ ब्राह्मण स्थापित किये गये थे।

तथाचैव कुरुक्षेत्राद्वात्रिंशदधिकं शतम् ।
इत्थं समागता विप्राः सहस्राधिक षोशडः ॥ ६ ॥

अर्थात् जिस तरह नैमिषारण्य से लिये, उसही तरह २३० कुरुक्षेत्र से लेकर सब १०१६ ब्राह्मण बुलाये । परन्तु भट्टाचार्य्य जी ने अपने जाति विषयक ग्रन्थ में कुल वहां बुलाये हुये ब्राह्मणों की संख्या ११०६ लिखी है । और मिस्टर विलसन ने भी अपनी पुस्तक Indian Castes हिन्दुस्तानी जातियों की जिल्द दूसरी के पृष्ठ ६४ में मूलराजा के बुलाये हुये ब्राह्मणों की संख्या ११०६ ही लिखी है जिस ही को Hindu Castes and Sects हिन्दु जाति और मत नामक पुस्तक के रच-यिता ने भी उद्धृत किया है परन्तु सम्भव है कि कदाचित मिस्टर विलसन ने भी ऐसा लिखने में भूल कियी हो अतएव शास्त्र प्रमाण जो ऊपर लिखे जा चुके हैं तदनुसार उत्तराखंड से बुलाये हुये ब्राह्मणों की संख्या १०१६ ही ठीक है और इस ही को पंडित हरिकृष्ण वेंकटराम जी शास्त्री ने भी लिखा है ।

औदीच्य ब्राह्मणों के ऊपर भेद दिखाये जाचुके हैं अतएव उन के भिन्न २ भेद कैसे और क्यों हुये ? इस का विवर्ण इस प्रकार से है कि जिस २ समुदाय को जो २ गांव मूलराजा ने दक्षिणा में दिये उन्हीं २ गांवों के नाम से उन समुदायों के नाम पड़गये यथाः—

अथो नृपः स्त्रिया सार्द्धं निविष्टो वेदिकान्तरे ।
सुमुहूर्तशुभेलग्ने कार्तिक्यां चाग्निभेशुभे ॥
सर्वोपस्कर संयुक्त श्रीस्थलाख्यं पुरं महत् ।
एकविंशति विप्रेभ्यो ददौ स्वश्रेयसे मुदा ॥ ११ ॥

अर्थः—गुजरात प्रान्तस्थ अनहिलवाड़ा पट्टन के राजा मूलराज ने अपनी रानी सहित कृत्तिका नक्षत्र वाली कार्तिक की पूर्णिमा को कुशासन पर बैठ कर २१ ब्राह्मणों को सिद्धपुर क्षेत्रदान में दिया तब से वह २१ ब्राह्मणों का समुदाय सिद्धपुरिया औदीच्य कहाया ।

मिस्टर विल्सन लिखते है कि मूलराजा ने २१ ब्राह्मणों को आस पास के अन्य सौ गावों सहित सिद्धपुर दान में दिया तब से वह समुदाय सिद्धपुरिया औदीच्य कहाया ।

सीहोरिया नाम क्यों व कैसे पड़ा ? इस का उत्तर इस प्रकार से है, कि :—

तत सिंहपुरं नाम पदार्थैर्विविधैर्युतम् ।
ददौस द्विजवर्येभ्यो दशभ्यो दक्षिणान्वितम् ॥१॥

अर्थ :—इस के पीछे दश ब्राह्मणों को मूल राजा ने सीहोर नगर जो काठियावाड़ में है उसे दान दिया उस से सीहोरिया कहाये।

मिस्टर विल्सन लिखते हैं कि सीहोर के साथ उन दश ब्राह्मणों को १५० ग्राम आस पास के और दिये थे अतएव उस सीहोर के नाम से सीहोरिये औदीच्य कहाये ।

पुनः—

श्रीस्थलादष्ट काष्ठासु ग्रामांश्चविधांस्तथा ।
चन्द्रसप्तैक १७१ संख्याकान् ब्राह्मणेभ्यो ददौ नृपः॥१॥

फिर सिद्धपुर के अष्टदिशावों के १७१ एकसौ इकहत्तर ग्राम ४७६ ब्राह्मणों को दिये इन सब ५०० ब्राह्मणों की सहस्रोदीच्य संज्ञा हुयी।

इस ही की पुष्टि मिस्टर विल्सन व भट्टाचार्य्य जी ने भी कियी है।

टोलक्य औदीच्य कैसे कहाये?

इन्हीं सहस्रोदीच्य ब्राह्मणों में से कुछ ने राज प्रतिग्रह लेना उचित नहीं समझा और वे अपनी टोली बांधकर खम्भात (Cambay) की ओर चलेगये तब से इन की टोलक्य औदीच्य संज्ञा हुयी।

सीहोरिये कैसे कहाये?

मूलराजाने ४६० ब्राह्मणों को ८१ ग्राम दिये वे सीहोरी सम्प्रदाय के ५०० ब्राह्मण सीहोरिये औदीच्य कहाये।

नोट:-सिद्धपुर बड़ोदा राज्य में एक पुण्यक्षेत्र है और सीहोर काठियावाड़ के भावनगर राज्य में भावनगर से ६ कोस की दूरी पर एक नगर है।

झालावाड़ी कैसे कहाये?

काठियावाड़ में झालावाड़ एक नगर है अतएव उस में निवास के कारण झालावाड़ी औदीच्य कहाये।

**खेराड़ी**:—झालावाड़ में खेराली एक छोटी सी रियासत है अतएव यहां के औदीच्य खेराड़ी कहाये। खेराल माहीकान्त में एक छोटी सी रियासत भी है अतः कदाचित खेराल से ही खेराड़ी कहाये होंगे।

गोहेलवाली कैसे कहाये?

काठियावाड़ से दक्खिनी पूर्वी दिशा के बीच का भाग गोहेलवाल कहाता है अतएव वहां के निकास से गोहेलवाल औदीच्य कहाये।

खेरवाल औदीच्य कैसे कहाये ?

गुजरात प्रदेश में माहीकान्त राज्य में खेरवाल एक छोटी रियासत है उस से खेरवाल औदीच्य नाम पड़ा।

उनावर औदीच्य कैसे कहाये ?

जूनागढ़राज्य में "उना" एक प्राचीन नगर का नाम है उस से निकास होने से उनावाल औदीच्य कहाये। एक समय यहां उनावार ब्राह्मणों का ही राज्य था। आज कल इस उनावार को झालावाड़ कहते हैं।

घड़िया औदीच्य कैसे कहाये ?

गुजरात के रीवाकान्त राज्य में गढ़ एक रियासत है वहां के निवास के कारण गढ़िये औदीच्य कहाये जो आज कल घरिये, घड़िये और घढ़िये भी कहाते हैं।

औदीच्य ब्राह्मणों की विद्या स्थिती विशेष प्रशंसनीय नहीं है इन में पूरण पंडित तो बहुत ही कम हैं परन्तु नैत्तिक भिक्षावृत्ती करने वाले अधिक हैं यह भट्टाचार्य्य जी की सम्मति है परन्तु मिस्टर विलसन तो यहां तक भी लिखते हैं कि "इस जाति के लोग घरेलु कामों के लिये नौकर रक्खे जाते हैं और पनिहारा तक का काम करते हैं तथा एक अच्छे रसोइये होते हैं" परन्तु यह कर्तव्य केवल इस ही ब्राह्मण जाति के साथ नहीं है किन्तु भारतवर्ष के प्रत्येक प्रान्त व प्रदेश में सम्पूर्ण ब्राह्मण जातियों की दशा ऐसी ही अर्थात् राजपूताना के गौड़ मारवाड़ियों के यहां क्या क्या नहीं करते अर्थात् सब कुछ करते हैं।

कुछ काल उपरान्त सिद्धपुरिये सीहोरिये और टोलक्यिये औदीच्यों के इष्टमित्र सम्बन्धी आये और वे हीन जातियों का आचार्यत्व करने लगे जिस से उपरोक्त तीनों मुख्य भेदों ने उन के साथ भोजन व्यवहार भी छोड़दिया तब उन को लोग कुणबी गोर, गोलागोर, दरजीगोर कोली गोर और मोचीगोर कहने लगे।

( ब्रा० मा० पृ० ८० )

टोलक्यों के विषय ऐसा लिखा है कि :—

एकी भूत्वा स्थिताः पूर्वं लोके तस्मात् टोलकाः

अर्थात् इकट्ठे हो के बैठे थे अतएव टोलक औदीच्य ब्राह्मण कहाये।

जब औदीच्यों का परस्पर आचारों में भेद भाव पड़ा तब उन्हों ने अपने २ समुदाय का नाम संबा रक्खा संबा का अर्थ समुदाय का है।

इन टोलक्यों को भी मूलराजा ने बहु मूल्य दान दिये थे तथा चार लाख गौदान दियी थीं।

इन के गोत्र १ कृष्णात्री २ कश्यप ३ वसिष्ठ ४ वच्छ ५ पौलस्त्य ६ शांडिल्य ७ भारद्वाज ८ अंगिरस और ६ सांकृत्य।

टोलक्यों के ग्राम भेद १३ हैं।

| | | | |
|---|---|---|---|
| १ खम्बात | ४ खेड़ा | ७ मातर | १० महुधा |
| २ ब्राह्मणोली | ५ सिंधुवा | ८ डभाण | ११ ऋगुण |
| ३ हरियाली | ६ कनीज | ६ भरकुंड | १२ दरेवो |

और १३ कोचरप

इन का नाम १३ पादर भी है। इन में कनीज ग्राम के व्यास अपना स्थान छोड़ के अहमदाबाद के बिबिपरा में आब से हैं इस कारण बीपरा पौलस्ती कहाते हैं इस ही तरह मेहमदाबाद अलिन्द्रा, वासणा, नायका, मारवाड़, विरगांव, हाटकी, और धोलका आदि के लोग उन्हीं गावों के नाम से पौलस्ती कहाते हैं। मातर के जानिके ४ भेद हुये।

१ जानि २ भट ३ शुक्ल ४ अकचीआ, इन की ये पदवियें ६ हैं।

| | |
|---|---|
| १ पंड्या | ४ उपाध्याय |
| २ व्यास | ५ जोषी |
| ३ जानि | ६ पुरोहित |

श्रीमान् स्वर्गवासी पंडित मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या भूतपूर्व दिवान देवलिया प्रतापगढ़ व मंत्री श्रीमती परोपकारिणी सभा भी इस ही कुल के शिरोमणि सुनेगये हैं।

मिस्टर विल्सन, मिस्टर भट्टाचार्य्य पं० हरिकृष्ण आदि महानुभावों के आशयानुसार तो औदीच्य ब्राह्मणों की उत्पत्ति दिखला चुके परन्तु एक महाटी विद्वान ने अपना ग्रन्थ जा० भे० वि० सा० के पृष्ठ ८१ में जो कुछ लिखा है उस का मर्मांश यहां उद्धृत करते हैं।

औदिच्य-अपने को "सहस्रौदिच्य" कहते हैं इन्होंने अपना बड़प्पन दर्शाने व अपनी उत्पत्ति की शुद्धता प्रकट करने के अर्थ इन्होंने "औदिच्यप्रकाश" नामक एक ग्रंथ रचडाला तिस ग्रंथ के ३६ वें अध्याय के आदि में ही ऐसा लिख मारा कि :-

इत्थंये मूलराजेन मुनिपुत्राः सुवर्चसः ।
पदादि ग्रामदानैश्च सहस्रं तर्पिता द्विजा ॥ १ ॥
ततोजाता द्विजेंद्रास्ते सहस्राख्या महर्षयः ।
उदीच्यास्तत्रचान्यन्ये मुनिपुगासुबुद्धयः ॥ २ ॥
एकी भूत्वास्थिताः पूर्वं तस्मात्ते टोलकास्मृता ।

भावार्थः-पाटण के मूल राजा ने उत्तर देश से एक हजार ब्राह्मण बुलाकर तिन्हें १५० गांवों सहित सीहोर गांव और १ हजार गांव सहित सिद्धपुर का दान दिया तिस से इन का नाम सहस्रौदिच्य हुवा इन हजार ब्राह्मणों में कुछ काशी से, कुछ नैमिशारण्य से, कुछ गंगा द्वार से, कुछ कुरुक्षेत्र से, कुछ कान्यकुब्जदेश से, ब्राह्मण बुलाये गये थे जैसे पहिले भी लिखा जाचुका है उन सब की मिलकर एक "औदिच्य" ब्राह्मण जाति हुयी । शेष ससपराडी ग्रन्थ में लिखेंगे ।

५१ अंगिरसः-यह भी गौड़ सम्प्रदायान्तर्गत ब्राह्मण जाति का भेद है अंगिरा ऋषिके वंशज होने के कारण यह ब्राह्मण समुदाय अपने पूर्वज के नाम पर अंगिरस प्रसिद्ध हो गया, यथार्थ में यह शुद्ध शब्द "अंगिरस्य" था जिस का अर्थ अंगिरा ऋषि के वंश वाले ऐसा होता है परन्तु संस्कृत विद्या की अवनति के कारण भाषा भाषी लोग अंगिरस्य शुद्ध शब्द के स्थान में अंगिरस कहने कहाने लगे, इन का गोत्र अंगिरा है ।
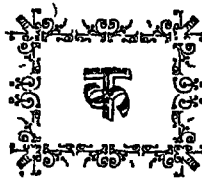
६० **कर्कल्लः**—इन का विवरण जाति अन्वेषण प्रथम भाग पृष्ठ १४८ में लिखा जाचुका है।

६१ **कर्कटीः**—इस ब्राह्मण जाति का नाम तो मिला है पर इन का विवरण कुछ भी नहीं मिला अतएव इन का विषय अन्वेषणाधीन है।

६२ **कर्णाकर्माः**—यह तैलंग ब्राह्मणों का चौथा भेद है जो तैलंग ब्राह्मण ब्रह्मकर्म में कुशल थे उन्हें पेलोपाध्याय ने कर्णा कर्म्मा की पदवी दियी थी।

६३ **कर्णाटकः**—ये दसों प्रकार के मुख्य ब्राह्मणों में से एक हैं पञ्चद्रविड़ समुदाय में सब से प्रथम नम्बर इन्हीं का है इन में वेद का प्रचार विशेष है इनके विषय में हम अपने जाति अन्वेषण प्रथम भाग पृष्ठ १४६ के लेख के अतिरिक्त विद्वानों ने कर्णाटक ब्राह्मणों के विषय में ये प्रमाण लिखवाये हैं किः—

कृष्णाया दक्षिणे भागे पूर्वे वैसह्य पर्वतात्।
उत्तरे हिम गोपालाद् द्रविड़ाच्चैव पश्चिमे ॥ १ ॥
देशो कर्णाटको नाम तत्रत्यश्च महीपतिः।
स्वेदेशे वासया मास महाराष्ट्रोद्भवान्द्विजान् ॥ २ ॥
तेभ्यश्च जीविका दत्ता ग्रामाणि विविधानिच।
कावेर्यादि नदी संस्थ देवतायतनानिच ।३।
स्वदेश नाम्ना विख्यातिं प्राप्ति तांस्तेन भूभुजा।
तेवै कर्णाटका विप्रा वेद वेदांग पारगाः । ४ ।

अर्थः-कृष्णा नदी के दक्षिण में और सह्य पर्वत के पूर्व में, हिमालय से उत्तर में और द्रविड़ देश से पश्चिम में जो देश है वह कर्णाटक कहाता है, वहां के राजा ने महाराष्ट्र ब्राह्मणों को बुलाकर उन्हें बहुत से ग्राम व पृथिवी व मन्दिर आदि की आजीविकायें देकर अपने नाम पर उन ब्राह्मणों का नाम कर्णाटक रक्खा और वे ब्राह्मण कावेरी तुंगभद्रा और कपिला आदि के किनारे किनारे बसने लगे वे सब कर्णाटक ब्राह्मण कहाये।

इन के छः भेद हैं।

१ सवाले ४ राघवेन्द्र स्वामी मठसेवक
२ पट्टिकुल ५ उडपी तुलव मठ स्वामी सेवक
३ व्यास स्वामी मठ सेवक ६ उत्तरादि मठ सेवक ब्राह्मण

इन सब में उत्तरादि मठ सेवक ब्राह्मणों का पद ऊंचा है। उपरोक्त छहों भेदों में परस्पर खान पान व विवाह सम्बन्ध नहीं होते हैं।

**६४ कत्थक** :—इस का विवर्ण जाति अन्वेषण प्रथम भाग पृष्ठ १८३ में लिखा जाचुका है।

**६५ कन्नाराकामा** :—जाति अन्वेषण प्रथम भाग के पृष्ठ १४२ में लिख आये हैं।

**६६ कन्यूड़ी** :—देखो जाति अन्वेषण पृष्ठ १४४

**६७ कपिल** :-सांख्य शास्त्र के ज्ञाता महर्षि कपिदेव जी के वंशज कपिल ब्राह्मण कहाते हैं इन का गोत्र भी कपिल ही है, ये गौड़ ब्राह्मण समुदाय में से हैं इन का आदि स्थान युक्त प्रदेशान्तर्गत फर्रूखाबाद जिले में रुदायन स्टेशन से ४ मील की दूरी पर श्रीगंगाजी के किनारे कम्पिला एक प्राचीन स्थान है जो पूर्व काल में कपिलाश्रम करके प्रसिद्ध था वह ही आज कल कम्पिला कहाया जाकर प्रसिद्ध है, इस विषय में इस ही पुस्तक के पूर्व प्रकरणों में भी लिखा जा चुका है।

**६८ कनोदिया** :—यह आदि गौड़ ब्राह्मणों की एक अल्ल है शेष जाति अन्वेषण पृष्ठ १४३ में देखलेना।

६९ कमलाकर :—यह दक्षिणी ब्राह्मणों की जाति का एक भेद है अर्थात् कुल नाम है, इस के विषय में जाति अन्वेषण प्रथम भाग के पृष्ठ १४४ में लिखा जा चुका है तिस के अतिरिक्त लिखने में आता है कि संस्कृत में इस नाम के एक योग्य विद्वान हो चुके हैं जिन्हों को लोग भट्टजी कहकर पुकारा करते थे उन्हों ने अपने नाम पर "शूद्र कमलाकर" नामक ग्रन्थ संस्कृत में छपाया है।

७० कराहड़े :—महाराष्ट्र ब्राह्मण समुदाय में यह एक ब्राह्मण जाति है जिन के विषय में विशेष रूप से जाति अन्वेषण प्रथम भाग के पृष्ठ १५२ में लिख आये हैं। लोगों ने इन्हें हत्यारे ब्राह्मण बतलाया है।

७१ कलंकी :—यह भी एक ब्राह्मण जाति है इस के विषय में जाति अन्वेषण प्रथम भाग के पृष्ठ १५६ में लिख आये हैं।

७२ कलाद:—देखो जाति अन्वेषण पृष्ठ १५७ में लिखा जा चुका है यह ब्राह्मणिये सुनारों की एक जाति है।

७३ कवर्ग:—इस ब्राह्मण समुदाय के विषयमें जाति अन्वेषण में लिखा जा चुका है तहां देख लेना।

७४ कष्ट श्रोत्रिय:—देखो जा० अन्वे० पृष्ठ १६२ में लिख आये हैं।

७५ कश्मीरी—: जाति अन्वेषण प्रथम भाग में लिख आये हैं।

७६ कसल्नाड्डु:— जा० अ० प्रथम पृष्ठ १६४ में लिख आये हैं।

७७ कसेरा:— इस जाति का विषय विवादास्पद है कुछ विद्वानों ने इस जाति को संकर वर्ण में तो कुछ ने इन्हें ब्राह्मण वर्ण में बतलाया है, हां ये ब्राह्मण ऋषि के वीर्य्य व शूद्रा स्त्री के सन्तान होने से वीर्य्य प्रधानता के नियमानुसार ब्राह्मण

वर्णों में हैं परन्तु ये उप ब्राह्मण हैं अतः अन्य उच्च ब्राह्मण समुदाय के साथ समानता नहीं करसक्ते और न अन्य उच्च ब्राह्मणों के साथ समान भाव से नमस्कार ही कर सक्ते हैं यह विषय पंडितों की सभा द्वारा निश्चय होकर गवर्नमेन्ट द्वारा स्वीकृत हो चुका है यह सरकारी आज्ञा सन् १७७६ के जुलाई मास की है तिस की नक़ल इस ही ग्रन्थ में दियी गयी है इस जाति के विषय जाति अन्वेषण पृष्ठ १६४ में भी बहुत कुछ लिखा जा चुका है तहां भी देख लेना चाहिये। इन्हें यज्ञोपवीत पहिनने, सन्ध्योपासनादि नैत्तिक कर्म करने व ब्राह्मणत्व के त्रिकर्म्म करने का अधिकार है।

**७८ काची श्रीमाली:**-- देखो जा० अन्वे० पृष्ठ १६८ में लिखा जा चुका है।

**७९ काप:**-- इस बंगाल प्रान्तस्थ ब्राह्मण समुदाय के विषय बहुत कुछ विवर्ण जाति अन्वेषण प्रथम भाग के पृष्ठ १८५ में लिखआये हैं

**८० काम्बोजे:**-- यह एक ब्राह्मण जाति पंजाब में है यहां से अफगानिस्तान की ओर ये लोग चले गये थे यहां ब्राह्मणादि के अभाव से व यवन सत्संग से ये भ्रष्ट ब्राह्मण होगये। ये लोग आज कल कुछ मुसलमान राज्यों में हैं तो कुछ पंजाब में भी हैं यहां भी ये सदाचार के नियमों से गिरे हुये हैं।

**८१ कान्यकुब्ज:**-- इस ब्राह्मण जाति के विषय में जाति अन्वेषण प्रथम भाग में विशेषरूप से लिखा जा चुका है तहां देखलेना चाहिये।

**८२ कानोता:**--देखो जा० अ० पृष्ठ १७२ में लिखआये हैं।

**८३ कांदिशिकानागर:**--यह मदरास प्रदेशस्थ नागर ब्राह्मणों की जाति का एक भेद है। ये लोग यहां गुजरात प्रदेशस्थ नागरों से उत्तम नहीं हैं।

**८४ कारेड़ा:**--यह जाति अन्वेषणाधीन है।

**८५ कासलनाडू** :--यह तैलंग ब्राह्मणों की जाति का छठवां भेद है एलेश्वरोपाध्याय ने ये भेद निर्वाचन किये थे।

**८६ किरवंत** :--जाति अन्वेषण प्रथम भाग के पृष्ठ ११०में लिखआये हैं।

**८७ कुराडगोलक** :--इस जाति के लिये भी जाति अन्वेषण प्रथम भाग में बहुत कुछ लिखा जा चुका है तहां देख लेना ही पर्य्याप्त होगा।

**८८ कुन्बी गौड़** :--जाति अन्वेषण में लिख आये हैं अर्थात् वे गौड़ ब्राह्मण जो कुर्म्मी व कुन्वी जाति के यहां की पाधाई व पुरोहिताई करके उन का दान प्रतिग्रह लेते हैं प्रायः ब्राह्मण मंडली ने ऐसे समुदाय का जाति पद नीचा माना है व सर्वत्र उच्च जातियों के यहां की पुरोहिताई करने वाले व इन गौड़ों में एक बड़ा भारी भेद भी रक्खा जाता है। अर्थात् जितने वे उच्च श्रेणी के गौड़ माने जाते हैं उतने ही ये नीच श्रेणी के हैं।

भट्टाचार्य्यजी ने इस ब्राह्मण जाति को Degraded Brahmans पतित ब्राह्मणों की श्रेणी में लिखा है, हमारी जाति यात्रा के भ्रमण में इस जाति के विषय विद्वानों ने चार तरह के मत दिये हैं यथा :--

(१) जो लोग कुर्म्मी व कुणबी जाति के यहां पाधाई पुरोहिताई तथा मिश्राई करके दान प्रतिग्रह लेते हैं वे अपने इस निकृष्ट कर्म्म के स्मरणार्थ कुरमी व कुणवी गौड़ कहाये।

(२) किसी गौड़ ब्राह्मण ने किसी कुर्मिन के साथ गुप्त सम्भोग किया उन दोनों विजातीय पुरुष स्त्री की सन्तान कुर्म्मी गौड़ प्रसिद्ध हुयी।

(३) एक कोई गौड़ ब्राह्मणी गर्भवती थी उस के पति का देहान्त होगया तब अनाथ रहकर प्रसव होने पर उस बालक व माता को किसी कुर्मी के यहां धर्म पूर्वक आश्रय मिला, अतः वह वंश कुर्म्मी गौड़ कहाया।

(४) सनातन धर्म्म महामण्डल के महामहोपदेशक पं० ज्वाला-प्रसाद मिश्र की सम्मति तथा बाबू छेदालाल जी बैरिस्टर पटना

निर्मित ग्रन्थ को दिखलाकर अनेकों स्थानों में विद्वानों ने कुणबी गौड़ का यह भावार्थ बतलाया कि कुर्म्मी जाति शूद्र व संकर वर्ण में है अतः उन के यहां की पुरोहिताई मिश्राई करने व दान पुण्य लेने से गौड़ ब्राह्मण कुणबी गौड़ नीचत्व बोधक रूप से कहाये। अतएव इस विषय को विचार कोटि में छोड़ते हैं कि सत्य क्या है ? यह विद्वान लोग स्वयं निर्णय करलेवें।

**८६ कूटा** :—यह एक ब्राह्मण जाति है बंगाल व विहार में धान को कूट कर चांवल निकालना इन का मुख्य धन्दा है, अतः ये कूटा कहाते हैं। कर्मधर्म से शूद्रवत हैं।

**६० कृश्नोरा** :—यह गुजराती ब्राह्मणों की एक जाति है इन का विवरण जाति अन्वेषण प्रथम भाग के पृष्ठ २०६ में लिख आये हैं।

**६१ कोकनस्थ** :—कोकन देश के ब्राह्मण कोकनस्थ कहाते हैं इन का दूसरा नाम चित्तपावन ब्राह्मण भी है इन के विषय में जाति अन्वेषण प्रथम भाग के पृष्ठ २०७ में लिख आये हैं तिस के अतिरिक्त इस ही ग्रन्थ में इस जाति का विवरण "चित्तपावन" स्थम्भ में बहुत कुछ लिखा है।

**६२ कोली गौड़** :—कहीं ये कोरी गौड़ तो कहीं कोली-गौड़ कहाते हैं इन के विषय में जाति अन्वेषण प्रथम भाग में लिखा जा चुका है कि ये लोग कोली व कोरी जाति के यहां का दान प्रतिग्रह लेने से कोली गौड़ कहाने लगे, इन का जाति पद छोटा बतलाया गया है, परन्तु कोरी व कोली जाति का मुख्य धन्दा कपड़े बुनना, व बुनेबुनाये कपड़ों का व्यवसाय करना मात्र है, अतः कपड़े व सूत के व्यवसाय को करने वाली जाति की यजमानवृत्ति करने वाले गौड़ नीच श्रेणी में हैं या नहीं ? इस के उत्तर में अन्वेषण से ऐसा सिद्धान्त निकलता है कि यह समुदाय नीच श्रेणी का न माना जाकर सामान्यतया छोटी श्रेणी में तो अवश्य माने जाने चाहियें, क्योंकि कोरी जाति में शराब का

प्रचार विशेष रूप से है, शेष चारों बातें कुन्थी गौड़वत् उपरोक्त लेखानुसार जानना ॥

१३ कौशिक :--यह गौड़ सम्प्रदायी ब्राह्मणों में कौशिक गोत्री ब्राह्मण हैं, ये अपने पूर्वज कौशिक ऋषि के नाम से ही प्रसिद्ध हो कर कौशिक ब्राह्मण कहे जाते हैं। इस ही नाम का एक समुदाय क्षत्रिय वर्णी भी है जैसा जाति अन्वेषण प्रथम भाग पृष्ठ २१५ में भी लिख आये हैं एक ही नाम की ब्राह्मण व क्षत्रिय दो जातियें कही जाने का कारण यह है कि दोनों ने एक ही गुरुकुल में शिक्षा पायी थी ॥

१४ कंडोल :-इन दक्षिणी ब्राह्मणों के विषय जाति अन्वेषण प्रथम भाग पृष्ठ २१६ में लिख आये हैं तहां देख लेना चाहिये ॥
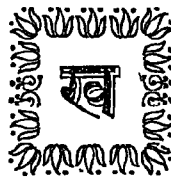
१५ खडायता विप्र :--यह एक ब्राह्मण जाति है गुजराती सम्प्रदाय में से है, खेदरा, अहमदाबाद और भड़ोंच आदि में ये लोग बहुतायत से हैं, खांडा नाम तलवार का है अतः इन के यहां तलवार का पूजन होता था, इसलिये ये खडायता विप्र कहाये इन का मुख्य काम पुरोहिताई व गुरुपना करना है।

१६ खासिया:--- इस नाम के क्षत्रिय व ब्राह्मण दोनों ही हैं जाति अन्वेषण पृष्ठ २३० में खासिया क्षत्रिय व खासिया ब्राह्मण दोनों ही के विषय में लिखा जा चुका है।

१७ खारोल्या:--- इस ब्राह्मण जाति का विवरण अन्वेषणाधीन है।

१८ खेडावाल:-- इस ब्राह्मण जाति का नाम मात्र एक ग्रन्थकार ने लिखा है।

९९ खंडेलवाल :—इस नाम के ब्राह्मण व बनिये दोनोंही हैं इन का विवरण जाति अन्वेषण प्रथम भाग के पृष्ठ २३१ में लिखा जाचुका है।

१०० खम्भाती :—यह एक गुजराती ब्राह्मणों की जाति है गुजरात प्रदेश में खम्भात एक रियासत है वहां से निकास होने के कारण ये लोग खम्भाती कहाये।

१०१ गणक :—इस ब्राह्मण जाति के विषय जाति अन्वेषण प्रथम भाग पृष्ठ २३७ में लिख आये हैं, ये लोग बंगाल प्रान्त में विशेष रूप से हैं ज्योतिष सम्बन्धी कार्य्य करना व ग्रहादि का दान लेना इन का मुख्य धन्दा है।

१०२ गाड़ग लिया :—इस ब्राह्मण जाति का नाम मात्र ही एक ग्रन्थ में मिला है।

१०३ ग्रहविप्र :—इन का विवरण जाति अन्वेषण प्रथम भाग पृष्ठ २३८ में लिखा जा चुका है।

१०४ गर्त्ततीरथ :—यह तीर्थों पर रहने वाली एक ब्राह्मण जाति है इन का मुख्य काम एक मात्र भिक्षा वृत्ति है।

१०५ गयावाल :—देखो जा० अन्वे० प्रथम भाग पृष्ठ २४३ में लिख आये हैं ये तीर्थ पंडे हैं, विद्वानों ने इन्हें उच्च श्रेणी के ब्राह्मणों में नहीं बतलाया है।

१०६ गिर्नार :—इन ब्राह्मणों के विषय जाति अन्वेषण प्रथम भाग पृष्ठ २४७ में लिखा गया है।

१०७ गुजराती :—इन के विषय में जाति अन्वेषण प्रथम भाग के पृष्ठ २४८ में लिखा जा चुका है।

१०८ गुरड़ा :—देखो जा० अ० प्रथम भाग पृ० २४६ में लिख आये हैं।

१०१ गुरुवु:—देखो जा० अ० पृष्ठ २५० में लिख चुके हैं।

११० गुसांई :—जाति अन्वेषण पृष्ठ २५१ में लिख आये हैं।

**गूजर गौड़ :**—यह गौड़ ब्राह्मण समुदाय का एक भेद है शुद्ध नाम गुर्जर गौड़ था तिस का बिगड़कर प्राकृत में गूजर गौड़ प्रसिद्ध होगया यह एक उत्तम ब्राह्मण समुदाय है परन्तु भारतवर्ष में परस्पर ईर्षा द्वेष होने के कारण ऐसे कुभाव उत्पन्न होगये हैं कि प्रत्येक मनुष्य अपने को उच्च व दूसरे को नीच समझते हैं तदनुसार मनमानी घड़ंत भी एक दूसरे के विरुद्ध अनेकों घड़ी गयीं हैं अर्थात् हमारे अन्वेषण के भ्रमण में हमें प्रायः जन श्रुतियें ऐसी मिली हैं कि :-

(१) गंगवाने की गूजरी अरु गूगोर का गौड़।
द्दोनों ने मिल कर संगम कीना निकला गूजर गौड़।

गूगोर और गंगवाना ये दो ग्राम मारवाड़ में हैं. और अर्थ तो ऊपर का सीधाही है जहां जाति अन्वेषण नामक पुस्तक में अनेकों विद्वानों की भिन्न भिन्न सम्मतियें दियी हैं तहां निष्पक्ष भाव से उपरोक्त जन श्रुति का भावार्थ भी हम ने दिया है परन्तु यह सब बनावट द्वेषी समुदाय की तुकबंदी मात्र होने से किसी के लिये भी माननीय नहीं है।

(२) किन्हीं किन्हीं विद्वानों ने हमें यह भी सम्मति दियी थी कि "किसी गौड़ ब्राह्मण ने कोई गूजरी रख लियी थी फिर उस की गुप्त मैत्री होगयी अतः उन दोनों की सन्तान गूजर गौड़ कहायी क्योंकि वीर्य्य प्रधानता के नियम से गौड़ ब्राह्मण का वीर्य्य होने से यह जाति गौड़ सम्प्रदाय की एक शाखा मानी जाकर ज्ञ्याति में सम्मिलित की गयी, परन्तु इस की सत्यता में प्रमाण मांगने पर वे लोग नदे सके और उन्होंने कहा कि प्रायः ऐसा हम सुनते चले आये हैं। अतः उन के इस सुनने की सत्यता पर भी सन्देह होता है अस्तु!

परन्तु इन सब की अपेक्षा हमारी श्रद्धा विशेष रूप से नीचे लिखे प्रमाणों पर जमकर हम इन्हें शुद्ध ब्राह्मण मानते हैं क्योंकि ऊपर का विरुद्ध पक्ष केवल एक मात्र द्वेषियों की मन घड़ंत लीला है, इस जाति

के सम्बन्ध में भिन्न भिन्न विद्वानों के भिन्न भिन्न मत देखने हों तो जाति अन्वेषण प्रथम भाग में हम लिख आये हैं वहां देखलेना चाहिये ।

पं० हरिकृष्ण जी वेंकटराम शास्त्री ने अपने जाति निबंध में लिखा है कि :-

चतुर्थो गौतमः पुत्रस्तस्मार्गुर्जर गौड़काः ।

यथार्थ में ये लोग पहिले गौतम ब्राह्मण कहाते थे परन्तु जब से राजा नाहड़देव ने पुष्कर खुदवाया तब नाना गुर्जर कर्ण की देखा देखी इन को अपना पुरोहित नियत किया था तद्विषयक यह दोहा भाटों की वही से उद्धृत किया है ।

दोहा- पुष्कर से उत्पत भये सो भये गूजर गौड़ ।
चौरासीशासन भये और बहत्तर छोड़ ॥

अर्थात् इन गूजर गौड़ों की उत्पत्ति पुष्कर क्षेत्र से हुयी है जिस के चौरासी सासन तथा बहत्तर अल्ल होगयीं ।

पुनः-

नाहड़ राजा बोलियो तुम ब्राह्मण सिर मौड़ ।
गुर्जरेश गौतम पुजे, ताते गुर्जर गौड़ ॥

अर्थात् राजा नाहड़देव ने इन ब्राह्मणों से कहा कि तुम सिरमौड़ (सर्वोच्च) ब्राह्मण हो क्योंकि गुर्जरेश अर्थात् गुजरात देश के राजा गुर्जरकर्ण ने गौतम जी का पूजन किया है तिस से उन की स्मृत्यर्थ गूजर गौड़ कहाये अर्थात् वे गौड़ ब्राह्मण जो राजा गुर्जरकर्ण के पुरोहित थे वे गुर्जर गौड़ कहाते कहाते गूजर गौड़ कहाने लगगये ।

और भी देखिये :-

गुर्जरेशनृपप्रेम्णा गुर्जरे विषये गतः ।
ततो गुर्जर गौड़ेति तत्सन्ततिरिहोच्यते ॥

गुर्ज० गौ० भा० पृष्ठ ६५

इस का अर्थ व भावार्थ तो ऊपर कहाही जा चुका है ।

अर्थात् गौतम ऋषि की सन्तान गुर्जर गौड़ ब्राह्मण कहाते हैं।
पं० योगेन्द्रनाथ जी भट्टाचार्य्य एम० ए० डी० एल० प्रधान पंडित कालेज नदिया अपने ग्रन्थ के पृष्ठ ८१ में ऐसा लिखते हैं कि Brahman who ministers to the Gujars are called Gujar Gor अर्थात् वे ब्राह्मण जो गुजरात के राजा गुर्जर के यहां की पुरोहिताई करते थे वे गुर्जर गौड़ कहाये अथवा गूजर जाति की पुरोहिताई करने से गूजर गौड़ कहाये।

हमारे जाति अनुसन्धान के प्रकरण में प्रायः गूजर गौड़ ब्राह्मणों का दूसरा नाम गौतम ब्राह्मण भी है, राजपूताना में ये लोग गूजर गौड़ कहाते हैं तो ब्रजमण्डल में ये लोग गौतम ब्राह्मण कहाते हैं अतएव गूजर गौड़ों का दूसरा नाम गौतम ब्राह्मण भी है अर्थात् गौतम ऋषि की जो सन्तान हैं वे गौतम ब्राह्मण कहाते हैं इस गौतम शब्द के अर्थ व व्युत्पत्ति पर विचार करने से अनेकों अर्थ निकलते हैं अर्थात् इस गौतम शब्द की संधि करने से ऐसा रूप होता है कि 'गो+अतम' यह दो शब्द हुये; अतएव गो अतम मिलकर गौतम शब्द बना है।

अनेकों अर्थ

यद्यपि "गो" शब्द के अनेकों अर्थ हो सकते हैं तथापि गौतम शब्द की व्युत्पत्ति इस प्रकार से है कि "गोषु इन्द्रियेषु अतमः तमो भावो यस्यसः गोतमः" अर्थात् इन्द्रियों का सम्पूर्ण अन्धकार व इन्द्रियों के पापाचरण की प्रवृत्ति जिस की दूर हो गयी है, वह गौतम कहाता है। तथा दूसरी तरह से इस की व्युत्पत्ति इस प्रकार से भी होती है कि "गौरिव सूर्य इव अतमः अन्धकार रहितः स्वप्रकाशक स गोतम" अर्थात् जो सूर्य्य के समान अन्धकार रहित स्वप्रकाशक जो है सो गौतम कहाता है। तीसरी व्युत्पत्ति इस प्रकार से होती है कि "गवा विद्यया अतमः निहता विद्यान्धकार रहितः स गोतमः" अर्थात् जो अपनी विद्या बुद्धि द्वारा अविद्यान्धकार से रहित है वह गोतम कहाता है।

शब्द कल्पद्रुम कोष के पृष्ठ ३५५ में गोतम शब्द के अन्तर्गत गोतम शब्द लिखा है जिस का समास ऐसा होता है कि 'गोतमस्य ऋषे-

गोत्रापत्यं पुमान् गौतमः' अर्थात् गोतम ऋषि की सन्तान गौतम कहाती हैं क्योंकि अष्टाध्यायी ४-१-१-४ के पाणिनीय सूत्र "ऋष्यन्धकवृष्णि कुरुभ्यश्च" से गोत्रापत्य अर्थमें अण प्रत्यय होता है। अतएव आज कल के प्रसिद्ध गौतम ब्राह्मण गोतम ऋषि की सन्तान सिद्ध हुये।

हेमचन्द्र कोश में गौतम शब्द से शतानन्द का ग्रहण किया है और शतानन्द जी गौतम जी के पुत्र थे यह प्रसिद्ध है।

पुनः और भी देखिये

मिथुनं मुद्गलाद्भार्म्याद्दिवोदासः पुमान् भूत्।
अहल्या कन्यका यस्यां शतानन्दस्तु गौतमात्॥

भागवत स्कं० ९ अ० २१ श्लो० ३४

इस भागवत के प्रमाणसे शतानन्द जी गौतम के पुत्र सिद्ध होते हैं अर्थात् मुद्गल के जोड़ले दो सन्तान, पुत्र दिवोदास व कन्या अहल्या हुयी, यह ही अहल्या गौमत जी के साथ ब्याही गयी तिस से शतानंद उत्पन्न हुये।

पुनः

गौतम मुनि सतु ब्राह्मण पुत्रः।

(शब्दस्तोम महानिधि कोषे)

अर्थात् गौतम मुनि ब्राह्मण पुत्र थे।

पुनः

तस्य सत्यधृतिः पुत्रो धनुर्वेद विशारदः।
शरद्वांस्तत्सुतो यस्मादुर्वशी दर्शनात्किल॥ ३५॥
शरस्तम्बे पतद्रेतो मिथुनं तदभूच्छुभम्।
तद्दृष्ट्वा कृपायऽगृह्णाच्छन्तनु मृगयां चरन्।
कृपः कुमारः कन्याच द्रोणपत्न्यभवत्कृपी॥ ३६॥

भाग० स्कं० ९ अ० २१ श्लो० ३५-३६

अर्थ :-इस ही शतानन्द के सत्यधृति पुत्र तिस का पुत्र शरद्वान और गौतम जी के पोते शरद्वान के पुत्र कृपा व कृपाचार्य्य तथा कृपी नामक कन्या हुयी इन का इतिहास भविष्यत में छपने वाले सप्तखण्डी ग्रन्थ में देंगे ।

यदि कोई यह शंका करे कि इन का पूर्वज गौतम, जैनधर्म्मावलम्बी गौतम बुद्ध में से गौतम होगा, पर यह कुतर्क है क्योंकि यह गौतम सप्तर्षियों में से थे और वे गौतम अन्य थे, यथा :-

"आत्रेयो माण्टेर्माण्टि गौतमाद् गौतमो गौतमा गौदतमो वात्स्यन्ना-दित्यादि" । शतपथ ब्राह्मणे

पुनः धर्म शास्त्र में भी सप्तर्षियों में गौतम जी की गणना है ।

कश्यपोत्रि भरद्वाजो विश्वामित्रोथ गौतम : ।
जमदग्निर्वसिष्ठश्च सप्तैते ऋषयस्तथा ॥

शब्दकल्पद्रुम महाकोष में ऐसा भी प्रमाण मिलता है कि:-

अत्रिश्चैव वसिष्ठश्च कश्यपश्च महानृषिः ।
गौतमश्च भरद्वाजो विश्वामित्रोथकौशिकः ॥

अर्थात् १ अत्रि २ बसिष्ठ ३ कश्यप ४ गौतम ५ भरद्वाज ६ विश्वामित्र और ७ कौशिक में सप्तर्षि हैं ।

पुनः और देखिये

तस्यतद्वचनं श्रुत्वा विश्वामित्रस्यधीमतः ।
हृष्ट रोमामहातेजाः शतानंदो महातपाः ॥१॥
गोतमस्य सुतोज्येष्टस्तयसाद्योतितप्रभः ।
रामसंदर्शनादेव परमं विषय स्मग ॥२॥

वाल्मीकिरामायणे बालकाण्डे ।

अर्थात् यह उस समय का प्रकरण है कि जब महर्षि विश्वामित्र

जी महाराज अपने यज्ञ की रक्षार्थ श्रीरामचन्द्र जी व लक्ष्मण जी को लेकर आये और यज्ञ की रक्षा करने के उपरान्त श्रीजनक जी महाराज की पुत्री सीता जी के सीय स्वयंवर धनुषयज्ञ में जाते हुये महात्मा गौतम जी की स्त्री अहिल्या को तार करके जब जनकपुरी को पधारे हैं तब राजा जनक के पुरोहित शतानन्द (गौतम जी के पुत्र) के साथ वार्तालाप करने के उपरान्त श्रीरामचन्द्र जी के दर्शन कर शतानन्द जी ने उन का मान्य किया था।

पुनः

ब्राह्मणानां तथाराज्ञामाचार्यत्वात्सएवहि ।
गौतमाचार्य सज्ञांच लेभे मुनिगणार्चिता ॥

अर्थात् मुनिवर गौतम जी महाराज अपने तपोबल के कारण बहुतसे ब्राह्मण तथा राजा महाराजाओं के गुरू हुये, अतएव आप को गौतमाचार्य्य की उपाधि प्राप्त हुयी थी।

पुनःगौतम जी के विषय श्रुति प्रमाण भी ऐसा मिलता है कि:-
"ओं इमावेव गौतमोऽथ भरद्वाजा वयमेव गौतमो ऽयं भरद्वाज इमावेव विश्वामित्र जमदग्नि अयमेव विश्वा मित्रोऽयं जमदग्नि रिमावेव वशिष्ठ कश्यपावयमेव वशिष्टोऽयं कश्यपो वागे वात्रिर्वाच ऽन्न मद्यतेऽति र्हवे नामै तद्यदत्रि रिति सर्वस्यात्ताभवति सर्वस्यान्न भवतिय एवं वेदेति।

इस वेद प्रमाण से भी गौतम ऋषि सप्तर्षियों में से हैं इन्हीं गौतम जी महाराज के विषय में बहुत कुछ विवरण आख्यायिकाओं सहित छान्दोग्य व बृहदारण्य उपनिषद में मिलता है. वह सब विवरण सम्बंधी ग्रन्थ में प्रकाश करेंगे।

विद्वानों ने इस जाति में कुछ दुर्गुण भी बतलाये हैं, तद्वत ग्रन्थ कारों ने इन के विषय में कहावतें भी लिखी हैं यथा:-

बीजावरगी बाणियो दूजो गूजर गौड़।
तीजो मिल्यो जो दाहिमो करे टापरो चौड़॥

मा० म० रिपोर्ट पृ० ७४०

इस ही का पाठ भेद भी मिला है :—

बीजावर्गी बाणियो दूजो गूजर गौड़ ।
तीजो मिल्यो जो दाहिमो करे साह को चोर ।

मा० से० रिपोर्ट पृष्ठ

अर्थात् बीजा वर्गी बनिया, दूसरा गूजर गौड़ ब्राह्मण और तीसरा दाहिमा ब्राह्मण ये एक एक ही बड़े चालाक होते हैं पर यदि ये तीनों मिलजांय तो साहूकार को चोर करना इन के बांये हाथ का खेल है इस कहावत को हमारी जाति यात्रा में कई विद्वानों ने हमें लिखवायी भी थी परन्तु गूजर गौड़ ब्राह्मण कई सत्पुरुष व सज्जन ऐसे भी हमें मिले हैं कि जो "चालाकी क्या वस्तु है" कुछ समझतेही नहीं हैं, इसलिये जाति मात्र को ऐसी नहीं समझनी चाहिये हां विशेषता कदाचित ऐसों ही की होगी तो होगी ।

इस जाति की विद्यास्थिति सामान्य है इन में विशेषता भिक्षुक व कृषकों की है ।

## गूजर गौड़ गोत्रावलि

१ काश्यप २ औशनस ३ अत्रि ४ गर्ग ५ वशिष्ठ ७ गौतम ८ कौशिक ९ शांडिल्य १० भरद्वाज ११ पाराशर १२ वत्स १३ मुग्दल १४ कश्यप

## उपनाम व खांप

१ व्यास २ जोशी ३ दुबे ४ तिवाड़ी ५ आचारज, ६ उपाध्या ७ पचोली ८ चौबे ९ सोती ।

---

नोटः—इन में कई अपभ्रंश शब्द हैं यथाः— आचारज, व अचारज आचार्य्य से विगड़कर बना है, उपाध्या, उपाध्याय शुद्ध शब्द का विगड़ कर बना है, सोती श्रोत्रिय से विगड़कर बना है, दुबे द्विवेदी से बिगड़कर बना है, तिवाड़ी त्रिवेदी का बिगड़ा हुवा है, चौबे चातुर्वेदी का बिगड़ा हुवा है; जिन्हें विशेष देखना हो वे इस ही ग्रन्थ में "चातुर्वेदी" प्रकरण जाति संख्या १२८ को देखलें ।

## कुलदेवी देवता

चामुण्डा, पिप्पलाद, जाखण, सरोई, जेसर, सनेश्वरी, सिद्धेश्वरी, आनन्दी, वड़ेखन, कालिका, तेतीख, धोलेश्वरी, दुर्गा, वागेश्वरी, ज्वालामुखी, और कमलेश्वरी।

## अवटंक

१ अंदरूपा, २ अदरोज्या, ३ आखरमरुवा, ४ आमद्या, ५ आहुवा, ६ उमटाणया, ७ कटासतल्या, ८ कटोरीवाल, ९ कमठाणया, १० करा-डोल्या, ११ कलवाड्या, १२ गुणादाड्या, १३ गुंदाडर्या, १४ गुंत्राल्या, १५ गोस्यो, १६ गोवल्या, १७ गोर्होद्या, १८ चढाणया, १९ चारसुवा. २० चाहड, होटया, २१ चुरेल्या, २२ चुडोल्या, २३ छड़क्या, २४ छींछावटा, २५ जखीमा, २६ जुजोद्या, २७ जठाणया, २८ जसथून्या, २९ जांगल्या, ३० जाजपुरा, ३१ जीराहोल्या, ३२ हड़क्या, ३३ झाड़ोल्या, ३४ झूझणाद्या, ३५ ढोकस्या, ३६ डाबस्या, ३७ डीडवाणिया ३८ डोड-वाड्या, ३९ ढमेकल्या, ४० ढांकल्या, ४१ ढींकसरा, ४२ थढ़ीवाल, ४३ दीखत, ४४ दुगास्या, ४५ नगवाल्या, ४६ नागस्या, ४७ नराणया, ४८ पीपलोद्या, ४९ पहाड्या, ५० बरनेल्या इत्यादि।

**११२ गोखले:**—यह दक्षिण प्रान्तस्थ महाराष्ट्र ब्राह्मण जाति में कोकनस्थ ब्राह्मण समुदाय का एक पद है, पूना सितारा और कोल्हापुर की ओर यह जाति विशेष रूप से है, पूने में इस वर्ग की बड़ी प्रतिष्ठा है महाराष्ट्र ब्राह्मणों में ऐसी पृथा है कि प्रत्येक पुरुष के नाम के साथ उसके पिता का नाम भी साथ में ही बोला जाता है इस जाति के रत्न भारत के भूषण अनेकों भद्रपुरुष हुये हैं जिन में से भारत के सुप्रसिद्ध लोक मान्य प्रातः स्मरणीय महात्मा गोपाल कृष्ण गोखले बी. ए. एल. एल. बी. सी. आई. ई. मेम्बर सुप्रीम लेजिस्लेटिव कौंसिल थे उन्हीं की परम पुनीत आदर्श रूप जीवनी पाठकों के अवलोकनार्थ यहां दियी जाती है। तथा इन्हीं महात्मा का परम पावन चित्र भी दर्शनार्थ लगाया जाता है।

Late Hon'able Pandit Gopal Krishna Gokhale, K. C. I. E. Poona.

स्वर्गवासी महामान्य पं० गोपाल कृष्ण गोखले के. सी. आय. ई., पूना।

चित्रशाला प्रेस, पूना।

स्वर्गवासी आनरेबल पं० गोपाल कृष्ण गोखले का जन्म सन् १८६६ ईस्वी में कोल्हापुर में हुवा था यद्यपि इन के माता पिता गरीब थे तथापि उन्हों ने इन्हें कालेज की शिक्षा दिलायी थी, Deccan College दक्खिन कालेज पूना और एलफिस्टन Elphiston College Bombay कालेज मुम्बई में पढ़कर मिस्टर गोखले ने सन् १८८४ में बी० ए० पास किया था संस्कृत पठित समाज में आप पंडित कहकर पुकारे जाते थे तो अंगेजी पठित समाज आप को Mr: Gokhley मिस्टर गोखले कहकर पुकारती थी, इस के अनन्तर दक्खिन एजुकेशनल सोसाइटी में बीस वर्ष के लिये ७५) पचेहत्तर रुपैये मासिक पर पढ़ाने के लिये आप प्रतिज्ञाबद्ध हुये, कुछ समय तक आप ने वहां अंग्रेज़ी साहित्य और गणित की शिक्षा दियी, परन्तु अवकाश के समय तक ये इतिहास और अर्थ शास्त्र के अध्यापक रहे क्योंकि इन विषयों के ये एक पूर्ण अनुभवी विद्वान माने जाते थे, देश हित देश सेवा और परोपकारी कार्य्य करने का आप को इतना अधिक प्रेम था कि कालेज की छुट्टी के दिनों में आप कालेज के निमित्त चन्दा एकत्रित किया करते थे इस परोपकारी कार्य्य में प्रायः इन्हें पांव पांव घर घर घूमना व अनेकों प्रकार की कठिनाइयें सहना तथा अनेकों प्रकार के अपमान सहने पड़ते थे परन्तु इन के इस कृत्यने कालेज की जड़ श्रद्धा के लिये दृढ़ कर दियी, कालेज के प्रिन्सिपल भी प्रायः आपकी सम्मति से ही कार्य्य किया करते थे। Fergusion College फर्गुसन कालेज में प्रवेश होने पर इन का परिचय स्वनामधन्य लोकमान्य पं० महादेव गोविन्दरानाडे जज मुम्बई हाईकोर्ट से हुवा और इन दोनों महापुरुषों ने संसार की विशेषतः भारत वर्ष की कठिन कठिन समस्याओं का अध्ययन किया और आप १४ वर्ष तक इस ही देश की चिन्ता में पथप्रदर्शक होने के मार्ग में लगे रहे अतः बिना अत्युक्ति के यह कहा जा सक्ता है कि स्वर्गवासी रानाडे अपने पीछे अपने शिष्य मिस्टर गोखले को देश सेवा का चार्ज देकर उन्हें अपना उत्तराधिकारी कर गये थे। सन् १८८७ में रानाडे की इच्छानुसार मिस्टर गोखले पूना सार्वजनिक सभा के पत्र Quarterly Journal कार्टर्ली जर्नल के सम्पा-

दक हुये, पश्चात दक्षिण सभा के आप ही Honourary Secretary अवैतनिक मंत्री नियत हुये, चार वर्ष तक इन्हों ने अंगरेजी मराठी भाषा के सुधारक नामक पत्र का सम्पादन किया, आप Bombay Provincial Council मुम्बई प्राविन्शियल कौंसिल के मंत्री पद पर भी चार वर्ष तक कार्य करते रहे थे सन् १८६५ Indian National Congress जातीय महा सभा कांग्रेस के अधिवेशन जब पूना में हुआ तब उस के मंत्री पद पर भी आप ही निर्वाचित हुये थे, सन् १८८७ में अन्य प्रसिद्ध सार्वजनिक पुरुषों के साथ ये भी भारतीय व्यय सम्बन्धी Belby Commission वेल्बी कमीशन के सन्मुख संमति देने के लिये इंगलैंड भेजे गये वहां इन्हों ने ऐसा कौशल प्रकट किया कि लोग दंग रह गये। कमीशन के सदस्यों ने जिरह में इन्हें नीचा दिखाने का बहुत कुछ प्रयत्न किया परन्तु इनकी विद्वत्ता और अभिज्ञता के सामने उन की एक न चली। जब ये इंगलिस्तान ( विलायत ) में थे इन के पास पूने से कुछ चिट्ठियें गईं जिन में गवर्नमेन्ट की प्लेग सम्बन्धी नीति के विरुद्ध सख्त शिकायतें थीं और गोरे सिपाहियों के अत्याचारों का वर्णन था। आपने अपने देशवासियों के दुःखों से उत्तेजित होकर उन चिट्ठियों का आशय इंगलेन्ड के अखबारों में छपा दिया जिस से बड़ी हल चल मची, विलायत से लौटने पर मुम्बई गवर्नमेंन्ट ने इन के पत्रों की शिकायतों के समर्थन में इन से प्रमाण मांगे। प्रान्त की अवस्था प्लेग के प्रकोप के कारण बड़ी हीन होरही थी और इनके मित्रों ने, जिन्हों ने इनके पास चिट्ठियां भेजी थीं, आगे बढ़ कर इन की सहायता नहीं कियी फलतः ये मांगे हुये प्रमाण नहीं दे सके। ऐसी अवस्था में इन्हों ने प्रकाश्य रूप से अपने पत्रों के लिये खेद प्रकट करना ही उचित समझा। यद्यपि यह उन्हें कष्ट सहना पड़ा था तथापि सच पूछो तो इन्हों ने इस प्रकार बड़ी उच्चाशयता प्रकट कियी। अपने इस काम पर कभी पछताया नहीं हुआ, वरन ये यही कहा करते थे कि यदि काल चक्र फिर कभी वैसा ही अवसर उपस्थित कर देगा तो वे फिर उस ही प्रकार आचारण करेंगे।

सन् १९०० और १९०१ में श्रीयुत गोखले ने प्रान्तीय व्यवस्थापक कौंसिल के निर्वाचित सदस्य की हैसियत से बहुत कुछ उपयोगी काम किया। सन् १९०२ में ये १८ वर्ष की सेवा के अनन्तर फर्गुसन कालिज पूना से अलग हुये और इसही वर्ष में वाइसराय की व्यवस्थापक कौंसिल के सदस्य चुनेगये। बजट के सम्बन्ध में इन की प्रथम वक्तृता ने लोगों पर बड़ा भारी प्रभाव डाला। तब से बराबर इन की बजट वक्तृतावों के लिये उत्सुकता पूर्वक प्रतीक्षा की जाती थी। उन की बढ़ी चढ़ी जानकारी, दूरदर्शिता और अपने विचार प्रकट करने की योग्यता को देख कर उन के विपक्षी मुक्तकण्ठ से उन्हें सराहते थे, बड़े बड़े उच्च राज कर्मचारी उन के व्यक्तिगत मित्र थे यहां तक कि लार्ड कर्जन सरीखे निरंकुश शासक के मुख से भी इन के लिये प्रशंसा के वाक्य निकल पड़े थे और इन की योग्यता के उपलक्ष्य में वाइसराय ने इन्हें सी. आई. ई. की उपाधि दे कर सन्मानित किया था।

सन् १९०५ में गोखले ने भारत में अपने ढंग की निराली और अत्यन्त उपयोगी संस्था—भारत—सेवक— समिति संघटित किया, गोखले का विश्वास था कि भारत को इस समय ऐसे सेवकों की आवश्यक्ता है जो मातृभूमि की सेवा में अपना जीवन अर्पित करदें और जो उस की योग्यता पूर्वक सेवा कर सकें।

इस ही वर्ष में इन्हें फिर देश के काम के लिये इंगलेन्ड जाना पड़ा जहां उन्होंने असाधारण परिश्रम किया, इस समय वहां लाला लाजपत राय भी उपस्थित थे, दोनों ने मिलकर भारत वासियों के स्वत्वों के लिये और लार्ड कर्ज़न के कुशासन के विरुद्ध खूब आन्दोलन किया लगभग पचास दिनों में श्रीयुत गोखले को ४५ से अधिक सभावों में जाकर व्याख्यान देनेपड़े। लौटने पर मुम्बई और पूने में उन का स्वागत भी खूब हुआ और उन को दी जाने वाली बधाइयों में स्वयं श्रीयुत लोकमान्य पं० बालगंगाधर तिलक भी सम्मिलित हुये थे और इन्होंने राजनैतिक कार्य के लिए इंगलैंड गमन की आवश्यक्ता भी स्वीकार की। परन्तु सन् १९१४ में माननीय श्रीयुत् गोखले के ऊपर सचमुच बड़ा कार्य भार पड़ा। हज़ार नाहीं करने और स्वास्थ्य खराब होने पर भी

उन्हें काशी में कांग्रेस का सभापति होना ही पड़ा और कहने की आवश्यक्ता नहीं है कि प्रतिकूल अवस्था होने पर भी इन्होंने इस कठिन काम को बड़ी योग्यता से निबाहा अपनी वक्तृता के आरम्भ ही में उन्होंने लार्ड कर्ज़न की औरंगज़ेब से तुलना की और फिर बंगालियों द्वारा विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार किये जाने का समर्थन किया, बंगभंग की पूरी तरह से खबरली और कांग्रेस के उद्देश्यों तथा भारत वासियों की महत्वपूर्ण आकांक्षाओं को भी योग्यता पूर्वक प्रगट किया।

प्रवासी भारतवासी भी श्रीयुत गोखले के अत्यन्त कृतज्ञ रहेंगे क्योंकि इन्हीं के प्रयत्न से नेटाल को प्रतिज्ञा बद्ध कुलियों का जाना बन्द हुआ, इन्होंने सन् १९१२ में स्वयं दक्षिण अफ्रिका की यात्रा की और वहां जाकर अपनी आंखों अपने दुर्दशाग्रस्त भाइयों और बहिनों की दशा देखी और वहां के राजमंत्रियों से मिलकर वार्तालाप कियी जिस का परिणाम लाभदायक हुआ इन का यह भी विश्वास था कि विना मुफ़ और अनिवार्य्य आरम्भिक शिक्षा के देश की उन्नति नहीं हो सकी इसही लिये इस विषय का बिल इन्हों ने कौंसिल में पेश किया परन्तु हमारे प्रभुवों ने उसे स्वीकार नहीं किया परन्तु फिर भी पंडित गोखले इस से किंचिन्त निरुत्साहित व हताश न हुये वरन आपने कौंसिल में कहा कि "मै शिकायत नहीं करता और न हतोत्साह ही हुआ हूं क्योंकि मैं अच्छी तरह जानता हूं कि इंगलेन्ड में भी अनिवार्य्य शिक्षा एक्ट सन १८७० के पास होने के पहिले लोगों को कैसे कैसे उद्योग करने पड़े थे इस के अतिरिक्त मैं यह भी समझता हूं और बहुत बार कह भी चुका हूं कि वर्तमान पीढ़ी के हम भारत वासियों को असफलता द्वारा ही स्वदेश सेवा करनी बदी है"।

सन् १९१३ में आप Public Service Commission पबलिक सर्विस कमीशन के सदस्य नियत हुये थे, सन् १९१४ में सम्राट की ओर से आप को सर की उपाधि मिलने वाली थी पर उस को आपने सधन्यवाद अस्वीकार करदिया क्योंकि इस से देश सेवा में बाधा पहुंचना सम्भव थी, हमारे अभाग्य से ऐसे महात्मा का देहान्त तारीख १९ फरवरी सन् १९१५ को होगया आप के शव के साथ व इमसान

गृह में बीस हज़ार आदमियों की उपस्थित थी आप ही की मृत्यु पर लोकमान्य पं० बालगंगाधर तिलक ने श्मशान भूमि में आंसू बहाये थे तथा बड़े लाट साहब ने आप ही की मृत्यु के उपलक्ष्य में अपनी कौंसिल की बैठक एक दिवस को बन्द कियी थी। कर जोड़कर हमारी भी बिन्ती भगवान से यह ही है कि "श्रीयुत पं० गोखले की आत्मा को स्वर्ग में शान्ति प्रदान हो। ओं शम्!

**११३ गौड ब्राह्मण** :—इस ब्राह्मण जाति के विषय ज्ञाति अन्वेषण प्रथम भाग के पृष्ठ २६१ में बहुत कुछ लिख आये हैं।

**११४ गोमित्री** :—दक्षिण देश में यह एक ब्राह्मण जाति है बाल्मीकि ब्राह्मणों के अन्तर्गत ही यह जाति है, इन की उत्पत्ति के विषय ऐसा लेख मिलता है कि बाल्मीकि ऋषि को जब श्रीरामचन्द्र जी महाराज के यहां से बहुत धन मिला तब उन्होंने उस धन का सदुपयोग करणार्थ यज्ञ करना निश्चय किया तदनुसार बाल्मीकि मुनि जी ने आबू पहाड़ में जहां बाल्मीकेश्वरी देवी का मन्दिर है तहां जाकर अपना आश्रम स्थापित किया और यज्ञारम्भ के लिये दूर दूर से ऋषिगणों को बुलाया जिन में मुख्यतया गौतम जी, वसिष्ठ जी, कण्व, च्यवन आदि ऋषियों के साथ साथ एक लाख अन्य ऋषिगण थे यथा :—

सर्वे ते शिष्य लक्षैकमुत्तमा वेदवित्तमाः।
तेषां विहित संख्यानां गोत्राणि विमलानिच ॥ १६ ॥

मिश्र० ब्रा० मा० पृ० ५३६

अर्थ :—उस यज्ञ में आये हुये एक लाख ऋषिगण थे वे सब वेद पारंगत थे। उन में से पचास हज़ार ऋषियों को जो गौवों की रक्षा करने के लिये नियत किये थे उन की गोमित्री संज्ञा हुयी।

इन के गोत्र ये हैं।

| गोत्र | प्रवर |
|---|---|
| १ भरद्वाज | |
| २ वशिष्ठ | वसिष्ट |
| ३ काश्यप | काश्यप, वत्स, ध्रुवा |

| गोत्र | प्रवर |
|---|---|
| ४ गार्ग्य | काश्यप वत्स ध्रुवा |
| ५ आत्रेय | आत्रेय, अर्चनान्, शशाबाश्वा, |
| ६ गौतम | |
| ७ वत्स | |
| ८ कौण्डिन्य | वसिष्ठ, मैत्रावरुण कौण्डिन्य |
| ९ भार्गव | भार्गव, च्यवन, आत्मवान, आर्ष्टिषेण और अनुपेक्षा |
| १० मुद्गल | आंगिरस, भाश्व, मुद्गल |
| ११ जमदग्नि | जमदग्नि, भार्गव, और्व |
| १२ आंगिरस | आंगिरस, भाश्व मुद्गल |
| १३ कुत्स | मांधाता, आंगिरस, कौत्स |
| १४ कौशिक | |
| १५ विश्वामित्र | विश्वामित्र, देवल, देवश्रवस |
| १६ पुलस्त्य | |
| १७ अगस्ति | विश्वामित्र, स्मररथ, वार्धूल |
| १८ शांडिल्य | |
| १९ कात्यायन | भार्गव, च्यवन, और्व, जमदग्नि, वत्स |

---

११५ गोरवालः—गुजरात प्रदेश में यह एक ब्राह्मण जाति है इन का बहुत ही समीपी सम्बन्ध औदिच्य सहस्र ब्राह्मण समुदाय से है, उदयपुर के राजा ने इन ब्राह्मणों को बुलाकर अपने यहां यज्ञ किया था अतः यज्ञान्त में इन्हें पाईस गांव दान दक्षिणा में मिले थे जिन में मुख्य ग्राम गोल नामक था अतः उस गोल के नाम से ये गोल वाल ब्राह्मण प्रसिद्ध हुये जिस को भाषा भाषी लोग गोरवाल भी कह-ने लगगये ।

११६ गौड़ः—यह नाम एक ब्राह्मण जाति, तथा क्षत्रिय जाति दोनों ही का है अतः इन दोनों ही का विवरण जाति अन्वेषण प्रथम भाग में लिख आये हैं क्योंकि गौड़ ब्राह्मण होते हैं तैसे ही

गौड़ क्षत्रिय भी होते हैं गौड़ ब्राह्मणों के विषय विस्तृत विवरण इस ग्रन्थ में आगे ही लिखा है।

**११७ गौड़ ब्राह्मण** :—गौड़ ब्राह्मण भी होते हैं तो गौड़ क्षत्रिय भी होते हैं अतएव इस स्थल में गौड़ ब्राह्मणों का विवरण जानना, इन के विषय जाति अन्वेषण प्रथम भाग में जो कुछ लिखा जा-चुका है उस के अतिरिक्त यहां लिखा जाता है, यद्यपि जैसे हमने प्रत्येक जाति का विषय बहुत बहुत कुछ संग्रह किया है तैसे गौड़ों के विवरण का विषय भी बहुत कुछ संग्रह किया है परन्तु ग्रन्थ बढ़ता ही चला जारहा है अतः अन्य जातियों के विवरण की तरह गौड़ों का विवरण भी उतना ही लिखेंगे जितना अन्य अन्य ब्राह्मण जातियों का विवरण हमने लिखा है कि जिस से किसी को आशंका हम पर यह न हो कि ग्रन्थ कर्ता जो स्वयं गौड़ ब्राह्मण हैं अतः अपनी जाति का विवरण तो बहुत कुछ लिखा है पर अन्य ब्राह्मणों का बहुत थोड़ा थोड़ा ही लिखा है।

गौड़ शब्द के ऊपर विचार करने व अनुसन्धान करने से हमें भिन्न भिन्न मत व लेख मिले हैं अतः निष्पक्ष भाव से तर्क वितर्क के साथ सब ही मत हमने यहां लिख दिये हैं।

यह गौड़ शब्द गुड़ संकोचने व रक्षायाम धातु से सिद्ध होता है जिस की व्युत्पत्ति इस प्रकार से होती है कि "योदेहेन्द्रियादीनि स्वत-पसा संकोचयति जड़ी करोतीति गुड़ः" अर्थात् जिन ने अपने तप बल द्वारा अपनी ग्यारहों इन्द्रियों को अधर्माचरण से रोक कर धर्म्माचरण में प्रवृत किया है वे "गुड़" कहाये और "गुड़स्यापत्यं गौड़" इस सूत्र से गुड़ की सन्तान गौड़ कहायी।

गौड़ व्युत्पत्ति

परन्तु इस अर्थ में शंका होती है कि "इस में क्या प्रमाण है कि आज कल के प्रसिद्ध गौड़ ब्राह्मणों ने ही अपनी इन्द्रियां पापाचरण से रोकी थीं? और तदर्थ वेही गौड़ ब्राह्मण कहाये अन्य नहीं? अतः इस अर्थ को मानने से यह भी मानना पड़ेगा कि जिन्होंने (कोई भी हों) अपनी इन्द्रियों को पापाचरण से रोक कर धर्म्माचरण में प्रवृत किया वे सब ही गौड़ कहाये, चाहें वे ब्राह्मण हों चाहे अन्य जाति समुदाय हों किन्तु

इस अर्थ के मानने से यह विशेषत्व न रहा कि आज कल के प्रचलित गौड़ ब्राह्मणों ने ही अपनी इन्द्रियों को पापाचरण से रोककर धर्माचरण में प्रवृत कियी और केवल वे ही "गौड़" कहे जाने के अधिकारी हैं अतएव गौड़ शब्द की मीमांसा करना भी एक अत्यावश्यक विषय है क्योंकि जब तक गौड़ शब्द का निर्णय न कर दिया जाय तब तक यह कह देना कि "अमुक नामवाले ब्राह्मण गौड़ हैं व अमुक नामवाले गौड़ नहीं हैं जैसा हम जाति अन्वेषण प्रथम भाग में लिख आये हैं गौड़ शब्द के सम्बन्ध में कई तरह की सम्मतियें मिली हैं परन्तु वे सब ही परस्पर विरुद्ध व विपरीत हैं अतएव ऐसी दशा में हमें निष्पक्ष भाव से

गौड़ मीमांसा

गौड़ शब्द की मीमांसा करना है यद्यपि मैं ग्रन्थ रचयिता भी गौड़वंश सेवक ब्राह्मणों की रज सदृश एक तुच्छ ब्राह्मण हूं तथापि अपने समुदाय की मिथ्या प्रशंसा करना व दूसरे की निन्दा करना उचित न समझकर जैसा कुछ संग्रह व मेरे निश्चय में आया लिखता हूं। मुझे दुख के साथ कहना पड़ता है कि हमारी गौड़ जाति ने अपने को उत्तम व अन्य को निकृष्ट मानने के लिये अपने तंई खैंचा-तानी से स्वात्म प्रशंसा युक्त कल्पनायें करलियी अर्थात् हमारे अन्वेषण में गौड़ शब्द की व्युत्पत्ति कतिपय गौड़ विद्वानों ने उपरोक्त लेखानुसार ही बतलायी है परन्तु ऐसा अर्थ मानने से यह ही गौड़ नामक क्षत्रिय जाति पर भी संघटित हो सक्ता है ऐसी दशा में गौड़ क्षत्रिय व गौड़ ब्राह्मणों में भिन्नता क्या? अतएव स्वात्म प्रशंसा युक्त अर्थ करके व्याकरण के कहीं २ के विद्वानों ने गौड़ शब्द की सिद्धि "गुड़" रक्षायाम् धातु से उपरोक्त सूत्रानुसार अपत्य अर्थ में गौड़ शब्द सिद्ध करा है और उस की व्युत्पत्ति इस प्रकार से बतलायी है कि जिन्होंने वेदों की रक्षा कियी वे गौड़ ब्राह्मण कहाये परन्तु इस अर्थ पर भी उपरोक्त सब शंकायें आरोपित हो सक्ती हैं ऐसी दशा में यह अर्थ स्वीकार नहीं किया जा सक्ता है।

२ मिस्टर C. S. William Crooke B. A. सी.एस विलियम क्रूक बी.ए. ने लिखा है कि बंगाल प्रान्तस्थ मालदा जिले में लख-

नौत एक प्राचीन कसबा है तहां से निकास होने से गौड़ ब्राह्मण कहाये; पर इस पर भी कई शंकायें होती हैं क्या वहां से ब्राह्मणों का ही निकास हुआ जो अन्यत्र जाकर गौड़ कहाने लगगये ? जब वे लखनौत में थे तब क्या कहाते थे ? वहां केवल ब्राह्मण ही थे व अन्य सब जातियें ? ब्राह्मण ही वहां से क्यों निकलें ? आदि आदि अनेकों प्रकार के सन्देह होकर उन की निवृत्ती नहीं हो सक्ती है अतएव यह अर्थ स्वीकार नहीं ॥

४ शक्ति संगम तन्त्र का जो श्लोक हम जाति अन्वेषण प्रथम भाग के पृष्ठ २६३ में लिख आये हैं तदनुसार गौड़ देश की सीमा बंगाल से लेकर कन्या कुमारी तक सब ही गौड़ देश है अतः इतने बड़े देश के ब्राह्मण गौड़ कहाये मानलें तो भी अनेकों शंकायें उठती हैं यथा :-

इतने बड़े देश में आज हजारों जातियें हैं वे सब गौड़ कही जानी चाहियें ? तथा इतने बड़े मुल्क में हजारों ही भेद तो ब्राह्मणों ही के मिलेंगे । जिन में से कईएकों के लिये ऐसे प्रमाण मिले हैं कि गौड़ ब्राह्मण नहीं हैं अतः यह अर्थ भी उचित नहीं जान पड़ता कि इतने बड़े गौड़ देश में केवल ब्राह्मण ही थे ?

५ किसी किसी विद्वान ने हमें यह भी बतलाया है कि जिस देश में गुड़ पैदा हो वह देश गौड़ देश कहाया और उस के ब्राह्मण गौड़ ब्राह्मण कहाये पर यह अर्थ भी ठीक नहीं क्योंकि प्रथम तो थोड़े से मरुस्थल देश को छोड़कर गुड़ सर्वत्र ही पैदा होता है अतः गुड़ पैदा होने से गौड़ देश कहाया हो यह समझ में नहीं आता है क्योंकि इस में यह ही क्या कारण है कि उस देश के ब्राह्मण ही गौड़ ब्राह्मण कहावें और अन्य क्षत्रिय वैश्य, शूद्रादि नहीं । गुड़ तो महाराष्ट्र देश में भी होता है पर उस देश के ब्राह्मण गौड़ नहीं कहाते हैं अतः यह अर्थ भी उचित नहीं है ।

६ अनेकों विद्वानों ने यह भी सम्मति दियी है कि यथार्थ में गोंडा गोरखपुर का ज़िलाही गौड़ देश कहाता है और तहां के ब्राह्मण गौड़ ब्राह्मण कहाये इसको मानने से इस अर्थ पर भी उपरोक्त प्रथम नम्बर १ की सब शंकायें आरोपित होती हैं अतः यह मानने को भी हम असमर्थ हैं।

७ किसी एक विद्वान ने हमारे जाति अन्वेषण के भ्रमण में हमें यह भी अपनी सम्मति दियी है कि "सूर्य्य सोमात्मकं जगत्" अर्थात् सम्पूर्ण सृष्टि सूर्य्य चन्द्र से पैदा हुयी है और सब से प्रथम प्राणी सृष्टि ही पैदा हुयी थी और शास्त्रों में सूर्य का नाम ज्योतिर्विदों ने गोल भी लिखा है जैसे दक्षिणगोल उत्तर गोल अतः इन ब्राह्मणों की संज्ञा भी गोल हुयी इस लिये व्याकरण के सूत्र जिस को हम आगे लिखेंगे ल बदल कर र होगया और फिर र बदल कर "ड़" होजाने से "गौड़" ऐसा सिद्ध होगया और आपा भापी लोग गोड़ को गौड़ भी कहने कहाने लगगये पर इस अर्थ को मानने से ब्राह्मण मात्र गौड़ ठहरते हैं और ब्राह्मण मात्र गौड़ हैं नहीं अतः यह अर्थ स्वीकार नहीं किया जासका है

पाठक वृन्द ! अब आप को यह उत्कण्ठा होगी कि:-

यथार्थ में ब्राह्मणों की गौड़ संज्ञा कैसे हुयी ?

तो इस का उत्तर इस प्रकार से है:-

जब प्राणी सृष्टि उत्पन्न हुयी और बढ़ी तो उन्हें कर्म काण्डादि के लिये वेदों की आवश्यका हुयी तदनुसार उस समय जिस जिस ब्राह्मण समुदाय में जिस२ वेद का प्रचार विशेष हुवा उन२ समुदायों का वही वेद हुवा अर्थात् सब से पहिले ब्राह्मणों की संज्ञा वेदों के नामों पर रक्खी गयी थी जैसे ऋग्वेदी, यजुर्वेदी, सामवेदी, और अथर्ववेदी तथा जिन२ समुदायों में दो दो वेदों का विशेष पठन पाठन व प्रचार रहावे द्विवेदी नाम से प्रख्यात हुये, तीन वेदों के प्रचारवाले त्रिवेदी कहाये और जिन समुदायों में चारों ही वेदों से कार्य्य लिया जाता था वे चतुर्वेदी कहाये इस ही तरह कुछ ब्राह्मण समुदायों की संज्ञा उनके यज्ञादि कर्मों के नामों से पड़ी जैसे जिन्होंने वाजपेयी यज्ञ कीया व कराया वे वाजपेयी कहाये जो दीक्षा दिया करते थे वे दीक्षित कहाये, जो व्यवस्था देनेवाले थे वे व्यवस्थी कहाते कहाते अवस्थी कहाये जो यज्ञ में होता के पद पर विराजा करते थे वे होत्री कहाये, जो नित्य अग्निहोत्र किया करते थे वे अग्निहोत्री कहाये इत्यादि इस ही तरह सृष्टि के आदि में ब्राह्मणों की संज्ञाये इन नामों से बंधी थी यदि कोई कहे कि यही ब्राह्मणों की संज्ञा

तो उन के देश व निवास के कारण से पड़ी हैं पर यह ठीक नहीं क्यों कि सृष्टि के पैदा होते ही आज कल की तरह गांव, शहर व कसबे नहीं थे किन्तु उस समय तो ऋषियों के आश्रम रहे आकर गांव व शहर तथा कसबों-कासा कार्य लिया जाता था श्रीमद्भागवतादि ग्रन्थों से भी पता लगता है कि पहिले गांव व शहर तथा आजकल की तरह कस्बे नहीं थे वरन जहां कहीं लेख मिले हैं तहां यह ही मिले है कि अमुक राजा व अमुक पुरुष अमुक ऋषि के आश्रम को गये, यह कहीं नहीं लिखा है कि अमुक ऋषि अमुक गांव को गया अतएव ऋग्वेदी, चतुर्वेदी त्रिवेदी, द्विवेदी, होता आदि आदि संज्ञायें ब्राह्मणों की प्राचीनतम हैं तदनुसार ब्राह्मणों में उस समय जिन्हों ने यजुर्वेद को ग्रहण किया वे यजुर्वेदी कहाये परन्तु यजुर्वेद भी दो प्रकार का है कृष्ण यजुर्वेद तथा शुक्ल यजुर्वेद, अर्थात् कृष्ण नाम काला तम, हिंसा व अंधकार का है अतः उन यजुर्वेदी ब्राह्मणों में जो तमोगुण प्रधान ब्राह्मण थे वे तो केवल "यजुर्वेदी" कहाये परन्तु जो लोग शुक्ल यजुर्वेद के यानी अहिंसा धर्म के मानने वाले थे वे शुक्ल यजुर्वेदी कहाये शुक्ल नाम गौर का, स्वच्छ का व उज्वल का है अतः जिन ब्राह्मणों में शुक्ल यजुर्वेद यानी गौर यजुर्वेद का विशेष प्रचार था उनकी गौर ब्राह्मण संज्ञा हुयी और गौर शब्द से गौड़ शब्द होगया अर्थात् व्याकरण में एक यह नियम है कि:-

रलयोःडलयो श्चैव सषयो ववयो स्तथा।
वदन्तेषाञ्च सावर्ण्यम् रलंकार विदोजना ॥

इसही के अनुसार र का ड भी हो सक्ता है अतः "गौर" शब्द का "गौड़" होगया, और गौर ब्राह्मण, गौर ब्राह्मण कहाते कहाते गौड़ ब्राह्मण प्रसिद्ध हुये।

जैसा ऊपर लिखि आये हैं कि पहिले न तो आज कल की सी घनी सृष्टि थी और न गांव कसबे, पुरवे, ढाणी व शहर थे अतएव जब मैथुनी सृष्टी का फैलाव फैला और सब ही तरह के बुरे व भले ब्राह्मण होने लगे तब ऋषियों ने सांसारिक आवश्यकताओं को पूरी करने के लिये वर्णाश्रम परिपाटी स्थापित किये और तब उस समय के राजा

ने अपने प्रबंध के अनुसार उन समुदायों को एकर बड़े विस्तृत स्थान में रहने के लिये आदेश किया अतः तदनुसार जिस देश में उपरोक्त गौड़ ब्राह्मणों ने अपना निवास स्वीकार किया उन की ही स्मृती में उस देश का नाम गौड़ देश कहाया तदनुसार आधुनिक इतिहास वेत्ताओं ने ऐसी कल्पना कियी कि :-

गौड़ देशोद्भवा गौड़ाः

अर्थात् गौड़ देश में उत्पन्न होने से गौड़ संज्ञा ब्राह्मणों की हुयी उस की पुष्टि में गौड़ निबन्ध में लिखा है कि :—

गौड़ देशा वसेत् विप्रा, गौड़ इति प्रथांगता ।

गौड़ निबन्धे

अर्थात् गौड़ देश में निवास होने के कारण ब्राह्मणों की 'गौड़ ब्राह्मण' संज्ञा हुयी ।

इसही श्लोक को पण्डित हरिकृष्ण वेंकटराम जी ने अपने जाति निबंध में भी लिखा है । इसही तरह ज्यों २ ग्रन्थों की रचना बढ़ने लगी त्यों २ विद्वान लोग सबही तरह की वार्त्ताओं को लेख में लाने लगे ।

जब हम जाति अन्वेषण के अर्थ देश देशान्तर में भ्रमण करते फिरते थे तब आगरा निवासी पं० रामदेव जी मंत्र शास्त्री ने निम्न लिखित श्लोक लिखवाया था :—

नारायणात्पद्मभवं वसिष्ठं ।
शक्तिञ्च तत्पुत्र पराशरंच ॥
व्यासं शुकंगौड़ पदं महान्तम् ।
पद्मंच हस्ता मलकंचशिष्यं ॥
तत्रोटकं वार्तिक कारमन्या ।
मस्मद्गुरू सन्तति मान्तोस्मि ॥

जन्मेजयदिग्विजये ।

नारायण से वसिष्ठ पैदा हुये तिस का पुत्र शक्ति, पौत्र पराशर, तथा प्रपौत्र वेदव्यास पुराणों के रचयिता तिस का पुत्र शुकदेव जी, तथा शुकदेव जी का पुत्र गौड़ हुआ।

इस ही श्लोक की एक दो पंक्तियों में थोड़ा सा भेद करके आदि गौड़ प्रदीपिका के पृष्ठ २६ में पंडितवर्य्य गंगा जीवन शर्म्मा तथा षट शास्त्री स्वामी केशवानन्द जी ज्ञानेन्द्र ने भी लिखा है। यथा :—

नारायणं पद्मभवं वसिष्ठं।
शक्तिञ्च तत्पुत्र पराशरञ्च॥
व्यासं शुकं गौड़ पदं महान्तम्।
गोबिन्द योगीन्द्र मथास्य शिष्यम्॥

भावार्थ—तो ऊपर के सदृशही जानना चाहिये।

इस ही की पुष्टि ब्रह्मवैवर्त पुराण से यों होती है कि :—

वसिष्ठस्य सुतः शक्तिः शक्तेपुत्र पराशरः।
पराशर सुतः श्रीमान् कृष्णद्वैपायनोहरिः॥
व्यास पुत्रः शिवांशश्च शुकश्च ज्ञानिनावरः।

ब्रह्मवै० पु० ब्रह्मखंड अ० १०

वसिष्ठ का पुत्र शक्ति, शक्ति का पुत्र पराशर, पराशर का पुत्र कृष्ण द्वैपायन, तिस का पुत्र व्यास, व्यास का पुत्र शुकदेव हुआ।

और शुकदेव जी के एक गौड़ ऋषि हुये जिन के वंशज गौड़ ब्राह्मण कहाये।

नदिया शान्तिपुर के पण्डित कालेज के प्रधान ऐसा लिखते हैं कि :—

The original home of the Gaur Brahmins is Kurukshetra country. The Gaurs say that the other main Divisions of North Indian Brahmins were Gaur and have acquired their present designations of Saraswat, Kanyakubja Maithal, Utkal

by immigrating to the provinces where they are now domiciled. ( H. C. S. page 53 )

श्रीमान् मान्यवर पंडित योगेन्द्रनाथ भट्टाचार्य्यजी प्रेसीडेन्ट पंडित संस्कृत कालेज नदिया अपने ग्रन्थ के पृष्ठ ५३ में लिखते हैं कि गौड़ ब्राह्मणों का आदि निकासस्थान कुरुक्षेत्र है क्योंकि गौड़ों का कथन है कि उत्तरी भारत के चारों ब्राह्मण यानी सारस्वत, कान्यकुब्ज, मैथिल, और उत्कल ये अपने २ निवासस्थानों के कारण प्रसिद्ध हुये और पञ्च गौड़ नाम से कहाये यद्यपि ये सब गौड़ हैं परन्तु देश व निवासस्थानों के भेद के कारण इन गौड़ों के नाम ही अलग होगये अर्थात् सरस्वती नदी के किनारे २ के रहने वाले गौड़ सारस्वत, कान्यकुब्ज देश में जो जाकर बसे वे गौड़ कान्यकुब्ज, मिथला में जो जाकर बसे वे मैथिल, उड़ीसा प्रान्त में जो जाकर बसे वे गौड़ उत्कल, और जो गौड़ देश बंगाला में जाकर बसे वे गौड़ कहाये, परन्तु जो गौड़ ब्राह्मण अपने आदिस्थान कुरुक्षेत्र में बनेरहे वे आदि गौड़ कहाये क्योंकि लिखा भी है कि :—

सारस्वता कान्यकुब्जा गौड़ा उत्कल मैथिला ।
पञ्चगौड़ समाख्याता विन्ध्यस्योत्तरवासिना ॥

स्कन्द पुराणे

इस का भावार्थ तो ऊपर कहाही जाचुका है वैसा जानना चाहिये, यदि आदि गौड़ों का विवर्ण जानना हो तो हम पूर्व ही इस प्रकरण को लिख आये हैं तहां देख लेना ।

गौड़ों की उत्तमता का परिचय सम्पूर्ण प्रसिद्ध २ तीर्थस्थानों के अतिरिक्त काशीक्षेत्र से मिलता है कि जहां गौड़ स्वामी की गद्दी है जिसको सन्यस्थ गद्दी भी कहते हैं तहां ही से सन्यास दिया जाता है भूतपूर्व महामहोपाध्याय राममिश्र शास्त्री जी भी काशी के महाविद्वानों में एक अद्वितीय विद्वान थे । यह सर्व सम्मत से सिद्ध है कि इस जीवात्मा के लिये सन्यासाश्रम सम्पूर्ण आश्रमों में बड़ा माना गया है क्योंकि मुक्ति तक की प्राप्ति भी सन्यास बिना नहीं होसकती है यथाः—

ओं यो ब्रह्माणं विदधाति पूर्वं योवै वेदांश्च प्रहिणोति तस्मैत ँ ह देव मात्म बुद्धि प्रकाशं मुमुक्षुर्वै शरणमहं प्रपद्ये ॥

भा०—परमात्माने सम्पूर्ण मनुष्यों के पूर्व ब्रह्मा को वेद का उपदेश करके उत्पन्न किया उस प्रकाशक की शरण मुमुक्षुगण जाते हैं अतएव सन्यास द्वारा मोक्ष की इच्छा करने वाले मुमुक्षुजन काशी की प्राचीन गौड़ सन्यस्थ गद्दी काही जाकर आश्रय लेते हैं।

पुनः देखिये :—

The majority of Gaurs are strict abstainers from animal food and intoxicating drinks. Some of the Gaurs keep the sacred fires and occassionally celibrate some of Vedic sacrifices.

(H C S 53)

भाषा :– विशेष कर गौड़ ब्राह्मण मांस व शराब से बहुत ही परहेज़ करनेवाले हैं अर्थात् उस के स्पर्श व दर्शन में भी दोष मानते हैं किन्हीं २ गौड़ों के घर में गार्हपत्याग्नि मिलती है और समय २ पर ये वैदिक यज्ञ करते रहते हैं।

महाराष्ट्र विद्वान स्वर्गवासी पं० हरिकृष्ण वंकटराम जी शास्त्री ने गौड़ों के विषय में अपने जाति निबंध ग्रन्थ में ऐसा लिखा है :–

गौड़वंशं प्रवक्ष्यामि यथा चौर्य्यैः प्रभाषितम्<br>
जनमेजय नामावै राज्ञाधर्म्मपरायणाः।<br>
नीतिमान् सत्यसंधश्च वेदशास्त्रं विचक्षणः ॥१॥<br>
आर्य्यावर्ते च निवसन् पालयन् धर्म्मतःप्रजाः।<br>
वटेश्वरं मुनिवरं शिष्यवृंदैः समन्वितं ॥२॥<br>
यज्ञंकर्तुं समाहूय वेदभ्यर्थींदु १४४४ संमितैः।<br>
ततः परम संतुष्टो राजायज्ञं चकारह ॥३॥

देवर्षीनस्तोपयामास पूजास्तुत्यभिवंदनैः ।
चक्रे दानान्य नेकानि तोपयामास भूसुरान् ॥४॥
चकारावभृथस्नानं गुरुं नत्वातिभक्तितः ।
महापूजां चकारादौ दक्षिणां दातुमुद्यतः ॥५॥
हदास ऋषिराद् नैव प्रतिग्रहमथाकरोत् ।
आज्ञां गृहीत्वानृपते स्वदेशगमनंप्रति ॥६॥

अर्थ-पूर्वकाल में जन्मेजय नामक एक राजा बड़ा धर्मात्मा नीतिमान्, सत्यवक्ता और वेद शास्त्र में पारंगत था ॥ १ ॥ आर्य्यावर्त्त में निवास करता था और अपनी प्रजा को धर्म्म के साथ पालन करता था और मुनियों में श्रेष्ठ वटेश्वर मुनि आदि गौड़ों का गुरु था ॥ २ ॥ जिसके १४४४ शिष्य थे ऐसे तेजस्वी वटेश्वर मुनि को राजा जन्मेजय ने अपने सम्पूर्ण शिष्य वर्गों सहित यज्ञ कराने को बुलाया था और अन्य देवर्षि ब्राह्मणों को भी बुलाये थे तब वटेश्वर मुनिने एक हजार चारसौ चवालीस अपने आदि गौड़ शिष्यों सहित राजा का यज्ञ कराया और इस पर राजा बड़ा प्रसन्न हुवा ॥ ३ ॥ इस के अनन्तर राजा ने सम्पूर्ण आये हुये देव, ऋषि और ब्राह्मणों को अनेकों प्रकार के दान मान और दक्षिणा से सन्तोषित किया ॥ १४ ॥ तत्पश्चात राजा अवभृथ स्नान करके गुरु के चरणों में अति दीन भाव से नमस्कार करके गुरु का महापूजन किया और गुरु को दक्षिणा देने की तय्यारियां करने लगा ॥ ५ ॥ तब वटेश्वर मुनि ने राजप्रतिग्रह लेना अस्वीकार कर अपने आश्रम व स्वदेश को जाने के लिये राजा से आज्ञा प्राप्त कियी ॥ ६ ॥

जब मुनि राजा की आज्ञा ले अपने शिष्यवर्गों सहित स्वदेश गमन में प्रवृत्त हुवे तो धर्मज्ञ राजा ने सोचा कि किस विधि से मुनि का व उन के शिष्यवर्गों का सत्कार करूं? तब उस के चित्त में यह विचार आया कि १४४४ ग्राम दान करने चाहिये सो उस ने प्रत्येक गांव का दान पत्र लिख २ कर पान की बीड़ियों में बंधवा कर ऋषि को अपने

शिष्य वर्गों सहित चलते समय पान देना निर्धारित किया जैसा लिखा है कि :-

निर्गताश्चतदाराजा, चैकैकं ग्राममुत्तमम् ।
लिखित्वा वीटिकामध्ये, स्थापयित्वाचपत्रकं ॥ ७ ॥
एकैकं प्रददौभक्त्या मुनि शिष्येभ्य एवच ।
तेतुताम्बूलिकं मत्वा गृहित्वा प्रेमपूर्वकं ॥ ८ ॥
नदीतटं समायाता गंभीर जलपूरितं ।
जलमध्येयदापादौ संस्थाप्यगमनंप्रति ॥ ९ ॥
मतिं चक्रुस्तदापादौ मग्नौतस्या जलेततः ।
पूर्वं जल प्रतरणञ्च कृत्वापादेन चागताः ॥ १० ॥

अर्थ :- तब राजाने एक२ उत्तम गांव की चिठ्ठियें लिख २ कर एक एक दान पत्र को एक एक पान की बीड़ी में रखकर उन जाते हुये मुनि के शिष्यों को ॥७॥ वह पान की एक एक बीड़ी परमभक्ति से दियी तिस को उन शिष्यों ने, साधारण पान बीड़ी समझकर प्रेमपूर्वक ग्रहण करलियी ॥८॥ तत्पश्चात वे सब शिष्य अपने गुरु बटेश्वर मुनि के साथ चले मार्ग में एक बड़ी नदी मिली और जब उस को पारकरने को पैर रखने लेगे तो सब के पैर पानी में डूबने लगे, यह दशा देखकर वे परस्पर विचार करने लगे कि यह क्या हुआ ? तदर्थ पान बीड़ी खोल कर देखने से वह गुप्त रहस्य सब पर प्रकट हुआ और अपने अपने मिले हुये गांवों के नाम से गौड़ों की अल्ल प्रसिद्ध हुयीं ॥१०॥
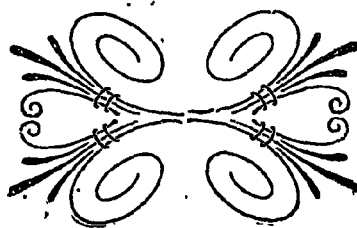
# गौड़ ब्राह्मणों के भेद

गौड़ाश्च द्वादश प्रोक्ता कायस्थास्तावदं वहि ।
तत्रादौ मालवी गौड़ श्रीगौड़ाश्चततःपरम् ॥४०॥
गंगातटस्थ गौड़ाश्च हर्याणा गौड़एवच ।
वाशिष्ठाः सौरभाश्चैव दाल्भ्य सुखसेनकाः ॥४१॥
भट्ट नागर गौड़ाश्च तथा सूर्य द्विजाह्वयाः ।
माथुराख्यास्तथा गौड़ा वाल्मीकि ब्राह्मणास्ततः॥४२॥

बृहज्जयोतिषार्णव मिश्रस्कन्ध श्लो० ४०, ४१, ४२

अर्थात् जैसे बारह तरह के कायस्थ होते हैं वैसे ही बारह तरह के गौड़ भी हैं। यथा :-

१ माल्वीगौड़ २ श्रीगौड़ ३ गंगापुत्रगौड़ ४ हर्याणा गौड़ ५ वाशिष्ठ गौड़ ६ सौरभ गौड़ ७ दाल्भ्य गौड़ ८ सुखसेन गौड़ ९ भट्टनागर गौड़ १० सूर्य्यद्विज गौड़ ११ माथुर गौड़ प्रसिद्ध नाम मथुरा के कडवे व मीठे चौबे और १२ वाल्मीकि गौड़ ।

इन १२ के अतिरिक्त जयपुर महाराजा सवाई जयसिंह जी के समय में यह निर्णय हुआ था कि :-

पराशरः प्रथमकस्तस्मात्पारीख ब्राह्मणाः ।
सारस्वतो द्वितीयस्तु तस्मात्सारस्वताद्विजाः ॥१॥
ग्वाला ऋषिस्तृतीयोभूत तस्माद्गौड़ा द्विजेन्द्रकाः।
चतुर्थो गौतमः पुत्रस्तस्माद्गुर्जर गौड़काः ॥२॥

भृङ्गिपुत्रः पञ्चमोऽस्माच्छिखवाला द्विजातयः ।
दध्यङ्कुलसमद्भूता ये द्विजा पूर्वमीरिता ॥

ब्रा० मा० पृष्ठ ४५१

अर्थः—ब्रह्माजी के पुत्र पाराशर से पारीख पिरोहित, सारस्वत पुत्र से सारस्वत ब्राह्मण, ग्वाला पुत्रसे गौड़ ब्राह्मण, गौतम ऋषि से गूजर गौड़ ब्राह्मण, शृंगी ऋषि से सिखवाल ब्राह्मण तथा दध्यंग ऋषि से दधीचि यानी दाहिमे ब्राह्मण प्रसिद्ध हुये, येही छन्याति ब्राह्मण कहाये।

इन छहों का कच्चापक्का यानी सखरा निखरा भोजन व्यवहार एक है अतएव उपरोक्त १२ व ६ ये मिलाकर १८ भेद गौड़ ब्राह्मणों के हुये।

इन के सिवाय ३७ प्रकार के गौड़ों की सूची हमारी रची जाति अन्वेषण प्रथम भाग नामक पुस्तक में भी दियी गयी है तहां देख लेना,

Mr. C. S. William Crooke B.A. Late Collector of Fyzabad मिस्टर सी.एस विलियम क्रूक बी.ए. भूतपूर्व कलेक्टर फयजाबाद ने अपनी पुस्तक जिल्द दुसरी के पृष्ठ ३९५ में गौड़ों के १० भेद लिखे हैं।

See Doctor J. Wilsons Indian Castes Vol. II page 159, (१) देखो डाक्टर जे विलसन की रची भारतवर्ष की जातियें नामक पुस्तक जिल्द २री पृष्ठ १५९ में तथा (१) Mr. C. S. W.C.B.A. 'Tribes and Castes Vol. II page 395' (२) मिस्टर सी. एस. डबल्यू. सी. बी. ए. रचित "कौम और जातियं" जिल्द २री पृष्ठ ३९५।

इन उपरोक्त दोनों ग्रन्थों में गौड़ ब्राह्मणों के जहां भेद दिखलाये हैं तहां सनाढ्य ब्राह्मणों को भी गौड़ ब्राह्मणों का एक भेद बतलाया है, अर्थात् ग्रन्थकार लिखते हैं यथा :-

| | |
|---|---|
| १ गौड़ या केवल गौड़ | ६ गूजर व गुर्जर गौड़ |
| २ आदि गौड़ | ७ टेकबारा गौड़ |
| ३ शुकुलवाल गौड़ | ८ हरियाना गौड़ |
| ४ सनाढ्य गौड़ | ९ किरंतानिया गौड़ |
| ५ श्री गौड़ | १० शुक्ल गौड़ आदि, आदि. |

इस आधार से प्रमाणित होता है कि सनाढ्य ब्राह्मण भी गौड़ ही ब्राह्मण हैं इस ही तरह भूमिहार कान्यकुब्ज, पल्लीवाल और तगा ब्राह्मण भी गौड़ ब्राह्मणों के ही भेद हैं इस विषय के प्रमाण प्रत्येक के अलग अलग इन्हीं जातियों के साथ लिख दिये वहां देख लेना।

मिस्टर सर एच. एम. इलियट Sir H. M. Elliot साहब बहादुर ने अपनी supplementry glossary में मुख्य गौड़ों की नामावलि में :—

१ आदि गौड़ २ जुगाद गौड़ ३ पैथिल गौड़ ४ धर्म गौड़ ५ सिखवाल गौड़ ६ पारीख गौड़ ७ खंडेलवाल गौड़ और ८ सारस्वत गौड़ ये आठ तरह के लिखे हैं।

पुनः

Honourable Mr. H. H. Risly Census commissioner of Bengal आनरेबल मिस्टर एच एच रिसली कमिश्नर मनुष्य गणना विभाग बंगाल ने अपने जाति विषयक ग्रन्थ की जिल्द प्रथम के पृष्ठ १४४ में गौड़ ब्राह्मणों के ये भेद और लिखे हैं :—

१ राढ़ी २ वारेन्द्र ३ वैदिक, ४ सप्तशती और ५ मध्य श्रेनी।

मनुष्य गणना रिपोर्ट में बंगाल प्रान्तस्थ गौड़ ब्राह्मणों के ५८ भेद और लिखे हैं।

इन ही उपरोक्त पांच भेदों को Mr. C. S. William Crooke B.A. Late collector of Unao & Shaharanpore मिस्टर सी. एस. विलियम कुक बी. ए. भूतपूर्व कलेक्टर उन्नाव व सहारनपुर भी अपनी पुस्तक जिल्द १ली के पृष्ठ १४८ में भी लिखते हैं।

गौड़ों के अनेकों भेदों के साथसाथ उपभेद भी अनेकों ही होगये तहां अल्ल व अवटंकों की तो गिनती बढ़ते बढ़ते १४४४ होगयी जिन को कहीं कहीं लोग सासन कहकर भी पुकारते हैं परन्तु उन सब सासनों में से कुछेक ग्रामभेदों के कारण से, कुछेक उन के कार्य्य क्रम के कारण से पड़े प्रतीति होते हैं जैसे इन्दोरख ग्राम से निकास के कारण इन्दोरिया खुडाणा ग्राम के निकास से खुडाणिया, वाबल

गौड़ों के भेद उपभेद
व
अल्ल टंकादि

से निकास होने के कारण बावलिये * मंडोर से निकास होने के कारण मंडोरिया, गगावर के गंधरा, सुरोला ग्राम से सुरोलिया, बुवारु के बुवारया, खेड़ी के खेड़ीवाल, सरसोला के सरसोलिया, कानोड के कानोडिया, नारनौल के नारनौली, पाटन के पाटनिया, हरिताश्व के हरितवाल, चोमू के चोमूवाल, पालु के पालुका, नारेहड़ा के नारेड़या पाली के पल्लीवाल, सिरोली के सिरोलिया, इत्यादि कुछ अपने

कुछ वंश भेरों से

किसी प्रतापी पुरुष के नाम से कहे जाने लगे जैसे ईश्वाजी के वंश वाले ईश्वावत, और टीला जी महाराज के वंश वाले टीलावत, नीमजी महाराज के वंशवाले नीमावत, खीम जी महाराज के वंश वाले खीमावत इत्यादि इत्यादि।

इस ही तरह *कुछ अल्ल व टंक या बंक धन्दे व पेशे के कारण से*

कुछ आजीविका व धन्दे से

पड़ गये हैं जैसे टांडा के लादने से टंडी, कथा बांचने से व्यास, लड़के पढ़ाने से जोषी, यजमान के यहां से पीले टके का दान लेने से पिरोहित व प्रोत अथवा पिरोत, वेद का पाठ करने से वेदिया, झाड़ा, फूंकी, मंत्र, जंत्र, तंत्र विद्या के करने से ओझा, कर्मकाण्ड कराने से भट्ट, मंदिरों की पूजा करने के कारण पुजारी, लेन देन करने से बोहरे, दासत्व करने के कारण दास, बस्ती खेड़े के छोटे २ मामलों की चौधरायत करने से चौधरी, ग्राम पंचायत व परस्पर रगड़े झगड़ों को निबटाने के कारण पटैल, गुरुदीक्षा देकर शिष्य बनाने के कारण दीक्षित, गांव में विवाह शादी कर्म काण्डादि कृत्य कराने के कारण मिश्र, छात्रों को वेद पढ़ाने के कारण उपाध्याय जिस का अपभ्रंश पाधा रह गया है। गांव व परगने जागीर में होने के कारण महाराज व ज़िमीदार, नम्बरदारी होने कारण नम्बरदार, जोहरायत का काम करने जौहरी, चारों वेदों को पढ़ने से चतुर्वेदी, तीन वेदों के ज्ञाता होने से त्रिवेदी, दो वेदों के ज्ञाता होने से द्विवेदी, साम वेद के ज्ञाता होने से साम वेदी, यजुर्वेद से यजुर्वेदी, ऋग्वेद से ऋग्वेदी, अथर्व वेद से अथर्व वेदी, स्मृती धर्म शास्त्रों के ज्ञाता होने से स्मार्त, पुराणों के ज्ञाता होने से

* ग्रन्थकर्त्ता भी बावलिया मिश्र है।

पौराणिक, भागवत की कथायें बांचने के कारण भागवती व भागोती और वेद, वेदांग तथा उपांगों के ज्ञाता होने के कारण श्रोत्रिय कहाते हैं।

जब हम देश देश में जाति अनुसन्धान करते घूम रहे थे तब नारनौल नगर में एक वृद्ध गौड़ महात्मा ने हमें यह श्लोक लिखवाया था कि:-

गौड़ा विष्णु परायणा श्रुतिधराः विप्रायजुर्वेदकाः। शाखा वाजसनेयका त्रिप्रवरं सूत्रंच कात्यायिनी॥ आदेशा जन्मेजयश्च नृपते लब्धातदा सासना। ग्रामास्ते चतुर्दशेनशतका दत्ताश्चतेभ्यः स्वधाः॥

अर्थः—गौड़ ब्राह्मण विष्णु पारायण हैं, श्रुति नाम वेद को पढ़ने वाले हैं, यजुर्वेदी हैं इन का कात्यायिन सूत्र है, राजा जन्मेजय ने यज्ञ कराकर दक्षिणा में १४४४ ग्राम गौड़ों को दिये थे, सो जो जो गांव जिस २ कुल को मिला उस ही के नाम से कुल कहलाये जो आज कल सासन कहाते हैं।

**११८ गौतमः-** इस नाम के ब्राह्मण व क्षत्रिय दोनों ही हैं और दोनों ही के विषय जाति अन्वेषण प्रथम भाग पृष्ठ २६३ में लिखा जाचुका है शेष गुर्जर गौड़ जाति के साथ इस ही ग्रन्थ में लिखा है, तहां देख लेना।

**११९ गोलकः-** यह एक ब्राह्मण जाति है इस को रंडगोलक भी कहते हैं अतएव इनका विवर्ण रंडगोलक स्थम्भ में इस ही ग्रन्थ में लिखा है तहां देख लेना।

**गोलापूरबाः-** इन ब्राह्मणों का विवर्ण जाति अन्वेषण प्रथम भाग पृष्ठ २५७ में लिख आये हैं।

**१२० गंगारीः-** इस के बारे में जाति अन्वेषण प्रथम भाग पृष्ठ २७० में देखिये।

**१२१ गंगापुत्रः-** जा० अ० पृष्ठ २६८ में लिख आये हैं ।

**१२२ गंगोली:-** यह बंगाली ब्राह्मण जाति का एक कुल नाम है इन के विषय में जा० अन्वेषण प्रथम भाग पृष्ठ २६८ में लिखआये हैं

**१२३ गंधरवालः-** जाति अन्वेषण प्रथम भाग पृष्ठ २७१ में लिख आये हैं ।

**१२४ गंधर्व गौड़ः-** यह गौड़ ब्राह्मणों की जाति का एक भेद है इन के विषय जाति अन्वेषण में भी लिख आये हैं ।

**१२५ घोघरियाः—**यह एक ब्राह्मण जाति है ये लोग युक्त प्रदेश में हैं परन्तु इन का विवर्ण सन्तोष जनक नहीं मिला अतः यह विषय बिचाराधीन है ।

**१२६ चक्रवर्त्तीः—**यह एक बंगाली ब्राह्मणों की जाति का कुल नाम है इस का शब्दार्थ तो ऐसा होता है कि जिस का स्वत्व व प्राधान्यता सम्पूर्ण पृथिवी तल पर है वह चक्रवर्ती कहाता है यह शब्द प्रचलित दशा में राजावों के प्रति प्रयोग होता है अर्थात् जिस के आधीन पृथ्वी भर के राजे महाराजे व महाराजाधिराज हों वह चक्रवर्ती कहाता है इसही तरह यह ही प्रभुत्व रखता हुआ यह नाम आज कल बंगाल प्रान्तस्थ ब्राह्मण जाति में भी है अर्थात् पूर्व काल में राजा बलसेन के समय में जिस ब्राह्मण कुल की प्राधान्यता सम्पूर्ण ब्रह्मवंश पर थी वह वंश चक्रवर्ती कहाया था उस वंश में यद्यपि पूर्व-

पौराणिक, भागवत की कथायें बांचने के कारण भागवती व भागोती और वेद, वेदांग तथा उपांगों के ज्ञाता होने के कारण श्रोत्रिय कहाते हैं।

जब हम देश देश में जाति अनुसन्धान करते घूम रहे थे तब नारनौल नगर में एक वृद्ध गौड़ महात्मा ने हमें यह श्लोक लिख याया था कि:-

गौड़ा विष्णु परायणा श्रुतिधराः विप्रायजुर्वेदकाः । शाखा वाजसनेयका त्रिप्रवरं सूत्रंच कात्यायिनी ॥ आदेशा जन्मेजयश्च नृपते लब्धातदा सासना । ग्रामास्ते चतुर्दशेनशतका दत्ताश्चतेभ्यः स्वधाः ॥

अर्थः—गौड़ ब्राह्मण विष्णु परायण हैं, श्रुति नाम वेद को पढ़ने वाले हैं, यजुर्वेदी हैं इन का कात्यायिन सूत्र है, राजा जन्मेजय ने यज्ञ कराकर दक्षिणा में १४४४ ग्राम गौड़ों को दिये थे, सो जो जो गांव जिस २ कुल को मिला उस ही के नाम से कुल कहलाये जो आज कल सासन कहाते हैं।

११८ गौतमः- इस नाम के ब्राह्मण व क्षत्रिय दोनों ही हैं और दोनों ही के विषय जाति अन्वेषण प्रथम भाग पृष्ठ २६६ में लिखा जाचुका है शेष गुर्जर गौड़ जाति के साथ इस ही ग्रन्थ में लिखा है, तहां देख लेना।

११९ गोलकः- यह एक ब्राह्मण जाति है इस को रंडगोलक भी कहते हैं अतएव इनका विवर्ण रंडगोलक स्थम्भ में इस ही ग्रन्थ में लिखा है तहां देख लेना।

गोलापूरवः- इन ब्राह्मणों का विवर्ण जाति अन्वेषण प्रथम भाग पृष्ठ २५७ में लिख आये हैं।

१२० गंगारीः- इस के बारे में जाति अन्वेषण प्रथम भाग पृष्ठ २७० में देखिये।

**१२१ गंगापुत्रः**- जा० अं० पृष्ट २६८ में लिख आये हैं।

**१२२ गंगोली**:- यह बंगाली ब्राह्मण जाति का एक कुल नाम है इन के विषय में जा० अन्वेषण प्रथम भाग पृष्ठ २६८ में लिखआये हैं

**१२३ गंधरवाल**:- जाति अन्वेषण प्रथम भाग पृष्ट २७१ में लिख आये हैं।

**१२४ गंधर्व गौड़**:- यह गौड़ ब्राह्मणों की जाति का एक भेद है इन के विषय जाति अन्वेषण में भी लिख आये हैं।

**१२५ घोघरिया**:—यह एक ब्राह्मण जाति है ये लोग युक्त प्रदेश में हैं परन्तु इन का विवर्ण सन्तोष जनक नहीं मिला अतः यह विषय विचाराधीन है।

**१२६ चक्रवर्त्ती**:—यह एक बंगाली ब्राह्मणों की जाति का कुल नाम है इस का शब्दार्थ तो ऐसा होता है कि जिस का स्वत्व व प्राधान्यता सम्पूर्ण पृथिवी तल पर है वह चक्रवर्ती कहाता है यह शब्द प्रचलित दशा में राजावों के प्रति प्रयोग होता है अर्थात् जिस के आधीन पृथ्वी भर के राजे महाराजे व महाराजाधिराज हों वह चक्र-वर्ती कहाता है इसही तरह यह ही प्रभुत्व रखता हुआ यह नाम आज कल बंगाल प्रान्तस्थ ब्राह्मण जाति में भी है अर्थात् पूर्व काल में राजा बलसेन के समय में जिस ब्राह्मण कुल की प्राधान्यता सम्पूर्ण भ्रमवंश पर थी वह वंश चक्रवर्ती कहाया था उस वंश में यद्यपि पूर्व-

काल की सी सर्व गुण सम्पन्नता तो नहीं रही तथापि विद्या का कुछ न्यून व अधिक प्रचार तो इस जाति में अब भी है इस ही कुल में बाबू यादव चन्द्र एम० ए० गणित विद्या के एक प्रसिद्ध प्रोफेसर हैं जिन्हों के नाम पर चक्रवर्ती अरिथमेटिक ग्रन्थ आजकल सर्वत्र आदरणीय है ।

१२७ चट्टोपाध्याय—यह नाम दो शब्दों के योग से बना है चट्ट और उपाध्याय, ये दोनों मिलकर चट्टोपाध्याय हुये जिस का शब्दार्थ चट्ट नामक ग्राम का उपाध्याय ऐसा होता है दूसरे अर्थ में बंगाल के राढ़ी ब्राह्मणों का एक कुल नाम है, राजा बल्लालसेन ने जिस उपाध्याय को चट्ट नामक ग्राम दान में दिया था वह कुल चट्टोपाध्याय कर के प्रसिद्ध हुआ । इस नाम के उपाधिधारी ब्राह्मण विद्वान बंगाल में विशेष रूप से हैं ।

१२८ चातुर्वेदी ब्राह्मण:—यह एक ब्राह्मण जाति है पूर्व काल में जो लोग चारों वेदों के ज्ञाता विद्वान होते थे उन्हें प्रतिष्ठा स्वरूप में यह "चातुर्वेदी" पद मिलता था, राजा भोज के समय तक यह प्रथा थी कि जो लोग चारों वेदों की परीक्षा देकर पास होजाते थे उन्हें राज विद्या सभा की ओर से चातुर्वेदी की पदवी मिलती थी, आज कल की तरह उस समय ऐसा नहीं होता था कि एक मूर्ख से मूर्ख लट्ठ गंवार भी अपने को चातुर्वेदी कह सके, भाषा भाषी लोग इस चातुर्वेदी शब्द को चतुर्वेदी भी कहने कहाने लग गये इन्हीं शब्दों का बिगड़ा हुआ रूप चौबे है ।

इस चातुर्वेदी शब्द में दो शब्द हैं चतुर और वेदी अथवा चातुर और वेदी जिन का मिल कर चातुर्वेदी व चतुर्वेदी हो गया जिस का अर्थ भी "चारवेदी" ऐसा होता है अर्थात् चारों वेदों का जानने वाला जो है व चतुर्वेदी व चातुर्वेदी कहाया ।

जिस समय इस देश में संस्कृत का प्रचार था तब उस समय के संस्कृतज्ञ विद्वानों ने प्रायः अपने अपने ग्रन्थ भी सूक्ष्मतम रूप से सूत्रों में लिखे हैं क्योंकि संस्कृत व्याकरण के विद्वान प्रत्येक वार्ता को सूक्ष्मरूप से ही कहने कहाने को उचित समझा करते थे, तद्वत उन्होंने पारिभाषिक सूत्र भी ऐसा बना लिया कि:—

अर्द्धमात्रा लाघवेन वय्याकरणाः पुत्रोत्सव मन्यन्ते।

अर्थात् किसी शब्द के कहने व लिखने में यदि आधी मात्रा की कमी भी हो जाय तो वय्याकरणी विद्वान पुत्रोत्पत्ति का सा आनन्द मनाते हैं अतः उन विद्वानों ने भाषा भाषियों को समझाने के लिये इन चातुर्वेदी ब्राह्मणों को "चावे" कहा था अर्थात् चा का अर्थ चार और वे का अर्थ वेद के हैं अर्थात् चारों वेदों के जानने वाले विद्वान चौवे कहाते कहाते चावे कहाये, और चावे कहाते कहाते चौवे भी कहाने लग गये, भाषा में चौ नाम भी चार का है और "वे" वेद का बोधक है अतः "चौवे" कहाते कहाते फारसी के जानने वाले सबे तबे के बोलने वालों ने इस ही चौवे शब्द को "चौबे" बना दिया जो नाम आजकल भी प्रचलित है।

गुजराती भाषा में चातुर्वेदी को चवे और द्विवेदी को दवे कहते हैं पंजाबी लोग चौबे शब्द को चौबा कहकर पुकारते हैं और मारवाड़ी लोग चौबिया व चौबिये कहकर इन्हें पुकारते हैं।

यह पद सम्पूर्ण प्रकार के ब्राह्मणों में पाया जाता है अर्थात् गौड़ ब्राह्मणों में चौबे हैं कान्यकुब्जों में भी चौबे हैं तो अन्य ब्राह्मणों में भी चौबे हैं। चौबों के मुख्यतया दो भेद है १ लाल चौबे और २ मथुरिया चौबे यथार्थ में ये लोग गौड़ सम्प्रदाय में से ही हैं परन्तु जो लोग गौड़ सम्प्रदाय में से जाकर मथुरा में बसे और वहां की तीर्थ

पुरोहितायी स्वीकार कियी वे मथुरिया चौबे कहाये अतः जो शेष रह-गये वे लाल चौबे कहाये, लाल चौबियों के हजारों घर आजकल भी रिवाड़ी बावल व दिल्ली नारनौल आदि में हैं जिनका सम्बन्ध अद्यावधि सम्पूर्ण गौड़ों में प्रचलित है।

परन्तु जब मैथुनी सृष्टि बढ़ने और उपरोक्त क्रमानुसार ब्राह्मणों को भिन्न भिन्न पदवियें मिलने लगीं तब सब प्रकार के ब्राह्मण सब जगह फैलने लगे और तद्वत निवासस्थान व देश भेद के अनुकूल इन ब्राह्मणों की भी संज्ञा बांधी गयी थी अतएव राजा शूरसैन के समय में परीक्षोत्तीर्ण चातुर्वेदी ब्राह्मण मथुरा में बुलाये गये थे और उस समय उन के सत्कारार्थ मथुरापुरी की तीर्थ पुरोहिताई उन्हें मिली थी तब से आज तक मथुरापुरी में प्राधान्यता चौबियों की ही है क्यों कि इन की गुण विशिष्टता के कारण से ही यह जाति मथुरा में प्रतिष्ठित कियी गयी थी तब से ये लोग अपने समुदाय को मथुरिया चौबे कह कर अपना परिचय देते हैं क्यों कि सम्पूर्ण चौबिये परस्पर एक हैं हां देश भेद व देश स्थिती तथा परस्पर के आचारों में भिन्नता होने के कारण मथुरिया चौबों का समुदाय एक निराला ही ब्राह्मण समुदाय समझा जाने लगा अर्थात् मथुरिया चौबे पूर्वकाल में जितने अधिक गुणज्ञ व योग्य थे उतने ही अधिक आज कल मूर्ख गंवार व लठेत हैं यह कहना अनुचित न होगा कि कई प्रकार के दुर्गुण मथुरिया चौबों में आगये तो अन्य अन्य प्रदेशस्थ चौबिये भी दुर्गुणों से खाली न रहे क्यों कि मथुरिया चौबे भंग के दास हैं तो अन्य चौबे हुक्का दास हैं, मथुरिया चौबों में अनपढ़ों की संख्या विशेष है तो अन्य चौबियों में भी ऐसा ही है, शास्त्रोक्त प्रणाली के अनुसार अन्य चौबियों में विवाह विवेक समय गोत्र अवश्यही टाला जाता है तो मथुरा में गोत्र टाला भी जाता है और नहीं भी टाला जाता है अर्थात् गोत्र के गोत्र में ही विवाह हो जाते हैं इस जातिको दान दक्षिणा विशेष मिलने से यह लोग मथुरा में विशेष रूप से विद्या

हीन रह गये हैं, हां इन की जाति का समुदाय जो मैनपुरी, इटावह, फरुखाबाद और मुरादाबाद आदि आदि स्थानों में जो चले गये हैं उन की करीब करीब सब ही बातें खास मथुरा के चौवियों से बढ़ चढ़ कर हो गयी है और उन में कई रत्न हैं जिन में से एक दो का फोटो व जीवनी भी इस ग्रन्थ में दी गयी है:—

जैसा कि पूर्व लिखआये हैं व्रजमण्डल का दूसरा नाम शूरसेन देश भी है और वहां के चातुर्वेदी ब्राह्मणों का दूसरा नाम शूरसेनक भी है यथा:-

कुरुक्षेत्रं च मत्स्याश्च पञ्चालाः शूरसेनका।
एषब्रह्मर्षि देशोवै ब्रह्मावर्ता दनन्तरः ॥

मनु० अ०२ श्लो० १६

अर्थात् कुरुक्षेत्र और मत्स्यदेश पञ्चाल और शूरसेनक ये ब्रह्मर्षि देश हैं जो ब्रह्मावर्त के समीप हैं इस प्रमाण से मथुरिया चौवे ब्रह्मर्षि हैं ऐसा सिद्ध होता है पूर्वकाल में ये लोग आदर्शरूप गुणज्ञ व विद्वान थे अतः दूर दूर के लोग आकर इन से विद्या पढ़ते थे यथा:-

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मना ।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः ॥

मनु० अ० २ श्लो० २०

अर्थः-उपरोक्त देशों के ब्रह्मर्षि संज्ञक ब्राह्मणों से सम्पूर्ण पृथिवी के मनुष्य शिक्षापावें अतएव देश देशान्तरों में नाना विद्यावों के प्रवर्तक ये ही ब्राह्मण थे ।

परन्तु भारत की दशा बड़ी शोचनीय है कि इस देश में परस्पर वैमनस्य व ईर्षा द्वेश बढ़ा हुवा है इन भावों को लिये हुये प्रायः लोगों ने इन मथुरिये चौबियों के प्रति अब्राह्मण भाव समझ लिया और इन के विरुद्ध अनेकों मनघड़ंत मिथ्या कल्पनायें करडालीं कारण यह है कि तीर्थ पर यह लोग विशेषतया दान प्रतिग्रह लेते हुये पैसा व पाई तक मांग मांग कर अपना जीवन निर्वाह करने लग गये

जिस से उन के उच्चत्व पर अन्य ब्राह्मण गण सन्देह करने लगे और बहुकाल व्यतीत हो जाने से वह एक निराली ही ब्राह्मण जाति मानी जाने लगी, परस्पर के जाति दम्भ व ऊंचता नीचता के भावों से, व दूर दूर देशों में बहुकाल से निवास होते रहने के कारण लाल चौबियों व मथुरिया चौबियों में किसी भी प्रकार का सम्बन्ध नहीं रहा, दोनों जातियें एक दूसरे को नीच व अपने को ऊंच मानने लगीं। इसका कारण एक यह भी है कि दोनों के सदाचार के नियमों व रीति भांतियों में भी बड़ा अन्तर हो गया है जैसा कि सर्व साधारण जन समुदाय की सम्मति तथा माननीय भट्टाचार्य्य जी की सम्मत्याधार पर हम लिख भी आये हैं कि तीर्थों पर दान प्रतिग्रह लेने से ब्राह्मणों के महत्व का पद नीचा हो जाता है तदनुसार ही मथुरिया चौबों के सम्बन्ध में समझना चाहिये। रिवाड़ी व नारनौल बावल की ओर के लाल चौबे प्रायः तम्बाकू पीते रहते हैं परन्तु इस के विपरीत मथुरिया चौबों में तम्बाकू का स्पर्शतक भी नहीं है हां मथुरिये चौबों में भंग का बहुत ही अधिक प्रचार है साथ ही में यह लोग प्रायः सब ही कसरती व बड़े कड़े पहलवान होते हैं नित्य प्रति घंटों कसरत करते रहते हैं और पक्के ब्रह्मचारी रहते हैं तिस पुरुषार्थ व बल के आधारानुसार ये लोग बड़े अधिक खाने वाले होते हैं लडुआ, खीर, पूरी, रबड़ी व मलाई इन का मुख्य भोजन है अंगरेजी तोल दस सेर से १५ सेर तक के दूध की खीर एक समय में खा जाना इन के लिये बांये हाथ का खेल है इतना भोजन करलेनेपर भी यजमान लोग इन्हें दक्षिणा का लालच यानी फ़ी लड्डू एक रुपैया वदो रुपैया देकर खिलाते हैं और ये लोग फिर भी कई लड्डू खाजाते हैं। इन के विषय में मनुष्य गणना रिपोर्ट में युक्तप्रदेशीय मनुष्यगणना सुपरिन्टेन्डेन्ट ऐसा लिखते हैं कि:-

The Mathuria Chaubes and Sakadwipi or Magadh Brahmans, are considered separate from, and inferior to the five Gaurs the former claim to be the highest Brahmans of all, because their Domicile in the Holy land of Braj, but their fondness

for wrestling, their behavior towards pilgrims and their custom of giving a daughter in marriage to the same family as that from which they have taken one all tell against them.

( Census Report Page 218 )

भावार्थः- मथुरिया चौबे शाकद्वीपी या मागध ब्राह्मण पञ्चगौड़ों से भिन्न व छोटी श्रेणी के होते हैं, परन्तु इन में मथुरिया चौबे अपने को सर्वोच्च मान्ते हैं क्योंकि वे ब्रज के रहने वाले हैं, किन्तु इन का पहलवानीपन यात्रियों के साथ व्यवहार तथा अदले बदले का विवाह ये सब बातें इन के उच्चत्व की विरुद्धता प्रकट करती हैं।

उपरोक्त लेख विदेशी व विधर्मी विद्वान का होने से कई अंशों में हमें ग्राह्य नहीं हैं परन्तु शोक के साथ लिखने में आता है कि हमारे ही भ्रातृवर्ग ने इन ब्राह्मणों से बड़ा द्वेष किया है और " कहीं की ईंट कहीं का रूड़ा और भानमतीने कुन्बा जोड़ा" इस लोकोक्ति के अनुसार किसी किसी ग्रन्थकर्त्ता ने अपने अपने ग्रन्थ में ऐसा लिख मारा है किः

## सर्वान् उपनयन कार्य्यञ्च माथुरं मागधं विना

अर्थात् सम्पूर्ण का यज्ञोपवीत होना चाहिये परन्तु माथुर और मागध ब्राह्मणों का नहीं क्योंकि ये ब्राह्मण नहीं हैं। इस ही तरह कान्यकुब्ज वंशावलि के रचयिता ने भी ऐसा लिखा है किः-

## कान्यकुब्जा द्विजासर्वे माथुरं मागधं विना

अर्थात् सम्पूर्ण ब्राह्मण कान्यकुब्ज संज्ञक ब्राह्मण हैं परन्तु मथुरिये चौबे व मागध ये ब्राह्मण नहीं हैं, इन दोनों अर्द्ध अर्द्ध श्लोकों को ग्रन्थकारों ने लिखकर सर्व साधारण को भ्रम में डालदिया है क्योंकि उपरोक्त अर्द्ध श्लोक शंकर दिग्विजय के हैं, जिन पूरे श्लोकों को देखने से आशय ही कुछ का कुछ बदल जाता है क्योंकि जिस समय इस देश में जैनधर्म फैला हुआ था तब सम्पूर्ण हिन्दू जैनी हो चुके थे उस समय केवल मागध ब्राह्मण व मथुरापुरी के मथुरिया चौबे ही बचे थे। यथाः-

प्रायश्चित्तं प्रकुर्वीत शंकरश्च द्विजन्मनाम् ।
कान्यकुब्जादि सर्वेषां माथुरं मागधं विना ॥
शंकर दिग्विजये

अर्थात् उस समय श्री शंकराचार्य्य जी महाराज ने सम्पूर्ण ब्राह्मणों का प्रायश्चित कराया परन्तु मथुरिया चौबे व मागध ब्राह्मणों का नहीं क्योंकि उस समय से ही दोनों ब्राह्मण समुदाय विधर्मी होने से बचे थे अतएव श्री शंकराचार्य्य जी ने इन का कोई प्रायश्चित नहीं कराया था उपरोक्त दूसरा आधा श्लोक भी इस ही प्रकरण का है कि श्रीशंकराचार्य्य जी ने सम्पूर्ण जैनी हुये ब्राह्मणों का पुनः यज्ञोपवीत कराया था किन्तु मथुरिया चौबे व मागध ब्राह्मणों का नहीं क्योंकि वे उस समय वेदोक्त धर्म्म विमुख यज्ञोपवीत त्यागी नहीं हुये थे।

इस जाति में दो एक कुरीतियों को देख कर प्रायः लोग इन्हें ब्राह्मण मानने में ही सन्देह करते हैं और कहते हैं कि ये लोग केवल मथुरा में ही पूज्य हैं अन्यत्र नहीं" परन्तु ये वार्ता उचित नहीं है क्यों कि वैष्णवों के चारों सम्प्रदाय रामानुज, निम्बार्क, माधव और वल्लभ, इन चारों ही के आचार्य्य लोग मथुरा में आकर इन चौवियों का पूजन करते हैं ऐसी दशा में यदि यह जाति ब्राह्मण न होती तो आचार्य्यगण इन का पूजन कैसे करते ? अतएव ये ब्राह्मण हैं ऐसा ही मानना पड़ेगा।

वाराह पुराण में ऐसी कथा है कि दैत्य हिरण्याक्ष जो हिरण्य कश्यप का जोड़ला भाई था उस का देवतावों के साथ युद्ध हुवा, वाराह जो विष्णु के अवतार थे उन्हों ने उसे पराजय करके मार डाला पर यह ब्राह्मण शरीर था अतएव वाराह जी मथुरा के विश्रान्त घाट पर बैठ कर पश्चात्ताप के साथ ब्रह्महत्या के प्रायश्चित से मुक्त होने के लिये विचार करने लगे और यज्ञ करना निश्चय किया तदर्थ इन मथुरिया चौबों से यज्ञ करवाया और वाराह जी पाप मुक्त हुये थे।

पुनः और देखियेः—

भट्टनागर गौड़ाश्च तथा सूर्यद्विजाह्वयाः ।
माथुराख्यास्तथागौड़ा वाल्मीकि ब्राह्मणास्तथा ॥
वृ० मिश्रस्कन्द श्लो० ४२

अर्थात् भटनागर, सूर्य्यद्विज, माथुर चौबे और वाल्मीकि ब्राह्मण ये चारों गौड़ ब्राह्मण हैं।

हम जाति अन्वेषण के निमित्त मथुरा में गये और इन चौबों के विषय प्रायः जनश्रुति ऐसी सुन पड़ी कि जब इन में अदले बदले के ब्याह होते हैं तो शास्त्रोक्त गोत्र प्रणाली का क्या महत्व रहा? जहां "असपिंडा चया मातु" आदि धर्मशास्त्रों के पाठ हैं तिस के विरुद्ध मथुरा के चौबों के थोड़े से समुदाय में ही उस की लड़की व उसका लड़का तथा इस के विपरीत उस का लड़का व उस की लड़की का विवाह होना विद्वानों ने निन्दनीय बतलाया है, सन् १८९१ की मनुष्यगणना के अनुसार मथुरा में ५०३६ चौबे स्त्री पुरुष थे अतएव इतनों ही में परस्पर गड्डमड्ड होना उचित नहीं जानपड़ता ऐसी दशा को देख कर इन के प्रति एक कहावत प्रसिद्ध है कि :—

मथुरा की बेटी गोकुल की गाय ॥
कर्म फूटे तो अन्त को जाय ॥

अर्थात् मथुरा की बेटी और गोकुल की गाय प्रायः मथुरा ही में रहती हैं पर जिस के कर्म ही फूट जांय तो वह बाहिर को जाती है, अर्थात् ये लोग अपनी कन्याओं को मथुरा की मथुरा में ब्याह देना भाग्यमानी का चिन्ह समझते हैं यह कहावत कोई नवीन नहीं है वरन प्राचीन है यहां तक कि उन्नाव के भूतपूर्व कलेक्टर मिस्टर C. S. Wc. ने भी अपनी पुस्तक में लिखा है।

इन के विवाहादि की रीतियों पर विचार करते हुये ब्राइज्ज एन्ड: फास्ट के पृष्ठ २०५ में कलेक्टर साहब लिखते हैं कि :—

This custom of endogamy results in two exceptional usages, first, that marriage contracts are often made while one or even both the parties are still unborn; and secondly, that little or no regard is paid to relative age; thus a chaubey if his friend has no available daughter to bestow upon him, will agree to wait for his first grand daughter.

They will not, if it can possibly be avoided, marry in their own gotra; but instances are said to occur in which this law of exogamy is not observed.

भावार्थ :—इस जाति में विवाह प्रणाली दो प्रकार की है प्रथम तो लड़के लड़की जब मा के पेट में ही होते हैं तब ही इन में पेट "मांगणियां" सगाई ब्याह होजाते हैं और द्वितीय, विवाह योग्य अवस्था का कुछ भी ध्यान नहीं दिया जाता है किसी चौबे के मित्र के यहां बदले में देने को लड़की न हो तो वह अपनी पोती को ही देगा यथाशक्ति वे गोत्र टालकर विवाह करेंगे परन्तु ऐसे उदाहरण भी मिले हैं जहां इस नियम का उल्लंघन भी हो गया है।

**विवाह प्रणाली** आनरेबल मिस्टर एच. एच. रिस्ली अपने नोट्स के पृष्ठ ३० में इस जाति की विवाह प्रणाली मीमांसा करते हुये लिखते हैं कि इन में चार तरह का विवाह होता है (१) जिस में कुल २२५) रुपये खरच होवें वह अव्वल विवाह यानी First class फर्स्ट क्लास विवाह कहाता है (२) जिस में कुल १७५) रुपये खरच पड़ें वह Second class सैकिंड क्लास दोयम नम्बर विवाह कहाता है (३) जिस में केवल ७५) खरच पड़ें वह Third Class थर्ड क्लास यानी तीसरे दर्जे का विवाह माना जाता है और (४) जिस में लड़की वाले की ओर से केवल १) मात्र रीति का दिया जाय वह "कोरा" विवाह कहाता है परन्तु इस सस्ते-पन का अनादर रूपी प्रभाव कुछ भी नहीं पड़ता है।

**तीन तरह के विवाह** इस नोट को लिखने में आनरेबल मिस्टर एच. एच. रिस्ली भारत वर्षीय मनुष्य गणना विभाग के कमिश्नर ने बड़ी भूल कियी है क्योंकि तीन तरह के विवाह होते हैं १ पचासिया जिसमें कन्या पक्ष की ओर से २५) सम्मेलन समय तथा ५०) विदा के समय दिये जांय वह पचासिया विवाह कहाता है २ जिस में ५०) सम्मेलन में तथा १००) विदा में दिये जांय वह सैकड़ा विवाह कहाता है ३ और जिसमें १००) सम्मेलन में तथा २००) विदा के दिवस दिये जांय वह सौ सवैया विवाह कहाता है इन्हीं के साथ क्रमशः १०

जोड़े कपड़े ५ बर्तन, २० जोड़े कपड़े और १० बर्तन, तथा ४० जोड़े कपड़े व २० बर्तन दिये जाते हैं परन्तु सम्भव है कि इस जाति में कृपण मनुष्य भी बहुत होंगे क्यों कि मिस्टर C. S. William Crooke. B.A. सी. एस विलियम क्रूक बी.ऐ. लेट कलेक्टर फर्रुखाबाद लिखते हैं कि:—

It is peculiar with them to celebrate a number of marriages the same day in order to save expences Their greediness is proverbial.

अर्थात् ये लोग प्रायः एक ही दिन में कई विवाह एक साथ कर लेते हैं जिस से खरच की बचत हो, इन के लालची पन की तो कहावतें तक विद्वानों ने लिखी हैं।

ये लोग फलाहारी तथा ब्रह्मचर्य्य आश्रम को पालन करने वाले पुरुषार्थी वीर होते हैं हिन्दू जाति की एक तरह से पुरुषार्थ के सम्बन्ध में ये लोग लाज रखने वाले हैं आजकल के कलियुगीमूर्ति मांस भक्षण करने वालों के इस कथन के उत्तर में कि "मांस खाने से बड़ा बल परा क्रम बढ़ता है" इन मथुरा के चौबों के उदाहरण दिये जाते हैं ये लोग अपने पुरुषार्थ को सदैव ही बढ़ाते रहते हैं जिस से अपनी स्त्रियादिकों के साथ सहवास की कुछ परवाह भी नहीं करते हैं इस से विरुद्ध पक्ष वालों को इन के विरुद्ध मथुरा में उंगली खड़ी करने का मौक़ा मिला करता है।

बा. बू भोलानाथचन्द्र अपनी यात्रा की जिल्द दूसरी के पृष्ठ २६ में ऐसा लिखते हैं कि:—

The chaubains are in the grandest Style of beauty. The whole class is superb and the general character of their figure is majestic. Their colour is the genuine classical colour of the Brahmans of antiquity.

( T. & C. Page 206 )

भा०-चौबाइन बड़ी ही सुन्दरी होती हैं ये सम्पूर्ण ही बड़े सुन्दर व दर्शनीय होती हैं तथा साधारणतया बड़ी ही मनोहर होती हैं इन का रंग रूप भी अन्य ब्राह्मणों का सा होता है।

हमें प्रायः सुनने में आया है कि चौबाइन समुदाय का पहिनाव केवल धोतीमात्र का है अन्य जाति की स्त्रियों की तरह लहंगा अंगिया (चोलो) व कुड़ता जाकट आदि का प्रचार बहुत कम है, परन्तु आजकल इस जाति की पठित समाज में कुड़ती की चाल चलगयी है पूर्व काल में इस जाति में घांघरा की रीति थी और उस समय की सौभाग्यवती सुहागिन स्त्रियें सफेद धोती पहिन कर भोजन करने को एक अशकुन समझती थीं परन्तु आजकल अंग्रेजी स्वतंत्रता व नई रोशनी के विचार फैलने से व जमुना गंगा में बारबार स्नान करने कराने में सुभीता होने के कारण लहंगे की रीति पूरब में सर्वत्र और विशेषतया इन में से उठकर धोती के पहिनावे का प्रचार बढ़गया है।

कहीं कहीं गोत्र के गोत्र में व अदले बदले का विवाह होना जिस प्रकार इन में बतलाया जाता है तैसे ही इन में की वैवाहिक रीतियों में भी अन्य ब्राह्मणों की अपेक्षा कुछ नवीनपन है, अर्थात् प्रायः सर्वत्र रूप से सात फेरे एक साथ होते हैं परन्तु इन में चार फेरे पहिले दिन यानी विवाह मुहूर्त के दिन व शेष चार फेरे चौथे दिवस होते हैं इस दिवस वर व वधूके वस्त्र उतरवा दिये जाकर नाई को देदिये जाते हैं और फिर स्नानादि से शुद्ध कराके उन्हें नवीन वस्त्र धारण कराये जाकर मंडप में वर व वधू शेष चार फेरे लेने के कृत्य की समाप्ति के लिये बिठाये जाते हैं।

इन में एक रीति शरबत पिलाये जाने की है जो एक ही ग्लास से सब उपस्थित भाइयों को पीना पड़ता है सब से प्रथम ग्लास में शरबत भर कर बींद को पिलाया जाता है तत्पश्चात् उस ही झूंठे ग्लास से उस के पिता को, फिर उस ही ग्लास से बींद के अन्य चाचा ताऊ आदि कों को पिलाया जाकर उस ही ग्लास से अन्य उपस्थित भाइयों में वह गिलास घूमता है और बैठी हुयी सभामें सब छोटे बड़े उस एक ही ग्लास से पारी पारी से पीते चले जाते हैं वहां इस कृत्य से भ्रातृस्नेह प्रकट

करते हुये छुटाई बड़ाई का कुछ ख़याल नहीं किया जाता है और न एक दूसरे के उच्छिष्ट ग्लास से कोई ग्लानि ही करने पाता है, एक चौबे महाशय ने हो हम से यह भी कहा कि "हमारी बिरादरी में कुछ लोग नये विचारों के भी हैं जो एक ही ग्लास से शर्बत पीने से परहेज़ करते हैं उन को हम "दुर्गातिये" कहकर उन की दिल्लगी उड़ाया करते हैं।

परन्तु यह कृत्य धर्म्मशास्त्र से विरुद्ध है।

इस जाति में एक रीति यह भी है कि जब बरात के लोग बेटी वाले के घर जाते हैं तब बेटीवाले की ओर से दरवाजे पर दो मनुष्य खड़े रहते हैं इन में से एक के हाथ में नागर वेल के पान होते हैं तथा दूसरे के हाथ में "पेपन" होता है, यह पेपन चावल व हल्दी को पीसकर एक प्रकार का लेप तय्यार किया जाता है अतः वरपक्ष के पुरुषों में से जो कोई भीतर मंडप में जाने लगता है उस की छाती पर कपड़ों के ऊपर यह पेपन लगाया जाकर उस पर पान चिपका दिया जाता है तब वह भीतर जाने पाता है जिस से उन के बहुमूल्य कपड़े खराब होजाते हैं, बहुत से तो कपड़े ख़राब होने के डर से अपनी छाती पर अपने कीमती कपड़ों के ऊपर अंगोछा व रूमाल बांधकर पान चिपकवाते हैं।

अन्य ब्राह्मणों की अपेक्षा इन में मकान के आंगन में बड़ी ही सफाई बरात के जीमने के लिये कियी जाती है अर्थात् आंगन बहुत ही सुन्दरता के साथ लीपा जाकर उस में नाना प्रकार की चित्रकारी के साथ कहीं दोहे, कहीं चौपाई और कहीं कोई हंसी की बात तो कहीं कुछ और ही मन बहलाव का दृश्य करदिया जाता है तिन पर पत्तल बिछायी जाकर उन पत्तलों को आसनवत मानकर बराती जीमने बैठते हैं।

विवाह शादियों में इस जाति के यहां कच्ची व पक्की अर्थात् सखरी व निखरी दोनों ही प्रकार की रसोई बनती है जो एक साथ बरात को परोसी जाकर बरात का जीमण होता है।

मथुरा महात्म्य में इन लोगों में से किसी ने अपनी जाति की बहुत ही अधिक प्रशंसा लिखकर छपवादियी है परन्तु एक कलेक्टर साहब

ने अपने ग्रन्थ T. & C. टी. ऐन्ड सी. के पृष्ठ २०५ में लिखा है"कि ये लोग पदमें छोटे अनपढ़ समुदाय के लुटेरे भिक्षुक हैं अर्थात् जो यात्री इन के पालेपड़ जाय तो ये अपने मतलब के अतिरिक्त कुछ नहीं विचारते हैं"।

परन्तु जहां ये लोग यात्रियों के साथ पैसा लेने को बुरी तरह से पीछे पड़जाते हैं वैसे ही यात्रियों के साथ ये लोग एक बड़े भारी Guide and Volunteer रक्षक व पथप्रदर्शक भी होते हैं अर्थात् विदेशी यात्री के संगसंग मथुरा के दर्शनीय पदार्थों व मन्दिर आदिकों के दर्शन कराते हुये भी ये ही फिरते हैं तथा उन को अपने घरों पर ठहराकर उन के हजारों रुपयों के माल असबाब की Risk जिम्मेदारी अपने ऊपर लेते हैं और ये ईमान्दार इतने बड़े होते हैं कि हजारों रुपे-यों का माल असबाब यात्रियों का निरन्तर इन के भरोसे पर पड़ा रहता है पर उस में जराभी खटका नहीं होता है अतएव इतनी बड़ी जिम्मेदारी व महनत पर यदि इन्होंने यात्रियों से दोचार पैसे लेलिये तो क्या बिगाड़ करदिया अर्थात् कुछ नहीं क्योंकि आप आजकल विदेशयात्रा को विलायत, अमेरिका, फ्रान्स व जर्मनी को जाकर देखिये कि वहां आप को Guide and Volunteer fee संरक्षक और पथप्रदर्शकता की फीस कितनी अधिक देनी पड़ती है अतः मथुरिये चौबियों को बुरा कहना उचित नहीं।

आज कल, मथुरा, मुरादाबाद, इटावह आगरा, और फरुखाबाद में कई सज्जनों का ऐसा समुदाय है कि जिन पर उपरोक्त लेख संघटित नहीं हो सक्ता है हां जैसा उपरोक्त लेख है वैसी दशा प्रायः इस जाति की है तो सही पर सर्वत्र एकसी दशा नहीं है।

जैसा कि पूर्व लिख आये हैं चौबियों के मुख्य दो भेद हैं मथुरिया चौबे और लाल चौबे, परन्तु इसके अतिरिक्त मथुरियाचौबियों के चार मुख्य भेद हैं।

भेद

## १ कड़ुवे २ मीठे ३ गुलमटे और ४ वदलवा

**कड़ुवेः**—इस के प्रायः दो अर्थ मिले हैं (१) कड़ुवे यानी बीसा अर्थात्

असल व खरे के हैं अर्थात् वे चौवे जो खरे हैं असपिंडादि गोत्र के गोत्र में विवाह सम्बन्ध से मुक्त हैं वे कडुवे कहाते हैं।

(२) जिन को लवणासुर राक्षस ने खाकर उगल दिया वे कडुवे कहाये।

मीठे :—जिन के पूर्वजों में से कुछ को लवणासुर राक्षस ने खाजिया था उन की सन्तान मीठे चौवे कहायी।

मथुरा संस्कृत पाठशाला के एक चौवे पंडित ने मीठे का अर्थ यह बतलाया था कि "मीठे अर्थात् दस्ले जिनकी कि उत्पत्ति गोत्र के गोत्र में व शास्त्र विरुद्ध क्रम से हुयी है अथवा जो ब्रह्मकर्म से गिरगये हैं वे मीठे चौवे कहाते हैं।

३ गुलमटे :—चौवे वे कहाते हैं जिन्होंने ने सजाति स्त्रियों के अभाव से किसी भी अन्यस्त्री को घरमें डाल लियी और उस से सन्तानोत्पत्ति होने लगी।

४ बदलवा :—वे कहाते हैं जो अदले बदले से विवाह करते हैं अर्थात् जिन के यहां की लड़की विवाह में हम लाये तो उस के बदले में हम अपनी लड़की उन के यहां ब्याह दियी अर्थात् लड़की के बदले लड़की देने से ही जिन में विवाह होते हैं वे बदलवा चौवे कहाये।

ये चारों प्रकार के चौवियों में कडुवे चौवियों की मान प्रतिष्ठा बढ़ चढ़कर है।

जिस प्रकार गौड़ों में चौविये होते हैं तैसे ही कान्यकुब्ज चौवियों के ७ भेद ये हैं।

| | | |
|---|---|---|
| १ नयापुरा | ४ कटया | ७ हरदासपुरिया |
| २ हरगादी | ५ रामपुरिया | ८ तिबैया |
| ३ चौसर | ६ पालिया | ९ जमदुवा |

और १० गगंया

# गोत्र प्रवरादि

१ दक्ष　　　३ धौम्य　　　५ कुत्स
२ वशिष्ठ　　　४ सौश्रवस　　　६ भार्गव
और ७ भारद्वाज

## इन सातों गोत्रों के प्रवर इस प्रकार से हैं।

१ दक्ष के—आत्रेय, गाविष्टर, पौर्वातिथ्य ( त्रिप्रवर )

२ वशिष्ठ के—वाशिष्ठ, शक्ति, पाराशर ( त्रिप्रवर )

३ धौम्य के—काश्यप, अरण्य, और ध्रुव ( त्रिप्रवर )

४ सौश्रवस के—विश्वामित्र, देवराट और औदले ( त्रिप्रवर )

५ कुत्स के—कौत्स, आंगिरस और योगनाथ

६ भार्गव के—भार्गव, च्यवन, आप्नुवान्, और्व, जमदग्नि (पञ्चप्रवर)

७ भारद्वाज—आंगिरस, वार्हस्पति, और भारद्वाज ( त्रिप्रवर )

इन सातों गोत्रों की ६४ अल्ले हैं जिन्हें विद्वानों ने उपनाम कहकर भी लिखे हैं यथाः—

## उपनाम व अल्ल

### १ दक्ष गोत्र

१ कोंकोर २ दक्ष ३ पूरवे ४ सज्जन।

### २ वशिष्ठ गोत्र

५ निनावलि ६ काहो ७ वद्धिया ८ जौनमाने ९ दीक्षित १० उटोखिया ११ डुगावार १२ पेंठवाल।

## ३ धौम्य गोत्र

१३ तापसे १४ भरतवार १५ तिलभने १६ मौरे १७ घरवारी १८ चंद्रपेखी १६ गोजले २० शुकल २१ ब्रह्मपुरिया २२ श्रोत्रिय

## सौश्रवस गोत्र

२३ पुरोहित २४ छिरोरा २५ घोरमई २६ मिश्र २७ चकेरी २८ ब्रुद्दौआ २६ तोपजाने ३० चन्दसे ३१ चन्दपुरिया ३२ वैसाधर ३३ सुमावली ३४ साध।

## ५ कुत्स गोत्र

३५ मेहारी ३६ खलहरे ३७ मरैठिया ३८ सांडिल्य।

## ६ भार्गव गोत्र

३६ दरर ४० ओमरे ४१ गौधवार ४२ डाहरू ४३ गुगोली ४४ गोंहजे ४५ कनेरे ४६ मेर ४७ वेहरिआ ४८ सकना।

## ७ भारद्वाज गोत्र

४६ पांडे ५० पाठक ५१ रावत ५२ कारेनाग ५३ तिवारी ५४ नसनारे ५५ वीसा तिवारी ५६ चौपोली तिवारी ५७ भामले ५८ अभमिश्रा ५६ कोहरे ६० द्रिआचाट ६१ सड्ढ ६२ भैंसरे ६३ गुनार ६४ शिकरोली वीसा।

जिस प्रकार से कान्यकुब्ज ब्राह्मणों में षटकुल बड़े प्रतिष्ठित व उच्च माने जाते हैं तैसे ही इस जाति में भी प्रतिष्ठित षटकुल ये हैं।

१ पांडे २ पाठक ३ मिश्र ४ छिरोरा ५ घरवारी और ६ रावत।

एक विद्वान ने हमें यह भी बतलाया कि मुसलमानी अत्त्याचार के समय जब बादशाह औरंगजेब ने देखा कि हिंदू लोग मुसल्मान तलवार के जोर से भी नहीं होते हैं बल्कि तलवार का जवाब तल-

वार देते हैं या धर्म के नाम पर मर जाते हैं तो बादशाह ने सोचा कि मथुरापुरी के चतुर्वेदी ब्राह्मणों को मुसल्मान कर लिया जाय तो अन्य हिंदू समुदाय अपने आप ही मुसल्मान हो जावेंगे तदनुसार बादशाह ने मथुराजी में चतुर्वेदियों को मुसलमान हो जाने की बलात्कार रूप से आज्ञा दियी तिस से बहुत से चतुर्वेदी गण इधर उधर मथुरा से निकल कर दूर दूर द्वारका जी तक चले गये और बहुत से जो बलवान व कुछ होसिले वाले थे वे यहां ही डटे रहे, उस समय के अत्याचार से इस जाति के पूर्वजों ने यह प्रतिज्ञा कियी थी कि "मथुरा में चतुर्वेदी वंशी ब्राह्मण सदैव कसरत करते हुये बलिष्ट बन कर धर्म रक्षार्थ प्राण गंवाने को तय्यार रहेंगे इस ही प्रतिज्ञा के अनुसार मथुरा में आज तक उस ब्राह्मण जाति में कसरत करना, कुश्ती, लड़ना, तलवार और पटा आदि के हाथ फेंकना आदि आदि वीरता के गुण प्रत्यक्ष रूप से चले आरहे हैं अतएव ऐसे ब्रह्मचारी वीर ब्राह्मणों का आदर व सत्कार होता रहे यह ही हमारी मनोकामना है।

अतएव ऐसे कष्ट के समय जो लोग दूर देश व प्रान्तों में चले गये थे वे मीठे चौबे कहे जाकर सम्बोधन किये गये थे व उन में से जो बहुत काल के पश्चात् विदेशों से मथुरा में आये उन के मथुरा निवासी भाइयों ने उन्हें मीठे चौबे कह कर उन से अपना संसर्ग अलग कर लिया।

प्राचीन व अर्वाचीन इतिहासों को देखने से प्रतीति होता है कि मथुरा वृन्दावन अर्थात् ८४ कोस के ब्रजमण्डल में जहां मथुरिया चौवियों का मुख्य व केन्द्रस्थान है यह परमपावन मथुरापुरी अनुमान पांच सहस्त्रवर्षों से भारत की राजधानी के समीप ही रहती रही हैं, अर्थात् हिन्दू राजाओं के समय इन्द्रप्रस्थ ( दिल्ली ) भारत की राजधानी थी तो मुसल्मान बादशाहों के राज्य में भी दिल्ली ही भारत की राजधानी रही, इस ही तरह आज वृटिश गवर्नमेन्ट के राज्य में भी भारत की राजधानी दिल्ली ही है अतः ब्रजमण्डल के नन्दगाम बरसाना तो दिल्ली और मथुरा के सरहद के ही स्थान हैं इस लिये जो स्थान राजधानी के समीप हुआ करते हैं उन पर विपत्ति व सुख सम्पदा विशेषरूप से देशकाल वस्थिती के अनुसार आतीजाती रहती है भारत में इन दो चार हजार वर्ष से अशान्तिदेवी का अड्डा रहा अर्थात् महाभारत के कुरुक्षेत्र युद्ध का विपत्ति जनक परिणाम भी मथुरा पर पड़ा और यह देश असंख्य सैनिकों के क्रीड़ा का स्थान बनगया।

कुरुक्षेत्र युद्ध के पश्चात् मथुरापुरी (ब्रजमण्डल) की दशा सम्भलने भी न पायी थी कि बौद्ध धर्म्मावलम्बियों का आगमन हुआ और सैकड़ों वर्षों तक धर्म्मरक्षार्थ बौद्धों और वैदिकों के अस्त्र शस्त्र चलते रहे और उस समय बौद्धों का मुकाविला ( साम्हना ) येही मथुरिये चौवे करते रहे, मथुरा व वृन्दावन के कितने ही मन्दिरों की रक्षा इस जाति द्वारा हुयी थी।

चीन के प्रसिद्ध यात्री फाहियान और हुएनसांग भी जो क्रमशः ४०० और ६५० ईस्वी के लगभग भारत भ्रमण को आये थे वे भी मथुरापुरी को बौद्धों का प्रधान तीर्थ स्वीकार कर गये थे, वैष्णवों से चिढ़कर बौद्धों ने मथुरा और वृन्दावन को उजाड़दिया था यहां तक कि सैकड़ों मन्दिर ढाह दिये गये थे और बौद्ध मठों का समावेश होने लगा था परन्तु उस समय के मथुरापुरी के रक्षक, व धर्म्म के नाम पर रक्तबहाने वाली मथुरिया चौबों की जाति थी। फिर सैकड़ों वर्षों तक बौद्ध व वैदिकों का युद्ध होते रहते हुये बौद्धों की पराजय और वैदिकों की जय हुयी।

ग्यारहवीं शताब्दी के आरम्भ से मथुरापुरी पर विधर्मियों व विदेशियों के आक्रमण होने लगे अर्थात् सन् १०१७ ईस्वी में महमूद गजनवी ने बीसदिन तक मथुरा में रहकर पास पड़ोस तक की बस्ती व गांवों को खूब ही जलाया और मन्दिरों को मटियामेट करके उन की सम्पत्ति वह लूट लेगया। सन् १५०० ईस्वी में सुल्तान सिकन्दर लोदी ने भी मथुरा का सर्वनाश किया, कदाचित वह व्रजमण्डल में एक भी प्राणी जीवित न छोड़ता परन्तु निम्बार्क सम्प्रदाय के आचार्य्य केशव-काश्मीरी भट्टाचार्य्य ने उन्हें अपने चमत्कार दिखला कर बादशाह को वशीभूत किया और ब्रजभूमि से चले जाने का आदेश किया। इस दुर्दिन और अशान्ति के महा काल में अनेकों चातुर्वेदी ब्राह्मण युद्ध में लड़ कर हत व आहत हुये, बहुत से जिन में कायरता थी वे प्राणरक्षार्थ सैंकड़ों हजारों कोस दूर दूर देशों में चले गये अतः जिन के पूर्वज धर्मरक्षार्थ युद्ध में कट मरे थे वे कडुवे चौबे कहाये और जिन के पूर्वज कायरता प्रकट कर के भग गये थे वे मीठे चौबे कहाये ऐसी भी विद्वानों की सम्मति है। सम्राट अकबर ने जब आगरे को अपनी राज धानी नियत किया तब कुछ ही काल मथुरापुरी की दशा शान्तीमयी रही होगी सन् १६३६ ईस्वी में बादशाह शाहजहां ने देव पूजा उठा देने को अपना प्रतिनिधि मथुरा में नियत किया—औरंगजेब बादशाह का समय आया और मथुरा में अत्याचारों का वारापार न रहा बादशाह औरंगजेब के समय से अंगरेजी अमलदारी तक मथुरा कभी आगरा दिल्ली के मुगल बादशाहों की टक्करों को झेलता रहा, कभी मरहठों व मुगलों के संघर्षण सहता रहा कभी भरतपुर और देहली की चपेटों को खाता रहा, कभी जयपुर और भरतपुर के द्वन्द्व में फँसता और कभी अंगरेजों के विरोधियों का लक्ष्य बनता रहा यहां तक कि चलते चलाते सन् १८५७ ईस्वी के विद्रोही भी व्रजमंडल पर अपने दो दो हाथ दिखा गये थे अतः जिस वृज मंडल की दशा एक महाकाल से ऐसी शोचनीय व अस्त व्यस्त थी उस पुरी के प्रधान ब्राह्मण मथुरिया चौबों की दशा क्यों न अचल विचल हो जाय यह कुछ कठिन नहीं था अतएव सिद्ध होता है कि मथुरा के चौबे जो किसी समय सर्वोच्च वेदपाठी थे वे इन विपत्तियों के कारण नाममात्र के चतुर्वेदी रह गये हैं तथापि अपने उपरोक्त गुणों के कारण पूजनीय अवश्य हैं।
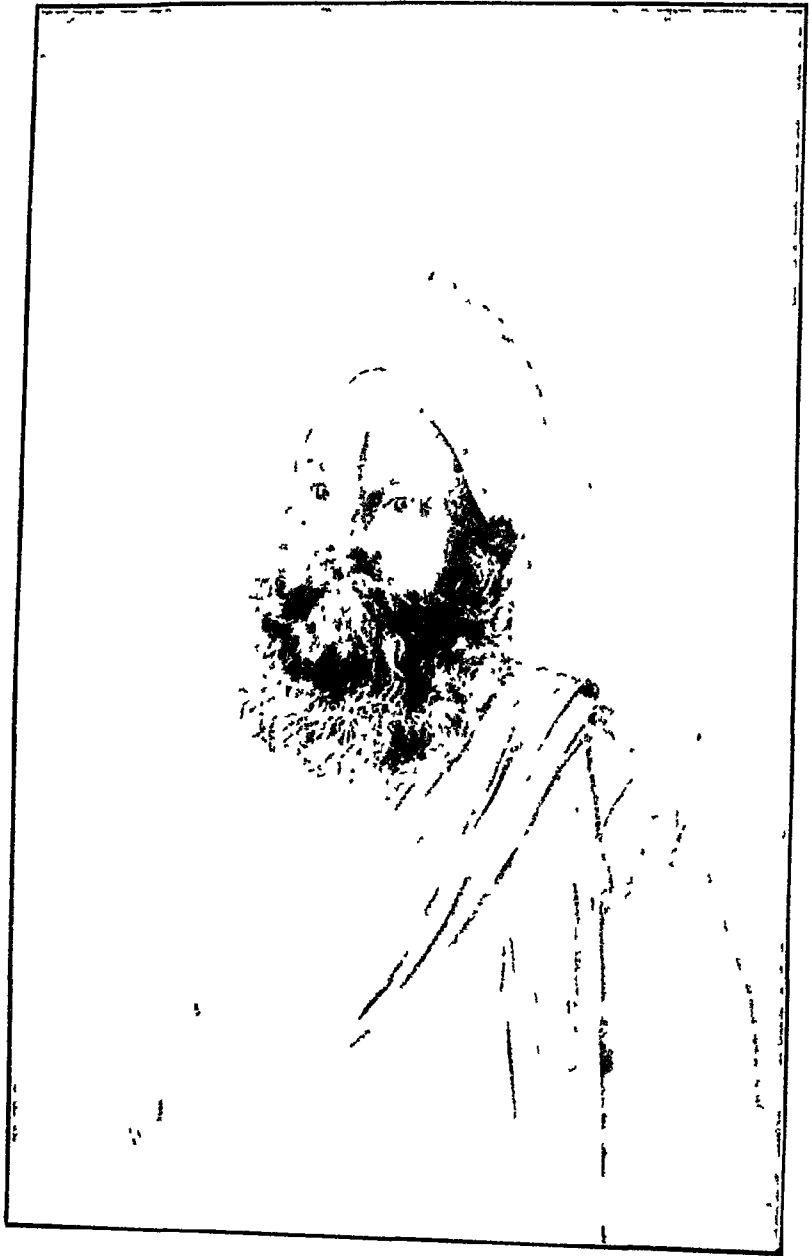
पण्डित वैजनाथ चौबे

# ॥ ब्रह्मवंश रत्न ॥

## चौबे वैजनाथ जी रईस इटावह

पाठक वृन्द ! सन्मुख चित्र में जिस दिव्य मूर्ति के दर्शन आप को हो रहे हैं, वे इटावे के पंडित वैजनाथ जी माथुर चातुर्वेदी हैं। आप का जीवन आदर्शरूप व शिक्षाप्रद तथा अनुकरणीय है। आप के स्वर्गवासी पिता जी का नाम चौबे द्वारिकादास जी था, जिनका निवास स्थान, ग्राम चन्द्रपुर, जिला आगरा था। यह संस्कृत के एक योग्य विद्वान थे, परन्तु, उस समय में आज कल का सा शिक्षा का प्रबन्ध व सुविधा नहीं थी तदनुसार वे संस्कृत अध्ययनार्थ नित्य चंद्र-पुर से बटेश्वर जाया करते थे जो पांच कोस की दूरी पर एक परम-रम्य तीर्थ स्थान है और आप नित्य वहां से पढ़ कर अपने घर चले आया करते थे इस तरह योग्यता प्राप्त कर लेने पर उस समय के लख-नऊ के प्रसिद्ध रईस शाह विहारीलाल जी के यहां वे जिलेदार नियुक्त हुए और बड़ी योग्यता के साथ, आप वहां कार्य कर के उन के एक विश्वास पात्र बन गये थे। गदर के समय जब शाह मक्खन लाल जी जयपुर को प्राणरक्षार्थ चले गये उस समय शाह जी लाखों की सम्पत्ति के जवाहिरात इन्हीं के सुपुर्द कर गये थे, परन्तु इनकी जननी को धन्य है जिनने सह सम्पति ज्यों की त्यों लाकर शाह जी को सम्हलादी। प्रायः वे यह कहा करते थे कि " मनुष्य जन्म बड़े २ कठिन तप व पुन्य से मिलता है " अतएव दूसरे के धन को वे मिट्टी के सदृश समझा करते थे, इन्हों ने जो धन कमाया उसे अपने भाइयों के व स्वकुटुम्ब पालन ही में व्यय किया और सब से सदैव हेल मेल रखते थे।

आप संस्कृत के एक अच्छे विद्वान तो थे ही और कथा वार्ता भी निस्वार्थ भाव व लोकोपकार रूप से सदैव कहा ही करते थे, किन्तु. इस वृत्ति से एक पैसा भी कभी ग्रहण नहीं किया। बहुत वार लोगों ने भागवतादि कथा सुनकर उनकी पूजा करने की इच्छा प्रगट

की 'परन्तु' उन्हों ने यही उत्तर दिया कि वे विद्या को बेचते नहीं, और यह संस्कृत आध्यात्मिक विद्या उपदेश कल्याण के अर्थ है न कि धनोपार्जन के।

चौबे बैजनाथ जी का शुभ जन्म अपने ननसाल में शुभ मिती मार्ग शिर्शुक्ला ६ सं० १६२४ वि० तदनुसार सन् १८६७ ई० को कसवा करहल जिला मैनपुरी में हुआ था। चंद्रपुर ग्राम के देहाती पाठशाला में आपने प्राय: चार वर्ष विद्याभ्यास किया और ग्यारहवें वर्ष में आप अपने पिता जी के पास समदाना जिला शाहजहांपुर को चले गये। उस समय रेल भी थी किन्तु आप को घोड़े पर चढ़ने का इतना शौक था कि आप रेल से न जाकर ६ दिन में घोड़े पर हीगये। यहां आपने मदर्से में उर्दू की शिक्षा प्राप्त की और इन के पिता जी की बदली बरेली को हो जाने से आप वहां के इंगलिस गंज ( Inglis Ganj ) म्यूनिसीपल स्कूल में १६ अगस्त् सन् १८७६ ई को भर्ती हुए। अभाग्य वश आप के पिता का परलोक हो जाने से घर का सब भार आप के ही ऊपर आपड़ा और अधिक शिक्षा प्राप्त करने की सुविधा न होने से यद्यपि आप एक महनती व होनहार तीव्रबुद्धि विद्यार्थी थे तद्वत आप के लिये ४) रु० मासिक की छात्रवृत्ति मिलने का हुक्म भी आचुका था।

परन्तु गृहभार से विवश हो कर आप तारीख ५ नवम्बर सन् १८८३ ईस्वी को बरेली छोड़कर आगरे आ गये। यहां पर आपने Govt. Telegraph. Training Class में १०५ उम्मेदवारों के साथ ७—११—१८८३ को परीक्षा दी। इन में केवल पांच लड़के ही पास हुये और जिस में आप का नंबर दूसरा था। क्लास की पढ़ाई १६—११—८३ से आरम्भ हुई और यद्यपि शिक्षा का समय चार मास का था किन्तु आपने दो महीने के भीतर ही कार्य्य समाप्त किया और सन् १६—१—८४ को क्लास छोड़ दिया। तदुपरान्त आप तार बाबू हो कर १५) मासिक पर बांदीकुई पहुंचे

और चिरकाल के अनुभव से आप एक Compitent होशियार तार बाबू समझे जाने लगे तदनुसार आप अजमेर दिल्ली, आगरा मेन ला-इन ( Main line ) पर नियुक्त किये गये। उस समय आप एक प्रवीण तारबाबू ( Smart Signaller ) समझे जाते थे।

तारीख २ नवम्बर सन् १८८५ ई० को आप लार्ड डफरिन Lord Duffrin ( जो उस समय भारतवर्ष के गवर्नर जरनल थे ) के कैम्प ( Camp ) में तार का काम करने के लिये रेलवे की ओर से अलवर भेजे गये, जहां आपने अपना कार्य बड़ी योग्यता से सम्पादन किया। यहां आपने सब से बड़ा एक साईफर तार ( Cipher message ) लिया था, जो रात के दो बजे से आरम्भ हो कर सायंकाल के पांच बजे अर्थात् १५ घंटे में समाप्त हुआ था। यह तार साम्राज्ञी श्रीमती महारानी विक्टोरिया ( Her most gracious Majesty Queen-Empress Victoria ) की तरफ से बड़े लाट डफरिन ( Lord Duffrin ) के नाम था।

रेलवे में उचित समय पर छुट्टी न मिलने के कारण रेलवे कर्म-चारियों ( Railway Servonts ) को कैसे कष्ट भोगने पड़ते हैं यह किसी से छिपा नहीं है। ऐसे २ कारणों को लेकर ही कहीं २ रेलवे कर्मचारियों ने मिल कर हड़ताल ( Strike ) भी की है व अनेकों को ऐसे अवसर पर नौकरी छोड़ कर ही चला जाना पड़ता है। तदनुसार ही आपको भी अपनी बहिन का विवाह करनेके लिये, छुट्टी न मिलने के कारण नौकरी छोड़ कर ही जाना पडा था भगिनी के विवाह से निवृत्त हो चुकने पर आप कानपुर—अछनेरा रेलवे के टी० एम० के दफ्तर ( Cawnpore Achnera State Ry Traffic Manager's office ) में २५) मासिक पर नक़-नवीस ( Coygest ) हुए; और फिर अपनी कार्य कुशलता से फतेह-

गढ़ डी० टी० एस० ( D. T. S. ) के दफ्तर में ४८) मासिक पर ट्रेन्स क्लर्क ( Trains Clerk ) हो गये। रेलवे के काम से आप की आकांक्षा परिपूर्ण न होती देख कर आपने रेलवे की नौकरी को सन् १८९३ में छोड़ दिया। और पटना के रईस बाबू बैजनाथ प्रसाद जी की ओर से ५०) रु० मासिक पर दिल्ली के पुल ( Delh bridge ) पर आप मैनेजर कर के भेजे गये।

रेलवे की नौकरी छोड़ने पर एक विशेष घटना हुई वह उल्लेख योग्य है। अर्थात् आप का स्वभाव इतना सरल और स्नेही था कि आपके इष्ठ मित्रों ने ( फतहगढ़ के प्रतिष्ठित और शिक्षित समुदाय रेलवे, कलक्टरी व जजी इत्यादि ) एक आवेदन पत्र बाबू बैजनाथ प्रसाद जी के पास पटने भेजा जिस में आप के फतहगढ़ में रहने देने की प्रार्थना की। इस का उत्तर उक्त बाबू साहब ने बड़ी नम्रता से यही दिया कि अब तक तो चौबे जी ने आप लोगों का मनोरंजन किया। किन्तु, अब आगे के लिये यदि वे पटने रहेंगे तो उनकी संगति से उक्त बाबू जी को भी लाभ पहुंचेगा।

प्रायः १॥ वर्ष दिल्ली में रहने पर आप पटने बुला लिये गये, और तारीख ५ जून १८९५ को आप जनरल मैनेजर ( General Manager ) नियुक्त हुए। इस समय आपके नीचे प्रायः पांच सौ मनुष्य काम करते थे और निम्न लिखित पुलों व घाटों के ठेके का प्रबन्ध आप के हाथ में था:—

गंडक ब्रज—सोनपुर, जमुना ब्राज—मथुरा, जमुना—ब्राज दिल्ली तथा अलाहाबाद, सोन ब्राज—टोंस ब्रज, भोर ब्रज, अलेक्जेन्ड्रा ब्रज, वजीराबाद, जमुना ब्रज कालपी तथा ३६ मील का रकबा गंगा और गंडक नदियों का जो पटना, छपरा व मुजफ्फरपुर के जिलों में है।

सन् १८९७ में आप उपरोक्त बाबूजी के साथ मुम्बई चले गये और वहां अनेक प्रकार के व्यवसाय में अपनी कार्य्य कुशलता का

और भी अधिक योग्यता से परिचय दिया। इस के पीछे उन के साथ लखनऊ, सीतापुर की ओर रह कर गेहूं की खरीद का प्रबन्ध करते रहे। परन्तु, परतंत्रता की बेड़ियों से छुटकारा पाने और सदैव के लिये स्वाधीन होने की आकांक्षा से आप नित्य चिन्तित एवम् प्रयत्न वान रहा करते थे।

तदनुसार स्वतंत्र कार्य करने के निमित्त तारीख २६ जनवरी सन् १६०० को आप रंगून पधारे। परन्तु अभाग्यवश यहां ६ मास ही ठहरे होंगे कि वहां का जलवायु अनुकूल न होने से आप को वहां से ता० २ अगस्त को लौट आना पड़ा और २१ जनवरी सन् १६०१ को आप मुम्बई फिर पधारे और श्री वेंक्टेश्वर स्टीम प्रेसाधिपति श्रीमान सेठ खेमराज जी श्री कृष्णादास जी के यहां आपने विलायती एजेन्सी का कार्य आरम्भ किया। इस कार्यालय में कभी २ आवश्यकतानुसार आप श्री वेंक्टेश्वर समाचार का सम्पादन भी किया करते थे। वहां से पं० रामस्वरूप जी, ग्राम भाड़ावास, जिला रेवाड़ी वाले आपको अपने साथ ता० २२—१०—१६०२ को कलकत्ता लिवा ले गये और जहां आप की नियुक्त सेठ राम रिख दास जी भावसिंगा के यहां १५०) मासिक पर हुई। आपने सेठ जी की इच्छानुसार विलायती Import and Export का कार्य आरम्भ किया। किन्तु, अनुमान डेढ ही वर्ष तक यह काम करने पाये थे कि सेठ जी का परलोक वास हो गया और काम बंद कर दिया गया।

ततपश्चात् विलायत से मिस्टर शिलीसिंगर ( Mr. Schlisinger ) मेसर्स वालेस्टेन एण्ड वास्टेज ( Messrs, Wallestein & Bachstez ) की ओर से आये थे उन के साझे में १॥ वर्ष तक आपने लगभग बीस लाख का काम किया। परन्तु अकस्मात वास्टेज की मृत्यु हो जाने से वह फर्म भी बन्द हो गया, और तब आपने

बिजली का काम खोला और यह काम आज कल बाबू देवदत्त सरावगी के साथ चल रहा है, जो उक्त बाबू बैजनाथ प्रसाद जी पटने के संबंधियों में से हैं और जब से एफ० ए० पास कर के कालिज से निकले हैं, । प्राय: तभी से चौबे जी के साथ हैं यह सनातन धर्म्मावलम्बी सज्जन एवम् भक्तजन हैं और चौबे जी की आज्ञा में सर्वथा चलते रहते हैं ।

इस कारखाने का नाम बैजनाथ चौबे कम्पनी ( Baijnath Chaubey Co. ) है जिस का मुख्य दफ्तर ( Head office ) कलकत्ता में नं० २७ । २६ एजरा स्ट्रीट में है और ब्रांच आफिस (Branch office ) इस समय दिल्ली चांदनी चौक में है । आजकल आप का निवास स्थान इटावा नगर में है । आप ने घोर एवम नितान्त परिश्रम द्वारा अपने स्वतंत्र व्यवसाय से बहुत कुछ रुपया कमाया है और आप की गणना प्रतिष्ठित मनुष्यों में है ।

आप के एक पुत्र चि० हरिप्रसाद चौबे हैं जो भी एक योग्य पिता के एक योग्य पुत्र हैं ।

उदारता

सन् १९१४ ई० में इटावे में पशुक्लेश निवारणार्थ उपरोक्त चौबे बैजनाथ जी ने ईश्वर की प्रेरणानुसार ५०००) का दान स्वयं दिया तथा ५०००) से कुछ अधिक अन्य लोगों से चन्दा करा दिया । और स्वंय व अपने पुत्र और बाबू देवदत्त साहिब सहित ग्राम २ में भीषण बैसाख ज्येष्ठ की धूप में भ्रमण कर पशुओं को एकत्रित किया और इटावे में रखकर उन की रक्षा की । तथा नगर निवासियों को व अन्य लोगों को सस्ते मोल पर तथा पुण्यार्थ भी भूसा दिया । इसका विवरण " भारत मित्र " में बराबर छप चुका है ।

आजकल आप के द्वारा २५) रु० मासिक सहायता सनातन धर्म हाई स्कूल इटावे को ५०) रु० मासिक श्री माथुर चतुर्वेद विद्या-

लय मथुरा को, ५) रु० मासिक नागरी प्रचारक विद्यालय कलकत्ता, १०) रु० मासिक जापलिंग पाठशाला रुद्रपुर, जिला बलिया, १०) रु० मासिक चन्द्रपुर पाठशाला तथा २५) रु० मासिक की सहायता काशी में हो रही है।

इस के अतिरिक्त कुम्भ के मेले पर भजन पुष्पांज्जलि की हज़ारों प्रतियें धर्मार्थ आपने वितीर्ण कराईं थीं और इस ही प्रकार से लोकोपकारी अन्य संस्थाओं को भी प्राय: आप देते ही रहते है।

बड़े २ हिन्दू धर्म सम्मेलनों में प्राय: आप भाग लेते हैं इतने बड़े होने पर भी सादे से भेष में रहते हैं।

आप वैष्णव धर्मानुयायी हैं, किन्तु प्रेम सब से रखते हैं।

एक विशेषता और भी उल्लेख योग्य है, अर्थात् साधारण मनुष्यों की अपेक्षा आप का जीवन योग मार्ग द्वारा भी पवित्र है। अर्थात् आपने कुछ साधन अष्टांगयोग का भी किया है।

साक्षात्काररूप से आप का हमारा कुछ काल ही सहवास होने से हमारी तृप्ति न हुई और चित्त लटकता ही रह गया।

अतः भगवान से प्रार्थना है कि आप आयुष्मान हों और हमें इन के साथ पुन: सहवास का सुअवसर प्राप्त हो। ओशम्!!!

पाठक! कहां तक कहें कि आप सदैव सोते जागते उठते बैठते भी गरीब व दीन दुखियावों के दुःख से चिन्तित रहते हैं और अपने भरसक सदैव उन्हें अपनी शक्ति भर सुख पहुंचाने का प्रयत्न करते रहते हैं जिन के अनेकों उदाहरणों में से सब न देकर वर्त्तमान सन १९१४ में ही आपने अपने अनेकों निज कार्य्यों की हानि सह कर अकाल पीड़ितों के कष्ट निवारणार्थ जो असह्य परिश्रम किया है वह किसी से छिपा हुआ नहीं है तदर्थ प्रसन्न हो कर भारतवर्षीय युक्तप्रदेश की हमारी न्यायशीला सरकार ने आप को दर्बार में निमंत्रित कर के जो प्रशंसापत्र

अर्पण किया है उस सार्टिफ़िकेट की अविकल नक़ल इस प्रकार से है :—

This certificate is presented by the Lieutenant Governor of the United Provinces of Agra& Oudh, at a Garden Party held at Government House Allahabad, to Chaubey Baijnath, Etawah, in recognition of his services in the famine of 1914.

Dated the 2nd. December 1915. } (Sd.) J. S. Meston
Lieutenant Governor.

भाषार्थः—यह प्रशंसापत्र, युक्त प्रदेशीय लेफ्टिनेन्ट गवर्नर की ओर से, गार्डन पार्टी के समय जो अलाहाबाद गवर्नमेन्ट हाऊस में हुई थी चौबे बैजनाथ इटावाह वालों को सन् १९१४ के अकाल में दुखियों के कष्ट निवारणार्थ परिश्रम करने के उपलक्ष्य में भेट स्वरूप दिया जाता है।

अलाहाबाद ता० २-१२-१९१५ } ह० जे० एस० मेस्टन
लेफ्टिनेन्ट गवर्नर

ऐसे २ उपरोक्त उदाहरणों के अतिरिक्त स्वजाति सेवा, स्वदेशानुराग, और स्वदेशहित चिन्ता से आप का हृदय इतना अगाध आर्द्र और साहसी है कि मथुरा व आगरे में प्रायः जब जब स्वजाति हितके लिये चन्दा होने को होता है तब तब प्रायः आप कहा करते हैं कि " जितना चन्दा आप सब मिल कर एकत्रित कर सकें उतना ही आप मुझ अकेले से ले सक्ते हैं " अस्तु ! हमारी भी अन्तः करणीय प्रार्थना यह ही है कि भगवान् आप को सदैव आनन्दित रक्खे ।

# चातुर्वेदी ब्राह्मणवंश भूषण

## स्वर्गवासी श्रीयुत राजा जयकृष्णदास जी सी. एस. आई.

( लेखक पं० वनारसीदास जी चतुर्वेदी )

प्रोफेसर राजकुमार कालेज इन्दौर

येन स्वकर्मवशतो भुवनेति लोलां ।
लक्ष्मी प्रबन्ध विधिना भवनेस्वकीये ॥
दासीकृता चलति मन्थर भावतोद्य ।
लोकोत्तरः सजयकृष्ण पदाभिधानः ॥

आर्य्य समाजियों के प्रसिद्ध ग्रन्थ दयानन्द द्विग्विजय में कविरत्न अखिलानन्द जी ने राजा जयकृष्णदास जी की प्रशंसा में यह पद्य लिखा है । इस का भावार्थ स्वयं कविरत्न जी ने यह किया है 'जिन्हों-ने कि अपने प्रताप से अत्यन्त चञ्चला लक्ष्मी को भी अपने घर में बन्द कर दिया * वे सी. एस. आई. राजा जयकृष्णदास ( डिप्टी कल-

* पाठक ! गुणी के गुण को प्रकाश करना, अपने साथ नेकी करने वाले के साथ कृतज्ञता प्रकट करना मनुष्य का धर्म्म है परन्तु कृतघ्नता का प्रकट करना सज्जनों का कर्तव्य नहीं है उपरोक्त श्लोक में कविवर अखिलानन्द जी आर्य्य समाजी ने राजा साहब के माथे भी कृपणता रूपी दोष मढने का उद्योग किया है हमने बड़े प्रतिष्ठित पुराने २ समाजियों से पता लगाया है कि राजा जयकृष्णदास ने स्वामी दयानन्द सरस्वती को अनेकों बार अनेकों तरह की सहायतायें दियीं थीं अर्थात् स्वामी दयानन्द ने जो सन् १८७२ में सब से प्रथम सत्यार्थ प्रकाश लाजरस कम्पनी बनारस में छपवाया था उस का भी सब खरच राजा जयकृष्णदास जी ने दिया था तथा जब स्वामी जी अपने निजका प्रेस खोलने को हुये तब भी धन सहायता के अतिरिक्त राजा साहब ने स्वामी जी को मनों टाइप दिया था जो आजकल भी वैदिक यन्त्रालय

स्टर बिजनौर व मुरादाबाद परोपकारिणी समिति के आठवें सभासद बने ), निस्सन्देह कविरत्न जी का कथन सर्वथा सत्य है। लेकिन राजा साहब ने चञ्चला लक्ष्मी को अपने घर में बन्द ही नहीं कर दिया था बल्कि उसे कितने ही अच्छे अच्छे कार्यों में लगा भी दिया था। यदि कोई हम से पूँछे कि माथुर चतुर्वेदियों का सब से अधिक उपकार किसने किया तो हम निस्सन्देह यही कहेंगे कि 'राजा जयकृष्णदास ने'।

राजा किस तरह बने?

राजा साहब के बड़े भाई ने सन् ५७ में जब कि सिपाही विद्रोहानल भड़क उठी थी सरकार की बड़ी सहायता की थी। उस समय वे कासगंज में थे और अन्त में सरकार की सहायता करते करते ही उन्होंने प्राण गँवाये। इसके बदले में सरकार ने उनके छोटे भाई पाठक जयकृष्णदास को बहुत सी भूमि देकर 'राजा' की उपाधि से विभूषित किया। तदनन्तर उन्हें 'सी. एस. आई' की उपाधि देकर सरकार ने 'रत्न समागच्छतु काञ्चनेन' वाली कहावत चरितार्थ करदी। राजा साहब वास्तव में

---

अजमेर में मौजूद है और वहां वह "राजाजी का टाइप" कहाता है, इस के अतिरिक्त राजा साहब को स्वामी जी ने अपनी उत्तराधिकारिणी श्रीमती परोपकारिणी सभा का सभ्य भी इस ही कारण से किया था कि वह एक उदार पुरुष थे, राजा साहब ने लोकोपकारी किन किन कामों में क्या क्या उदारता कियी इस का सविस्तार विवर्ण इस जीवनी में आगे को मिलेगा अतएव ऐसे राजा साहब के प्रति जिन्होंने लोकोपकारी अनेकों कार्य्य किये हैं उन के प्रति यह कहना कि "जिन्होंने अपने प्रताप से अत्यन्त चञ्चला लक्ष्मी को भी अपने घर में बन्द कर दिया,, उचित नहीं जान पड़ता है और ऐसा लिख कर आर्य्यसमाजी कविवर पं० अखिलानन्द जी ने बड़ी भूल कियी है। श्री स्वामी जीने भी अपने उत्तराधिकारी उन सज्जनों को किये थे जो परमोदार थे अतएव उपरोक्त राजा साहब भी अपनी उदारता के कारण ही श्रीमती परोपकारिणी सभा के आठवें मेम्बर नियत हुये थे इस से प्रमाणित होता है कि राजा साहब ने लक्ष्मी को बन्द करके नहीं रक्खी थी।

ग्रन्थकर्ता

'सितारे हिन्द' थे। निम्न लिखित पंक्तियां हमारे इस कथन का पक्का प्रमाण हैं।

## ❀ सर सैय्यद अहमद के दायें हाथ ❀

अलीगढ़ कालेज के संस्थापक सर सैय्यद अहमद को राजा साहब ने पूरी पूरी सहायता दी थी। राजा साहब तथा सर सैय्यद अहमद दोनों ने एक जातीय महाविद्यालय स्थापित करने का विचार करके वर्तमान अलीगढ़ कालेज की नींव डाली थी। सर सय्यद अहमद राजा साहब को भाई के समान समझते थे। यदि राजा साहब अलीगढ़ कालेज को सहायता न देते तो हमें इस बात में सन्देह है कि वह आज इतनी उन्नति कर सकता अलीगढ़ कालेज का उत्तम पुस्तकालय भी राजा साहब के प्रयत्न का फल है। अब भी एक १०) मासिक का स्कालरशिप (छात्रवृत्ति) राजा साहब की ओर से अलीगढ़ कालेज में दी जाती है। यद्यपि राजा साहब ने सर सैय्यद अहमद को पूरी पूरी सहायता दी पर सर सैय्यद अहमद ने अलीगढ़ कालेज को एक जाति विशेष का बना कर राजासाहब की उन आशाओं पर पानी फेर दिया जो कि वे अलीगढ़ कालेज से लगाये हुए थे॥

## आगरा कालेज टूटने से बचाया।

उत्तरी भारत का सब से पहिला भारतीय ग्रेजुएट आगरा कालेज से ही निकला था। पहिले तो आगरा कालेज बड़े मज़े से चलता रहा लेकिन जब कई कालेज आगरे में खुलगये तो फिर आगरा कालेज प्रतिद्वन्दिता में पछड़ गया। इस का फल यह हुआ कि गवर्नमेंट को लिखना पड़ा * कि यदि आगरा कालेज के छात्रों की संख्या और भी

---

* Should numbers further decline it deserved consideration whether the Govt college might not with advantage be abolished, giving way to other aided institutions in the neighbourhood.

(देखो स्टूडेंट वर्ड १९०६ अक्टूबर की प्रति में प्रिन्सीपल जोन्स का लेख)

कम हो तो यह विषय विचारणीय होगा कि आगरा कालेज बन्द ही क्यों न कर दिया जावे। यह था आगरा कालेज की मृत्यु का डंका। ऐसे समय में राजा जयकृष्णदास जी ने राजा लक्ष्मणसिंह जी (आगरा) राजाबालमकुंद जी (ताहरपुर) तथा मुंशी नवलकिशोर जी सी. एस. आई. (लखनऊ) इत्यादि की सहायता से आगरा कालेज के लिये चन्दा उगाना शुरू किया। बीसियों मीटिंग कराईं और कई मैमोरियल भेजे। जैसे तैसे सरकार का यह विचार, कि आगरा कालेज तोड़दिया जावे, दूर किया गया। आगरा कालेज के चन्दे के लिये राजासाहब को कश्मीर भी जाना पड़ा था। आगरा कालेज नहीं टूटा। आज यह कालेज युक्तप्रान्त में दूसरे या तीसरे नम्बर का है। सैकड़ों ही ग्रेजुएट इससे निकल चुके हैं।

बरेली कालेज-को भी आपने बड़ी सहायता दी थी। उस में सहायकों की सूची में आप का नाम भी अंकित है। प्रतापसिंह गर्ल्स स्कूल (कन्यापाठशाला) मुरादाबाद को आपने भरपूर सहायता दी।

इस पाठशाला में कन्याओं को मिडिल तक हिन्दी और २ वर्ष तक अंग्रेज़ी पढ़ाई जाती है। मुरादाबाद के सरकारी अस्पताल में कई सहस्र रुपया व्यय करके रोगियों के रहने के लिये एक बड़ा Ward मकान बनवाया और उसका नाम पाठक वृन्दावन वार्ड रक्खा। 'लेडी डफरिन अस्पताल' को भी उन्होंने बड़ी सहायता दी थी।

## पाठक वृन्दावन वैदिक आश्रम की स्थापना।

सब से बड़ा काम (मेरा अभिप्राय यहां स्थायी काम से है) राजासाहब ने यह किया कि उपर्युक्त आश्रम की स्थापना की। इसे लोग चौबे बोर्डिंग हाउस के नाम से पुकारते हैं। यह आगरे की मीनाबाज़ार कोठी में है। यहां पर बिना किराया लिये ही चतुर्वेदी विद्यार्थी जो कालेज तथा स्कूलों में पढ़ते हैं, रक्खे जाते हैं। आर्थिक सहायता भी कुछ विद्यार्थियों को दी जाती है। इस में राजासाहब के वंशजों का कई सहस्र रुपया प्रति वर्ष व्यय होता है। कोठी बड़ी शानदार है। इसकी कीमत इस समय ६० सहस्र रुपये से कम न होगी। इस में लगभग ४०

विद्यार्थी निवास करते हैं। राजा साहब ने अपनी जायदाद का कुछ अंश इसी से लगा दिया था जिससे कि प्रबन्ध में आर्थिक सहायता के अभाव से शिथिलता न आवे। राजासाहब ने इसके विषय में एक बार कहा था मैंने एक ज़रा सा मकान बोर्डिंग हाउस के लिये देदिया तो क्या बड़ा काम किया ? जाति के साथ क्या बड़ा सलूक किया ? अपना फ़र्ज़ समझ कर ही मैंने कुछ जायदाद भी दी है तो इस में बड़ाई क्या है ? मेरा यह भी फ़र्ज़ है कि मेरे और मेरे भाइयों के होनहार बच्चे उस में रहकर इल्म को तहसीलें (प्राप्तकरें)। हा ! आज ब्राह्मण समाज में ऐसे कर्तव्य को समझने वाले सज्जनों का अब अभाव सा ही होगया है !

## ❀ स्वामी दयानन्द को सहायता ❀

आर्य्य समाज के संस्थापक स्वामीदयानन्द का परिचय देने की आवश्यकता नहीं। बहुत सी बातों में हमारा उनसे मत भेद होने पर भी उन के उपयोगी कार्य्य की प्रशंसा हमें करनी ही पड़ती है।

हमारा काम यहां उन के मत की आलोचना करना नहीं है। हम केवल यह दिखलाना चाहते हैं कि हमारे चरितनायक ने स्वामी जी को क्या सहायता दी। यदि आप लेखराम की लिखी हुई स्वामी जी की जीवनी पढ़ेंगे तो आपको उसमें कई स्थानों पर राजासाहब का नाम मिलेगा। उसीसे पता लगता है कि २० दिसम्बर सन् १८७३ ई० को स्वामीदयानन्द छलेसर में राजासाहब से मिले थे। २६ दिसम्बर को जब स्वामी जी अलीगढ़ पहुंचे तो राजासाहब के ही अतिथि हुए।

हाथरस में जब लोगों ने स्वामी जी के साथ झगड़ा करना चाहाथा राजासाहब ने ही स्वामी जी को बचाया था। कहा जाता है कि राजासाहब ने ही स्वामीदयानन्द को हिन्दी पढ़ने के लिये उत्तेजित कियाथा और कई पण्डित रखदिये थे।

## ❀ सत्यार्थ प्रकाश प्रथम संस्करण छपवाया ❀

आर्य्य समाजियों का प्रसिद्ध ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' जिसकी कि लाखों प्रतियां आज देश विदेश में फैलीहुई हैं और जिसका कि अनुवाद मराठी, बंगाली, गुजराती, तमिल, अंग्रेज़ी तथा उर्दू में होचुका है,

राजासाहब के ही प्रबन्ध से लिखाया गया था। लेखराम की लिखी हुई स्वामी जी की उर्दू जीवनी के हिन्दी अनुवादक ला० जिम्मनलाल लिखते हैं "इसी समय स्वामीजी ने राजाजयकृष्णदास के कथनानुसार लेख का काम प्रारम्भ किया। राजासाहब ने अपनी ओर से कई पण्डित लिखने के लिये नियत कर दिये थे। स्वामी जी बोलते जाते थे और पण्डित लोग लिखते जाते थे" जब आर्य्यसमाजियों से कहा जाता है कि सत्यार्थप्रकाश के प्रथमसंस्करण में श्राद्ध का मंडन क्यों किया गया है, तो वे उत्तर देते हैं कि राजासाहब के रक्खे हुए पण्डितों ने यह अपनी ओर से लिख दिया था। यह कथन सत्य है या असत्य यह हमें ज्ञात नहीं।

## स्वामी जी के वसीयत नामे में राजासाहब का नाम

उदयपुर में स्वामी जी ने जो वसीयत नामा लिखाया था उस में उन्होंने २३ सज्जनों को अपने वस्तु, पुस्तक, धन, यंत्रालय आदि का सर्वस्व अधिकार दिया था। इन तेईस आदमियों में श्रीमान् महाराजाधिराज महाराणा सज्जनसिंह जी उदयपुराधीश जी. सी. एस. आई., राजासाहब 'शाहपुरा' जस्टिस महादेव गोविन्द रानाडे आदि प्रसिद्ध प्रसिद्ध पुरुष थे। यह कहना बाहुल्य मात्र है कि राजासाहब भी इन्हीं तेईस पुरुषों में से थे।

## राजासाहब का मत और उनके विचार।

जहां तक हम जानते हैं राजासाहब आर्य्यसमाजी नहीं थे उदार विचारों के आदमी थे।

स्त्री शिक्षा के वे पक्षपाती थे। विलायत यात्रा के विरोधी थे लेकिन पीछे उन्हें अपने नाती कुं० जगदीश प्रसाद जी बी. ए. को विलायत पढ़ने के लिये भेजना पड़ा था। कुं० जगदीश प्रसाद जी आई. सी. एस (I. C. S.) आजकल युक्त प्रान्त के किसी ज़िले में कलक्टर हैं।

राजा साहब जाति सुधार Reform के भी पक्ष में थे। राजनैतिक बातों में वे अपरिपक्व बुद्धि मनुष्यों का हस्तक्षेप करना हानिकारक समझते थे। वे कहते थे "अंग्रेजी तालीम राज्य के लिहाज से

और संस्कृत मज़हब की रू से सीखनी चाहिये" यहां पर यह कह देना भी उचित होगा कि राजा साहब अंग्रेज़ी बहुत कम जानते थे लेकिन तब भी अंग्रेज़ अफसरों पर आप का बड़ा रोब और दबदबा रहता था वे बड़े 'दबंग' आदमी थे, 'जो हुज़ूर की राय' कहने वाले नहीं थे। फ़ारसी के बड़े पंडित थे लेकिन खेद है कि वे संस्कृत नहीं जानते थे। बोल चाल में प्रायः उर्दू शब्दों का प्रयोग करते थे।

हम राजा साहब को इसलिये आदर पूर्वक स्मरण करते हैं कि उन्हों ने अपनी जाति की तथा अपने देश की भलाई के लिये बहुत काम किया था। जिन ने जाति की भलाई नहीं की और देश की उन्नति नहीं की उसे, चाहे वह कुबेर के बराबर धनवान ही क्यों न हो, कौन स्मरण करेगा! परमेश्वर करे कि ब्राह्मण समाज के अन्य धनाढ्य राजा साहब का अनुकरण करें। अन्त में हम यही कहते हैं कि ब्राह्मण समाज के अन्य अंगों के साथ साथ ही—

नवजीवन सत्य पाइ जागै और जगमगाइ।
सकल चतुर्वेदी जाति विनय यह हमारी॥

१२९ चराकी:—मध्यप्रदेशीय गौड़ ब्राह्मणों का एक पद है इन की विशेष लोक संख्या गोंड़वाना में है किसी काल में ये लोग राजा के यहां चराग़ जलाया करते थे अतएव मुसलमानी राज्य के समय में इन का नाम चराग़ी पड़ गया जो भाषा में चराकी करके प्रसिद्ध हुआ।

१३० चातुर्वेदी म्होड़:—यह म्होड़ ब्राह्मणों की जाति का एक भेद है म्होड़ ब्राह्मणों के विषय में इस ही ग्रन्थ में मकार की जाति वर्ग में लिखेंगे वहां देख लेना, रामचन्द्र जी के यज्ञ में पन्द्रह हज़ार म्होड़ ब्राह्मण अति कर्मठी व वेद वेदांगों में पारंगत थे उन्हें चातुर्वेदी की पदवी मिली थी यथा:—

उक्त मुक्त मिदं वाक्यं भवद्भिः शास्त्र पारगैः।
चातुर्विद्या भवंतोहि चतुर्थस्येह वेदनात्॥

मिथ० ब्रा० मा० श्लो० २०१

अर्थ व भावार्थ तो हम इस का ऊपर कह आये हैं ये लोग प्रारब्ध-वश होकर उदासीन हो बैठे थे तब ऋषि ने उद्योग व प्रारब्ध विवेक इन्हें समझा कर चातुर्वेदी की पदवी दियी थी तब से चातुर्वेदी स्थोड़ कहा ने लगे।

१३१ चार्लु:—यह दक्षिणी श्रीवैष्णव ब्राह्मणों का एक भेद है ये वहां रामानुजी ब्राह्मण भी कहाते हैं कहीं ये चार्लु कहाते हैं तो कहीं आचार्लु भी कहाते हैं यथार्थ में ये दोनों ही शब्द शुद्ध शब्द आचार्य्य के अपभ्रंशरूप हैं इस जाति में विद्या की बड़ी उन्नति है, माईसोर राज्य के स्वर्ग वासी प्राइम मिनिस्टर पंडितवर श्रीमान् रंगाचार्लु जी थे तथा मद्रास हाईकोर्ट के महामान्य अडवोकेट आनन्दाचार्लु जी हैं।

१३२ चिरकोड़ी:—यह बंगाली ब्राह्मणों की जाति का कुल नाम है बंगाल में यह नाम अपने नाम के अन्त में लगाया जाकर बोला बुलाया जाता है।

१३३ चित्त पावन:—यह दक्षिण देशीय ब्राह्मण जाति का एक भेद है इन का दूसरा नाम कोकनस्थ ब्राह्मण भी है इन का विवर्ण जाति अन्वेषण प्रथम भाग पृष्ठ २०७ में कोकनस्थ स्थम्भ में लिख आये हैं तिस के अतिरिक्त बहुत कुछ उल्लेख तो सप्तखण्डी ग्रन्थ में करेंगे तथापि इस ब्राह्मण जाति के साथ प्रायः अन्य ब्राह्मणों ने द्वेष बुद्धि से कई विरुद्ध बातें लिखी हैं वे अमाननीय हैं क्योंकि ब्राह्मणों के उत्तम गुण धैर्य्य, शौर्य्य, सन्तोष, शान्ति, दया तथा परोपकारितादि गुणों का समावेश इस जाति में विशेष रूप से देखा जाता है इस का शब्दार्थ भी ऐसा होता है कि चित्त है पावन जिस का वे चित्त पावन कहाये अर्थात् परम पवित्र शुद्धान्तःकरणी ब्राह्मण चित्त पावन कहाये, परन्तु इन के इस उच्चत्व को देख कर किसी किसी द्वेषी महाशय ने इन के विषय मन घड़ंत बातें भी लिख मारी हैं क्यों कि इन की उत्तमता के विषय कृष्ण शास्त्री साठे की कृपाइ बृहत्पाराशरी में ऐसे प्रमाण मिलते हैं कि:—

कौंकणाश्चित्तखास्ते चित्तपावन संज्ञकाः ।
ब्राह्मणेषुच सर्वेषु यतस्ते उत्तमा मताः ॥
एतेषां वंशजाः सर्वे विज्ञेया ब्राह्मणा खलु ।

अर्थात् कोकन ब्राह्मण ही चित्त पावन ब्राह्मण कहे जाते हैं और ये अन्य ब्राह्मणों की तरह उत्तम हैं और ये लोग सर्वत्र ब्राह्मण ही माने जाते हैं।

भट्टाचार्य्य जी ने भी चित्तपावन का अर्थ ऐसा किया है कि Purifier or curer of the soul अर्थात् मन व आत्मा को पवित्र करने वाले चित्तपावन ब्राह्मण कहाते हैं।

स्कन्दपुराणान्तर्गत सह्याद्रि खण्ड के उत्तरार्द्ध में ऐसी कथा है कि भार्गव ने इन्हें चितास्थान में पवित्र किया था जिस से इन का नाम चित्तपावन हुआ यथा :-

ब्राह्मण्यंच ततो दत्वा सर्व विद्या सुलक्षणाम् ।
चितास्थाने पवित्रत्वाच्चित्तपावन संज्ञकाः ॥३७॥
सर्व कालेस्मरन्नेवं कार्य्यार्थं चागतोम्यहम् ।
एवंहि चाशिषस्तेषां दत्वातु भार्गवो मुनिः ॥३८॥

अर्थात् भार्गव ने इन्हें ब्राह्मणत्व तथा सर्वगुण सम्पन्नता प्रदान करके इन्हें चितास्थान में और भी पवित्र किया और इन्हें चित्तपावन ब्राह्मण कहा ॥३७॥ इस प्रकार इन्हें आशीर्वाद देकर पुनः यह कहा कि हे ब्राह्मणो ! मैं तुम से बहुत प्रसन्न हूं इसलिये यदि मेरे लायक कोई काम काज होय तो तुम मुझे याद करना ॥३८॥ भार्गव के इस आशीर्वाद से इस जाति ने सर्वगुण सम्पन्नता तथा विद्या बुद्धि में भी बड़ी योग्यता प्राप्त किथी है अर्थात् पेशवा महाराज जो मुम्बई प्रान्त के राजा थे वे भी इस ही वंश के थे तथा मान्यवर व आनरेबल स्वर्गवासी पं० गोपालकृष्ण गोखले, सी. आई. ई., मान्यवर लोकमान्य पटवर्धन जी, राजा दिनकर राव लेट प्राइम मिनिस्टिर महाराजा सिंधिया ग्वालियर

आदि आदि सब ही कोकणस्थ व चित्तपावन ब्राह्मण थे यह ही नहीं प्रातः स्मरणीय देशभक्त स्वर्गवासी मिस्टर महादेव गोविन्द रानाडे जस्टिस मुम्बई हाईकोर्ट तथा स्वर्गवासी राव साहेब विश्वनाथ नरायन मन्डलिक मुम्बई हाईकोर्ट के प्रसिद्ध ऐडवोकेट व लेजिस्लेटिव कौंसिल के आनरेबल मेम्बर थे ये भी इस ही जाति के भूषण थे। अतः ये शुद्ध पवित्र ब्राह्मण हैं ऐसा मानना चाहिये।

**१३४ चित्रोड़ा** :—यह गुजरात के नागर ब्राह्मणों का एक भेद है गुजरात में चितरोड एक गांव है वहां से निकास होने से ये चित्रोड़े कहाये इन में वेदों के ज्ञाता ब्राह्मण हैं इन का समुदाय भाव नगर व बड़ोदा की ओर विशेष रूप से है। एक विद्वान् ने ऐसा भी लिखा है कि मुसलमानों के अत्याचार से ये लोग चितोड़ चले गये थे अतः चितरोडे कहाये।

**१३५ चैनपुरिया** :—यह सनाढ्य ब्राह्मणों का एक पद है चैनपुर युक्त प्रदेश में एक गांव है तहां से निकास होने से सनाढ्यों का एक भेद चैनपुरिया हुआ।

**१३६ चौधरी** :—यह भी एक ब्राह्मण जाति का पद है यह पद युक्त प्रदेशीय गौड़ समुदाय में विशेष रूप से पाया जाता है यह नाम चतुर×धुरी इस शुद्ध शब्द का अपभ्रंश रूप है, यह पद पहिले उन ब्राह्मणों को मिला था जो चारों धुरों को अर्थात् हिन्दु मात्र के आश्रम स्थान चारों वेदरूपी धुरों को जिन्होंने धारण किया है वे चतुरधुरी कहाते कहाते चौधरी कहाने लगे परन्तु एक विद्वान् की यह भी सम्मति है कि यह नाम "चौधुरी" शब्द का बिगड़ा हुआ रूप चौधरी है अर्थ तो उपरोक्त लेखानुसार ही इस का भी जानना चाहिये। जब इस जाति के पूर्व पुरुषा चारों वेदों के ज्ञाता थे, व वेदों के अंग उपांग न्याय, मीमांसा और तर्क शास्त्र के जानने वाले थे तब उस समय इन्हें यह उपाधि मिली थी और आजकल के आनरेरी मजिस्ट्रेटों की तरह इन्हें द्विजाति समुदाय के झगड़े निबटाने का अधिकार दिया गया था जिस

को दूसरे शब्दों में पंचायत का "सरपञ्च" भी कह सके हैं परन्तु आजकल ये निरक्षर भट्टाचार्य्य हैं और पञ्चायत में बैठकर न्याय अन्याय करने में तनिकसा भी विचार नहीं करते हैं।

१३७ चौवीसे :—यह गुजराती ब्राह्मणों का एक भेद है विशेष रूप से ये लोग बड़ौदा राज्य में हैं तथा कुछ कुछ नर्वदा के तीर भी मिलते हैं यह नाम पड़ने का कारण यह है कि इन के चौवीस गोत्र हैं अतः ये चौवीसे कहाते हैं।

१३८ चौबे :—यह चतुर्वेदी शुद्ध शब्द का अपभ्रंश रूप है इन के तीन भेद हैं कड़ुवे चौबे, मीठेचौबे और लाल चौबे, इन का पूरा विवर्ण "चतुर्वेदी" स्थम्भ में लिख आये हैं तहां देख लेना।

१३९ चौरासिया :—यह गौड़ ब्राह्मणान्तर्गत एक ब्राह्मण समुदाय है इन की वस्ती जयपुर व जोधपुर राज्य में है किसी समय चौरासी ग्रामों की वृत्ति इन के यहां थी अतः ये चौरासिये ब्राह्मण कहाये अथवा किसी ऐतिहासिक विद्वान् की सम्मति यह भी है कि ये भट्ट मेवाड़ सम्प्रदाय में हैं और विशेष रूप से मारवाड़ के चौरासी गांवों में बहुत हैं अतः चौरासिये कहाये।

१४० चौलदेशी :—यह दक्षिण प्रान्तस्थ ब्राह्मण जाति का एक भेद है ये लोग कोल्हापुर की ओर विशेष रूप से निवास करते हैं आचार विचार से मुक्त होते हुये विद्या स्थिती में बहुत गिरे हुये हैं कोल्हापुर का प्राचीन नाम चौलदेश भी है अतः वहां के ब्राह्मण चौलदेशी कहाये।

१४१ चौवर :—यह ट्रावनकोर के शैवसम्प्रदायी नाम्बूरी ब्राह्मणों का एक भेद है इन का विशेष विवर्ण नाम्बूरी जाति के साथ लिखेंगे!

१४२ चंडवानियेजोषी :—यह मारवाड़ देश की एक ब्राह्मण जाति का भेद है यथार्थ में ये प्रोहित हैं परन्तु चंडू की इस कुल को पदवी है यह पद इन्हें अनुमान एक सहस्र वर्ष से मिला है इन के

पूर्व पुरुषा वसुदेव जी थे जो भाटी देवराज के पुरोहित हुए उन के पुत्र राघोजी व राघोजी के तीन बेटे चंडू, दामोदर और विद्याधर हुये इनमें चंडू जी ज्योतिष विद्या के बड़े ज्ञाता थे जिन्हों ने अपने नाम पर सम्वत् १५८८ में पञ्चांग चलाया जो आजतक चंडूपञ्चांग कहा जाकर सर्वत्र प्रसिद्ध है, चंडू जी के कोई सन्तान न थी अतः उन्हों ने अपने भाई को अपने गोद बिठाया तिस का वंश चंडूवाले ज्योतिषी कहाते कहाते चंडू-वाले जोषी कहे जाने लगा।

**१४३ छत्री ब्राह्मण** :—यह भी ब्राह्मण जाति का एक भेद है वे ब्राह्मण जो ब्राह्मण वंश में पैदा होकर महर्षि द्रोणाचार्य्य की तरह अस्त्र शस्त्रों का प्रयोग करते हैं वे छत्री ब्राह्मण कहाते हैं जैसे आजकल राज पूताने में वे गौड़ ब्राह्मण जो राजा के यहां उच्चपद पर नियत हैं उन्हें राजा साहब की तरह अस्त्र शस्त्रों का प्रयोग करना पड़-ता है तैसे ही बिहार प्रदेश में भूमिहार ब्राह्मण स्वयं राजा व ज़मीदार होने के कारण अस्त्र शस्त्रों का प्रयोग करते हैं उन्हें भी इस कारण से लोग कहीं क्षत्रिय व कहीं ब्राह्मण समझते हैं यद्यपि वे यथार्थ में ब्राह्मण ही हैं ऐसी ही दशा कहीं कहीं सनाढ्य व तगा ब्राह्मणों की भी है।

**१४४ छन्याति** :—यह गौड़ सम्प्रदायी ब्राह्मणों का एक समुदाय है अर्थात् जयपुर के स्वर्गवासी राजा जयसिंह जी ने ब्राह्मणों में परस्पर खानपान का भेद देखकर एक महती सभा करायी थी तिसद्वारा १ पारीख, २ सारस्वत ३ गौड़ ४ गुर्जर गौड़ ५ सिखवाल और ६ दाहिमा इन छहों का कच्चा पक्का भोजन एक किया गया था तब से आजतक ये छहों प्रकार के ब्राह्मण परस्पर कच्ची पक्की में सम्मिलित हैं और बेटी व्यवहार अपने अपने वर्ग में करते हैं जो राज-पूताने में छन्याति नाम करके प्रसिद्ध हैं।

१४५ जुझौतिया :—यह ब्राह्मणों की एक जाति अर्थात् छोटासा कुल है।

१४६ जेठीमल्लम्होड़ :—यह म्होड़ ब्राह्मणों का एक भेद है परन्तु म्होड़ ब्राह्मणों में इन का जाति पद बहुत गिराहुआ है अर्थात् चातुर्वेदी म्होड़ों में से जो बीस ब्राह्मण हनुमान जी को ढूंढने गये थे वे मार्ग में ही रहगये थे वे आचारभ्रष्ट होगये उन्हीं की जेठीमल म्होड़ संज्ञा हुयी। ये लोग नीच जातियों के यहां की वृत्ति भी करते हैं।

१४७ जेवर :—यह मिथला तिरहुत वासी मैथिल ब्राह्मणों के समुदाय में पांचवां भेद है।

१४८ जोग :—उपरोक्त मैथिल ब्राह्मणों का तृतीय भेद है यह नाम उस समुदाय के प्रति सम्बोधित होता है जो श्रोत्रियों के साथ सम्बन्ध करके नीचश्रेणी से उच्चश्रेणी को प्राप्त हो जाते हैं।

जोषी :—यह "ज्योतिषी" शुद्ध संस्कृत शब्द का अपभ्रंश रूप है जिन ब्राह्मणों के यहां ज्योतिष विद्या का विशेष कार्य्य होता था वे ज्योतिषी कहाते कहाते आज कल भाषा में केवल जोषी कहे जाते हैं, इस के अतिरिक्त जोषी वे भी कहाते हैं जो राजपूताने में बनियायी हिसाब किताब व पट्टी पहाड़े पढ़ाते हैं। अतः यह ब्राह्मण जाति की एक पदवी है। दक्षिण में इस शब्दका प्रयोग नीचतम कोटी के ब्राह्मणों के सम्बन्ध में किया जाता है अर्थात् वहां एक ब्राह्मण जाति है जो इस देश के डाकोतों की तरह निषिद्धतम दान प्रतिग्रह लेते रहते हैं वे भी वहां जोषी कहाते हैं।

१५० जम्बू :—यह एक ब्राह्मण जाति है इन्हें कश्मीरी ब्राह्मणों के अन्तर्गत समझना चाहिये, कश्मीर राज्य में जम्बू एक नगर है तहां से निकास होने के कारण दूसरे देशों में जाकर कश्मीरी ब्राह्मण ही जम्बू ब्राह्मण कहाते हैं।

१५१ झा:—यह मैथिल ब्राह्मण समुदाय का एक भेद है यह शब्द उपाध्याय शब्द का अपभ्रंश रूप है ये लोग कहीं झा कहीं ओझा व कहीं रोजा भी कहाते हैं, ओझा शब्द का विवर्ण तो जाति अन्वेषण प्रथम भाग में लिख आये हैं। मान्यवर भट्टाचार्य्य जी ने अनेकों ग्रन्थों के आधारानुसार अपनी पुस्तक के पृष्ठ ४६ में ऐसा फुट नोट दिया है कि "जो भूत प्रेतादि डाकिनी शाकिनी का प्रयोग व झाड़ा फूंकी करने वाले तथा सर्प आदि के काटने वाले का इलाज करने वाले प्रायः ओझा व रोजा कहाते हैं और ये किसी जाति विशेष के ही नहीं होते हैं किन्तु प्रायः नीच जाति के मनुष्य होते हैं * विशेष देखना हो तो इस ग्रन्थ के "ओझा" स्थम्भ को देखिये।

१५२ झारा:—इन का दूसरा नाम गौड़ ब्राह्मण भी है ये लोग मध्य प्रदेश में हैं इन की वस्ती नागपुर व जब्बलपुर में विशेष रूप से है असल में ये झांड़ा ब्राह्मण कहाते कहाते झारा कहाने लग गये क्योंकि उस ओर झाड़ों की व पेड़ों की बनी बड़ी दूर में है अत-

* यह भी उचित नहीं जान पड़ता क्योंकि मैथिल ब्राह्मणों में भी ओझे होते हैं जो सर्व सम्मति से उच्च ब्राह्मण माने जाते हैं।

एव उस ओर के गौड़ ब्राह्मणों को अन्य देशों में झारा ब्राह्मण कहके पुकारने लगे।

१५३ झारोल्या:—यह गौड़ ब्राह्मणों की जाति का एक भेद है जिन्हें राजा जन्मेजय के यहां से झाराल ग्राम दान में मिला था वे गौड़ ब्राह्मण उस झारोल ग्राम के नाम से प्रसिद्ध होकर झारोले कहाये।

१५४ झिझोटिया:— यह बुंदेलखंड के ब्राह्मणों का एक भेद है ये लोग सुल्तानपुर व चन्देरी आदि में बहुतायत से हैं बुंदेलखंड का प्राचीन नाम जिझोटा है तहां के ब्राह्मण जिझोटिया कहाते हैं ये कन्नोजिया ब्राह्मणों के अन्तर्गत समुदाय हैं क्योंकि, इन के गोत्रादि कन्नोजिया समुदाय से मिलते हैं।

१५५ झुंडिया:— यह गौड़ ब्राह्मणों का एक कुल नाम है जिसे कहीं कहीं बंक भी बोलते हैं तो कहीं कहीं थल्ल भी कहते हैं।

१५६ टोलक्य:— यह गुजराती ब्राह्मणों के समुदाय में औदीच्य ब्राह्मणों का एक भेद है।

१५७ डाकोत:— यह एक ब्राह्मण जाति है देश भेद व

देश भाषा के कारण ये लोग कहीं डाकोत, कहीं भडरी, कहीं भडली, कहीं जोतगी, कहीं दिसन्त्री, कहीं जोषी, कहीं शनिश्चरिया कहीं ग्रहविप्र, कहीं ज्योतिषी जी और कहीं नक्षत्रजीवी और कहीं थावरिया कहाते हैं, इन की उत्पत्ति के विषय में जन श्रुति ऐसी प्रसिद्ध है कि " ब्राह्मण के वीर्य्य व भडली नाम्नी एक शूद्रा के संयोग से जो सन्तान हुयी वह डाकोत व भडरी कहायी" परन्तु प्रथम तो यह जनश्रुति मानने योग्य नहीं है क्योंकि प्रायः जन श्रुति मिथ्या ही हुवा करती हैं और कोई भी द्वेषी समुदाय व जन, मिथ्या अपवाद फैला सक्ता है क्यों कि लिखा है कि:—

अतथ्य तथ्योवा हरति महिमानं जनरवः ।

अर्थात् सच व झूंठ जो कुछ बात फैल जाती है उस से हानि ही होती है तदनुसार इस जनश्रुति के आधारानुसार लोग इस जाति को ब्राह्मण मानने में ही सन्देह करते हैं, परन्तु यह उचित नहीं जान पड़ता है क्योंकि प्रथम तो यह जनश्रुति सत्य नहीं और यदि सत्य भी मान लें तौ भी ये ब्राह्मण के वीर्य्य से पैदा हुये हैं अतः हम पूर्व इस ही ग्रन्थ में बड़े २ शास्त्रोक्त प्रमाणो द्वारा " वीर्य्य प्रधान " प्रकरण में प्रमाणित कर आये हैं कि जिस का वीर्य्य है उस ही की वह जाति है अतएव ब्राह्मण के वीर्य्य से उत्पन्न होने से यह जाति ब्राह्मण है ऐसा निश्चय हुवा है ।

प्रत्यक्ष रूप से भी देखा जाय तो दान का लेना इस जाति में सदैव से चला आरहा है और दान लेना केवल एक मात्र ब्राह्मण ही का काम है अतः ये ब्राह्मण हैं । आजकल जैसे अन्य ब्राह्मण गण मन्दिरों के पुजारी हैं तैसे ही ये डाकोत लोग भी शनि देव के मन्दिर के पुजारी हैं ।

पूर्व काल में यह वंश बड़ा तपस्वी था निषिद्ध से निषिद्ध दान,

व क्रूरग्रहों का दान तथा सोना, चांदी, छाया पात्र, पुराने वस्त्र, भैंसे, बकरे, ऊंट आदि आदिकों का कठिन से कठिन दान तक लेकर ये लोग अपने तपबल से अपना पापोद्धार कर लेते थे, परन्तु समय के हेर फेर से अब ये लोग केवल नाम मात्र के डाकोत रह गये हैं अर्थात् पढ़ना लिखना व कर्म्म काण्ड करना कराना त्याग कर केवल एक मात्र दान भिक्षा लेना ही अपना कर्तव्य मान लिया है अतएव ऐसा नहीं होना चाहिये था।

यथार्थ में यह जाति डक ऋषि की सन्तान है जिन का वर्णन शास्त्रों में मिलता है यथाः—

भृगोस्तु पुत्रास्सप्तासन् सर्वे तुल्या भृगोर्गुणैः।
च्यवनो वज्रशीर्षश्च शुचिरौर्वस्तथैवच॥
शुक्रो वरेण्यश्चविभुः सवनश्चेति सप्तते।

महाभा० अनुशासनपर्व ( १४ ) अ० ८५ श्लो० १२८,१२९

अर्थः—भृगुजी के गुणों के समान उन भृगुजी के च्यवन, बज्र शीर्ष, शुचि, शुक्र, वरेण्य और विभुसवन ये सात पुत्र पैदा हुये इन्हीं शुक्राचार्य्य के वंश में डक ऋषि हुये हैं उन्हीं के वंश में डाकोत हैं यथाः-

आसीत्पुरा मुनिश्रेष्ठो भार्गवो धर्म्म तत्परः।
तस्य पुत्रोऽतितेजस्वी पंडाचार्य्य इतिस्मृतः॥१॥
द्वितीयो मर्कटाचार्य्यः शुक्राचार्यस्य पुत्रकः।
पडाचार्य्यस्य भवत्पुत्राः शंकराचार्यवाचकः॥२॥
ततो बभूवशांडिल्यः स्वनाम्ना स्मृतिकारकः।
तत्पुत्रो डामराचार्यः चिकित्सा निपुणासदा॥३॥

**सज्योतिर्मयेशास्त्रे निपुणं कृतवान् भव ।**
**सो संहितां डामरीडक्काः तच्छिष्यावहवो भवत् ॥४॥**

नारद पन्चरात्र भाग तीसरा अ० २७ श्लो० १ से ४ तक

अर्थः— पूर्वकाल में भार्गव मुनि अर्थात् शुक्राचार्य्यजी एक श्रेष्ठ मुनि थे उनके अति तेजस्वी पंडाचार्य्य तथा मर्कटाचार्य्य नामक दो पुत्र उत्पन्न हुये, इन्हीं पंडाचार्य के शंकराचार्य नामक एक पुत्र हुवा॥ २॥ इनही शंकराचार्य जी के पुत्र शांडिल्य ऋषि हुये जिन्हों ने शांडिल्य स्मृति बनायी, इन्हीं शांडिल्य जी के डामराचार्य्य हुये जो चिकित्सा व ज्योतिष विद्या में बड़े निपुण हुये वे डक्कनाम से प्रसिद्ध हुये उन्हीं का वंश आज कल के प्रसिद्ध डाकोत हैं यथाः—

**डक्काइति प्रतिख्याता कथिताः शुक्रवंशजाः ।**
**तस्य कन्या मदातार यतेषां डक्क संज्ञकः ॥११॥**

अर्थात् शुक्र के वंश में पैदा हुये ब्राह्मण डक्का कहाये और भाषा में डक्का कहाते कहाते डाकोत कहाने लगगये । इस ही तरह और भी देखिये ।

मुंशी कि० लाल जी मुंसिफ दरजे दोयम ने जातिविषयक एक पुस्तक अ० हिन्द लिखी है उस में आप ने इस जाति के विषय में लिखा है कि यह जाति ब्राह्मण के वीर्य्य व अहिरिन के पेट से पैदा हुयी है अतएव इस प्रमाणाधार से भी डाकोत व भडरी लोग वीर्य्य प्रधानता के नियम से ब्राह्मण सिद्ध होते हैं इस की पूरी आख्यायिका इस प्रकार से है कि राजा भोज की सभा में वाराह मिहर नामक प्रसिद्ध ज्योतिषी विद्वान था जिस ने जातिकालंकार, जाति का भरण, लघुजातक और वृहज्जातक आदि ज्योतिष के प्रसिद्ध ग्रन्थ रचे थे, एक दिवस

आप मार्ग में जा रहे थे कि नक्षत्रों की ओर उन की दृष्टि गयी जिस से उन्हें निश्चय हुआ कि अमुक समय पर यदि किसी के गर्भ स्थापन हो तो वह पुत्र वड़ा ही तेजस्वी व दीर्घायुः उत्पन्न हो तदर्थ उन्हों ने कहा कि परीक्षा तो करना चाहिये, इतने में एक अहीरिन उस मार्ग से निकली तो वाराह मिहर ने उसे बुलाकर सब कुछ अपने उपरोक्त विचार कह सुना कर गर्भस्थापन के निमित्त उसे राजी कर लिया और उस ही महूर्त में पं० वाराह मिहर जी उसे अरहर के खेत में लेजा कर उस के गर्भ स्थापन कर दिया जिस से नौमास पश्चात ही एक तीव्र बुद्धि वालक उत्पन्न हुआ वह अहीरिन भी राजा की ज़नानी डिओढ़ी में नौकर थी शनै शनै वह वालक अपनी मा के साथ ज़नानी डिओढ़ी में जाने आने लगा एक दिवस उस वाराह मिहर ने लग्न देखकर राजा से कहा कि चार घड़ी के पश्चात वड़े वेग से आंधी आवेगी और कुछ बूंदा बांदी भी होगी तथा उससमय एक ढाई पावकी मछली भी आकाश से गिरेगी " यह सुनकर वह लड़का जो वहां राज कुमार के साथ खेल रहा था वोला कि " मछली गिरेगी तो सही पर वह बोझ में ढाई पाव से कम होगी " तथा पंडित जीने गिरने का जो स्थान नियत किया है " वह मछली उस से हट कर गिरेगी "। इस पर वह राजा व पंडित दंग हो गये और पंडित जी उस वालक से ऐसा होने का कारण पूंछने लगे इस पर वालक ने कहा कि कई कोसों की ऊंचाई से जब मछली गिरेगी तो वह गिर कर उछलेगी तब अवश्य ही इस स्थान से कुछ न कुछ हट जावेगी और जब इतने ऊंचे से गिरेगी तो मार्ग में कुछ न कुछ सूख कर अवश्य हलकी हो जायगी इस पर पंडित उस की वुद्धि विलक्षणता पर वड़े चकित हुये और पूंछा कि " तुम किसके लड़के हो " लड़के ने कहा अमुक

अहीरिन का, तब फिर पंडित ने उस से पूछा कि तुम्हारे बाप का क्या नाम है ? उस ने उत्तर दिया भगवन्! मेरी मा से पूछिये, इस पर उस की मा बुलायी गयी और तद्वत उस से पूछा गया तब उस ने कहा कि क्या आपको स्मर्ण नहीं है कि अमुक दिन अमुक महूर्त में व अमुक स्थान में इस का गर्भाधान ब्राह्मण द्वारा हुआ था इस पर वाराह मिहर को सब कुछ स्मर्ण हो आया तब यह विषय महा पंडितों की सभा में पेश हुआ और निश्चय हुआ कि इस बालक की जाति "भद्री" होगी इस भद्री को भाषा में भदरी कहने कहाने लगे और भदरी कहते कहाते हुये भाषा भाषियों द्वारा भडरी कहाने लगगये और ब्राह्मण के वीर्य्य से उत्पत्ति होने से इन का वर्ण ब्राह्मण हुआ ।

अंध परंपरा की तरह कहीं कहीं के लोग इस जाति को ब्राह्मण कहने में ही संकोच करते थे परन्तु हमने अपने भ्रमण में प्राय: अनेकों शास्त्रज्ञ विद्वानों से इस जाति का वर्ण निश्चय करने के विषय में हमने जिज्ञासा प्रकट की थी जिसके उत्तर में साक्षर विद्वानोंका मत इस जाति के ब्राह्मणत्व पोषक मिला परन्तु निरक्षर लोगों का मत इनके प्रतिकूल मिला अत: उपरोक्त प्रमाणों के आधार व विद्वानों के सम्मत्यानुकूल हमने इस जाति को ब्राह्मणवर्ण में मानकर इस ग्रन्थ में इन्हें भी ब्राह्मण सूची में सम्मिलित कर दियी है ।

जैसा हम पूर्व लिख आये हैं इस जाति के लोग आदि में बड़े ही शास्त्रज्ञ विद्वान व कर्मकाण्डी होते थे तद्वत इस जाति में अब भी कहीं कहीं कोई कोई विद्वान हैं, उदाहरण के लिये इस जाति के एक महानुभाव विद्वान का फोटो व जीवनी पाठकों के मनोरंजनार्थ देते हैं।

डक्कि वंशभूषण लालचन्द शर्म्मा, अकोला.

Dukki Lalchand Sharma, Akola.

लक्ष्मी आर्ट, भायखळा, मुंबई.

पाठक ! सन्मुख चित्र में जिस सौम्य मूर्ति के आप दर्शन कर रहे हैं वह डविक लालचन्दजी शर्म्मा हैं, आप के पूर्वजों का जन्म स्थान जयपुर राज्यान्तर्गत धोला ग्राम में था आपके प्रपितामह पं० राधाकृष्णजी बड़े महात्मा तथा ज्योतिषशास्त्र के ज्ञाता हुये हैं वे अपनी विद्या बुद्धि का चमत्कार सर्वसाधारण पर प्रकट करने के अर्थ अपने धोला ग्राम को छोड़कर शेखावाटाचन्तर्गत सीकर नगर में आकर बसे इनके तीसरे पुत्र फतेहरामजी के दो पुत्र हुये जिन में ज्येष्ट पुत्र आसारामजी थे, आपकी प्रवृति सदैव ही पुण्य कर्म्मों में रहा करती थी तदनुसार विक्रम सम्वत् १९५१ के वैशाख शुक्ला पूर्णमासी के दिन आपने एक बड़ा यज्ञ किया था और इस यज्ञ के निमित्त लोहार्गल तीर्थ नियत किया गया था यह पुण्यक्षेत्र आजकल भी विद्यमान है, उदयपुर से तीन कोस तथा चिराणे से डेड कोस की दूरी पर यह तीर्थ है यहां तीन कुण्ड हैं १ सूर्य्यकुण्ड २ हृदयकुण्ड ३ और भस्मी कुण्ड ये तीनों कुण्ड श्रीमालक्षेत्र के पहाडों में स्थित हैं जहां हज़ारों यात्री आते जाते ही रहा करते हैं इस परमपावन भूमि में आप ही के पिता आसारामजी ने यज्ञ करवाकर दो सहस्र ब्राह्मणों को भोजन व दान दक्षिणा देकर सन्तोषित किया था।

इस यज्ञ में बड़े २ विद्वानों के साथ २ नीमणा ग्राम के पंडित चुन्नीलाल जी शर्म्मा बावलिये मिश्र भी वहां पधारे थे जो आप के गुरु व हमारे स्वजाति बंधू थे।

डविक आसाराम जी, जैसे परोपकारी दयालु थे वैसे आप धर्म निष्ट भी थे, सम्वत १९३८ में आकोला शहर के समीप मोरणा नदी के किनारे आप ने एक शनि का मन्दिर बनाया था परन्तु सम्वत

१६४३ ई बड़ा भारी जल का प्रवाह बढ़ आने से यह मन्दिर गिर गया, यद्यपि इस देवस्थान के नष्ट हो जाने से आप को दुःख बहुत हुआ तथापि धैर्य्य रखकर परमात्मा पर भरोसा रखते हुये अपने निज उद्योग से सम्वत् १६४४ में आकोल शहर के बीच में एक उत्तम ज़मीन प्राप्त करके वहां शनि का मन्दिर पुनः बनवाया.

आपके दो पुत्र उत्पन्न हुये एक का नाम रामधन तथा दूसरे तो चित्र लिखित आपही हैं, आपने सेठोंके रामगढ़ में जाकर पं० डूंगजी महाराज से श्रुतिस्मृति व पुराणादि पढ़कर अच्छी योग्यता प्राप्त किया और सदैव अपना तन मन धन स्वजाति सेवा में लगाते रहते हैं और इस वंशकी उन्नत्यर्थ सदैव पुस्तकादि निर्माण करके स्वजातोद्धार करते रहते हैं, अतएव आप का जीवन धन्य है ।

**१५८ डेरोला श्रीगौड़ः**--यह गौड़ सम्प्रदाय में श्रीगौड़ ब्राह्मणों की जाति का एक भेद है ये लोग मालवा प्रान्त में विशेष हैं इन के आचार विचार साधारण हैं तथा नर्बदा के किनारे किनारे के देशों में पाये जाते हैं पर ये लोग शूद्र कन्या की संतान हैं अतः इनका पद नीचा है और ये नयी श्रीगौड़ सम्प्रदाय में से हैं, लक्ष्मी के शाप से भिक्षुक होगये हैं । इस लिये कर्म धर्म से भी हीन हैं ।

**१५६ डोगराः**—यह काश्मीरी ब्राह्मणों का एक भेद है जिस प्रकार डोगरा राजपूत व डोगरा बनिया होते हैं तैसे ही डोगरा ब्राह्मण भी होते हैं यह नाम "द्वैगोत्रा" का अपभ्रंश रूप शब्द है अर्थात् जिन की माता का गोत्र कुछ व पिता का गोत्र कुछ, उन की सन्तान द्वैगोत्र कहाती २ दोगरा व डोगरा कहाने लग गयी ऐसा ही विद्वानों ने बतलाया है । इस ही तरह जाति अन्वेषण कर्त्ता विद्वानों ने "दोगला" शब्द का अपभ्रंश रूप दोगरा व डोगरा भी लिखा है जिस का भावार्थ भी उपरोक्त ही है ।
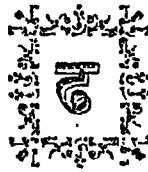
१६० हूसर :—इस जाति के विषय हम अपनी निज सम्मति जाति अन्वेषण प्रथम भाग में ब्राह्मणत्व की लिख आये हैं परन्तु विशेष करके विद्वान लोग इस जाति को वैश्यवर्ण में मान्ते हैं और हमारी सम्मति पर हिन्दू समुदाय ने अपनी विरुद्धता प्रकट कियी है तथा इस जाति की ओर से भी कोई प्रमाण व ऐसे हेतु हमें नहीं मिले और न हमारे २५१ प्रश्नों के उत्तर दिये जाकर ही अन्वेषण कराया गया अतः हम अपनी सम्मति को वांपिस लेकर इस जाति के विषय में और किसी ग्रन्थ में निर्णय करेंगे कि यह जाति ब्राह्मण वर्ण में है या वैश्य वर्ण में तद्वत ही हिन्दू समुदायों को समझ लेना चाहिये क्योंकि हम हठी व दुराग्रही तथा पक्षपाती ग्रन्थकर्त्ता कहाना नहीं चाहते हैं परन्तु सत्य का सर्वथा सर्वदा ग्रहण करने को उद्यत रहना हम अपना परम कर्तव्य समझते हैं। अतएव इस जाति को हमने विचार कोटि में छोड़ी है।

हां जिस आधार से इस जाति को हम जाति अन्वेषण प्रथम भाग के पृष्ठ में ब्राह्मण लिख आये हैं उसके प्रतिकूल अनेकों प्रमाण हमें ऐसे भी मिले हैं जिस से इस जाति का वर्ण वैश्य समझ में आता है हम जयपुर लखनऊ और आगरे तक के योग्य पुरुषों से यह जानने के अर्थ मिले भी कि "आप के गौड़ ब्राह्मण होने में क्या क्या प्रमाण व युक्तियें हैं परन्तु कहीं से कुछ सन्तोष जनक उत्तर नहीं मिला" पर इन के ब्राह्मणत्व के विरुद्ध व वैश्यत्व के पोषक प्रमाण मिले उन में से कतिपय इस प्रकार से हैं।

(१) सन् १६०१ की मनुष्यगणना, रिपोर्ट के पृष्ठ २२० में सुपरिन्टेन्डेन्ट मनुष्यगणना विभाग लिखते हैं कि :—

There has been much discussion about the

Dhusar Bhargavas who claim to be Gaur Brahmans. Of the fourteen committees that discussed this caste eight placed them in this group * and the five in the fifth or sixth group § while one committee considered they should go in Group I ‡

भा० ढूसर व भार्गव जाति के विषय में एक बड़ा विवाद है अर्थात् ये लोग अपने तईं गौड़ ब्राह्मण बतलाते हैं. इस जाति के विषय को चौदह कमेटियों ने निर्णय किया जिन में से आठ कमेटियों ने इन्हें ब्राह्मणों में आमिलती हुयी जातियों की श्रेणी में बतलाया है, तो पांच कमैटियों ने इन्हें वैश्य व वैश्यों में आमिलती हुयी जातियों की श्रेणी में बतलाया है और एक कमेटी ने इन्हें ब्राह्मण वर्ण में बतलाया है।

(२) Mr. R. Burn I. C. S. मिस्टर आर. बर्न आई. सी. एस लिखते हैं कि :-

The fact is that there is a considerable body of people who call themselves Dhusar or Dhusar Banias. सचतो यह है कि इस जातिका एक बड़ा समुदाय अपने को ढूसर बनिया कहता है। साधारणतया सब ही इस जाति को बनिया ही कह के पुकारते हैं।

(३) रेवरेन्ड मिस्टर शेरिंग एम. ए. एल. एल बी Reverend Mr. Sherring M. A. L. L. B. ने अपने ग्रन्थ में हिन्दू जातियों का निर्णय किया है जो सन् १८७२ में छपा था उस में भी उन्हों ने इस जाति को ब्राह्मण नहीं लिखा।

---

* ब्राह्मणों में आमिली हुयी जातियों की श्रेणी में Castes allied to Brahmins.

§ Fifth group =Vaishya or 'Baniya वैश्यवर्ण में Sixth Group=Castes allied to Vaishyas or Banias. वे जातियें जो वैश्यों में आमिली हैं।

‡ First Group.=ब्राह्मणवर्ण में।

(४) सम्पूर्ण ऐतिहासिक विद्वानों ने बादशाह मुहम्मदशाह सूरी के लायक वज़ीर हीमू की जाति हूसर लिखी है और ऐसा ही हूसर बनिये, व, वे हूसर जो अपने को ब्राह्मण बतलाते हैं वे दोनों ही समुदाय स्वर्गवासी हीमू को अपनी जाति का एक उच्चपदस्थ जान कर अपने तईं आनन्द (फ़ख़) मनाते हैं परन्तु तारीख़ ई दाऊदी में हीमू को नाज का सौदागर लिखा है, इस ही तरह तबाकत ई अकबरी में हीमू को बक्काल(बनिया)लिखा है, तारीख़ ई सलातीन ई अफ़गान में हीमू की जाति तोलने जोखने वाला बनिया लिखी है, और रौज़ात उत तहीरिन में भी हीमू की जाति बनिया ही लिखी है।

(५) Mr. Colonel Dow मिस्टर कोलोनियल डो हिन्दुस्तान की हिस्ट्री में हीमू की जाति दुकान्दार लिखी है जो शेरशाह के समय में बाज़ार का अधिष्ठाता था।

ऐसे आधारों को देख कर विद्वानों ने इस जाति को वैश्य वर्ण में बतलाया है अतः वीर्य्य प्रधानता के नियम से तो इस जाति को हम ने यहां ब्राह्मण सूची में लिखा है साधारण लोकमत व उपरोक्त प्रमाणों को देखकर ही यह जाति वैश्य वर्ण में भी मानी जा सक्ती है अतः विद्वान लोग स्वयमेव ही निर्णय करलेवें।

१६१ तगागौड़ :—यह जाति गौड़ ब्राह्मण समुदायान्तर्गत है प्रायः ये लोग मेरठ, बिजनौर, मुरादाबाद, सहारनपुर तथा बुलंदशहर के ज़िलों में विशेष रूप से हैं प्रायः ऐतिहासिक विद्वानों में से पं० दक्षिण वंकट राम, माननीय भट्टाचार्य्य जी मिस्टर कूकपरफ़ायर, तथा मुंशी किशोरीलाल जी आदि आदि विद्वानों ने लिखा है कि यह तगा शब्द संस्कृत शुद्ध शब्द त्याग व त्यागी का बिगड़ा हुआ रूप है परन्तु भेड़ियाधसान की तरह त्यागी शब्द का अर्थ सबही ने

एक दूसरे की देखा देखी यह ही किया है कि " राजा जन्मेजय ने इन्हें दान में ग्राम देने चाहे थे पर इन्होंने नहीं लिये अतएव तबही से इन की संज्ञा त्यागा गौड़ व त्यागीगौड़ हुयी परन्तु यह लेख एक विद्वान् की मनोकल्पना युक्त आख्यायिका होने से ग्राह्य नहीं और तद्वत ही एक की देखा देखी सब ने ही इसे लिख दिया है क्योंकि दान व प्रतिग्रह का लेना ब्राह्मणों के लिये कोई बाध्यता पूर्वक नियम नहीं है इस लिये यह विशेषता केवल इन तगा व भूमिहार ब्राह्मणों में ही नहीं है किन्तु अन्य सम्पूर्ण प्रकार के ब्राह्मणों में है अर्थात् हम देखते हैं कि ब्राह्मण समुदाय में जो लोग भूखे हैं वे ही अनाप सनाप दान प्रतिग्रह लेते हैं परन्तु जो जो ब्राह्मण समुदाय धनाढ्य व उच्चपदस्थ धन धान्य से पूरित हैं वे स्वयं दान प्रतिग्रह तो क्या लेंगे किन्तु वे दान प्रतिग्रह लेने वाले स्वजातियों के यहां का धान्य खाने पीने से भी परहेज़ करते हैं ऐसे अनेकों ब्राह्मण हमने देखे हैं, अतएव वे सब भी त्यागी कहे जासक्ते हैं पर वे त्यागी नहीं कहे गये. इस ही तरह कान्यकुब्ज, गौड़ सारस्वत व महाराष्ट्र आदि आदि सब ही त्यागी कहे जा सक्ते हैं, पर हम देखते हैं कि वे नहीं कहे जाते हैं पर येही त्यागी कैसे कहे गये कुछ समझ में नहीं आसक्ता है ? क्योंकि अलीगढ़ व लाखनू तथा एटा के जिले में कई सनाढ्य ब्राह्मण समुदाय, विहार में भूमिहार ब्राह्मण बंगाल में बंगाली, दक्षिण में पेशवा तथा अनेकों कश्मीरी व सारस्वत, कुरुक्षेत्र में गौड़ व लखनेउ में कान्यकुब्जादि ब्राह्मण समुदायों में कई कुलों के कुल ऐसे हैं जो दान प्रतिग्रह को स्पर्श तक नहीं करते पर वे तगा नहीं कहाये अतएव उपरोक्त तीन चार ज़िलों के ब्राह्मण ही तगा कैसे कहाये कुछ समझ में नहीं आसक्ता है।

इस समुदाय के लोगों में से किसी विद्वान् का यह कहना है कि त्याग शब्द का अर्थ दान और त्यागी शब्द का अर्थ दानी है अतएव ब्राह्मणों में जो समुदाय बहुत दानी था वह त्यागी व त्यागा कहाते कहाते तगा कहाने लग गया " परन्तु त्याग शब्द का अर्थ दान के होते ही तत्काल अपने आप को महादानी हरिश्चन्द्र वत् मानलेने में अति व्याप्ति दोष के साथ साथ स्वात्म प्रशंसा का दोष भी आरोपित होता है

क्योंकि शंका होती है कि क्या यह थोड़े से चार छः जिलों के ब्राह्मण ही महादानी थे सो त्यागी कहाये और अन्य नहीं अतएव यह अर्थ ग्राह्य व अनुकूल नहीं हो सक्ता है यदि यह ही कारण "दान त्याग" ही इस का मुख्य हेतु माना जाय तो ये लोग कन्यादानादि लेते ही हैं तब ऐसी दशा में त्यागी कैसे कहे व माने जा सकते हैं ? अतएव यह अर्थ भी असंगत है। हमें हमारी जाति यात्रा में प्रायः विद्वान् व विश्वास पात्र मनुष्यों ने हमें विश्वास दिलाते हुये कहा है कि जनश्रुति ऐसी प्रसिद्ध है कि ये लोग यथार्थ में गौड़ ब्राह्मण हैं परन्तु अपने आलस्य प्रमाद द्वारा सांसारिक कार्य्यों में ये ऐसे निमग्न हो गये कि ये अपने ब्रह्मकर्म को नितान्त भूल कर खेती व सेवावृत्ती में मुख्यतया लग गये जिस से लोगों ने इन्हें यज्ञोपवीत का संकेत दिलाते हुये यह कहा कि "इन्होंने नाममात्र को गले में यज्ञोपवीत रूपी तागा पहिन रक्खा है अतएव ये केवल "तगा" हैं अर्थात् यज्ञोपवीत को केवल तागावत धारण कर रक्खा है और तत्सम्बन्ध में कर्म्म धर्म्म कुछ नहीं करते कराते हैं इस ही लिये इन के ब्राह्मणत्व पर ही शंकायें होने लगी, उपरोक्त आशय की पुष्टी में H. C. S. पृष्ठ ५२ में ग्रन्थकार जी महामहोपाध्याय पं० लक्षमण जो शास्त्री पटियाला की अनुमत्यानुसार ऐसा लिखते हैं"

There is a class of Gaur Brahmans called the Taga Gaur. These are so designated because they have only the Brahmanical Taga or Sacred Thread They are all adicted to agriculture and are quite ignorant of the Brahmanical Prayers and religious rites. They neither study the Shastras nor perform the work of a priest. The castes do not make to them the kind of humble salution (Pranam) due to Brahmans, but accort them, as they would a Rajput or Baniya by simply saying "Ram, Ram,".

भावार्थ:—गौड़ ब्राह्मणों का एक भेद तगा गौड़ भी है यह नाम पड़ने का कारण यह है कि इनके यहां नाममात्र का तागा यानी जनेऊ होता है ये लोग खेती में संलग्न रहते हैं और ब्राह्मणों के कर्मों से अनभिज्ञ हैं, ये लोग न तो शास्त्र पढ़ते हैं और न पण्डिताई ही करते हैं, और अन्य जातियें इन से अन्य ब्राह्मणों की तरह नमस्कार प्रणाम नहीं करती हैं किन्तु राजपूत व बनियों की तरह इनसे राम २ करती हैं

युक्त प्रदेशीय मनुष्यगणना रिपोर्ट सन् १९०१ के पृष्ठ २२० में तगा जाति के सम्बन्ध में लिखा है कि

Tagas have been identified by some with the Takka tribe of Scythians.

अर्थात् तगा जाति सिदियन टका जाति में से जान पड़ती है पुनः लिखा है:—

Taga, The increase is over 10 Per cent, but the rate amongst females has been double that amongst males, which, it may be hoped, is due to better care being taken of female infants, as the Caste was formerly suspected of female infanticive.

तगा:—इस जाति की लोक संख्या फी सैकड़ा दस बढ़गयी परन्तु स्त्री जाति की संख्या पुरुषों की अपेक्षा बढ़कर दुगनी हो गयी है इस का कारण ऐसा जान पड़ता है कि बाल कन्याओं की रक्षा का प्रबंध इस जाति में अच्छा किया जाता है अन्यथा इस जाति में पहिले कन्या वध की प्रथा थी * उपरोक्त रिपोर्ट के ही पृष्ठ २४८ में इस जाति को सर्व सम्मति से Inferior Brahmans नीच श्रेणी के

* ऐसी प्रथा कुछ काल पूर्व क्षत्रिय जाति में भी थी कि कन्या के जन्मते ही कंठ घोटकर कन्यायें मार डाली जाती थीं परन्तु सरकार ब्रिटिश गवर्नमेन्ट की कृपा से यह रीति नष्ट होती जाती है।

ब्राह्मणों में भी न लिखकर ब्राह्मणों में आ मिली हुयी जातियों के साथ यह जाति लिखी गयी है। परन्तु हम इस के साथ सहमत नहीं हैं क्योंकि ये लोग अपने ब्रह्मकर्म्मों से गिरे हुये गौड़ ब्राह्मण हैं ऐसा माना जाना चाहिये।

पुनः मिस्टर आरबर्न आई० सी० एस सुपरिन्टेन्डेन्ट म० ग० विभाग अपनी रिपोर्ट के पृ० २२० में लिखते हैं।

Public opinion is almost unanimous in admitting that these two castes ( Taga and Bhumihar) are Brahmanical or at the very least that they rank between Brahmans and Kshattriyas.

भावार्थः-सर्व साधारण जन समुदाय की सम्मति है कि तगा और भूमिहार दोनों ब्रह्मवंश में से हैं या ब्राह्मण व क्षत्रिय इन दो वर्णों के बीच में से कोई एक हैं।

मुंशी किशोरीलालजी रईस व मुंसिफ दर्जे दोयम अपनी पुस्तक के पृ० ११ में लिखते हैं कि:-तगा दो तरह के होते हैं हिंदु और मुसलमान और इन दोनों ही का यह कहना है कि हमारे बुजुर्गों ने दान लेना त्याग दिया था यानी छोड़ दिया था जिस से हम तगा मशहूर हुये।

मिस्टर सी एस० विलियम क्रूक बी० ए० ने भी अपनी पुस्तक के पृष्ट ३५१ में इनके दो ही भेद माने हैं हिंदु तगा और मुसलमान तगा जिन में से हमैं इस पुस्तक में हिंदु तगाओं के विषय में ही सब कुछ निश्चय करना है अतः मुसलमान तगाओं का विषय हमने यहां पर छोड़ दिया है हिंदू तगाओं के १५५ भेदों का हमने पता लगाया है जिन का विवर्ण भविष्यत् में छपनेवाले सप्तखंडी ग्रन्थ में लिखेंगे।

यही कारण मालूम होता है और ऐसी भी जन श्रुति प्रचलित है कि लोग इन्हें ब्राह्मण मानने ही में संदेह प्रकट करते हैं इस की

पुष्टि में इन द्वेषी लोगों का यह भी कथन है कि शास्त्राधारानुसार इन लोगों में सदाचार का अभाव होने के कारण लोगों ने इन को अपनी पंक्ति से त्याग दिया था तिस से इस समुदाय का नाम त्यागी ब्राह्मण प्रसिद्ध हुवा कदाचित ऐसा हो !

इस जाति की भीतरी बनावट पर ध्यान देने से निश्चय होता है कि इन में क्षत्रिय समुदाय भी सम्मिलित है जैसे बैस, बरगला, चौहान और चंडेल आदि आदि इनके भेद प्रकट करते हैं कि ये क्षत्रियों के प्रसिद्ध वंश हैं जो परशुरामजी के क्षत्रिय संहार भय से ब्राह्मणों में मिल कर अपनी प्राणरक्षा किई थी, इस ही तरह इन में कुछ ब्राह्मण वंश भी हैं जिन के भेद दीक्षित, गौड़, सनाढ्य और वशिष्ठादि हैं अतएव तगामात्र को ब्राह्मण नहीं मानना चाहिये, वरन ब्राह्मणों को ब्राह्मण व क्षत्रियों को क्षत्रिय मानना ही परम कर्तव्य है ।

मिस्टर सी० एस० डब्ल्यू० सी० लेट कलेक्टर फैज़ाबाद ने अपनी पुस्तक के पृ० ३५३ में तथा राजा लछमनसिंह ने अपने रचित मेमायर के पृष्ठ १३४ व १५९ में लिखा है कि एक राजाके यहां यह नियम था कि वह पतिपत्नी सहित आने वाले ब्राह्मण को बड़ी भारी दान दक्षिणा द्वारा सत्कार किया करता था अतएव कुंवारा एक गौड़ ब्राह्मण दान दक्षिणा के लोभ में आकर एक वेश्या को अपने साथ अपनी पत्नी बनाकर के राजा के यहां से दान दक्षिणा ले आया परन्तुपश्चात् यह सब गुप्त रहस्य खुल गया अतएव उस ब्राह्मण को उस वेश्या को अपनी स्त्री बना कर रखनी पड़ी और उन दोनों के संसर्ग से जो सन्तान उत्पन्न हुई उसे नाम मात्र के लिये जनेऊ के बतौर तागा पहिनाकर वे तगा गौड़ या तगा ब्राह्मण प्रसिद्ध हुये ।

विद्वानों ने इस जाति में दस्सा और बीसा का भेद भी लिखा है और इन में नाता होने की संभावना भी बतलायी गई है ।

अतएव ऐसी स्थिती में श्रीमती गौड़ महासभा तथा सेलेक्टेड कमेटी का कर्तव्य है कि पूर्वा पर विचार कर जो कुछ उचित समझा जाय करे हां सेलेक्टेड कमेटी के मेम्बर होने की हैसियत से हम सम्मति देते हैं कि ब्राह्मण जाति सुधार, देश सेवा, राजभक्ति और विद्योन्नति के सामाजिक कार्यों में गौड़ महासभा, श्रीसनाढ्य पल्लीवाल महासभा, आदि सब एक होकर कार्य करें इन का जातिपद हरियाना गौड़ों के तुल्य रहना चाहिये अर्थात् सामाजिक देशोन्नति के कार्यों में ये और हम सब एक तथा खान पान और विवाहादि सम्बन्धों में हम सब स्वतन्त्र हैं। क्योंकि ये गौड़ ब्राह्मण अवश्य हैं। जैसे—

एक परम अनुभवी जाति निर्णय कर्त्ता महाराष्ट्र विद्वान पाडे बा गोपाल जी अपने ग्रन्थ में इस जाति के विषय में ऐसा लिखते हैं कि:—

त्यागे ब्राह्मण:—ही गौड़ ब्राह्मणांपकी जात आहे ह्न्यां जातींचे लोक दुआब व रहीलखंड एथें पुष्कल आहेत।

देखो जाति० भे० वि० सा० मरहाटी ग्रन्थ पृष्ठ ७६

भावार्थ:—त्यागे ब्राह्मण एक गौड़ ब्राह्मणों का ही भेद है इस जाति के लोग दुआब व रुहेलखंड में विशेष रूप से हैं।

पुन: और देखिये:—

General Cunningham's Archeological Survey Report Vol. 1 Page 327.

मान्यवर जनरल कन्निंघाम साहब अपनी आर्चीओलाजीकल सर्वे रिपोर्ट जिल्द पहिली के पृष्ठ ३२७ में ऐसा लिखते हैं कि:—

The Gauda Brahmans and Gauda Tagas must have belonged to this district * (Gonda of the Maps) originally and not to the mediaeval city of Gauda in Bengal.

भावार्थः—गौड़ ब्राह्मण व गौड़ तागा ब्राह्मण दोनों ही का आदि स्थान उत्तर कौशल प्रसिद्ध नाम गोंडा जिला है न कि बंगाल प्रान्तस्थ मध्य गौड़ देश ।

Mr Oppert's Original Inhabitant of Bharatvarsha Page 114. मिस्टर ओपर्ट साहब रचित " भारतवर्ष के आदि निवासी " नामक ग्रन्थके पृष्ठ ११४ में यह जाति गौड़ ब्राह्मण मानी गयी है ।

Mr. C. S. W. C. B. A. भूतपूर्व कलेक्टरसाहब अपने ग्रन्थ जिल्द दूसरी पृष्ठ ३६४ में भी इस जाति को गौड ब्राह्मण मानते हैं । अतएव हमारी सम्मति भी ऊपर के समान पूर्व लिखित ही समझनी चाहिये ।

इन सब प्रमाणों को देखकर ऐसा निश्चय हुआ है कि "ये लोग गौड़ ब्राह्मण अवश्य हैं पर अपने आचार विचार के नियमों से कुछ गिरे हुये हैं अतः खान पान व बेटी व्यवहार से अलग रहते हुये श्रीमती गौड़ महासभा इन्हें अपने में सम्मिलित करसक्ती है" यह हमारी निज की सम्मति-श्रीमती गौड़ महा सभा की सेलेक्टेड कमेटी की सभासदी की हैसियत से है ॥

**१६२ तपोधन** :—यह गुजराती ब्राह्मणों की जाति का एक भेद है ताप्ती नदीके किनारे किनारे के देशों में ये ब्राह्मण पाये जाते हैं इन का यह नाम पड़ने का कारण यह है कि पूर्व काल में इस वंशके लोग बड़े तपस्वी थे और तपस्या को ही अपना सर्वस्व समझते थे और लौकिक धन की इच्छा न रखकर के तप रूपी धन को एकत्रित करनेवाले थे अतः इन्हें तपोधन की पदवी मिली थी वर्तमान काल में तो ये नाममात्र के तपोधन रहगये हैं । अतः इन्हें लोग तपोधम भी कहते हैं । अर्थात् इनकी आदि स्थिति और वर्तमान दशा में बड़ा अन्तर होगया है ।

१६३ तलाजिया :—यह गुजराती ब्राह्मण सम्प्रदाय का एक भेद है भावनगर स्टेट में तलज एक ग्राम है तहां से निकास होने से तलाजिया कहाये यह ग्राम भावनगर से दक्षिण की ओर ३१ मील की दूरी पर बना हुआ है विशेषरूप से आजकल ये लोग दुकान्दारीमे निर्वाह करते हैं और नासिक मुम्बई, जम्बूपर, और सूरत आदि जिलों में निवास कर रहे हैं तहां ब्रह्मकर्म की अपेक्षा वैश्यकर्म में इनकी प्रवृत्ति विशेष है।

१६४ तापी ब्राह्मण :—इनका दूसरा नाम काष्ठपुरवासी ब्राह्मण भी है तापी नदी के किनारे किनारे के देशों में ये लोग पाये जाते हैं, एक समय श्रीरामचन्द्रजी सीता, लक्ष्मण व हनुमान सहित काष्ठपुर के पास पितृश्राद्धार्थ आये वहां पादप्रक्षालन के अर्थ ब्राह्मण न मिले क्योंकि वहां सर्वत्र शिवलिंग ही थे तब हनुमानजी विंध्याचल से एक शिला लाये उसपर श्रीरामचन्द्रजी ने श्राद्धपिण्ड किया था और यहां काष्ठपुर में ब्राह्मणों की स्थापना किया थी अतः वे काष्ठपुरवासी व तापी ब्राह्मण कहे जाकर प्रसिद्ध हुये।

१६५ तिवाड़ी :—यह ब्राह्मण जाति की एक पदवी है इस नाम के ब्राह्मण गौड़ व कान्यकुब्ज आदि सम्प्रदाय में विशेष हैं, यह शब्द त्रिवेदी शुद्ध शब्द का अपभ्रंश रूप है, पूर्वकाल में जो लोग तीनों वेदों के पढ़नेवाले व वेदों के ज्ञाता थे उन्हें राजधर्म सभा से व विश्वविद्यालयों से त्रिवेदी की पदवी मिलती थी तदनुसार उनका कुल भी त्रिवेदी कहाते कहाते भाषा भाषियों द्वारा तिवाड़ी कहाने लगगया हमारी जाति यात्रा में नकली तिवाड़ी व त्रिवेदी तो बहुत मिले परन्तु यथार्थ में इस पद का अधिकारी तिवाड़ी हमें एक भी न मिला अन्यथा उस का नाम यहां हम देते। हां जाति अन्वेषण के अर्थ जब हम देश देश में भ्रमण करते फिरते थे तब अजमेर में हमें एक नकली तरवेदी जी हरथाराम मिले, परस्पर नमस्कारान्तर उन्हों से हम ने पूछा

आप कौन जाति हैं ? तब उन तरवेदीजी ने कहा "कौन दौन की तो हमें खबर नहीं पर हम हैं तरवेदी" तब हमने कहा कि तरवेदी तो ब्राह्मणों की पदवी है न कि जाति, तब उन्होने कहा कि "हम हैं गूजर गौड़" फिर हमने कहा कि गूजर गौड़ तो कोई जाति नहीं है, तब उन्होंने कहा कि बस हम तो येही जान्ते हैं, तब हमने उनसे पूछा आप कौन सी सम्पदाय में हैं ? तब वे हजरत उत्तर देते हैं कि टका-समाज में हम तो समाजी हैं इस पर हमने पूछा आप का गोत्र क्या है ? इसके उत्तर में फि' वे हरयारामजी बोले कि हम गोतगात तो नहीं जान्ते हैं पर एक छापा में पोथी छापते हैं और मजा उड़ाते हैं, फिर हमने पूछा आप तरवेदी कैसे कहाये ? तब वे महात्माजी बोले कि हमारे घर पर तीन वेद के बड़े बड़े पोथे रक्खे हैं तब हमने कहा कि आप का उत्तर ठीक नहीं तब वे बोले कि तुम्हारे लिये ठीक नहीं होगा हम वेदफेद तो जान्ते हैं नहीं पर हैं हम तरवेदी, क्योंकि हमारे छापेखाने के लोग भी हमें तरवेदीजी कहकर झुक झुक कर सलाम करते हैं और हम जाति पांति भी नहीं मान्ते हैं, तब हम चौंके कि "यह किस सिद्धान्त का मनुष्य है" ? और कैसी बातें करता है ! तब हमने उससे पूछा आप का धर्म क्या है ? तब यह बोला "अजी हम तो अच्छो समाजी हैं हम से आप क्या पूछते हो ? जब तक धूल में लठ हमारा लगा हुवा है तब तक यहां हैं फिर कहीं भी चले जावेंगे तब हमने कहा कि "आप सरीखे पेटार्थी लंठ त्रिवेदियों से हम कुछ नहीं पूछते हैं, इस पर वह हरिराम तरवेदी उठखड़ा हुवा और बोला "श्रोत्रियजी हम तो भंग के नशे में हैं आप हमारी बातों की क्या सनद करते हैं। हमारा उपरोक्त सब कुछ कहना झूठ है। हम तो और ही कुछ हैं बस इतना कहकर वह चल दिया अस्तु ?

१९६ **त्रिवेदीः**—उपरोक्त लेखानुसार ही जानना।

१९७ **तिरहुतियाः**—यह एक मैथिल ब्राह्मणों का भेद है

मिथला में तिरहुत एक देश है तहां से निकास होने से मैथिल ब्राह्मण तिरहुतिये कहाये।

१६८ तिलकः—यह महाराष्ट्र ब्राह्मण जाति का एक पद है, मरहट्टा व पेशवा के राज्य के समय जो ब्राह्मण कुल ताजीमी सरदार होता था उस को ताजीमी का तिलक किया जाता था तब से वह कुल तिलक कहाया जाता था तदनुसार महाराष्ट्र वंश शिरोमणि भारत भूमि के सुपूत लोक मान्य पं० बाल गंगाधर तिलक हैं।

१६९ तीरथः—इस के प्रचलित शब्दार्थ दो हैं तीरथ स्थान तथा सन्यासियों का पद यहां सन्यासियों की जाति का अर्थ मानना चाहिये, यह शंकराचार्य्य की सम्प्रदाय में दस नामी सन्यासियों में से एक भेद है सन्यास लेने का अधिकार केवल ब्राह्मण को ही है अतः यह जाति इस पुस्तक में लिखी गयी है इस प्रकार के सन्यासियों में से यह चौथा भेद है शेष सन्यासी प्रकरण में लिखेंगे।

१७० तिलगाणीः—यह तैलंग ब्राह्मणों का पांचवा भेद है जब तैलंग ब्राह्मण समुदाय में आचार विचार की भिन्नता हुयी तब तैलंगाध्याय ने संवर्गी ब्राह्मण समुदाय का नाम तिलंगाणी रक्खा था इन का जाति पद तैलंग ब्राह्मणों से नीचा है।

१७१ तुलवः—यह एक महाराष्ट्र सम्प्रदायी ब्राह्मण जाति का एक भेद है दक्षिणी कनारा के आस पास इस जाति का निवास है यहां इन की स्थिती व जाति पद साधारण है। इन की विद्या स्थिती सामान्य है।

१७२ तुम्बुगुरुः—यह मरहाटा ब्राह्मण जाति में का एक भेद है।

१७३ तुपनादिः—यह दक्षिण प्रान्तस्थ ब्राह्मण जाति है इन का विवरण अन्वेषणाधीन है।

१७४ तैलंगः—यह पञ्चद्रविड़ ब्राह्मण सम्प्रदाय में एक भेद है इन को औत्तरेय ब्राह्मण भी कहते हैं तथा इन्हीं का एक नाम

आंध्र ब्राह्मण भी है । स्कन्द पुराण सह्याद्रि खण्ड में प्रमाण मिलता है कि:—

कर्णाटकाश्च तैलंगा द्राविड़ा महाराष्ट्रकाः ।
गुर्जराश्चेति पञ्चैव द्राविड़ा विंध्य दक्षिणे ॥

अर्थात् कर्णाटक, तैलंग द्रविड़, महाराष्ट्र और गुर्जर यानी गुजराती ये पांचों पञ्च द्रविड़ कहाते हैं इन के भी ६ भेद हैं यथाः-

१ वेलनाडु
२ वेगि नाडु
३ गुर्किनाड्डू
४ कर्णा कम्मा
५ तिलंगाणा
६ कासलनाड्डू

ये ६ छों भेद पेलेश्वरोपाध्याय ने इन के किये थे इन सब का विवर्ण व अर्थ अक्षर क्रमानुकूल इस ही ग्रन्थ में मिलेगा ।

१७५ दधीचि :—यह नाम ब्रह्मा जी के बेटे अथर्वण व अथर्वण के पुत्र दधीच ऋषि का भी है परन्तु इस नाम की एक गुजराती ब्राह्मणों की जाति भी है अर्थात् गुजरात में इस नाम का एक ब्राह्मण समुदाय है जो प्रायः माही नदी के किनारे किनारे के देशों में बसा हुआ है इन का मुख्य धन्धा भिक्षा, कृषी आदि हैं इन की जाति स्थिती व जाति पद वहां सामान्य दशा का है और इन की लोक संख्या भी वहां थोड़ी ही है । परन्तु मारवाड़ व राजपूताने के दाहिमे ब्राह्मण भी अपने को दधीचि ब्राह्मण कहते हैं जिन का विवर्ण "दाहिमा" प्रकरण में लिखेंगे ।

१७६ द्रविड़ :—यह एक देश का नाम है मदरास के दक्षिणी भाग में ट्रिचनापोली, तन्जोर, आरकट, तिन्ना वेली, कम्बको नाम और मदुरा आदि आदि ज़िलों को द्रविड़ देश कहते हैं इस देश

में तामील भाषा बोली जाती है यह ही नाम एक मुख्य ब्राह्मण जाति का भी है स्कन्द पुराणोक्त दसों प्रकार के मुख्य ब्राह्मणों में से यह तीसरा भेद है जैसा कि ऊपर १७७ वीं जाति के साथ प्रमाण लिख आये हैं यह ही नाम जाति समूह सूचक भी है अर्थात् उपरोक्त पांचों प्रकार के ब्राह्मणों की पञ्च द्रविड़ संज्ञा भी है यथा :- १ महाराष्ट्र २ अन्ध्र (तैलंग) ३ द्रविड़ ४ कर्णाटक और ५ गुर्जर इन पांचों ही को पञ्च द्रविड़ कहते हैं, इन द्रविड़ों के भी दो मुख्य भेद हैं १ स्मार्त और २ वैश्नव, इन में जो शंकराचार्य्य के सम्प्रदायी हैं वे स्मार्त द्रविड़ कहाते हैं तथा जो श्रीरामानुज व श्रीमाधव सम्प्रदाय के हैं वे वैश्नव कहाते हैं। परन्तु ये दोनों ही स्मार्त वैश्नव फलाहारी हैं अर्थात् मांस मदिरा से अति घृणा करने वाले समुदाय हैं, स्मार्त ब्राह्मणों का विवर्ण सकार की जातियों के साथ लिखा है और वैश्नव द्रविड़ों का विवर्ण यहां लिखा है।

वैश्नव द्रविड़ ब्राह्मणों के भी दो भेद हैं १ वद गाला और २ तेंगाला। स्वर्गवासी मिस्टर रंगाचार्लू जो कि माइसोर के प्राइम मिनिस्टर यानी मुख्य दीवान थे वे भी वदगाला ब्राह्मण ही थे, मिस्टर भश्याम आयंगर और राय बहादुर आनन्दा चार्लु जो हाईकोर्ट के प्रसिद्ध अडवोकेट व लेजिस्लेटिव कौंसिल के मेम्बर थे वे भी वदगाला वैश्नव सम्प्रदाय के द्रविड़ ब्राह्मण थे। स्मार्त द्रविड़ों का विवर्ण सकार की जातियों के साथ इस ही ग्रन्थ में लिखा है तहां देखलेना।

१७७ दक्षिणी :—भारत के दक्षिण वा दक्खिन दिशा में निवास करने वाले सब ही दक्षिणी कहाये जाते हैं अर्थात् मुम्बई प्रान्त का देश दक्षिण देश कहाता है तहां के निवासी दक्षिणी कहाते हैं, यह ही नाम एक भाषा का भी है, अर्थात् मुम्बई प्रान्त के मुख्य निवासी भी दो हैं मरहटा और गुजराती इन मरहटा लोगों की भाषा मरहाटी है तथा गुजरातियों की गुजराती, दक्षिण में इन्हीं दोनों भाषाओं का मुख्य प्रचार है, यहां इस पुस्तक में दक्षिणी ब्राह्मण जाति से अभिप्राय है अर्थात् दक्षिण देश के ब्राह्मण चाहे द्रविड़ हों, चाहे कर्णाटक हों, चाहे

तैलंग हों, और चाहे महाराष्ट्र हों दूर देशों में व अन्य प्रान्तों में जाकर वे सब एक "दक्षिणी" नाम से ही कहाते हैं अतः यह नाम समूह सूचक है. दक्षिण में नाना प्रकार के अनेकों ब्राह्मण हैं उन का अलग अलग सब ही का विवर्ण इस ग्रन्थ में लिख दिया गया है।

**१७८ दाक्षिणात्य वैदिक** :—दक्षिण देश के ब्राह्मण प्रायः दाक्षिणात्य कहाते हैं उन दाक्षिणात्यों में भी जो वैदिक ब्राह्मण हैं वे दाक्षिणात्य वैदिक कहाते हैं ये दक्षिणी ब्राह्मण दूसरे प्रान्तों में जाकर दाक्षिणात्य कहाते हैं इन दाक्षिणात्य वैदिकों का प्रवास आजकल बंगाल के मिदनापुर ज़िले में विशेष रूप से है तथा थोड़े से चौबीस परगने में भी हैं इन ब्राह्मणों का सम्बन्ध पाश्चात्य ब्राह्मणों के साथ में नहीं होता है, वैदिकों के भी दो भेद हैं दाक्षिणात्य वैदिक और पाश्चात्य वैदिक, कलकत्ते में पं० शिवनाथ शास्त्री साधारण ब्रह्मोसमाज के एक प्रतिष्ठित सभ्य थे, वे दाक्षिणात्य वैदिक ब्राह्मण थे।

**१७९ दर्पनपुरवासी** :—यह भी दक्षिणी ब्राह्मणों की शाखा है, मुम्बई प्रान्त में दर्पनपुर एक नगर है तहां के निवास से ये लोग दर्पनपुरवासी कहाते हैं।

**१८० दाहिमा** :—यह मारवाड़ देश की एक मुख्य ब्राह्मण जाति है शास्त्रोक्त गौड़ ब्राह्मण सम्प्रदाय के अन्तर्गत छन्याति श्रेणी की एक ब्राह्मण जाति है, गौड़ व इन का परस्पर खान पान कच्चा पक्का व सखरा निखरा सब एक है परन्तु योनि सम्बन्ध एक नहीं इन में के पढ़े लिखे लोग अपने को "दाधीचि" ब्राह्मण कहते हैं परन्तु साधारण जन समुदाय व भाषा भाषियों द्वारा इन के कई नाम होगये हैं अर्थात् कहीं ये दायमा, कहीं दाहिमा, कहीं दाधिमा और कहीं दाधीचि कहाते हैं।

ये दाधीचि ऋषि की सन्तान तो हैं परन्तु "दाधीचि" नाम इन के साथ आदि से नहीं है क्योंकि यह समझ में नहीं आसक्ता कि दाधीचि का बिगड़ कर दाहिमा, दायमा कैसे होगया अतएव इन की

दाधीचि संज्ञा चिरकाल से नियत किये प्रतीति होती है, हमारे भ्रमण में प्रायः विवेकी विद्वानों ने यह बतलाया है कि :-

यत्क्षेत्र जाता जगतीतले जना ।
गच्छन्त्यमी दाधिमथाख्यया पृथाम् ॥
देवैः स्तुता श्री दधिमथ्य संशयं ।
सो पासकानां विजय सदा क्रियात् ॥

इस का भावार्थ यह है कि जो दधिमथि क्षेत्र में उत्पन्न हुये वे दाधिमथ व दाधिमा कहाये इस का समास भी ऐसा होता है कि " ये दधिमथि क्षेत्रे जाता ते दाधिमथाः " अर्थात् जो दधिमथि क्षेत्र में पैदा हुये वे दाधिमथ कहाये और दाधिमथ कहाते कहाते दाधिमा कहाने लगगये और इस ही दाधिमा शब्द का बिगड़ कर प्राकृत में दाहिमा बनगया जिसे लोग दायमा भी कहने लगगये । जैसेः ।

| संस्कृत शब्द | भाषा में बदल गया है |
|---|---|
| दधि | दहि |
| दधी | दही |
| बधू | बहू |
| मधु | महु |
| बधु | बहु |
| सरोरुध | सरोरुह |
| अधःमुख | अहमुख |
| सधमा | सहमा |
| मोध | मोह |
| दधिमथ | दहिमथ |
| दधिमंथन | दहिमंथन |
| दाधिमान् | दाहिमान् |
| दाधिमा | दाहिमा |

दाहि में ब्राह्मण विशेष रूप से गांवों के गांव राजपूताना प्रान्तर्गत मारवाड़ प्रदेश में हैं आजीविकार्थ दूर दूर देशों में भी जो चले गये हैं वे सब भी आदि से यहां ही से गये हुये हैं अतः दधिमथि क्षेत्र भी मारवाड़ में ही है इस का दूसरा नाम कपालपीठ भी है इस के विषय में एक विद्वान् ऐसा लिखते हैं कि:—

दधिमथि क्षेत्र

मरुदेशे सुविस्तीर्णो गोठ मांगोल संज्ञकः ।

अर्थात् यह तीर्थ मारवाड़ देश के गोठ मांगलोद परगने नागोर में बहुत प्राचीनतम है जहां आश्विन शुक्ला अष्टमी को प्रति वर्ष दधिमथि देवी का मेला भरता है जहां दधिमथि देवी का एक विशाल मंदिर है यह ही देवी दाहिमा ब्राह्मणों की कुल देवी है, यह दधिमथि देवी अथर्वण मुनि की बेटी व दधीचि ऋषि की बहिन थी ।

इस देवी ने विकट मुख राक्षस प्रसिद्ध नाम वृत्रासुर का हनन किया जो संसार की सम्पूर्ण सार वस्तुवों को खाजाता था जब देवी ने राक्षस का हनन किया तब ब्रह्मा जी प्रसन्न हो के बोलेः—

विश्वेपूर्णो ततो ब्रह्मा तुष्टाव जगदीश्वरीम् ।
दधिनिर्मथनाद्देवी त्वं सा दधिमथी भव ॥

अर्थ :— हे देवी तुमने दधिको खूब मथा इसलिये तुम्हारा नाम दधिमथी होगा ।

शिपि विष्टते भर्ता पितातेऽथर्वणो ऋषि ।
दध्यङ् ऋषिस्तवभ्राता शिवभक्तो निरंतरः ॥
तस्य संरक्षणोदवि कर्तव्यं शाश्वतंत्वया ।
दध्यङ्ङाथर्वस्यापि कुलदेवी भवाधुना ॥

और ब्रह्माजी ने यह भी कहा कि शिपिविष्ट तुम्हारेपति होंगे अथर्वण ऋषि तुम्हारा पिता और दध्यङ् ऋषि तुम्हारे भाई होंगे और तुम

दधीचि कुल की कुलदेवी होगी तब से जहां इस देवी ने दधि को मथा था और संसार की सार वस्तु निकाली थी उस स्थान का नाम तो दधिमथी क्षेत्र हुआ और उस अथर्वण की पुत्री का नाम दधिमथी देवी हुआ और वह दाहिमा ब्राह्मणों की कुलदेवी प्रसिद्ध हुयी।

दाहिमा ब्राह्मणों के आदि पुरुष महर्षि दधीचि जी थे उन का इतिहास व कथा जो पुराणों में मिलती है उस के आधारानुसार सार भूत लेख इस प्रकार से है।

दधीचि इतिहास

हिमवानुवाच :-

दध्यङ्ङाथर्वणः साक्षाद्धर भक्तिरतः कथम्।
तत्प्रभावं समाचक्ष्व का विद्या किंच पौरुषम्॥

हिमवान ने वसिष्ठ जी से पूंछा कि दधीच ऋषि में विद्या व पुरुषार्थ कितना है सो कहो तब वसिष्ठजी बोले-वसिष्ठ उवाच :-

श्रूयतां राजशार्दूल दध्यङ्ङाथर्वणस्यच।
महानुभावं वक्ष्यामि पवित्रं मंगलं परम॥२॥

वसिष्ठ जी बोले हे राजा दधीच ऋषि का परम पुनीत महात्म्य श्रवण करो :-

विष्णोर्नाभिसमुद्भूतः स्वयंभूर्विश्वकारणम्।
मरीच्यादि ऋषीन्सृष्ट्वा दारैःसंयोजयत प्रभुः॥३॥

विष्णु जी नाभि कमल में ब्रह्मा भये फिर ब्रह्माने मरीच्यादि ऋषीन् को उत्पन्न करके उन का विवाह कराया फिर :-

तदंतेऽथर्वणं सृष्ट्वा शान्त्या संयोजयत्तथा।
अथर्वणस्य शान्त्याच कन्या पुत्रौ बभूवतुः॥४॥

अथर्वण ऋषि को उत्पन्न करके कर्दम ऋषि की कन्या शान्ती के साथ विवाह करवा दिया और फिर उन के एक पुत्र व पुत्री उत्पन्न हुये

## कन्या नारायणी देवी पुत्रो दध्यङ्ङृषीश्वरः ।

उस कन्या का नाम नारायणी देवी और पुत्र का नाम दधीच हुआ और इस ही दधीच ऋषि की सन्तान दाहिमा हैं ।

### ॐ कवित्त ॐ

जटाजूटधारो मुनिकाम सारांगे हमारो, खुले कलधारो पेलो दधीचि ऋषि प्यारो है । सुमन वरषावारो संकट हरणहारो सुभ करणवारो वो अथर्वसुत प्यारो है ॥ दयादृष्टिवारो सांतो दुष्टदलन हारो, सर्व पीड़ हरनवारो दि मथी उवारो है। धीरजधरणहारो नुपरोपकारवारो तरण तारण हारो दधीचि रखवारो है ॥

इस जाति की विद्या स्थिति भी प्रशंसनीय है अर्थात् इस जाति में अधिकतर मनुष्य पढ़े लिखे हैं तद्वत ही राजपूताने में, यह कहावत प्रसिद्ध है कि :–

विद्या स्थिति

" अणिया पूछ भावे दाहिमा पूछ "

अर्थात् पण्डित से पूछो चाहे किसी भी दाहिमे से पूछ लो, इस ही जाति में कई महामहोपाध्याय विद्वान भी हैं उदाहरण के लिये महामहोपाध्याय पं० शिवदत्त जी शास्त्री जो हमारे मण्डल के प्रधान हैं वे भी दाहिमावंश शिरोमणि हैं ।

इस ही तरह अजमेर के प्रतिष्ठित ज्योतिषी सम्राट पञ्चांग के कर्ता परममाननीय ज्योतिष भूषण श्री वयोवृ पं० नरायनदास जी का नाम किस ने नहीं सुना होगा जो अपने अनुभव व गणितज्ञता के लिये काशी तक में बुलाये जाते हैं तहां ज्योतिष के बड़े २ जटिल व गहन विषयों पर शास्त्रार्थ करके आप निर्णय कर देते हैं यह ही कारण है कि भारत के प्रसिद्ध २ ज्योतिषी गण आप के सम्राट पञ्चांग को बड़े प्रेम से खरीदते हैं परमात्मा आप को चिरायु करे ।

इस जाति की विद्यास्थिति उच्चतम होने के कारण ही इन में कई कुरीतियों का प्रचार है अर्थात् विवाह में पहरावणी के दिन रात को बींद बींदनी को पलंग पर बिठाकर उनके साम्हने एक पट्टा या चौकी

ज़मीन पर बिछायी जाती है उस पर बेटी वाला बरातियों को एक २ करके चौकी पर बुलाता है और उन के तिलक करके उन के हाथ में चावल देता है तब वे सम्बन्धी को व उपस्थित जनों को श्लोक बोल कर अपनी योग्यता का परिचय देते हैं तत्पश्चात उन्हें २) दक्षिणा दी जाती है परन्तु जो नहीं बोल सकता है उस की वहां बड़ी हंसी होती है और लुगाइयें ये गीत गाती हैं:—

" भला पढ्या जी भला पढ्या तम तौ सब का ताज रह्या "

इस का अभिप्राय तो सीधा ही है कि हे महाराज आप तो खूब पढ़े हैं महा विद्वान हैं अर्थात् आप तो कोरमकोर बाबा जी हैं क्योंकि " वा " का अर्थ विकल्प और वाजी कहिये घोड़ा तौ जो विकल्प करके घोड़ा हो तो क्या ? खच्चर व गधे हो । इसका भावार्थ यह है कि जिस से लोग पठन पाठन में उद्योगी बने रहें ।

इन की स्त्रियें घांघरों पर फेंटिया बांधती हैं फेंटिया दो तीन कलियों का एक पल्ला होता है जो घांघरे से अलग रंग का होता है ।

आसोपे, जोशी और व्यास ये लोग मारवाड़ में बड़े प्रतिष्ठित हैं ।

इन दाधिमा ब्राह्मणों की पदवियें समय पाकर विद्या के अभाव से भाषा में कुछ की कुछ होगयी हैं उन की नामावलि इस प्रकार से है ।

पदवियें

| शुद्ध | अशुद्ध |
|---|---|
| १ त्रिपाठी | तरवाड़ी, |
| २ त्रिवेदी | तिवाड़ी |
| ३ पुरोहित | परोत, प्रोत, प्रोयत |
| ४ पञ्चोलि | पञ्चोलि |
| ५ उपाध्याय | ओझा |
| ६ मिश्र | मिसर |
| ७ व्यास | वियास |
| ८ ज्योतिषी | जोशी |
| ९ आचार्य | आचारज |
| १० द्विवेदी | दुवे |
| ११ चतुर्वेदी | चौबे |

गोत्र इन के गोत्र १३ हैं परन्तु एक २ गोत्र में खांपें बहुत २ सी हैं जो प्रायः गांव व शहरों के निवास के कारण से हो गयी हैं यथाः-

## ॥ गोत्र ॥

१ गौतम
२ शांडिल्य
३ वत्स
४ कश्यप
५ भरद्वाज
६ भार्गव
७ कौच्छस्
८ आत्रेय
९ भगार
१० मन्त्रक
११ कपिल
१२ गर्ग
१३ पाराशर

## ॥ खांप ॥

१ भुवाल
२ गगवाणी
३ काकड़ा
४ लिलोदिया
५ बानयासोदरा
६ बेडवन्त
७ बगड़्या
८ मुडसुणा
९ खटोड़
१० वौराड़्या
११ कंठ
१२ कुंभ्या
१३ नहवाल
१४ पलोड़
१५ पाटोंध्या

यह १५ खांपें गौत्तम गोत्र की हैं इन में कई तो गावों के निवास के कारण खांप प्रसिद्ध होगयी हैं यथा :-गगवाणा, खटोड़, वागड़, पाटो ध्य और भुवाल आदि गांव अभी तक जोधपुर राज्य में प्रसिद्ध हैं।

१ कुदाल
२ मुंडेल
३ भाणजवाल
४ सीसी
५ गोठेचा
६ डीडवाणिया
७ मालोधा
८ धांवड़ोधा
९ जाटल्या
१० डोभ्या
११ नेतावाल

ये ११ खांपें कोच्छस गोत्र की हैं।

१ धमाणिया २ लाखरोट्या ३ अबरओट ४ गालेस ५ बड़कर्मी ६ थमाणिया ७ सोदीजवाल ८ पाइज्यवाल ९ भटाणिया १० जेवड़्या ११ पालड़्या, १२ सोहतीवाल १३ बडहय्या १४ चटाणिया १५ पाइज्यवाल

१६ श्रोजल्या १७ अबीहड़्या १८ जोसवा १९ विप्रहल २० पटोद्या २१ सोहल्या २२ मलीगा २३ जील्या २४ जावणिया २५ धीरोद्या २६ इंजोद्या २७ थोड़वा २८ जोपल्या २९ खोरिया ३० मलोद्या ३१ खेरिया ३२ सतहडया ३३ जवणिय ३४ गंगरूड़ ३५ गंगहिवाल ३६ सुरहड़्या ३७ साबून्या ३८ धोवल्या ३९ लाखुर ४० जगल्या ये अंगार गोत्र की ४० शाखायें हैं, इस में अनेकों खांपें गांवों के नाम से प्रसिद्ध हुयी हैं जैसे पाली में बसकर निकलने से पालड़्या ।

१ रणवा २ बेड़ ३ गोठडावाल ४ दहेवाल और ५ बेड़िया ये पांच खांपें शांडिल्य गोत्र की हैं ।

१ रतावा २ कोलीवाल ३ वजदवा ४ मंग ५ मूल्या ६ डिडियेल ७ धवडिग ८ तरणाधा ९ कुकड़ा १० ईटोद्या ११ पोलगल्या १२ जोपट १३ चौलंखा १४ रोजल्या १५ श्रजमेरा १६ नामाधाल १७ नोसरा, ये १७ खांपें वत्सगोत्र के अन्तर्गत हैं ।

१ चौलंख्या २ वलाया ३ धड़वा ४ राजथला ५ शिरगोठा ६ जामाधाल ७ बोराइंदया ८ दिरोल्या, ये आठ खांपें वत्स गोत्र की हैं ।

१ धरमोय २ ईंदोखवाल ३ हलसुरा ४ गदृया ५ भटाल्या ६ स्योलाणी ७ सुकेल ८ ल्याली ९ आसोपा १० मालोद्या ११ करेशा १२ पेडवाल ये १२ खांपें भारद्वाज गोत्र की हैं इन में आसोपाग्राम से निकास होने से आसोपिया,

१ आजोद्या २ खेपर ३ विसाल ४ लाडखवा ५ बड़ानणा ६ कडलवा ७ कापड़ोद्या ८ इन्याखा ९ कासल्या १० पथायया ११ शिणोद्या १२ कुंडवा ये १२ खांपें भार्गव गोत्र के अन्तर्गत हैं ।

१ तुल्या, गर्ग गोत्र की खांप है और कपिलगोत्र की "चौपड़ा" खांप है मेड़ा और पाराशर्या ये दो खांप पाराशर गोत्र की हैं आत्रेय गोत्र की ४ खांपे हैं यथा :-

१ सुरुल्या २ ढ्यान्या ३ लुजणोद्या और खूंटवाल ।

इस जाति को शूद्र सिद्ध करने की इच्छा से जयपुर के चौवे कृष्णचन्द्र शर्म्मा गौड़ ने शिवपुराण से कुछ श्लोक उद्धृत करके भावार्थ

सहित छपवा दिये थे जिन्हें देख कर इस ब्राह्मण जाति में अति कोलाहल उत्पन्न हुआ अन्त को दोनों ओर से ज़ोर बंधा और गौड़ तथा दाहिमों में परस्पर मुक़दमा बाज़ी होने लगी अर्थात् दाहिमों ने चौबे कृष्णचन्द्र शर्म्मा तथा पं० मन्नालाल जी गौड़ माहरवालों पर अदालत में मानहानि का अभियोग चलाया जिस का पूर्ण विवर्ण नीचे दिया जाता है।

कारण
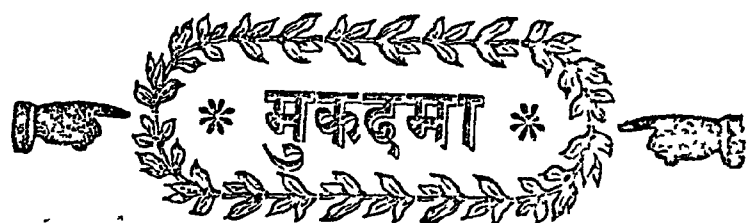
इस मुकदमे का कारण यह था कि जयपुर के चौबे कृष्नचन्द्र ने गौड़ जातीय पंडित मन्नालाल शिवनन्द महारवालों के विक्रम संवत् १९५८ के जयविनोदी नामक पञ्चांग (जो मथुरा के विश्वकर्मा यन्त्रालय में छपा था) में चैत्रमास के कृश्नपक्ष की तिथ्यादि के पत्र पर टिप्पण की ठौर दाहिमा जाति मात्र की अप्रतिष्ठा कराने के लिये नीचे लिखे अनुसार लेख छपाया था:—

" दधीचि आदि ऋषियों के धर्म्म "

वैदिकानां द्विजानाञ्च पूजा वैदिक मार्गतः।
कर्त्तव्या नान्य मार्गेण इत्याहः भृगवाङ्गिरवः॥
दधीचि गौतमादीनां शापेन दग्ध चेतसां।
द्विजानां जायते श्रद्धा नैव वैदिक कर्म्मणि॥

शि० पु० विधे० सं० अ० २१ श्लो० ४२, ४३

चौबेजी का अर्थ:— वैदिक ब्राह्मणों को वैदिक मार्ग से पूजनादि कर्म करने योग्य हैं अन्य मार्ग से नहीं॥ ४२॥ दधीचि ऋषि और गौतम ऋषि के वंशजों को वैदिक कर्म्म में याने वैदिक मन्त्र

उच्चारण करने में अधिकार नहीं है क्योंकि ये श्राप से शूद्र धर्म के अधिकारी होने के वैदिक मार्ग से विच्युत हो गये हैं। शाप निवृत्ति बतलावो नहीं चुप लगावो।

आप का चौबे कृष्णचन्द्र शर्म्मा
हनुमान रोड जयपुर

पाठकः—इस लेख के प्रकाशित होने पर जयपुर के अतिरिक्त सम्पूर्ण देशों के दाहिमों ने इस लेख से दाहिमा जाति की बड़ी भारी मान हानि व अप्रतिष्ठा समझी, तदनुसार सम्पूर्ण प्रान्तों के दाहिमों की ओर से मुखिया मुद्दई निम्नलिखित १३ सज्जन हुये।

❀ मुद्दई ❀

| | |
|---|---|
| १ गोकल जी | ७ रूपनरायन जी |
| २ रामप्रताप जी | ८ शिवनरायण जी |
| ३ देवीनारायण जी | ९ प्रसादीलाल जी |
| ४ बालाबक्स जी | १० शिवदत्त जी |
| ५ कन्हैयालाल जी | ११ छोटेलाल जी |

६ छगनराव जी १२ दामोदर जी १३ माधोलाल जी

मुद्दाइला:—चौबे कृष्णचन्द्र वल्द जमनालाल व पं० मन्नालाल वल्द जीवनराम गौड़ यह मुकद्दमा अनुमान ८ वर्ष तक चलते २ कौंसिल तक पहुंचा।

जयपुर में राज्य की ओर से धर्म्म व्यवस्था सभा है जिस का नाम " मौज मंदिर सभा " है जब कभी धर्माऽधर्म सम्बन्धी मुकद्दमा व मामला जयपुर अदालतों में पेश होता है तब २ ही सब से प्रथम मौज मंदिर सभा की सम्मतियें अदालतें मांगती हैं और तदनुसार ही फैसले दिये जाते हैं इस मौज मंदिर पंडित सभा में बैठने वाले सदस्य बड़े २ नैयायिक, पौराणिक, धर्म्म शास्त्री, और वय्याकरणी तथा वेदांती विद्वान हैं।

# जयपुर राज्यस्थ मौजमन्दिर नाम्नी धर्म व्यवस्था सभायाः

# व्यवस्था पत्रम्

## ( सारांश मात्र )

### जयपुर मौजमन्दिर की व्यवस्था

**केवल पांचवें प्रश्नका उत्तर**

दधीचि और गौतम को शाप होना जो मुद्दायलह कहता है वह बिलकुल निर्मूल है। किन्तु दधीचि गौतम ऋषि, परशुराम और ब्रह्माजीने बहुत से अन्य ब्राह्मणों को शाप दिया है। जिन को शाप हुये हैं उन में एक सुदर्शनके सन्तान वा इतर अनेक ब्राह्मण हैं जिनके नाम बहुधा पुराणों में नहीं हैं।

"दधीचिगौतमादीनाम्" इस वचन में आदि शब्द से शाप देने वाले ब्रह्माजी परशुराम लिये जाते हैं।

[ दूसरे प्रश्नका उत्तर ]

जिसका ज़िक्र ज्ञान संहिता के ४४ वें अध्याय में है और जिस को शिवजी ने शाप दिया था वह सुदर्शन दधीचि ऋषि का बेटा नहीं है किन्तु मामूली दधीचि नामक ब्राह्मण का बेटा है इस विषय में प्रमाण कलकत्ता बंगवासी प्रेस के छपे हुये शिवपुराणान्तर्गत ज्ञानसंहिता के उसी अध्याय में प्रसिद्ध है।

मि० चै० व० २० सं० १९९२

अतएव कौंसिल ने मौजमन्दिर से व्यवस्था मंगवायी तथा दाहिमा ब्राह्मणों ने काशी से व्यवस्था लाकर पेश कियी यथाः—

# व्यवस्था

दाधीच गौतमादीनां शापेनादग्धचेतसाम् ।
द्विजानाञ्जायतेश्रद्धा नैववैदिक कर्म्मणि ॥

भाष्यः—इत्येतास्मिन् पौराणिक श्लोके महाभारतीय कूर्म्मपुराण देवीभागवतादि तत .................. दक्षयज्ञ कालिक दधीचि कर्तृक शिवन्निन्दाकारी ब्राह्मण कर्मक शाप कथा दर्शनेन दधीचगौतमादीनामिति कर्तरि षष्ठी तेन दद्भ्य कर्तृकशाप मोहितानां तदानीन्तन शिवगौतम महामुनि निन्दाकारिणी मन्येषां ब्राह्मणानां पापानुरूपं नरक मुपभुज्यकलौ ब्राह्मण कुलेषु जातानामपि वैदिक कर्मसुश्रद्धा न जायते । इत्येव वास्तवोऽर्थः । नतुगौतम दधीचि कुलोत्पन्नानां श्रद्धान जायते । इति· ईदृशस्य अप व्याख्यान माश्रित्य इदानीन्तन दाधीच कुलोत्पन्न निरवद्य ब्राह्मणानामपवाद प्रकाशनं मात्सर्यमूलकमेवेति शम् सम्मतिरत्र । काशिक राजकीय प्रधान पाठशालायामशेष शास्त्राध्यापक महामहोपाध्याय ( सी० आई ई० ) श्रीगंगाधर शास्त्रिणाम् तथैवसम्मतिः—काशिकराजकीय पाठशालाध्यापक व्याकरणाचार्य्य पण्डित नागेश्वरपन्त धर्म्माधिकारिणाम् ।

## श्रीमान् महामहोपाध्याय पंडित गंगाधरजी शास्त्री सी०आई०ई०तथा संस्कृत प्रोफेसर क्वीन्स कालेज बनारस तथा काशीराजकी पाठशालाध्यापक व्याकरणाचार्य्य नागेश्वर पन्त धर्माधिकारीजी की सम्मतियें

भाषार्थः—"दधीचगौतमादीनाम्" इस श्लोक के अर्थ के विषय में हमारा सिद्धान्त यह है कि महाभारत कूर्म्म पुराण और देवीभागवतादि ग्रन्थों में जहां २ दक्षयज्ञ का प्रकरण है वहां २ ऐसा स्पष्ट लिखा

है कि जो जो शिवनिन्दक थे उनको दधीच मुनि ने शाप दिया और उनके शाप से और कोई ब्राह्मण दूषित हुये और ऐसे ही जिन्होंने गौतम मुनि पर गोहत्या का झूंठा दोष लगाया था वे गौतम मुनि के शाप से कलंकित हुये । अर्थात् यहां पर कर्त्ता में षष्ठी विभक्ति है जिस का तात्पर्य्य यह है कि पूर्वोक्त दोनों मुनि शाप देनेवाले थे अतएव उनकी सन्तानों पर झूंठा दोष लगाना सर्वथा दुराग्रह मात्र है *

English Translation of the Opinion of Mahamahopadhaya Pandit Gangadhar Shastri C. I. E. Sanskrit Professor of Queens College Benares.

## Seconded By.

Vyakaranacharya Pandit Nageshwar Pant Dharmadhikari Benares.

Dadhichi Gautamadinam-In connection with this Verse, we beleive that in the Mahabharat, Koorm Puran, Devi Bhagwat and other books, wherever Dakshayag is mentioned, there it is clearly stated that those who were Blasphemous (Shiv Nindaks.) were cursed by Dadhichi Muni. Thus his maledictions fell on others and not on his own kinsmen. In the same manner those that falsely accused Gautam of Cow Slaughter were cursed by Gautam. It will thus be seen that in the verse above mentioned the form is the instrumental case governing the genitive ( kartari Shashti ) which means that the said Muni was the imprecator. and not that he was impricated. Now those that try to accuse the descendents of that Venerable Muni Dadhichi Son of Atharva are foolishly obstinate.

* दाधीचारिगजांकुश पृ० २७ व २८

भाषार्थ व भावार्थ तो ऊपर दिया ही जाचुका है अतः इस अंग्रेजी का भाषार्थ करना निरर्थकसा जानकर छोड़ दिया है।

पाठक! जयपुर राज धर्म व्यवस्था सभा प्रसिद्ध नाम मौजमन्दिर की सम्मति तथा काशी के प्रसिद्ध महामहोपाध्याय गंगाधर शास्त्री सी० आई० ई० तथा व्याकरणाचार्य्य पं० नागेश्वरपन्त की सम्मतियों से आप भलेप्रकार समझ गये होंगे कि दाहिमे ब्राह्मण एक शुद्ध गौड़ ब्राह्मण समुदाय है और इनके विरुद्ध जो चौवे कृष्णचन्द्रने छपवाया है वह सब मिथ्या व द्वेप फैलाने वाली वार्ता थी क्योंकि उस लेख को देखकर राजपूताने के समस्त दाहिमे ब्राह्मण अपनी अप्रतिष्ठा समझने लगे और मानभंग का दावा कर दिया, जयपुर राज्य में वह मुकदमा अनुमान आठवर्ष तक चला और कौंसिल तक में पहुंचकर श्री हुजूरतक भी इस ब्रह्मक्लेश की चर्चा पहुंची, दोनों ओर से एक दूसरे समुदाय के विरुद्ध व अपने पक्षसमर्थन में पुस्तक रचना द्वारा कड़ी कड़ी समालोचनायें व टिप्पणियें परस्पर होने लगीं तिस से द्वेष की आग और भी धधकने लगी अन्त में मौजमन्दिर से व्यवस्था लियी गयी तथा काशी के महामहोपाध्याय पं० गंगाधर शास्त्रीजी की भी सम्मति आई तिन सब के परिणाम में चौवेकृश्नचन्द्र व मन्नालाल को मुवाफी मांगनी पड़ी यथाः—

# ॥ नक़ल मुवाफीनामा ॥

## २ नक़ल मुराफा (माफी) जो कृष्णचन्द्र और मन्नालाल ने लिखकर मांगा,

स्टांप ।।) का

नंबर १७६ — फौजदारी नंबर ८८६

उज़रात — अदालतेन

# नक़ल हुक्म महक्मे म्हेतस्मे आलिये कौंसल राजसवाई जयपुर बइजलास सीगे अदालतेन

मोहर

दस्तखत अंग्रेजी में रामप्रताप
सेक्रेटरी कौंनसल ।

किसन चंदर वल्द जमनालाल व पंडित मन्नालाल वल्द जीवनराम ब्राह्मण गौड़ साकिन जयपुर मुद्दायलेहिम अपीलांट.

बनाम रामप्रताप वल्द गोविंदराम व देवीनारायण, व बालावक्स, व कन्हैयालाल, व शिवनारायण, व रूपनारायण, व छोटेलाल, व दामोदर ब्राह्मण दायमा मुद्दइयान साकिन जयपुर रस्पांडट,

## ॥ मुराफा व तजवीज़ अपील व मुक़द्दमे अज़ाले हैसियत उरफी, दफा १२६,

ग़रीबपरवर सलामत जनाबआली मैंने जो सन् १९०१ ई० ॥ के पतड़े में जो अलफाज़ खिलाफ दायमा ब्राह्मणों के तहरीर किये हैं वो ग़लत हैं इस लिये मैं माफी चाहताहूं, फ़क़त दस्तख़त. किसनचंदर वल्द जमनालाल ब्राह्मण सकने जयपुर मुद्दायला अपीलांट ता० १८ मई सन् १९०८ दस्तख़त किसनचंदर ब खत हिन्दी.

मैंने जो किसन चंदर के लेख को अपने पतड़े में छपवा दिया यह मेरी ग़लती है, फ़क़त

दस्तखत मन्नालाल बखत हिंदी,

॥ हुक्म सीगे अदालतेन ॥

यह दरखास्त सरे इजलास किसन चंदर की जानिब से पेश हुई और मन्नालाल की जानिब से माफी की इबारत दर्ज ज़ेल अर्ज़ी हाज़ा है लिहाज़ा ।

हुक्म हुआ के

शामिल मिस्ल रहे ता. १८ मई सन् १९०८ई० मिती सावण वदी १२ संवत् १९६४

दस्तखत अंग्रेजी में
सेक्रेटरी के।

# नक़ल हुकुमकौंसिल जयपुर फैसलेके अन्तिम भाग की नक़ल

फौजदारी

नम्बर ८८९

बइजलास बाबू ईशानचन्द्र जी मुकरजी मेम्बर महकमे मोतम्मे आलिये कौन्सिल सीगे अदालतैन फौज़दारी मिस्ल बाहाज़िरी मुख्तार स्टान्डेन्ट पेशहुई, मुराफा हुक्म ज़िमनी की बहस मयाद के बाबत है. पेशी आयन्दा पर किशनचन्द्र मुद्दायले ने दरख्वास्त कियी कि पतड़ा सम्वत १९०१ में जो अल्फाज़ खिलाफ कायम ब्राह्मणों के तहरीर किये थे गलत हैं माफी चाहता हूं मन्नालाल मुद्दायले ने भी ग़लती क़बूल कियी इस के बाद मुद्दयान ने मुकदमे से दस्तबरदारी कियी, कार्य्यवाही तस्दीक बाज़ाब्ता हो गयी बहस तमादी वगैरः की ज़रूरत नहीं, बवजह दस्तबरदारी मुद्दयान मिस्ल दाखिल दफ्तर की जावे इजलास जुमले मेम्बरान में पेशहोवे तहरीर ता: १३ जून सन् १९०८।

बइजलास ठाकुर देवीसिंह जी व ठाकुर भूरसिंह जी मेम्बरान महकमे मोतम्मे आलिये कौन्सिल सीगे अदालत दिवानी।

बमवाजह मुख्तार मुद्दालेह रूयेदाद इजलास पर ग़ौर कर लिया गया हम को भी तजवीज़ इजलास से इत्तिफ़ाक़ है ता: १७ जून सन् १९०८ ई० अज़ इजलास जुमले मेम्बरान कौन्सिल।

## हुक्म हुआ ।

के तजवीज़ सीगे से इत्तिफाक है ज़ारी हो परचा खुलासा हुक्म तख्ते पर चस्पां किया जावे ताः २१ जून सन् १६०८ ई० मिती सावण बदी २ संवत १६६४ ।

दस्तखत बखत्त अंग्रेज़ी ।

**१८१ द्विवेदी** :—यह ब्राह्मण जाति में एक पद है अर्थात् पूर्वकाल से आजतक ब्राह्मणों का मुख्य कर्तव्य वेद का पढ़ना पढ़ाना चला आया है तद्वत् पहिले सब ही ब्राह्मण वेद पढ़ते थे वेद चार हैं ऋग्, यजु, साम और अथर्व अतः पूर्वकाल में इन चारों वेदों के पढ़े हुये ही ब्राह्मण कहाते थे, इन चारों वेदों को चारों संहिता भी कहते हैं अतः शास्त्र नियमानुसार इन चारों संहितावों के जानने वाले को ही ऋषिगण ब्राह्मण मानते थे परन्तु समय के हेर फेर से ब्राह्मण जाति में वेद का अभाव होने लगा अतः फिर ऋषियों ने ब्राह्मणों की संज्ञा उन की योग्यतानुसार बांधी जैसे चतुर्वेदी, द्विवेदी, त्रिवेदी आदि आदि अर्थात् ब्राह्मणों के लिये चारों वेदों का पढ़ना जहां Compulsory. बाध्यता पूर्वक था तहां उस समय की स्थिति के अनुसार ब्राह्मण वंशों को ऋषियों ने उन की योग्यतानुसार द्विवेदी त्रिवेदी की पदवी दियी थी अर्थात् अमुक वंश यदि चारों वेदों को नहीं पढ़ सक्ता है तो तीन वेदों को तो अवश्य ही पढ़े ऐसा नियम जिस ब्रह्मकुल में नियत किया गया वह कुल त्रिवेदी कहाया जो आजकल विगड़ कर भाषा में तिवाड़ी होगया है इस ही तरह जिस ब्रह्मकुल में केवल दो वेद पढ़सकने की ही योग्यता थी उन्हें द्विवेदी पद प्रदान किया गया था जो आजकल विगड़कर भाषा में दुवेभी कहाता है ये पदवियें प्रायः कान्यकुब्ज ब्राह्मणों में विशेष रूप से पायी जाती हैं इस से प्रकट होता है कि अन्य ब्राह्मण समुदायों की अपेक्षा यह समुदाय वेदज्ञ था, वर्त्तमान काल में तो नाम-मात्र के द्विवेदी रहगये हैं यह भारत का अब अहोभाग्य है हां भारत माता के सुपूत कान्यकुब्ज वंश शिरोमणि पं० महावीर प्रसाद जी शुक्ल द्विवेदी प्रोफेसर कानपुर कालेज तथा सम्पादक सरस्वती मासिक पत्र प्रयाग हैं ।

१८२ दीक्षित :—यह ब्राह्मणों की उपाधि है पूर्वकाल में गुरु मंत्र के देने वाले तथा अपने शिष्य समुदाय को गुरु दीक्षा देने वाले ब्राह्मणों को दीक्षित की पदवी दी जाती थी, कन्नोजिये ब्राह्मणों में सनाढ्य ब्राह्मणों में तथा कुरुक्षेत्र निवासी आदि गौड़ ब्राह्मणों में यह जाति पद विशेषरूप से पाया जाता है। इन की मान प्रतिष्ठा बड़ी चढ़ी समझी जाती है।

१८३ दीवास :—यह गौड़ ब्राह्मण समुदाय का एक भेद है इस नाम के ब्राह्मणों की लोक संख्या बीकानेर, मारवाड़ और नाथ-द्वारे में विशेष है राजपूताने में देवास एक स्टेट है तहां से इन गौड़ों का निवास बीकानेर मारवाड़ व नाथद्वारे में होने से देवास वा दीवास कहाये।

१८४ दुवे :— यह द्विवेदी शुद्ध शब्द का अपभ्रंश शब्द है द्विवेदी का संकेत भाषा भाषियों ने दो + वे = दोवे रक्खा था। जिस का भी अर्थ दो वेद का जानने वाला ऐसा था वही दोवे शब्द भाषा में दुवे हो गया इन का विशेष विवर्ण द्विवेदी प्रसंग में देखियेगा।

१८५ दुर्गवाल :— यह गौड़ ब्राह्मणों का एक कुल नाम है जो आज कल सासन भी कहाते हैं गौड़ों के १४४४ ग्रामों में से यह भी एक ग्राम का नाम है तहां के कारण गौड़ों का एक भेद दुर्गवाल हुआ।

१८६ देवरुखे :—यह महाराष्ट्र ब्राह्मणों का एक भेद है शब्दार्थ तो इस का ऐसा है कि जो देवताओं से उदासीन हैं वे देवरुखे कहाते हैं परन्तु यहां इन के प्रति इस भाव का ग्रहण नहीं है किन्तु ये यथार्थ में देवरूखे हैं, देव का अर्थ देवता और रुख का अर्थ कृपा का है अतः जिन ब्राह्मणों पर उन की गुण वरिष्ठता के कारण देवता गण प्रसन्नता दिखाया करते थे वे देवरूखे कहाते कहाते देव-रुखे कहे जाने लगे, आज कल इन की स्थिति सामान्य है कृषी भी

करते हैं इनको दक्षिण में मध्यश्रेणी ब्राह्मण भी कहते हैं विशेष रूप से देशस्थ व सामान्य रूप से कोकनस्थ ब्राह्मणों के साथ इन का भोजन व्यवहार एक है।

१८७ देसवाली :—यह गुजराती ब्राह्मणों का एक भेद है, खेड़ा के ज़िले में इन ब्राह्मणों की बस्ती विशेष है, प्रदेशों में एक देश के ब्राह्मण अपने ही देश के ब्राह्मणों को भी देशवाली कहते कहाते सुने गये हैं।

१८८ देशस्थ :—यह महाराष्ट्र ब्राह्मणों का एक भेद है, इस का शब्दार्थ तो " देश का रहने वाला " " देश में बसने वाला " ऐसा होता है परन्तु महाराष्ट्र देश के ब्राह्मणों में मुख्य ब्राह्मण व सब से प्रथम श्रेणीके देशस्थ ब्राह्मण हैं इन की विशेष बस्ती महाराष्ट्र देश के पूना शहर में है उस देश में यह लोग जहां ब्रह्मकर्मी हैं वहां सरकारी नौकरी व व्यपारादि में भी लगे हुये हैं, इन देशस्थ ब्राह्मणों के भी दो भेद हैं १ लौकिक और २ भिक्षुक, लौकिक वे कहाते हैं जो सांसारिक लाभ के लिये नौकरी, चाकरी, व्यापार व शिल्प कर्म करते हैं और भिक्षुक वे कहाते हैं जो कि शास्त्रीय धारानुसार वेद शास्त्रादि पढ़ने में अपना जीवन बिताते हैं और तत्सम्बन्ध में दान दक्षिणा लेकर ब्राह्मण वृत्ति करते हैं।

इन में जो लौकिक देशस्थ हैं उन के कुल नाम देसाई, देशपान्डे, देशमुख, कुलकर्णी और पाटिल हैं।

भिक्षुक देशस्थों को उन की योग्यतानुसार वहां उन को पदवियें मिलती हैं अर्थात् जो वेद पढ़ते हैं वे तो वैदिक कहाते हैं, जो स्मृति आदि धर्म शास्त्र पढ़ते हैं वे शास्त्री कहाते हैं, जो जन्मपत्रादि का कार्य्य करते हैं वे जोषी या ज्योतिषी कहाते हैं, वैद्यक के ज्ञाता वैद्य कहाते हैं, जो कर्म काण्ड कराते हैं वे भट्ट कहाते हैं, इस प्रकार की पदवियें व कुल नाम भारत के पश्चिमोत्तरीय गौड़ ब्राह्मण समुदाय में भी हैं, परन्तु इधर के ब्राह्मण प्रायः शुक्ल यजुर्वेद के मानने वाले हैं तो यह

महाराष्ट्र देशस्थ ब्राह्मण कृष्णयजुर्वेद के मानने वाले हैं यह लोग सामान्यतया मध्वाचार्य्य की सम्प्रदाय के हैं और विशेषतया शैव सम्प्रदायी हैं। इन ब्राह्मणों की लोक संख्या व इन का प्रभाव माइसोर राज्य में विशेष है युक्त प्रदेश की काशीपुरी में भी इन लोगों की बहुत वस्ती है, पंडित गोविन्द शास्त्री गवर्नमेन्ट संस्कृत कालेज कलकत्ता भी देशस्थ ब्राह्मण थे स्वर्गवासी कमलाकर भट्ट जिन्हों ने "शूद्र कमलाकर" नामक ग्रन्थ निर्माण किया है वे भी देशस्थ महाराष्ट्र ब्राह्मण थे, ऐतिहासिक विद्वान भले प्रकार जानते हैं तांतिया टोपी प्रसिद्ध डाकू भी देशस्थ ब्राह्मण थे इन का बाल्यावस्था का नाम रघुनाथ राव था। मान्यवर पं० नीलकंठ जी जिन्हों ने ज्योतिष ग्रन्थों की टीका की है इन की टीका नीलकंठी टीका कहाती है वे भी देशस्थ ब्राह्मण थे।

१८९ देसाई:—यह महाराष्ट्र ब्राह्मण समुदायान्तर्गत देशस्थ ब्राह्मणों में लौकिक श्रेणी के ब्राह्मणों का एक कुल नाम है।

११० द्रोण :—महात्मा द्रोणाचार्य्य जी के वंशज द्रोण ब्राह्मण कहाये एक दूसरे विद्वान का यह भी मत है कि जिस ब्राह्मण शिष्य को द्रोणाचार्य्यजीने गुरुकुल में अस्त्र शस्त्र की शिक्षा दियी थी उस के वंशज द्रोण ब्राह्मण कहाये ये लोग अपने आचार विचार से श्रेष्ठ हैं।

१११ धीमान् :—यह एक ब्राह्मण जाति युक्त प्रदेशीय मेरठ व मुजफ्फरनगर आदि ज़िलों में है ये लोग कहीं ढिमाण कहीं ढिमान और कहीं धमान् कहाते हैं पर ये सब नाम शुद्ध शब्द धीमान् शब्द के अपभ्रंश रूप हैं इन का मुख्य धन्दा शिल्प कर्म्म है विद्या के अभाव से धीमान् शब्द का शुद्ध २ उच्चारण न किया जाकर कुछ के कुछ रूप में ही लोग इन्हें कहने कहाने लगे और इन में शिल्प कर्म की प्रवृ-

त्ति होने के कारण लोग इन का वर्ण कुछ का कुछ समझने लगे यथार्थ में यह जाति ब्राह्मण वर्ण में है यथा :-

धीमान् सूरिः कृती कृष्टि लब्धवर्णो विचक्षणः ।
दूरदर्शी दीर्घदर्शी श्रोत्रियच्छान्दसौ समौ ॥

अमर कोष द्वितीयकां० ब्रह्मवर्ग श्लो० ६

अर्थात् कोषकार ने इस धीमान् शब्द को ब्रह्मवर्ग में माना हैं अतएव यह जाति ब्राह्मण वर्ण में है ।

इस ही तरह धीमान् शब्द पण्डित के अर्थ में आता है और पण्डित नाम ब्राह्मण विद्वान् का ही बोधक है ऐसी ही सम्मति शब्दार्थ चिन्तामणि कोष की भी है । यह जाति पाञ्चाल ब्राह्मण समुदायान्तर्गत है जिस का विवरण पूर्वलिख आये हैं प्रायः लोगों की शंका होती है कि पाञ्चाल संज्ञक ब्राह्मण शिल्प कर्म करने से ब्राह्मण नहीं हैं परन्तु यह उचित नहीं है क्योंकि शिल्प कर्म्म वर्णत्व का बाधक नहीं है पुराणों में अनेकों शिल्प कर्म प्रवर्तक व शिल्पाचार्य्य हुये हैं पर उन के ब्राह्मणत्व में कुछ त्रुटि नहीं हुयी यथा :-

भृगुरत्रिर्वसिष्ठश्च विश्वकर्मा मयस्तथा ।
नारदोनग्न जिच्चैव विशालाक्षःपुरन्दरः ॥
ब्रह्माकुमारो नन्दीशः शौनको गर्गएवच ।
वासुदेवोऽनिरुद्धश्च तथा शुक्र बृहस्पती ।
अष्टादशतेविख्याताः शिल्पशास्त्रोपदेशकाः ॥

मत्स्यपुराणे ।

अर्थात् उपरोक्त अठारहों ऋषि शिल्प कर्म प्रवर्तक थे पुनः धर्मशास्त्र में भी लिखा है कि :—

तस्यायुधसम्पन्नंधन धान्येन वाहनैः ।
ब्राह्मणैः शिल्पिभिर्यन्त्रैः यवसेनोदकेनच ॥

मनु० अ० ७ श्लो० ७५

अर्थ :—दुर्ग को शस्त्र, धन, धान्य, वाहन तथा ब्राह्मण शिल्पी आदिकों द्वारा परिपूर्ण करलेना चाहिये।

जैसा कि पाञ्चाल स्थरम में लिख आये हैं व पण्डित सभा तथा मुम्बई गवर्नमेन्ट द्वारा निश्चय हो चुका है ये उपब्राह्मण हैं अन्य ब्राह्मणों के साथ इन्हें नमस्कार करने व अन्य समानभाव करने का अधिकार नहीं है ये लोग त्रिकर्मी हैं अर्थात् वेद पढ़ना, दान देना और यज्ञकरने का इन्हें अधिकार है किन्तु दान लेने, वेदपढ़ाने व यज्ञकराने का नहीं, हां ये लोग सन्ध्योपासनादि पञ्च महायज्ञ तथा सोलह संस्कार कर सकने का भी अधिकार रखते हैं।

इन के सम्बन्ध में कुछ पाञ्चाल, उपपाञ्चाल शैव पाञ्चाल व ओझा आदि स्थरमों में भी कुछ मिलेगा।

११२ धेनुजम्होड़ :—दक्षिण प्रान्त में यह एक म्होड़ ब्राह्मणों की जाति है दक्षिण में मोहितपुर से सात कोस की दूरीपर धेनुज एक नगर है तहां का निवास होने से ये धेनुज म्होड़ कहाये इन की उत्पत्ति के विषय ऐसा लेख मिला है कि इन के पूर्वजों ने किसी विधवा कन्या के गर्भस्थापन कर दिया था अतः इन के स्वजाति बन्धुवर्गों ने इन से घृणा प्रकट कियी थी तदनुसार इन्हें धेनुज नगर में रहने की आज्ञा हुयी थी तब से ये लोग धेनुज म्होड़ प्रसिद्ध हुये। यह कैसे ब्राह्मण है? तो ग्रन्थकारों ने ऐसा लिखा है कि :—

गृहस्थास्ते भवेत्तत्र कुमाराधर्म्म विप्लवाः।
धेनुजाख्यां गमिष्यन्ति लोके विप्राधमा अपि॥

अर्थात् धर्म का विप्लव करके उन विधवाओं द्वारा गृहस्थी हुये ये ब्राह्मण धर्मभ्रष्ट तथा ब्राह्मणों में अधम हैं।

११३ नागवा :—यह कुलदेवी गौड़ ब्राह्मणों का एक कुल नाम है जिसे कहीं बंक व कहीं अल्ल तथा कहीं सासन भी कहते हैं।

**११४ नर्वदी** :—नर्वदा के आस पास के ज़िलों में रहने वाले गौड़ ब्राह्मणों को दूसरे देशों में नर्वदी ब्राह्मण कहते हैं।

**११५ नर्वदीय सारस्वत** :—यह नर्वदा नदी के किनारे रहने वाले सारस्वत ब्राह्मणों की जाति का एक भेद है इन का विवर्ण महाभारत गदापर्व में मिलता है अर्थात् बलदेव जी सारस्वत मुनि के आश्रम को गये और बारह वर्ष तक की अनावृष्टि में तपस्या करते रहे वहां सरस्वती के किनारे एक अलंबुषा अप्सरा आयी उस को देखकर ऋषि कामातुर हुये तिस से वीर्यस्खलित होगया इन्हीं सारस्वत ऋषि का नाम दधीचि ऋषि भी है उस पुत्र का नाम सारस्वत हुआ उस के वंशज नर्वदा के किनारे किनारे बसने वाले नार्वदीय सारस्वत ब्राह्मण कहाये।

**११६ नर्सीपारा** :—यह एक गुजराती ब्राह्मण समुदाय का भेद है यह लोग प्रायः वल्लभाचारी हैं थसरा के ज़िले में यह लोग विशेष हैं डाकोर जी के प्रसिद्ध मंदिर श्रीकृष्ण भगवान के पुजारी भी येही हैं। इन का जाति पद उच्च है।

**११७ नाई पांडे** :—यह कान्यकुब्ज ब्राह्मणों का एक भेद है इन की कथा कान्यकुब्ज वंशावलि के पृष्ठ ४२ में ऐसी लिखी है कि अनुमान तीनसौ साठ वर्ष व्यतीत हुये कि यवन लोगों से और मदारपुर के अधिपति मुंडिहार ब्राह्मणों से अति युद्ध भया निदान सब ब्राह्मण परास्त भये और सब कट मरे केवल एक अनन्तराम ब्राह्मण की स्त्री गर्भिणी थी सो यवनों के उपद्रव के भय से स्योना नामा नाई के साथ उस की ससुरार में जाय बसी परन्तु अपने पति और देवर और पुत्रादिकों के मारे जाने के कारण दुखी रहती थी और भोजन निरंतर न करने के कारण दुर्बल और शक्तिहीन होगयी थी। गर्भ के दिन पूर्ण होनेपर उस के पुत्र होने के समय अतिकष्ट पूर्वक कठिनता से पुत्रोत्पन्न भया और वह ब्राह्मणी मृत्युवश भयी तब स्योना नाई ने उस की क्रिया ब्राह्मण द्वारा करवाय दियी और उस बालक का जात संस्कार ब्राह्मणों की रीत्यानुसार कराया और नाम उस बालक का गर्भू रक्खा गया,

जब वह बालक आठवर्ष का हुआ तब कश्यप गोत्र के तिवारी, चिलौली के जो स्योना नाई के पुरोहित सुखमणि नाम थे तिन के सन्तान नहीं थी उनको वह बालक समर्पण किया तिन सुखमणि तिवारी जी ने उस गर्भू नाम बालक का यज्ञोपवीत वेद रीति से किया और उसे वेदाध्ययन कराया और काश्यप गोत्र कहा, कुतमड ग्राम में उस बालक का निवास था इस कारण कुतमड के तिवाड़ी की पदवी दियी गर्भू के वंश में कटोरी तथा अस्तुरा की पूजा अभी तक शुभ कार्य्य में होती है यह कटोरी अस्तुरा का पूजन उस नाई के उपकार के स्मरण का हेतु है।"

इस के दो भेद होगये जिन में से जो पढ़े लिखे मनुष्य थे वे तो अपने को ब्राह्मण समझकर कान्यकुब्जों में मिले परन्तु जो समुदाय विद्या विहीन था वह एक उस्तरा व कटोरी की पूजन करता करता परस्पर स्वजाति वर्ग की हजामत भी करने लगा जिस से वे नाई पांडे कहाने लगे, इसतरह ये लोग परस्पर हजामत करते कराते अन्य उच्च जातियों की भी अन्य नाइयों की तरह हजामत करने लगे और ये ऐसा करते कराते अपनी असलियत को भूलकर अपने को नाई ही समझने लगे। परन्तु इनके साथ में इनके ब्राह्मणत्व का पुछल्ला "पांड़े" शब्द ज्यों का त्यों बना रहा जो प्रकट करता है कि ये ब्राह्मण हैं इस प्रकार का समुदाय निरन्तर केवल हजामत ही नहीं करता किन्तु कुछ कृषी करते हैं कुछ सेवा वृती करते हैं तो कुछ शिल्पकारी करते हैं ये लोग युक्त प्रदेश के फरुक्खावाद व कानपुर तथा प्रयाग आदि जिलों में हैं ये ब्राह्मणानुकूल कर्म कर सक्ते हैं परन्तु इन थोड़े से नाईपांड़ों की देखा देखी नाईमात्र ब्राह्मण बनना चाहता है यह उचित नहीं है।

**११८ नागर ब्राह्मण** :—यह एक गुजराती सम्प्रदाय की ब्राह्मण जाति है, इस नाम के गुजराती नागर बनिये भी होते हैं इस ग्रन्थ में हम केवल नागर ब्राह्मणों का विवर्ण लिखते हैं, यह नागर शब्द मैथिल ब्राह्मण समुदाय में भी है तो गुजराती सम्प्रदाय में भी है अर्थात् मैथिल नागर ब्राह्मण भी होते हैं तो गुजराती नागर ब्राह्मण भी होते हैं, मैथिल ब्राह्मणों में तो यह एक सामान्य भेद है परन्तु विशेष रूप से नागर ब्राह्मण कहते ही गुजराती नागर ब्राह्मणों का बोध होता

है अतः इन गुजराती नागरों के मुख्य छः भेदों का पता लगा है यथा :-

१ वड़नगरा — ४ प्रश्नोरा
२ विशलनगरा — ५ कृश्नोरा
३ साठोदरा — ६ चित्रोड़ा

इन प्रत्येक का विवर्ण हम इसही ग्रन्थ में अपने अपने वर्ग के साथ लिख आये हैं तहां देख लेना, हां नागर शब्द की मीमांसा यहां लिखते हैं। हम अनेकों वर्षों से सदा यह सुनते चले आये हैं कि जब कोई मनुष्य किसी भी प्रकार की बहुत ही अधिक पवित्रता व छूत छात करता है तब प्रायः लोग उसे कहते हैं कि "तुम कहीं के बड़े नागर ब्राह्मण आये" यह कहावत राजपूताने में सर्वत्र प्रसिद्ध है अतएव इस से प्रकट होता है कि नागर ब्राह्मणों में आचार विचार का बड़ा ध्यान रक्खा जाकर हिन्दू धर्म शास्त्रानुसार छूआछूत व पवित्रता का बड़ा प्रचार है अर्थात् बाह्य पवित्रता में इनका पद युक्त प्रदेशीय कान्यकुब्ज ब्राह्मणों के बराबर आविराजता है परन्तु कान्यकुब्जों में मांस मछली खाने का प्रचार अनेकों विद्वानों ने बतलाया है वह तो नागर इन नागर ब्राह्मणों को स्वप्न में भी प्राप्त नहीं है अर्थात् यह रीति इन में लेशमात्र को भी नहीं है यह जाति फल फूल कन्द मूल आहार करने वाली है।

इन नागर ब्राह्मणों का आदि निकास वड़नगर से है। परन्तु इनकी उत्पत्ति के विषय एक ऐसा लेख भी मिला है कि नागर एक ऋषि हुये हैं जिनके नाम पर स्कन्दपुराण का नागर खंड एक भाग है उन्हीं नागर ऋषि के वंशज नागर ब्राह्मण प्रसिद्ध हुये।

नागर ब्राह्मणों की एक प्रवराध्याय नामक पुस्तक है उस में ऐसा लिखा है कि:—

**श्रीमदानंदपुर महास्थानीयपञ्चदशशत गोत्राणां।**
**सम्वत्२८३पूर्वतिष्टमान गोत्राणां समानप्रवरस्यनिबंधः**

अर्थात् श्रीमदानंदपुर महास्थान कारहनेवाला १५०० गोत्रों को जो सम्वत् २८३ से आगे के हैं उन गोत्र प्रवरों का निबंध लिखता हूं।

ग्रन्थकर्त्ता के इस आधार से नागर ब्राह्मणों की उत्पत्ति का काल विक्रम सम्वत् ३८३ के आस पास था यों कहिये कि विक्रम सम्वत् के आरम्भ की तीसरी शताब्दि के अन्त में होना प्रमाणित होता है अर्थात् नागर ब्राह्मणों को उत्पन्न हुये कम से अधिक आज सम्वत् १९७२ में १६८९ वर्ष हुये हैं।

प्रसिद्ध इतिहासवेत्ता विद्वान पं० दलपतराम दयाभाई C. I. E. सी. आइ. ई. ने भी अपने जाति निबंध में इन ब्राह्मणों के विषय ऐसा ही लिखा है।

ये ब्राह्मण अपने को सम्पूर्ण ब्राह्मणों से ऊंच मान्ते हैं परन्तु प्रायः अन्य ब्राह्मणगण परस्पर के ऊंचता नीचता के भावों के कारण इन्हें ऊंच नहीं मान्ते हैं। इन में जहां कट्टरता कुरीतियों का प्रचार है वहां इन में विवाह में भिन्न भिन्न देव पूजन की तरह सूप ( छाजला ) व झाड़ू की भी पूजन होती है अतएव इस को देख कर विद्वान लोग इन की उच्चता पर ही सन्देह नहीं करते हैं पर महाराष्ट्र जाति विषयक ग्रन्थकर्त्ताओं ने इनकी उत्पत्ति नीच लिखी है क्योंकि ढेड के हाथ के बनाये हुये सूप व झाड़ू को विवाह सरीखे मंगल कार्य में उस समय में देवता के स्थान में पूजा करने का प्रयोजन ही क्या ?

जा० भे० शि० सा० पृ० ८३

**१९९ नागरवाल**—यह गौड़ ब्राह्मणों का एक कुलनाम है इसही नाम को कोई लोग सासन, कोई लोग अल और कोई लोग वंक-बोलते हैं गौड़ों के १४४४ ग्रामों में से नागोर भी एक नगर था तहां के गौड़ नागोरवाल कहाते कहाते नागरवाल कहाने लग गये। यह नागोरनगर आजकल जोधपुर राज्य में रेलवे स्टेशन व एक अच्छा परगना है।

**२०० नापल** :—यह औदिच्य सहस्र ब्राह्मणों की एक जाति है इन के विषय में ऐसा लेख मिलता है कि गुजरात देश में एक धर्मात्मा राजा था जिस का नियम था कि " ब्राह्मणों के बालक विद्या में परीक्षोत्तीर्ण होकर अपनी स्त्री सहित आकर राजा को आशिर्वाद दें तो उन्हें दक्षिणा में एक ग्राम दिया जाय " तदनुसार दो औदीच्य ब्राह्मणों के बालक जब विद्या में परीक्षोत्तीर्ण हो चुके तब ग्राम

दक्षिणा प्राप्त की इच्छा से सोचने लगे कि " हमारे स्त्री नहीं है वरन हम तो ब्रह्मचारी हैं और राजा बिना गृहस्थिन के ग्राम नहीं देगा अतः क्या होना चाहिये ? इस पर उन्हें यह सूझा कि :—

भार्य्यां विनाग्राम दानं न करिष्यति भूपतिः ।
अन्य जात्युद्भवे कन्ये द्वेगृहीत्वा सभार्य्यकौ ॥११॥
भूत्वा राजसभां गत्वा परिक्षां ददतुश्चिरम् ।
तयोर्विद्यां समालोक्य प्रसन्नोभून्नृपस्तदा ॥१२॥
ददौ बोर सदग्राम मन्यस्मै नापलं तथा ।
नव खेटक संयुक्तं ततस्तौ द्वौ कुमारकौ ॥१३॥

अर्थः—बिना भार्य्या के राजा गांव नहीं देंगे अतः अन्य जाति की दो कन्यायें साथ ले पति पत्निस्वरूप बन कर ॥११॥ राजसभा में जाकर परीक्षोत्तीर्ण हुये जिस से राजा ने प्रसन्न होके एक को बोरसद व दूसरे को नापल गांव दिया जिस नापल के आधीन ९ छोटे खेड़े हैं फिर राजा के यहां से वे दोनों कुमार जब लौटे तब उन दोनों अन्य जाति की स्त्रियों से दोनों बोले कि आप अपने अपने घर चली जावो यथाः—

कृतकार्य्यौ प्रसन्नौच स्वगृहं ययतुस्ततः ।
कन्ये प्रत्यूचतुः स्वं स्वं गृहं गच्छच माचिरम् ॥१४॥
तदा द्वे कन्यके ताभ्यां प्रोचतुः कोप संयुते ।
अस्मत्प्रतिग्रहं नो चेत्करिष्यथ्य तदानृपम् ॥१५॥
गत्वा विज्ञापयामोघ तदा दंडो महान्भवेत् ।
न करिष्यथ्य त्यागं नो तदा सौख्यं चिरंभवेत् ॥१६॥

भा० राजा के यहां से वे दोनों प्रसन्न होकर अपने अपने घर आने लगे और फिर उन कन्यावों को अपने अपने घर चले जाने को कहा जिस से वे क्रोधायमान होके बोलीं कि यदि हम यह आप का कपट राजा के प्रति जाकर कहेंगी तो आप को बड़ी क्षति पहुंचेगी और यदि

आप हमें अपनी अपनी स्त्री बनाकर रक्खोगे तो अपना जीवन सुख से व्यतीत होगा, तदनुसार ही उन दोनों ब्राह्मणों ने उन्हें अपनी स्त्री बना लियी अतः जिन को वं रसद ग्राम मिला था उनकी सन्तान बोरसद व जिन्हें नापल गांव मिला था उनकी सन्तान नापल कहायी।

२०१ नार्वदीय गौड़ :—यह एक गौड़ ब्राह्मणों की जाति है नर्वदा नदी के किनारे किनारे जो गौड़ रहे वे नार्वदीय गौड़ कहाये ये लोग मालवे प्रदेश में व जब्बलपुर में विशेष हैं ये श्रीगौड़ ब्राह्मणों में से हैं इन के खानपान व आचार विचार शुद्ध हैं यथा :-

नार्वदीया ब्राह्मणाश्च नर्वदातटवासिनः।
ब्रह्मदेशात्पूर्वभागे तथा चाग्नेयादिक्स्थिते।

अर्थात् नर्वदा नदी के किनारे किनारे के रहने वाले गौड़ ब्राह्मण नार्वदीय गौड़ कहाये।

२०२ नाम्बी वार्लु :—यह तैलंगी ब्राह्मणों का एक भेद है यहां ये लोग नीच जातियों के यहां की यजमान वृत्ती करने से नीच श्रेणी के ब्राह्मण माने जाते हैं।

२०३ नाम्बूरी :—यह दक्षिणी ब्राह्मणों में का एक भेद है इन की विशेष बस्ती केरल, मलाबार, कोचिन और ट्रावन्कोर के जिल्हे में है ये लोग मलेलियन भाषा बोलते हैं जो तैलंगी भाषा से मिलती जुलती सी है इस देश में मुख्य ब्राह्मण दो ही प्रकार के हैं नाम्बूरी और नायर, परन्तु नायर व नाम्बूरी इन दोनों में बहुत ही अधिक भेद है।

मलाबार के नाम्बूरी ब्राह्मणों की वैवाहिक रीतियें भारत वर्ष के अन्य ब्राह्मणों की अपेक्षा अतिविचित्र और एक निराले ढंग की हैं. अर्थात् इन में केवल सब से बड़े भाई का ही विवाह शास्त्र नियमानुसार होता है यदि उस बड़े भाई की स्त्री से कोई लड़का न हो तो उस के छोटे भाई का विवाह किया जाता है अन्यथा नहीं छोटा भाई जिस को कि उन के यहां विवाह करने की आज्ञा नहीं है वह किसी क्षत्रियाणी

से व नायर * जाति की स्त्री से अपना सांसारिक सम्बन्ध कर सकता है ये लोग भारत के अन्य देशों में बहुत ही साधारण सी स्थिति के व छोटी श्रेणी के ब्राह्मण माने जाते हैं :—

२०४ नारादिक :—यह गुजराती ब्राह्मणों की एक श्रेणी का नाम है ये लोग विशेष रूप से कच्छ के आस पास के शहरों में बसते पाये जाते हैं अपने निर्वाहार्थ खेती व भिक्षावृत्ती करते रहते हैं।

२०५ निर्मल :—यह कुरुक्षेत्री आदि गौड़ ब्राह्मणों का एक भेद है इस को अङ्क व बंक के नाम से भी पुकारते हैं गौड़ों के १४४४ ग्रामों में से एक का नाम है।

२०६ नियोगी :—यह तैलंग देश के ब्राह्मणों का एक भेद है तैलंग ब्राह्मणों के तीन भेद १ स्मार्त २ श्रीवैष्णव और ३ माध्वाचारी। इन में स्मार्त ब्राह्मणों के दो मुख्य भेद हैं नियोगी और वैदिक जिन में से यहां नियोगी ब्राह्मणों के ये ६ भेद हैं :—

| | |
|---|---|
| १ अरवेलुवालु | ४ पपकुन्न मोती |
| २ तेलंगी नियोगी व तेली शाना | ५ याज्ञवल्क्यी |
| ३ नन्दवारिक | ६ कर्नाटकशाना |

इन में याज्ञवल्क्यी ब्राह्मणों के भी दो भेद हैं १ अनुम कुंडलु और २ कौत्त कुंडलु। इन सब उपरोक्त भेदों का भोजन व्यवहार एक व बेटी व्यवहार स्व स्व वर्ग में है। किसी एक विद्वान का ऐसा मत है कि ये नियोगी ब्राह्मण पूजापाठ कराने के योग्य नहीं हैं परन्तु यह सब अप्रयुक्त शब्द हैं क्योंकि पूर्वकाल में ये लोग योग शास्त्र के जाननेवाले थे परन्तु अब उतने विद्या सम्पन्न नहीं हैं तथापि साधारण ब्राह्मणों में से हैं

२०७ नंदवाने बोहरे :—यह राजपूताना के ब्राह्मणों का एक भेद है ये लोग गौड़ सम्प्रदाय में से हैं मारवाड़ इन का देश है तथा ये व्यापार करते व लेन देन की बोहरगत करते हैं अतः बोहरे कहाते हैं। पल्लीवाल ब्राह्मणों का यह एक भेद है

* ट्रावनकोर के ज़िले में "नायर" एक सतशूद्र संज्ञक जाति भी है

**२०८ नंदोदरा** :—यह गुजराती ब्राह्मणों का एक भेद है गुजरात में नंदोद एक ज़िला है तहां से निकास होने से ये नंदोदरे कहाये हैं यह नन्दोद शहर राज पीपला रियासत का एक प्रधान शहर है वहां राजघराने के राज गुरू ये ही हैं इस जाति के अन्य ब्राह्मण खेती व भिक्षा दोनों ही द्वारा निर्वाह करते हैं।

**२०९ नैपाली** :—यह एक ब्राह्मण जाति है, नैपाल देश से निकास होने से ये लोग नैपाली ब्राह्मण कहाये इन के खानपानादि व्यवहार कन्नौजिये ब्राह्मणों से मिलते जुलते से हैं एक विद्वान ने लिखा है कि नन्दराजा के समय ये सब जातियों का धन धान्य लिया करते थे।

**२१० पकुलमती** :—यह तैलंग देश के नियोगी ब्राह्मणों का एक भेद है ये लोग गृहस्थ सम्प्रदाय के हैं! वहां के आचार विचार तथा युक्त प्रदेशीय आचार विचार के नियमों में बड़ी भिन्नता है।

**२११ पच्चीसे** :—यह गुजराती ब्राह्मण समुदाय का एक भेद है पच्चीस ग्राम जीविका में इन्हें मिले थे इस से ये पच्चीसे ब्राह्मण कहाये ये लोग वहां साधारण स्थिती के ब्राह्मण हैं खान पान से सदा-चार युक्त हैं।

**२१२ पञ्चगौड़** :—यह समुदाय वाचक शब्द है अर्थात् सृष्ट्युत्पत्ति के समय पहिले सब ब्राह्मण एक थे यह विषय अन्य किसी भाग में लिखेंगे पश्चात् सब से प्रथम ब्राह्मणों की गौड़ संज्ञा हुयी, गौड़ किसे कहते हैं? यह निर्णय पूर्व ही गकार के जाति प्रसंग में लिख आये हैं तहां देख लेना, यह ब्राह्मण जाति है इस में दो शब्द हैं पञ्च और गौड़ ये दोनों शब्द मिलकर हुआ। पञ्च गौड़ जिस का अर्थ पांच

गौड़ ऐसा होता है, यह संज्ञा ब्राह्मणों की प्राचीनतम है जैसा हम जाति अन्वेषण प्रथम भाग में लिख आये हैं पहिले देश भेद व ग्राम भेद तथा नगर भेद नहीं था वरन ऋषियों के आश्रम नामों से कार्य्य होता था तब उस समय के ऋषिगण यदि किसी समुदाय को विभक्त करना चाहते थे तो उस के पांच भेद किया करते थे क्योंकि हिन्दू शास्त्रों में "पञ्च" शब्द का बड़ा माहात्म्य है जैसे :-

१ **पञ्चायतन पूजा**=विष्णु, शिव, शक्ति, सूर्य्य और गणपति का पूजन पञ्चायतन पूजा कहाती है जिस का करना प्रत्येक गृहस्थी का धर्म है।

२ **पञ्चगव्य** :—दूध, दही, घृत गोमूत्र और गोबर इन पांचों को मिलाकर प्रत्येक प्रायश्चित में पीने से शुद्धि होती है।

३ **पञ्चामृत** :—दूध, दही, घृत, शहत और शर्करा ये पांचों पञ्चामृत कहाते हैं जो प्रत्येक कथा आदि के समय लिया जाता है।

४ **पञ्चाङ्ग** :—षोड़शोपचार में भी विना पञ्चांग चढ़ाये पूजा ही अधूरी कहाती है अर्थात् पटल, पद्धति, कवच, स्तवराज और सहस्र नाम ये देवता के स्तोत्र में पञ्चांग माने जाते हैं।

५ **पञ्चाङ्ग** :—ज्योतिष के पञ्चांग में भी तिथि, वार, नक्षत्र योग और करण ये पांचों पञ्चांग माने जाते हैं और प्रत्येक शुभ कार्य्यों के आरम्भ में ये पांचों ही देखे जाते हैं।

६ **शैवीमन्त्र** :—यह मंत्र भी पञ्चाक्षरी ही होता है।

७ **पञ्चकोशी** :—तीर्थों में भी पञ्चकोशी की यात्रा की महिमा बहुत अधिक है।

८ **पञ्चतत्व** :—पृथिवी, अप, तेज, वायु और आकाश ये पांचों पञ्चतत्व कहाते हैं और संसार के सम्पूर्ण पदार्थ इन्हीं पंच तत्वों के अन्तर्गत है।

९ पंचक्लेश :—अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश ये पांचों क्लेश माने गये हैं, प्रत्येक प्राणी के साथ ये पांचों सदैव रहते हैं।

१० पंचविषय :—शब्द, रूप, रस, स्पर्श और गन्ध ये पांचों ज्ञानेन्द्रियों के पांच विषय हैं।

११ पंचविषय :—वचन, आदान, गमन, विसर्ग और आनन्द ये पांचों कर्मेन्द्रियों के विषय हैं।

१२ पंचवृत्ति :—प्रमाण, विपर्य्यय, विकल्प, निद्रा और स्मृति ये पांचों चित्त की पांच वृत्तियें हैं इन को एकाग्र करलेने का बड़ा फल है।

१३ पंचमहायज्ञ :—ब्रह्मयज्ञ, भूतयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ और बलिवैश्यदेव। इन पांचों के नित्य करने से नित्य की नित्य के किये पाप दूर हो जाते हैं।

१४ पंचरत्नीगीता :—विष्णुसहस्रनाम, भीष्मस्तवराज अनुस्मृति, गजेन्द्रमोक्ष और भगवद्गीता ये पांचों पञ्चरत्नी गीता कहाते हैं। इन के पाठ का बड़ा माहात्म्य है।

१५ पंचरत्न :—सोना, मोती, हीरा, लाल और नीलम ये पांचों पञ्चरत्न कहे जाते हैं। ये पांचों प्राणी के मृत्यु समय काम आते हैं।

१६ पंचवायु :—प्राण, अपान, समान, उदान और व्यान ये पांचो शरीर की वायु कहाती हैं। इन का निवासस्थान मनुष्य का शरीर ही है।

१७ पंचाग्नि :—पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्खिन और बीच में अग्नि जला कर तप करना पंचाग्नि तप कहाता है।

१८ पंचमूल :—पंचमूल काढ़े में भी पांच ही औषधि होती हैं। जो ज्वरनाशक होता है। यह एक औषधि है।

१९ **पञ्चायत** :—पञ्चयत् में भी पांच ही मनुष्य होते हैं दो मुद्दई की ओर के दो मुद्दायले की ओर के और एक सरपंच ये पांचों परमेश्वर तुल्य माने जाते हैं जैसे:—

पांच पञ्च मिल कीजेउ काजा। हारे जीते आवे न लाजा॥

२० **पञ्चपल्लव** :—आम, जामन, गूलर, बड़ और पीपल इन पांचों वृक्षों के पत्ते प्रत्येक शुभ कर्म पूजन पाठ समय काम में लायेजाते हैं।

२१ **पञ्चमेवा** :—दाख, छुहारा, खोपरा, बादाम और अख-रोट ये पांचों प्रत्येक यज्ञादि में मुख्यतया ग्रहण किये जाते हैं।

२२ **पञ्चाध्यायी** :—श्रीमद्भागवत के दशमस्कन्ध में पञ्चा-ध्यायी के पांचों अध्याय प्रधान माने जाते हैं।

२३ **पञ्चवस्त्र** :—धोती, कुड़ता, अंगरखा, पगड़ी और दुपट्टा ये पांचों पञ्चवस्त्र कहाते हैं।

२४ **पंचमाला** :—तुलसी, मन्दार, कुन्द, पारिजात, और कमल इन पांचों की माला पञ्चमाला कहाती है इनके धारण का महात्म्य बहुत अधिक बताया गया है।

२५ **पंचधूप** :—चन्दन, अगर, केशर, कपूर और गुगुल ये पांचों मिल कर पञ्चधूप कहाती हैं। यह धूप प्रत्येक गृहस्थी के घर में नित्य जलने से बच्चों को व्याधी नहीं होती है।

२६ **पंचवीर** :—युधिष्ठिर, भीमसैन, अर्जुन, नकुल और सहदेव ये पांचों पञ्चवीर कहाते हैं तथा इन्हीं का नाम पञ्चपाण्डु भी है।

२७ **पंचअवस्था** :—बाल, पौगण्ड, किशोर, युवा और वृद्ध ये पांचों, शरीर की पञ्चअवस्था कहाती हैं।

२८ **पंचक** :—धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद और रेवती ये पांचों जिन तिथियों में लगातार आजाते हैं उन तिथियों में "पञ्चक" होने से अनेकों शुभ काम रुकजाते हैं ।

२९ **पंचमकार** :—मद्य, मांस, मीन, मुद्रा और मैथुन ये पांचों वाममार्गियों के मोक्ष साधन हैं ।

३० **पंचमहाद्वीप** :—एशिया, यूरोप, आफ्रिका, आस्ट्रेलिया और अमेरिका ये पांचों पञ्चमहाद्वीप कहाते हैं ।

३१ **पंचनद** :—झेलम, चनाब, व्यासा, रावी और सतलज ये पांचों पञ्चनद कहाते हैं जिस से पञ्जाब नाम पड़ा है ।

३२ **पंचसन्धि** :—संज्ञासंधि, स्वरसंधि, प्रकृतिभाव, व्यञ्जनसंधि और विसर्गसंधि ये पांचों व्याकरण में पञ्चसन्धि कहाती हैं ।

३३ **पंचपिता** :—जिस के वीर्य्य से उत्पन्न हो, यज्ञोपवीत करानेवाला, विद्या पढ़ानेवाला, अन्नदाता और दुःख से बचानेवाला ये पांचों पञ्चपिता प्रत्येक मनुष्य के होते हैं ।

३४ **पंचमाता** :—राजा की स्त्री, गुरुकी स्त्री, मित्रपत्नी, सास और अपनी मा ये पांचों पञ्चमातायें सब के होती हैं ।

नोटः—उपरोक्त बातें शास्त्रों से उद्धृत करके लिखी हैं ग्रन्थ वृद्धि भय से शास्त्रों के श्लोक व सूत्र न लिख कर उन को भावार्थमात्र भाषा में लिख दिया है ।

पाठक ! उपरोक्त प्रमाणों से आप पञ्च की महिमा व माहात्म्य समझ गये होंगे अतः पूर्वकाल में ऋषिगण ने गौड़ ब्राह्मणों की भी पञ्च की संज्ञा बांधकर पञ्चगौड़ नाम रक्खा था और उनकी सन्तान की वृद्धि देखकर उनको पांच ही भागों में विभक्त किया था जैसे:-

सारस्वता कान्यकुब्जा गौड़ा मैथिल उत्कला: ।
पंचगौड़ समाख्याता विंध्यस्योत्तर वासिना : ॥

स्कन्द पु० सह्याद्रि खण्डे

अर्थात् सारस्वत, कान्यकुब्ज, गौड़, मैथिल और उत्कल ये विंध्याचल के उत्तर २ रहनेके कारण पंचगौड़ कहाये फिर इन्हीं प्रत्येक के निवास भेदों से उपदेश की भी वही संज्ञा हुयी, सरस्वती नदीके किनारे किनारे जो गौड़ जाकर बसे उन की सारस्वत संज्ञा हुयी, फरुक्खाबाद, कानपुर और लखनऊ तथा अलाहाबाद आदि प्रदेशों में रहने वाले गौड़ों की कान्यकुब्ज संज्ञा हुयी, कुरुक्षेत्र व दिल्ली मण्डल यानी मेरठ आदि स्थानों के रहने वाले गौड़ आदि गौड़ कहाये जो गौड़ विहार प्रदेश की ओर फैले व तिरहुत में जाकर बसे वे मैथिल कहाये, और जो कलकत्ते की ओर उड़ीसा प्रान्त में जाकर बसे वे उत्कल कहाये. उस समय वास्तव में अपने कला कलाप से ये पांचों नामधारी ब्राह्मण गौड़ ही थे अतःइन का नाम पंचगौड़ रक्खा गया, उस समय इन के आचार विचार में इतनी भिन्नता नहीं थी जैसी आजकल हम देखते हैं अर्थात् कान्यकुब्ज, और मैथिल मांस मछली खाते हैं लड़कों का ठहरावा करेक लड़के के मूल्य स्वरूप में दात दायजा व एक बहुत बड़ी भारी रक़म बेटी वाले से लेते हैं तो उत्कल लोग मांस मछली खाते हैं पर लड़के का रुपैया नहीं लेते, इस के विरुद्ध गौड़ लोग लड़की का मूल्य स्वरूप रुपैया तो लेते हैं पर मांस मछली के स्पर्श तक में पाप समझते हैं, कान्यकुब्ज लोग तम्बाकू खाते हैं तो गौड़ लोग तम्बाकू पीते बहुत हैं जिन्हें लोग हुक्कादास कहकर भी पुकारते हैं सन्ध्योपासन का गौड़ों में एक मात्र अभाव सा बतलाया जाता है तो कान्कुब्जों में इस का प्रचार है इस ही सम्बन्ध में विद्वानों ने ऐसा लिखा है कि :-

संध्या बिन कान्यकुब्ज ऐसे, हुक्के बिन गौड़ जैसे।

भावार्थ तो इस कहावत का सीधा ही है अर्थात् कान्यकुब्ज ब्राह्मणों को संध्या करना जितना प्यारा है गौड़ों को उतना ही प्यारा

हुक्का पीना है जिस में जगत की झूंठ खानी पड़ती है, इस ही तरह उत्कल ब्राह्मणों में सखरे निखरे तथा स्पर्श अस्पर्श का विशेष विवेक नहीं है तो सारस्वत लोग खत्रियों के यहां की कच्ची रसोई यानी सखरा भोजन जीमते हैं और खत्री मांस भी खाते हैं कहने का अभिप्राय यह है कि ये पांचों ही गौड़ खान पानादि आचार विचार में कुछ कम व अधिक सब ही गिरगये और तिस से एक समुदाय एक दूसरे को बुरी दृष्टि से देखने लगा तथा ये समुदाय परस्पर एक दूसरे समुदाय को अपने से एक भिन्न जाति समझने लगगये अन्यथा ये पांचों एक ही हैं।

हां यह हम मान्ते हैं कि इन ब्राह्मण भेदों में सब ही मनुष्य ऐसे भी नहीं हैं जो उपरोक्त कुरीतियों से कलंकित ही हों अच्छे व बुरे सब ही तरह के मनुष्य सब में होते हैं क्योंकि राजपूताने में हम देखते हैं कि गौड़ ब्राह्मणिये मारवाड़िन सेठानियों के यहां पैरों में मेंहदी लगाती, सिरगूंथी करती व बड़े बड़े बे पड़दगी के गीत गाली गागा कर अपना जीवन निर्वाह करती हैं यह ही नहीं गौड़ों की बालविधवायें जब उन से नहीं रुका जाता है तब कलकत्ता मुम्बई, चूरू रामगढ़ बिसाऊ फतेहपुर दिल्ली, बीकानेर और अमृतसर आदि आदि विदेशों में जाकर मारवाड़ी सेठों के यहां रसोइणजी व मिश्राणीजी की नौकरी करलेकर यथेच्छापूर्वक सब कुछ करलेती हैं। पर तब गौड़त्व जाना नहीं माना जाता है इस ही तरह गौड़ जाति के पुरुषोंने अपना सर्वोच्च धन्दा तम्बाकू पीना व रसोइयाजी तथा पानीपांडे बनने का ग्रहण करलिया है अतः इन कुरीतियों पर श्रीमती गौड़महासभा कुरुक्षेत्र का ध्यान आकर्षित करते हैं कि इन कुरीतियों का नाश व सुरीति प्रचार होना चाहिये।

यह बात एक गौड़ों ही में नहीं है वरन कान्यकुब्ज व बंगाली तथा मैथिल भाई भी इससे बचे हुये नहीं हैं अर्थात् इन में कुलीनता

अकुलीनता का विवाद व लड़के के मूल्य स्वरूप में बहुतसा रुपैया लेने की प्रथा है जिस का पूर्ण विवर्ण व हृदय विदारक दृश्य Scene हम अपने जाति अन्वेषण प्रथम भाग में दिखला आये हैं कि जिस का पढ़कर पत्थर का हिया भी दाड़िम सा दरक जाता है, स्वर्गवासिनी स्नेह लता का नाम किसने नहीं सुना होगा जो इस दहेज की कुप्रथा से पीड़ित हो अधिक काल तक कुंवारी रही और अन्त में अपने गरीब पिता को इस कुलीनता अकुलीनता की प्रथा व अधिक दहेज की कुरीति से सदा के लिये बचाने के लिये आप मकान के ऊपर से नीचे को गिरकर अपने प्राण त्याग करदिये थे क्योंकि इस कुप्रथा के कारण कितनेही लड़कियें यातो आजन्म कुंवारी मरजाती हैं या किसी विजातीय विधर्म्मी पुरुष के साथ निकल भगती हैं अस्तु ! पञ्चगौड़ अपनी कुरीतियों को दूर करके सच्चास्वजातीय प्रेम दिखलावें यह ही हमारी मन्सा है ।

**२१३ पञ्चद्रविड़** :—यह भी ब्राह्मण जाति का एक समूहवाचक भेद है सृष्टिके आदि में वे ब्राह्मण जो विंध्याचलके दक्षिण में जाकर बसे उन लोगों में से किसी ने अपना ऋग्वेद नियत किया तो किसी ने सामवेद तो किसी ने अथर्ववेद अतएव ये सब विंध्याचल के दक्षिण में रहनेवाले ब्राह्मणों की द्रविड़ संज्ञा हुयी और फिर उन द्रविड़ों की भी महिमा उपरोक्त क्रमानुसार ऋषियों ने मर्यादा बांधकर उनकी भी पञ्चद्रविड़ संज्ञा कियी और पांचों द्रविड़ जहां जहां जाकर बसे उस उस देश का नाम उन्हीं पांचों के नाम से प्रसिद्ध हुवा जैसे:—

कर्णाटकाश्च तैलंगा द्राविड़ा महाराष्ट्रकाः ।
गुर्जराश्चेति पञ्चैव द्राविड़ा विंध्यदक्षिणे ॥

स्कन्द पुराण सह्याद्रिखण्डे ।

अर्थात् विंध्याचल के दक्खिन रहनेवाले ब्राह्मणों के समुदाय पांच नामों से यानी कर्णाटक, तैलंग, द्रविड़, महाराष्ट्र और गुर्जर ये पांचों

पञ्चद्रविड़ कहाये पञ्च शब्द का महत्व भी उपरोक्त पञ्चगौड़प्रमाणानुसार जानना चाहिये इन प्रत्येक पांचों का विवर्ण भी इस ही ग्रन्थ में अपने अपने अक्षरवर्ग में लिखा है तहां देख लेना ।

२१४ पटुवा:—यह एक जाति है ये लोग अपने को ब्राह्मण वर्ण में मान्ते हैं परन्तु यह मत सर्व सम्मत नहीं है इन की विशेष स्थिती गुजरात तथा राजपूताने में है सदैव से यज्ञोपवीत धारण करते चले आये हैं खान पान से शुद्ध हैं वैश्नव सम्प्रदायी हैं इन के विषय स्कन्द पुराण में पूर्ण विवर्ण है वह सब भविष्यत में प्रकाशित होगा इन्हें ब्राह्मण के त्रिकर्म, वेद पढ़ना, यज्ञ करना और दान देना चाहिये क्योंकि ये उप ब्राह्मण हैं और शिल्प कर्म्म द्वारा जीविका करना इनका धन्दा है । रेशमी वस्त्रों पर कसीदा काढ़ना व रेशमी डोरों में गहनों को पोना इन की मुख्य जीविका है ।

२१५ पटवर्धन:—यह कोकनस्थ ब्राह्मणों की एक जाति यह है इन्हीं कोकनस्थों का दूसरा नाम चित्तपावन ब्राह्मण भी है जिन का कुछ विवर्ण कोकनस्थ व चितपावन स्थम्भ में दिया गया है महाराजा पेशवा जिन्हों ने दक्षिण में ब्राह्मणों का राज्य स्थापित किया वे भी कोकनस्थ ब्राह्मण थे । इस ही समुदाय के तीन भेद हैं:-

१ पटवर्धन २ गोखले और ३ रास्त्या

इन सब प्रत्येक का विवर्ण अपने अपने अक्षर वर्ग की जाति के साथ लिखा गया है तहां देख लेना ।

२१६ पत्तरा:—यह दक्षिणस्थ मलाबार प्रदेश में विदेशी ब्राह्मण जाति का नाम है दूर दूर से आकर रहे हुये ब्राह्मणों को मलाबारी ब्राह्मण पत्तरा ब्राह्मण कहते हैं और उन के साथ खान पानादि व्यवहारों से घृणा करते हैं ।

२१७ पतित:—यह ब्राह्मणों की एक जाति है इस नाम वाले बंगाल में विशेष हैं वहां शूद्रों के यहां का दान प्रतिग्रह लेने वालों को तथा शास्त्र वर्जित अभक्ष्यपदार्थों के खाने वालों को व संस्कार

विहीन को तथा ईसाई मुसल्मानादि विधर्मियों के यहां का भोजनादि करने वालों को पतित ब्राह्मण कहते हैं।

२१८ पलशीकरः—यह एक ब्राह्मण जाति का नाम है दक्षिण में यह नाम उन ब्राह्मणों को दिया जाता है जिन की निन्दा कुछ करना हो अर्थात् यह नाम निन्दाबोधक है महाराष्ट्र ब्राह्मणों ने कोकनस्थ समुदायान्तर्गत वाजसनेही ब्राह्मणों के साथ द्वेष भाव रखते हुये इन्हें Nick-Name चिड़ाने के अभिप्राय से पलशीकर कहा था. यथार्थ में येही प्रचलित रूप से पलाशे भी कहाते हैं अतः इन का विस्तृत विवर्ण पलाशे प्रकरणानुसार जानना।

२१९ पलाशे :—यह महाराष्ट्र ब्राह्मण समुदाय में से एक ब्राह्मण जाति है इस जाति के विषय नाना प्रकार के मत व भिन्न भिन्न सम्मतियें प्राप्त हुई हैं जिन के आधार से कुछ लोग इस जाति को ब्राह्मण वर्ण में व कुछ लोग इन्हें शूद्र वर्ण में मान्ते हैं इनके ब्राह्मणत्व विषय में यह कहना सर्वोपरि मान्य होगा कि ईस्ट इन्डिया कम्पनी के समय दक्षिण में जब पेशवा का राज्य था तब इस जाति के वर्णत्व विषय पर विवाद चला था तिस की पुष्टि में इन लोगों ने पेशवा की गवर्नमेन्ट से व्यवस्था रूपी ताम्रपत्र प्राप्त कर लिया था उस की असली नक़ल प्राप्त होने पर सप्तखंडी ग्रन्थ में देंगे। इन को वहां ताम्रपटी तथा वाजस्नेही ब्राह्मण भी कहते हैं।

ताम्र पत्र

महानुभवी जाति विषयक विद्वान प्रोफेसर मिस्टर विल्सन ने अपने ग्रन्थ में इस जाति को महाराष्ट्र ब्राह्मणों की सूची में आठवें स्थान पर इन्हें ब्राह्मण माना है इनके विषय में ज्यो० मि० के रचयिता शास्त्री जी ने अपने ग्रन्थ के पृष्ठ ५३९ में इस जाति को ब्राह्मण वर्ण में मानी है अर्थात् ये शुक्ल यजुर्वेदीय ब्राह्मण हैं कोकनस्थ चित्तपावन ब्राह्मणों में से हैं परन्तु परस्पर के कलह से लोगों ने इन का नाम "पलशे" व पलशेकर रख दिया शालिवाहन शाके १२२० के लगभग में गोदावरी के तट पर प्रतिष्ठानपुर उर्फ मुंगीपट्टन नामक एक नगर

था तहां का राजा बिम्ब नामक था उन के गुरू रघुनाथ का बेटा पुरुपोत्तम काचले थे उस को अपने राज्य भर की वृत्ती राजा ने दियी थी तिस से इन रघुनाथ पुरुषोत्तम के अन्य कुटुम्बी जन व स्वजाति बंधुवर्ग भी वहां आ बसे थे कुछ काल उपरान्त राजा बिंब का देहान्त हो गया और वहां म्लेच्छो का राज्य हो गया तत्पश्चात म्लेछोंका राज्य भी नष्ट होकर पेशवे ब्राह्मणों का राज्याधिकार हुआ जो चितपावन ब्राह्मण थे उन्होंने अपनी पंक्ति में भोजन करने के लिये महाराष्ट्र ब्राह्मणों को आग्रह किया तब :-

तथाचित्पावनानांच विरोधः सुमहानभूत् ।
एवं बहुतिथे काले बत्सापुर समीपतः ॥ १० ॥

अर्थात् उपरोक्त पुरुषोत्तम भट्ट के सम्बन्धीगणों व चितपावन कराड़े ब्राह्मणों में बड़ा विरोध हुआ वत्सापुर प्रसिद्ध नाम बसइ के समीप पलशीवन कुष्ट करके गांव में एक तुकंभट्ट अग्निहोत्री ब्राह्मण रहते थे, शालिवाहन शके १८६८ के साल में चितपावन कराड़े आदि देश में रहने थे उन्होंने प्राचीन द्वेष के कारण तुकंभट्ट के अग्निहोत्र में भंग किया तब तुकंभट्ट ने अपने सम्पूर्ण समूह को साथ लेकर सतारे के राजा को अपना दुःख सुनाया तब राजा ने उन का निर्णय करके तुकंभट्ट का अग्निहोत्र फिर चलवाया तब इस द्वेष से लोग इन तुकंभट्ट के अनुयायी चतुर्वेदी ब्राह्मणों को पलशे कहने लगे अर्थात् पलशीके रहनेवाले परन्तु द्वेषियों ने "कर" शब्द और लगाकर इन्हें पलशीकर कहा तिस ही का अपभ्रंश पलशे व पलाशे ब्राह्मण नाम हुआ अतः हमारी सम्मति में भी ये निस्सन्देह महाराष्ट्र ब्राह्मण हैं ।

परन्तु परस्पर का द्वेष व रुपैये में सब कुछ शक्ति होती है अतएव इस जाति के विरुद्ध भी ऐसा लेख मिलता है पं० पांडोबा गोपाल जी अपनी पुस्तक जा० भे० वि० सार के पृष्ठ ७१ में इस जाति का विवर्ण लिखते हुये ऐसा लिखते हैं:-"कि इन की उत्पत्ति बहुत ही आधुनिक है इन की बसाहत साष्टी, बसई, माहिम तथा मुम्बई आदि स्थानों में है" मर्फी साहब ने एक ग्रन्थ लिखा है जिस में इस जाति की उत्पत्ति

चिंवराजा द्वारा लिखी है कि "पलशे जोषी अपने को ब्राह्मण कहते हैं परन्तु ब्राह्मण लोग अपने बराबर इनके साथ अन्न व्यवहार नहीं करते हैं और न इन का ब्राह्मणत्व ही स्वीकार करते हैं परन्तु बहुकाल से ये लोग मुम्बई में ब्राह्मण कहाते हैं क्योंकि रघुनाथ जोशी के पास सरकार का पत्र है कि ये ब्राह्मण हैं और कितनेक प्रभु जाति के लोगों के ये उपाध्याय भी हैं" पुनः और भी लिखा है कि बिंवराजा शूद्र थे जिन्हों ने राज्याधिकार प्राप्त करके माहिम को राजधानी किया तिस के वंशजों ने अपने तीन भाग करलिये थे जिन में से प्रथम शिक्षित समुदाय ब्राह्मण कहाया वे ही पलशे ब्राह्मणों के पूर्वज हैं, उन में भी जो शूरता वीरता बल में पराक्रमी थे वे क्षत्रिय कहाये और अपने को परभू कहने कहाने लगे और उन में तीसरे जो ग़रीब व चाकरी करनेवाला समुदाय था वे माली सुनार आदि कहाये इनके विषय में माहिम की एक शिला पर संस्कृत लेख है।

"इन की उत्पत्ति विषय ऐसी दन्त कथा है कि वसई प्रान्त में एक नाशिक ब्राह्मण पलशी नाम गांव में रहता था पर वह स्त्री विहीन था अतः उसने एक शूद्रा स्त्री को रखली तिस से एक पुत्र उत्पन्न हुआ तिस को उस ब्राह्मण ने वेद विद्या व अन्य ब्रह्मकर्म में निपुण किया उस की सन्तान पलशे कहायी"।

इन्हीं के विषय वेही महाराष्ट्र विद्वान लिखते हैं कि :—

कैवर्तकस्य भिल्लस्य पिता भवति योनरः।
माताया गोलकानारी पालाश ज्ञातिरुच्यते॥

अर्थात् गोलक जाति की माता तथा भील जाति के पिता द्वारा जो सन्तान हुयी वह पालाश जाति कहायी ग्रन्थ कारने स्कन्द पुराण अध्वारण्य का हवाला भी दिया है पर हमें इस की सत्यता में सन्देह ही है।

मुम्बई में १३३ वर्ष पहिले परभू लोग व इन पलशे ब्राह्मणों में उपाध्याय गीरी व यजमान पने के सम्बन्ध में यह विवाद पड़ा था कि पलशे लोग स्कंद पुराण सह्याद्रि खंड के आधारानुसार यह प्रतिपादन

करते थे कि हम प्रभुलोगों के उपाध्याय व हमारे यजमान हैं क्योंकि ग्रन्थों में जहां प्रभुलोगों की उत्पत्ति लिखी है तहां उस ही ग्रन्थ में यह भी लिखा है कि यजुर्वेद वाजसनेई शाखा के पलशे ब्राह्मण पर. भुवों के उपाध्या हैं तदनुसार ये पलशे लोग अपनी उपाध्यायगीरी का हक प्रमाणित करते थे परन्तु लोग भी अनेकों ग्रन्थों के प्रमाण निकाल कर कहते थे कि पलशेही आदि से ब्राह्मण नहीं हैं और इन्हें ब्रह्म कर्म के अधिकार नहीं हैं अतः ये हमारे उपाध्याय नहीं हो सक्के इस वाद विवाद को मिटाने के लिये शृंगेरीमठ से जगद्गुरू शंकराचार्य्य तथा काशी से व्यवस्थायें मंगवायीं उनकी नकलें इस प्रकार से हैं।

———:o:———

# काशी व्यवस्था पत्रम्

॥ श्री ॥

## ॥ श्री काशी विश्वेश्वरो जयति ॥

स्वस्ति श्रीमत्सांब पादार विंद भजनैकनिष्ठ राजमान विराजित राजेश्री राघोवा, विठोजी, सुन्दरजी, बालाजी केशवजी मदनजी, गोविन्दजी, केशवजी, दादोजी, बालाजी, जिवबा यादवजी, रघुनाथजी, धरमाजी, बालाजी सुंदरजी, दादाजी यादवजी, बालाजी मूंगाजी, प्रभु कल्याणेच्छु सकल द्विजकृतानेक आशीर्वाद ! आदि विवर्ण मरहाटी भाषा में लिखा है इस का आद्योपान्त विवर्ण नीचे के भाषार्थ में देदिया गया है।

॥ भाषार्थ ॥

स्वस्ति श्री सांब पादार भजनैकनिष्ठ राजमान राजेश्री राघोबा विठोजी, सुन्दरजी बालाजी केशवजी मदनजी, गोविंदजी केशवजी, दादोजी बालाजी, जिवबा यादवजी, रघुनाथजी धर्माजी, बालाजी सुंदरजी, दादाजी यादवजी बालाजी मूंगाजी प्रभूवंश शिरोमणि कल्याण हो, अनेकों काशी के विद्वानों का आशिर्वाद ज्ञात हो, काशी

मध्येक्षेम जानना तथा आप के यहां क्षेम हों, विशेष आप का पत्र आश्विनशुक्ला १५ संवत् १८४४ का भेजा हुवा पोष शुक्ला १२ संवत् १८४४ को प्राप्त हुवा * तिस में लिखा था कि "आषाढ़ मास में एक पलशेने अंग्रेजों की राख चुपकेसी लेजाकर वालकेश्वर महादेव मुम्बई के मन्दिर में पूजा आदि करके राखा रखिआया जब वहां के रहनेवाले ब्राह्मणोंने देखा तो वे लोग इस पलशे से पूछने लगे कि वहां

देवालय में कौन गया था और वहां राखा कौन राखिआया ? इस के उत्तर में पलशे ने अपने प्रति स्वीकार नहीं किया तब वहां के ब्राह्मण को इस अकर्मन्यता का कोई पता नहीं चला तब मन्दिर के ताला बन्द करके गांव के मुख्य मुख्य मनुष्यों के प्रति जाकर वहांके मुखिया सेठ मनोर्दास रूपजी से सब वृत्तान्त कह सुनाया इतने ही में मुम्बई के एक शेणवी ने अपनी जाति के एक शेणवी को भेजकर उस मन्दिर के दूसरा ताला लगा दिया और उस शेणवी ने वहां के जनरल को अर्जी दियी कि वालकेश्वर हम लोगों का स्थापित किया हुवा है उसकी पूजापाठ आदि का सर्वस्व अधिकार अन्य ब्राह्मणों की अपेक्षा हमको है अतः हम लोगों को आज्ञा मिलनी चाहिये कि हमारी जाति के लोग सब मिलकर मन्दिर की शुद्धि करके सेवा पूजा करें। जनरल ने इस अर्जी को पढ़कर वहां के मुखिया सेठ मनोर्दास रूपजी को बुलाकर आज्ञा दियी कि शेणवियों की अर्जी सम्बन्ध में पंचायती द्वारा निश्चय करके जो सर्व सम्मति हो वैसी हम को लिख कर देवो, इस आज्ञा को पाकर सेठ मनोर्दास रूपजी ने पंचायती इकट्ठी करके यह प्रश्न पूंछा कि देव की पूजा सेवा शेणवी लोग कर सक्ते हैं या नहीं ? इस प्रश्न को सुनकर व अर्जी आदि का सम्पूर्ण वृत्तान्त जानकर पंचायती को बड़ा आश्चर्य हुवा कि आजतक शेणवी लोगों ने मन्दिरों में सेवा पूजा कियी ऐसा तो सुनने तक में भी नहीं आया यह एक

* आजकल की सी रेलयात्रा व डाक प्रबंध उनदिनों यहां नहींथा

नई बात अंग्रेजी राज्य के कारण से है अन्यथा ऐसा कहने पर इनकी जिव्हा निकलवा लियी जाती क्योंकि इन्हें देवालयों में जाकर सेवा पूजा करने का अधिकार नहीं है तदनुसार पंचायती की सम्मति लिखी जाकर भेजदी गयी और जनरल उसको देखकर सेवा करने का अधिकार मुख्य ब्राह्मणों को देने ही वाले थे कि इतने में ही मुम्बई के पलशे ब्राह्मणों को शेणवियों ने दमदिलासा देकर मुकदमा लड़ने को खड़े करदिये और उन्होंने जनरल को यह अर्जी दियी कि "हमलोग यजुर्वेद वाजसनेय शाखा के ब्राह्मण हैं पूजा पाठ आदि सब छोटे बड़े कर्म करने का हमें अधिकार है न कि अन्य ब्राह्मणों को, अतः जनरल ने पुनः सेठ मनोर्दास रूपजी को बुलाकर यह सब वृतान्त कहसुनाया और आज्ञा दियी कि पुनः पंचायती करके यह निश्चय करो कि इन का कहना कहांतक ठीक है तदनुसार सेठजी ने पुनः पंचायती एकत्रित कियी और दसदिन तक बराबर पंचायती होती रही जिस में वादानुवाद के साथ कोई कहता था इन्हें अधिकार है और कोई कहता था नहीं अन्त में सबने यह पास कर दिया कि "पलशे झूठे हैं इन्हें सेवा पूजा करने का अधिकार नहीं है" इस पर पलशे ब्राह्मणों ने पुनः अर्जी हाकिम को दियी कि सेठ मनोर्दासरूपजी ने बस्ती की सम्पूर्ण जाति के मनुष्यों को नहीं बुलाया किन्तु अपने २ मेल मेल के आदमियों को बुलालिया था इस पर जनरल ने पुनः आज्ञा किया कि पलशे लोग जिन जिन जाति के लोगों को बुलाना चाहते हैं उन्हें उन्हें बुलाकर उनकी जो कुछ सम्मति हो हमें लिख भेजो तदनुसार नीचे लिखी पन्द्रह जातियों के लोग वहां एकत्रित हुये यथा :—

१ नायी २ कुम्हार ३ मांची ४ लोहार ५ जिनगर ६ धोबी ७ भंडारी ८ चौकलशे ९ वाड़वल १० कोली ११ पांचकलशे १२ सोनकोली १३ कतिकुंभ १४ बुरुड़ और १५ सुतार इस प्रकार से इन पन्द्रह जातियों को सेठजी के समीप अलग२ जाति समुदायों को अलग अलग लेजाकर के सब की अलग अलग सम्मतियें लिखवादी कि ये पलशे

ब्राह्मण वरं ब्राह्मण हैं और सदैव से देवालयों में पूजन पाठ करते धरते रहते हैं इस लिए इन्हें पूजन पाठादि सब कुछ करने का अधिकार है इस के अनुसार सेठ जी ने हाकिम को लिख भेजा कि महाराष्ट्र देश में कुछ लोग इन के पूजन पाठादि के विरुद्ध भी हैं इस प्रकार से श्रावण सुदि १५ संवत् १८४४ को पलशे लोगों ने पांचकलशे आदि जातियों को जनेऊ पहिना दिया है और जनरल ने महाराष्ट्र ब्राह्मणों को पूजन करने का अधिकार दिया है"।

इस विषय का तुम्हारा पत्र हमारे पास आया तिस पर यहां के समस्त ब्राह्मणों ने दो महीने तक सभा करके निश्चय किया है कि "शेणवी लोगों को ब्रह्म कर्म करने का अधिकार नहीं है और वे ब्राह्मण भी नहीं हैं क्योंकि धर्मारन्य ग्रन्थ में लिखा है कि :-

सूर्य वंशस्य चत्रश्चपिता भवतियोनरः ॥
माताया ब्राह्मणीनारी शेणवैज्ञातिरुच्येत ॥१॥

अर्थात् सूर्यवंशी क्षत्रिय पिता और ब्राह्मणी माता द्वारा जो सन्तान पैदा हुयी वह शेणवी जाति कहाये परन्तु जब से रामचन्द्र बाबा शेणवी पेशवे महाराजा के दरबार में पहुंचे तब से ये लोग अपने को ब्राह्मण नहीं कहने कहाने लगगये हैं यथार्थ में वे ब्राह्मण नहीं हैं।

इस के पश्चात जो पलशे हैं वे अपने को यजुर्वेदी वाजसनेयी शाखा के ब्राह्मण अपने को कहते हैं ये लोग उस प्रांत में ही रहते हैं यहां तो कोई इन्हें जानता भी नहीं है ग्रन्थों में इन के विषय में कहीं पता भी नहीं चलता है परन्तु निर्णय वृहदारण्य ग्रन्थ में ऐसा लिखा है कि:-

कैवर्तकस्य भिल्लस्य पिता भवतियो नरः ।
माताया गोलकीनारी पालाश ज्ञातिरुच्यते॥

अर्थात् भील पिता व गोलक स्त्री माता द्वारा जो सन्तान पैदा हुयी वह ज्ञाति पालाश कहायी, वृहदारण्य उत्तर कांड पंचमाध्याय के आधार पर एक ऐसी कथा है कि एक भील था जिस के दो स्त्रियें थीं परन्तु पुत्र एक के भी नहीं था अतः वह भील पुत्र के अर्थ वन में जाकर तपस्या करने लगे उसे तपश्चर्या करते करते बारह वर्ष बीत

गये थे तब एक दिवस उस मार्ग से इन्द्र निकले तिन्होंने भील को तपश्चर्य्या करते देखकर उस की तपस्या में विघ्न डालने को एक गोल की स्त्री बहुत सुन्दर बनाकर रात्री में उस तपस्वी भील के सन्मुख खड़ी किर्या तिस को देखकर भील को काम उत्पन्न हुआ तदर्थ उसने उसके साथ सम्भोग किया जिस से उस के गर्भरहा तब आकाश बाणी हुर्यी कि हे भील तुम्हारी तपश्चर्य्या सम्पूर्ण नष्ट होगयी इस से तुम अब घर को जावो तब वह भयभीत होकर घर को गया पुनः उस गोलकी ने इन्द्र भगवान से प्रार्थना किर्यी तब इन्द्र ने कहा तुम्हारा शाप मुक्त हुआ तुम्हारा पुत्र पलाश होगा और वह कलियुग में वैद्यक व ज्योतिष द्वारा आजीविका करेगा तथा नीच जातियों के यहां भट्टपन करेगा ऐसा इन्द्र आशिर्वाद देके अदृश्य होगये पलशों को ब्राह्मणत्व व क्षत्रियत्व दोनों प्रकार के कर्म्मों में से कोई भी करने के अधिकार नहीं हैं मिती वैसाख सुदी १५ सम्वत १८४४ शाके १७१० कीलक नाम सम्वत्सर तदनुसार मई सन् १७८८।

## ❀ हस्ताक्षर ❀

| | | |
|---|---|---|
| चालखामी | ७ महाजन | १३ तलेकर |
| २ भट्ट | ८ गुर्जर | १४ नवांके |
| ३ शेष | ९ आयाचीत | १५ चितले |
| ४ फोने | १० ओक | १६ मोघे |
| ५ आवढे | ११ जड़े | १७ दामले |
| ६ गाडगील | १२ पंढरपुरकर | १८ टीलक |

Signed–Jonatham Duncan Resident Benares.

## भृंगी मठ के जगद् गुरू शंकराचार्य्य जी की

## ❀ व्यवस्था ❀

यह व्यवस्था भी उपरोक्त लेखानुसार ही इस जाति के विरुद्ध ही है, पर उस व्यवस्था को यहां अविकल न देकर सत्त खण्डी ग्रन्थ में देंगे।

# ॥ ग्रन्थकर्ता की सम्मति ॥

यह सब ऊपर जो कुछ लिखा गया महाराष्ट्र भाषा के जाति विवेक ग्रन्थों के लेखों का अनुवाद है इस सब के सम्बन्ध में उपरोक्त जो कुछ व्यवस्थायें व अविकल लेख का अनुवाद दिया है वह सब केवल निष्पक्षता दिखाने के अभिप्राय से है न कि प्रमाणयता के भाव से, अर्थात् ये सब व्यवस्थायें व प्रमाण हमें निम्नलिखित कारणों से अमाननीय हैं यथाः—

१ परस्पर का कलह व हम ऊंच तथा सम्पूर्ण संसार नीच।

२ "जिस की लाठी जिस की भैंस" के अनुसार पलाशे शेणवी ब्राह्मणों के अतिरिक्त महाराष्ट्रीय ब्राह्मण समुदाय की शक्ति की प्राबल्यता।

३ भेड़िया धसान की तरह एक की हां में एक की हां मिलाने से।

४ दोनों श्लोकों की घंडत व शब्द तथा श्लोकों की बनावट एक-सी होने से

५ यह सम्पूर्ण आख्यायिका बनावट व मिथ्या है।

६ यदि यह आख्यायिका सत्य भी मानली जावे तो भील को तपश्चर्या करते देख इन्द्र ने श्राप क्यों दिया? निरपराध को श्राप क्यों? जब इन्द्र ने सुन्दर गोतकी भेजी और उस की तपस्या में विघ्न डाला तो भील का क्या दोष? व निरपराधी को दण्ड क्यों? जब पलाशों के अनुकूल अन्य जातियों ने ब्राह्मत्व की सम्मतियें दियी तब उन की बात क्यों न मानी गयी?

७ धर्म्मसम्बन्धी मामलों में अदालती फैसिला कोई चीज़ नहीं क्योंकि आजकल का न्याय साक्षियों पर निर्भर है अतएव अदालतों में झूठे सच्चे, व सच्चे झूठे हजारों होते रहते हैं।

और भी अनेकों कई हेतु हैं जो सम्मुख शास्त्रार्थ में व बृहद् ग्रंथ में कहे जासक्ते हैं अतएव हम अपनी निज सम्मति में इन दोनों जातियों को शुद्ध ब्राह्मण मान्ते हुये सम्पूर्ण ब्राह्मणत्व के कर्म करने का

अधिकार देते हैं क्योंकि काशी आदि नगरी से रुपैया खर्च करके ऐसी व्यवस्था चाहिये लिखवालाइये यदि इस में सन्देह हो तो कोई पुरुष पुष्कल रुपैये लेकर हमारे पास आवे हम उसे उस के साथ जाकर व्यवस्थायें दिलवा सके हैं क्योंकि प्रायः व्यवस्था देनेवालों का ऐसा मत है कि "अर्थार्थे सम्मतिरस्ति" अर्थात् जो हमें धन मिला है उस के कारण से हमारी सम्मति है साथ ही में व्यवस्था देनेवाले विद्वान व्यवस्था लिखने में एक बड़ा कौतुक किया करते हैं अर्थात् दुतरफी बात लिख देते हैं यथा :—

## कायस्थ वर्णा न भवन्ति शूद्रा

इस का एक अर्थ तो यह है कि कायस्थों का वर्ण शूद्र नहीं है तथा इस ही का दूसरा अर्थ यह भी होता है कि "न इति निश्चयेन कायस्थ वर्णा शूद्रा भवन्ति" अर्थात् निश्चय पूर्वक कायस्थ वर्ण शूद्र वर्ण में है" अस्तु !

पाठक ! यहां तो कायस्थ जाति विषयक निर्णय नहीं है किन्तु विद्वानों की चातुर्य्यता दिखलाना मात्र अभिप्राय है। ऐसी अवस्था में पेशवा महाराज के दिये ताम्रपत्र को गौरव दृष्टि से देखकर विशेष मान्य देते हुये पलाशे व शेणवी इन दोनों जातियों को हम शुद्ध ब्राह्मण जाति होने की व्यवस्था देते हैं। क्योंकि पेशवा महाराज की गवर्नमेन्ट जिन्होंने इन्हें ब्राह्मणत्व का तांबापत्र दिया वह भी ब्राह्मण थी। अतएव ताम्रपत्र का प्रमाण सर्वोपरि है।

**२२० पालीवाल ब्राह्मण** :—यह एक ब्राह्मण जाति है. गौड़ सम्प्रदाय के अन्तर्गत इस की गणना है पूर्व काल में ये सब गौड़ ब्राह्मण ही थे, जोधपुर राज्य के प्रसिद्ध व प्राचीन नगर पाली से इन का निकास है, सदैव से ये लोग धनाढ्य होते चले आये हैं तदनुसार किसी काल में पाली धन धान्य से पूरित एक नगर था और व्यापार में बहुत बढ़ा चढ़ा था अतएव ये लोग भी व्यापार में प्रवृत्त हुये और कुछ ही काल में यह जाति भी व्यापार में चमकने लगी और यह समुदाय धन कुबेरसा बन गया तदनुसार यहां ये बोहराजी कहने कहाने लगे।

यहां तक कि बहुत से लोग अपने रुपैये को नाना क्रम से ब्याज चला कर ही जीविका करने लगे, इन में किस्त देकर १०) के १२) रुपैये लेने का धन्दा जो लोग करने लगे वे किश्तिया कहाये, जो अठवाडे की अठवाड़े ब्याज लेकर रुपैया पैसा उधार देते थे वे अठवाड़िये कहाये और आसामियों को बहौरगत करने से ये लोग वोहरे जी कहाये जाकर प्रसिद्ध हुये। पहिले ये लोग पालीवाल गौड़ कहाते थे पर अब प्रायः लोग इन्हें बहौरे ब्राह्मण कह कर भी पुकारते हैं अतः अन्य ब्राह्मण समुदायों की अपेक्षा इस जाति में संस्कृतज्ञ पंडित बहुत ही कम मिलेंगे पाली से धर्म रक्षार्थ इन का निकास दूर दूर देशों में होने से ये लोग दूर २ जाकर वहां पालीवाल ब्राह्मण कहे जाने लगे तहां जाकर भी इन में से कितने ही लोग व्यापार करने लगे तो कितने ही अपने ब्रह्मकर्म में ही प्रवृत रहे परन्तु इन में व्यापारियों की व धन धान्य पूरित समुदाय की अधिकता रही जिस से दान पुण्य लेने, व ब्राह्मणों की तरह से जीमने जूठने तथा यजमानवृत्ति द्वारा जीविका करने का इन में एक मात्र अभावसा हो गया जिस से किन्हीं किन्हीं लोगों ने हमारी जाति अन्वेषण की यात्रा में इन के ब्राह्मणत्व पर ही सन्देह प्रकट किया परन्तु यह बात निर्मूल सी है क्योंकि गरीब व भूखे ब्राह्मण ही दान पुण्य लिया करते हैं परन्तु किसी लखपति व क्रोड़पति ब्राह्मण को हम ने घर घर दान लेते व मृतक श्राद्धादि के समय में जीमते फिरते नहीं देखा है अतः इन के विषय की उपरोक्त शंका उचित नहीं जान पड़ती है श्री मनी गौड़ महासभा कुरुक्षेत्र के सन् १९१४ के आगरे वाले जलसे पर हम भी अन्तरंग सभा में विद्यमान थे तहां गौड़ व सनाढ्यों का विषय पेश होते होते "पालीवाल कौन ब्राह्मण हैं" यह प्रश्न भी आउपस्थित हुआ था" तिस विवाद के उत्तर में सभा के सन्मुख हमने यह कहा था कि "पालीवाल निस्सन्देह गौड़ ब्राह्मण हैं" और तत्काल ही हमने कुछ प्राचीन ऐतिहासिक घटनायें भी सुनादियीं थी जिस से अनेकों भाइयों की प्रेम पूर्ण दृष्टि हमारी ओर सहसा आकर्षित हो गयी थी जिस के उपलक्ष्य में सभा ने हमें जाति अनुसन्धान के निमित्त Selected Committee सेलेक्टेड कमेटी का सभासद

नियत किया था तदनुसार हम इन्हें गौड़ ब्राह्मण मान्ते हुये अपनी सम्मति की पुष्टि में कतिपय ऐतिहासिक प्रमाण भी पाठकों के अव लोकनार्थ अविकल उद्धृत करते हैं।

( १ ) " ये भी अपने को आदि गौड़ बतलाते हैं मगर पाली में बसने से इन का नाम पल्लीवाल हुवा और पाली में पूर्व की ओर से आये थे "

मा० मनुष्यगणना रिपोर्ट पृ० २२० पंक्ति १ से २ तक

अतएव सिद्ध होता है कि वे गौड़ ब्राह्मण जिन का निकास पाली से होकर भारत के भिन्न भिन्न स्थानों में हुवा वे वहां जाकर पालीवाल कहाये।

( २ ) मुंशी देवी प्रसाद जी सुपरिन्टेन्डेन्ट महकमा इतिहास राज जोधपुर से पं० के पी शर्म्मा ने पत्र द्वारा कुछ पूंछा था तिस के उत्तर में आप ने ऐसा लिखा किः-

जोधपुर ता० २६-२-१३

मान्यवर पंडित जी !

*अत्र कुशलं तत्रास्तु आदि आदि के अनन्तर आप लिखते हैं कि* " हाकिम साहब पाली ने जो जबाब लिखा कर भेजे थे वे असल मैंने १७ तारीख को आप के पास भेज दिये थे उस कागज पर वहां के पल्लीवालों के हस्ताक्षर भी हैं और आदि गौड़ लिखा है अब इस हस्ता क्षर के होते हुये पुस्तक की क्या ज़रूरत है ! इस प्रमाणिक लेख के आधारानुसार पल्लीवाल ब्राह्मण गौड़ ब्राह्मण हैं ऐसा निश्चय होता है, यह पत्र असली हम मथुरा जी में सुखसंचारक कंपनी के स्वामी के पास देख आये हैं इस आधारानुसार भी ये गौड़ ब्राह्मण हैं।

( ३ ) मारवाड़ की मनुष्यगणना के सुपरिन्टेन्डेन्ट लिखते हैं किः-

"पाली अगले वक्तों में बहुत बड़ा शहर था उस में १ लाख घर पल्लीवालों के बसते थे और सब आसूदा और दौलतमन्द थे जो कोई नया गौड़ ब्राह्मण बाहर से आता था तो उस को एक २ घर से एक २ रुपया और एक २ ईंट देते थे कि जिस में एक दम से वह भी लाख

रूपये पाकर लखपती हो जाता था और ईंटों से घर बनवा लेता था पाली में राज भी इन्हीं लोगों का था मेर और मेणे अकसर इनको सताया करते थे सम्वत् १२६८ के करीब राव सायस्थान जी राठोड़ कन्नौज से यहां आनिकले पल्लीवालों ने अपनी हिफाज़त के वास्ते उन को रखलिया कुछ दिनों पीछे गोरीशाह बादशाह की फौज पाली पर धायी और बहुत दिनों तक लड़ी जब फतह होती न देखी तो उस ने राखड़ी पूनम के दिन गायें काट कर तालाब में डाल दीं जिस का पानी शहर में जाता था पल्लीवाल यह अधर्म देख कर पाली छोड़ भागे और जो तलवारों से मारे गये उन के बदन पर से ९ मन जनेऊ उतरे थे और जो औरतें सती हुईं उन के चूड़े ८४ मन थे जो हाथी दांत के थे भागते वक्त जो पच्छम के दरवाज़े से निकले थे उन की औलाद तो मारवाड़ में खेती करती है और भूखों मरती है और जो पूरब के दरवाज़े से बादशाही फौज के साथ लड़ कर निकले थे उन की औलाद हूढार, दिल्ली और फर्रुखाबाद में बड़े २ साहूकार हैं और यह बरदान इन को इनके बड़ेरोंने दे रक्खा था कि पूरब की तरफ जाओगे तो राज करोगे और पच्छम को जाओगे तो हल जोतोगे।

पल्लीवालों ने पाली छोड़ने के पीछे यह भी तलाक लेली थी कि फिर पाली में नहीं बसेंगे इस के ६०० बरस पीछे अर्थात् जब महाराज श्री विजयसिंघजी के राज में सिंघी जो राबलमल ने पाली को फिर पहले की तरह आबाद करना और मंडी बनाना चाहा तो लोगों ने कि जिन को पास पड़ोस के गांवों से बसाने के वास्ते बुलाया था कहा कि पल्लीवाल ब्राह्मण यहां से तलाक डाल कर गये हैं सो पहिले उन को बुला कर बसावो फिर और लोग भी आकर बस जावेंगे सिंघी ने महाराजा साहब की इजाजत मंगवा कर कुछ पल्लीवालों को गांवों से बुलाया और खेती के हासिल में से आठवें हिस्से की छूट कर के पाली में बसाया और यह अख्तियार भी दिया कि "अपनी जमीन जिस को चाहें बेच देवें मगर अब पाली का रहना पल्लीवालों को नहीं फलता उन का मुहल्ला दिन २ वेरान होता जाता है"।

( मा० मनुष्यगणना रिपोर्ट पृष्ठ २२०-२२१ )

(४) Colonel Mr. James Todd रचित Annals of Rajysthan. अर्थात् कर्नल मिस्टर जेम्स टाड के इतिहास के अनुवाद श्री वेंकटेश्वर स्टीमप्रेस मुम्बई के छपे ग्रन्थ जिल्द दूसरी के पृष्ठ ५५४ में विद्यावारिधि पं० ज्वालाप्रसादजी मिश्र मुरादाबाद ऐसा लिखते हैं कि "बारहवीं शताब्दि में जिस समय सीयाजी ने कन्नौज से आकर मारवाड़ में पाली को जीता है उस ही समय से इन पालीवाल ब्राह्मणों के भाग्य का पतन हुआ है, सीयाजीने पालीवालों को तो जीत लिया किन्तु उन को एक साथ नष्ट नहीं किया जब एक मुसलमान बादशाह ने इस स्थान को जीता तब उस ने मारवाड़ के प्रत्येक रहने वालों से कर मांगा उस समय पल्लीवाल ब्राह्मणों ने कहा कि हम ब्राह्मण हैं इस लिये हम से किसी ने कर नहीं लिया और न हम किसी को कर देंगे इतना सुन बादशाह ने नाराज हो कर इन के प्रधान २ नेताओं को कैद कर लिया परन्तु इन्हों ने किसी प्रकार से भी कर नहीं दिया तब बादशाह ने इन्हें राज्य से निकाल दिया तहां से ये इधर उधर सर्वत्र फैल कर वणिक व्यवसाय में संलग्न हो गये।

(५) कर्नल टाड साहब के अंग्रेज़ी इतिहास के उर्दू अनुवादकजी ने जिल्द दूसरी के बाब दूसरे के सफा १६में इस जाति को ब्राह्मण मानी है।

(६) एक इतिहास वेत्ता विद्वान ने हमें यह भी बतलाया है कि पाली में पहिले इन्हीं का राज्य था अर्थात् वसिष्ठ गोत्र के अन्तर्गत मुद्गल अल्ल वाले पाली के राजा थे और गर्ग गोत्र वाले राज्य के मंत्री थे। उस समय इस पाली के नीचे ३०२ गांव लगते थे, परन्तु हमारी सम्मति में मुद्गल गोती गौड़ों का राज्य था जिन्हें शाह की पदवी मिली थी जैसे शाह दुर्गाप्रसाद जी रईस मालिक रियासत सेमरा ज़िला आगरा हैं।

(७) पं० हरिकृष्णजी वेंकटराम शास्त्रीने अपने ग्रन्थ ब्रा०मा०के पृष्ठ ६ में जहां ब्राह्मणों की गणना बतलायी है तहां ऐसा लिखते हैं कि:-

आभीराः पल्लीवालाश्च लेटवासाः सनोडियाः।
पाराशराः कान्यकुब्जास्तथा सोमपुरोद्भवाः॥४६॥

अर्थात् आभीर ब्राह्मण,पालीवाल ब्राह्मण. जेटवास ब्राह्मण, सनो-डियो (सनाढ्य) ब्राह्मण, पाराशर ब्राह्मण प्रसिद्ध नाम पारीख पुरोहित, कान्यकुब्ज प्रसिद्ध नाम कन्नोजिये ब्राह्मण, और सोमपुरे ब्राह्मण ये सब ब्राह्मण हैं।

(८)The Palliwal or Bohras are generally looked on as Brahmans who has fallen in status owing to having engaged in trade.

U. P. Census Report P. 220

पल्लीवाल या बोहरे लोग प्रायः ब्राह्मण हैं परन्तु व्यापार में प्रवृत्त होने से इन का पद कुछ नीचा हो गया है। अतएव इन आठों प्रमाणों के आधार से पालीवाल निस्सन्देह गौड़ ब्राह्मण हैं।

पाली विवर्ण

९ भूगोल राज मारवाड़ सन् १८९४ के छपे पुस्तक से प्रमाणित हुआ है कि मारवाड़ याने जोधपुर के राज्य में पाली एक परगना है जिस के पूर्व व पश्चिम में परगना जोधपुर दक्षिण में पर्गना जालोर और बाली, और पूर्व में सोजत है। जिस की लम्बाई चौड़ाई उत्तर दक्षिण तीस मील चौड़ाई उत्तर पश्चिम २२ मील है और इस का क्षेत्रफल ६२१ मील मुरब्बा है. यहां के दर्शनीय प्राचीन स्थानों में से सोमेश्वर महादेवजी तथा पारसनाथ जी के मन्दिर हैं जिसे नवलखा मन्दिर भी कहते हैं शहर के बाहिर तालाव बाग बगीचे और पहाड़ी पर माताजी का मन्दिर है जहां हर वर्ष मेला भरा करता है।

मिस्टर विल्सन्स की इन्डियन कास्ट जिल्द दूसरी के पृष्ठ ११९ के आधारानुसार यह लिखने में आता है कि "पाली पहिले मारवाड़देश की राजधानी थी पर फिर जब महाराज जोधाजीने पाली को नष्ट भ्रष्ट पाकर अपने नाम पर जोधपुर बसाकर जोधपुर को मारवाड़ की राजधानी बना लियी थी यह पाली नगर नसीराबाद से डीसे के सीधे रास्ते में है जो छावणी नसीराबाद से १०८ मील की दूरी

पर पूर्व दक्षिण की ओर है। जैसे आजकल भारतवर्ष के व्यापारी केन्द्र मुम्बई, कलकत्ता, कराची और मद्रास आदि समझे जाते हैं उस ही तरह पूर्वकाल में पाली मांडवी कच्छ से उत्तरीय प्रान्त तथा मालवा से वहालपुर ( भावलपुर ) और सिन्ध के देशों के लिये व्यापार का केन्द्र था जिस प्रकार से आज मुम्बई १२ लाख की आबादी का शहर माना जाता है उसही प्रकार से पाली भी था अर्थात् मारवाड़ की हिस्ट्री में लिखा है कि इस पाली नगर में एक १ लाख घर तौ केवल पल्लीवाल ब्राह्मणों के थे और वे लोग सम्पूर्ण गौड़ ब्राह्मण प्रसिद्ध व्यापारी थे। इन के यहां यह दस्तूर था कि जो कोई भी ब्राह्मण बाहिर से आता था उसे प्रत्येक घरवाले एक २ रुपैया और एक २ ईंट देते थे कि वह लाख घरों से लाख रुपैये पाकर लखपति हो जाता था और लाख ईंट पाकर हवेली बनवालेता था।

( १० ) मुन्शी देवीप्रसाद सुपरिन्टेन्डेन्ट महकमा इतिहास अपनी रिपोर्ट के पृष्ठ २२० में ऐसा लिखते हैं कि:—

"पाली में पालीवाल ब्राह्मण ही राज्य करते थे" परन्तु जब उन्हें मेर व मेणों तथा मुसलमानों के द्वारा कष्ट प्राप्त होने लगे तौ इन्हों ने ई० सन् १२६८ में राव आपस्थानजी राठौड़ को कन्नौज से आते हुये अपने यहां रोक लिया कुछ दिनों पीछे जब गौरी-शाह बादशाह की फौज पाली पर आयी और बहुत दिनों तक लड़ती रही और काटा मारी की खूब गर्मा गर्मी रही और बादशाह फतह न करसका तब श्रावण सुदी पूर्णमासी यानी रक्षाबंधन के दिन श्रावणी के यज्ञ किये जानेके पूर्व ही बादशाह ने गायें कटवाकर कूवे व तालाबों में डलवा दियी अतएव पल्लीवाल ब्राह्मणों से यह अधर्म्म देखा नहीं गया और वे वहां से भाग निकले।

इधर यह दशा उधर बादशाहने कतलेआम बोलदी सो पूर्व पश्चिम दरवाजों से जिन से जिधर भगा गया वे भाग निकले और जो

तलवार के ग्रास हुये उन्हीं के जनेऊ बादशाह ने तुलवाये तब ९ मन पक्के हुये थे। अधिकतर विचारी स्त्रियें न भगसकीं अतएव बहुत सी सती होगयीं और बहुतसी तलवार से टुकड़े २ किया गयीं उनके चूड़े तोले गये तो ८४ मन पक्के हुये थे। इन अत्याचारों के कारण से पाली के रहनेवाले गौड़ ब्राह्मण जो दूर देशों में चले गये वे वहां जाकर पालीवाल ब्राह्मण कहाये। जैसे :-

(११) The Nandwana and Palliwal Brahmins are traders, were formerly located at Nanvana and Palli. They subslquently became traders.

Wilson's Indian Castes Vol II P. 119

नन्दवाना और पल्लीवाल ब्राह्मण व्यापारी हैं जो पहिले नन्दवाना और पाली में आकर बसे थे वे ही धीरे २ व्यापारी हो गये "इस से सिद्ध होता है कि सम्पूर्ण पालीवाल लोग लेन देन का काम करते थे इसलिये किसान उन्हें बोहरा भी कहने लगे तब से यह लोग बोहरे जी भी कहे जाते हैं क्योंकि ये लोग बोहरगत करते थे।"

गुजरात में जो पल्लीवाल जा बसे वे नन्दवाना कहाये और दिल्ली आगरा और कलकत्ते में ये लोग बोहरे कहाते हैं।

(१२) Next to the Lordly Rajputs, equalling them in numbers and for surpassing them in wealth, are the Palliwals. They are Brahmins and denominated Palliwals from having been temporal proprietors of Palli and all its lands.

Tod's Rajasthan Vol II P. 318-320.

राजघराने के राजपूतों से उतर कर यदि कोई जाति धन व सम्पत्ति के कारण राज्य घराने की बरावरी करसकती है तो वह "पल्लीवाल" है क्योंकि ये लोग पाली से पालीटाना तक कुछ समय तक राज्य करचुकने के कारण "पालीवाल" कहाये हैं।

बारहवीं शताब्दी के अन्त में सेवाजी ने कन्नौज से पाली पर चढ़ाई कियी और धोखे से अपना अधिकार कर लिया परन्तु इनके अधिकार से पाली की प्रजा को धर्म्मकष्ट नहीं हुवा परन्तु मुसलमानों के हमलों से पालीवाल ब्राह्मणों को धर्म्म रक्षार्थ यत्र तत्र जाना पड़ा बीकानेर, धात, जैसलमेर और गुजरात आदि को ये लोग चलेगये।

## डाक्टर विलसन ऐसा लिखते हैं :-

( १३ ) The Palliwal are Smartas and do not use animal food. They do not drink the water of their own daughters, or any person not belonging to their own castes. They dont eat with those of their own caste, who have got isolated from them as with the Gurjars and Mewad Palliwals.

Wilson's Indian Castes Vol II P. 119.

पल्लीवाल लोग स्मार्त ब्राह्मण हैं और मांसादि अभक्ष्य पदार्थ नहीं खाते पीते हैं। वे अपनी लड़की के घर का पानी भी नहीं पीते हैं तथा अपनी जाति के अतिरिक्त अन्य जाति के यहां का भी पानी नहीं पीते हैं वे गुर्जर और मेवाड़ा पल्लीवालों के साथ भी नहीं खाते हैं।

(१४) A local tribe of Brahmans, take their title form Pali the commercial City of Marwar.

C. S. W. C. Tribes and Castes Vol IV P.-110.

भावार्थ—उन्नाव के कलेक्टर मिस्टर सी० एस० डबल्यू० सी० अपने ग्रंथ कौम और जाति जिल्द चौथी के पृष्ठ ११० में लिखते हैं कि "यह राजपूतानाप्रदेशान्तर्गत मारवाड़ की एक स्थायी ( Local ) ब्राह्मण जाति का भेद है जिन का नाम मारवाड़ के प्रसिद्ध व धनाढ्य तथा व्यवसायी शहर पाली से निकास होकर देश देशान्तरों में जाने से पड़ा है।

( १५ ) Colonel Mr James Todd's Annals of Rajasthan Part 11 Page 15 कालोनिय मिस्टर जेम्सटाड अपने राज्य स्थान इतिहास भाग दूसरे के पृष्ठ १५ में ऐसा लिखते हैं कि :—

A geat misfortune fell upon them in 1156 A.D. When Sivji, the founder of the Rathaur Dynasty and the son of king of Kananj, passed Pali, on his return from a pilgrimage to Dwarka. The Brahmans of Pali, sent a deputation to him asking for protection from the two evils which prevailed, the Minas of the Arvali range and the lions. Sivaji relieved them from both, but the opportunity to acquire land was too good to be lost, and on the festival of the Holi, he put the leading Brahmans to death and siezed Pali.

भावार्थ:-सन् ११५६ ईस्वी में पल्लीवाल ब्राह्मणों पर एक बड़ी विपत्ती पड़ी और वे अरावलि पर्वत के प्रसिद्ध मीने व चोर उचक्कों तथा सिंहादि वनैले जानवरों से सताये जाने लगे इन्हीं दिनों में कन्नौज के राठोड़ क्षत्रियवंशी महाराज जो कि पाली होकर द्वारकाजी की यात्रा को जारहे थे उन से इन ब्राह्मणोंने अपने दुखड़े का जीकर सुनाकर रक्षा की प्रार्थना कियी, महाराजने उनकी रक्षा कियी परन्तु इनकी जमीन जायदाद जो छीनी जाचुकी थी उसका प्राप्त करना कोई सुलभ बात न थी।

( १६ ) सम्पूर्ण पल्लीवाल मात्र ब्राह्मण हैं इस की पुष्टि इस लेख से होती है कि:—

A Brahman is forbidden by the Shastras to engage in trade, but in the western districts of these Provinces are found some men of a caste

called Bohra or (Palliwal) Brahman who are universally accepted as being Brahmans.

Govtt. Census Report Page 213.

ब्राह्मण को शास्त्रानुसार व्यापार नहीं करना चाहिये परन्तु पश्चिमी जिलों में बोहरे या पल्लीवाल लोग सम्पूर्ण युक्त प्रदेश में निसन्देह रूप से ब्राह्मण माने गये हैं।

यह व्यापार करने का आक्षेप वर्तमान काल की स्थिति को देखते हुये निन्दनीय नहीं है क्योंकि सम्पूर्ण प्रकार के ब्राह्मणों में अनेकों व्यापारादि करते हैं।

(१७) मिस्टर हन्टर साहब ने अपने इम्पीरियल गजेटियर जिल्द ११ वीं में भी इस जाति को ब्राह्मण मानी है।
पुनः और देखिये।

The Palliwals never marry out of their own tribe; & directly contrary to the laws of Manu the bridegroom gives a sum of money to the father of the bride. It will be deemed a curious incident in the History of superstition, that a tribe Brahmin by name, at least, should worship the bridle of a horse.

पल्लीवाल लोग अन्य ब्राह्मण समुदाय में विवाह नहीं करते हैं और मनु जी के धर्मशास्त्र के विरुद्ध पल्लीवाल लोग विवाह में लड़के वाले से रुपैया लेकर लड़की बेचते हैं" इस कुरीति के साथ ही साथ दशहरे के दिन ये लोग घोड़े की लगाम का पूजन करते हैं परन्तु सर्वत्र नहीं।

प्रायः कोई २ पल्लीवाल छोटी २ उमर की लड़कियों को दूजवर तीजवर आदि की कुछ भी परवाह न करके रुपैये के लालच से महा बूढ़े तक को व्याहते देखे गये हैं और ये लोग अपनी बोली में बेटे को डोबका (डुबानेवाला) और बेटी को तारका (तिराने

वाली ) कहते हैं यानी लड़के के विवाह में कई वर्षों की कमाई खरच होजाती है और लड़की के विवाह में चांदी बरसती है अतएव वह तारका कही जाती है।

मा. से. रिपोर्ट, पाली० द०, तथा हमारी जाति यात्रा के भ्रमण द्वारा हमें इस ब्राह्मण जाति में कई ऐसी प्रचलित कुरीतियों का पता लगा है जिन को देख देख कर लोग इन्हें ब्राह्मण मानने में सन्देह करते हैं यथा :—

( १ ) प्राचीन सिक्कों पर पाली भाषा व घोड़े की तसवीर छपी हुयी है और अनेकों ग्रन्थकारों ने इस जाति में घोड़े की लगाम का पूजन किया जाना प्रचलित लिखा है मिस्टर कर्नल टाड के मत से पाली लोग गाय बकरी चराते व घोड़े पाला करते थे।

( २ ) इनमें लड़कियों का रुपया लिया जाता है और रुपये के लोभ से ये लोग अपनी छोटी २ लड़कियों को बड़े २ वृद्धे व दूजवर तीजवर तक को व्याह देते हैं परन्तु यह कुरीति अब उठती जाती है।

( ३ ) इन में अनेकों लड़के रुपये के अभाव से आजन्म कुंवारे रहकर मरजाते हैं और मारवाड़ी भाषा में ये वांढे कहाते हैं क्योंकि न इनके पास हजारों रुपये हों और न ये व्याहे जांय।

( ४ ) इन में पदमसिंह भूमिया जो एक मृत क्षत्रिय थे, तथा खेत्रपाल का रामदेव पाबूजी व गुप्त पंथ माताजी के की भी पूजा होती है।

[ ५ ] पं० भोजराजने अपने ग्रन्थ में लिखा है कि इस जाति में वाममार्ग की कई घृणित दशायें व रीतियें प्रचलित हैं।

[ ६ ] सदैव से ये लोग वैश्यकर्म भी करते आये हैं ऐसे प्रमाण हमें बहुत मिले हैं पर एक भी प्रमाण ऐसा न मिला कि इनमें ब्रह्म-कर्म्म की न्यूनता हो अर्थात् आजीविकार्थ वैश्यवृत्ति करते हैं।

[ ७ ] इन के यहां दूल्हा को प्रत्येक नेग में १) से अधिक नहीं दिया जाता है अतएव लोगोंने इनमें कृपणता दोष बतलाते हुये कहा है कि जिस जाति में कन्या के रुपये लेने की प्रथा है वे दूल्हा को अधिक क्यों देने लगे।

[ ८ ] लोगोंने यह भी कहा है कि इन कुप्रथावों का प्रचलित होना इनमें विशेष रूप से है, हां कोई २ नवशिक्षित सज्जन उपरोक्त बातों से बचे हुये भी हैं।

इन उपरोक्त कुप्रथावों में से कोई २ का इस जाति में आजाना मारवाड़ी वैश्य समुदाय के सत्संग का फल बताया गया है परन्तु यदि यह सत्य हो तो मारवाड़ियों की सी उदारता भी इनमें होनी चाहिये पर उदारता की अपेक्षा कृपणता के चिन्ह लोगों ने विशेष बतलाये हैं। व अपने अपने ग्रन्थों में लिखे भी हैं। पं० भोजराज के लेखानुसार हमें भी लोगोंने इन में वाममार्ग की शाखा का होना बतलाया है इस जाति में छिपकर वाममार्ग के कई घृणित कार्य्य होते हैं उनको लिखना अयोग्य समझकर नहीं लिखते हैं। परन्तु युक्त प्रदेश में ये लोग ऐसा नहीं करते हैं।

Mr. R. Burn I. C. S. मिस्टर आरबर्न आई. सी. एस. ने अपनी रिपोर्ट में इस जाति को उच्च ब्राह्मणों में न लिखी, नीच ब्राह्मणों में भी नहीं लिखी बरन ब्राह्मणों में आमिली हुयी जातियों की श्रेणी में दूसर आदि जातियों के साथ में ५२ जिला कमैटियों का लोक मत संग्रह करके लिखी है।

पाठक! निष्पक्षभाव से व ऐतिहासिक दृष्टि से सूक्ष्म सा विवर्ण श्रीमती गौड़ महासभा तथा मंडल के निर्णयार्थ सेवा में भेट है। उप-

रोक्त सम्पूर्ण कुरीतियें प्राय: गांवड़िये मूर्ख पल्लीवालों में पायी जाती हैं किन्तु शहरों के सुशिक्षित पल्लीवाल समुदाय में इनका अभाव है। तथा पल्लीवाल महासभा अलीगढ़ ऐसी कुरीतियों के नष्ट करने करवाने के उद्योग में लगी हुयी है। अत: सुधार हो इस ही भाव से हमने भी यहां लिख दियी हैं।

Paliwal Gaur Vansh Mukutmani, Rai Bahadur Shah Mohanlall Sharma, Tallukedar Semra ( Agra ).

पालीवाल गौड़ वंश मुकुटमणि स्वर्गवासी रायबहादुर शाह मोहनलालजी शर्म्मा, ताल्लुकेदार सेमरा ( आगरा. )

लक्ष्मी आर्ट, भायखळा, मुंबई.

स्वर्गगामी

# श्री. रायबहादुरशाह मोहनलाल शर्मा

## ताल्लुकेदार सेमरा ज़िला आगरा

पाठक ! सन्मुख चित्र में जिन महापुरुष के आप को दर्शन होरहे हैं ये आदि गौड़ ब्राह्मण वंश भूषण रायबहादुर स्वर्गवासी शाह मोहन लाल जी शर्म्मा रईस सेमरा ज़िला आगरा हैं. आप पालीवाल गौड़ सम्प्रदाय में एक योग्य सज्जन थे, ऐतिहासिक विद्वानों का ऐसा मत है कि किसी समय पाली के राज्याधिकारी आप ही के पूर्वज थे इस ही लिये आप के ही कुल को शाह पदवी मिली थी, पाली में बादशाही अत्याचारों* की भरमार होती रहने से आप के पुरुषा पाली छोड़कर बीकानेर राज्य में जा बसे थे, श्रीमहाराज बीकानेर ने आपके पुरुषावों को स्वागत करते हुये भज्जू नामक ग्राम प्रदान किया था. यह ग्राम बीकानेर से १२ कोस व पलोना स्टेशन से सात कोस की दूरी पर बसा हुआ है तहां से आप के बुज़ुर्ग शाह टेकचन्द जी आगरा प्रान्त में आये और तब ही से इस रियासत सेमरा ज़िला आगरा की नीव जमी इन्हीं टेकचन्द जी की चौथी पीढ़ी में शाह तुलसीरामदास जी थे उन्हीं के पुत्र उपरोक्त चित्र लिखित शाह मोहनलाल जी शर्म्मा हैं आप का शुभ जन्म मिती भाद्रपद शुक्ला २ बुधवार विक्रम सम्वत १८८६ को हुआ था। उपरोक्त ग्राम भज्जू में अबतक आप के व आप के आत्पूर्वजों के यज्ञस्थम्भ व हवेलियें विराजमान हैं शाह टेकचंद की वंश वृद्धि विशेष होने व भज्जू ग्राम की आमद यथेष्ट न होने के कारण आप आगरा प्रान्त में आये और यहां ज़िमीदारी प्राप्त कर के व्यापार व लेनदेन की मुख्य कोठी खैरागढ़ ज़िला मैनपुरी में नियत कियी।

---

* इसही ग्रन्थ के पृष्ठ २३६ से २४६ तक में अत्याचारों का विवर्ण लिख आये हैं।

आप के जीवन काल में वैसे तो अनेकों घटनायें व असाधारण आपत्तियें आती जाती रहती ही थीं तथापि एक समय आप अपने पिताजी के साथ अपने ग्राम भन्जू को गये थे तहां इन्हें एक भयंकर सर्प ने काटा था परन्तु उस ही समय एक महात्मा ने उन्हें एक यंत्र दिया था जिससे सर्प का विष छूमंतर होगया था, अतः वे इस यंत्र को सदैव अपने शरीर में बंधा रक्खा करते थे. परन्तु महान आश्चर्य्य के साथ कहना पड़ता है कि एक समय वह यंत्र किसी तरह शरीर से अलग होगया तो तत्काल एक वृण उन के निकला जिस से उन्हें यह शरीर सदा के लिये त्याग देना पड़ा।

आश्चर्योत्पादक घटना

शाह मोहनलाल जी शर्म्मा जैसे धर्मज्ञ व देशभक्त थे वैसे ही राजभक्त भी थे आपने सन १८५७ के गदर में सरकार हिन्द की बड़ी सहायता कियी थी अतएव आप की सरकार में बड़ी प्रतिष्ठा व आदर था तदनुसार सन १८८७ में आपको बृटिश गवर्नमेन्ट से रायबहादुरी की सनद मिली थी यथाः—

राज भक्ति परिचय

To

Sah Mohan Lall of Semra, Aagra District.

I hereby Confer upon you the title of Rai-Bahadur as a personal distinction.

(Sd.) DUFFERIN.

VICEROY & GOVERNOR GENERAL OF INDIA.

Fort William
The 16th. February
1887.

॥ भाषार्थ ॥

श्रीमान् शाह मोहनलाल जी सेमरा ज़िला आगरा।

मैं आप को आप की प्रतिष्ठा की सूचना में रायबहादुरी की पदवी प्रदान करता हूं।

## हस्ताक्षर :- डफरिन

फोर्ट विलियम
ताः १६ फर्वरी
सन १८८७६० } भारत वर्ष के वाइसराय और
गवर्नर जेनरेल ।

इसके के दस वर्ष बाद यानी सन १८६७ में पुनः आपको सरकार की ओर से एक प्रतिष्ठा पत्र मिला यद्यपि प्रायः यह देखा जाता है कि लोकल बोर्ड व म्युनिसिपिलिटियों के चेअरमैन (प्रधान) का पद हिन्दुस्तानियों को बहुत कम मिलता है परन्तु सरकार ने आप को विश्वास पात्र एक योग्य व्यक्ति जानकर एतमादपुर के लोकल बोर्ड के चेअरमैन Chairman का पद भी प्रदान किया था जिस कार्य्य को दस वर्ष तक आप बहुत अच्छे प्रकार से करते रहे जिस के उपलक्ष में युक्त प्रदेश की गवर्नमेन्ट की ओर से आप को यह प्रशंसा पत्र मिला था :—

By the Command of His Excellency the Viceroy and Governor General in Council this Certificate is Presented is the name of Her most Gracious Magisty Queen Victoria Empress of India.

To

Rai Mohan Lall Bahadur of Semra,
Son of Sukh Ram of the Agra District.

In recognition of his Services as Chairman of Itmadpur Local Board.

Sd. A. P. MAC DONNELL
Lieutnat. Governor

June 21th. }
1897 }

नोट—भावार्थ ऊपर दिया जा चुका है। जैसा कि हम पूर्व लिख

**सरकारी उच्च पद प्राप्ति**

आये हैं सरकार की ओर से केवल एतमादपुर लोकल बोर्ड के चेअरमैन ही नहीं किये गये किन्तु मेम्बर डिस्ट्रिक्ट बोर्ड व महकमा जराअत तथा ट्रस्टी आगरा कालेज के भी बनाये जाकर सन्मानित किये गये थे।

**विद्यानुराग**

आपके इन सब गुणों के अतिरिक्त विद्यानुराग आप का बहुत ही प्रशंसनीय था अर्थात् अपनी रियासत खास सेमरा में ३१३७) रुपये लगा कर स्कूल के लिये एक मकान बना कर सर्कार के अर्पण कर दिया था कि जिस में स्कूल खोली जाकर सर्व

**उदारता**

साधारण को लाभ पहुंचे। इस ही तरह उदारता के भावों की भी आप में न्यूनता नहीं थी।

अर्थात् परोपकार व विद्या सम्बन्धी दानों की सूची में भी आप एक अच्छे परिमाण के साथ धन दिया करते थे मनुष्य व पशुओं के लिए प्याऊ लगवाना व गरीबों की कन्याओं के विवाह में सहायता करना तो मानो उन की स्वाभाविकी वृत्ति थी अन्य राजा व महाराजाओं की तरह से दुर्भिक्ष में आप अपनी प्रजा का पालन किया करते थे अर्थात् अकाल के समय अपनी रियासत के इलाके हाजीपुर खेड़ा में पुरानेगढ़ का जीर्णोद्धार करा कर उसे अपने नाम पर "मोहनगढ़" प्रसिद्ध किया काश्तकारों को बिना सूद रुपया दिया, कूप और तलाब

**प्रजा पालन**

खुदवाए तथा गरीब असमर्थों को वैसे ही सहायता देते रहते थे। आप की प्रशंसा में हम विशेष क्या कहें क्योंकि काल की गति बड़ी विकराल होती है तदनुसार मिती पौष कृष्णा ९ विक्रम संवत् १९५७ को ५८ वर्ष की अवस्था में इस असार

**अन्त समय**

संसार को छोड़ कर सदा के लिये आप अपनी रियासत का भार अपने इकलौते पुत्र श्रीमान् शाह दुर्गाप्रसाद जी पर छोड़ कर इस लोक से चल बसे॥ ओं शम्॥

---

Paliwal Gaur Vansh Bhushan Shah Durga Prasad, Tallukedar Semra ( Agra ).

पालीवाल गौड़ वंश भूषण श्रीमान् शाह दुर्गाप्रसादजी रईस, ताल्लुकेदार सेमरा (आगरा.)

लक्ष्मी आर्ट, भायखळा, मुंबई.

# श्री. शाह दुर्गाप्रसादजी शर्मा

## ( गौड़ )

# ताल्लुकेदार सेमरा ज़िला आगरा

पाठक ! सन्मुख जिस चित्र को आप देख रहे हैं वह स्वर्ग वासी राय साहब शाह मोहन लाल जी के सुपुत्र राय बहादुर शाह दुर्गाप्रसाद जी शर्म्मा रईस सेमरा जिला आगरे का है। आप का शुभ जन्म खास रियासत सेमरे में आश्विन शुक्ला १३ विक्रमीय संवत् १६५२ व विवाह संवत् १९५६ ग्राम ऊंथरा ज़िला एटा में हुआ, इन दोनों कार्य्य के उत्सवों को आप के पिता जी ने बड़े उत्साह व समारोह के साथ किये थे कि जिन में राजा, नव्वाब व रईस मित्र आदिकों के अतिरिक्त बड़े २ उच्च Government Officer सरकारी हाकिम हुक्काम भी सम्मिलित हुए थे, इन के योग्य पिता जी जहां इन का लालन विशेष करते थे तहां वे इन की शिक्षा व शारीरिक दशा सुधार ने का भी बहुत ही ध्यान रखते थे, तदनुसार आप को हिन्दी उर्दू व संस्कृत पढ़ाने के साथ साथ समयानुकूल राज्य भाषा सिखाने का भी समुचित प्रबंध था इस के अतिरिक्त स्वास्थ्य रक्षार्थ आप के लिये नैत्तिक व्यायाम व घोड़े की सवारी का भी समुचित प्रबंध था जिस में भी उत्तमता यह थी कि कि आप के पिता जी अनेकों कर्मचारियों के होते हुए भी इन की देख भाल स्वयं करते थे। और समय पर रियासत की मुख्य मुख्य बातें व स्वधर्म विषयक उपदेश देते रहते थे यही कारण है कि आप की अल्पावस्था ही में पूज्य पिता जी के स्वर्गवास का क्लेश व रियासत का भार एक साथ पड़ जाने पर भी आप अपने कार्य्यों को इस योग्यता से चला रहे हैं कि लोग इन के पिता जी की जुदाई के दुःख को सहसा भूल गए। आप बड़े ही शील स्वभाव व सादगी पसंद हैं आप को मिथ्या खुशामद व चापलूसी सर्वथा प्रिय नहीं। अपने प्रत्येक कार्य्यों को आप समय की नियम बद्धता के साथ पूर्ण करते हैं आप की स्मरण शक्ति को देख कर प्रायः लोग आश्चर्य किया करते हैं।

यही कारण है कि आगरे की सरकार व प्रजा दोनों ने आप को सार्वहित कार्मों में भाग लेने के लिये चुना है अर्थात् आप Trustee Agra College ट्रस्टी आगरा कालेज व रियासत धर्मपत्नी साह बल्देव सहाय मुज़फ्फर नगर के हैं, सरकार की ओर से आप Spe-

cial Magistrate स्पेशल मजिस्ट्रेट व मेम्बर Advisory Court of Words. अड्वाईज़री कोर्ट आफ़ वार्ड्स, मेम्बर डिस्ट्रिक्ट बोर्ड District Board, मेम्बर कमेटी सत्र तहसील व महकमा जराअत व अंजुमन जमींदारान् तथा ब्राह्मण स्कूल आगरा और उप सभापति श्री मती पाली वाल ब्राह्मण महा सभा अलीगढ़ तथा निरीक्षण कर्ता Central Jail सेन्ट्रल जेल आगरे के आप ही हैं इन सब को करते हुए आप को अपनी रियासत का काम भी देखना पड़ता है, अतएव निस्सन्देह रूप से आप एक सुप्रबन्धक कहे जासक्ते हैं।

अन्य २ रईस व जागीरदारों की तरह आलसी प्रमादी न बन कर नित्य स्नान संध्या अग्निहोत्रादि नैत्तिक कर्म करते रहते हैं। तथा सर्व साधारण के लाभार्थ आपने स्वव्यय से पुस्तकालय खोल रक्खा है जहां अनेकों समाचारपत्र आते रहते हैं। आप के १ राजभक्त २ देश हितैषी व ३ परोपकारी होने के उदाहरण में इतना ही लिखना उचित होगा कि आप ने श्रीमती राजराजेश्वरी श्री १०८ महारानी विक्टोरिया व श्रीमान् राजराजेश्वर महाराज सप्तम एडवर्ड महोदय की स्मारक में बहुप्रमाण चन्दा दिया व श्रीमान् राजराजेश्वर पञ्चम जार्ज महोदय के राज्याभिषेक के आनन्द में आप ने चन्दा के अतिरिक्त कुल तहसील के मदर्सों के कई लक्षविद्यार्थी व कन्याओं को एक २ टोपी एक २ रूमाल व ढाई ढाई पाव मिठाई दी थी, इस के अतिरिक्त इस ही के उत्सव में अनाथों को भोजन व ५०० कम्बल प्रदान किये थे यह ही नहीं किन्तु आप ने अपने गरीब किसानों पर से लगान आदि २००००) बीस हजार रुपैये माफ़ कर दिये इस के सम्बन्ध में मिस्टर C. E. D. Peters I. C. S. Collector सी. ई. डी. पीटर्स आई. सी. एस. कलेक्टर आगरा ने अपने पत्र नं० ४४३६ सन् १९११ ईस्वी के अनुसार कमिश्नर साहब को इस लगान माफी की सूचना भेजी है। अतएव इस के उपलक्ष में हमारी बृटिश सरकार ने आप को लिखित धन्यवाद दे दहली दरबार के पद से विभूषित किया। और सरकार की ओर से M. Dekors Collector Agra मिस्टर डेकर्स कलक्टर आगरा ने अपने पत्र नं० ४०७६ तदनुसार तारीख १५ जुलाई सन् १९११ के अनुसार आप का धन्यवाद किया इस के अतिरिक्त वाइसराय हिन्द महोदय को दिल्ली के अत्याचार से सकुशल होने पर उपरोक्त विद्यार्थियों को पूर्व लिखित मिठाई आदि पुनः वितरण कीगई।

एवं जब कभी सरकार की सेवा व चन्दा का समय होता है तो आप कभी पीछे रहने की चेष्टा न कर के सदैव हार्दिक प्रेम से कार्य

करने को उद्यत रहते हैं जिस की सराहना बहुत से आफीसरों ने स्व-हस्त लिखित सर्टिफिकेटों द्वारा की है। उन सरकारी सर्टिफिकेटों में से मिस्टर टी. सी. एडवर्ड कलेक्टर आगरा, मिस्टर डबल्यु, एच कॉब, मिस्टर जे डबल्यु होल कमिश्नर आगरा, मिस्टर एच. एच. आर हापकिन्सन मजिस्ट्रेट व कलक्टर आगरा, आदि आदि अफसरों के सर्टिफिकेट बहुत ही गौरवास्पद हैं इन के अतिरिक्त जनाब लेफ्टि-नेन्ट बहादुर, मिस्टर वाहटर लारेन्स प्रिन्स आफ वेल्स कैम्प इन्डिया, मिस्टर डी. डबल्यु सी कलेक्टर आगरा के प्रशंसा पत्र तो बहुत ही अ-धिक मान्य दृष्टि के योग्य हैं। अभी वर्तमान जर्मन युद्ध सम्बन्ध में बृटिश सरकार के घायलों के रक्षार्थ श्रीमान् शाह दुर्गाप्रसाद जी ने १६००) सोलह सौ रुपैये प्रदान किये आप के ऐसे ऐसे सद्गुणों से बृटिश गवर्नमेन्ट कितनी खुश है? यह लिखते नहीं बन आता है।

आप के पिता जी के सदृश आप में दयालुता का गुण तो बड़ा ही

दयालुता

प्रबल व शिक्षाप्रद है अर्थात् एक तुलाराम नामक ब्राह्मण पर आप की २१००) की डिग्री थी अतः उस ब्राह्मण का मकान नीलाम किया जाने लगा परन्तु उस ब्राह्मण ने सत्यता पूर्वक अपने दुखड़े का बीजक आप के सामहने खोला जिस से आप को दया आयी और उन्होंने वह डिग्री उस ब्राह्मण को छोड़ दियी। इस ही प्रकार पं॰ वासुदेव शर्म्मा को दुखित देखकर तुरन्तु उन की स्त्री के लिये आजन्म ५०) वार्षिक निर्वाहार्थ व प्रत्येक कन्या के विवाहार्थ २००) दिये जाने का प्रतिज्ञापत्र स्वहस्त लिखित मय मोहर रियासत की कर के दे दिया। सरकार को शफाखाने के लिये भूमि मुफ्त देकर वार्षिक चन्दा भी नियत कर दिया।

आगरे ज़िले में आप की दानशक्ति को देखकर प्रायः लोग आश्चर्य

दानशीलता

करते रहते हैं अर्थात् हिन्दू विश्व विद्यालय के डिपुटेशन को ५५००) अपनी ओर से तथा ७०००) अपने कुटुम्बी जनों से एकत्रित करा दिया। पालीवाल ब्राह्मण महा-सभा अलीगढ़ में कालेज बनने का प्रस्ताव उपस्थित होने पर १०००) नक़द तथा ५००) वार्षिक देने का वचन आप ने ही दिया था।

इस ही महासभा के वार्षिकोत्सव के सम्पूर्ण व्यय का भार अपने ऊपर लेने के अतिरिक्त कई सौ स्वजाति महानुभावों के भोजन, स्थान और सवारी आदि के प्रबंध का भार भी तीन दिवस लेनेवाले ब्रह्मवंश रत्न आप ही थे। इस समय युक्तप्रदेश के माननीय छोटेलाट भी आगरे ही में उपस्थित थे अतः सभा ने उन्हें उत्सव में सम्मिलित होने

की प्रार्थना की थी परन्तु लाट महोदय ने उस प्रार्थना पत्र को किसी आवश्यकीय कार्य्यवश अस्वीकार किया परन्तु स्वजातीय सज्जनों का उत्साह देखकर स्वजाति सेवा व राजभक्ति प्रकट करते हुये आप स्वयं श्रीमान् लाट महोदय से जाकर मिले जिस से लाट महोदय मोटर में आप को अपने साथ ले सभा में आप की कोठी पर पधारे और लाट साहब ने अपने श्री मुख से सभा में कहा :--

"पण्डित साहिबो ! मुझे खेद है कि मैंने कारण वश अपने शरीक न हो सकने के लिये मने की सूचना दे दियी थी परन्तु अब राव साहब ( शाह दुर्गा प्रसाद जी ) के कथनानुसार मैं सानन्द यहां सम्मिलित हुआ हूं"

इस के पश्चात् (१०००) अपने पास से व ८००) उपस्थित सज्जनों से बेलजियम के दीन दुखियों की सहायतार्थ प्रदान करने वाले भी आप ही थे अतएव ऐसे गौड़ ब्राह्मण वंश दिवाकर के लिये हम भगवान से प्रार्थी हैं कि आप सदैव सुख सौख्य और परमानन्द में बने रहें जिस से देश का कल्याण हो ! ओ३म् शम् !!

भगवन् ! हमारे कार्य्य से आप को अनुभव हो चुका है कि मराङल ने कितना भारी काम अपने ऊपर लिया है ? जातियों का इतिहास लिखने में शब्द शब्द व अक्षर अक्षर पर रुकना पड़ता है क्योंकि प्रत्येक जातियें अपने तईं ऊंचा बनने के उद्योग में हैं अतः ऐसी दशा में उन के विरुद्ध पक्ष को लिखना कितना कष्ट साध्य है कुछ कहते नहीं बनता है तथापि सत्य का हनन न कर के हमने सब कुछ लिख दिया है ऐसे महान कार्य्य के लिये किन २ साधन व क्या क्या सामग्रियें होनी चाहियें उन सबकी प्राप्ति एक मात्र आप सरीखे उदार पुरुषों की महती कृपा व प्रेम पर निर्भर है अतः आप के प्रति हमारा यह आशीर्वाद है कि:-

धन्यौ त्वत्पितरौमहद्यशधरौ धन्यं कुलं तावकं<br>
धन्यस्त्वं दृढधर्म मार्गनिरतः धन्यातवोदारता ।<br>
यद्यत्वन्मनसेप्सितं च सकलं विश्वेशप्रसादाद्ध्रुवम्<br>
तत्कार्य्यं सफलं भवेद्धि सततं इत्याशिषामामकी ॥१॥

भा० आप के यशस्वी माता तथा कुल को धन्य है, धर्म मार्ग में आप की स्थिति व उदारता भी धन्यवाद के ही योग्य है अतः आप के प्रति हमारी यह मनोकामना है कि "आपकी सम्पूर्ण कामनायें भगवान की कृपा से पूर्ण होंय"।

( महामंत्री )

२२१ पालीवाल गुजराती:—यह भी एक ब्राह्मण जाति है पूर्वकाल में ये लोग गौड़ सम्प्रदाय में थे परन्तु आज कल ये गुजराती ब्राह्मण समुदाय में मिल जाने से इस ही याद में विद्वानों ने पालीवाल शब्द के अन्त में गुजराती शब्द लगा दिया है, जब पाली में विपत्ति व धर्म कष्ट पड़ा था तब यह ब्राह्मण जाति वहां से निकली थी उन में वामदेव, कौशिक, वेन्य और भारद्वाज इन चारों गोत्रों के लोग थे इन में से कुछ लोग तो भुज में चले गये तो १२ खांपों के जूनागढ़ नवाब के राज्य में चले गये तो १२ खांप के कराची की ओर चले गये अर्थात् सब ३२ खांपों के पल्लीवाल गुजरात में चले गये, वे सब प्रायः व्यापार करते हैं और उस प्रदेश में अभी तक इन को उधर कोई बनिये कहता है तो कोई कोई इन्हें ब्राह्मण भी कहते हैं। शेष विवर्ण ऊपर के " पालीवाल " प्रकरणानुसार जानना।

२२२ पद्मय:—यह एक ब्राह्मण जाति है इस के विषय में ब्रा० मा० पृष्ठ ३३१ में ऐसा लिखा है कि एक ब्राह्मण सर्वद्वेषी पापी, निर्लज्ज, शठ, निर्दय भ्रष्ट, ब्राह्मण वंचक व्यभिचार से उत्पन्न हुआ था उस ही के समीप अन्य ब्राह्मण भी रहते थे कुछ वर्ष पश्चात् उस ब्राह्मण की मृत्यु होगयी तब वे सहवासी ब्राह्मण अपना भ्रष्टत्व जान के दूसरे ब्राह्मणों के शरण गये तब उन का दोष बलात्कार का जान कर, शास्त्राधारानुसार उन का प्रायश्चित किया तब वे कृष्णा नदी के किनारे कराड़ क्षेत्र में जाकर रहे उन की कराड़े संज्ञा हुयी उन में से जो भ्रष्ट हुये वे पद्मय नामक ब्राह्मण हुये यथा:—

भिन्ना ज्ञातिसाभवद्वै करहाटाभिधानतः।
तेषां मध्ये च भृष्टास्ते पद्मयाख्या भवंति च॥४४॥

अर्थात् करहाटक क्षेत्र के ब्राह्मणों में से जो भ्रष्ट हुये वे पद्मय ब्राह्मण कहाये ये अपांक्त हैं अर्थात् ब्राह्मणों की पंक्ति के योग्य नहीं हैं इन्हें एक वेद का अधिकार है अर्थात् सांगोपांग ऋग्वेद पढ़ना चाहिये। अपांक्त ब्राह्मण किसे कहते हैं यह विषय पूर्व ही ब्राह्मण प्रकरण में लिख आये हैं तहां देख लेना।

**२२३ प्रयागवाल:**—यह एक तीर्थ पुरोहित पण्डों की ब्राह्मण जाति का भेद है त्रिवेणी अर्थात् गंगा, यमुना और सरस्वती जी के संगम पर यात्रियों से दान पुण्य लेने वाले ब्राह्मण समुदाय का एक भेद है अन्य अन्य ब्राह्मण समुदाय की अपेक्षा इन का पद छोटा है क्योंकि ये कोई भी जाति का यात्री जावे सब से दान पुण्य लेते रहते हैं इन लोगों की विद्या स्थिति बहुत ही सामान्य है अर्थात् शुद्ध संकल्प का पढ़ना व वेद मन्त्रों का यथार्थ भाव से उच्चारण करना इन के लिये बहुत ही कठिन है यह लोग यात्रियों के बही खाते रखते हैं और जो कोई प्रयाग में यात्रार्थ जाता है उस से दान दक्षिणा लेकर के उस यात्री के कुटुम्ब कबीले के नाम बहीखाते में दर्ज कर लेते हैं।

ज्योंही किसी यात्री को दूर से आते देखते हैं त्योंही झट ये लोग उनके साथ हो लेते हैं और उनके गांव आदि का पता ठिकाना पूछ कर तत्काल उसे उस ही इलाके के पण्डे के यहां पहुंचा देते हैं ये लोग प्रायः ईमान्दार हुवा करते हैं इन के यहां यात्री गण नाना प्रकार के बहुमूल्य आभूषण व वस्त्रादि सामान निधड़क रूप से रख कर अपने २ कार्यों में निमग्न हो जाते हैं ऐसी दशा में उन के पदार्थ ज्यों के त्यों उन्हें मिल जाते हैं। ये ब्राह्मण कान्यकुब्ज ब्राह्मणों में से हैं। यात्रियों के लिये ये एक वालंटियर व गाइड का काम देते हैं।

**२२४ प्रश्नोरानागर:**—यह गुजराती नागर ब्राह्मणों का भेद है यह नाम इन ब्राह्मणों का प्रश्नोरा नामक ग्राम के कारण पड़ा है ये लोग विशेष रूप से काठियावाड़ में हैं इन को ऋग्वेदी ब्राह्मण भी कहते हैं इनका मुख्य धन्दा भिक्षा वृत्ति द्वारा निर्वाह करना है नागर शब्द का विवर्ण नकार की जातियों के साथ लिख आये हैं वहां देख लेना।

**२२५ पाठक:**—यह ब्राह्मण जाति की एक पदवी है शब्दार्थ तो ऐसा होता है "पढ़ने वाला" यह पद विशेष रूप से कन्नौजिये तथा सनाढ्य ब्राह्मणों में पाया जाता है। विद्वान लोग पाठक शब्द से पढ़ानेवाले का भी ग्रहण करते हैं अतएव जो लोग पढ़ाने की वृत्ति

करते थे वे कुल पाठक कहाये-सम्भव है सब से पहिले यह पद कान्यकुब्ज व सनाढ्य ब्राह्मणों को ही मिला होगा।

२२६ पांडे :—यह शब्द पंडित का बिगड़ा हुआ रूप है केवल ब्राह्मण जाति के मनुष्यों को ही प्रचलित रीत्यानुसार ये पद मिलता है गौड़ कान्यकुब्ज व सनाढ्य ब्राह्मणों का यह एक प्रचलित पद है इन में जो लोग निरन्तर पंडिताई का धन्दा करते थे वे पण्डित कहाते कहाते पाण्डे पाण्डे कहाने लग गये।

२२७ पाधे :—यह पुरोहिताई का ब्राह्मण जाति में एक पद है अर्थात् जब कभी पैतृक पुरोहित अपने यजमान के यहां किसी संस्कार विशेष के समय नहीं पहुंचने पाता है तब उस का स्थानापन्न कोई अन्य ब्राह्मण उस ही समय के लिये नियत कर लिया जाता है वह पाधा कहाता है।

२२८ पाराशर :— यह एक गोत्र प्रवर्तक ऋषि का नाम है गौड़ सम्प्रदाय में से छन्याति समुदाय में पारिख ब्राह्मण इन ऋषि जी के वंश में से हैं, इन ही ऋषि जी के बनाये पाराशर स्मृति व पाराशर संहिता प्रसिद्ध धर्मशास्त्र हैं।

इन्हीं ऋषि जी के नाम से "पाराशरिया" नाम की एक ब्राह्मण जाति गुजरात प्रान्त में है।

२२९ पाश्चात्य वैदिक :—यह बंगाल प्रान्त की एक ब्राह्मण जाति का नाम है यह लोग वहां बहुत थोड़े हैं इन का आदि निकास स्थान पश्चिम से है तदवत् ही यह पाश्चात्य कहाते हैं मुसलमानी अत्याचार के समय यह लोग तिरहुति में गये और वहां से अपनी जीवरक्षार्थ बंगाल में चले गये यथार्थ में ये लोग कान्यकुब्ज ब्राह्मण समुदाय की श्रेणी में से हैं इन में का सब ही समुदाय अत्याचार से ही नहीं गया था वरन उस समय के बंगाल प्रान्तस्थ राजा और महाराजाओं की ओर से यज्ञ करनार्थ निमन्त्रित भी किया गया था, क्यों कि उस समय में ये लोग यथार्थ में द्विवेदी, त्रिवेदी, चतुर्वेदी आदि

उपाधि धारी थे। नदिया शहर में इस वंश का एक ऐसा योग्य ब्राह्मण था जो सम्पूर्ण महाभारत कण्ठस्थ सुनाया करता था उनकी इस अद्भुत शक्ति के कारण नदिया के स्वर्ग वासी महाराज काशी नाथ ने उन्हें अपने यहां रख कर इनका बड़ा आदर किया था।

कोटली पहाड़ के वैदिक समुदाय का आदि पुरुष तेरहवीं शताब्दी में कन्नौज से बुलाया गया था क्यों कि वहां के राजा के महल में प्रेत बाधा का उत्पात था तिस के निवारणार्थ इन्हें यहां आना पड़ा था तिन की भी अद्भुत विद्याशक्ति को देखकर राजा ने इन्हें एक बड़ी भारी जमीनजागीर दियी थी इसी वंश का Sirname (कुलनाम) भट्टाचार्य्य है आज कल जाति विषयक महाअनुभवी विद्वान् बाबू योगेन्द्रनाथ जी भट्टाचर्य्य M. A. D. L. Precident प्रधान पण्डित कालेज नदिया भी इसी वंश के शिरोमणि हैं।

२३० पाञ्चाल :—यह उपब्राह्मणों की जाति का समूह वाचक शब्द है देवल के वचनानुसार पाञ्चाल ब्राह्मणों में शिल्प कर्म्मी समुदाय में ब्राह्मण वर्ण की विशेषता है परन्तु संकरवर्णी समुदाय की भी कमी नहीं है ब्राह्मण वर्णी शिल्पियों की देखा देखी संकर वर्णी शिल्पी भी ब्राह्मण बनने लगे हैं यह अनुचित है।

इन पाञ्चाल ब्राह्मणों के भी मुख्य तीन भेद हैं १ शैव पाञ्चाल २ ब्रह्मपाञ्चाल और ३ उपपाञ्चाल।

शैव पाञ्चालों के विषय में शैवागम में ऐसा प्रमाण मिलता है कि :—

मनुर्मयस्तथा त्वष्टा शिल्पिकश्चतथैवच।
दैवज्ञः पञ्चमश्चैव ब्राह्मणा पञ्च कीर्तिताः॥

अर्थात् मनु, मय, त्वष्टा, शिल्पी और दैवज्ञ ये पांचो शैव पाञ्चाल ब्राह्मण हैं इन प्रत्येक के लक्षण यह हैं।

मनुसंहार कर्ताच मयो त्रैलोक पालकः।
त्वष्टा चोत्पत्तिकर्ताच शिल्पिको गृहकारकः॥

अर्थात् मनु की सन्तान शस्त्रादि निर्माण करके ब्राह्मणिये लुहार, मय की सन्तान क्षत्रिया ब्राह्मण, त्वष्टा की सन्तान काष्ट के पदार्थ बनाने वाले ब्राह्मण बढ़ई, और शिल्पी ऋषि की सन्तान ब्राह्मण मिस्त्री कहाये। तथा दैवज्ञ की सन्तान ब्राह्मणिये सुनार हुये, इन पांचों की उप पाञ्चाल ब्राह्मण संज्ञा है परन्तु इस आशय को लेकर ब्राह्मणिये सुनारों की देखा देखी संकर वर्णी सुनार मात्र ब्राह्मण बनने को तय्यार हैं, ब्राह्मणिये बढ़इयों की देखा देखी भारत का संकरवर्णी बढ़ई मात्र शर्म्मा बनना चाहता है, ब्राह्मणिये लुहारों की देखा देखी अन्य लुहार मात्र भी जनेऊ पहिन कर ब्राह्मण बनने में लगे हुये हैं, ब्राह्मणिये मिस्त्रियों की देखा देखी करणी पकड़ने वाले मिस्त्री मात्र जनेऊ लेकर ब्राह्मण बनना चाहते हैं आदि आदि, परन्तु यह धींगा धींगी शास्त्र विरुद्ध होने से इस का परिणाम भविष्यत में सुखप्रद नहीं होगा अतएव इस के प्रति बंधक उपाय होने चाहियें, ऋषियों के नियम व शास्त्रों की आज्ञा का यथावत पालन करना हिन्दुसन्तान का एकमात्र जीवनाधार होना चाहिये।

हमारी जाति यात्रा के भ्रमण में प्रायः हमें इस प्रकार के उत्तेजित समुदाय के लोग विशेष मिले जिन्होंने हम से आकर "नमस्कार" किया और अपने को ब्राह्मण बतलाया परन्तु कुशल प्रश्नोत्तर के पश्चात् व किञ्चितगोष्ठ्यानन्तर प्रमाणित हुआ कि वे लोग संकरवर्णी शिल्पी थे। इस ही तरह ब्राह्मणिये सुनार समुदाय के लोग भी हम से मिले और नमस्कार सम्बोधन करने लगे पर यह उन का कर्तव्य अनधिकारीपन का था, अर्थात् सन् १७७६ में महाराष्ट्र देशीय ब्राह्मणिये सुनारों ने अपने को ब्राह्मण मानकर अन्य ब्राह्मणों के साथ परस्पर बराबरी का व्यवहार करने, व परस्पर नमस्कार करने लगेगे तिस से ब्राह्मणों को उन का यह कर्तव्य अनधिकार चरचा युक्त प्रतीत होने से ब्राह्मणों ने कोर्ट में अभियोग दायर कर दिया तिस के निर्णयार्थ गवर्नमेन्ट की ओर से पञ्च सरपञ्च व मुद्दई मुद्दायलों की ओर से भी पञ्च सरपञ्च नामी नामी विद्वान् होकर निश्चय हुआ कि इन सुनारों को ब्राह्मणों के साथ समता करने व नमस्कार करने का अधिकार नहीं है उस मुकदमे का विशेष विवर्ण तो सप्तखण्डी ग्रन्थ में देंगे परन्तु गवर्नमेन्ट आर्डर की नक्ल इस प्रकार से है।

To

Damul Sett Trimbuk Sett

Head of the Caste of Gold Smiths.

The Hon'ble the President in Council having thought proper to prohibit the Caste of Gold Smiths from making use of the form of Salution termed Namaskar you are hereby peremptorely enjoined to make known this order and resolution to the whole caste, and to take care that the same be strictly observed.

Bombay Castle 9th August 1779 — By order Sig. W. Page Secretary to Government.

## भाषार्थ ।

श्रीमान् डामजसेठ त्रिम्बकसेठ सुनार जाति के मुखिया:—

**महाशय !** कौन्सिल के परम माननीय प्रधान साहब की यह आज्ञा है कि सुनार जाति के लोगों को अन्य ब्राह्मणों के साथ नमस्कार का करना रुकवाना चाहिये अतएव आप की जातिमात्र के लिये यह आज्ञा है कि "नमस्कार" का करना कराना नियम पद्धता व बड़े ध्यान के साथ रोक देना चाहिये ।

मुम्बई कौंसल ९वीं अगस्त सन् १७७९ — ह: डबल्यू पेज सेक्रेटरी टुदी गवर्नमेन्ट

अतएव इस आज्ञा के अनुसार इन उपब्राह्मण संज्ञक सुनार, बढ़ई, लुहार, मिस्त्रीगण और शिल्पियों को ब्राह्मणों के साथ नमस्कार नहीं करना चाहिये परन्तु भारत का द्वेषी समुदाय जो इन को उपब्राह्मण भी नहीं मानता वह भी कर्तव्य द्वेष मूलक है क्योंकि इनको यह कर्म करने के अधिकार हैं यथा :-

आयुर्वेदादि देवानां शेषामध्ययनं स्मृतं ।
ते शोप वेदिनः सर्वे ह्युप ब्राह्मण संज्ञकाः ॥ ३३ ॥
मुख्यानां ब्राह्मणानां च गायत्री श्रवणं खलुः ।
तथा चैवोपविप्राणां गायत्री श्रवणं स्मृतम् ॥ ३५ ॥
मुख्यानां ब्राह्मणानां च तथा चैवोपवेदिनाम् ।
संध्या विधिरुभयोर्यो विहितोथ विरंचिना ॥ ३६ ॥
अथर्वणस्योपवेदः शिल्पवेदः प्रकीर्तितः ।
तस्मादाथर्वणाः प्रोक्ता सर्वे शिल्पिनएवच ॥ ३७ ॥

देवज्ञ वचनम् तथा ब्रा० मा० पृ० ५६६ ।

अर्थः–उपरोक्त ब्राह्मणिये सुनार, सुतार, लुहार, शिल्पी तथा दैवज्ञ उपब्राह्मणों को वेद आयुर्वेद, धनुर्वेद, गांधर्ववेद और शिल्पवेद को अध्ययन करना चाहिये ॥ ३३ ॥ मुख्य अन्य ब्राह्मणों की तरह इन उपब्राह्मणों को भी शिखा यज्ञोपवीत धारण तथा गायत्री श्रवण और सन्ध्योपासन करने का अधिकार है ॥ ३४, ३५ ॥ अथर्वणवेद का उपवेद शिल्पवेद है अतः ये उपरोक्त शिल्पी अथर्वण संज्ञक भी हैं। शेष सतखण्डी ग्रन्थ में लिखेंगे ।

२३१ पानडे :—यह एक ब्राह्मण जाति है रुहेलखंड कमाऊं की ओर ये लोग बहुतायत से हैं वहां इन का ब्राह्मणत्व प्रतिष्ठित दशा में है खान पान व विद्या स्थिती सामान्यतया उत्तम है उस देश में ये प्रतिष्ठित ब्राह्मण समुदाय में से हैं आचार विचार के नियमों को लिये हुये हैं कृषी व सेवा वृती करते रहते हैं ।

२३२ पानीगिर :—यह उड़ीसा प्रान्त की एक ब्राह्मण ज्ञाति है इन की विशेष बस्ती कटक व पुरी में है इन का दूसरा नाम महाजन पंथी भी है ये वहां दाक्षिणात्य ब्राह्मण समुदाय में से हैं ।

२३२ पिराली :—यह कलकत्ते के प्रसिद्ध टागोर ब्राह्मण श्रेणी में का एक भेद है मुसलमानों के साथ विशेष संसर्ग व सम्बन्ध होने के कारण अनेकों प्रकार के ब्राह्मण नीचत्व को प्राप्त हो जाते हैं उन में से एक पिराली ब्राह्मण समुदाय भी है * यह अपने को राढ़ी ब्राह्मण समुदाय में से मानते हैं और अपने विवाह सम्बन्ध भी उन्हीं के साथ करते हैं जिस से उन को अधिक व्यय की हानि उठानी पड़ती है कारण यह है कि राढ़ी ब्राह्मण लोग इन के यहां विवाह सम्बन्ध करने से अपने उच्चत्व को खोकर पिराली कहे जाने लगते हैं अतएव राढ़ी लोग भी इनके यहां विवाह करने के समय दान दायजा ठहरा कर बहुत कुछ लेते हैं परन्तु यह दशा सम्पूर्ण टागोरों में नहीं है अर्थात् श्रीमान् बाबू देवेन्द्रनाथ टागोर आदि २ कई कुल ऐसे भी हैं जो इस नीचत्व से बच कर उच्च दशा को प्राप्त हैं।

पिराली समुदाय में पुरुषोत्तम नामक एक सज्जन हुए हैं उन के सम्बन्ध में स्वर्ग वासी श्रीमान् आनरेबल प्रसन्नकुमार जी टागोर सी० एस० आई० ने जो कुछ लिखा है उस को अविकल भट्टाचार्य्य जी ने अपने ग्रन्थ में उद्धृत किया है तिस का भावार्थ इस प्रकार से है:—

पुरुषोत्तम पिराली इस कारण से कहलाया था कि उस ने अपनी लड़की का विवाह ऐसे पुरुष के साथ कर दिया था जो जाति में पतित (दाग़िल) था, घटकों की किताबों से जान पड़ता है कि जानकीवल्लभ और कामदेवराय चौधरी जो चेंगुट्टा के पर्गने के गुड़गैन गांव के रहनेवाले थे उन्होंने जैसोर के रहनेवाले श्रीकान्तराय के किसी बुज़ुर्ग पर अभियोग किया था। इस अभियोग की जांच के लिये वहां के ज़िमींदार ने पिरालीखां नामक एक अमीन को नियत किया था परन्तु उस अमीन व वहां के निवासियों में यह विवाद उत्पन्न हुआ कि किसी पदार्थ की गंध आजाना आधे खा लेने के बराबर है या नहीं? इस विवाद के कुछ ही काल उपरान्त उस ही पिरालीखां ने बहुत से

* देखो H. C, S. Page 119. भट्टाचार्य्य कृत जाति व मत पृष्ठ ११६ के आधारानुसार।

मनुष्यों को न्योता देकर बुलाया और उन्हें अभक्ष्य पदार्थ की गंध सुंघायी जिस से उनका जातित्व जाता रहा, जानकीवल्लभ और कामदेव ने अमीन के समीप ही बैठकर खाया था अतः वे मुसलमान होगये और उन के नाम बदलकर जमालखां व कमालखां रक्खे गये उस समय के (देश काल अनभिज्ञ) पण्डितों ने इनके प्रति ऐसी ही व्यवस्था दियी थी * उनकी सन्तान अर्जुनखां और दीनानाथ आदि २ भी मगुरा और बसुन्दिया में मुसलमानों की तरह ही रहते सहते रहे ! ये दोनों ग्राम जैसोर ज़िले के चेंगुट्टा पर्गने में हैं।

ये लोग अपना विवाह सम्बन्ध बूम के खां चौधरियोंके साथ करते हैं परन्तु अन्य मुसलमानों के साथ नहीं, अन्य लोग जो वहां अभक्ष्य पदार्थों की गंध लेने में सम्मिलित थे वे पिराली कहाने लगे पुरुषोत्तम भी गंध लेनेवालों में से बताये जाते हैं परन्तु दूसरों का ऐसा भी कथन है कि जब कि पुरुषोत्तम जैसोर में थे तब वे एक दिवस गंगा स्नान को जारहे थे तब वहां के चौधरी जो उपरोक्त क्रमानुसार अपवित्र हो चुके थे वे पुरुषोत्तम को ज़बर्दस्ती उठा लेगये और अपनी लड़कियों में से एक लड़की उस के साथ ब्याहने को कहा पुरुषोत्तम ने भी अपनी दुलहिन की सुन्दरता पर मुग्ध होकर विवाह स्वीकार कर लिया, विवाह के पश्चात् पुरुषोत्तम अपने घरद्वार व कुटुम्ब को छोड़ कर नई बीबी के साथ रहने लगे जिस से उनके एक लड़का पैदा हुआ जिस का नाम बलराम था, बलराम के सड़पोता पंचनाना जैसोर छोड़ कर गोविन्दपुर चले गये जो फ़ोर्ट विलियम के समीप है जहां उन्होंने ज़मीन मोल लियी और वहां अपने लिये निवास स्थान तथा एक मन्दिर बनवाया उनके पुत्र जयराम चौबीसपर्गनेके ज़िले में अमीन नियत किये गये और उन्होंने इस पद को बहुत ही योग्यता से चलाया, परन्तु जब कलकत्ता, सरकार गवर्नमेन्ट के हाथ में आया तब जैराम की सब रियासत सरकार ने ले लियी तो उस के बदले में जयराम को सरकार से १३०००) रुपैये नक़द निज के मिले क्योंकि जयराम का

---

* देश काल अनभिज्ञ पुरुषों की व्यवस्थायें अमाननीय होनी चाहियें क्योंकि साधारण प्रायश्चित से पवित्र हो सक्ते थे।

मकान सरकार अंग्रेज़ ने फोर्ट विलियम बनाने के लिये ले लिया इस के बदले में सरकार ने इन्हें नकद रुपैया और ज़मीन दियी जिस से इन्होंने अपना निवासस्थान पथुरियाघाट में बना लिया सन् १७६२ में इन का देहान्त हो गया और इन्हों ने अपने पीछे चार पुत्र छोड़े जिन के नाम आनंदराम, नीलमनी, दर्पनरायन और गोविन्द था, इनमें से आनंदराम अंग्रेज़ी विद्या में निपुण हुये, इन्हीं के पुत्रादि व छोटे भाई फोर्ट विलियम के सुपरिन्टेन्डेन्ट हुये, नीलमनी द्वारकानाथ टागोर के बाबा ( Grand father ) थे जो कि आजकल उच्चतम कोटि के समझे जाते हैं।

यह सब कुछ मिस्टर एस. सी. बोस की रचित Hindus as they are नामक पुस्तक के पृष्ठ १७१ से १७४ तक का भावार्थ तथा भट्टाचार्य्य जी कृत "हिन्दु जातियें और मत" नामक पुस्तक के पृष्ठ ११६ से १२० तक के सारांश मात्र से लिखा है शेष सतखण्डी ग्रन्थ में लिखेंगे।

**२३४ पुजारी** :—यह एक संकर वर्णी जाति है समय के हेर फेर से लोग इस जाति को ब्राह्मण मानने लग गये तदनुसार ही यह जाति यहां लिखी गयी है। यह शब्द दो शब्दों के योग से बना है अर्थात् पूजा + अरि =पुजारी जिस का अर्थ " सत्कार का दुश्मन " ऐसा होता है, यह अर्थ विद्वानों ने हमें इस कारण बतलाया है कि पूजा विधि, पूजाक्रम तथा उपास्यदेव के प्रसन्नार्थ उचित मंत्र व सामग्री के जाननेवाले तो आजकल कोई इने गिने ही पुजारी होंगे, पर पेटार्थी व मूर्खानन्द घंटा हिलानेवाले तथा ठाकुर जी को अंगूठा दिखाकर स्वयं मालउड़ाने वाले निरक्षर पुजारियों की तो भरमार है कारण यह है कि जैसे नागनाथ वैसे सर्पनाथ, जैसे भूतनाथ वैसे प्रेतनाथ, अर्थात् जैसे यजमान वैसे पुजारी हैं, यजमान लोग स्वयं विवेकी नहीं हैं अतः वे योग्य अयोग्य, पात्र कुपात्र को न जानकर जो सस्तासा मिला उसे ही पुजारी नौकर रख लिया, हां सब एक से भी नहीं होते हैं पर भरमार मूर्ख यजमान व पुजारी दोनों

ही की है । युक्त प्रदेश व राजपूताने में प्राय: ब्राह्मण जाति के लोग पुजारी हैं परन्तु यह दशा सम्पूर्ण भारत में एक सी नहीं है, दक्षिण देश में भिरोबा के पुजारी तो कुनबी ( कुर्मी ) जाति के लोग होते हैं और वे वहां सब दानादि व चढ़ावा लेते हैं, परन्तु बेंकोबा, गनपति, विटोबा ( विष्णु ) आदि के पुजारी ब्राह्मण होते हैं, इस ही तरह राजपूतानादि में भैरुजी के पुजारी बलाई होते हैं, देवी जी जिसके मांस शराब बकरे आदि चढ़ते हैं उस के पुजारी प्राय: शूद्र वर्णी होते हैं जैनियों के मन्दिरों में माली, भोजक व सेवग होते हैं प्राचीन काल में भारतवर्ष में जब एक सर्वज्ञ प्रभु ! परब्रह्म परमात्मा का पूजन होता था उस समय ईश्वर की पाषाणादि मूर्तियें नहीं थीं और वेदान्त का इस देश में प्रचार था तब जो लोग अविद्यान्धकारी थे उन्हें इस देश के वेदान्तियों ने पुजारी कहा था परन्तु जब देश में अविद्या बढ़ने लगी तब जगह जगह पाषाणादि मूर्त्तियों की स्थापना इसलिये किया गयी कि भारत का मूर्ख समुदाय किसी तरह भी धर्ममार्ग में प्रवृत्त रहे पर इस का प्रतिफल देश के लिये उल्टा हुआ ।

उस समय के वेदान्तियों ने ईश्वर के स्थान में पाषाणादि मूर्त्तियों की पूजा करने व प्रवृत्त होने वालों को पुजारी कहा था उस समय उच्च ब्राह्मण समुदाय मन्दिरों में ठाकुर सेवा करके पुजारी कहाना एक घृणित व निन्दित कर्म समझता था, तदनुसार ही उस समय की स्मृति व पुराणों में वैसे२ प्रतिबंधक वाक्य भी मिलते हैं यथा:—

**असि जीवी मसि जीवी देवलको ग्रामयाजकः ।**
**धावकः पाककर्ता च षडेते शूद्रवद्विजाः ॥**

पाराशर स्मृते ।

अर्थ :— अस्त्र शस्त्र से जीविका करने वाले, स्याही से जीविका करने वाले, ठाकुर सेवा करके वेतन द्वारा निर्वाह करने वाले पुजारी,

ग्रामयाजी हल्कारागीरी करनेवाले और रसोई करनेवाले ये छहों ब्राह्मण शूद्र के समान हैं ।

अतः निश्चय होता है कि पाराशर ऋषि के समय तक भी मूर्त्तिपूजन का प्रचार न था अन्यथा पाराशर जी महाराज पुजारियों को शूद्र न कहते । अस्तु ! यह ही दशा ब्रह्मवैवर्त पुराण की रचना समय भी थी यथा :-

शूद्रसत्प्रोद्दिक्तयाजी ग्रामयाजीति कीर्तितः ।
देवोप जीव जीवीच देवलश्च प्रकीर्तितः ॥
शूद्र पाकोप जीवीयः सूपकारः प्रकीर्तितः ।
सन्ध्यापूजा विहीनश्च प्रमत्तः पतित स्मृतः ॥
एते महापातकिनः कुम्भीपाकं प्रयान्तिते ।
ब्रह्मवैवर्त पुराण प्रकृतिखण्डे अध्याय ॥२७॥

अर्थ सत्शूद्रों के यहां का दान प्रतिग्रह लेने वाला ग्रामयाजी भी कहाता है, देवमन्दिरों की आजीविका खानेवाले पुजारीगण देवल कहाते हैं ॥ ..........जो शूद्र के बनाये पाक को खाता है उस की सूपकार संज्ञा है, संध्या और पूजा करके जो विहीन हैं वे प्रमत्त और पतित कहाते हैं इन उपरोक्त महान् पातकियों को कुम्भी पाक नर्क मिलता है ।

तस्य मागध जातेस्तु कन्यका विप्रसंगता ।
तत्पुत्र शाश्वतीकश्च कथितो देवलाभिधः ॥३२५॥

अर्थ :- मागध जाति की कन्या का किसी ब्राह्मण के साथ गुप्तसम्भोग होने से जो सन्तान हुयी वह देवल ( पुजारी ) कहायी । जब इस देश में वेदमार्ग में शिथिलता आयी तब इस देश के ब्राह्मणों ने पुजारी होने को एक निषिद्ध कर्म समझकर स्वीकार नहीं किया

किन्तु उपरोक्त संकरवर्णी जाति ने पुजारी होना स्वीकार कर लिया उस समय में पुजारी एक अलग ही जाति थी किन्तु आजीविकावों के लोभ से आज कल सब ही ब्राह्मण पुजारी बन जाते हैं।

प्रतिमां पूजयेद्विष्णो रसौ शंखादि चिन्हितः।
सपर्या जनिता तासां द्रविणं तस्य जीविनं ॥३२६॥

अर्थ :- शंख चक्रादि चिन्ह युक्त विष्णु की मूर्ति को जो पूजन करें और उन की सेवा पूजा करके उन का सामान ग्रहण करना यह उन देवलकों की आजीविका है।

पुनः-

अपांक्तेयोप्य भोज्यान्नो वर्णत्रय बहिर्कृतः।
देवार्चन परो विप्रो वित्तार्थी वत्सरत्रयं ॥ ३२७ ॥
असौ देवलको नाम सर्वकर्मसु गर्हितः।
स्पृष्ट्वादेवलकंचैव सवासाजलमाचरेत् ॥ ३२८ ॥

वर्ण विवेक नि० श्लो० ३२५ से ३२८

अर्थ :—तीनों वर्णों से बहिष्कृत किया हुवा अपांक्तेयका भोजन नहीं करना चाहिये जो तीन वर्ष तक वेतन लेकर मन्दिरों में देव पूजा करते हैं उनकी देवल संज्ञा है सम्पूर्ण उत्तम कर्मों के करने से निन्दित हैं ऐसे देवल [ पुजारी ] का स्पर्श मात्र होजाने पर सवस्त्र स्नान करे तब शुद्ध हो सक्ता है।

अपांक्तेय ब्राह्मण कौन कहाते हैं ? इस का उत्तर यों मिलता है कि:—

कुशीलवो देवलको नक्षत्रेयश्च जीवति।
ईदृशाब्राह्मणायेच अपांक्ते यास्तुते मता॥

पद्मपुराण, स्वर्गखण्ड श्राद्धपात्रनिर्णय अध्याय ३५

अब इस श्लोक में अपांक्तेय ब्राह्मण किसे कहते हैं ? उस का वर्णन है अर्थात् जो देवल [ पुजारी ] हैं, जो नक्षत्र अर्थात् ग्रहगोचर बतलाकर जीविका करते हैं वे सब अपांक्तेय ब्राह्मण कहाते हैं ।

अतएव आजकल भी यदि विचार पूर्वक देखा जाय तो बहुत से लोग मन्दिरों में चढ़ावे का दानपुण्य नहीं लेते हैं तथा प्राचीन तीर्थ मन्दिरों के पुजारी कहीं कहीं शूद्र,मेर और और २ जातियों के लोग हैं, कहीं कहीं भोजकों का व सेवगों का भी मन्दिरों में पता मिलता है जिन्हें लोगों ने नीच व शूद्र जाति की सन्तान बतलायी है ।

**२३५ पुरोहित** :—यह एक ब्राह्मण जाति है, गौड़ सम्प्रदायान्तर्गत यह जाति है यह शुद्ध शब्द बिगड़ कर कहीं पिरोत कहीं परोत और कहीं प्रोत कहा जाने लगा, इस का शब्दार्थ तो ऐसा होता है कि जिस का बहुत ही समीप हित है वह पुरोहित कहाता है अर्थात् वे ब्राह्मण जो तन, मन, धन से अपने यजमान् के लिये शुभ कामना व कल्याण चाहने वाले थे वे उस ही यजमान के पुरोहित कहाते थे अतएव उस यजमान का स्वत्व सर्वोपरि पुरोहित पर रहता था और पुरोहित का यजमान पर, प्राचीन काल में यजमान व पुरोहित दोनों ही पढ़े लिखे हुआ करते थे तब उस समय में यजमान जिन ब्राह्मणों को महाविद्वान, तपस्वी, तथा सदाचारी समझते थे उन में से किसी एक को अपना पुरोहित निश्चय करलेते थे और उस समय में यजमान की सब तरह की रक्षा का भार पुरोहित पर रहा करता था पर समय के हेर फेर से मूर्ख ही पुरोहित व महामूर्ख यजमान रह गये अतएव किसी कवि ने कहा है कि :—

लोभी गुरू लालची चेला ।
दोनों खेलें ठेल मठेला ॥

अर्थात् आजकल के पुरोहित लोग तो प्रायः मूर्ख व लोभी रहगये तथा यजमान लोग लालची पैसे पैसे पर कांय कांय करने वाले रहगये अतएव लोभ के व लालच के वैर हैं ऐसी दशा में पुरोहित व यजमान दोनों की क्या गति होगी ? कुछ कहते नहीं बनता है ।

विशेष रूप से व प्रचलित दशा से मुख्य पुरोहित आजकल पारीख पुरोहित हैं ये लोग गौड़ ब्राह्मण हैं जयपुर राज्य की धर्म व्यवस्थानुसार ये झन्याति भाई हैं अर्थात् कच्ची पक्की में गौड़ों के साथ ये सम्मिलित हैं किन्तु बेटी व्यवहार में एक नहीं। इन ब्राह्मणों का नाम पारीख पड़ने का कारण ऐसा प्रतीति होता है कि यथार्थ में ये पहिले

परीख निर्णय

संस्कृतज्ञों द्वारा " परीश " कहाते थे जो दो शब्दों के योग से बना है अर्थात् पर और ईश मिलकर परीश हुआ जिस का अर्थ दूसरों के स्वामी, दूसरों के रक्षक, दूसरों के दुख मोचनकर्त्ता अर्थात् दूसरों के कल्याणकर्त्ता आदि आदि अर्थ होते हैं।

अतएव जो ब्राह्मण समुदाय उपरोक्त लक्षण युक्त था वह प्राचीन काल में परीश ब्राह्मण कहाया था परन्तु ये परीश कहाते कहाते पारीश व पारीष कहाने लगगये, वैदिक काल से लेकर आज तक संस्कृतज्ञों के दो मत हैं अर्थात् कुछ वेदज्ञ विद्वान् वेद में " ष " को " ख " पढ़ते हैं जैसे :—

ओं सहस्र शीर्षाः पुरुषाः इत्यादि।

इस वैदिक मंत्र के उच्चारण में कितने ही तो " ष " को " ष " ही बोलते हैं परन्तु बहुत से इस मंत्र के " ष " को " ख " पढ़ते हैं जैसे :—

ओं सहस्र शीर्खाः पुरुखाः इत्यादि।

अतएव ऐसे ही आधारों पर शुद्ध शब्द परीश व पारीश भाषा भाषियों द्वारा "पारीख" कहाजाने लगा, तद्वत ही आजकल के पारीख ब्राह्मणों की पारीख संज्ञा का अर्थ जानना चाहिये।

पुरोहित होने के अधिकारी सम्पूर्ण प्रकार के ब्राह्मण हैं और तदनुसार ही इसमें अनेकों प्रकार के ब्राह्मण ऐसे मिले हैं जो क्षत्रिय व वैश्यों के पुरोहित हैं।

आजकल कुछ काल से ऐसा देखने में आरहा है कि प्रायः पुरोहित लोग यजमानों को बहुत ही तंग करते हैं अर्थात् यजमान से प्रसन्नता पूर्वक यथाशक्ति दक्षिणा प्राप्त हो जाने पर भी पुरोहित लोग

अधिक दान दक्षिणा व लीक लेने के लिये अड़ अड़ कर यजमान को एक बड़े संकट में डालते हैं तिस दशा को देखकर विद्वानों ने पुरोहित शब्द का अर्थ ऐसा किया है कि इस शब्द में चार अक्षर १ पु २ रो ३ हि ४ त हैं इन का अर्थ विद्वानों ने ऐसा किया है कि :-

पुरीपस्य च रोपस्य हिंसायास्तस्करस्यच ।
आद्यत्तराणि संग्रह्य धाता चक्रे पुरोहितम् ॥

ग्रा० मा० पृ० ८६

यह श्लोक शारंगधर पद्धति में भी लिखा है अर्थात् "पु" का अर्थ पुरीष नाम मैला व नर्कका है, "रो" नाम रोप व क्रोध का है, "हि" नाम हिंसा, पाप व अन्य को कष्ट पहुंचाने के हैं और "त" का अर्थ तस्कर व चोर के हैं अतः जिन ब्राह्मण पुरोहितों का अपने यजमानों के साथ ऐसे गुण युक्त व्यवहार हैं वे इस अर्थ के बोधक पुरोहित हैं ।

पुरोहितों के यहां प्रायः अग्रवाल व महेश्वरी वैश्य तथा क्षत्रियों के यहां ही वृत्ति है, इन की खांपें ये हैं:-

| | | |
|---|---|---|
| १ कातडया | १० वर्मा | १९ कपड़ोद |
| २ डांगी | ११ व्यास | २० लापसा |
| ३ कागड़ा | १२ बोहरा | २१ मकरानिया |
| ४ सूरेरा | १३ गोड़वाड़ | २२ ढुगोली |
| ५ दापवा | १४ तिवारी | २३ तामणिया |
| ६ जीपवाल | १५ पांडियावीरा | २४ गोरवाल |
| ७ जूसी | १६ केसट | २५ खटोड |
| ८ पुरोहित पुष्करणा | १७ पोलके | २६ मुंडकिया |
| ९ खेतर पालिया | १८ पादिया | |

पारीख पुरोहितों का कहना है कि "हम पाराशर ऋषि की सन्तान हैं अतएव पाराशर ऋषि की स्मृत्यर्थ हम पारीश कहाते २ पारीख कहाने लग गये" कदाचित ऐसा हो, पर हमें ऐसे प्रमाण नहीं मिले

अस्तु! पारीख पुरोहितों के यहां स्त्रियें हाथीदांत का चूड़ा पहिनती हैं और इन का विशेष संसर्ग क्षत्रियादि के साथ होने से इस जाति में कहीं २ मांसादि अभक्ष्य पदार्थों का भी संसर्ग पाया जाता है।

२३६ पुष्करणा:—यह एक ब्राह्मण जाति है सिन्ध, मारवाड़ और गुजरात में विशेष रूप से है यह पञ्च द्रविड़ान्तर्गत गुर्जर ब्राह्मणों के ८४ भेदों में से एक भेद है ये लोग पूर्व काल से भाटी और परिहार राजपूतों के पुरोहित व कुलगुरु रहते चले आये हैं तिस ही कारण से मारवाड़ जैसलमेर आदि राज्यों में ये लोग उच्च उच्च पदों पर भी हैं दान देते हैं पर लेते नहीं इस ही कारण से लोग इन से द्वेष रखते हैं और नाना प्रकार की मिथ्या कल्पनायें कर के इन के प्रति सर्व साधारण में घृणा उत्पन्न करना चाही है साथ ही में वे लोग एक प्राध अंगरेज विद्वान् की सम्पति को दिखाने लगते हैं इन का दूसरा नाम पोकरना ब्राह्मण भी है इन के विरुद्ध ऐसा लेख मिलता है कि:-

Tradition of their origin is Singular; it is said that they were Beldars and excavated the sacred lake of Pushkar or Pokur, for which act they obtained the favour of the deity and the grade of Brahmans, with the title of Pokurna. Their chief object of emblematic worship, the Khodala a kind of Pick-axe used in digging seems to favour this tradition.

( Tod's Vol. II. Jaisalmer chap. VII. )

भाषानुवाद :—इन की उत्पत्ति की एक अजब कहानी है। कहा जाता है कि पहिले ये बेलदार थे, और पुष्कर व पोकर की पवित्र झील को खोदी थी जिस कार्य्य के लिये देवतावों की कृपा, और पोकरणा की उपाधि के साथ ब्राह्मणों का पद प्राप्त किया इन के पूजने की मुख्य वस्तु कुदाला है जो कि खोदने का एक औज़ार है, इस से इस कहानी की अनुकूलता ज्ञात होती है।

( टाड राजस्थान भाग २, जैसलमेर, अध्याय ७ )

इसी टाड राजस्थान के इतिहास का हिन्दी अनुवाद करते हुए मुरादाबाद निवासी पं० बल्देव प्रसाद जी मिश्र स्वअनुवादित हिन्दी राजस्थान के भाग दूसरे के पृष्ठ ५५५ में ऐसा लिखते हैं कि:-

"ये पहले खुदाई का काम करते थे पीछे यह पवित्र तीरथ पुष्कर ह्रद खोदने लगे तब से ब्राह्मणों ने प्रसन्न होकर इन्हें पोहकरणा वा पुष्कर ब्राह्मण मान लिया है यह कुदाल आकृति वाली मूर्ती को पूजते हैं"

इस ही उपरोक्त आशय को लेकर राय साहब मुंशी देवीप्रसाद जी सुपरिन्टेन्डेन्ट महकमा इतिहास अपनी पुस्तक के पृष्ठ १६० में ऐसा लिखते हैं कि "टाड साहब ने अपनी तवारीख राजस्थान में पुष्करणों के वास्ते लिखा है कि ये असल में ओड थे पुष्कर जी को खोदा जिस से ब्राह्मणों के पद को पहुंचे ये अब तक कुदाल को पूजते हैं"

इस ही तरह टाड साहब के लेख को देख कर ही मिस्टर जान विलसन साहब ने अपनी पुस्तक हिन्दू कास्टस एन्ड ट्राइब्ज में तथा मि० इबेटसन ने पंजाब मनुष्यगणना रिपोर्ट में भी इस जाति के बारे में वही उपरोक्त विवर्ण लिखा है कि :—"ये आदि में ओड जाति से थे और पुष्कर खोदने से पुष्करणे कहलाये।"

परन्तु आगे को जो हम प्रमाण देंगे तथा जो कुछ हमारे बीस वर्ष के जाति अन्वेषणाधार से जो कुछ हमें निश्चय हुआ है तदनुसार हम कह सक्ते हैं कि उपरोक्त लेख मिथ्या व भ्रम युक्त हैं क्योंकि भारत वर्ष में मुसलमानी अत्याचार द्वारा बड़े २ प्राचीन पुस्तकालयों का अधः पतन व नष्ट भ्रष्टता तथा बड़े २ पुस्तक भंडारों के जलाया जाने * आदि कारणों से सच्चे इतिहासों का अभाव हो कर मन घड़न्त व सुनी सुनायी सी बातों पर ही ऐतिहासिक सामग्री का दार मदार रह गया था ऐसे अन्धकार के समय लेफ्टिनेन्ट कर्नेल जेम्स टॉड साहिब ने राजपूताना में भ्रमण कर के ईसवी सन १८३५ में राजपूताने का

---

* इस विषय का पूर्ण विवर्ण हम अपनी पुस्तक जाति अन्वेषण प्रथम भाग के पृष्ठ ८ में लिख आये हैं तहां देख लेना।

इतिहास दो भागों में छपाया था जिस को आज ईसवी सन १६१५ में ८० वर्ष का समय होता है अतएव उपरोक्त ग्रन्थकारों ने टॉड साहब के राजस्थान इतिहास को एक प्राचीन इतिहास समझ कर सचों ने ही "मक्षिकास्थाने मक्षिका" अर्थात् मक्खी की टांग की जगह मक्खी की टांग लिख मारी और उस की सत्यासत्य के अनुसन्धान का कोई प्रयत्न नहीं किया, यद्यपि टॉड साहिब ने जो जो सामग्रियें राजस्थान इतिहास के लिये एकत्रित कीं उन में से कई एक सामग्रियों का प्राप्त कर लेना सर्व साधारण भारतवासी के लिये अति कठिन ही नहीं वरन् असम्भव था परन्तु भूल करना मनुष्य का स्वाभाविक धर्म है क्योंकि "To error is human, and to forgive is Divine" के अनुसार पुष्करणे ब्राह्मणों का सम्बन्ध पुष्कर क्षेत्र से बतलाने में बड़ी भूल हुई है क्योंकि जिस प्रकार से पुष्कर का दूसरा नाम पोहकर है उसी प्रकार से जोधपुर राज्य में जोधपुर और जैसलमेर के बीच में पोकरन एक कस्बा है अतएव वहां इन का मुख्य निवास स्थान होने के कारण ये लोग अन्य दूर दूर देशों में जाकर पोकरणा ब्राह्मण कहाये, चूंकि पोकरन एक साधारण सा कस्बा था परन्तु इस ही नाम वाला पोहकर [ पुष्कर क्षेत्र ] एक प्रसिद्ध तीर्थ था अतएव सर्व साधारण जन समुदाय इन ब्राह्मणों का सम्बन्ध प्रसिद्ध पुष्कर क्षेत्र से ही समझने लगा तदनुसार ही मि० जेम्स टॉड ने भी भूल किया और तिस ही की देखा देखी अन्य दो चार विद्वानों ने भी भूल किया है परन्तु हमारी उपरोक्त सम्मति की पुष्टि निम्न लिखित भट्टाचार्य जी के लेख से भी होती है कि:—

बा० योगेन्द्र नाथ भट्टाचार्य एम. ए. डी. एल.

प्रधान पंडित कालेज नदिया अपनी पुस्तक के पृष्ठ ६६ में ऐसा लिखते हैं कि:—

The Pokarnas are very numerous not only in every part of Rajputana, but in Gujrat and Sind

also. They derive their designation from the two of Pokarna, which lies midway between Jodhpur ant Jesalmere. The priests of Pushkar are called Pushkar Sevakas or the "Worshippers of lake". The Pokarna Brahmans have no connection whatever with the holy Lake called Pushkara near Ajmere.

[ १ ] भावार्थः—पोकरणा ब्राह्मणों की संख्या बहुत अधिक है वे केवल राजपूताने में ही नहीं हैं वरन गुजरात और सिन्ध में भी बहुत हैं उन का यह नाम भी जोधपुर और जैसलमेर के बीच के पोकरन गांव से पड़ा है पुष्कर के ब्राह्मणों का नाम पुष्कर सेवक [ भोजक ] है * इन पोकरने ब्राह्मणों का सम्बन्ध अजमेर समीपस्थ पुष्कर क्षेत्र से कुछ भी नहीं है।

पाठक ! यह ग्रन्थ भी अनुमान पच्चीस तीस वर्ष का छपा हुवा प्रतिष्ठित ग्रन्थ है अतएव यह सम्मति एक स्वदेशी महान् पंडित की होने के कारण हमें माननीय है।

[ २ ] इस के अतिरिक्त सन् १९०१ की मनुष्यगणना रिपोर्ट की पच्चीसवीं जिल्द राजपूताना सर्कल की रिपोर्ट के पृष्ठ १४६ में लिखा है कि, " The Pushkarnas are a section of the Gurjar Brahmins" अर्थात् पुष्करणे ब्राह्मण गुर्जर श्रेणी का एक भेद हैं पुनः इसी के आगे पृष्ठ १६४ में गुर्जर ब्राह्मणों की नामावली में पुष्करणे ब्राह्मणों की भी गणना की है।

[ ३ ] जाति विषयक विद्वान् पाण्डोवा गोपाल जी ने अपनी पुस्तक के पृष्ठ १०० में जहां गुजराती ब्राह्मणों की ८४ जातियां

---

* भोजकों के विषय में जाति अन्वेषण प्रथम भाग पृष्ठ २८४ तथा इस ही ग्रन्थ में "शाकद्वीपी" प्रकरण में भी प्रसंग आगया है।

की नामावली दी है वहां छटवीं संख्या पर इन पोहकरणे ब्राह्मणों का भी नाम लिखा है ।

[ ४ ] जाति भेद वि० सार में एक महाराष्ट्र विद्वान् ऐसा लिखते हैं :—

"पोकरणे किंवा पुष्करणे हे कच्छ व हलार म्हणजे राजकोट जिल्ह्यांत वसतात, यांचो उपाध्येगिरीची वृत्ती भाटे लोका मध्ये आहे"

भावार्थः—पोकरणे जिन्हें पुष्करणे ब्राह्मण भी कहते हैं वे कच्छ व हलार यानी राजकोट जिले में विशेष रूप से हैं इन की वृत्ति भाटिये लोगों के यहां उपाध्याय गीरी करने की है ।

[ ५ ] पाठक ! ऐसे ऐसे प्रमाण हमें बहुत से मिले हैं परन्तु ग्रन्थ वृद्धिभयात् उन सब को यहां न लिख कर भविष्यत में छपनेवाले ससलगढी ग्रन्थ में लिखेंगे, हां हमें बहुत से ऐसे प्रमाण मिले हैं कि ये पुष्करणे ब्राह्मण परिहार व भाटिया राजपूत राजा महाराजाओं के गुरु व पुरोहित हजारों बरसों से चले आ रहे हैं इस से भी प्रमाणित होता है कि ये लोग यथार्थ में ब्राह्मण हैं क्योंकि प्रायः हमने अपने अन्वेषण में देखा है कि प्रायः पंडे व तीर्थ पुजारी लोग विद्याविहीन व निरक्षर नाम मात्र के ब्राह्मण होते हैं परन्तु इस के विपरीत इन पुष्करणे ब्राह्मणों में प्रायः वेद व कर्मकाण्ड का विशेष प्रचार है ।

( ६ ) मारवाड़ की मर्दुम शुमारी रिपोर्ट सन् १८९१ ईसवी के तीसरे भाग के पृष्ठ १५६ पर लिखा है कि:—ये लोग मारवाड़ में सिन्ध से आये हैं इनके गीत और गालियों में अबतक सिन्धीलब्ज़ मौजूद हैं ।

( ७ ) रेवरेन्ड मिस्टर शेरिंग साहब पादरी एम. ए. एल. एल. बी. ने अपनी पुस्तक हिन्दू कास्टस् भाग पहला के पृष्ठ ६६ में पुष्करणे ब्राह्मणों की गणना पञ्च द्रविड़ान्तर्गत गुर्जर सम्प्रदाय में लिखी है ।

( ८ ) यदि ये पुष्कर क्षेत्र के ब्राह्मण होते तो इन का नाम "पुष्करिये" वा "पोहकरिये" ब्राह्मण होता परन्तु ऐसा नहीं हुवा और ये "पुष्करणे" वा "पोकरणे" ब्राह्मण प्रसिद्ध हुए इस से भी प्रतीत होता है कि जोधपुर से पश्चिम की ओर ४० कोस की दूरी पर "पोहकरन" एक कस्बा है वहां से इन ब्राह्मणों का घनिष्ठ सम्बन्ध होने के कारण ये "पोकरने" कहाते कहाते भाषा भाषियों द्वारा "पुष्करणे" भी कहाने लग गये ।

( ९ ) यदि इन का सम्बन्ध अजमेर समीपस्थ पुष्कर क्षेत्र से ही होता तो अजमेर का इतिहास लिखते हुते एक्सट्रा असिस्टेन्ट कमिश्नर पं० महाराजकृष्ण जिन्हों ने मि० जे० डी० लाटूस साहब बहादुर की आज्ञा से सम्वत् १९३२ में अपने इतिहास में अजमेर व पुष्कर का इतिहास लिखते हुये पुष्कर के सेवग [ भोजक ] आदि २ जातियों का हाल भी लिखा है वहां इन सेवगों की [ भोजकों की ] जाति का पूर्ण विवर्ण लिखा है कि ये लोग ब्राह्मण वर्ण में होने के कारण जयपुर महाराज ने जोधपुर महाराज ने और जैसलमेर महाराज ने इन सेवगों को क्यों व कैसें पुष्कर गुरुपणे से पृथक् किया *

हमें ऐसा निश्चय होता है कि सेवगों की उत्पत्त्यादि विवर्ण व टॉड साहब लिखित विवर्ण करीब करीब एक सा ही मिलता जुलता सा है अतएव सम्भव है कि टॉड साहब ने इन्हीं सेवगों को पुष्करणे ब्राह्मण समझ कर सेवगों के भरोसे पुष्करणे ब्राह्मणों के विरुद्ध लिख दिया हो ।

[ १० ] जोधपुर की मनुष्य गणना रिपोर्ट में जन श्रुति के नाम से लिखा है कि "ये पहले ओड थे और ब्राह्मणों के अभाव में जनेऊ पहिनाये जाकर ब्रह्म भोज में सम्मिलित कर दिये गये तिस से

* इन के विषय जाति अन्वेषण प्रथम भाग में हम बहुत कुछ लिख आये हैं विशेष इस ही ग्रन्थ में शाकद्वीपी प्रकरण देखिये ।

ये ब्राह्मण बनगये" परन्तु यह भी मिथ्या है क्योंकि जनश्रुति कभी सच नहीं हुवा करती हैं किन्तु द्वेषी समुदाय की मनघड़न्त कल्पनायें मात्र होने से ग्राह्य नहीं क्योंकि एक राजा जो लाखों रुपये पुष्कर खुदवाने में लगावे लाखों ही रुपये यज्ञ करने में लगावे वह ऐसा धर्मात्मा होकर यज्ञान्त एक लक्ष ब्राह्मणों के ब्रह्म भोज में बीस हजार ओड़ों को जनेऊ पहिना कर ब्रह्मभोज में सम्मिलित करदे क्योंकि वह ब्रह्म भोज था न कि शूद्र भोजब्रह्म अतएव यह जनश्रुति निस्सन्देह द्वेषी समुदाय की लीला है।

[ ११ ] इस ब्राह्मण जाति के कई पुरुषों को हम ने अपने नेत्रों से देखा है कि ये लोग खान पान से बड़े पवित्र होते हैं यहां तक कि गौड़ सम्प्रदाय के करीब करीब सभी तरह के ब्राह्मण [ गृन्जन ] गाजर को बिना रोक टोक खाते हैं, स्कन्ध पुराण में ऐसा भी प्रमाण मिलता है कि:—

उदारा राजपूज्याश्च शुद्धः संतोषिणः सदा ।
ब्राह्मणानां पुष्टिकराधर्मं पुष्टिकरा स्तथा ॥ १ ॥
ज्ञान पुष्टिकरातस्मात्पुष्करणा ख्याभविष्यथ ।
विवाहे कार्य समय सान्निध्यं मम सर्वदा ॥

अर्थात् लक्ष्मी जी ने इन्हें पुष्टिकरा होने का वरदान दिया था अतएव किसी २ विद्वान् की यह भी सम्मति है कि यह पुंष्करणा शब्द पुष्टिकरा का अपभ्रंश है, एक दूसरे विद्वान की यह भी सम्मति है कि ये लोग मांस मदिरा नहीं खाते हैं।

अतएव "पशुतिरस्करणिये" कहाये जाकर भाषा में "पुष्करणिये" वा "पुष्करणे" कहे जाने लगे इतिहास कल्पद्रुम पृष्ठ ८१ में सारड़ा खांप के महेश्वरी पोहकरणे व्यास लिखे हैं।

पुनः पृष्ठ ११३ में पुष्करने [ पोकरने ] ब्राह्मणों की एक सूची दियी है कि अमुक २ खांप के अमुक अमुक पोकरणे गुरू है अतएव उपरोक्त अनेकों प्रमाणों के आधार व लोकमतानुसार हम भी अपनी सम्मति में इस जाति को शुद्ध ब्राह्मण जाति मानते हैं और निश्चय पूर्वक लिखते हैं कि पुष्कर क्षेत्र के खोदने का सम्बन्ध इन ब्राह्मणों से तनिकसा भी नहीं है।
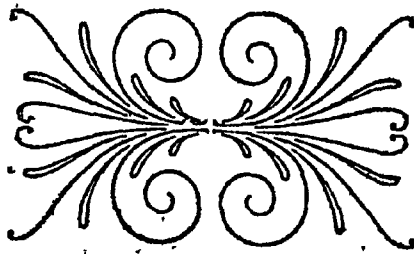
# पुनरुत्थान जाति संख्या ३४

३४ आचार्य्यः—इस जाति के विषय में जाति अन्वेषण प्रथम भाग में भी लिख आये हैं तथा इस ही का उल्लेख इस ही ग्रन्थ में पृष्ठ १५१ की जाति संख्या ३४ में भी कर चुके हैं तिस के अतिरिक्त शास्त्रावलोकन करते करते व इस जाति के साथ दुःखमयी चित्ताप-कर्षक व असह्य अन्याय व प्रचलित घृणा को देख कर हमें सदैव यह ही चिन्तमन रहता था कि " वास्तव में आचार्य्य जाति क्या ऐसी ही है जैसा कि कुछ हम भी पूर्व लिख चुके हैं ? तो निष्पक्ष बुद्धि से जो कुछ हमें निश्चय हुआ है उस का सारांश हम नीचे प्रकाशित करते हैं।

महापात्र, महा ब्राह्मण, अग्रभिक्षु, अग्रदानी, अग्रदाना, आचार्य्य व आचारी तथा कटयाह ये सब पर्य्यायवाची शब्द हैं केवल शब्द व अक्षर अलग अलग हैं पर भावार्थ सब का एक है क्यों कि ये सब उच्चतम कोटि के श्रोत्रिय वेदज्ञ ब्राह्मणों की उपाधियें हैं अतः जिन वेदज्ञ कुलों को ये उपाधियें मिली थीं वे आज तक इन्हीं नामों से पुकारे जाते हैं। क्योंकि ये पंक्तिपावन ब्राह्मणों में से हैं। *

प्राचीनकाल में प्रत्येक परम पावन तीर्थों पर प्रायः गुरुकुल हुआ करते थे और उन गुरुकुलों में सर्वशिरोमणि, सदाचारी महाविद्वान् महाब्राह्मण लोग रहा करते थे जो शम, दम, तितीक्षा और शान्ति युक्त थे ऐसे विद्वानों को उस समय आचार्य्य सम्बोधन किया जाता था क्योंकि वे ब्रह्मचारियों को यज्ञोपवीत देकर वेद पढ़ाते थे यथाः—

उपनीय तु यः शिष्यं वेदमध्यापयेद्द्विजः ।
सकल्पं सरहस्यञ्च तमाचार्य्यं प्रचक्षते ॥
मनु० अ० २ श्लो० १४

---

* पंक्ति पावन ब्राह्मणों के लक्षण इस ही ग्रन्थ के पृष्ठ ४३ में लिख आये हैं।

अर्थात् जो, द्विज बालकों को यज्ञोपवीत देकर कल्प और रहस्यों के साथ वेद पढ़ाता है, वह आचार्य्य कहाता है यह ही नहीं गुरुकुल पठनानन्तर गृहाश्रम प्रवेश के समय में भी आचार्य्य पूजन लिखा है यथाः-

## आचार्य्याय वरं ददाति

पारस्क० गृह्य ग्रौत सू० कां० १ कं०८ सू० १२

अर्थात् कन्यादान लेलेने पर आचार्य्य का दक्षिणादि द्वारा पूजन करे, यही नहीं द्विजों के प्रत्येक कर्म्म काण्ड व यज्ञ तथा शान्ति आदि पूजनों के विधानों में प्रायः ऐसे पाठ मिलते हैं कि "आचार्य्य वृणुयात्" अर्थात् आचार्य्य को बुलावे। आचार्य्य का वर्ण करे।

जैसा हम ऊपर दिखलाये हैं आचार्य्य प्रायः ग्राम से वाहिर गुरुकुलों में रहा करते थे परन्तु जहां गुरुकुल नहीं थे वहां आचार्य्य कुल अवश्य थे वे सब ग्राम के वाहिर एकान्त में ब्रह्मचारियों को शिक्षा दिया करते थे, यद्यपि वर्त्तमान काल की स्थिति पूर्व काल के सैकड़ों वर्षों का समय व्यतीत हो जाने से पूर्ववत नहीं रही है क्योंकि जहां पहिले नगर थे वहां आज उजाड़ है, जहां पहिले उजाड़ थी वहां आज सघन घन वाग वगीचे हैं जहां पूर्व काल में निर्जन स्थान था वहां आज बड़े २ शहर बसे हुये हैं, कहीं कहीं जहां पूर्व छोटे २ ग्राम व पुरवे थे वहां आज बड़े २ शहर बसे हुये हैं, इस ही तरह जहां पूर्व बड़े २ शहर थे तहां आज भयंकर उजाड़ पड़ी हुयी है, तथापि आज कल भी ये प्राचीन नगर जो ज्यों के त्यों बसे हैं वहां आचार्य्य जाति के घर सम्पूर्ण वस्ती से अलग निराले ही हैं इस से भी इस जाति की उच्चवंशत्वता प्रकट होती है। जब ये लोग सम्पूर्ण द्विजातियों को विद्या दान के देने वाले थे तब ही इन्हें अग्रदानी व अग्रदाना तथा कहीं कहीं अग्रभिक्षु भी कहा गया था क्योंकि धर्मशास्त्र में लिखा है कि :—

## सर्वेषामेवदानानां ब्रह्मदानंविशिष्यते ।

अर्थात् सम्पूर्ण दानों में ब्रह्मदान सर्व श्रेष्ठ है इसलिये इस सर्व श्रेष्ठ ब्रह्मविद्या के दातावों को अग्रदानी व अग्रदाना भी कहा गया था

सो उचित भी जान पड़ता है इस ही अग्रदानी जाति का नाम अग्र-भिक्षु भी है अतः इस विषय पर बहुत कुछ प्रमाण इस ही ग्रन्थ के पृष्ठ १५७ में लिखे जाचुके हैं तहां भी देखलेना उचित है।

क्योंकि उन प्रमाणों में से कई एक प्रमाण इस प्रकरण में भी लागू हैं।

इस आचार्य्य शुद्ध शब्द का विगड़ा हुआ रूप ही आचारज व आचारी है जयपुर राज्य में भी आचारी हैं जिन का वही काम प्रच-लित महापात्र व महाब्राह्मणों का है देश भेद व देश भाषा के कारण ये ही लोग संस्कृत विद्या के प्रचार समय में "कष्टहा" कहाते थे, जिस का अर्थ कष्ट को नाश करनेवाले के होते हैं अर्थात येही आचा-र्य्यगण मनुष्यों में पशुत्व के स्थान में मनुष्यत्व का सञ्चार करके सुख सौख्य के दाता व विपत्तियों के हर्ता थे अतएव येही कष्टहा कहाते कहाते आजकल की अविद्या अंधकार के समय में भाषा भा-षियों द्वारा कट्टयाह कहाने लग गये।

इस शब्द की मीमांसा में विद्वानों ने यह भी बतलाया है कि यह कट्टया शब्द कट्टा से बना है क्योंकि कट्टा नाम युद्ध का व कठोरता का है अतएव धर्म युद्ध में कठोरता नाम दृढ़ता के धारण करनेवाले हिन्दू-धर्म के प्रवर्तक आचार्य्यगण ही कट्टया कहाये थे अर्थात जिस में कट्टरता के भाव हों वे कट्ट कहाये थे जैसे आजकल भी कहा जाता है कि अमुक पुरुष तो बड़ा कट्टर हिन्दू है व अमुक पुरुष तो बड़ा कट्टर आर्य्य समाजी है इन दोनों वाक्यों का भावार्थ यह है कि ये दोनों ही अपने अपने धर्म में बड़े कट्टर हैं अर्थात् दृढ़ हैं, अतः सम्भव है कि मुसलमानी अत्याचार के समय ही ये आचार्य्यगण हिन्दू धर्म के नेता मुसलमानी अत्याचार की कुछ भी परवाह न करके कट्टर बने रहे होंगे तब ही यवनों ने इन्हें कट्टया कह कर सम्बोधन किया होगा क्योंकि मुसलमानों को हिन्दू धर्म के साथ अत्यन्त द्वेष था कि उन्हों ने लाखों ब्राह्मणों को कतल करा डाले, सैकड़ों ही मन्दिर तुड़वादिये और हिन्दुवों के पुस्तकागारों को जला डाले तब हिन्दूधर्म के प्रवर्तक आचा-र्यों के साथ इन्हों ने क्या न किया होगा कुछ कहते नहीं बन आता है

अतएव उस समय से ये कहे कहे जाकर तिरस्कृत किये गये थे तब से आज तक लोग इन्हें अपमान की दृष्टि से देखते हैं वह अनुचित है।

हमारी जाति अनुसन्धान के भ्रमण में प्रायः लोग हमें यह कहा करते थे कि "ये लोग मृतक के घर का धन धान्य अन्न वस्त्र १२ दिन के भीतर लेते रहते हैं अतः ये महा नीच व निन्दनीय अब्राह्मण हैं" इस पर हमने पूर्वापर विचार किया तो शास्त्र में अनेकों प्रकार के दान लेना मना लिखा है तहां १२ दिवस के भीतर भी लेना मना लिखा है परन्तु आज कल मनुस्मृति व याज्ञवल्क्य धर्म शास्त्र का समय नहीं है हज़ारों ब्राह्मण निषिद्ध से निषिद्ध दान व अन्न वस्त्र भोजन आदि प्रत्यक्ष रूप से ग्रहण कर रहे हैं अतएव जब इन के अनेकों शास्त्र विरुद्ध कर्मों के करते रहने पर भी उन में ब्राह्मणत्व बना हुआ है और वे छोटे तथा नीच व अस्पर्शनीय नहीं माने जाते हैं तब विचारे अग्रभिक्षु, अग्रदानी अग्रदाना, कट्टा, महापात्र और महाब्राह्मण तथा आचार्यों की ओर ही उंगली उठाई जाय सो क्यों? क्योंकि राजघरानों के पुरोहित व कुल गुरु लोग १२ दिवस के भीतर भी राजा महाराजाओं के यहां से सब कुछ लेते देते और खाते पीते रहते हैं।

ऐसी ऐसी अनेकों तर्क करके उन का समाधान करने से लेख बढ़ जायगा अतः हम इन ब्राह्मणों को एक उच्च ब्राह्मण समुदाय मानते हैं क्योंकि ये लोग अभक्ष्य व अपेय पदार्थों से भी सर्वथा सर्वदा वर्जित हैं अतएव श्रोत्रिय कुल होने से ये पूजनीय हैं।
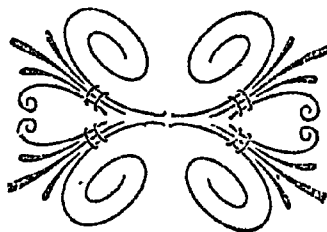
२३७ बड़नगरा :—यह गुजरात प्रदेशस्थ नागर ब्राह्मण समुदाय का नाम है, बहत्तर प्रकार के नागर ब्राह्मण होते हैं उन में से जो बड़नगर में रहे उन के समुदाय का नाम बड़नगरा प्रसिद्ध हुआ- उन नागरों के भी दो भेद हैं भिक्षुक नागर तथा गृहस्थ नागर, वीसलनगरे ब्राह्मण भी इन्हीं का एक भेद है।

२३८ बनजाई :—यह सारस्वत ब्राह्मणों की जाति में एक सर्वोच्च भेद है, यह बावन जयी शुद्ध शब्द का बिगड़ा हुआ रूप है, भट्टाचार्य्य जी एम. ए.ने अपने ग्रन्थ में "बहुयजी" शुद्ध शब्द जिस का अर्थ बहुत से मनुष्यों की यजमान वृत्ती करने वाले के होते हैं उस का बिगड़ा हुआ रूप लिखा है परन्तु हमें यह मान्य नहीं क्योंकि " बहुयजी " तथा बनजाई में बड़ा भेद है, हां "बावनजयी शुद्ध शब्द का बिगड़ा हुआ रूप बनजाई सहज में हो सक्ता है यह नाम पड़ने का कारण यह है कि दिल्ली के एक मुसल्मान बादशाह ने विधवा विवाह जबर्दस्ती चलाने के लिये हुकुम निकाला था,परन्तु सारस्वतों के जिन बावन कुलों ने उस हुकुम का प्रतिवाद करके हुकुम रद्द करवाया वे सब बावनजयी नाम से पुकारे जाकर भाषा में बनजयी कहाने लगे और बनजयी कहाते कहाते बनजाई कहाने लगगये।

२३९ बनर्जी :—यह बंगाल की ब्राह्मण जाति का एक भेद है राढ़ी ब्राह्मण समुदाय के अन्तर्गत कुलीन श्रेणी के ब्राह्मणों का यह एक भेद है यह भेद बंगाल में बड़ी प्रतिष्ठा रखने वाला है तथा भारत माता के सुपूतों के पैदा होने का ब्राह्मण कुल यही है

भारत जननी की गोद को उज्वल करने वाला ब्रह्म कुल यही है. वर्तमान काल में देश सेवा, स्वदेशाभिमान, स्वदेशप्रियता, स्वदेशानुराग और वन्दे मातरम् तथा राजभक्ति व राज सेवा करनेवाला तथा देश के लिये कष्ट सहनेवाला एक मात्र यह ही ब्रह्मकुल है अर्थात् इस जाति के भूषण तो अनेकों हैं व हुये हैं परन्तु उन में भी प्रसिद्ध स्वर्गवासी प्रातःस्मरणीय मिस्टर डबल्यू सी. बनर्जी एडवोकेट बंगाल हाईकोर्ट का नाम किस से छिपा है कि जिन्हों ने अपनी आयु ही National Congress जातीय महा सभा की सेवा में लगा दियी थी। डाक्टर गुरुदास बनर्जी जज बंगाल हाईकोर्ट, मिस्टर प्रमदाचरन बनर्जी जज युक्त प्रदेश हाईकोर्ट आदि आदि महानुभाव भी इस ही जाति के रत्न थे, उपरोक्त मिस्टर डबल्यू सी बनर्जी पण्डित रत्न की उपाधि से विभूषित थे।

भारत माता के सुपूत लोक मान्य आनरेबल बाबू सुरेन्द्रनाथ बनर्जी का नाम किस से छिपा है जिन्हों ने अपने बुद्धि बल द्वारा बंगाली मात्र को एक सूत्र में बांध लिया है वे भी इस ही ब्राह्मण वंश के शिरोमणि रत्न हैं।

**२४० बबरुकामे** :—यह कर्णाटक ब्राह्मणों का एक भेद है माइसोर राज्य में कामे एक शहर है तहां का निकास होकर बबरू में आने से ये बबरुकामे कहाये।

**२४१ ब्रह्म पाञ्चाल** :—यह उपब्राह्मणों की एक जाति है "पाञ्चाल" संज्ञक ब्राह्मणों में लिख आये हैं तहां देख लेना।

**२४२ ब्रतहारी** :—यह सनाढय ब्राह्मणों की जाति का एक पद है।

**२४३ ब्रह्मभट्ट**:—यह एक ब्राह्मण जाति है ये लोग युक्त प्रदेश में विशेषरूप से हैं यह शब्द दो शब्दोंके योग से बना है अर्थात् ब्रह्म+भट्ट्ये

दोनों मिलकर हुवा ब्रह्म भट्ट, जिसका अर्थ यह होता है कि ब्राह्मण होकर भट्ट का कार्य्य करे वह ब्रह्मभट्ट कहाता है हमने विशेष अन्वेषण के साथ देखा है कि यह ब्राह्मण जाति का एक पद है अर्थात् भट्टाचार्य्य जी एम. ए. डी. एल. प्रधान पंडित कालेज नदिया ने अपनी जाति और मत नामक ग्रन्थ के पृष्ठ ७२ में "भट्ट" का अर्थ ब्राह्मणों का एक कुल नाम लिखा है अतः यह ब्राह्मण जाति का एक पद है अर्थात् जो वैदिक कर्म काण्ड के कराने वाले तथा पुराण पाठक व काव्य रचने वाले ब्राह्मण हैं वे भट्ट कहाते हैं और यह भट्ट पद सम्पूर्ण प्रकार के ब्राह्मणों में पाया जाता है गौड़ों में भी भट्ट ब्राह्मण हैं तो गुजराती ब्राह्मणों में भी भट्ट हैं।

प्रायः द्वेषियों ने इस जाति को अब्राह्मण सिद्ध करना चाहा है पर यह निर्मूल है क्योंकि इन ब्राह्मणों में जो आचार्य हुआ करते थे उन्हें भट्टाचार्य्य की पदवी मिला करती थी तदनुसार यह पदवी बंगाल प्रान्तस्थ ब्राह्मण समुदाय में विशेष रूप से है उदाहरण के लिये बाबू योगेन्द्रनाथ जी भट्टाचार्य्य एम. ए. डी. एल. प्रधान पंडित कालेज नदिया वर्तमान में विद्यमान हैं।

द्वेषी लोग भाट व भट्ट शब्द को एक ही मान कर भट्ट ब्राह्मणों को अब्राह्मण बतलाते हैं यह उन का कथन अमाननीय है। क्योंकि भाट जाति को भी हमने इस ही पुस्तक में अलग लिखी है अतः भाट व व भट्ट यह एक जाति नहीं किन्तु अलग अलग जातियें हैं भट्ट कवि ऋषि व सूत ऋषि के वंश में से हैं यथा :-

सूताः पौराणिकाः प्रोक्ता मागधा वंशशंसकाः।
वंदिनस्त्व मलप्रज्ञाः प्रस्तावः सदशोक्तयः ॥

श्रीमद्भागवत स्कं० १० अ० ५ श्लो० ५

अर्थ सूत पौराणिक यानी पुराण जानने वाले को कहते हैं, मागध वंश वृक्ष व वंश लिपिका के रखने वाले राय भाटादि वंदिन लोग प्रस्ताव के सदश उक्ति लड़ाने वाले अर्थात् हां में हां मिलाने वाले वंदिन कहाते हैं।

इस प्रमाण से पुराणों के ज्ञाता को सूत कहते हैं और भट्ट शब्द

का अर्थ भी वैदिक संस्कार कराने वाले व पुराणों के ज्ञाता किये। अतः सूत व भट्ट एक ही हैं।

पुनः—

पुराण वक्ता सूतश्च यज्ञ कुण्ड समुद्भवः।
पुराणं पाठयामास तंच ब्रह्मा कृपानिधिः॥ १२॥

भविष्य० पु० प्र० खं० अ० १०

अर्थः—राजा पृथु के अभिषेक यज्ञकुंड से सूत जी महाराज की उत्पत्ति हुयी जो पुराण वक्ता हुये जिन्हें ब्रह्मा जी ने कृपा पूर्वक पुराण पढ़ाये।

पुनः—

कथानां निपुणो वक्ता कालविन्नयवित्कविः।
आजगाम सतं देशं सूतः पौराणिकोत्तमः॥

शिव० पु० वायवीय संहितायां उत्तर भाग अ० १ श्लो० ६

अर्थः—कथाओं के निपुण वक्ता काल और नीति के जानने वाले पौराणिकों में श्रेष्ठ कवि सूत जी वहां आये।

तंदृष्ट्वा सूतमायातं मुनयोः हृष्टमानसाः
तस्मै सामञ्च पूजांच यथा वत्समपादयन्॥१०॥

यह भी शिवपुराण ही का वचन है कि उन सूत जी को आया हुआ देख कर मुनियों ने प्रसन्न हो कर सूत जी का सम्यक प्रकार से पूजन किया अतः यदि सूत जी ब्राह्मण न होते तो उन का पूजन ऋषि गण न करते इस लिये सूत जी की सन्तान भट्ट भी ब्राह्मण हैं।

पुनः—

अंगार संश्रयाच्चैव कविरित्यपरोभवेत्।
सहज्वाला भिरुत्पन्नो भृगुस्तस्माद् भृगुःस्मृतः॥१०६॥
ब्रह्मणस्तु कवेः पुत्राः वारुणास्तेप्युदाहृताः।
अष्टौ प्रसव जैर्युक्ता गुणैर्ब्रह्मविदः शुभाः॥१३२॥

कवि काव्यश्च धृष्णुश्च बुद्धिमानुशनास्तथा।
भृगुश्च विरजाश्चैव काशी चोग्रश्चधर्मवित ॥ ३३॥

महाभारत अनुशा० पर्व अ० ८५ श्लो० १०६, १३२-१३३

अर्थः—अंगारों में नियत थोड़ी ज्वाला से कवि ऋषि उत्पन्न हुये ॥ १०६ ॥ ब्रह्मज्ञानी ब्राह्मण हुये ॥ १३२ ॥ १ कवि, २ काव्य, ३ धृष्णु ४ उष्णा, ५ भृगु ६ विरज ७ काशी और ८ उग्र ये आठों पुत्र कवि के हुये ॥ १३३ ॥

मार्कण्डेय पुराण के आधानुसार जैसा ऋषि जाति के साथ जाति अन्वेषण में हम लिख आये हैं चाक्षुप मन्वन्तर के सप्तर्षियों में काव्य व विरजा कवि के पुत्र सप्तर्षि सप्तर्षि ही हैं अतः कवि सूत की सन्तान भट्ट भी ब्राह्मण हैं ऐसा सिद्ध होता है लोगों ने भाट व भट्ट एक ही समझ लिया है अतः इन दोनों में भेद प्रदर्शक " ब्रह्म" शब्द लगा कर इस जाति का नाम ब्रह्म भट्ट प्रसिद्ध हुवा सो भेद केवल कर्म विशेष से है।

पुनः—

भट्टाहारा इवयतो निवसिष्यन्ति सुद्विजाः ।
अतो भट्टहरं नमा पुरस्यास्य भविष्यति ॥ ४० ॥

पद्म पुराण पाताल खंड एक लिंग क्षेत्र महात्य श्लो० ४० तथा ब्रा० मा० पृ० ४११०

अर्थः—भट्ट ब्राह्मणों को दान देने से भयहरण करने वाले तुम हुये इस लिये " भतहर " ऐसा पुर का नाम होगा।

संतिये वेदिकाशीर्भिर्नागान्भय समागमात ।
निर्भयी करणात् स्थित्यावेदाप्यपकारिणः ॥ ४१ ॥

अर्थः—इस पुर में भट्ट ब्राह्मण जो हरि सरीखे निवास करेंगे इस कारण इस पुर का दूसरा नाम भट्टहर होवेगा।

मारवाड़ प्रदेश के इतिहास महकमे के सुपरिन्टेन्डेन्ट मुशी देवी प्रसाद जी ने अपनी रिपोर्ट के पृष्ठ ३६१ में इस जाति को ब्राह्मण मान

कर लिखा है कि " कविवंशी और ब्रह्मराव वंशी दोनों एक हैं पर ब्रह्म-भट्ट अन्तर वेद और बुन्देल खंड में विशेष हैं इन का आचार विचार गौड़ व कान्य कुब्ज ब्राह्मणों के सदृश है।

Hindu Castes and Sects नामक अंग्रेज़ी ग्रन्थ के पृष्ठ ८३ में ग्रन्थ कारने भट्ट शब्द को देशस्थ ब्राह्मणों का कुल नाम लिखा है।

सहारनपुर के लेट कलेक्टर मिस्टर सी. एस. विलियम क्रुक बी. ए. ने अपनी पुस्तक में महाभारत का हवाला देते हुये भट्ट जाति को ब्राह्मण मानी है।

मिस्टर नेस्फ़ील्ड एम. ए. लेट डाइरेक्टर आफ़ पबलिक इन्स्ट्रक-शन युक्त प्रदेश इलाहाबाद ने भी अपनी पुस्तक कास्ट सिस्टम में भी भट्ट जाति को ब्राह्मण वर्ण में लिखी है।

लेट कलेक्टर मिस्टर क्रुक बी ए ने भी अपनी पुस्तक के पृष्ठ २१ में ब्रह्मभट्ट जाति को ब्राह्मण वर्ण में लिखी है यथाः—

There are seueral facts in supports of this theory, that one of the sub castes is called Baram or Biram Bhutta.

अर्थात् ब्राह्मणों का एक उपभेद ब्रह्मभट्ट भी है।

इस ब्रह्मभट्ट वंश में ही दामोदर भट्ट के बेटे सारंगधर भट्ट थे जिन्हों ने अपने नाम पर सारंगधर वैद्यक का प्रसिद्ध ग्रन्थ बनाया है जिन्हें अनेकों इतिहास लेखक विद्वानों ने ब्राह्मण वर्ण में माना है।

मारवाड़ राज्य की ओर से जातियों की एक सूची छपी है उस में भी ग्रन्थ कर्ता ने ब्रह्मभट्टों को ब्राह्मण वर्ण में माना है। मान्यवर मुंशी दे० प्र० जी ने अपने ग्रन्थ के पृष्ठ ३६० में ब्रभट्ट जाति को ब्राह्मण वर्ण में मानी है।

हमारी निज की सम्मति लोक मतानुसार भी इस जाति के लिये ब्राह्मण वर्ण की है।

Brahma Bhatt Vansh Bhushan P. Shankar Dayaluji Sharma, Cawnpur.

ब्रह्मभट्ट वंश भूषण पं. शङ्कर दयालुजी शर्म्मा, कानपुर.

Lakshmi Art, Bombay.

पाठक ! सन्मुख चित्र में जिस ब्रह्म मूर्ति के दर्शन आप कर रहे हैं वे ब्रह्मवंश शिरोमणि पं० शंकरदयालु जी ब्रह्मभट्ट हैं आप के पिता जी का नाम पं० गिरधारीलाल जी शर्म्मा था आप का आदि स्थान शिवगुण पर ज़िला इटावा परन्तु आप का मातुल गृह ग्राम सहार ज़िला इटावे में था अतएव वहां ही रहना सहना विशेष होता था तदनुसार उपरोक्त चित्र लिखित पंडित जी का जन्म मिती पोष कृष्ण ८ संवत १९१७ में इस ही ग्राम में हुआ था परन्तु सम्वत १९३६ में जब आप १९ वर्ष के थे तब आप के पिता जी ने कानपुर में आकर निवासस्थान नियत किया तब से आज तक स्वर्गवासी पं० गिरधारीलाल जी तथा उन के चित्र लिखित सुपुत्र कानपुर में निवास कर रहे हैं। काल की गति विचित्र है अर्थात् मिती पोष शुक्ला अष्टमी मंगलवार संवत् १९६२ में पं० गिरधारीलाल जी को स्वर्गवास होगया परन्तु आप के सद् उद्योगों से पं० शंकरदयालु जी की शिक्षा का प्रबंध अच्छा होता रहा था साथ ही में आप एक तीव्र बुद्धि भी थे अर्थात् १३ वर्ष की उम्र में आपने मिडिल पास करलियी थी तत्पश्चात् पं० हुक्कनलाल जी शास्त्री जी के निकट संस्कृत विद्याध्ययन करना आरम्भ करके पं०नृसिंहदत्त जी शास्त्री व पं० शिवदत्त जी से व्याकरण व काव्यादि पढ़कर आप एक अच्छे योग्य विद्वान् होगये परन्तु आप की स्वाभाविकी दृष्टि सदैव से परोपकार व उदारता पर ही रहा करती थी तदनुसार संवत १९४१ में आप ने अपने स्वात्मबल पर नौघरा कानपुर में एक संस्कृत पाठशाला स्थापित किये तिस में आज सम्वत १९७२ तक के ३१ वर्ष के काल में अनेकों विद्यार्थी व्याकरण, गणित और काव्यादि में उत्तीर्ण होचुके हैं।

जब पंडित जी ३४ वर्ष के थे तब विक्रम सम्वत १९५१ आषाढ़ कृष्णाष्टमी मंगलवार को आप के एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिस का नाम गदाधरप्रसाद रक्खा गया था ये भी एक अनुभवी परमोदार पिता के एक सुयोग्य विद्वान् पुत्र हैं जिन्होंने छोटी सी अवस्था में ही नामक परिक्षायें पास करके पिता जी के गौरव को बढ़ाया है अस्तु !

उपरोक्त पं० शंकरदयालु जी का जीवन ब्राह्मण जाति के लिये

अनुकरणीय है कि १५ वर्ष की उमर से आज ५५ वर्ष की आयु के ऐसे महाकाल में आपने कभी वेश्या नृत्य नहीं देखा. इस के विपरीत आगरे में गतवर्ष हम सुन आये थे कि " आगरे में मुहर्रम का दंगा होजाने से हिन्दूमात्र ने सम्मति करके वेश्या नृत्य उठा देने की शपथ लियी थी " परन्तु लिखते दुःख होता है कि " इस शपथ के विपरीत वेश्या नृत्य कराने वाले एक दो सनाढ्य व गौड़ ब्राह्मण सज्जन थे*"

.. उपरोक्त पण्डित जी सदैव अपने कुटुम्बियों से व शिष्य वर्गों से इस सर्वनाशिनी पृथा के समूल उखाड़ देने का सदुपदेश करते रहते हैं तदनुसार आप में धर्म्मज्ञता के भाव ऐसे हैं कि अब तक न्यून से न्यून ५० विद्यार्थियों का यज्ञोपवीत आप अपने निज व्यय से करा चुके हैं. यह ही नहीं अपने पुत्र के यज्ञोपवीतादि उत्सवों पर कर्णपुरस्थ संस्कृत पाठशाला के अनुमान तीनसौ विद्यार्थियों की व्याकरणादि शास्त्रों में परीक्षानन्तर भोजन व दक्षिणा स्वरुप पारितोषिक द्वारा सत्कार भी आपने ही किया था।

आप जैसे अन्य २ परोपकारी कार्य्य करते रहते हैं तैसे ही स्वजाति सेवा में भी आप बड़े उत्साही हैं तदनुसार आप ने ब्रह्मभट्ट सभायें यत्र तत्र स्थापित करायीं और ब्रह्मभट्टों के ब्राह्मणत्व समर्थन में आपने सम्वत १९६० में खजूर गांव ज़िला रायबरेली में शास्त्रार्थ किया तथा सम्वत १९६८ में भगवानगढ़ी ज़िला अलीगढ़ में पुनःआप को शास्त्रार्थ करना पड़ा जिन दोनों ही स्थानों में आप का पक्ष प्रबल रहा अतः ऐसे परोपकारी महापुरुष विद्वान् का जीवन आदर्श रूप व अनुकरणीय है। ओं शम् !

२४४ **बंधुल** :—यह राजपूताना की एक ब्राह्मण जाति है भट्ट मेवाड़ा समुदाय में से यह पच्चीसे ब्राह्मणों का एक भेद है इन का आचार विचार व रीति भांति भी भट्ट मेवाड़ों से मिलती जुलती सी है।

---

* उन का ऐसा महातम नाम नहीं लिखना चाहते हैं। ग्रन्थकर्त्ता

२४५ वागड़ा :—यह गौड़ ब्राह्मण समुदायान्तर्गत एक ब्राह्मण जाति है, राजपूताना प्रान्तस्थ जयपुर राज्य में वागड़ एक प्रदेश है उस प्रदेश के रहने वाले वागड़ा ब्राह्मण कहाते हैं इन की विद्यास्थिती बहुत ही निकृष्ट दशा की है इन का मुख्य धन्दा खेती करके जीवन निर्वाह करना है खान, पान में मांस, शराब तो नहीं खाते हैं परन्तु सखरे निखरे का विवेक बहुत कम है खेती, पशुपालन, बैल गाड़ी चलाना व नौकरी करना इन का मुख्य धन्दा है। अतएव उच्च ब्राह्मण समुदाय इन्हें अपने सदृश नहीं मानता है। ये लोग प्रायः नौकरी भी करते रहते हैं कांदा (प्याज) लहसुन आदि इन में खाये भी जाते हैं और नहीं भी, इन में चमड़े के डोल का पानी कृषक तो पीलेते हैं परन्तु इन में का पढ़ा लिखा समुदाय इस से घृणा भी प्रकट करता है विद्या के अभाव से इन में के ग्रामीणों में कई कुरीतियें प्रवेश कर गयी हैं जिन्हें देखकर लोग इन से परहेज़ करते हैं पर ऐसा होना उचित नहीं है क्योंकि ये भी तो हमारे भाई ही हैं।

२४६ वागची :—यह बंगाल के वारेन्द्र ब्राह्मण जाति का एक कुल नाम है उस देश में ये लोग अपने अपने नामों के अन्त में अपने अपने कुल नामों को अवश्य लगाते हैं जिस प्रकार युक्त प्रदेश व राजपूताने में ब्राह्मण कुलों की पदवियें मिश्र, जोषी, पाठक, दुबे तिवाड़ी आदि आदि हैं तैसे ही बंगाल में बनर्जी, वागची और चक्रवर्ती आदि आदि हैं।

२४७ वाड़वा :—यह एक ब्राह्मण जाति है कहीं कहीं पर ये वड़वा ब्राह्मण भी कहे जाते हैं दसों प्रकार के ब्राह्मणों में से गौड़ ब्राह्मण समुदायान्तर्गत यह एक जाति है सृष्टि के आदि उत्पन्न सप्तर्षियों में अत्रि ऋषि का नाम दूसरे स्थान पर है जिन के पुत्र वाड़व ऋषि की सन्तान वाड़वा ब्राह्मण हैं यथा :-

अत्रेर्भून्महातेजा वाड़वो मानसः सुतः।
तमुवाचत्रिस्तनयं प्रजां सृजम मेच्छया ॥

अत्रि ऋषि के मानस पुत्र वाड़वा ऋषि से जो सन्तान हुयी वेह वाड़वा ब्राह्मण कहायी वानगंगा के किनारे किनारे यह ब्राह्मण सन्तान रहने लगी और उस ग्राम का नाम वाड़वपुर हुआ। अमरकोष में लिखा है कि :—

आश्रमोऽश्री द्विजात्यग्र जन्मभूदेव वाड़वाः।
विप्रश्च ब्राह्मणोऽसौ षट्कर्म्मा यागादिभिर्वृतः॥

अम० को० ब्रा० वर्ग० द्वि० कां० श्लो० ४

अर्थात् द्विजाति, अग्रजन्मा, भूदेव, वाड़व, विप्र, और ब्राह्मण ये ६ नाम ब्राह्मण के हैं इस से भी वाड़वे ब्राह्मण ब्राह्मण सिद्ध होते हैं। पुनः—

स्नात्वा नित्य क्रियां कृत्वा वृणुया दृश वाड़वान्।
जितेन्द्रियान सदाचारान कुलीनान सत्यवादिनः॥

दुर्गा सप्तशति

अर्थात् स्नान संध्योपासनादि नैत्तिक कर्म करके जो जितेन्द्रिय सदाचारी कुलीन तथा सदाचारी वाड़वे ब्राह्मण हों उन का पूजन करे।

ये लोग खानपान से पवित्र व साधारण स्थिती की ब्राह्मण जाति मुरादाबाद, सहारनपुर और बिजनौर आदि आदि जिलों में विशेष रूप से वास करती है, इस जाति में गोसाई की पदवी उच्च कुल विद्या सम्पन्न समुदाय का संकेत है. इन में एक भेद भारदी गोसांइयों का भी है जो एक प्रतिष्ठित समुदाय माना जाता है ये इन की गुरु सम्प्रदाय है, इन के १० गोत्र हैं।

| | |
|---|---|
| १ चान्द्रात्रे | ६ पाराशर |
| २ भृगुवाल | ७ प्रचेता |
| ३ गौतम | ८ कपिजयाल |
| ४ पुलस्त्य | ९ कर्दम |
| ५ अत्रि | १० अंगिरा |

भाषा भाषियों द्वारा इनके बिगड़े हुए रूप प्रचलित हो रहे हैं।

इस ही का अपभ्रंश रूप बड़वा है, इस ही नाम की एक जाति राजपूताने में है जिन का मुख्य काम क्षत्रियों के वंश परंपरा का लेखा व विवर्ण रखना है क्षत्रिय राजावों ने इन के इस कार्य्य से प्रसन्न होकर इन्हें बड़ी बड़ी आजीविकायें दियी थीं कि निर्वाहार्थ कुछ प्रयास न करके ये लोग अपने "वंश परम्परालेखक" कार्य्य में दत्त चित्त लगेरहें परन्तु इन आजीविकावों के कारण इन की सन्तानें मूर्ख रहने लगीं तथा सृष्टि के बढ़ने से इन की सन्तानें भी भूखी मरने लगीं कहने का प्रयोजन यह कि न उस समय के से राजा ही रहे और न साक्षर बड़वे ब्राह्मण ही रहे, समय पाकर इस जाति की दशा बहुत ही गिरगयीं। हां इन के पास बड़े बड़े प्राचीन वहीखाते हैं जिन में कुछ विवर्ण मिलतातो है परन्तु प्रथम तो ये लोग किसी विवेकी मनुष्य को लिखाते ही नहीं हैं द्वितीय उन वहियों की भाषा व लेख ऐसा विचित्र है कि :—

आला वँचे न आप से और सूखा वँचे न सागे। इस कहावत के अनुसार न तो उन वहियों के गीले अक्षर ही स्वयं लेखक से नहीं वँचते हैं तो सूखने पर तो लेखक का पिता भी आजाय तो उस से भी वह लेख न वँचे।

अपनी जाति यात्रा के भ्रमण में हमने अनेकों बड़वों की प्राचीन वहियें सुनी उस से बड़ी कठिनता के साथ हमने कई बातों का सार निकाला था। सर्वत्र हम बड़वों से पूछा करते थे तो कहीं किसी ने अपने को ब्राह्मण वर्ण में बतलाया तो कहीं किसीने अपने को क्षत्रिय वर्ण में बतलाया परन्तु हमारी सम्मति में इस जाति को हम ब्राह्मण वर्ण में मान्ते हैं।

**२४८ वाराहगांव ब्राह्मण** :—यह गौड़ ब्राह्मणों की जाति का एक छोटा सा समुदाय है, विशेष रूप से ये लोग जयपुर

राज्य के निवाई मालपुरा, चैनपुरा, जुझारपुरा, हींगोट्या, बगड़ी और गोंदेर आदि आदि खेड़ों में हैं इस समुदाय की लोक संख्या दस हजार से कुछ अधिक है। इस जाति के शिरोमणि मान्यवर पं० बल्देवजी जलधारी महाराजाश्रित जयपुर हैं।

इन की उत्पत्ति का लोक मतानुसार ऐसा विवर्ण मिलता है कि इन्द्रप्रस्थ दिल्ली के एक तुंवर महाराज यज्ञ करते थे परन्तु प्रायः यज्ञ पूर्ण न होने पाता था और कुछ न कुछ विघ्न आपड़ता था अतएव महाराज दुखित होकर महात्मा च्यवन ऋषि के आश्रम को गये इन महात्मा का आश्रम रिवाड़ी से बारह कोस की दूरी पर नारनौल और कानौड के बीच में ढूसी पहाड़ी पर था। तहां आकर राजा ने महात्मा जी से अपना सब कुछ दुःख कह सुनाया तब महात्मा जी ने अपने शिष्यों में से १२ शिष्यों को यज्ञ रक्षार्थ भेजा, राजाने यज्ञ समाप्ति पर उन बारहों शिष्यों के प्रति एक एक ग्राम दिया और बहुत कुछ धन धान्य से उन का सत्कार किया, तब समृद्धि पाकर वे बारहवों शिष्य गृहस्थी होकर अपने अपने ग्रामों में जा बसे जिन बारहों की सन्तान उन बारह गांवों के नामों से प्रसिद्ध हुयी यथाः—

| | | |
|---|---|---|
| १ वौलीवाल | ५ दुदोरिया | ९ खलवाणिया |
| २ कंकाल | ६ कांदला | १० झाझड़ा |
| ३ चानड्या | ७ पूवाणिया | ११ महरान्या |
| ४ खुडाया | ८ पनणांवां | १२ पधान |

ये लोग इन्हीं को अपने गोत्र मान्ते हैं विवाह शादी के समय इन्हीं को बचाकर विवाह करते हैं ये लोग सदाचार युक्त हैं बागड़ा ब्राह्मणों से इन का पद ऊंचा है इन की पदवियें व कुल नाम यह हैं :—

| | |
|---|---|
| १ व्यास | ४ चौकायत |
| २ तिवाड़ी | ५ चौधरी |
| ३ जोशी | ६ ठाकर |

इन की कुल देवी चौली माता है ये लोग वैश्नव हैं मांस शराब से बिलकुल घृणा करते हैं तथा स्पर्श दोष तक समझते हैं इन में नाता नहीं होता है इनकी बिरादरी में लहसुन तो सब खालेते है पर कांदा प्याज यज्ञोपवीत धारी तो नहीं खाते हैं वरन स्त्रियादि खा लेती हैं। यज्ञोपवीत सब कोई पहिनते हैं उन में जो कोई १५ व सोलह वर्ष तक यज्ञोपवीत नहीं पहिनता है तो उस पर जाति का दबाव डाला-जाता है यह लोग प्राय: खेती कर के जीविका करते हैं इन में चरस का पानी पीते भी हैं और नहीं भी कच्ची रोटी चौके में खाते हैं इन के यहां फेरे ७ होते हैं, लड़का लड़की पैदा होने पर सूतक एक महीने का माना जाता है। इस जाति में विद्या का अभाव है।

**२४१ वारी** :—यह सिंध प्रदेश के सारस्वत ब्राह्मण समुदाय का एक भेद है यह बारह शुद्ध शब्द का बिगड़ कर वारी बना है जिस का अर्थ बारह कुल होता है अर्थात् सिंधी सारस्वतों में बारह कुलों का एक समुदाय है जिसे बारही कहते कहाते वारी कहने लग गये हैं।

इन का धन्दा छीला (ढाक) के पत्तों का व्यापार करना व नागर बेल के पान ( ताम्बूल ) की कृषी करना मात्र रहगया है इस कार्य्य के कारण इस जाति में विद्या का अभाव इतना बढ़गया है कि लोग इन्हें शूद्र समझने लगे हैं परन्तु यह काम इस ब्राह्मण जाति ने मुसल्मानों के व बौद्धों के अत्याचार के समय ग्रहण किया था वही समय पाकर अब इन का एक प्रधान धन्दा हो गया।

यद्यपि उपरोक्त दोनों वस्तुवों के व्यवसाय को देखने से भी कहा जासक्ता है कि ये दोनों ही ढाक तथा ताम्बूल अति पवित्र व देवतावों पर उत्तम २ पूजन कालों में चढ़ाये जाते हैं जिस से ढाक व ताम्बूल अति पवित्र व देवतावों के पूजन तथा सम्पूर्ण यज्ञादिकों में अत्यावश्यक हैं अतएव इस जाति ने यवनों के अत्याचार के समय

अपनी जीवरक्षार्थ, अन्य धन्दों की अपेक्षा परम पवित्र पान व ताम्बूल के व्यवसाय को स्वीकार करलिया था तिस में संलग्न रहने के कारण ये लोग अपनी असलियत को भूलगये तथा भारत में परस्पर वैमनस्य होने की दशा में लोगों ने तुकबंधी करके "नाई बारी" इन्हें कहने कहाने लगे, तदनुसार ही ये लोग भी अपने को ऐसा ही समझने लगे। हम अपने भ्रमण में कई विवेकी विद्वानों से मिले उन्हों ने भी आजकल की प्रसिद्ध बारी जाति को ब्राह्मण वर्ण में बतलाया था तदनुसार हम भी इन्हें ब्राह्मण वर्ण में मानते हैं अतएव अपनी असल स्थिति में आने के लिये इस जाति को अपने में की कुरीतियें दूर करके स्वजात्युन्नत्यर्थ उठना चाहिये।

ऐसा भी लेख मिला है कि ब्रह्मा जी एक समय यज्ञ करते थे उस समय समिधावों का अभाव हो गया तब उस समय आज्ञा हुयी कि हे ब्राह्मणो! समिधाओं के लिये काष्ठ आना चाहिये तदनुसार बड़ी ही शीघ्रता से इन ब्राह्मणों ने अपने घरों से अतुल ढाक काष्ठ लाडाला क्यों कि उस समय ये लोग अपने अपने घरों में भी प्रायः ढाक की लकड़ी ही जलाया करते थे क्यों कि आम, ढाक आदि आदि की लकड़ियें शुद्ध मानी गयी हैं अतएव ब्रह्मा जी ने इन से उचित यज्ञ काष्ठ की प्राप्ति से अति प्रसन्न होकर इन्हें "वर" कहा था जिसका अर्थ श्रेष्ठ का है परन्तु हिन्दी वालों ने इन्हें इन के श्रेष्ठत्व के कारण "वरी" कहा, वही "वरी" समय पाकर वारी व बारी कहा जाने लगा।

भारत में द्वेष का अड्डा बहुकाल से है अतएव किसी एक इतिहास लेखक ने इस जाति के विरुद्ध लिखकर इन्हें नीच वर्ण भी बतलाने का उद्योग किया है पर ऐसा लेख हमें माननीय नहीं है, शेष सप्तखंडी ग्रन्थ में लिखेंगे।

**२५० बारेन्द्रः—** यह बंगाल की एक ब्राह्मण जाति है। बंगाल के एक भाग का प्राचीन नाम बारेन्द्र था जिस में आजकल

के प्रसिद्ध शहर राजशाही, पबना और बोगरा हैं, इन्हीं जिलों में अति कर्मेंष्ठी मंत्र शास्त्र के वेत्ता गौड़ ब्राह्मण थे वे बारेन्द्र कहाये जो दो शब्दों के योग से बना है अर्थात् वारि और इन्द्र ये दोनों मिल कर हुवा वारेन्द्र अर्थात् वे ब्राह्मण जो जल के स्वामी थे व यों कहिये जो मंत्र बल से वर्षा बरसा दिया करते थे वे वारेन्द्र कहाते कहाते वरेन्द्र कहाने लग गये और उन्हीं के नाम से उस भाग का नाम भी वारेन्द्र प्रसिद्ध हुवा था।

परन्तु ऐसा भी लेख मिलता है कि ये लोग बंगाल प्रान्तस्थ राढ़ी ब्राह्मण समुदाय में से हैं बंगाल के राजा आदिसुर ने कन्नौज से पांच ब्राह्मणों को यज्ञ करणार्थ बुलाया था और फिर राजा ने यहां उन का मान्य अधिक करके उन्हें वहां ही रख लिये थे।

इन के कुल नाम ये हैं।

१ लहीरी २ भादरी ३ सनयाल
४ मैत्र ५ बागची

इस के अतिरिक्त ये भी उपाधि नाम हैं।

१ भट्टाचार्य्य २ मजूमदार ३ जोवादार
४ राय ५ चौधरी

इन वारेन्द्रों का एक भेद "काप" भी है जिन के विषय जाति अन्वेषण प्रथम भाग में लिखा जा चुका है तहां देख लेना।

वारेन्द्र ब्राह्मणों में बड़े २ जमींदार व राजे भी हुये हैं अर्थात् नेटोर के राजा के पास ईस्टइन्डिया कम्पनी के समय मुख्य बंगाल का तृतीयांश भाग था, इन के पास पुराना पुतिया की जिमीन्दारी थी जिस की स्वामिनी विधवा महारानी श्रीमती शरत सुन्दरी को कौन नहीं जानता होगा कि जो अपनी दान शीलता व उदारता के कारण भारत की प्रातः स्मरणीय देवियों में से एक थीं।

मुक्तागाछा के प्रसिद्ध जमींदार भी इस ही वंश के थे। बाबू मोहनीमोहन राय प्लीडर बंगाल हाईकोर्ट तथा मेम्बर सुप्रीम लेजिस्लेटिव कौंसिल भी वारेन्द्र वंश शिरोमणि थे।

**२५१ वाल्मीक गौड़ :**—जिन ब्राह्मणों ने वाल्मीकि कायस्थों के यहां की यजमान वृत्ती धारण कियी वे वाल्मीकि गौड़ कहाये। परन्तु इस ही नाम की एक ब्राह्मण जाति गुजरात खेड़ा केम्बे, और ईडर आदि जिलों में विशेष है जो कहीं कहीं खेती व कहीं कहीं भिक्षावृत्ति द्वारा निर्वाह करते हैं।

**२५२ बावनजयी :**—यह सारस्वत ब्राह्मणों की जाति का भेद है इन का विवर्ण "बनजाई" स्थम्भ में लिखा जाचुका है।

**२५३ बासिष्ठी गौड़ :**—जिन गौड़ ब्राह्मणों ने वासिष्ठ कायस्थों के यहां की यजमान वृत्ति धारण कियी वे बासिष्ठी गौड़ कहाये।

**२५४ ब्राह्मण बढ़यी :**—यह शिल्पकर्म करने वाले ब्राह्मणों की एक जाति है इस धन्दे को करनेवाले ब्राह्मण ओझा पदधारी विशेष हैं यह जाति उपपाञ्चाल ब्राह्मणों की एक जाति है तथा ऐसे भी प्रमाण मिलते हैं कि ब्राह्मण ऋषि विश्वकर्म्मा द्वारा उत्पत्ति होने के कारण वीर्य्य प्रधानता के नियमानुसार भी ये ब्राह्मण हैं इन के विषय पाञ्चाल ब्राह्मण स्थम्भ में भी लिखा जाचुका है। तथापि कुछ प्रमाण यहां भी लिखे जाते हैं :—

विश्वकर्मा प्रभासस्य पुत्रः शिल्पी प्रजापतिः।
प्रासाद भवनोद्यान प्रतिमा भूषणादिषु।
तड़ागा रामकूपेषु स्मृतः सोऽमरवर्धकिः॥

मत्स्य पुराण अ० ५ श्लो० २७, २८

प्रभास के पुत्र शिल्प प्रजापति विश्वकर्म्मा हुये यह विश्वकर्म्मा देवतों के वर्धकि हैं। महल, भवन, वाटिका, पत्थर और काठ आदि की प्रतिमा, सुवर्णादि के आभूषण तड़ाग ( तालाब ) बगीचे और कुयें आदि आदि धन्दों को करनेवाले हैं।

बृहस्पतेस्तुभगिनी वर स्त्री ब्रह्मचारिणी।
योगसक्ता जगत्कृत्स मसक्ता विचरत्युत॥
प्रभासस्य तु भार्या सा वसूनामष्टमस्यच।
विश्वकर्मा महाभागस्तस्यां जज्ञे प्रजापतिः॥
कर्ताशिल्पसहस्राणां त्रिदशानां च वर्धकिः।
भूषणानां च सर्वेषां कर्ता शिल्पवताम्वरः॥
यः सर्वेषां विमानानि देवतानां चकारहे।
मनुष्याश्चोपजीवन्ति यस्यशिल्पं महात्मनः॥

विष्णुपुराण प्रथम अंश अ० १५ श्लो० ११८-१२१

बृहस्पति की बहिन सुन्दरी और ब्रह्मचारिणी थी। वह योग के बल से सब जगत् में घूमती थी। वह वसुओं में आठवें वसु प्रभास की स्त्री थी। उस के गर्भ से विश्वकर्मा नामक प्रजापति उत्पन्न हुये। वह सहस्रों प्रकार के शिल्पों के कर्ता हैं। वह ही सब शिल्पियों में श्रेष्ठ विश्वकर्मा देवतों के वर्धकि हैं। सब भूषण बनाने की विद्या भी उनसे ही चली है। उन्हीं ने देवतों के विमान बनाये हैं। उन्हीं की शिल्प के आधार से जगत् में अनेक मनुष्य जीविका करते हैं।

विश्वकर्मा प्रभासस्य विख्यातो देव वर्धकिः॥

गरुड़ पुराण अ० ६ श्लो० ३४

अर्थात् देवतों के वर्धकि विश्वकर्मा प्रभास के पुत्र थे। आगे विश्वकर्मा के पुत्रों का वर्णन किया जाता है।

"तस्यपुत्रास्तु चत्वारस्तेषान्नामानि मेशृणु ।
अजैकपादहिर्बुध्नस्त्वष्टारुद्रश्च वीर्यवान् ॥

विष्णुपुराण १ अं० अ० १५ श्लो० १२२

विश्वकर्मा के चार पुत्र हुये तिनके नाम यह हैं । १ अजैकपात् २ अहिर्बुध्न ३ त्वष्टा और ४ रुद्र । मत्स्यपुराण के मत से इन चारों के नाम इस रीति से हैं ।

"अजैकपादहिर्बुध्नो विरूपाक्षोऽथरैवतः ।

मत्स्य पु० अ० ५ श्लो० २८

अर्थात् अजैकपात्, अहिर्बुध्न, विरूपाक्ष और रैवत, इस मत से त्वष्टा का नाम विरूपाक्ष और रुद्र का नाम रैवत सिद्ध होता है । किन्तु और सब पुराणों में वह ही नाम लिखे हैं जो ऊपर लिख आये हैं ये ही प्रमाण इस ही प्रकार और भी अनेक पुराणों में लिखे हैं किन्तु उन को लिख कर वृथा ग्रन्थ बढ़ाना उचित नहीं जान पड़ता क्योंकि सब में इतनाही प्रयोजन है ।

"त्वष्टुश्चाप्यौरसः पुत्रो विश्वरूपो महायशाः ।

गरुड़पुराण अ० ७ श्लो० ३५

विश्वकर्मा के पुत्र त्वष्टा के विश्वरूप नामक पुत्र थे और एक कन्या थी ।

"त्वाष्ट्री तु सवितुर्भार्य्या वड़वारूपधारिणी ।
असूयत महाभागा सान्तरिक्षेऽश्विनावुभौ" ॥

महाभारत आदि पर्व अ० ६६ श्लो० ३६

त्वष्टा की पुत्री सूर्य की स्त्री थी उस ही के पुत्र दोनों अश्विनीकुमार हैं जो देवतावों के वैद्य हैं ।

अब विश्वकर्मा का वंशानुक्रम उक्त प्रमाणों के आधारानुसार इस प्रकार सिद्ध होता है ।

पैतामहोमनुर्देवस्तस्य पुत्रः प्रजापतिः ॥
तस्याष्टौ वसवःपुत्रास्तेषां वक्ष्यामिविस्तरम् ॥

महाभारत आदि पर्व अ० ६६ श्लो० १७ के अनुसार विश्वकर्मा की सन्तान निम्न लिखित हैं ।

| | |
|---|---|
| १ ब्रह्मा | २ स्वायम्भुवमनु |
| ३ प्रजापति | ४ प्रभास |
| ५ विश्वकर्मा | ६ अजैकपात् |
| ७ त्वष्टा | ८ विश्वरूप और त्वाष्ट्री कन्या त्वष्ट्री के अश्विनीकुमार |

उपरोक्त आधारानुसार त्वष्टा ऋषि की सन्तान बढ़ई हैं ब्राह्मण विश्वकर्म्मा की सन्तान होने व बढ़इयों का गोत्र त्वष्टा होने के कारण बढ़ई लोग ब्राह्मण हैं ऐसा सिद्ध होता है ।

किसी किसी आधुनिक विद्वान् ने बढ़ई जाति को संकर वर्णी भी लिखा है परन्तु यह लेख उपरोक्त प्रमाणों की अपेक्षा पुष्टतर न होने की दशा में हमें स्वीकार नहीं है ।

प्राचीन परंपरा से बढ़ई जाति में यज्ञोपवीत का प्रचार हम देखरहे हैं तथा हमारी जाति यात्रा में कहीं २ किसी २ निष्पक्ष विद्वान् ने हमें यह भी सम्मति दियी है कि बढ़ई जाति उप ब्राह्मण वर्ण में है तद्वत हम भी मान्ते हैं । परन्तु जहां ब्राह्मण ऋषि की सन्तान बढ़इयों का पता लगता है तैसे संकर व शूद्रवर्णी बढ़इयों का भी पता लगता है जो खान पान व सदाचार से भी भ्रष्ट हैं यहां तक कि उन में से बहुत से मैले की व कचरे की गाड़ियों तक की मरम्मतें करते रहते हैं उन संकर वर्णी बढ़इयों को हम शूद्रवर्ण में रखते हैं ।

न्याय यह बतलाता है कि समय के हेर फेर से व देश में कला कौशल व मिल व कारखानों के बढ़ने से शिल्प कर्म्म को एक लाभ दायक धंदा समझ कर सब ही प्रकार के ब्राह्मणों ने शिल्प कर्म्म को करना आरम्भ कर दिया अतः उन्हें बढ़ई व लुहार हम न मान कर शुद्ध ब्राह्मण ठहराते हैं क्यों कि हमारे जाति अन्वेषण में कई ब्राह्मण कुल हमें ऐसे मिले हैं जो कहीं ओझा जो कहीं झा, और कहीं केवल बढ़ई ही समझे जाते हैं उन कुलों के मुखियाओं से हमने अपने जाति अन्वेषण के २५१ प्रश्नों में से कई प्रश्न किये और उन का उत्तर मिलने पर हमें निश्चय हुआ कि शिल्प कर्म्म में प्रवृत्ति रखने वाला ब्राह्मण जाति का एक बड़ा भारी समुदाय भारतवर्ष में विद्यमान है जिसे इस देश के भूल से शूद्र मान बैठे हैं ।

बढ़ई जाति के विषय आज भारत वर्ष में बड़ा कोलाहल मचा हुआ है और यह जाति मात्र सर्वत्र अपने को ब्राह्मण बतलाती है हमारी जाति यात्रा के अन्वेषण व भ्रमण में प्रायः विद्वान इस जाति के वर्णत्व विषय में विशेष प्रश्न किया करते थे । तथा इन लोगों की ओर से मंडल कार्य्यालय को भी बहुत से पत्र आये हैं साधारण हिन्दू समुदाय इस जाति के ब्राह्मण वर्णत्व विषयक सुनकर चौंकता है हमें प्रमाण दोनों ही प्रकार के अर्थात् ब्राह्मण बोधक व संकर शूद्र बोधक दोनों ही प्रकार के मिले हैं जिन के आधार पर सम्पूर्ण लकड़ी के काम करने वाले या यों कहिये कि बढ़ईपने का काम करने वाले मात्र सब के सब ही ब्राह्मण हैं व सब के सब ही शूद्र हैं ऐसा नहीं कहा जा सक्ता क्योंकि इस धंन्दे को एक अति लाभकारी व गृहस्थियों के काम का एक आवश्यकीय कार्य्य जानकर सम्पूर्ण प्रकार की जातियें बढ़ई का काम करती हुयी बढ़ई कहने कहाने लग गयीं हैं जैसे कुछ अनपढ़ ब्राह्मण आजकल सेवा कृषी वाणिज्य आदि

आदि अनेकों प्रकार के धन्दे व काम कर रहे हैं वैसे ही कुछ ब्राह्मण समुदाय भी बढ़ईपने का काम करने वाला भारतवर्ष में है अतएव उन को भी बढ़ई ही मान लेना अनुचित है जैसे नयी रोशनी के कारण आज कल के बाबुओं की एक फेशन है कि वे अपने ही हाथ से कैंची उस्तरा लेकर अपनी हजामत कर लेते हैं पर न तो वे नायी कहे जाते न तो वे नायी माने जाते हैं यद्यपि ऐसा करने वाले चारों ही वर्णों के लोग हैं पर यह कर्म उन के वर्णत्व का बाधक नहीं माना जाता ठीक यह ही दशा बढ़ईपने के धन्दे की है, चारों वर्णों के लोग अपने अपने लाभ के लिये बढ़ईपना करने लग गये तिस से बढ़ईपने का काम उन के वर्णत्व का बाधक नहीं होसक्ता वैसे भी हजामत की अपेक्षा काष्ठ का काम पवित्र व उत्तम है आजकल चश्मा लगाने वाले ग्रेजुएट लोग स्कूलों में सौ सौ पचास २ रुपैया मासिक पाते हैं तो बढ़ई भी बड़े बड़े कारखानों में ऐसा ही वेतन पाते हैं।

अतएव इन बढ़इयों में से भी जो जो ब्राह्मण हैं वे वे ब्राह्मण माने जांय जो जो क्षत्रिय हैं वे क्षत्रिय और जो जो शूद्र हैं वे शूद्र माने जाने चाहियें यह न्याय कहाता है परन्तु जो जो संकर वर्णी व जो जो शूद्र व चमारादि नीच जातियें जो बढ़ईपने का काम करती हुयी आज शर्म्मा बनने को तय्यार हैं उन्हें शर्म्मा बनाने के लिये में शर्माता हुवा असमर्थ हूं क्योंकि हिन्दू धर्म्म शास्त्र व ऋषियों का गौरव करना कराना मेरा कर्तव्य है और तद्वत ही निरपेक्ष लेख करना कराना मेरे जीवनोद्देश्य का एक अंग है। हमारी मण्डलस्थ धर्म्मव्यवस्था सभा के विद्वानों के निर्णयार्थ सब ही प्रकार के प्रमाण यहां दिये जाते हैं तिससे उन्हें तथा भारतवर्ष के विद्वानों को निश्चय करने में सुभीता होगा। कि हमारा लेख कहां तक यथार्थ है।

तक्षातु वर्धकि स्त्वष्टा रथकारस्तु काष्टतक्ष ।
ग्रामाधीनो ग्रामतक्षः कौटतक्षोऽनधीनकः ॥

अमरकोष कां० २ वर्ग १० श्लो० ६

अर्थः—तक्षन्, वर्द्धकि, त्वष्टा, रथकार, और काष्टतक्ष ये पांच नाम बढ़ई के हैं अतएव वर्ध धातु जिस का अर्थ काटना है उस से वर्धकि शब्द सिद्ध होता है और इस ही वर्धकि शब्द का अपभ्रंश रूप बढ़ई है जैसा कि पाञ्चाल ब्राह्मण स्थम्भ में लिख आये हैं त्वष्टा एक ऋषि भी हुये हैं जो विराट् विश्वाकर्मा के पुत्र थे इससे बढ़ई लोग अपने तईं ब्राह्मण होने का दावा करते हैं ।

(बढ़ई)

पुनः—

मिस्टर अटकिन्सन साहब स्वरचित हिमालयन गजेटियर जिल्द तीसरी के पृष्ठ २७६ में लिखते हैं किः—

In the Hills some Barhis are emigrants from Plains, but most of them are of the Orh division of the Doms.

भा० पहाड़ी देशों में जो बढ़ई लोग हैं वे वहां के आदि निवासी नहीं हैं दूसरे देशों से आकर बसे हैं किन्तु विशेषतया उन में ओढ़ समुदायान्तर्गत डूमों की है । अतः ये लोग शूद्र वर्ण में होसके हैं ।

मिस्टर C. S. W. C. B. A. Late Collector Saharan-Pore. सी. एस. डबल्यु. सी.बी. ए. भूत पूर्व कलेक्टर सहारनपुर ने अपनी रिपोर्ट के पृष्ठ १६१ में बढ़ईयों का एक भेद चमर बढ़ई भी लिखा है यथाः-

The Chamar Barhi are perhaps an off shoat from the Chamars.

अर्थात् चमरबढ़ई कदाचित् चमारों की सन्तान हों पुनः आगे चल कर इन्हों ने माना है किः-

The Chamar Barhi claiming to be chamars.

अर्थात् चमरबढ़ई अपने तईं चमार होने का दावा करते हैं । इन्हें भी शूद्र वर्ण में मानना चाहिये ।

इस ही तरह Hindu Castes and sects के पृष्ठ २४७ में लिखा है कि:—

The Barhis have a some what higher status than the Sutars.

अर्थात् बढ़इयों का जातिपद सुनारों की अपेक्षा उच्च है। इस में कारण ऐसा प्रतीत होता है कि सुतारों के आचरणों की अपेक्षा बढ़इयों के आचरण पवित्र हैं।

जिस प्रकार इस बढ़ई समुदाय में डूम, ओढ़ और चमार आदि जातियें सम्मिलित हैं तैसे ही सहारनपुर के ज़िले में बन्दरिया और ढोजी, बुलन्दशहर के ज़िले में भील आदि आदि आदि अनेकों नीच जातियें हैं जो बढ़ईपने का काम करती और बढ़ई कहाती हैं वे सब ही ब्राह्मण वर्ण में कभी नहीं हो सक्ती हैं? इस ही प्रकार से राजा लक्ष्मणसिंह ने बुलन्दशहर Memoir मेमायर के पृष्ठ १८६ में लिखा है कि बढ़इयों में एक खाती नाम का समुदाय बुलन्दशहर में है जिन का स्पर्श किया जल भी उच्च जातियें ग्रहण नहीं करती हैं तब ये ब्राह्मण कैसे माने जा सके हैं? इन सब के अतिरिक्त भारत वर्ष में एक ऐसे लुहार बढ़इयों का समुदाय भी है जो म्यूनिसिपल Conservancy कान्सर्वेन्सी की मैले कचरे की गाड़ियें व टट्टियों के टिनों की मरम्मत करते हैं वे तो नीच शूद्र कहे जाने चाहिये।

देश भाषा व देश भेद के कारण लकड़ी के काम करनेवालों को कहीं खाती, कहीं बढ़ई, कहीं सुतार और कहीं छोडा कोलया कहते हैं तैसे ही संस्कृत में इन का नाम सूत्रधार भी है, इस ही शुद्ध शब्द का बिगड़ा हुआ रूप सुतार है ये भी ब्राह्मण वर्ण में हैं, पं० भट्टाचार्य्य जी ने अपने ग्रन्थ के पृष्ठ २४६ में सूत्रधार का अर्थ सुतार का किया है यथा:—

In Bengal and Western India the Carpenters are called Sutra Dhar or Sutar from the Sanskirt word Sutra, the thread, with which the course of the Saw is marked.

भावार्थः—बंगाल तथा पश्चिमी भारत में बढ़इयों को सूत्रधार कहते हैं जिस को सुतार भी कहते हैं सूत्र का अर्थ डोरा है जिस से करौती का नाप आदि किया जाता है।

परन्तु इस ही सूत्रधार का अर्थ ऐसा होना उचित था कि सूत्र का अर्थ यज्ञोपवीत और धार का अर्थ धारण करने वाले के हैं अतः जिसे यज्ञोपवीत धारण करने का अधिकार है वे सूत्रधार कहाते हैं अतः सुतार जाति यज्ञोपवीत धारण कर सक्ती है क्यों कि वीर्य्य प्रधानता के नियम से यह ब्राह्मण सन्तान होने के कारण उप ब्राह्मण वर्ण में है यथाः—

विश्वकर्मा च शूद्रायां वीर्य्याधानं चकार सः।
ततो वभूवुः पुत्राश्च नवैते शिल्प कारिणः ॥ १६ ॥
मालाकारः कर्म्मकार, शंखकार कुविन्दकः।
कुम्भकारः कंसकारः षडेते शिल्पिनां वराः ॥ २० ॥
सूत्रधारश्चित्रकारः स्वर्णकारस्तथैवच।

ब्रह्मवै० पुराण ब्र० ख० अ० १० श्लो० १६, २०, २१

अर्थ :- विश्वकर्म्मा ब्राह्मण ऋषि ने गोप कन्या में वीर्य्याधान करके नौपुत्र उत्पन्न किये अर्थात् १ माली २ लुहार ३ शंखकार ४ कोरी ५ कुम्हार ६ कसेरे, ठटेरे, तमेरे ये छहों शिल्पियों में श्रेष्ठ हैं ७ सुनार, बढ़ई, खाती ८ छीपे, रंगसाज व चितेरे और ९ सुनार ये नवों जातियें उप ब्राह्मण वर्ण में हैं इन्हें त्रिकर्म्म अर्थात् वेद पढ़ने यज्ञ करने और दानदेने तथा षोड़श संस्कार तथा पंच महायज्ञ नित्य करने व यज्ञोपवीत धारण करने का भी अधिकार है। जिस प्रकार लकड़ी के काम में अनेकों ब्राह्मण कुल लगे हुये हैं तैसे ही शिल्पियों में कुछ क्षत्रिय कुल भी परशुराम जी के भय से लग गये हैं। और जिस प्रकार उपरोक्त प्रमाणों के आधारानुसार नीच जातियों का बढ़ई होना

पाया जाता है तैसे ही क्षत्रिय जाति के कुछ भेद भी ऐसे हैं जो बढ़ईपने का काम करते हैं वे सब भी एक मात्र ब्राह्मण वर्ण में व नीच शूद्र बढ़इयों की तरह शूद्र व संकर वर्ण में नहीं माने जा सक्ते हैं क्योंकि मेरठ के जिले में तगड़ा एक क्षत्रिय जाति का भेद है, अलीगढ़ के जिले में चौहान यह भी एक क्षत्रियों का प्रसिद्ध भेद है, बाराबंकी के जिले में जैनवार, मिर्जापुर और बस्ती के जिलों में कोकावंसी, राजपूताना व युक्तप्रदेश में टांक, और राजपूताने में जो खाती हैं उन में से कुछेक को छोड़कर विशेष लोग राजपूत हैं उन के भेद पंवार, तुंवर, भाटी, परिहार पड़िहारिया, चौहान, दहिया राठोड़ खीची, जेतुंग और सोलंकी आदि आदि भेद भी प्रसिद्ध क्षत्रियों के ही हैं वे खातीपना करने लग गये तो क्या किन्तु यथार्थ में ये सब क्षत्रिय हैं जो महाराज परशुराम जी तथा मुसल्मानों के अत्याचार से पीड़ित होकर जीव रक्षार्थ बढ़ईपने का काम करने लग गये वे भी आज संकर वर्णी बढ़ई तथा शूद्र व ब्राह्मण कैसे मान लिये जांय? क्यों कि ये सब क्षत्रियों के प्रसिद्ध भेद हैं अतः ये क्षत्रिय वर्ण में हैं और इन्हें क्षत्रिय धर्म्मानुसार कर्म्म करने का अधिकार है। ऊपर जो संकर व शूद्र वर्णी बढ़ई बताये जा चुके हैं वे शूद्र धर्म्मानुसार बरतें।

उपरोक्त जो ब्राह्मण बढ़ई हैं उन्हें उच्चब्राह्मण समुदाय के साथ समान भाव नहीं मानना चाहिये और न समान भाव से नमस्कार ही करना चाहिये क्योंकि यह विषय पण्डित महासभा व पेशवा महाराज तथा बृटिशगवर्नमेन्ट द्वारा सन १७७९ में निर्णय होचुका है उस पूर्ण मिसल का विवर्ण लिखें तो एक अलग पुस्तक हो जाय अतः उस में से सार चुनकर अगाड़ी ब्राह्मणिये सुनार प्रकरण में सारांश मात्र कुछ फैसिले की नकल दिये हैं तदनुसार इन्हें बर्तना चाहिये।

२५५ ब्राह्मणिये सुनार :—यह पाञ्चाल संज्ञक उपब्राह्मणों की एक जाति है इन के विषय में कुछ विवर्ण हमारा रचित जाति अन्वेषण प्रथम भाग में लिख आये हैं तथा प्रमाण इस ही पुस्तक में ब्राह्मण बढ़ई स्थम्भ में भी लिख आये हैं इस जाति के लोग मुम्बई प्रान्त में तथा राजपूताना प्रदेशस्थ जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, आदि आदि शहरों में भी बहुतायत से हैं ये लोग सर्वत्र ब्राह्मणिये सुनार कहाये जाते हैं जिस का अर्थ ये होता है कि ब्राह्मण हो कर के सुनारपने का धन्दा करने वाले, शास्त्र में प्रमाण मिलते हैं कि सुनार जाति संकर वर्ण में है तद्विषयक पूर्ण विवर्ण सकार की जातियों के साथ जहां "सुनार" शब्द की व्याख्या लिखी जायगी तहां ही सब कुछ लिखा जायगा, यहां केवल उन सुनारों का विवर्ण है जो ब्राह्मण होते हुये सुनारपने का धन्दा केवल जीवन निर्वाहार्थ करते हैं, जिस प्रकार से आज कल जीवन निर्वाहार्थ उच्च दर्जा प्रकार के ब्राह्मण सेवावृत्ति, व्योपार कृषी आदि आदि नीचतम कर्म तक कर रहे हैं तैसे ही ये ब्राह्मणिये सुनार तो अपने निर्वाहार्थ अपना पैतृक धन्दा शिल्प कर्म्म ही करते हैं। इस ही ब्राह्मणिये शुद्ध शब्द का अपभ्रंश रूप बामणिये शब्द है अतः राजपूताने में विद्या के अभाव से ये "बामणिये सुनार" कहाते हैं, ये विराट विश्वकर्मा की सन्तान होने तथा ब्रह्मवैवर्त पुराणोक्त ब्राह्मण विश्वकर्मा व गोपिका द्वारा उत्पन्न हुये हैं, इन के शास्त्रीय प्रमाण तो इस ही पुस्तक में "पाञ्चाल" व ब्राह्मण बढ़ई स्थम्भ में लिखेंगे तद्वत् समझ लेना।

मारवाड़ मनुष्य गणना रिपोर्ट सन् १८९१ के पृष्ठ ४५२ में मनुष्य गणना सुपरिन्टेन्डेन्ट ने बामनिये सुनारों का विवर्ण लिखते हुये लिखा है कि "यह कौम श्रीमाली ब्राह्मणों और राजपूतों से भीनमाल में बनी है जब कि मेड़ सुनार वहां आ-

कर के रहे थे तो कुछ श्रीमाली ब्राह्मणों ने उन से गहना गढ़ना सीखा परंतु उन को राजपूत सुनार समझ कर उन को न्यात से बाहर कर दिया और अपनी जुदा ही न्यात ब्राह्मणिये सुनारों की कायम की इन के भाट मूला ने जो गोड़वाड़ के गांव बीजापुर में रहता है इन का सुनार होना त्रेता युग के सम्वत् ७२५२ में लिखा है जब कि राजा चम्पकसैन भीनमाल में राज करता था इसी की पुष्टि में उस मूला ने अपनी बही से एक दोहा लिखवाया है कि:—

दोहा—सम्वत् बहोतर बावनें बेसक तिज रविवार।
तिन दिन सोनी थप्पिया ब्रह्मवंश आचार॥

अर्थात् त्रेता युग के सम्वत् ७२५२ के वैसाख की तीज रविवार इन ब्राह्मणों की "ब्राह्मणिये सोनी" संज्ञा स्थापित हुयी।

ब्रह्मवैवर्त पुराण ब्रह्म० खण्ड अध्याय १० की कथा से प्रमाणित होता है कि "विश्वकर्मा अपने नवों पुत्रों को शिल्प कर्म में पारंगत करके स्वर्ग लोक को चले गये थे यथाः—

बभूव गर्भ कामिन्याः परिपूर्णः सुदुर्व्वहः।
सा सुषाव च तत्रैव पुत्रान्नव मनोहरान् ॥ ८८ ॥
कृतशिक्षित शिल्पांश्च ज्ञान युक्तांश्च शौनक।
पूर्व्वप्राक्तनतो योग्यान् बलयुक्तान् विचक्षणान् ॥८९॥
मालाकार–कर्मकंसशंखकार–कुविन्दकान्।
कुम्भकार–सूत्रधार स्वर्णचित्र करांस्तथा ॥९०॥
तौ च तेभ्यो वरं दत्त्वा तान् संस्थाप्य महीतले।
मानवीं तनुमुत्सृज्य जग्मतुर्निजमंदिरम् ॥९१॥

अर्थ :—विश्वकर्मा द्वारा गोपिका गर्भवती हुई और नौ मनोहर पुत्रों को जना ॥८८॥ हे शौनक इन नवों पुत्रों को विश्वकर्मा ने शिल्प विद्या में निपुण व ज्ञान युक्त, बलयुक्त व विचक्षण किया ॥८९॥ वे नवों पुत्र ये हैं माली, लुहार, कसेरे, शंखकार, तन्तुवाये, कुम्हार, सुनार, सुनार और छीपा ॥९०॥ इन सब को सब तरह से निपुण करके उन्हें पृथ्वीतल पर स्थापित कर के विश्वकर्मा ऋषि इस लोक को छोड़ कर के और स्वर्ग लोक को चले गये।

मिस्टर डी. एस. विलियम क्रूक बी. ए. लेट कलेक्टर फ़ैज़ाबाद ने अपनी रिपोर्ट के पृष्ठ ३३४ की पंक्ति ३६ में "बामन सुनार" भी सुनारों की जाति का एक भेद लिखा है कि ये लोग अपना सम्बन्ध दूसरी जाति से बतलाते हैं। यह बामन शब्द बिहारी भाषा में ब्राह्मण शुद्ध शब्द का अपभ्रंश रूप है अतः उपरोक्त बामनिये सुनार व बामन सुनार ये दोनों एक ही अर्थ रखते हैं।

बाबू योगेन्द्र नाथ जी भट्टाचार्य्य एम० डी० एल. लिखते हैं कि:—

In the Punjab the Hindu Sonars take the sacred thread.

पंजाब में हिन्दू सुनार यज्ञोपवीत धारण करते हैं। यह भी द्विजत्व-बोधक है।

हिन्दु कास्ट्स और सेक्ट्स के पृष्ठ २४४ में लिखा है कि:—

In the central Provinces there are two classes of Goldsmiths called Sonar and Panchlar. They take the secred thread at the time of marriage and are regarded as clean castes.

मध्य प्रदेश में दो प्रकार के सुनार होते हैं जिन्हें सुनार व पंचलार कहते हैं यह यज्ञोपवीत धारण विवाह के समय करते हैं और पवित्र जाति कहाते हैं। इस से भी सुनारों में ब्राह्मणत्व झलकता है। जिस आधार से हम ब्राह्मणिये सुनारों को उप ब्राह्मण मानते हैं उस ही की पुष्टी नदिया शान्तिपुर के पंडित कालेज के प्रधान अपने ग्रन्थ के पृष्ठ २४५ में लिखते हैं कि:—

The Panchnam Varlu of Teligu country, Panchval of Mysore and Kamallar of Dravir, trace their origin from the five faces of god Siv. They take the sacred thread and claim to have a higher status than the Priestly Brahmans.

भा० तैलंग देश के पंचनाम वालु, माईसोर के पंचवल, और द्रविड़ देश के कमलर ये सब सुनार अपनी उत्पत्ति का पता विराट शिव के पांचों मुखों से लगाते हैं और साधारण ब्राह्मणों से अपने को उच्च मान्ते तथा यज्ञोपवीत धारण करते हैं। पुन :—

They profess to be descended from the cilertial architect Vishvakarma and wear the Brahmanical triple cord. They claim to be equal to the Brahmans.

ये लोग अपने तई विराट विश्वकर्मा के वंश में से मान्ते हैं और यज्ञोपवीत धारण करते हैं और अपने को ब्राह्मण के बरावर समझते हैं।

राजपूताने के ब्राह्मणिये सुनार भी यज्ञोपवीत पहिनते हैं।

पं० हरिकृष्ण वेंकट राम शास्त्री सिकन्दराबाद दक्खिन ने भी अपने ग्रन्थ में उपरोक्त विवर्ण की पुष्टि कियी है अतः इन्हें यज्ञोपवीतादि धारण करने का अधिकार है। प्रायः द्वेषी समुदाय इनके ब्राह्मणत्व पर सन्देह प्रकट करता है पर वह उन का द्वेष मात्र होनेसे अमाननीय है। हां इस जाति को अन्य ब्राह्मणों के साथ समान भाव से नमस्कार करना नहीं चाहिये क्योंकि यह विषय बड़े बड़े पंडितों की सभा व वादी प्रति वादियों के पञ्च प्रतिनिधि तथा गवर्नमेन्ट सरपञ्च व हाई कोर्ट द्वारा निर्णय हो चुका है कि "ये उपब्राह्मण होने से अन्य उच्च ब्राह्मणों के साथ नमस्कार नहीं कर सकते हैं। यथा :–

Resolution of Government.

Dated 28 th. July. 1779

Frequent disputes having arisen for some time between the Brahmins and Goldsmiths respecting

a mode of salutation termed, "Namaskar" made use of by the latter, and which the Brahmans allege they have no right to perform, and that the exercise of such ceremony by the Goldsmiths is a great breach and profation of the rights of the Gen-to religion, and repeated complaints having been made to us by the Brahmins, and the Peishwa also having several times written to the President, requesting the use of the Namaskar might be prohibited to the Goldsmiths. -Resolved as it is necessary this matter should be decided by us in order that the dispute between the two castes may be put to end that the Goldsmiths be forbidden the use of the Namaskar, and this being a matter wherein the Company's intrest is not concerned, our Resolution may be put on the footing of a compliment to the Peishwa whom the President is desired to make acquainted with our determination.

*Goldsmiths–the Cast of–forbid to use a mode of Salutation termed "Namaskar"*

True Copy,
J. Nuley,
Offg. Under Secy to Government.

* भाषार्थ *

## गवर्नमेन्ट का प्रस्ताव

ता : २८ वीं जुलाई सन १७७६

कुछ काल से सुनार व ब्राह्मणों के बीच में लगा तार झगड़े चलते रहे हैं कि सुनार नमस्कार कर सकते हैं; या नहीं ? इस के विषय में ब्राह्मणों का यह कथन है कि उन्हें नमस्कार करने का अधिकार नहीं है और सुनारों की ओर से नमस्कार का व्यवहार एक धर्म्म विरुद्ध कार्य्य है, और ब्राह्मणों की ओर से बार बार नालिश की जाती है, और पेशवा ने भी कई बार हमें लिखा है कि सुनार नमस्कार करने से बंद किये जावें।

निश्चय हुआ, कि यह आवश्यक है, कि यह झगड़ा हमारी ओर से निबटाया जावे जिस से दो जातियों का विरोध मिटे, और इस बारे में ब्राह्मणों के पास प्रमाण भी हैं कि सुनार नमस्कार नहीं कर सकते हैं। यद्यपि यह झगड़ा कम्पनी से कोई सम्बन्ध नहीं रखता है तथापि हमारा प्रस्ताव पेशवा के प्रति निवेदन समान समझा जावे और आशा है कि प्रधान साहब हमारे विचार से उन्हें सूचित करेंगे।

ह० जे. नबी

आफिसियेटिंग अन्डर सेक्रेटरी टु गवर्नमेन्ट

प्रत्यक्ष

नोट:—इसी फैसिले के अनुसार गवर्नमेन्ट की ओर से जो आज्ञा निकली उस की नकल इसी पुस्तक के "पाञ्चाल" जाति संख्या २३० के साथ में लिख आये हैं तहां देख लेना।

यह तो सच है कि सुनार मात्र ब्राह्मण नहीं हैं किन्तु आज कल शूद्र व पतित सुनार भी हैं तो संकर वर्णी सुनार भी हैं तो राजपूत सुनार भी हैं तैसे ही ब्राह्मण सुनार भी हैं अतएव सब धान बाईस पंसेरी न तोल कर हम राजपूताना के वामणिये सुनारों को, पंजाब के जनेऊधारी सुनारों को, युक्तप्रदेश के जड़िये सुनारों को, मध्यप्रदेश के पंचलर नामक सुनारों को, माइसोर राज्य के पंचलर सुनारों को द्रविड़ देश के कमलर सुनारों को तथा दक्षिण अर्थात् मुम्बई प्रान्त के रथकार सुनारों को हम उप ब्राह्मण वर्ण में मानते हैं। इन्हें यज्ञोपवीत धारण करने वेद पढ़ने, संध्योपासनादि पंच महायज्ञ नित्य करने, तथा सोलहों संस्कार करने व दान देने का अधिकार है।

## विश्वकर्मावंशी शिल्पीगण किस वर्ण में हैं ?

## उत्तर

शास्त्र में विश्वकर्म्मा वंशी शिल्पी जातियें मुख्यतया नौ ९ हैं अर्थात् माली, लुहार, कसेरे ठठेरे तमेरे, शंखकार, कोरी, कुम्हार, सुतार बढ़ई खाती, चितरे छींपे, और उपरोक्त सुनार, ये सब उप ब्राह्मण संज्ञक ब्राह्मण वर्ण में हैं इस की पुष्टि में विद्वज्जनानां सम्मतिपत्र तथा अदालतों के अभियोगों में से कुछ एक संकेतमात्र यहां दिये जाते हैं।

१ श्रीमत्परमहंसादि वेदोक्त विरुदांकित शृंगेरी सिंहासनाधीश्वर श्रीमत् शंकराचार्य्यान्वय स्वामी करकमल संजाता भिनव श्री विद्यानृसंग भारती।

शृंगेरी मठ के श्रीशंकराचार्य्य जी की गद्दी के स्वामी विद्यानृसंग भारती जी भी इन सुनारों को ब्राह्मण वर्ण में मान्ते हैं।

२ श्रीमत्परम हंसादि यथोक्त विरुदांकित शृंगेरी सिंहासनाधीश्वर श्रीमच्छंकरा चार्य्यान्वय श्री विद्यानृसंग भारती स्वामि कर कमल संजाता भिनव श्री विद्यानृसंग भारति स्वामिकर कंजोत्पन्न श्री विद्याशंकर भारति।

शृंगेरी मठके अधीश्वर महाराज शंकराचार्य्य के शिष्य श्री विद्याशंकर भारती जी अपनी व्यवस्था मिती श्रावण बदी ९ बुधवार शाके १६८२ में इन्हें ब्राह्मण वर्ण में बतला चुके हैं।

३ कोल्हापुर के सुनारों को मिती चैत्र बदि २ शाके १६७२ में श्रीशंकराचार्य्य महाराज ने भी ब्राह्मण वर्ण की व्यवस्था दियी है।

४ कोलापुर ज़िले के वेशाग गांव के सुनारों को वैशाख बदी ८ मंगलवार शालिवाहन शके १७५० में जगद्गुरु श्री शंकराचार्य्य जी महाराज ने ब्राह्मणत्व की व्यवस्था दियी है।

५ श्रीजन्मेजय शाके २७२८ सुभानु नाम संवत्सर की पोष बदी १२ को श्रीस्वामी बालकृष्ण भारती जी ने भी इन्हें ब्राह्मण वर्ण की व्यवस्था दियी है।

६ मिती श्रावण शुक्ला २ विक्रम सम्वत. १८४५ तदनुसार सिद्धार्थी नाम सम्वत्सर अर्थात् शालिवाहन शाके १७१० में काशी के विद्वानों द्वारा भी इन के ब्राह्मणत्व पोषक व्यवस्था निकली है।

७ शाके १७६८ में राजमुद्रांकित सहित शिल्पियों को हैदराबाद में भी ब्राह्मणत्व की व्यवस्था मिल चुकी है।

८ तारीख़ ८ मार्च सन् १८७८ ईस्वी में हैदराबाद रेजीडेन्सी Haydcrabad Residency की छाप लगकर आज्ञा निकली है जिस के आधारानुसार विश्वकर्मावंशी नवों शिल्पकार ब्राह्मण वर्ण में ठहरते हैं।

९ राजमहेन्द्रपुर के विद्वानों की ओर से विश्वकर्मा की सन्तान शिल्पियों के लिये ब्राह्मणत्व की व्यवस्था मिती वैशाख शुक्ला ११ रविवार शाके १८०० तदनुसार तारीख १२ मई सन् १७७८ ईस्वी को निकल चुकी है।

१० विजयानगर महाराजाश्रित विद्वज्जन वेंकटेश शास्त्री, सं० कनुपति बप्पयाचार्य्य ओर वे. वीराचार्य्य आदि आदि प्रभृति विद्वानों ने शालिवाहन शाके १६७८ में चैत्र शुक्ला २ गुरुवार के दिन विश्वकर्मावंशी शिल्पियों के ब्राह्मणत्व पोषकता में व्यवस्था प्रदान किया है।

११ दक्षिणामूर्ति शास्त्री जागीरदार मुंगजोंड वाले रथकारादि शिल्पियों को उपनयन वेदाध्ययन और अग्निहोत्रादि का अधिकार प्रदान करते हैं।

१२ महामान्य व्यंकटकृष्ण दीक्षित तथा राज मान्य पं० मोर्च्चलि रथकारो को वेदाधिकार प्रदान करते हैं।

१३ पं० नृसिंग शास्त्री तथा राजमान्य काप ग्राम रथकारादि शिल्पियों को अग्न्याधान का अधिकार प्रदान करते है।

१४ मान्यवर पं० वीरवल्ली श्री निवासाचार्य्य जी रथकारादि शिल्पियों को वेदाधिकार प्रदान करते हैं।

१५ श्रीमान् दक्षिण मूर्ति शास्त्री विजयानगर निवासी विश्वकर्म संतति को रथकार मान्ते हैं।

१६ मान्यवर पं० वीरवल्ली राघवाचार्य्य नदरूपट्टन निवासी विश्वकर्मा वंशज सन्तति को रथकार मान्ते हैं।

१७ पं० भवानीशंकर शास्त्री विजयानगर रथकारादि शिल्पियों को उपनयनाधिकार प्रदान करते हैं।

१८ श्रीमान् मारेमंड अच्युताचार्य्य जी महाराज अठारह प्रकार के विश्वकर्म्मा वंशी शिल्पियों को रथकार मानकर उन्हें वेदाध्ययनादि अधिकार प्रदान करते हैं।

१९ श्रीमान् कंदाड रामचन्द्राचार्य्य तथा राज मान्य पं० चुलकल्लरिपांडु रथकारादिकों को ब्राह्मण बतलाते हैं।

२० श्रीमान् मारेमंड व्यंकटाचार्य्य इनामदार कट्लीपुर रथकारादि शिल्पियों को उत्तम कुलीन ब्राह्मण बतलाते हैं।

२१ मद्रास प्रान्तर्गत वृन्दावन निवासी विद्वानों की सभा द्वारा माघ

शुक्ला १० शाके १७६६ को विश्वकर्म वन्शी शिल्पियों को ब्रह्मकर्म के अधिकार होनेकी व्यवस्था मिल चुकी है।

२२ शृंगेरी जगद्गुरु मठ के श्रीराम शास्त्री जी महाराज ने मिती मार्गशीर्ष शुक्ला ६ मंगलवार शाके १८२३ तदनुसार ता० १७ दिसम्बर सन् १६०१ को पान्चाल स्वर्णकारादिकों को वेदाध्ययनादि ब्रह्म कर्मों की व्यवस्था प्रदान की है।

२३ मद्रास सतावधानी के घनपाठी लक्ष्मणाचार्य्य महाराज ने मिती मार्गशीर्ष शुक्ला ११ शनिवार शाके १६२३ तदनुसार ता० २१ दिसम्बर सन् १६०१ को रथकारादि शिल्पियों को ब्रह्मकर्म की व्यवस्था प्रदान किया है।

२४ द्राविड़ देश में चित्तूर एक नगर है जहां के रथकारादि शिल्पिगणों में से किसी के यहां विवाह था वे रथकारादि अपना सम्पूर्ण विवाह विधि ब्राह्मण धर्मानुकूल करना चाहते थे परन्तु कुछ ब्राह्मणों ने उन के इस कृत्य को अनधिकार चेष्टा जान कर उस में विक्षेप कर दिया, अतः रथकारादिकों ने ५५०) रुपयों का दावा ब्राह्मणादिकों पर कर दिया उस में दस आदमी वादीपक्ष के थे और दस प्रतिवादी पक्ष के थे, वादी का वकील अब्दुला साहिब था और प्रतिवादी का वकील अरुणाचल मदली था। बड़े २ महाविद्वानों के परस्पर शास्त्रार्थ व वादानुसार पर यह निश्चय हुवा।

## मुक़द्दमा नम्बर २०५ सन् १८१८ का

इस मुक़द्दमे का फैसला ता० १५ दिसम्बर सन् १८१८ ईसवी को हुवा था जिस में ब्राह्मणादिकों पर ५५०) रुपयों का असली दावा + अदालती खर्चा ६१॥) मिला कर ६४१॥।) की डिग्री दिया, कि विश्वकर्म्मावंशी पान्चाल ब्राह्मणों को ब्रह्मकर्म करने का अधिकार है और प्रतिवादीपक्ष को हस्तक्षेप नहीं करना चाहिये था।

इस ही प्रकार का मुकद्दमा मदरास हाईकोर्ट में भी तय हो चुका है जैसे जज साहिब का अन्तिम लेख यह है।

That the Brahmans of the Vishva-brahmana community was held a Bona fide one and accordance a Judgement was passed there upon by the District Judge of the Chittore Zilla Adault Court in O. S no. 205 of 1818, which decision of the learned Judge was also confirned by the Honourable Judges of the High Court of Judicture Madras in the year 1820

भापार्थ :—विश्वकर्म्मावंशी ब्राह्मण जो ब्राह्मकर्म करते हैं यह उन की अधिकार चेष्टा है क्योंकि चित्तूर ज़िले के योग्य ज़िला जज ने सन् १८१८ के ओ० एस. मुकदमा नं० २०५ में फैसिला दिया है, वही फैसिला अपील होने पर मदरास हाई कोर्ट में भी सन् १८२० में बहाल रह चुका है।

२५ जुन्नर ज़िला पूना के सबार्डिनेट जज के यहां ईस्वी सन् १८७१ में मुकदमा नम्बर १५५२ दायर हुआ था उस में :—

वादी—चिंतो शिवराम जोषी व मार्तंड परशुराम यत वारिस पुत्र हरिमार्तण्ड।

प्रतिवादी—केसो देवजी सुतार व विट्ठूजी कृष्णा जी सुतार।

## दावा रुपैये ७८८) का

इस मुकदमें में जोषियों की ओर से सुतारों पर ७८८) रुपैयों का दावा किया गया था कि सुतारों को ब्राह्मकर्म करने का अधिकार नहीं है अतः हरजे के ७८८) सरकार दिलावे।

इस मुकदमे में दोनों ओर से बड़े बड़े प्रमाण व व्यवस्थायें तथा साक्षियें पेश कर चुकने पर जज ने मुकदमा खारिज कर दिया कि इन सुतारों को ब्राह्मकर्म के अधिकार हैं।

## ❁ अपील ❁

इस ही मुकद्दमे की अपील पूना शहर में असिस्टेन्ट जज के यहां दायर हुयी।

अपील नं० ४३                                                  सन् १८७६

इस अपील में जोशियों की हार व सुतारों की जीत हुयी जुन्नर के सब जज का हुकुम बहाल और अव्वल से आखिर तक का वादी का दावा खर्चा सहित रद्द किया गया।

२६ मिस्टर आर्थर स्टील साहब ने अपने ग्रन्थ हिन्दु ला के पृष्ठ ८३ में भी विश्वकर्म्मवंशी लुहार, सुतार, सुनार, कसेरे, तमेरे, ठठेरे आदि आदि शिल्पियों को ब्राह्मण वर्ण में माना है।

२७ Bomboy Law Report ॥ मुम्बई ला रिपोर्ट ११ में नामदार मिस्टर जस्टिस फारेन साहेब बहादुर ने ऐसा लिखा है कि दैवज्ञादि सुनार, सुतारादिकों को ब्रह्मकर्म्म करने का अधिकार है न कि शूद्रकर्म्म.।

२८ मिस्टर नेल्सन साहब अपने ग्रन्थ हिं० ला० में पाञ्चाल सुनारादिकों को ब्रह्मकर्म्म का अधिकार प्रदान करते हैं।

पाठक वृन्द! हमने अपने बीस वर्ष के जाति अन्वेषणार्थ भ्रमण में जो जो सामग्रियें एकत्रित किये हैं उन का मण में से कण अर्थात् मन भर में से छटांक भर यहां दिखलाया है जिस पर भी केवल संकेत व सारांशमात्र दिया है अविकल पूरा पूरा विवर्ण देता तो यह ग्रन्थ बहुत ही बढ़जाता अतः विशेष सेवा सप्तखंडी ग्रन्थ में करूंगा।

**हे! भारत वर्ष के शिल्पियो!! निद्रा से उठो, अपनी असलियत को सम्हालो, आप कौन हैं! क्या कर रहे हैं!**

आप को क्या करना चाहिये ! आप किस पथ पर हैं ! क्या आप यथार्थ में शूद्र व नीच ही हैं ! अब भी आंखें खोलो, कमर बांध कर खड़े हो जावो क्योंकि आप नीच नहीं हैं, आप शूद्र नहीं हैं, आप पतित नहीं हैं, आप Low Caste नीच जाति नहीं हैं वरन आप ब्रह्मकुल भूषण विश्वकर्मा ऋषि की सन्तान उपब्राह्मण हैं, आप हमारे भाई हैं मैं आप सब का सेवक हूं आप स्वामी हैं अतः सेवा कराना आप का काम है और सेवा कराना मेरा कर्तव्य है द्वेषी समुदाय आप को भरपेट बुरा, नीच व पतित कह चुका है परंतु मैं आप की सेवा करने के लिये तय्यार हूं हमारे देश के सुनार, सुतार, बढ़ई, लुहार, कसेरे ठठेरे, माली, कुम्हार, चित्रकार आदि आदि जातियो ! आप ब्राह्मण वर्ण में हैं आप अपने २ अधिकारों को लेवो और काम करके दिखलावो, समय मैदान में आकर काम करने का है सदाचार के नियमों को पालन करने का है, आप की गर्दनों पर आरा चलते हुये बहुत समय बीत गया है अब चेतो, सोते बहुत दिन हो गये हैं, लो उठो ! अब तो मैं आप का हाथ पकड़ कर जगा रहा हूं, यह मैं अवश्य जान्ता हूं आप गरीब हैं, रोज़ मजदूरी कर के अपना पेट भरते हैं, विद्या हीन व निराश्रय हैं तथापि आप को सम्हालना चाहिये, देखो धनाढ्य जातियों की सेवा करने को व हां में हां मिलानेवाले अनेकों खड़े हो जाते हैं परन्तु दीन हीन मुख मलीन ग़रीब जातियों का कौन ? अतः आप के उद्धार के लिये, आप के कल्याण के लिये मैं तय्यार हूं यदि अब भी आप को कोई शूद्र कहे तो अब शास्त्रार्थ कराइये मैं शास्त्रार्थ करने को तय्यार हूं ओं शम् !!!

**२५६ ब्राह्मणीये लुहारः**— यह पाञ्चाल संज्ञक उपब्राह्मणों का एक भेद है संस्कृत में इसे कर्म्मकार कहते हैं तो अंग्रेज़ी

में Black-smith ब्लेकस्मिथ कहते हैं बंगाल में इस जाति को कर्म्मकार ही कहते हैं तथा इन का दूसरा नाम लोहकार भी है किसी २ विद्वान ने साधारणतया लुहार जाति को संकर वर्ण में लिख दिया है बहुत ही लोग सुनार बढ़ई व लुहारादि के ब्राह्मण होने से चौंकते हैं पर यह चौंकना उचित नहीं क्योंकि लुहारों की उत्पत्ति जहां किसी ने संकर वर्ण में लिखी है तहां लुहार मात्र संकर वर्ण में हैं। ऐसा हमें नहीं मानना चाहिये क्योंकि पाञ्चालस्थम्भ में, ब्राह्मणिये बढ़ई व ब्राह्मणिये सुनार प्रकरणों में हम दिखा आये हैं कि विराट विश्वकर्म्मा तथा ब्राह्मण विश्वकर्मा ऋषि द्वारा लुहार उप ब्राह्मण समुदाय में से हैं संकर लुहारों का विवर्ण लुहार जाति के साथ लिखेंगे यहां तो केवल उन लुहारों के विषय में लिखेंगे जिन का ब्राह्मण वर्ण होना सर्वसाधारण द्वेषी समुदाय की आंखों में खटकता है परन्तु यह उचित नहीं क्योंकि आज कल इस देश में कल कारखाने व मिलों का अधिकतर प्रचार होने से अन्य उच्च ब्राह्मण समुदायों में से भी हज़ारों इस धन्दे को करने लग गये और वे भी लुहार ही कहे कहाये जाने लगे परन्तु जब वे अपनी असली स्थिती ब्राह्मणत्व पर आने लगते हैं व अपना वर्ण ब्राह्मण बतलाते हैं तब लोग इन से द्वेष करते घृणा करते तथा डाह प्रकट करते हैं यह महा अन्याय है क्योंकि इस धन्दे को एक लाभकारी धन्दा समझ कर इन में ब्राह्मण भी हैं तो क्षत्रिय भी हैं तो शूद्र भी हैं, पर सब धान बाईस पंसेरी नहीं तोलना चाहिये अर्थात् एक ही लगाम से सब को नहीं हांकना चाहिये शास्त्रोक्त प्रमाणों का संकेत तो ऊपर लिख ही चुके हैं अब शेष में अन्य विद्वानों की सम्मतियें लिखते हैं यथा :—

Tribes and Castes of U. P. के पृष्ठ ३७२ में मिस्टर C. S. W. C. भूत पूर्व कलेक्टर अज्ञात्र लिखते हैं कि:—

Practically all Lohars trace their origin to Vishvakarma who is the later reipresentative of the Vebic Twashtri, the architect and handi-craftsman who is the Gods etc. etc.

अर्थात लुहार विराट विश्वकर्मा से जो परमेश्वर का अवतार हुवा है अपनी उत्पत्ति का पता लगाते हैं आदि आदि Mr. Dowson's क्लासीकल डिक्सनेरी में भी यह उपरोक्त लेख लिखा है। मिस्टर विलियम क्रूक बी. ए. ने भी लुहार जाति को ब्राह्मण विश्वकर्मा की सन्तान मानी है तथा अपनी पुस्तक के पृष्ठ ३७३ में लिखा है :—

Many of the Western Lohars fix their original home at Mithla. whence they say they emigrated to Mathura, with Srikrishna.

बहुत से पश्चिमी लुहार अपना आदि स्थान मिथला बतलाते हैं जहां से कि वे मथुरा में श्री कृष्ण के साथ आये थे।

मुम्बई गजेटियर जिल्द २० वीं पृष्ठ १०१ में लिखा है कि :—

They are sprung from Vishwakarma the father of Universe who brought out of the fire, the anvil, the bellows, the sledge and the small hammer.

ये लोग विराट विश्वकर्मा प्रजापति से उत्पन्न हुये हैं जिसने अग्नि में से निहाई, धौंकनी, घन और छोटा हतोड़ा उत्पन्न कर के दिया। मिस्टर विलियम क्रूक युक्त प्रदेश की जातियों की पुस्तक के पृष्ट ३७५ में लिखते हैं कि :—

Mathuria those from Mathura, Ojha are those professing a Brahmanical origin,

मथुरिया लुहार वे जो मथुरा से आये तथा ओझा लुहार जो ब्रह्मवंशी हैं।

लुहारों के भेदों में एक रावत भेद है जो राजदूत का अपभ्रंशरूप है और राजदूत का काम पूर्वकाल में प्रायः विश्वासपात्र ब्राह्मण वर्ण को दिया जाता था अब वह ही ब्रह्मवंश समय के हेर फेर से रावत लुहार कहाता है।

भट्टाचार्य्य जी अपनी पुस्तक के पृष्ठ २४१ में इस जाति का विवेचन करते हुये लिखते हैं कि :—

In Behar the correspouding Caste of Lohars have the some position and there also a Brahman will take a drink of water from the hands of the Ironsmith without any hesitation.

बिहार में लुहारों की एक ऐसी जाति है कि जिन का पानी उच्च ब्राह्मण समुदाय निधड़क रूप से ग्रहण करता है।

इन ब्राह्मणिये लुहारों में वेही गोत्र यानी भारद्वाज, वसिष्ठ गौतम, कश्यप, शांडिल्यादि हैं जो अन्य ब्राह्मणों में हैं। माल्वीय लुहार भी ब्राह्मण हैं।

पं० हरिकृश्न वेंकटराम शास्त्री ने भी अपने जाति निबंध के पृष्ठ ५६२ में लिखा है। अतः इस जाति को यज्ञोपवीतादि धारण करने तथा वेद पढ़ने, यज्ञ करने, तथा दान देने का अधिकार है अर्थात् ये तीन कर्म करें, वेद पढ़ें पर पढ़ावें नहीं, यज्ञ करें पर करावें नहीं, दान दें पर लें नहीं। तथा उच्च ब्राह्मणों के साथ समान भाव से नमस्कार न करें। यह व्यवस्था पूर्वोक्त नवों शिल्पियों के लिये जानना।

लुहार जाति के मुख्य दो भेद अर्थात् हिन्दू लुहार ७३६ तरह के तथा मुसल्मान लुहार ११४ तरह के हैं। उन में उपरोक्त, जो कुछ लिखा गया वह सब हिन्दू लुहार समुदाय में से ब्राह्मण संज्ञक लुहारों के प्रति लिखा गया है।

हिन्दू लुहारों में कई भेद क्षत्रिय लुहारों के भी हैं यथा जांगड़ा, पंवार, चौहान, गहलोत, परिहार, परमार, राठोड़, वाघेल, चावड़ा, और सांखला आदि आदि अनेकों भेद क्षत्रिय लुहारों के हैं जिन्हों ने परशुराम जी के भय तथा मुसल्मानी अत्याचार से दुखित होकर लुहारपने का काम करके अपनी जीवरक्षा कियी थी शेष सप्तखंडी ग्रन्थ में।

**२५७ वीसनगरा नागर :—** यह एक नागर ब्राह्मणों की जाति का भेद है नागर ब्राह्मणों के बहत्तर गोत्र हैं उन में से गृहस्थ व भिक्षुक दो भेद हैं उन्हीं के अन्तर्गत यह भी एक है।

२६८ बोरसीदास :—यह गुजराती ब्राह्मणों का एक भेद है बोरसद गुजरात में एक कसबा कैरा के ज़िले में है वहां से निकास होने से ये बोरसीदास कहाये ।

२५९ बोहरा :— यह गौड़ सम्प्रदाय के अन्तर्गत एक ब्राह्मण जाति है इन का दूसरा नाम पालीवाल व पल्लीवाल है अतएव इन का पूर्ण विवर्ण "पालीवाल" ब्राह्मण प्रकर्ण में लिख आये हैं ।

२६० बोहरा नन्दवाने :—यह औदिच्य ब्राह्मणों की जाति का एक भेद है राजपूताना प्रदेशस्थ मारवाड़ प्रदेश में यह एक ब्राह्मण जाति है ।

१६१ बन्दोपाध्याय :— यह बंगाल प्रान्तस्थ राढ़ी ब्राह्मण समुदाय का एक कुल पद है यह नाम बनोध तथा उपाध्याय दो शब्दों के योग से बना है प्राचीन कन्नोज प्रान्त में रायबरेली तथा उन्नाव की बनोध संज्ञा थी वहां की उपाध्याय गीरी जिस ब्राह्मण कुल में थी उस कुल का नाम बनोध उपाध्याय हुवा जिस की सन्धि होकर प्रचलित शब्द बन्दोपाध्याय हुवा ।

२६२ बंसज :— यह बंगाल के राढ़ी ब्राह्मणों की जाति का एक भेद है कुलीन व बंसज ये मुख्य दो भेद हैं इस कुलीनता का हृदय विदारक दृश्य तो हम जाति अन्वेषण प्रथम भाग में लिख आये हैं यदि कोई कुलीन अपनी कन्या किसी बंसज के यहां व्याह दे तो उस के कुलीनत्व में फर्क़ आजाता है और शनैः शनैः वह भी आठवीं पीढ़ी में बंसज हो जाता है ।

२६३ भट्ट :—यह एक ब्राह्मण जाति का पद है जो वेद पाठी होकर कर्म्म. काण्ड कराया करते हैं वे भट्ट कहाते हैं यह एक

खास जाति नहीं है किन्तु एक पद है और यह नाम सब ही प्रकार के ब्राह्मणों में पाया जाता है अर्थात् गौड़, सनाढ्यों में भी भट्ट होते हैं तो अन्य ब्राह्मण समुदाय भी इस से खाली नहीं है इसही प्रकार औदिच्च्य गुजराती ब्राह्मणों में भी यह पाया जाता है, गौड़ सनाढ्य भट्टों की अपेक्षा गुजराती भट्ट प्रायः वेद पाठी व कर्म्मकाण्डी होते हैं।

भट्टाचार्य्य :—यह जाति बंगाल प्रान्त में है पाश्चत्य वैदिक समुदाय में से यह एक भेद है नदिया शान्ति पुर की ओर इन का समुदाय विशेष रूप से है यह समुदाय वहां बड़े मान्य व प्रतिष्ठा की दृष्टि से देखा जाता है यह पद दो शब्दों का योगफल है अर्थात् भट्ट और आचार्य्य ये दोनों के मिलने से हुवा भट्टाचार्य्य जिस का अर्थ भट्टों का आचार्य्य ऐसा होता है पूर्व काल में गुरुकुल व अध्ययन शालाओं में कर्मकाण्ड सिखाने की भी शिक्षा दियी जाती थी अतएव कर्म काण्ड के प्रोफेसर (आचार्य्य) जो शिक्षक नियत होते थे वे "भट्टाचार्य्य" पद द्वारा विभूषित हुवा करते थे तदनुसार ही यह कुल भी इस ही पद द्वारा प्रसिद्ध होता था जैसे आजकल नदिया पंडित कालेज के प्रधान जाति विषय के महा विद्वान पं० योगेन्द्रनाथ भट्टाचार्य्य जी हैं।

२६५ भडरी :—यह एक ब्राह्मण जाति है भिन्न भिन्न देश व भाषाओं के कारण यह जाति कहीं डाकोत, कहीं भड्डुल, कहीं जोशी, कहीं ग्रहविप्र, कहीं शनिश्चरिया और कहीं थावरिया कहाते हैं अतः इस जाति के विषय बहुत कुछ विवर्ण इस ही ग्रन्थ के पृष्ठ २६६ में डाकोत जाति प्रकरण में लिख आये हैं हां वहां पर कुछ लिखने की और भी आवश्यक्ता थी अतः उस कमी को यहां पूर्ण कर दियी है।

यह जाति क्रूरग्रहों के दान को भी ग्रहण कर लेती है जिसे सर्व साधारण ब्राह्मण लेने से घृणा करते हैं, शास्त्र धारानुसार पटरसदान छायादाना, तिलदान और भैंसे आदि के दान निषिद्ध हैं इन्हें उच्च ब्राह्मण समुदाय नहीं लेता है परन्तु इन के लिये इन का लेना वांये

हाथ का खेल है इस कारण से लोग इस जाति को घृणा की दृष्टि से देखते इन्हें ब्राह्मण ही मानने में शंका करने लगे परन्तु यह बात निर्मूल है क्योंकि यह जाति ब्राह्मण वर्ण में अवश्य है कोई समय था कि ये लोग बड़े तपस्वी वेदज्ञ ब्राह्मण थे परन्तु समय के हेर फेर से जहां ब्राह्मणों की दशा गिरी तैसे ही इस जाति की दशा और भी अधिक गिरगयी परन्तु ब्राह्मणत्व का मुख्य कर्म्म दान लेना इन में ज्यों का त्यों बना हुआ है इस लिये यह जाति लघु श्रेणी की ब्राह्मण जाति है ऐसा हमें मानना पड़ेगा ।

युक्त प्रदेश की ५२ बावन कमेटियों में निर्णय होकर बहु लोक मतानुसार यह जाति मनुष्यगणना रिपोर्ट में ब्राह्मण वर्ण में लिखी गयी है * यह भी निश्चय हो चुका है कि यह जाति पूजनीय है ।

द्वेषी समुदाय इन्हें बहुत ही नीचतम जाति मानकर इन्हें अब्राह्मण बतलाता है यह अनुचित है । यदि यह कहा जाय कि ये लोग निरे मूर्ख हैं दान लेना मात्र जान्ते हैं पर उस का प्रायश्चित कुछ नहीं. पर ऐसी दशा अनेकों अंशों में शास्त्र विरुद्ध करते हुये ब्राह्मण मात्र की है तब इस ही जाति को अब्राह्मण मानना उचित नहीं है ।

**२६६ भार्गव** :—यह एक ब्राह्मण जाति का भेद है गुजरात प्रान्त में यह ब्राह्मण जाति विशेष रूप से है गुजराती ब्राह्मण समुदाय के १६० भेदों में से एक मुख्य भेद है इन का निवासस्थान नर्वदा के किनारे किनारे के शहरों में से मुख्यतया प्रधान स्थान भड़ौच है इस ही को भृगुक्षेत्र भी कहते हैं इस ही भृगुक्षेत्र में इन की उत्पत्ति भृगुजी महाराज द्वारा होने से इन का नाम भार्गव प्रसिद्ध हुआ ये लोग पूर्व काल में साधारण सी स्थिति के थे परन्तु वर्तमान काल में इन की विद्यास्थिति आदि चढ़ बढ़ चली है ।

---

* U. P. Censes Report Page 218 Para 165 यू० पी० मनुष्यगणना रिपोर्ट पृ० २१८ पैरा १६५ ।

**२६७ भाट** :—यह एक ब्राह्मण जाति है परन्तु भारत के द्वेषी समुदाय ने इस जाति के विषय अनेक विरुद्ध विरुद्ध गाथायें रच-कर इस जाति को कलंकित किया है परन्तु हमें सब अन्याय जान पड़ता है क्योंकि इस नाम के अन्तर्गत भाटों का सा ही काम करने वाले कई समुदाय हैं जिस से नकली को देखकर असली पर लोगों का सन्देह बढ़ा और उन्हें शूद्रवत समझने लगे पर यथार्थ अन्वेषण नहीं हुआ और लोगों ने कुछ का कुछ लिख मारा।

(उत्पत्ति)

भाट जाति की उत्पत्ति की ओर देखते हुये कहना पड़ता है कि वह कई तरह से मिलती हैं जिनमें से सब परस्पर एक दूसरे के विरुद्ध होने से अमाननीय हैं क्योंकि सत्य बात एक ही सक्ती है न कि सब की सब परस्पर विरुद्ध। क्योंकि किसी ने इन को क्षत्रिय पुरुष व वैश्य माता द्वारा तथा किसी ने बाप क्षत्रिय तथा माता विधवा ब्राह्मणी द्वारा और किसी ने ब्राह्मण बाप व शूद्रा द्वारा इन की उत्पत्ति लिखी है एक चौथे विद्वान ने इन की उत्पत्ति महादेव जी की आंखों की भौं के पसीने से हुयी लिखी है और एक पांचवें विद्वान ने इन को मागध जाति से लिखा है जिस की उत्पत्ति वैश्य पिता और क्षत्रिया स्त्री से लिखी है इस ही तरह सरजान मेल्कम साहिब ने अपनी Central India II Page 132 में लिखा है कि महादेव जी ने सिंह से अपने नांदिये की रक्षा के लिए अपनी भभूति से भाट जाति उत्पन्न कियी परन्तु वह सदैव इधर उधर फिरता रहता था और नांदिये की सिंह से कुछ भी रक्षा वाली नहीं करता था अतएव सिंह नांदिये को प्रायः मार डाला करता था जिस से महादेव जी को बेर २ नांदिया पैदा करना पड़ता था।

परन्तु उपरोक्त सब बातें परस्पर विरुद्ध होने से इन की सत्यता में सन्देह होने से अमाननीय हैं तब शंका होती है कि फिर इनकी उत्पत्ति किस प्रकार से हुयी? इस का उत्तर महाभारत से मिलता है कि:—

अंगार संश्रयाच्चैव कविरित्य परो भवेत्।
सहज्वालाभिरुत्पन्नो भृगुस्तस्माद् भृगुःस्मृतः॥१०६॥

ब्रह्मणस्तु कवेः पुत्राः वारुणास्तेऽप्युदाहृताः ।
अष्टौ प्रसवजैर्युक्ता गुणैर्ब्रह्म विदः शुभाः ॥१३२॥
कवि काव्यश्च धृष्णुश्च बुद्धिमानुशनातथा ।
भृगुश्च विरजाश्चैव काशी चोग्रश्च धर्मवित ॥१३३॥

महा० अनु० अ० ८५ श्लो० १०६, १३२, १३३

अर्थः–ब्रह्मा जी के यज्ञ के अंगारों में नियत थोड़ी ज्वाला से कवि ऋषि उत्पन्न हुये ॥ १०६ ॥ ब्रह्मपुत्र कवि जी के आठपुत्र ब्रह्मज्ञानी ब्राह्मण हुये ॥ १३२ ॥ १ कवि २ काव्य ३ धृष्णु ४ ऊष्णा ५ भृगु ६ विरजा ७ काशी और ८ उग्र ये आठ पुत्र कवि ऋषि के हुये ॥ १३३ ॥

मार्कण्डेय पुराण के आधानुसार जैसा हम जाति अन्वेषण प्रथम भाग में लिख आये हैं चाक्षुप मन्वन्तर के सप्तर्षियों में काव्य व विरजा कवि के पुत्र सप्तर्षि संज्ञक हैं और ब्रह्मवंश के प्रवर्तक भी सप्तर्षि ही हैं, कवि सूत की सन्तान भाट भी ब्राह्मण हैं इन में के जो लोग वेद विद्या पढ़ कर काव्य करते थे वे ब्रह्म भट्ट कहाये तथा जो जाति पांति का विवर्ण व कुर्सी नामा तथा वंश वृक्षादि रखते हुये राजा महाराजाओं की स्तुति करने में निमग्न रहे वे भाट कहाये ।

इस ही प्रकार मनुष्य गणना सुपरिन्टेन्डेन्ट ने लिखा है किः–

The Bhats are Geneologists and are looked on as akin to Brahmans but the stories are many and most of them point to mixed origion.

U. P. Census Report Page 220

भाषाः–भाट लोग पीढ़ियों के जानने वाले और ब्राह्मण जाति के एक बहुत ही समीपवर्ती हैं अर्थात् ये ब्राह्मणों में से हैं परन्तु इन के सम्बन्ध में भिन्न भिन्न प्रकार की उत्पत्तियों के लेख मिलने से यह जाति मिश्रित प्रतीत होती है ।

इस ही तरह से उपरोक्त महाभारत की आख्यायिका को मानते

हुये मिस्टर C. S. W. C. लेट कलेक्टर उन्नाव अपनी पुस्तक के पृष्ठ १२० में लिखते हैं कि:-

.Once upon a time Brahma performed a sacrifice when two men appeared and stood before sacrificial fire. When Mahakali said that they were dying of thirst she gave them suck from her breasts, and named them Magadha and Suta. The Magadha Brahman settled in the east and the Bhat Brahmans are their discendants.

भावार्थः—एक समय ब्रह्मा जी ने यज्ञ किया जब दो मनुष्य उस में से निकले और वेदी के सामने खड़े हो गये जब महाकाली जी ने देखा कि वे प्यास से मर रहे हैं तब उस ने अपने स्थनों से उन को दूध पिलाया और उन का नाम मागध और सूत रख दिया मागध ब्राह्मण तो पूर्व में बस गये और भाट ब्राह्मण उन की सन्तान हैं। मिस्टर नेस्फील्ड एम० ए० अपने Caste System नामक जाति निबन्ध में लिखते हैं कि:—

Bhats are an offshoot from those Secularised Brahmans who frequented the Courts of Priences and the Camps of warriors, recited their praises in public, and kept records of their Genealogies.

भावार्थ :—भाट उन ब्राह्मणों की सन्तान हैं जो कि राजदर्बार में उपस्थित होकर राजाओं के सन्मुख तथा फौजों के आगे वीरता पूर्ण गीत गाते हुए चला करते थे यही लोग सम्पूर्ण हिन्दू जाति के वंश वृक्ष, व उत्पत्त्यादि का विवर्ण रखते थे।

जैसा कि हम महाभारत के प्रमाणों से ऊपर लिख आये हैं उसी लेख को पुष्ट करते हुए मिस्टर विलियम क्रूक B. A. भूत पूर्व कलेक्टर फैजाबाद अपनी पुस्तक जाति और कौम जिल्द दूसरी के पृष्ठ २१ में ऐसा लिखते हैं :—

The ancient epic known as the Mahabharat speaks of a band of bards and Genealogists Marching in front of Yudhishthira as he made his progress from the field of Kurukshetra towards Hastinapur. But these very men are spoken of in the same poem as Brahmas.

भावार्थः— प्राचीन इतिहास महाभारत में लिखा है कि कुरुक्षेत्र के युद्ध में युधिष्ठिर के सन्मुख हस्तिनापुर की ओर आगे २ भाटों का एक समुदाय चलता था पर यही लोग उसी स्थान में ब्राह्मण लिखे गए हैं।

इन सब प्रमाणों के आधार पर व हमारे निज अनुभव से हम कह सकते हैं कि भाट जाति ब्राह्मण वर्ण में अवश्य है हम ने अपनी जाति यात्रा में सर्वत्र ही इस जाति को अन्य ब्राह्मणों के सदृश प्रत्येक दान दक्षिणा के कामों में सम्मिलित होते भी देखा है हां अन्य उच्च ब्राह्मण समुदाय की अपेक्षा इन का जाति पद नीचा अवश्य है और भेद केवल इतनाही है कि पठित ब्राह्मण समुदाय इस प्रकार की वृत्ति को एक तुच्छ वृत्ति समझते हैं भाटों के मुख्य दो भेद होते हैं ब्रह्मभाट और योग भाट कहीं कहीं ये ब्रह्मभट्ट और योगभट्ट भी कहाते हैं इनमें जो पठित समुदाय था वे छन्द, कवित्त, श्लोक, दोहे, और चौपाई तथा बड़े २ काव्यों की रचना करते थे वे ब्रह्मभट्ट कहाते थे और योग भट्ट लोग केवल वंश वृक्ष व उत्पत्यादि का विवर्ण रखते थे।

इसी वृत्ति को करने वाली जाति राजपूताने में चारण भी है जो वंश वृक्ष, कुर्सी नामा व उत्पत्त्यादि का विवर्ण रखते हुए राजा महाराजाओं के यहां स्तुति पाठ किया करते हैं इन का विवर्ण अन्य किसी भाग में लिखेंगे।

भाटों का दूसरा नाम रावजी या रायजी भी है तथा इन्हीं का एक भेद चारण है ब्राह्मण वैश्यों की पीढ़ियों का हाल रखनेवाले भाट कहाते हैं और ठाकुर तथा राजेमहाराजों की पीढ़ियों का वर्णन करनेवाले चारण कहाते हैं यानी चारणों के यजमान प्राय: क्षत्रिय लोग होते हैं और राय भाटों के यजमान बनिये ब्राह्मण होते हैं।

राजपूताना और इस के समीपवर्ती प्रान्तों में भाट और चारण जाति बड़े काम की है। ये लोग प्रशंसक, ऐतिहासिक और बाप दादाओं की पीढ़ियों के जानने वाले होते हैं ये लोग जाति विवर्ण व वंशों का हाल पूरा २ रखते थे इन के यहां प्राचीन सैकड़ों वर्षों की बहियें मिलती थीं इस ही कारण इन लोगों को बड़ी २ आजीविकायें दीजी जाती थीं परन्तु उस का फल उलटा हुआ इस जाति ने पढ़ना छोड़ दिया और इस मूर्खता के कारण वे लोग नाम मात्र के भाट रह गये दाय भाग, गोद, आदि के मुकद्दमों में इनके वहीखातों की साक्षी लीजाती थी परन्तु इन लोगों के मूर्ख होने व वहीखातों के अभाव के कारण इन का मान्य पठित समाज में बहुत कम होगया है।

इन लोगों से प्रत्येक उच्च जाति भय माना करती थी कि कदाचित ये लोग किसी जाति के विषय कोई उलटपलट घृणित बात भविष्यत् के लिये न लिखलें अतएव इन को प्रसन्न रखना प्रत्येक अपना २ कर्तव्य समझते थे। लिखा है कि :—

They all take the holy thread and as their persons are considered to be sacred by all classes they seem to have been originally Brahmans.

(H. C. S. Page 115)

भाषा :—ये लोग जनेऊ पहिनते हैं और अन्य सम्पूर्ण जातियें इन्हें उत्तम मानती हैं अतएव ये असलियत में ब्राह्मण हैं।

इनके नाम भाट या भट्ट के मायने Learned man विद्वान् के हैं और अन्य ब्राह्मण जातियों के "कुल नाम" Sur-name भी

भट्ट बहुत से स्थलों में सुनने में आते हैं इन के ब्राह्मण होने में कुछ सन्देह नहीं है फिर आगे लिखा है कि :—

The Bhats have a higher caste status than the Charans.

अर्थात् भाट लोग चारणों से उत्तम होते हैं। राजा महाराजावों के यहां चारण लोग भेदिये का भी काम करते हैं।

जैसा कि हम ऊपर कह आये हैं इन में कई क्षत्रिय समुदाय के लोग भी मिले हुए हैं जो मुसलमानी अत्याचार तथा परशुराम जी महाराज के क्षत्रिय संहार भय से अपनी जीव रक्षार्थ इन में जामिले थे जैसे पंवार, भाटी, चौहान, सोलंखी, राजभाट, जैसवार, बड़गूजर, बड़गयां, भदौरिया, बुंदेल, चन्द्रवंशी, कछवाहा, राठोड़ और सकरवार ये सब भेद क्षत्रिय वंश के हैं अतएव इन क्षत्रिय भाटों को अपने सब कर्म क्षत्रिय धर्मानुकूल करने चाहियें।

यद्यपि इस भाट जाति के ९९० भेद व उपभेदों का पता लगा है और १९१ मुसलमान भाटों के भेदों का पता लगा है परन्तु यहां स्थानाभाव से सब विवर्ण न लिख कर सप्तखण्डी ग्रन्थ में लिखेंगे।

इस ही प्रकार से इस भाट जाति में प्रसिद्ध २ कई ब्राह्मणों के भेद भी हैं यथा :—

| | | |
|---|---|---|
| १ आचार्य | ५ गौड़ | ९ भट्ट |
| २ भारद्वाजी | ६ सनाढ्य | १० नागर |
| ३ दीक्षित | ७ सारस्वत | ११ दिल्लीवाल |
| ४ गंगापुत्र | ८ सरवरिया | १२ मथुरिया |

राजपूताने में भाटों का सा धन्दा करने वाले बड़वा, कापड़ी, जागा, शासनी, बूना, तूरी, कैदारी, कापड़िया आदि आदि कई जातियें हैं उन का विवर्ण अन्य भाग में लिखेंगे जिन का कुछ सूक्ष्म सा विवर्ण यहां भी दिया जाता है।

राजपूताने में भाटों की ६ जातें कहलाती हैं जिन के नाम ये हैं

१ अगभट्ट जो पूरब में राजों को मांगते हैं ।

२ चंदीसा, इन का मूल पुरुष चंड भाट था ये ब्राह्मण रजपूत कलवी पिटल बणक सुथार कुम्हार नाई और दरजी आदि २१-२२ कौमों को मांगते हैं ।

३ बड़वा, मेवाड़ और ढूंढाड़ में अधिक रहते हैं और वहां के राजपूतों और दूसरे लोगों की पीढ़ियां लिखते हैं ।

४ नागा, ये महेसरी आदि जातों को मांगते हैं ।

५ जागनी, इन को शासन पृथ्वी अधिक मिली हुई है और ये राजपूतों की नौकरी करते हैं ।

६ तूरी, ये मोची, और मेगवालों को मांगते हैं ।

७ बूना, ये बालद लादते हैं और फलोदी परगने में पलीवाल ब्राह्मणों को भी मांगते हैं और कोई राजपूतों की छावलियां (कहानियां) भी चंग बजाकर गाते हैं ।

८ भैंदारी या वासुदेवा, जो जाड़ों में पिछली रात को भीगे कपड़े पहिन कर बस्तियों में मांगते फिरते हैं ।

९ मारू, या जांगड़ा, ये राजपूतों से भाट हुये हैं राजपूताने में अधिकतर यही भाट इन्हीं लोगों में से हैं जो अपने जिजमान राजपूतों आदि की पीढ़ियां वही में लिखते हैं और इन के नख भी पंवार भाटी, चौहान और सोलंखी आदि हैं और रीतिभांति भी इन की राजपूतों से बहुत मिलती है ।

यदि इन नामों में गड़बड़ भी है कि प्रत्येक प्रत्येक भाट बड़वा और नागा को ६ न्यात से अलग समझते हैं और उन की जगह नौ की गिन्ती इन २ नामों से पूरी करते हैं ।

१ बागोरा जो भगतों साधों और शामियों को मांगते हैं ।

sand Brahmans was unable to find so many in all Mithla( Tirhut and northern Behar. )He therefore privately, the day before the feast, distributed Brahmans Jneus or sacrificial threads to all sorts of people of the inferior caste and the next day had them assembled and fed together with the few Brahmans who were present. From that day they ranked as ar inferior caste of Brahmans and were called Bhumihars because they were the ordinary "people of the land".

( Memoirs on the History Folktore and distribution of the races by Mr. Jhon Beams M. J. A. S.)

भावार्थ :—इन की ( भूमिहारोंकी ) उत्पत्ति के विषय में लोकोक्ति यह है कि इन में कुछ अंश तो राजपूतों का है और कुछ अन्य जातियों का है और यह कि किसी समय एक राजा कोई तो जनक बतलाते हैं कोई राम कहते हैं और कोई पुरानी गाथाओं में वर्णित राजाओं में से किसी एक और ही का नाम लेते हैं—ने यज्ञ करना चाहा जिस के कि एक भाग को पूर्ण करने के लिये एक हज़ार ब्राह्मणों को भोजन कराने की आवश्यक्ता थी परन्तु समस्त मिथला यानी तिरहुत व उत्तरीय बिहार में इतने ब्राह्मण न प्राप्त कर सका उसने गुप्त रूप से भोज्य से एक दिवस पहिले छोटी छोटी जाति के लोगों को जनेऊ पहरने को दे दिये और दूसरे दिन उन्हें एकत्रित करके कुछ उपस्थित ब्राह्मणों के साथ उन्हें भोजन करा दिया उस दिन से वे नीच श्रेणी के ब्राह्मण समझे जाने लगे और उन का नाम भुईहार पड़ गया क्योंकि वे भूमि के साधारण लोग थे।

**मीमांसा** :—पाठक! यह ही एक लेख मिस्टर बीम साहब का इस जाति के कुछ अंश में विरुद्ध है उसे ही लेकर लोग इन्हें ब्राह्मण मानने में शंका करते हैं और इस ही अंश को लेकर राजपूत व लक्ष्मी इन दो पत्रों ने भूमिहार ब्राह्मणों के विरुद्ध लिख मारा तद्वत

**२६६ भारती** :—यह शंकराचार्य्य महाराज की सम्प्रदाय के दस प्रकार के सन्यासियों में से एक जाति है उन सब प्रकार के सन्यासियों के नाम यह हैं :—

| | | |
|---|---|---|
| १ सरस्वती | ४ तीरथ | ७ गिरि |
| २ भारती | ५ आश्रम | ८ अरण्य |
| ३ पुरी | ६ वन | ६ बन |

और १० पर्वत

महाराज शंकराचार्य्य जी के मुख्य दस शिष्य थे उन्हीं दसों के स्मरणार्थ उपरोक्त दस प्रकार की सम्प्रदायें चल कर अलग अलग उपरोक्त दस नाम हुये, चूंकि सन्यास केवल ब्राह्मण ही को दिया जाता है अतएव इस जाति को इस ग्रन्थ में लिख दियी हैं. महाराज शंकराचार्य्य की आज कल प्रसिद्ध ४ गद्दियें हैं जो मठ करके प्रसिद्ध हैं अर्थात् १ शृंगेरी मठ २ गोवर्धन मठ ३ जोपी मठ और ४ शारदा मठ। शृंगेरी मठ दक्षिण प्रान्त में तुंग भद्रा नदी के किनारे माइसोर राज्य में है वहां इस मठ का बड़ा मान्य है जगन्नाथपुरी में गोवर्धन मठ है इस का मान्य बंगाल प्रान्त में विशेष रूप से है तीसरा जोपी मठ है यह गढ़वाल के जिले में है।

**२७० भाटेला** :—यह गुजराती ब्राह्मणों की एक जाति का नाम है इन का दूसरा नाम अनावला भी हैं ये लोग भड़ोंच व डामन के ज़िले में विशेष रूप से हैं ये लोग गृहस्थी ब्राह्मण हैं निर्वाहार्थ कृषी तथा वाणिज्य करते रहते हैं इन में कुछ लोग विदेशीराज्य भाषा पढ़कर सरकारी कामों पर भी हैं इन का खान पानादि व्यवहार तथा जाति पद उच्च है।

**२७१ भिक्षुक**:—दक्षिणी ब्राह्मण वर्ग में की यह एक जाति है शब्दार्थ तो भिक्षा मांगनेवाले के होते हैं पर यह

शब्द दक्षिण में ब्राह्मण समुदाय के साथ लगकर एक विशेष अर्थ का बोधक हो जाता है अर्थात् दक्षिणी ब्राह्मणों के मुख्य दो भेद हैं लौकिक और भिक्षुक । बंगाल प्रान्त में भी भिक्षुक ब्राह्मण होते हैं तो दक्षिण में तथा अन्ध्र देश में भी होते हैं परन्तु बंगाल में दान दक्षिणा दोनों ही लेते हैं और वही कर्म-काण्डादि में आदरणीय माने जाते हैं अन्य नहीं परन्तु दक्षिण में दान दक्षिणा लौकिक नहीं लेते किन्तु भिक्षुक ही लेते हैं ये भिक्षुक लोग प्रायः विवाह नहीं करते हैं दक्षिण में इन के कई भेद हैं इन में जो वेद पढ़ते हैं वे वैदिक कहाते हैं , जो स्मृतियें पढ़ते हैं वे शास्त्री कहाते हैं, जो ज्योतिश विद्या का काम करते हैं वे ज्योतिषी कहाते हैं, जो औषधि आदि का काम करते हैं वे वैद्य कहाते हैं परन्तु लौकिक व भिक्षुकों में कोई विशेष अन्तर नहीं है, इन दोनों में परस्पर विवाह सम्बन्ध होते रहते हैं और भिक्षुक लौकिक बन सक्ता है और लौकिक भिक्षुक बन सक्ता है ।

**२७२ भूमिहार** :—युक्तप्रदेश तथा बिहार की यह एक ब्राह्मण जाति है इस जाति को लोग कहीं ब्राह्मण समझते हैं तो कहीं ठाकुर समझते हैं परन्तु इस मिथ्या अपवाद फैलने के मुख्य दो कारण प्रतीति होते हैं अर्थात् एक तो इस जाति के लोग समृद्धि-शाली व अधिकार प्राप्त बड़े बड़े ज़मीदार होने के कारण अपनी मातहत प्रजा के साथ राजा व रियाया का सा व्यवहार करने कराने लगे अतः ग्रामीण लोग इन्हें ठाकुर ही समझने लगे हों और दूसरा कारण यह है कि अन्य ब्राह्मणों की अपेक्षा इन्हें राज्याधीश समझकर द्वेषी समुदाय ने इन्हें बदनाम करने को इनके विरुद्ध कोई अट्ट पट्ट झूंठ सांच अफवाह इधर उधर फैलादी और वही बात किसी लेख में भी छप गयी अतएव इस विवाद को दूर करने की इच्छा से हमने बड़ी ही दूरदर्शिता के साथ निर्णय किया है, और निष्पक्ष भाव से

विरुद्ध व समर्थन दोनों ही पक्ष दिये हैं तिस पर भी आशा है कि भारतवर्ष के किसी विद्वान् के पास यदि कोई विशेष पुष्ट प्रमाण हों तो उन्हें मंडल कार्य्यालय को अवश्य भेज देवें उन पर पुनरपि विचार किया जासकेगा।

हमारी जाति यात्रा के भ्रमण में हमें कतिपय लोग ऐसे मिले जिन्हों ने भूमिहारों के ब्राह्मणत्व पर सन्देह प्रकट किया और प्रमाण में एक अंग्रेज़ बहादुर का लेख दिखलाया साथ ही में हमैं ऐसे सज्जन भी मिले जिन्हों ने भूमिहारों को ब्राह्मण बतलाते हुये उस अपने कथन की पुष्टि में हमें कई प्रमाण भी दिखलाये उपरोक्त साहब बहादुर के विरुद्ध पक्षी लेख को एक दो मासिक पत्रिकायों ने भी नक़ल करके भूमिहारों को अब्राह्मण सिद्ध करना चाहा है परन्तु इस भूल प्रकाशन के लिये उन्हें मुवाफी भी मांगनी पड़ी थी अतएव हमारे भ्रमण में इस जाति के विरुद्ध अब्राह्मणत्व पोषक एक प्रमाण, व ब्राह्मणत्व पोषक कई प्रमाण मिले, परन्तु हम निष्पक्ष भाव रखते हुये दोनों ही प्रकार के अविकल लेख यहां दे दिये हैं, बहु लोकमत व प्रमाणानुसार हमने तो इस जाति को ब्राह्मण मानकर ही इस ग्रन्थ में लिखा है।

पाठकों के अवलोकनार्थ विरुद्ध पक्ष का एक प्रमाण मिस्टर बीम साहब का लेख जिसे आगरे के राजपूत तथा बनारस की लक्ष्मी मासिक पत्रिकावों ने प्रकाशित करके अपने अपने चित्तों के उद्गार निकाले हैं वह लेख यह है :—

The popular account of their origin is that they are partly Rajputs and partly of other castes, and that on some occassian a king who some say was Janak others Ram and others one or other of the old legendry heros being desirous of performing a sacrifice part of which consisted in feeding a thou-

sand Brahmans was unable to find so many in all Mithla( Tirhut and northern Behar. )He therefore privately,the day before the feast,distributed Brahmans Jneus or sacrificial threads to all sorts of people of the inferior caste and the next day had them assembled and fed together with the few Brahmans who were present. From that day they ranked as ar inferior caste of Brahmans and were called Bhumihars because they were the ordinary "people of the land".

( Memoirs on the History Folklore and distribution of the races by Mr. Jhon Beams M. A. A. S.) "

भावार्थ :—इन की ( भूमिहारों की ) उत्पत्ति के विषय में लोकोक्ति यह है कि इन में कुछ अंश तो राजपूतों का है और कुछ अन्य जातियों का है और यह कि किसी समय एक राजा कोई तो जनक बतलाते हैं कोई राम कहते हैं और कोई पुरानी गाथाओं में वर्णित राजाओं में से किसी एक और ही का नाम लेते हैं—ने यज्ञ करना चाहा जिस के कि एक भाग को पूर्ण करने के लिये एक हज़ार ब्राह्मणों को भोजन कराने की आवश्यक्ता थी परन्तु समस्त मिथला यानी तिरहुत व उत्तरीय बिहार में इतने ब्राह्मण न प्राप्त कर सका उसने गुप्त रूप से भोज्य से एक दिवस पहिले छोटी छोटी जाति के लोगों को जनेऊ पहरने को दे दिये और दूसरे दिन उन्हें एकत्रित करके कुछ उपस्थित ब्राह्मणों के साथ उन्हें भोजन करा दिया उस दिन से ये नीच श्रेणी के ब्राह्मण समझे जाने लगे और उन का नाम भुंइहार पड़ गया क्योंकि ये भूमि के साधारण लोग थे ।

**मीमांसा** :—पाठक ! यह ही एक लेख मिस्टर बीम्स साहब का इस जाति के कुछ अंश में विरुद्ध है उसे ही लेकर लोग इन्हें ब्राह्मण मानने में शंका करते हैं और इस ही अंश को लेकर राजपूत व कहमी इन दो पत्रों ने भूमिहार ब्राह्मणों के विरुद्ध लिख मारा तदुप

ही एक दो हिन्दी लेखकों की भी क़लम चलगयी और परिणाम यह हुआ कि मिस्टर बीम साहब की ग़लती के कारण अन्य लेखकों को भी उस ही गलती व भूल का अनुकरण करना पड़ा तदनुसार इस शंकाने बहुत ही ज़ोर पकड़ा कि यथार्थ में भूमिहार किस वर्ण में हैं ? तदर्थ हमने बड़ेही प्रयत्न व बड़े बड़े कष्टों के साथ भूमिहारों का अनुसन्धान किया है।

१ पहिले तो विचारणीय यह है कि मिस्टर बीम साहब एक विदेशी तथा विधर्म्मी सज्जन थे वे हमारे देश की प्राचीन बातें व पुरातन कार्य्य क्रम को भलेप्रकार नहीं जान सके अतः सुनी सुनायी बातों के आधार का लेख सत्य नहीं ठहर सका।

२ दूसरे लेख में ही कई बातें ध्यान देने योग्य हैं अर्थात् लोकोक्ति व अफवाह सब सत्य ही नहीं हुआ करती हैं वरन बदमाश व पाखण्डी लोगों की एक प्रकार की घड़ंत होती है कि वे दूसरे का वैभव न देख सककर उस के प्रति निन्दा युक्त वार्तायें उड़ा देते हैं तिस का फल यह होता है कि :—

अतथ्य तथ्योवा हरतिमहिमानं जनरवः।

पञ्चतन्त्रे

अर्थात् झूठ व सच कोई भी अफवाह फैले उस से मनुष्य की महिमा घट ही जाती है इस ही तरह बीम साहब के लोकोक्त्यानुसार लेख से भूमिहारों के ब्राह्मत्व बोधक विषयक सन्देह उत्पन्न हो गया तद्वत ही हमारे पास एक दो सज्जनों के पत्र इस विषय के भी आये कि "आप भूमिहारों को ब्राह्मणों की सूची में कैसे छापते हैं? तिस से हमें विशेष ध्यान के साथ अनुसन्धान करके निर्णय करना पड़ा है।

३ इस विरुद्ध लेख के लेखक मिस्टर बीम साहब ने राजा जनक व राम का नाम लिखा है इस पर भी विचार करना है कि राजा जनक योगीराजेश्वर विदेह थे भूत भविष्यत् व वर्तमान तीनों कालों को जानने वाले थे भला ऐसा धर्म्मज्ञ राजा नीच जाति के लोगोंको जनेऊ पहिनाकर ब्राह्मणों के साथ भोजन करावे यह मिथ्या व अनर्गल है

तथा राजा जनक के लिये ऐसा अकर्तव्य असम्भव था, इस ही तरह राम हमारे साक्षात् त्रिलोकीनाथ भगवान थे अतः मर्य्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री रामचन्द्र जी नीच जाति के लोगों के गलों में जनेऊ डाल कर उन्हें ब्राह्मणों के साथ जिमाते यह भी श्री रामचन्द्र जी के लिये नितान्त असम्भव अकर्तव्य था फिर भी यह समझ में नहीं आता कि कुल मिथला देश में यानी समस्त तिरहुत व बिहार में राजा जनक व श्री रामचन्द्र जी सरीखे शक्तिशाली व प्रतापी राजाओं को केवल एक हज़ार ब्राह्मण नहीं मिले जहां आज अनुमान ७५ लाख केवल ब्राह्मण ही हैं।

यदि यह कहा जाय कि इन दोनों राजाओं के अतिरिक्त ऐसा करने वाला और कोई राजा होगा तो भी ठीक नहीं क्योंकि जहां आज लाखों ब्राह्मणों की आबादी है वहां एक हज़ार ब्राह्मण एक समय में न मिले हों यह किसी भी बुद्धिमान पुरुष के विचार में नहीं आसक्ता, फिर भी जो राजा यज्ञ करे लाखों रुपया धर्मार्थ खर्च करने को तय्यार होवे वह नीच जाति के लोगों को जनेऊ पहिना कर ब्राह्मणों के साथ जिमाने का महापाप अपने सिर पर लेवे यह भी असंगत वार्ता है।

४ मिस्टर बीम साहब को यह ही निश्चय नहीं हुआ कि ऐसा अधर्म करने वाले राजा जनक थे, राम थे व अन्य कोई थे? तो ऐसा अटकलपच्चू लेख सच कब हो सका है? कदापि नहीं!।

५ मिस्टर बीम साहब के इस बिना पेंदे के लेख को सच मानने के लिये कोई हेतु ही नहीं दीखता है और यह भी कहना अयुक्त न होगा कि मिस्टर बीम साहब कोई परमेश्वर के अवतार नहीं थे कि जो कुछ वे लिख गये वह बिलकुल ही निर्विवाद रूप से सत्य मान लिया जाय यदि यह कहा जाय कि प्रायः अंग्रेज़ों के लेख न्याय संगत निष्पक्ष भाव को लिये होते हैं तो हम अन्य कई अंग्रेज़ों के लेख इन के महत्व के पोषकता में देते हैं जिस से निर्विवाद रूप से हमें भूमिहार ब्राह्मणों को ब्राह्मण मानना पड़ेगा।

पाठक! यह तो प्रत्यक्ष ही है कि जिस से जिस का मित्र भाव होता है वह तो यदि उस की पक्ष में कहे तो कोई बड़ी बात नहीं परन्तु

यदि उस का शत्रु कोई बात उस के पक्ष में कहे तो वह बात एक बड़ी महत्वता की समझी जायगी अतएव ठीक इन्ही लोकधारानुसार एक समय राजपूत पाक्षिक पत्रिकाने भूमिहार ब्राह्मणों को चिढ़ाने के लिये इधरउधर के दो चार विरुद्ध लेखों का संग्रह करके भूमिहारों ब्राह्मणों की अप्रतिष्ठा करनी चाही थी परन्तु सत्य कभी छिपता नहीं है इस लिये उस पत्रिका के सम्पादक जी ने मिस्टर इलियट साहब का निम्न-लिखित लेख भी वहां छापा है ( देखो राजपूत पत्रिका आगरा मास मई सन १९११ )

Bhumihar—

A tribe of Hindus to be found in great numbers in Gorakhpore, Ajamgarh and the province of Benares. The Maharaja of Benares is of this caste. They call them selves sometimes Brahmans and sometimes Thakurs.

ये वाक्य इलियट्स सप्लीमेन्टरी ग्लासरी के हैं जिन का भाषानुवाद यह हुआ कि " भूमिहार हिन्दुओं की एक जाति है जो कि गोरखपुर, अजीमगढ़ और बनारस प्रान्त में पायी जाती है, महाराजा बनारस इस ही जाति के हैं, ये लोग कभी अपने को ब्राह्मण कहते हैं और कभी अपने को ठाकुर कहते हैं । "

पाठक ! इस लेख के अन्तिम वाक्य "ये कभी अपने को ब्राह्मण व कभी अपने को ठाकुर कहते हैं" पर ध्यान दीजियेगा कि ये वाक्य यथार्थ हैं अर्थात् ये ब्राह्मण तो इस कारण से हैं कि ये ब्राह्मण माता पिता के रजवीर्य्य के पैदा हुये ब्राह्मण शरीर हैं तथा षोड़श संस्कार युक्त हैं तथा सदैव से प्रत्यक्ष रूप से सर्वत्र भूमिहार ब्राह्मण कहाते हैं । और क्षत्रिय इस कारण से हैं कि इन के यहां भूमि व राज्य होने के कारण इन्हें अस्त्र शस्त्र रखकर राज्य रक्षार्थ उनका प्रयोग करना पड़ता है इस लिये जब ये लोग शत्रु से लड़ते हैं तब तो वीर रस में आकरके अपने को क्षत्रिय व ठाकुर कहने लगते हैं तथा जब ईश्वरा-

साधन पूजन पाठ व अन्य ब्राह्मकर्म में प्रवृत्त होते हैं तब ये अपने को ब्राह्मण कहते हैं।

यदि यह कहा जाय कि अस्त्र शस्त्रों का प्रयोग करनेवाला ब्राह्मण नहीं माना जा सक्ता तो यह सर्वथा मिथ्या है क्योंकि द्रोणाचार्य्य जी महाराज ब्राह्मण थे और अस्त्र शस्त्र विद्या के प्रसिद्ध आचार्य्य हुये हैं अतः ब्राह्मण को भी अस्त्र शस्त्र धारण करने का अधिकार है यह नहीं परशुरामजी महाराज ब्राह्मण थे पर अपने अस्त्र शस्त्र बल से पृथिवी को २१ बार निक्षत्रिय करके राज्य ब्राह्मणों को दिया था, यथा:

भुजबल भूमि भूप बिनु कीनी।
बिपुल बार महिदेवन दीनी॥

तु० कृ० रामायणे

अर्थात् परशुरामजी महाराज ने अनेकों बार अपनी भुजावों के बल से पृथिवी को निःक्षत्रिय करके राज्य ब्राह्मणों को दिया इस ही तरह लंकाधिपति रावण विभीषण आदि भी ब्राह्मण होते हुये अस्त्र शस्त्र धारी थे।

चाणक्य भी बड़े ही अस्त्र शस्त्र विद्या में कुशल हुये हैं इस ही तरह अश्वत्थामा भी अस्त्र शस्त्रों का प्रयोग करते हुये ब्राह्मण कहाये तब भूमिहार ब्राह्मण कौन वर्ण हैं ? उत्तर :—

ब्राह्मण हैं ! ब्राह्मण हैं !! ब्राह्मण हैं !!!

इस ही तरह वर्तमान के ब्राह्मण राजाओं के दीवान व अन्य उच्चपदस्थ ब्राह्मण कर्मचारीगणों को अस्त्र शस्त्रों का प्रयोग करना पड़ता है पर वे ब्राह्मण ही माने जाते हैं इस ही तरह आजकल के ब्राह्मणगण कोई नौकरी करते हैं, कोई रसोई करते हैं, कोई पानी पांडे हैं, कोई संईसी करते हैं, कोई खिदमतगारी करते हैं, कोई पल्लेदारी करते हैं,

कोई पारावानी करते हैं, कोई सरकारी पल्टन रिसालों में नौकरी करते हैं, कोई दूध वेचते हैं, कोई शूद्रों का धन खाते हैं, कोई जूतों की दूकान करते हैं, कोई खोमचा वेचते हैं और कोई कुछ व कोई कुछ करते हैं पर उन का ब्राह्मणत्व आजकल नष्ट नहीं माना जाता तो अकेले भूमिहार ब्राह्मणों पर ही इतना जोर जुल्म क्यों ? उत्तरः—

## वैमनस्य ! वैमनस्य !! वैमनस्य !!!

यदि यह कहा जाय कि ये दान नहीं लेते तब ब्राह्मण कैसे ? तो कहना पड़ता है कि दान लेने की आज्ञा का विधान गरीब ब्राह्मणों के लिये है न कि धनाढ्यों के लिये, जिसे दान लेने की आवश्यक्ता ही नहीं है वह दान क्यों लेवे ? वर्तमान काल में भूमिहार ब्राह्मण समुदाय के अतिरिक्त जो २ ब्राह्मण लक्षाधीश, जागीरदार व उच्चतम पद पर नौकर हैं वे गरीब ब्राह्मणों को देते हैं न कि लेते हैं और ऐसी स्थिती में उनका ब्राह्मणत्व नष्ट नहीं होता है तो भूमिहार ब्राह्मण जाति पर ही ऐसा आक्षेप क्यों ? उत्तरः—

## परस्पर द्वेष ! परस्पर द्वेष !! परस्पर द्वेष !!!

क्योंकि हम देखते हैं कि आज कल प्रचलित दशा में भी छाया पात्र, व भैंस आदि के निषिद्ध दान प्रायः गरीब ब्राह्मण व डाकोतों को दिलाये जाते हैं और पूजन पाठ करने वाले उच्चब्राह्मण उसे नीच कर्म समझ के दान नहीं लेते हैं, इस ही तरह विवाह में जब कन्या दान लिया जाता है तो उस दान के पाप की निवृत्त्यर्थ वर पक्षवालों से यथाशक्ति मुद्राओं का दान कराया जाता है ।

पुनः अध्यात्म रामायण अयोध्या काण्ड के प्रथम सर्ग में श्रीराम चन्द्र जी के प्रति वसिष्ठ जी महाराज ने कहा है किः—

**"पौरोहित्यमहं जाने विगर्ह्यं दूष्य जीवनम्" ।**

अर्थात् हे रामचन्द्र जी यह मैं जानता हूं कि पुरोहित कर्म से

निर्वाह करना निन्दित है । पुनः तुलसीकृत रामायण में भी लिखा है कि:—

उपरोहितो कर्म अति मन्दा, वेद पुराण स्मृति कर निन्दा ॥

मनुस्मृति धर्मशास्त्र को भी यदि देखा जावे उस में भिन्न भिन्न दानों के भिन्न भिन्न प्रायश्चित लिखे हैं यहां तक कि श्राद्ध में जीमने तक का भी प्रायश्चित लिखा है अतः दान लेना उत्तम कर्म नहीं है ।

पुनः—

अकिञ्चनानां हि धनं शिलोञ्छनम्,
तेनेह निर्वर्तित साधुसत्क्रियः ।
कथं विगर्ह्यं तु करोम्यधीश्वराः,
पौरोधं संहृष्यति येन दुर्मतिः ॥

श्रीमद्भागवत स्कंध ? अ० ? श्लोक

अर्थः—भागवत में कथा है कि देवता लोगों ने विश्वरूप ऋषि से कहा कि हे देवगण ! बहुत दरिद्रावस्था में भी ब्राह्मण शिलोञ्छ वृत्ति यानी खेतों में का पड़ा पड़ाया अन्न चुनकर निर्वाह करले परन्तु निन्दित कर्म पुरोहिताई न करे ।

इस लिये दान न लेने का आक्षेप भूमिहार ब्राह्मणों के महत्व का बाधक नहीं है ।

इस पर भी यदि सन्तोष न हो तो लीजिये एतद्देशीय ब्राह्मण विद्वान महामहोपाध्याय पंडित हरप्रसाद जी शास्त्री के लेख को जो भूमिहारों के विषय में एशियाटिक सोसाइटी के जर्नल भाग १ पृष्ठ ६१ सन् १९०२ में छपा है उसे यहां उद्धृत करते हैं ।

There are in Behar and in Benares a class of men known as Babhans or Bhumihars. Their position in Hindu society is extremely anoma-

lous. They claim to be Brahmans but no good Brahmans such as the Kanojia and Saryupariya treat them on equal terms. They would neither intermarry with them nor eat with them etc. etc.

भावार्थः—"बिहार और बनारस में एक जाति है जो कि बाभन या भुंइहार कहलाती है, हिन्दु जाति में उन का कौनसा स्थान है यह अव्यवस्थित है, ये ब्राह्मण होने का दावा करते हैं परन्तु कोई श्रेष्ठ ब्राह्मण यथा कन्नौजिया व सर्यूपारीय इन के साथ समानता का व्यवहार नहीं करते, न वे इनके साथ योनि-सम्बन्ध करते हैं और न इनके साथ भोजन ही करते हैं।

इस लेख में महा महोपाध्याय जी ने कुछ अंश भूमिहार ब्राह्मणों के विरुद्ध भी लिखा है उस का खंडन किया जा चुका है परन्तु कुछ अंश भूमिहार ब्राह्मणों का पोषक व उन के ब्राह्मणत्व को समर्थन करने वाला भी है अर्थात् देश देश की भिन्न भिन्न बोली के अनुसार कहीं, ब्राह्मण, कहीं बामन, कहीं बामण, कहीं बाभन, कहीं बामन, कहीं बम्मन, और कहीं भव्वन बोलने में आता है अर्थात् ये सब शब्द ब्राह्मण शुद्ध शब्द के अपभ्रंशरूप हैं इसलिये भूमिहार ब्राह्मण ब्राह्मण वर्ण में हैं ऐसा सिद्ध होता है। कन्नौजिये व सर्यूपारी इन के साथ योनि-सम्बन्ध नहीं करते न भोजन करते हैं तो यह हेतु भी कोई पुष्टप्रमाण नहीं है क्यों कि " सात कन्नौजिये और आठ चूल्हे " अर्थात् कन्नौजिये लोग पांच भी तो एक दूसरे के चूल्हे की नहीं लेते हैं इसलिये सात कन्नौजिये रसोई बनावें तो उन सातों के लिये एक आठवां चूल्हा अवश्य होने को चाहिये इसलिये ऐसे लोग भूमिहार ब्राह्मणों के साथ क्यों खाने पीने लगे ये पूर्वकाल की तो जाने दीजिये आज कल तो खाना पीना व योनि सम्बन्ध करना तो अपने अपने वर्ग के ब्राह्मणों के साथ होता है न कि सम्पूर्ण ब्राह्मणों का एक जगह इस लिये

यह हेतु भी पोच व अमानीय है जैसा कि पंडित हरिकृष्ण वेंकटराम जी ने अपने ग्रन्थ में आज कल की प्रचलित दशा के देखकर तद्वत ही श्लोक रचना कर के लिख दिया है यथा:-

तत्र कन्या प्रदातव्या तत्र कार्य्यं हि भोजनम् ॥८॥
भेदो यद्यपि न प्रोक्तो धर्म शास्त्रे द्विजोत्तमैः ।
तथापि भोजनं कार्य्यं स्वज्ञातिषु सदा बुधैः ॥९॥
बा० मा० पृ० २५ श्लो० ८, ९ ॥

भा०-जिस ब्राह्मण समुदाय में अपनी कन्या देना उन्हीं के यहां का भोजन भी ग्रहण किया जाना चाहिये ॥ ८ ॥ हां धर्म शास्त्रों में ब्राह्मणों के भेदाऽभेद का कुछ विवर्ण नहीं है तथापि आज कल लोगों के आचरण कुछ के कुछ हो गये हैं अतः अपने ही वर्ग वालों के यहां का भोजन करना चाहिये । ९ ।

पाठक ! ऐसी भी लौकिक मर्य्यादा में कान्यकुब्ज व सर्यूपारी तथा अन्य इन के यहां का भोजन कैसे ग्रहण करते ? और जब नहीं कर सक्के थे तो ऐसी दशा में " भूमिहार ब्राह्मण नहीं " ऐसा मान लेना अनुचित है और अंग्रेजों की देखा देखी महामहोपाध्याय जी का लेख भी हेतु व तर्क शून्य होने के कारण ग्राह्य नहीं है और जहां किसी २ अंग्रेज ने भूल किया तहां महामहोपाध्याय जी ने भी बड़ी भूल किया है । अतः इन विदेशी विद्वानों की सम्मतियों पर ध्यान न देकर भारतवर्षीय ब्राह्मण विद्वानों की सम्मतियें दियी जाती हैं तत्पश्चात अंग्रेज विद्वानों की भी सम्मति देंगे ।

(१) पं० नरायनप्रसाद मुकुन्दराम जी ने अपनी संग्रहीत कान्यकुब्ज वंशावलि नामक पुस्तक, संवत १९५७ में श्रीवेंकटेश्वर समाचार स्टीम प्रेस मुम्बई की छपी के पृष्ठ ४३ की पंक्ति १ से ४ तक का लेख यह है:-

अनुमान से ३६० वर्ष व्यतीत भये कि यवन लोगों से धमद्रा-रपुर के अधिपति भुइहार ( भूमिहार ) ब्राह्मणों से अति युद्ध भया।

(२) बाबू साधूशरण प्रशाद सिंह जी रचित "भारत भ्रमण" नामक पुस्तक जो सन् १६०२ को मुद्रित है उस को द्वितीय अध्याय के पृष्ठ १२ में ऐसा लिखा है कि:—

"लगभग १६०० ईस्वी में लड़ाके ब्राह्मणों ने दूसरे हिन्दुवों के साथ दक्षिण से राटोर प्रधानों को निकालना और बेदखल करना आरम्भ कर दिया"

( ३ ) डाक्टर राजेन्द्रलाल मित्र L. L. D. and C. I. E. एल. एल. डी. एन्ड सी. आई ई. द्वारा सञ्चालित बंगाल मासिक पत्र पर्व ४, खण्ड ४० शकाब्द १७०६ मास श्रावण के अंक के पृष्ठ ६३ में ऐसा लिखा है कि :—

( 1 ) Memoirs on the History, Folklore and Distribution of the Races of the Narth Western Provinces of India By the Late Sir Henry M. Elliot Supplementary Slossary Vol. I Page 146.

अर्थात् उपरोक्त मिस्टर अम इलियट साहब बहादुर की पुस्तक के भाग १ के पृष्ठ १४६ में ऐसा लिखा है कि :—

Of Brahmans there are ten well known Sub Divisions of which five are Gaur and five are Dravira. Of the five Gaur Kanaujia is one and may also beconsidered the most numerous, as it extends from the Siwalik Hills to the Narbada and the Bay of Bengal. The Sub Divisions of the Kanaujias are five: Kanaujia Proper, Sarvaria Sanadhya, Jhijhotia and Bhumihar.

( १ ) अर्थ :-ब्राह्मणों के प्रसिद्ध विभाग दस हैं पञ्च गौड़ और पञ्च द्रविड़, पञ्चगौड़ों में कन्नौजिया एक है और इस का विस्तार भी बहुत है क्योंकि ये शिवालिक पहाड़ियों से नर्बदा और बंगाल

की खाड़ी तक फैले हैं, कन्नौजियों के अन्तर्गत पांच भेद हैं १ कन्नौजिया खास, २ सरवरिया, ३ सनाढ्य, ४ जिझौतिया और ५ भूमिहार।

( २ ) मनुष्यगणना सुपरिन्टेन्डेन्ट ने सन् १८६५ की मनुष्यगणना में ब्राह्मणों की सूची में ५८ वीं संख्या पर लिख कर भूमिहारों को ब्राह्मण माना है। अर्थात् यहां ब्राह्मणों के ६८ भेद लिखे हैं तहां ५८ वें स्थान में " भूमिहार " भी लिखा है।

३ पुनः डाक्टर राजेन्द्रलाल मित्र M.A.L.L.D. लिखते हैं "कन्नौज ब्राह्मण दिगेर पांचटो दल आछे यथा सरवरिया, सन्नौधा, जिझौतिया, भूमिहार एवम् प्रकृत कन्नौज "।

भावार्थ :—कन्नौजिये ब्राह्मणों के पांच भेद बतलाये हैं यथा १ सरवरिये २ सन्नौधा ३ जिझौतिया ४ भूमिहार और ५ प्रसिद्ध कन्नौजिये।

( ४ ) इन्हीं डाक्टर साहब ने अपनी पुस्तक " विविधार्थ संग्रह" जो सन् १८५५ में छपी है उस में भी कान्य कुब्जों के भेदों में भूमिहार ब्राह्मणों की गणना किया है।

पंडित योगेन्द्रो नाथ भट्टाचार्य्य जी एम. ए. डी. एल. नदिया शान्ति पुर की पंडित कालेज सभा के प्रधान साहब ने अपनी पुस्तक " हिन्दु जाति और मत " के पृष्ठ १०२ में लिखा है कि :-

The clue to the exact status of the Bhuinihar Brahmans is afforded by their very name. The word literally means a land holder etc etc.

अर्थ :—भूमिहार ब्राह्मणों की स्थिती का पता इन के नाम से ही मिलजाता है जिस का शब्दार्थ भूमिग्रहण करने वाले के है आदि आदि।

( ६ ) महामहोपाध्याय पंडित चित्रधर शास्त्री जी की सम्मति जो ब्राह्मण समाचार तारीख ८ फरवरी सन् १९११ के अंक में छपी है इस में भी भूमिहारों को ब्राह्मण ही लिखा है। यथा :—

किंत्वस्या यदि भूमिहार घटिता नस्यात्समा ख्यातवां।
विप्राः सर्वविधाः समेत्य सकलं स्वंस्वं चरित्रं सदा॥

भावार्थ :—यदि ये भूमिहार, ब्राह्मण नहीं हों तो सम्पूर्ण प्रकार के ब्राह्मणगण अपने अपने प्रमाण प्रकट करें।

अन्यथा ये ब्राह्मण हैं ऐसा ही हमें मानना पड़ेगा।

Extract from the fifth report from the Select Committee on the affairs of the East India Company Vol. I Bengal Presidency, London 1812. Page 511 to 513. Subah Behar First Sarcar Behar.

भावार्थः—जब भारत का शासन ईस्ट इण्डिया कम्पनी के आधीन था उस समय के दवामी बन्दोबस्त की रिपोर्ट का सारांश जो ५ वीं सेलेक्ट कमेटी की रिपोर्ट जिल्द १ बंगाल प्रान्त-जो सन् १८१२ यानी आज सन १९१५ में १०३ वर्ष की लण्डन की छपी हुयी है जो आजकल कलकत्ता युनिवर्सिटी के M. A. अम. ए. क्लास में जो विद्यार्थी इतिहास का विषय लेते हैं उन को यह ग्रन्थ पढ़ाया जाता है तिस के पृष्ठ ५११ से ५१३ में सूबे बिहार का वर्णन करते हुये उस समय के प्रतिष्ठित राजे महाराजे व जागीरदारों का भी विवर्ण दिया गया है उस ही ग्रन्थ से भी भूमिहार ब्राह्मणों के विषय का विवर्ण व " भूमिहार वर्ण परिचय " जो उस में छपा है उस का सारांश मात्र इस प्रकार से है। इस रिपोर्ट को लार्ड कार्नवेलिस ने सन १७९१ ई. में लिखी थी उस में इस जाति के लोगों को अन्य ब्राह्मणों की तरह केवल " ब्राह्मण " लिखा था।

Ten Perganas Zamindary of Inder Jit Singha Brahmin residing at Tikari.

भा० टिकारी के ब्राह्मण इन्दरजीतसिंह के यहां दस परगने जमींदारी में हैं। ये भूमिहार ब्राह्मणों के ही पर्गने हैं।

Two Perganas Zamindary of Jaswant Singha etc. Brahmins, composed of Arenzil and Masoodah.

भा० अरंजीत और मझूदाह नामक पर्गनों की जमींदारी अलर्धत सिंह जी आदि आदि ब्राह्मणों के नाम है। पाठक! यह भी भूमिहार ब्राह्मण हैं।

Two Perganas Pilich and Malda, the former held by Nandoo Singha Brahmin, in Zamindary.

भा० दो पर्गने पिलिच और माल्दा नन्दूसिंह ब्राह्मण को जमींदारी में मिले थे। ये भी भूमिहार ब्राह्मण हैं।

Two Perganas Sanret and Bettia, in Zamindary, chiefly to Howlass Chowdhery and Angin Singha, Brahmins.

भा० दो पर्गने सनरेत और बेतियाह की जमींदारी हुलास चौधरी तथा अगिनसिंह ब्राह्मण को मिली थी। ये भी भूमिहार ब्राह्मण हैं।

One peganah Gyaspur to Sheo Pershad Singha. Brahmin with other lessor Zamindary.

परगनाह ग्यासपुर शिवप्रसाद सिंह जी ब्राह्मण को ज़मींदारी में मिला था ये भी भूमिहार ब्राह्मण थे।

One pergannah Baykunthpur, to Kesri Singha, Brahmin.

पर्गनाह बैकुंठपुर केशरीसिंह जी ब्राह्मण को मिला था जो भूमिहार ब्राह्मण थे।

Sir Circar Hajipur. One pergannah Havelee to Hardar Singha etc. Brahmins in Zamindary.

पर्गनाह हवेली हरदरसिंह ब्राह्मण को ज़मींदारी में मिला था। जो भूमिहार ब्राह्मण हैं।

One pergannah Saraisa to Serchit Sinagha Brahmin.

पर्गनाह सरैसा सरचितसिंह ब्राह्मण को ज़मीन्दारी में मिला था जो भूमिहार ब्राह्मण हैं।

Swo Pergannas Rutty and Gursand principally in Zamindary to Pertab Singha Brahmin.

रत्तो व गुसैद ये दोनों पर्गने परतायसिंह ब्राह्मण को मिले थे, जो भूमिहार ही थे।

Five perganuas Moulkey etc. in zamindary to Herlall etc. Brahmins and usually united with the perganuas of Balia etc. belonging to Mongeer.

पांच पर्गने जिन के नाम मुलकी आदि आदि हैं वे हरलाल आदि आदि ब्राह्मणों को जमींदारी में मिले थे जोकि बालिया आदिकों की जमींदारी से मिले जुले थे ये भी भूमिहार ब्राह्मण हैं।

Sever Circar Saran. 15 Perganuas Gowah etc; of which to Gopal Narain etc. 5 brothers, 2 Callyanpur and Siah, to Raja Fateh Singha Expelled all of the Brahmin Caste.

पन्द्रह पर्गने गोवाह आदि गोपाल नरायण आदि पांचों भाइयों को मिले, कल्यानपुर और स्याह राजा फतेहसिंह जी आदि कों को मिले थे।

और देखिये:—

Extract From Reports of Calls Heard and Determined By the Judicial Committee, and the Lords of Her Majesty's Most Honourable Privy Council on Appeal From The Suprime And Sudder Dewani Courts In The East Indies. By Edward F. Moore, Esquire, Barrister at Law.

Vol. V. 1849–54. London.

प्रीवी कौन्सिल का फैसला जोकि ईस्ट इन्डिय कम्पनी के समय अर्थात सदर व दिवानी कचेहरी की ओर से दायर हुयी थी जिस को एडवार्ड एफ़ मूर साहब एस्क्वायर बेरिस्टर अटलाकी पुस्तक के भाग ५ वें के पृष्ट ५४ वें का सारांश मात्र नीचे दिया जाता है, यह पुस्तक सन १८४६ में लंडन नगर में छपी थी इस के फैसिले के आधार पर भी भूमिहार ब्राह्मण वर्ण में ही हैं ऐसा निश्चय होता है क्योंकि यह

ऐसी दशा में जो लोग भूमिहार ब्राह्मणों को ब्राह्मण नहीं मानते उन का यह कथन सर्वथा मिथ्या है क्योंकि यदि भूमिहार ब्राह्मण न होते तो भूमिहार और मैथिल ब्राह्मणों के सम्बन्ध कदापि नहीं होते और अब इन के परस्पर विवाह सम्बन्ध होते हैं तो मानना पड़ेगा कि निस्सन्देह रूप से भूमिहार ब्राह्मण हैं। इस की पुष्टि में कतिपय प्रमाण निम्न लिखित हैं।

भूमिहार और मैथिलों के परस्पर विवाह सम्बन्ध

( १ ) भारत वर्ष का प्रसिद्ध दैनिक अखबार " भारत मित्र कलकत्ता " मिती पौष शुक्ला सप्तमी संवत १६७२ के पत्र की सम्पादकीय टिप्पणी में लिखा है कि "भूमिहार और मैथिलों के वैवाहिक सम्बन्ध होते है इस लिये भूमिहारों के ब्राह्मण होने में सन्देह करना व्यर्थ है *"

( २ ) जिस प्रकार से युक्त प्रदेश में अधिकांश गौड़ समुदाय सनाढयों के साथ सम्बन्ध करता है और इस को अनुचित कर्म नहीं समझता तैसे कुछ ईर्षा द्वेष रखने वाले गौड़, सनाढयों के साथ विवाह सम्बन्ध करने को बुरा भी समझते हैं ठीक यही दशा भूमिहार और मैथिलों की है जब धड़ा धड़ भूमिहार मैथिलों के विवाह सम्बन्ध बढ़ने लगे तब सन् १६११ ईस्वी के भागलपुर के मैथिल महा सभा अधिवेशन में इस के रोकने का प्रस्ताव पास हुआ जिस का विवरण उस ही वर्ष २६ अप्रैल के मिथला मिहिर नामक पत्र में इस प्रकार छपा है :-

" तदन्तर एकटा महाशय ( नाम हमरा विस्मृत भैगेल अछि, मि. मि. सं० ) ई प्रस्ताव कैलन्हि जे बहुतो मैथिल भूमिहार ब्राह्मणसं सम्बन्ध करैत छथि। एहि विषय में महासभाक दिशसं प्रबंध होवाक चाही जाहिसं ई सम्बन्ध बन्द हो। सर्व सम्मति से ई निश्चय भलै जे एहि विषयक ऊपर विचार करवाक हेतु एकटा सिलेक्टर कमैटी नियत कैल जाय "

भावार्थ :— " मिथिला मिहिर " नामक पत्र मैथिल महासभा का एक प्रतिष्ठित पत्र है उस में ऐसा लिखा है कि, " इस के पीछे

* देखो भा० मि० साप्ताहिक मिती माघ शु० ११ सं० १६७२ के अंक को भी।

Brahmin in P. C. Tagore's preface to Virad Chintan ani p. 85. foot note, it is stated that the Bhumihars are regarded as Brahmins, but of low grade. The plaintiff is Brahman by birth. There cannot there-fore be any illegality in the marrage of the Couple. The union of Brahman girl of a higher grade with a Brahman of a lower grade in marriage does not Vitiate the Marriage.

बाबू अमृतलाल जी चक्रवर्ती सब जज ( सदर आलाह ) तिरहुत के यहां तारीख १५ सितम्बर सन् १८६२ में———

इन्डियनला रिपोर्ट कलकत्ता पृष्ठ ६७१ का सारांश यह है कि राजा रामदास भूमिहार जाति से है उस का मुद्दई के साथ विवाह हो जाना कानून विरुद्ध ( शास्त्र नियम विरुद्ध ) नहीं है। क्योंकि पी. सी टागोर रचित विवाद चिन्तामनि की भूमिका पृष्ठ ८५।

This, as well as their locale, the cradle and arera of Budhism, has led antiquarians to belive the Babhars to be those Brahmins who had turned Budhist polmy days of Buddhism, but had forsaken Buddhism after its down fall.

बंगाल एशियाटिक सोसाइटी के जर्नल की जिल्द LXXIII. भाग पहिला नं० २ सन् १९०४ की छपी में बाबू गिरीन्द्रनाथदत्त बी. ए. मेम्बर आफ दी रायल एशियाटिक सोसाइटी ने लिखा है कि "शब्द बाभन न तो संस्कृत का है न प्राकृतिक ( भाषा का ) है किन्तु बुद्ध व अशोक के समय से यह ब्राह्मण के भावार्थ में लिखा जाता है। क्योंकि बौद्ध ऋषि मुनिगण भी बुद्ध के समय में "बाभन" शब्द का अर्थ ब्राह्मण ही लेते थे परन्तु बौद्ध धर्म का प्रादुर्भाव होने के कारण इन शब्दों का भावार्थ भी कुछ अपरिचित सा मालुम होता है।

Page 149.........Prayed that the Court would

declare their rights agreeably to the rule observed by the Chowdhyas (†).

पृष्ठ १४६–कोर्ट से प्रार्थना किया गयी कि चौव्या * के अनुसार अपने अपने हक़ दिलाये जावें ।

Extract from

Sir, Herbart-The people of India by Risley K. L. I. E.I., L. S. I. Census Commissiouser for India 1901 Page 38.

The order thus established Corsesponds Substantially with the Scale of Social precedence Independently ascertained. At the top of the lisf are the Bhumihar who rank high among the territorial aristocracy of Hindusfan and Behar then come the Brahmins.

आनरेबल सर हर्बर्ट रिस्ली क.सी. आई. ई. एन्ड आई.सी.एस. आई. हिन्दुस्तान की मनुष्यगणना विभाग के कमिश्नर ने भारत वर्ष के लोग नामक पुस्तक के पृष्ठ ३८ में भूमिहारों को ब्राह्मण मानते हुये उन का पद प्रतिष्ठित माना है ।

Extract from Bengal Census Report 1901 Page 3791 Para 610.

The best opinion at the present time is per-

---

(†) The title of a particular tribe of Brahmins. and Usurped the lands of the Buddhists to monesterries for which they were called "Bhumihars" which too is not a Sanskirt word.

* यह ब्राह्मणों की उपाधी का नाम है ।

नहीं थे तब उन का मृतक शरीर सुगन्धित द्रव्यों युक्त तेल में रखा-जाकर भरत जी के आने तक किन्हीं ब्राह्मणों की रक्षा में रक्खा गया था और जब तक भरत जी न आये वे ब्राह्मण नित्य नैमित्तिक अपने भोजन व्यवहारादि सब ही कुछ करते थे, जब भरत जी आये तब उन ब्राह्मणों की सेवा से प्रसन्न होकर पुरस्कार स्वरूप में उन ब्राह्मणों को बहुत कुछ दान दक्षिणा दियी यद्यपि वे ब्राह्मण नटते भी रहे तथापि महाराज वशिष्ठ जी की आज्ञा से यह सम्पूर्ण दान दक्षिणा उन ब्राह्मणों को स्वीकार करलेनी पड़ी, तब से ही यह पृथा पड़ते पड़ते दृढ़ होगयी और वे ब्राह्मण महाब्राह्मण व महापात्र कहे जाकर सम्बोधन किये जाने लगे थे, तब ही से गरुड़ पुराण की रचना हुयी और महाब्राह्मणों को बड़ा लाभ होने लगा, परिणाम यह हुआ कि ये महाब्राह्मण विद्या शून्य कोरमकोर रह कर सच्चे आचार्य्यों के स्थान में आचारज व आचारी मात्र रह गये और इन की सम्पूर्ण विवेक बुद्धि जाती रही, यह एक रीति पड़ जाने से यजमान लोग अपने अपने मृतक के अर्थ एक दूसरे से बड़ चड़कर दान दक्षिणा व सम्पूर्ण आवश्यक पदार्थ देने लगे उधर इस निषिद्ध दान को सर्व साधारण ब्राह्मण न लेसककर इन महाब्राह्मणों के भंडार भरने लगे जिस से ये लोग आलसी होकर संडे होगये।

हमने अपने नेत्रों से स्वयं देखा है कि जिस किसी का पुत्र, पौत्र भाई, बंधू व माता पिता मरजाते हैं वह बिचारा एक तो इस विपत्ति से दग्ध व पीड़ित रहता है दूसरे उस ही समय ये महाब्राह्मण लोग मृतक के नाम पर दान दक्षिणा लेने में बड़े बड़े हठ व जिद्द करके यजमान को तंग करते हैं ऐसी दशा में यजमानों का केवल परमेश्वर ही होता है।

सन् १६०१ की मनुष्यगणना के अनुसार संयुक्त प्रदेश में कुल ८६८३ महापात्र थे जिस में से ४३४६ पुरुष और ४६३४ स्त्रियें थीं आर्य्य समाजी एक भी नहीं थे, ? यदि आर्य्य समाजी बन जांय तो खांय क्या ?।

ऐसी दशा में जो लोग भूमिहार ब्राह्मणों को ब्राह्मण नहीं मानते उन का यह कथन सर्वथा मिथ्या है क्योंकि यदि भूमिहार ब्राह्मण न होते तो भूमिहार और मैथिल ब्राह्मणों के सम्बन्ध कदापि नहीं होते और जब उन के परस्पर विवाह सम्बन्ध होते हैं तो मानना पड़ेगा कि निस्सन्देह रूप से भूमिहार ब्राह्मण हैं। इस की पुष्टि में कतिपय प्रमाण लिखा जाता है।

(भूमिहार और मैथिलों के परस्पर विवाह सम्बन्ध)

( १ ) भारत वर्ष का प्रसिद्ध दैनिक अखबार "भारत मित्र कलकत्ता" मिती पौष शुक्ला सप्तमी संवत १९७१ के पत्र की सम्पादकीय टिप्पणी में लिखा है कि "भूमिहार और मैथिलों के वैवाहिक सम्बन्ध होते हैं इस लिये भूमिहारों के ब्राह्मण होने में सन्देह करना व्यर्थ है *"

( २ ) जिस प्रकार से युक्त प्रदेश में अधिकांश गौड़ समुदाय सनाढ्यों के साथ सम्बन्ध करता है और इस को अनुचित कर्म नहीं समझता तैसे कुछ ईर्षा द्वेष रखने वाले गौड़, सनाढ्यों के साथ विवाह सम्बन्ध करने को बुरा भी समझते हैं ठीक यही दशा भूमिहार और मैथिलों की है जब धड़ा धड़ भूमिहार मैथिलों के विवाह सम्बन्ध पड़ने लगे तब सन् १९११ ईस्वी के भागलपुर के मैथिल महा सभा अधिवेशन में इस के रोकने का प्रस्ताव पास हुआ जिस का विवरण उस ही वर्ष २९ अप्रैल के मिथिला मिहिर नामक पत्र में इस प्रकार छपा है :–

"तदन्तर एकटा महाशय ( नाम हमरा विस्मृत भ गेल अछि, मि. मि. सं० ) ई प्रस्ताव कैलन्हि जे बहुतो मैथिल भूमिहार ब्राह्मणसं सम्बन्ध करैत छथि। एहि विषय में महासभाक दिशसं प्रबंध होवाक चाही जाहिसं ई सम्बन्ध बन्द हो। सर्व सम्मति से ई निश्चय भेल जे एहि विषयक ऊपर विचार करवाक हेतु एकटा सिलेक्टर कमेटी नियत कैल जाए"

भावार्थ :– "मिथिला मिहिर" नामक पत्र मैथिल महासभा का एक प्रतिष्ठित पत्र है उस में ऐसा लिखा है कि, "इस के पीछे

* देखो भा० मि० साप्ताहिक मिती माघ शु० ११ सं० १९७२ के अंक को भी।

एक महाशय जिन का नाम हमें ज्ञात नहीं उन्हों ने ऐसा प्रस्ताव किया कि जो बहुत से मैथिल भूमिहार ब्राह्मणों के साथ विवाह सम्बन्ध करते हैं इस के सम्बन्ध में महासभा रोकने का प्रबंध करे अतः सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि इस की जांच के लिये एक सिलेक्टर कमेटी बनायी जाय "।

पाठक ! इस से अब कोई भी यह नहीं कह सक्ता कि भूमिहार व मैथिलों के बहुत से सम्बन्ध नहीं होते व भूमिहार ब्राह्मण नहीं हैं क्योंकि जब मैथिल ब्राह्मण भूमिहारों के साथ सम्बन्ध करते हैं तो भूमिहार ब्राह्मण हैं ऐसा मानना पड़ेगा दूसरे उपरोक्त प्रस्ताव में मिथिला मिहिर भी भूमिहारों को " ब्राह्मण " लिखता है यह बात दूसरी है कि इन दोनों के सम्बन्ध होने चाहियें या नहीं। यदि भूमिहार ब्राह्मण न होते तो मिथिला मिहिर भूमिहारों को ब्राह्मण कैसे लिखता और मैथिलों तथा भूमिहारों के सम्बन्ध क्यों होते ? इस से निश्चय होता है कि भूमिहार ब्राह्मण अवश्य हैं।

हमने अपने जाति अन्वेषण के भ्रमण में पता लगाया है कि।

( १ ) दर्भंगा प्रान्तस्थ दुलारपुर निवासी तुरन्तलाल चौधरी मैथिल ब्राह्मण का विवाह उस ही प्रान्तस्थ ग्राम जलेवार मूलवाले भूमिहार ब्राह्मण मगन चौधरी के घर हुआ है।

( २ ) देवधावाले भूमिहार ब्राह्मण रामधकलराय सनेवार की लड़की का ब्याह उपरोक्त तुरंतलाल जी चौधरी मैथिल के घर हुआ है।

( ३ ) प्रान्त दर्भंगा ग्राम दहौरा के मैथिल वनमाली सरस्वती ( सरस्वती बाबू ) के घर में ठाहर ग्राम के समीप बल्लीपुर के दामोदर चौधरी की बहिन से हुआ है।

( ४ ) इस ही ठाहर ग्राम में मैथिलों के यहां नया नगनस्थसनैवार भूमिहार ब्राह्मण चौधरी झलकासिंह तथा चौ० ऊधनसिंह की बहिनें ब्याही हैं।

( ५ ) सिरहावाले नन्दूराय मैथिल के लड़के का सकरपुरा ग्राम वाले सनैवार भूमिहार ब्राह्मण नथुनीराय के घर में सम्बन्ध है।

ऐसे ऐसे अनेकों उदाहरण दिये जा सक्ते हैं इसलिये यहां विशेष न देकर हम भूमिहार ब्राह्मणों को शुद्ध ब्राह्मण मानते हैं।

२७६ महा ब्राह्मण:—यह एक ब्राह्मण जाति है इस का शब्दार्थ ऐसा होता है कि "बड़ा ब्राह्मण" यह जाति युक्त प्रदेश में है, देश भेद व देश भाषा की भिन्नता के कारण ये लोग कहीं महाब्राह्मण, कहीं महापात्र, कहीं अग्रभिक्षु, कहीं अग्रदानी, कहीं अग्रदाना, कहीं कट्टयाह कहीं आचार्य्य, कहीं आचारज और कहीं आचारी कहाते हैं। इन सब के विषय इस ही ग्रन्थ के अग्रभिक्षु पुनरुत्थान तथा आचार्य्य जाति पुनरुत्थान प्रकरणों में बहुत कुछ प्रमाणादि लिख आये हैं तद्वत इस जाति को भी समझना चाहिये आज कल जिस प्रकार से अन्य सम्पूर्ण ब्राह्मण समुदाय में अनेकों शास्त्र विरुद्ध रीतियें, आचारभ्रष्टता और कुप्रथायें प्रचलित होरही हैं वैसे ही इस जाति में भी कुछ दोष आगये हैं जिस से लोग इन में दोष मानते हुये इन से घृणा करते हैं अतएव अन्य ब्राह्मणों में अनेकों निन्दनीय कर्म्मों के होते हुये भी वे ब्राह्मण ही माने जाकर पूजनीय समझे जाते हैं वैसे ही यह जाति भी मानी जानी चाहिये गरुड़ पुराण व निर्णय सिंधु आदि ग्रन्थों में इस जाति का बड़ा पूजन लिखा है।

कोई काल था कि यह जाति अपने कर्म धर्म्मों में अति पवित्र, विद्या में महा विद्वान, तप में महातपस्वी और धर्म्म परायण थी यह ही कारण था कि ऋषियों ने पितृ कर्म में मृतक की गति इस ही ब्राह्मण जाति के हाथ से मानी है और तद्वत शास्त्र में वाक्य भी मिलते हैं, पूर्व काल में ये लोग उच्च श्रोत्रिय ब्राह्मण वंशज थे।

पूर्व काल में आज कल की तरह ये लोग मृतक के भोजन वस्त्रादि दस दिन के अशौच समय में नहीं ग्रहण करते थे परन्तु यह प्रथा महाराज दशरथजी के समय से चली प्रतीत होती है क्योंकि जब महाराज दशरथ जी का देहान्त हुआ तब कोई पुत्र अयोध्या जी में

महाँ थे तब उन का मृतक शरीर सुगन्धित द्रव्यों युक्त तेल में रखा-जाकर भरत जी के आने तक किन्हीं ब्राह्मणों की रक्षा में रक्खा गया था और जब तक भरत जी न आये वे ब्राह्मण नित्य नैमित्तिक अपने भोजन व्यवहारादि सब ही कुछ करते थे, जब भरत जी आये तब उन ब्राह्मणों की सेवा से प्रसन्न होकर पुरस्कार स्वरूप में उन ब्राह्मणों को बहुत कुछ दान दक्षिणा दियी यद्यपि वे ब्राह्मण नटते भी रहे तथापि महाराज वशिष्ठ जी की आज्ञा से यह सम्पूर्ण दान दक्षिणा उन ब्राह्मणों को स्वीकार करलेनी पड़ी, तब से ही यह प्रथा पड़ते पड़ते दृढ़ होगयी और वे ब्राह्मण महाब्राह्मण व महापात्र कहे जाकर सम्बोधन किये जाने लगे थे, तब ही से गरुड़ पुराण की रचना हुयी और महाब्राह्मणों को बड़ा लाभ होने लगा, परिणाम यह हुआ कि ये महाब्राह्मण विद्या शून्य कोरमकोर रह कर सच्चे आचार्यों के स्थान में आचारज व आचारी मात्र रह गये और इन की सम्पूर्ण विवेक बुद्धि जाती रही, यह एक रीति पड़ जाने से यजमान लोग अपने अपने मृतक के अर्थ एक दूसरे से बढ़ चढ़कर दान दक्षिणा व सम्पूर्ण आवश्यक पदार्थ देने लगे उधर इस निषिद्ध दान को सर्व साधारण ब्राह्मण न लेसककर इन महाब्राह्मणों के भंडार भरने लगे जिस से ये लोग आलसी होकर संडे होगये।

हमने अपने नेत्रों से स्वयं देखा है कि जिस किसी का पुत्र, पौत्र भाई, बन्धु व माता पिता मरजाते हैं वह बिचारा एक तो इस विपत्ति से दुःख व पीड़ित रहता है दूसरे उस ही समय ये महाब्राह्मण लोग मृतक के नाम पर दान दक्षिणा लेने में बड़े बड़े हठ व जिद् करके यजमान को तंग करते हैं ऐसी दशा में यजमानों का केवल परमेश्वर ही होता है।

सन् १९०१ की मनुष्यगणना के अनुसार संयुक्त प्रदेश में कुल ८९८३ महापात्र थे जिस में से ४३५९ पुरुष और ४६२४ स्त्रियें थीं आर्य्य समाजी एक भी नहीं थे, ? यदि आर्य्य समाजी बन जांय तो हांय क्या ? ।

संयुक्त प्रदेश की गवर्नमेन्ट ने बड़ी भारी तहकीकात के पश्चात् लिखा है कि :—

All Brahmans will accept water from the Lotah of all Brahmans axcept Mahabrahman.

( Census Report Page 219 )

सम्पूर्ण ब्राह्मण प्रत्येक ब्राह्मण के यहां के लोटे से पानी पीलेते हैं परन्तु केवल महाब्राह्मण के लोटे से नहीं। यद्यपि ऐसी पृथा है तो सही तथापि यह जाति पूर्व से श्रोत्रिय वेदज्ञ ब्राह्मणों की सन्तान है।

यदि इस जाति पर यह दोष लगाया जाय कि आचारी अग्रभिक्षु अग्रदानी, अग्रदाना, कट्टया, महापात्र और महा ब्राह्मण आदि जातियें मृतकों का कफन, वस्त्र व पात्रादि लेते हैं इस लिये इन्हें अपवित्र मानना चाहिये पर यह कुपृथा सर्वत्र सर्वमान्य नहीं है क्योंकि कहीं २ पर ये लोग मृतक के कफनादि नहीं भी लेते हैं और यह रीति विशेष रूप से मुसल्मानी जमाने से चली है अर्थात् यवनों ( मुसल्मानों ) के मृतक कबरिस्थान में व करबला में गाड़े जाते हैं और वहां ही उस मृतक के वस्त्र पलंग आदि आदि वस्तुयें फकीरों को दियी जाती हैं तदनुसार जब यवन राज्य का प्रभाव इस देश में बढ़ा तो उन के मृतकों के कफन वस्त्र व आभूषणादि बहुमूल्य होते थे और यवन धर्मानुसार वह सब फकीरों को मिलता था जिस से वे फकीर मालामाल हो जाते थे उन्हीं बादशाहों के धूम धाम व सजधज के साथ मृतकों को निकलते देखकर हिंदू राजावों द्वारा ऐसा होने लगा तो उपरोक्त ब्राह्मण जातियों के मन में भी फकीरों की तरह मालामाल बनने को मुंह में पानी भर आया और लोभ वश होकर कहीं कहीं ये लोग भी मृतक के कफनादि लेने लिवाने लगे जिस से अन्य ब्राह्मण समुदाय इन ब्राह्मण जातियों को पतित समझने लगे परन्तु यह कुरीति दूर होनी चाहिये क्यों कि ये उपरोक्त सब ब्राह्मण जातियें पूजनीय हैं।

हमें ऐसा निश्चय होता है कि उस समय से यह यवन धर्मावलम्बिनी कुपृथा बहुकाल व्यतीत हो जाने से जड़ पकड़ कर आज कल एक प्राचीनतम रीति समझी जाने लगी अन्यथा इस कृत्य से यज-

भाग व पुरोहित तथा इन लोगों का कुछ भला नहीं है और ऐसा होना व किया जाना अधर्ममूलक है, जिस प्रकार आजकल ब्राह्मणों में अन्य अनेकों कुरीतियें व कुप्रथायें प्रचलित हैं तैसे ही इस प्रथा को भी समझना चाहिये। इस स्थल पर रामायण से ब्राह्मणों को शिक्षा ग्रहण करना चाहिये यथाः—

* चौपाई *

लोभ पाश जेहि नर न बँधाया।
सो नर तुम समान रघुराया॥

अर्थात् कागभुशुंड जी कहते हैं कि जिस नरने लोभ रूपी पाशे से अपने गले को नहीं बांधा है अर्थात् जो लोभ में लिप्त नहीं हुवा है वह नर, हे रामचन्द्र जी महाराज! आप ही के समान है।

२७७ महाराष्ट्रः— यह एक देश का नाम है पश्चिमीय घाटों का पूर्वीय भाग उत्तर को सतपुरा पहाड़ तथा दक्षिण की ओर कृष्णा की घाटी तक है, आजकल इस देश का प्रसिद्ध नाम साधारणतया मुम्बई प्रान्त कहना चाहिये परन्तु मुम्बई प्रान्त में खान्देश, कोकन व गुजरात आदि सब ही सम्मिलित हैं इस देश के नाम से ब्राह्मण जाति की महाराष्ट्र संज्ञा हुयी इन को कोई महाराष्ट्र तो कोई मरहट्टा कहते हैं यह नाम पड़ने का कारण यह बतलाया गया है कि मल्हाराव एक बड़े राजा हुये हैं अतएव जितनी दूर में उन का राज्य था उतनी दूर के भाग का नाम मल्लाहराष्ट्र कहाते कहाते महाराष्ट्र रक्खा गया और उस राज्य के रहने वाले या यों कहिये उन राज्य वंशज ब्राह्मणों की महाराष्ट्र संज्ञा हुयी यथाः—

आसीन्नृपो महातेजाः पुराव कुलोद्भवः।
महाराष्ट्रेति विख्यातो यस्य राज्य महत्तरम्॥ १॥
तेनायं भुवि विख्यातो विषयो राष्ट्र संज्ञकः।
महाशब्द प्रपूर्वश्च यस्य पूर्वे विदर्भकः॥ २॥

सह्याद्रि पश्चिमे प्रोक्तः तापी चैवोत्तरे स्थिता ।
हुबली धारवाड़ाख्यौ ग्रामौ दक्षिण संस्थितौ ॥ ३ ॥

अर्थः—पूर्वकाल में पुरूरवा राजा के वंश में एक महाराष्ट्र नाम का राजा था उस का राज्य बड़ा विस्तृत था ॥ १ ॥ तिस से उस देश का नाम महाराष्ट्र हुवा उस के पूर्व में विदर्भ यानी बरार प्रदेश है ॥ २ ॥ पश्चिम में सह्याद्रि पर्वत तथा नासिक, त्र्यम्बक इगतपुरी है खंडेला और सितारा है, उत्तर में तापी नदी दक्षिण में हुबली धारवाड़ आदि हैं ॥ ३ ॥ इन देशों के अन्तर्गत ब्राह्मण समुदाय महाराष्ट्र ब्राह्मण कहाते हैं इन्हीं को दक्षिणी ब्राह्मण भी कहते हैं ।

यह एक नाम समुदाय सूचक है जिस में कई प्रकार के ब्राह्मणों का समुदाय सम्मिलित है पर वे सब मिलकर एक महाराष्ट्र सम्प्रदाय में ही हैं जैसेः—

डाक्टर विलसन ने अपने जाति निबन्ध में महाराष्ट्र ब्राह्मणों की सूची इस प्रकार से दियी हैः—

| | | |
|---|---|---|
| १ देशस्थ | १२ सवाणे | २३ वारदेशकर |
| २ कोकनस्थ | १३ काश्त | २४ कुडालदेशकर |
| ३ कराहड़े | १४ कुंडगोलक | २५ पेडनेकर |
| ४ कन्व | १५ रंडगोलक | २६ भालापजीकर |
| ५ माध्यन्दिनी | १६ ब्राह्मणजै | २७ कुशस्थली |
| ६ पाधे | १७ सपार | २८ लडपे |
| ७ देवरूखे | १८ त्रिवस्ती | २९ खड्डुले |
| ८ पलशे | १९ हुसेनी | ३० मैत्रायणी |
| ९ किरवंत | २० कलंकी | ३१ झाटे |
| १० जवले | २१ शेशवी | ३२ वरदाडी |
| ११ अभीर | २२ नरवणकर | |

इन का अलग अलग विवर्ण इन के अक्षर क्रमानुसार वर्ग में लिखा गया है यह सब विवर्ण इस पुस्तक में मिलेगा ।

स्कन्द पुराण सह्याद्रि खण्ड में ऐसा प्रमाण मिलता है कि:—

कर्णाटकाश्च तैलंगा द्राविड़ा महाराष्ट्रकाः ।
गुर्जराश्चेति पञ्चैव द्राविड़ा विंध्य दक्षिणे ॥

अर्थात् पहिले इस देश में ब्राह्मणों में परस्पर भेद प्रणाली नहीं थी पश्चात् देश भेद से ब्राह्मणों के दश भेद हुये पञ्च गौड़ व पञ्च द्रविड़ इन पञ्च द्रविड़ सम्प्रदाय में महाराष्ट्र एक भेद है ।

**२७८ माथुर गौड़ः**—मथुरा के चतुर्वेदी ब्राह्मण प्रसिद्ध नाम मथुरा के चौवे लोग गौड़ ब्राह्मण समुदाय के अन्तर्गत होने के कारण माथुर गौड़ भी कहाते हैं । इन के विषय चातुर्वेदी जाति स्थम्भ में लिख आये हैं ।

**२७९ माध्यन्दिनीः**— यथार्थ में यह शुक्ल यजुर्वेदी की शाखा का नाम है महाराष्ट्र ब्राह्मण समुदाय में यजुर्वेदी व माध्यन्दिनी ये ब्राह्मणों के दो भेद हैं ये लोग शतपथ ब्राह्मण व कात्यायन श्रौत सूत्र के मानने वाले हैं इन के सिद्धान्तानुसार ये लोग मध्यान्ह में ईश्वरोपासना करते हैं अर्थात् दिन में शुभलग्न मध्यान्ह ही मान्ते हैं अतः श्राद्ध कर्म भी मध्यान्ह में ही करते हैं नासिक सितारा और कोल्हापुर में ये विशेषरूप से हैं ।

**२८० मालवी गौड़ः**—यह मालवा प्रदेशान्तर्गत गौड़ ब्राह्मणों की एक जाति है ये वहां मालवीगौड़ कहाते हैं तथा मालवा प्रान्त से निकाल होकर दूर दूर देशों में जाने से ये मालवी ब्राह्मण भी कहाये मिस्टर Sir J. Mal Colm सर जे. मेल्काम साहब अपने ग्रन्थ Central India मध्य भारत भाग दूसरा पृष्ठ १२२ में लिखते हैं कि " दक्षिण से मध्य भारत में अनेकों जातियें आयीं उन में चौरासी प्रकार के ब्राह्मण भी आये थे इन में छन्याती ब्राह्मण ही मालवी कहे जा सकते हैं क्योंकि मालवा देश से इन का आगमन युक्त प्रदेश में विक्रम संवत् के प्रारम्भ में हुआ था मिस्टर शैरिंग साहब M. A. L. L. B. एम.

दूसरे ब्राह्मणों को बुलाय के ॥ ५ ॥ मोक्षाभिलाप से यज्ञ किया पीछे वसिष्ठ आये और गुरु बिना यज्ञ किया देख के शाप दिया कि हे जनक! ऐसा पंडित मानी है इस वास्ते तेरा देह पतन हो।

निमि कहने लगे हे गुरु! तुमने देह धर्म न विचार लोभ के लिए शाप दिया इस वास्ते तुम्हारा देह भी पतन हो ॥ ६ ॥ इस प्रकार दोनों का देह पतन हुआ पीछे वसिष्ठ मुनि मित्रावरुणों के वीर्य से उर्वशी से उत्पन्न हुये ॥ ७ ॥ निमि राजा को ब्राह्मणों ने देव प्रार्थना से सजीवन किया तब निमि राजा कहने लगे मुझ को देह बन्धन नहीं चाहिये ॥ ८ ॥ आगे जो मेरे वंश में उत्पन्न होवेगा वह तुम्हारा पालन करेगा। ऐसा कहके निमि देह त्याग कर के विष्णुलोक को गया ॥ ९ ॥ पीछे ब्राह्मणों ने योगसत्तासे निमिका देह मथन किया उस में से दिव्य देह धारी पुरुष उत्पन्न हुआ ॥ १० ॥ जन्म हुआ इस वास्ते जनक नाम हुआ। विदेह से उत्पन्न हुवा इस वास्ते वैदेह नाम हुआ और मथन करने से पैदा हुवा इस वास्ते मैथिल नाम हुआ जिन्होंने अपने नाम से मिथिला नगरी निर्माण किया ॥ ११ ॥ पीछे निमि के यज्ञ में जितने ब्राह्मण आये थे उन को अपने देश में ग्रामदान करके स्थापित किया वे सब मैथिल ब्राह्मण हुये ॥ १२ ॥

मिथला देश राजा जनक का राज्य स्थान महारानी सीता जी का पितृस्थान तथा भगवान श्री रामचन्द्र जी का श्वसुर गृह पुण्यभूमि पवित्र तीरथ हैं अतएव तहां के ब्राह्मण भी आदरणीय माने जाने चाहिये आजकल सारन मुजफ्फरपुर दर्भंगा और पुरनिया तथा कुछ भाग नैपाल का मिथला देश कहाता है।

इन के पांच मुख्य भेद हैं।

१ श्रोत्रिय ( सोती ) ३ पंजीबद्ध ५ जैवर
२ जोग ४ नागर

१ जिन के कुल में वेदों का प्रचार विशेष था वे श्रोत्रिय कहाते थे जिस का अपभ्रंश सोती है. २ नीच श्रेणी के ब्राह्मण जिन के विवाह सम्बन्ध श्रोत्रियों के साथ हो गये वे जोग कहाते हैं।

य हिन्दू मतानुसार कर्म काण्ड में विशेष रूप से माननीय हैं। इन की उत्पत्ति के विषय पं० हरिकृष्ण जी शास्त्री ने ऐसा लिखा है :—

काशी सकाशादीशान्ये ह्यंग देश समीपतः ।
देशो जनकनामा वै तत्र राजा निमिः पुरा ॥ ४ ॥
स्वीयं गुरुं वसिष्ठाख्य मन्यकर्मणि संस्थितम् ।
निमिश्चलमिदं ज्ञात्वा ह्यानाय्यान्यान् द्विजोत्तमान् ॥ ५ ॥
यज्ञं चकार धर्मात्मा मोक्ष कर्मस्थितत्परः ।
ततो गुरुः समायातस्तयोर्वादो महानभूत् ॥ ६ ॥
तत देहो पेतत्वश्च तयोः शापान्मिथः किल ।
मित्रा वरुणयोर्वीर्यो द्वुर्वश्यां प्रपितामहः ॥ ७ ॥
जातो निमिश्च तत्रैव द्विजैः संजीवितः पुनः ।
तदा निमिर्द्विजान् प्राह नाहमारूप्से देह बन्धनम् ॥ ८ ॥
मम वंशोद्भवश्चाग्रे युष्मान् संपालयिष्यति ।
इत्युक्त्वा तान्निमिः पश्चाद्देहं त्यक्त्वा हरिं ययौ ॥ ९ ॥
ऋत्विजश्च निमेर्देहं ममंथुर्योगमार्गितः ।
तस्मात्पुत्रोजातो दिव्यदेहधरः प्रभुः ॥ १० ॥
जन्मना जनकः सोऽभिसूद्विदेहस्तु विदेहजः ।
मथनान्मिथिलश्चैव मिथिला येन निर्मिता ॥ ११ ॥
मैथिला ब्राह्मणाश्चैव तेन संस्थापितामुदा ।
ते सर्वे मैथिला नामा नितिः यज्ञसमागताः ॥ १२ ॥

अर्थ :—श्री काशीक्षेत्र से ईशाण कोण में अंगदेश के समीप जनक देश है, वहां के निमि ने पहले ॥ ४ ॥ अपने गुरु वसिष्ठ के इंद्र को यज्ञ कराने के वास्ते गये जान के और देह की क्षणभंगुरता जान के

दूसरे ब्राह्मणों को बुलाय के ॥ ५ ॥ मोक्षाभिलाष से यज्ञ किया पीछे वसिष्ठ आये और गुरु बिना यज्ञ किया देख के शाप दिया कि हे जनक ! ऐसा पंडित मानी है इस वास्ते तेरा देह पतन हो ।

निमि कहने लगे हे गुरु ! तुमने देह धर्म न विचार लोभ के लिए शाप दिया इस वास्ते तुम्हारा देह भी पतन हो ॥ ६ ॥ इस प्रकार दोनों का देह पतन हुआ पीछे वसिष्ठ मुनि मित्रावरुणों के वीर्य से उर्वशी से उत्पन्न हुये ॥ ७ ॥ निमि राजा को ब्राह्मणों ने देव प्रार्थना से सजीवन किया तब निमि राजा कहने लगे मुझ को देह बन्धन नहीं चाहिये ॥ ८ ॥ आगे जो मेरेवंश में उत्पन्न होवेगा वह तुम्हारा पालन करेगा । ऐसा कहके निमि देह त्याग कर के विष्णुलोक को गया ॥ ९ ॥ पीछे ब्राह्मणों ने योगसत्तासे निमि का देह मथन किया उस में से दिव्य देह धारी पुरुष उत्पन्न हुआ ॥ १० ॥ जन्म हुआ इस वास्ते जनक नाम हुआ । विदेह से उत्पन्न हुवा इस वास्ते वैदेह नाम हुआ और मथन करने से पैदा हुवा इस वास्ते मैथिल नाम हुआ जिन्होंने अपने नाम से मिथिला नगरी निर्माण किया ॥ ११ ॥ पीछे निमि के यज्ञ में जितने ब्राह्मण आये थे उन को अपने देश में ग्रामदान करके स्थापित किया वे सब मैथिल ब्राह्मण हुये ॥ १२ ॥

मिथला देश राजा जनक का राज्य स्थान महारानी सीता जी का पितृस्थान तथा भगवान श्री रामचन्द्र जी का श्वसुर गृह पुण्यभूमि पवित्र तीरथ है अतएव तहां के ब्राह्मण भी आदरणीय माने जाने चाहिये आजकल सारन मुजफ्फरपुर दर्भगा और पुरनिया तथा कुछ भाग नैपाल का मिथला देश कहाता है ।

इन के पांच मुख्य भेद हैं ।

१ श्रोत्रिय ( सोती ) ३ पंजीबध ५ जैवार

२ जोग ४ नागर

१ जिन के कुल में वेदों का प्रचार विशेष था वे श्रोत्रिय कहाते थे जिस का अपभ्रंश सोती है २ नीच श्रेणी के ब्राह्मण जिन के विवाह सम्बन्ध श्रोत्रियों के साथ हो गये वे जोग कहाते हैं ।

इन की कुल उपाधियें ये हैं:—

१ मिश्र— दो मीमांसा शास्त्रों का ज्ञाता

२ ओझा या झा—ये दोनों शब्द संस्कृत उपाध्याय शब्द के अपभ्रंशरूप हैं।

३ ठाकुर—जमीन जायदाद वाले रईस

४ पाठक—महाभारत व पुराणादि की कथा बांचने वाला

५ पुरा ६ पाण्डे ७ चौधरी और ८ राय।

शोक के साथ लिखना पड़ता है कि जब श्रोत्रिय लोग जोग व पंजीबध की कन्या के साथ विवाह करते हैं तो ठहरा कर छ: छ: हजार रुपयों तक लेते हैं जिस कुप्रथा के कारण वहां की कन्याओं को क्या क्या कष्ट सहने पड़ते हैं? तथा कैसी कैसी घोर विपत्तियों का सामना करना पड़ता है? उन सब का हृदय विदारक दृश्य हम जातिअन्वेषण प्रथम भाग नामक पुस्तक के कुलीन प्रकरण में लिख आये हैं वहां देख लेना चाहिये॥

२८३ म्होड़:—यह गुजराती ब्राह्मणों का एक भेद है ये लोग अहमदाबाद व खेड़ा के जिले में विशेष हैं ये लोग मोढ़ बनियों के पुरोहित व कर्म काण्डादि करानेवाले श्रेष्ठ ब्राह्मण हैं। इन के विषय पद्मपुराण में बहुत कुछ वर्णन मिलता है अर्थात्, अठारह हजार ये ब्राह्मण उत्पन्न हुये थे।

२८४ मोताला:— यह एक ब्राह्मण जाति है श्रीरामचन्द्र जी महाराज ने रावण वध कर के आने पर सुमन्त ऋषि के आश्रम पर ठहर कर तापी के किनारे परम पवित्र तपस्वी ब्राह्मणों का पूजन किया और दानादि से सत्कार किया वे मोताला ब्राह्मण कहाये।

२८५ यजुर्वेदी :—यह महाराष्ट्र ब्राह्मणों की जाति का एक भेद है यह देशस्थ ब्राह्मण श्रेणी में है इस का प्रचलित अर्थ तो यह होता है कि यजुर्वेद के पढ़नेवाले व यजुर्वेद द्वारा कर्मकाण्ड करने करानेवाले ब्राह्मण हैं वे यजुर्वेदी कहाते हैं इनके भी दो भेद हैं कृष्णयजुर्वेदी और शुक्ल यजुर्वेदी इन में मरहाटा समुदाय के यजुर्वेदी शुक्ल यजुर्वेद के माननेवाले हैं और देशस्थ समुदाय के यजुर्वेदी कृष्ण यजुर्वेद के माननेवाले हैं महाराज कोल्हापुर के गुरु भी यजुर्वेदी ब्राह्मण हैं।

२८६ याज्ञवल्क्यी :—यह तैलंग देशीय ब्राह्मणों की जाति का एक भेद है याज्ञवल्क्य ऋषि के वंशज होने से ये याज्ञवल्क्यी कहाते हैं उस देश में इनके ८ भेद हैं। १ यज्ञप कुंद्लु २ कोत्तकुंद्लु ३ अखलु ४ दुवलु ५ अर्युलु ६ काकुल ७ पाटिवारू और ८ दड़-माह, इन का दूसरा नाम प्रथम शाखा व कन्व शाखा वाला भी है। शेष भविष्यत में छपनेवाले सप्तखण्डी ग्रन्थ में लिखेंगे।

२८७ रंडगोलक :—यह ब्राह्मणों की एक जाति है शब्दार्थ ऐसा होता है कि रांड की जो सन्तान व्यभिचार द्वारा पैदा हुयी है वह रंडगोलक कहाती है इस में दो शब्द हैं रंड और गोलक

जिस में रंड का अर्थ विधवा स्त्री यानी रांड और गोलक का अर्थ ऐसा है :—

परदारेषुजायेते द्वौसुतौ कुंड गोलकौ ।
पत्यौ जीवति कुण्डः स्यात् मृते भर्तरि गोलकः ॥

मनु० तथा स्कन्दपुराणे,

अर्थात् पर स्त्री से पुत्र उत्पन्न हुये कुंड व गोलक कहाते हैं। अर्थात् जिस स्त्री का पति जीवित है और वह यदि व्यभिचार द्वारा सन्तान उत्पन्न करे तो वह कुंड कहाती है और जिस स्त्री का पति मर गया है और वह विधवा किसी पर पुरुष से भोग करके सन्तानोत्पत्ति करे तो वह सन्तान गोलक व रंड गोलक कहाती है इन के विषय आदित्य पुराण में ऐसा लिखा है कि राजा इन को द्वार पर रक्खे और गन्धोपासनमात्र ये करें स्मृत्यर्थसार, ब्रह्मपुराण व प्रयोग पारिजात आदि में लिखा है कि ये लोग ब्राह्मण की सन्तान हैं। अतएव इन्हें सम्पूर्ण कर्म ब्राह्मण धर्मानुसार करने चाहिये।

पांडोबा गोपालजी ने अपने मरहाटी ग्रन्थ में इन के विषय में स्मृतिकौमुदी का हवाला देकर यह श्लोक लिखा है यथा :—

द्वितीयेनतुयः पित्रा सवर्णायां प्रजायते ।
सवर्णोढ इतिज्ञेयः शूद्र धर्मा च जातितः ॥
व्रतहीनास्त्व संस्कार्य्याः सवर्णास्वपियेसुताः ।
उत्पादिताः सवर्णेन व्रात्याइति वहिष्कृताः ॥

अर्थात् परपुरुष से सवर्णा विधवा स्त्री में जो पुत्र हो वह सवर्णोढ कहाता है वह जाति से शूद्र धर्मी होय सवर्णा स्त्री से सवर्णा पुरुष के व्यभिचार से पैदा हुवा ( रंड गोलक ) पुत्र व्रतहीन, असंस्कारी, व्रात्य और सर्व कर्म से बहिष्कृत है।

**२८८ लाटा** :—यह आदि गौड़ ब्राह्मण समुदाय में एक कुल नाम है इसे दूसरे शब्दों में लोग सासन भी बोलते हैं ।

**२८९ वलोदरा** :—यह गुजराती ब्राह्मणों की जाति का एक भेद है; काठियावाड़ प्रदेश में गोहेल वाड़ा एक भाग है तहां वाला नाम की एक रियासत है इस वाला रियासत का प्राचीन नाम वल्लभीपुर है शुद्ध शब्द वालादर्श का बिगड़ा हुवा रूप वलोदरा है । अर्थात् ये लोग पूर्वकाल में बड़े धनाढ्य थे इस लिये इन्हें आदर्श की पदवी मिली थी अतः ये वालादर्श कहाते कहाते वालोदरा कहाये, एक दूसरे विद्वान् ने यह सम्मति दियी है कि ये लोग रियासत को बड़ा कर्जा देते थे अतः ये रियासत के उदर समझे जाते थे तदर्थ वालाउदर की सन्धि वालोदर होजाने से वालोदर कहाते कहाते ये वालोदरा कहाने लग गये ।

आजकल भी ये लोग लेन देन का धन्दा विशेष रूप से करते हैं और ये वहां प्रतिष्ठित ब्राह्मण समझे जाते हैं ।

**२९० वायड़ा** :—यह एक ब्राह्मण जाति है इन का दूसरा नाम वाड़वा ब्राह्मण भी है इन के विषय में वायुपुराण मरु-

**शक व मग** :—इन के विषय में हम ऊपर मनुस्मृति के प्रमाण से लिख आये हैं कि ये लोग क्षत्रिय थे परन्तु ब्राह्मणों के न मिलने तथा कर्म काण्डादि से भ्रष्ट होने के कारण शूद्रता को प्राप्त हो गए।

मग:—शालिवाहन के सम्वत् १०२८ शाके का एक शिला लेख इस प्रकार से है:—

देवो जीया त्रिलोकी मणिरयं मरुणो यन्निवासेन पुण्यः
शाकद्वीपस्सदुग्धाम्बुनिधि वलयितो यत्र विप्रा मगाख्याः
वंशस्तत्र द्विजानां भ्रमिलिखिततनो भीरवतःस्वांगाभुक्तः
शाम्बो यानानिनायस्वयमिह महितास्ते जगत्यां जयन्ति।

अर्थ:—सिद्ध होता है कि शाकद्वीप में मग लोग रहते थे वहां से शाम्ब ( साम्ब ) उन्हें यहां लाया इस वंश में छः पुरुष प्रसिद्ध कवि थे, इन का कुछ वर्णन भविष्य पुराण में भी मिलता है शाम्ब ने चन्द्र भागा ( चिनाब ) नदी के तट पर एक मन्दिर बनवाया उस समय ब्राह्मण लोग देव * पूजन को निन्दनीय कर्म समझते थे इस लिए शाम्ब को कोई पुजारी न मिला और उस ने शाकद्वीप से आये हुये मग जाति के लोगों को पुजारी बना दिया। मुलतान के निकट जो सूर्य का भारी मन्दिर था जिसे पिछली सदी में मुसलमानों ने तोड़ फोड़ दिया प्रतीत होता है यह वही मन्दिर है जिसे शाम्ब ने बनाया था। इस से निश्चय होता है कि मग ब्राह्मण भी होते हैं, विद्वानों का ऐसा भी कहना है कि हिन्दुस्तान के मग और पर्शिया के मगी ये दोनों

---

* पाराशर स्मृति में लिखा है:—

असिजीवी मसिजीवी देवलको ग्राम याजकः।
धावकः [illegible]क कर्ताच षडेते शूद्रवद्द्विजाः॥

अर्थात् पुजारी लोग शूद्रता को प्राप्त हो जाते हैं।

**२९३ वेगीनाडू** :—इन ब्राह्मणों का पद दूसरे क वेल-नाडू ब्राह्मणों से उतर कर है और ये लोग प्राय: निजाम राज्य में विशेषतया पाये जाते हैं।

**२९४ वैदिक ब्राह्मण** :—यह एक ब्राह्मणों की जाति है परन्तु इस नाम के अन्तर्गत कई प्रान्तों के ब्राह्मण हैं यथा :—

| | |
|---|---|
| १ पाश्चात्य वैदिक | ३ कटक व पुरी के वैदिक |
| २ दाक्षिणात्य वैदिक | ४ तैलंगी वैदिक |

और द्रविड़ वैदिक

इन में से पाश्चात्य वैदिक ब्राह्मणों का विवर्ण तो पूर्व प्रकरण में "प" वर्ग की जातियों के साथ लिखा जा चुका है और दाक्षिणात्य वैदिक ब्राह्मणों का विवरण "द" वर्ग की जातियों के साथ लिखा जा चुका है। उड़ीसा प्रदेश के कटक व जगन्नाथपुरी में भी वैदिक ब्राह्मण हैं इन में भी कुलीन अकुलीन्ता का विवाद है इनके मुख्य दो भेद हैं, १ कुलीन वैदिक और २ श्रोत्रिय वैदिक जिन में से कुलीन वैदिक प्रथम श्रेणी में हैं।

द्रविड़ देश के स्मार्त ब्राह्मणों में भी वैदिक सम्प्रदाय है। इसही तरह तैलंगी ब्राह्मणों में भी वैदिक सम्प्रदाय है।

**२९५ शाकद्वीपी** :—यह एक विदेशी जाति है हमारे जाति अन्वेषण की यात्रा में प्राय: लोगों ने इस जाति के ब्राह्मणत्व पर नाना प्रकार की शंकाये प्रगट किये जिस से हमें विशेष रूप से इस जाति का अनुसन्धान करना पड़ा अर्थात् बहुत से लोग तो इस

जाति को ब्राह्मण ही नहीं मानते और बहुत से मानते हैं यथार्थ में शाकद्वीप एक द्वीप का नाम है अर्थात् उस देश में जिस में "शक" या "सक" जाति की विशेषता थी वह द्वीप शाकद्वीप कहाता था, प्रायः संस्कृतज्ञ विद्वानों ने इस शब्द को तालव्य "शकार" से आरम्भ करके लिखा है परन्तु हिंदी भाषा के विद्वानों ने इस ही शब्द को दन्ती सकार से "साकद्वीपी" करके लिखा है इस से निश्चय होता है कि "साकद्वीपी" और "शाकद्वीपी" एक ही हैं मि० सी. एस. विलियम क्रूक साहब ने अपनी पुस्तक के पृष्ठ २१० में साकद्वीप देश का पता लगाते हुए आजकल के प्रसिद्ध काबुल देश को साकद्वीपी लिखा है अतएव सिद्ध हुवा कि काबुल देश के निवासी दस्यु लोग ही सका कहाते थे तथा महाभारत में सका जाति का सहवास दस्यु जाति के साथ लिखा हैं इसी की पुष्टि में मनुस्मृति से पता लगता है कि इस ही दस्युओं के देश में कुछ क्षत्रिय जातियें चली गयीं और उस देश में ब्राह्मण नाम मात्र को भी नहीं मिलता था साथ ही में इन का सहवास वहां की दस्यु जाति के साथ रहने से वहां के क्षत्रियादि लोग भी शूद्रता को प्राप्त हो गये, यथा:—

> शनकैस्तु क्रियालोपादिमाः क्षत्रियजातयः ।
> वृषलत्वं गता लोके ब्राह्मणादर्शनेन च ॥ ४३ ॥
> पौण्ड्रकाश्चौड्रद्रविडाः काम्बोजा यवनाः शकाः ।
> पारदा पल्हवाश्चीनाः किराता दरदाः खशाः ॥४४॥

मनु० अ० १० श्लोक ४३

अर्थः—ये क्षत्रिय जातियें, क्रियालोप से और याजन अध्यापन प्रायश्चित्तादि के लिये ब्राह्मणों के न मिलने से, लोगों में धीरे धीरे शूद्रता को प्राप्त हो गईं ॥ ४३ ॥ पौण्ड्रक, औड्र, द्रविड़, काम्बौज, यवन, शक, पारद, अपल्हव, चीन, किरात, दरद, खश, ( ये क्षत्रिय क्रियालोप से शूद्रता को प्राप्त हुये हैं ) ॥ ४४ ॥

इस से सिद्ध होता है कि सक जाति सदा के लिये शूद्र हो गई और उसी जाति का जो द्वीप है वह शाकद्वीपी कहलाया पं० हरिकृष्ण बंकटराम शास्त्री रचित ब्रा० मा० पृ० ५४१ तथा भविष्यत पुराण अ० १३३ के आधारानुसार निश्चित होता है कि यह "शाकद्वीपी" नाम समूह वाचक है और इस नाम के अन्तर्गत मग व भोजक जातियें भी हैं और ये शक, मग और भोजक तीनों ही शाकद्वीपी कहाते हैं।

Ajmere Historical and Descsiptive. page 143
By Bahu Harbilas ji Sarda B. A. F. R. S.L.

बाबू हरबिलास जी सारदा बी०ए०अफ०आर०एस० अल० ने अपनी पुस्तक अजमेर हिस्टोरीकल और डिस्क्रपटिव के पृष्ठ १४३ में भोजकों को शाकद्वीपी लिखा है।

इस ही तरह महता पं० रामचन्द्र जी शास्त्री ने अपनी पुस्तक "शुद्धि" के परिशिष्ट प्रकरण के पृष्ठ ६ में मग जाति को भी शाकद्वीपी समुदाय में लिखा है।

भारत के प्रसिद्ध विद्वान् गवर्नमेन्ट इतिहास डिपार्टमेन्ट (महकमा) के अध्यक्ष Doctor Bhandarkar M. A. श्रीयुत माननीय डा० भन्डारकर एम. ए. का व्याख्यान जो २६ अगस्त सन् १९०६ को पूना में हुआ था और जो आर्य प्रभापत्र के प्रथम वर्ष के २३ वें तथा २४ वें अंक में छपा है उस के आधारानुसार भी मग जाति शाकद्वीपी समुदाय में से है अतएव उपरोक्त पांचों सातों प्रमाणों द्वारा निश्चय होता है कि वर्तमान शाकद्वीपी समुदाय के अन्तर्गत शक, मग और भोजक ये तीनों जातियें सम्मिलित हैं अतएव इस शाकद्वीपस्थरम्भ में हमें मग, भोजक और शक इन तीनों ही जातियों की विवेचना करना है कि इन के ब्राह्मणत्व के विरुद्ध लोगों के विचार कहां तक यथार्थ हैं?

**शक व मग**:—इन के विषय में हम ऊपर मनुस्मृति के प्रमाण से लिख आये हैं कि ये लोग क्षत्रिय थे परन्तु ब्राह्मणों के न मिलने तथा कर्म काण्डादि से भ्रष्ट होने के कारण शूद्रता को प्राप्त हो गए।

मगः—शालिवाहन के सम्वत् १०२८ शाके का एक शिला लेख इस प्रकार से है:—

देवो जीयात्त्रिलोकीमणिरयमरुणो यन्निवासेन पुण्यः
शाकद्वीपस्सदुग्धाम्बुनिधिवलयितो यत्रविप्रामगाख्याः
वंशस्तद्द्विजानां भ्रमिलिखिततनो भास्वतःस्वांगमुक्तः
शाम्बोयान्नानिनायस्वयमिह महितास्ते जगत्यां जयन्ति।

अर्थ :– सिद्ध होता है कि शाकद्वीप में मग लोग रहते थे वहां से [illegible] ( [illegible] ) इन्हें यहां लाया इस वंश में छः पुरुष प्रसिद्ध कवि थे, इन का कुछ वर्णन भविष्य पुराण में भी मिलता है शाम्ब ने चन्द्र भागा ( चिनाब ) नदी के तट पर एक मन्दिर बनवाया उस समय ब्राह्मण लोग देव * पूजन को निन्दनीय कर्म समझते थे इस लिए शाम्ब को कोई पुजारी न मिला और उस ने शाकद्वीप से आये हुये मग जाति के लोगों को पुजारी बना दिया। मुलतान के निकट जो सुवर्ण का भारी मन्दिर था जिसे पिछली सदी में मुसलमानों ने तोड़ फोड़ दिया प्रतीत होता है यह वही मन्दिर है जिसे शाम्ब ने बनाया था। इस से निश्चय होता है कि मग ब्राह्मण भी होते हैं, विद्वानों का ऐसा भी कहना है कि हिन्दुस्तान के मग और पर्शिया के मगी ये दोनों

---

* पाराशर स्मृति में लिखा है :–

अग्निजीवी शस्त्रजीवी देवलको ग्राम याजकः।
धावकः पाक कर्त्ता च पतेते शूद्रवद्विजा ॥

अर्थात् पुजारी लोग शूद्रता को प्राप्त हो जाते हैं।

इसलिये एवं ही हैं ये लोग इधर सीरिया, एशियामाइनर और रोमतक फैले हुए हैं और इधर हिन्दुस्तान तक, पहले पहल ये लोग एक सर्प की:··············की डोरी गले में डाला करते थे परन्तु ज्योंहीं इन्होंने ब्राह्मण पदवी प्राप्त की त्योंही उसे त्याग जनेऊ पहिरना आरम्भ कर दिया इस का भी विशेष वर्णन भविष्यतपुराण में मिल सक्ता है एक बुम्बई प्रान्तस्थ शास्त्री अपने ग्रन्थ में लिखते हैं कि :-

ममार्चैस्मिन् द्वीपेतु ह्यधिकारी न कोहिते ॥५॥
शाकद्वीपे ते वसन्ति वर्णाश्चत्वार एवच ।
मगश्च मगसश्चैव मानसो मन्दगस्तथा ॥

अर्थ :-सूर्य्य बोले कि हे साम्ब इस देश में मेरी पूजा करने योग्य कोई नहीं है ॥ ५ ॥ शाकद्वीप में चारवर्ण रहते हैं उन की वहां मग, मगस, मानस और मंदग ये संज्ञायें हैं तब साम्ब सूर्य को बोला कि मैं अभी जाता हूं :—

सांब सूर्यवचः श्रुत्वा चारुह्य गरुडं द्रुतम् ॥८॥
शाकद्वीपात्समानाय्य चाष्टादश कुलोद्भवान् ।
तन्मध्ये मंदगाश्चाष्टौ मगाश्च दश संख्यकाः ॥

अर्थ :—साम्ब सूर्य्य वचन को सुनतेही गरुड़ पर सवार होकर शाकद्वीप से १८ कुलों को लाया जिन में आठ बालक मंदक नाम शूद्र वर्ण के थे ।

It may be noted that in passing that Sun-worship prevailed ,largly among the Indo-Scythian tribes. Sri Krisna by the advice of the Sun summoned these Brahmins from Sakadwip to cure his son Samba who had been stricken with leprosy. They come flying torugh the air on the back of Garuda and effected the cure.

C. &. T. Page 261.

अर्थ ।—यह एक विचारणीय विषय है कि पूर्व काल में हिन्दुस्तान की सिद्दियन जाति में सूर्य्य उपासना का बड़ा प्रचार था और श्रीकृष्ण का पुत्र साम्ब कोढ़ रोग से पीड़ित था अतः इस समय के राजा श्री॰ कृष्ण ने सूरज की सम्मति से इन ब्राह्मणों को बुलाया वे गरुड़ पर सवार होकर वायुमार्ग से आये और कोढ़ को अच्छा कर दिया।

उपरोक्त लेख एक कलेक्टर साहब की सम्मति है इस से शाकद्वीपी हिन्दुस्तान में आयी हुयी सिद्दियन जाति में से हैं और मिस्टर मार्स्डन साहब ने ग्रीक लोगों को सिद्दियन जाति में से लिखा है * जो मध्य एशिया में सिदिया प्रदेश है उस के निवासी सिदियन कहाये और वे ही जब भारत वर्ष में आगये तब Indo-Scythian इन्डो सिदियन कहाये ये लोग एशिया से आकर पंजाब, सिंध, अफगानिस्तान मालवा और राजपूताने में बसे और राज्याधिकार कर लिया भारत में इन का आगमन ईसा से एक शताब्दि पूर्व का है।

इस प्रमाण से भी शाकद्वीपियों का देश अफगानिस्तान काबुल सिद्ध होता है।

मिस्टर मार्स्डन तथा कालोनियल मिस्टर टाड सरीखे ऐतिहासिकों का मत है कि "सका" जाति भी सिदियन जाति में से है यह जाति भारत में सब से पहिले आयी थी परन्तु राजा विक्रमादित्य ने इन को परास्त कर के भिखारी बना दिया तब से इन्हों ने भिक्षा वृत्ती यानी दानादि लेना स्वीकार कर लिया होगा ऐसा निश्चय होता है।

ततः साम्बो भोजकन्याः समानाय प्रयत्नतः ॥११॥
मगाख्य दशविप्रेभ्यो दत्तवान्विधि पूर्वकम् ।
ततोजातश्च ये पुत्राः तेतुभोजक संज्ञकाः ॥ २ ॥

तब साम्ब भोज कन्याओं को लाकर मग संज्ञक दस ब्राह्मणों को उन्हें ब्याह दीं तिन की सन्तान भोजक कहाई।

---

* Morsden's History Page 83.

नोट—इस ग्रंथकार के मत को निष्पक्ष भाव मात्र से हमने लिख दिया है अन्यथा इस आधुनिक पद्धति की अपेक्षा लिखा लेख का प्रमाण हमें माननीय है तथा और भी बहुत से प्रमाण व हेतु दर्शाये हैं उन से इन का ब्राह्मणत्व सिद्ध नहीं होता है । क्योंकि मनुस्मृति के प्रमाणानुसार शकादि क्षत्रिय जातियें ब्राह्मणों के अभाव से शूद्र होगयीं तब शाकद्वीप में दसकुलों मगों का ब्राह्मण मानना कब सम्भव हो सक्ता है अतः मगों के सम्बन्ध का लिखा लेख भी माननीय है ।

Dr. Muir in his Avcient Sanskrit Text Vol. I Page 438.

मिस्टर म्युअर अपने प्राचीन संस्कृत टेक्स्ट जिल्द पहिली के पृष्ठ ४८८ में लिखते हैं कि:-

"These tribes had fallen away from Brahmanical-Institutions.

अर्थात् ये जातियें ब्राह्मणत्व से गिरगयी हैं । पुन लिखा है कि:-

अष्टभ्यः शक कन्याश्च दत्तास्ते शूद्रका स्मृताः ।
तेपि सूर्यस्य भक्ताश्च मंदगा नात्र संशयः ॥१६०॥

उन शेष बचे हुये आठ कुलों को शक जाति की कन्यायें ब्याही अतः वे शूद्र हुये वे भी सूर्य के भक्त निस्सन्देह मंदग ( शूद्र ) हैं ।

थोड़ी देर के लिये यदि ये दोनों श्लोक सत्य भी मान जावें तो पाठक स्वयमेव ही यह निश्चय करलें कि उपरोक्त दस कुलों की सन्तान ही भोजक हैं अथवा इन आठ कुलों की सन्तान भी भोजक हैं और इन का धर्म क्या है ! क्यों कि विरुद्ध पक्ष के प्रमाणों की बहुत ही अधिकता है ।

इन के विषय में ऐसा भी पाठ पं० ह० कृ० जी ने लिखा है कि " अग्निहोत्ररताः सर्वे मद्यं संस्कार पूर्वकम् " । अर्थात् ये लोग अग्निहोत्र करते हैं और संस्कार पूर्वक मद्य नाम शराब भी पीते हैं कुल० प्रबो० मि० के पृष्ठ ११० व ११५ में ऐसा भी लिखा है कि:—

ओजकादि प्रभेदाश्च तन्मध्ये ह्यभवन् किल ॥५८॥
तेतु पुष्टिकराः प्रोक्ता उत्तमाऽधम भेदतः ।
मे गौतमापमानेतु वेद बाह्या द्विजै कृता ॥ ६० ॥

अर्थात् ग्रन्थकार ने इस ५८ वें श्लोक का अर्थ ऐसा किया है कि "पैंतालीस हज़ार ब्राह्मणों में से पांच हज़ार भोजक भये वे ब्राह्मण धर्म को बिलकुल छोड़कर जैनधर्म को मान्ते हैं सो आज पर्य्यन्त श्रावक लोगों से मान तान करके गुज़रान चलाते हैं वे ओसवाल बनियों के गुरु उपाध्याय हैं और उनके हाथ का जीमते हैं" ॥५८॥ वे उत्तम तथा अधम भेद से पुष्टिकर कहाते हैं इन्होंने गौतम ऋषि का अपमान किया अतः अन्य ब्राह्मणों ने इन्हें वेद बाह्य कर दिया ॥ ५९ ॥ विद्वानों ने पुष्टिकरा से अभिप्राय पुष्करा का लिया है अर्थात् "पुष्कर भोजक" कहाते कहाते पुष्करणे व पुष्कर के भोजक भी कहाने लग गये ऐसी भी सम्मति हमें विद्वानों ने दिनी थी अस्तु !

ब्राह्मणेम समानाश्च कारपास व्यंगधारकाः ।
वेदपाठविपर्यासान्मगास्ते परिकीर्तिताः ॥३१॥

ब्राह्मण का जो धर्म उस के समान है कपास का बनाया हुवा अन्दर से पोला सर्प कंचुली सरीखा यज्ञोपवीत तुल्य अंगुल १३२ का अव्यंग धारण आठवें वर्ष में कराते हैं और वेद का उलट पुलट पाठ करने से मग नाम से प्रसिद्ध हुये ।

**भोजक:—** इस जातिके विषय हम अपने जाति अन्वेषण प्रथम भागके पृष्ठ २८४ में बहुत कुछ लिख आये हैं तहां अवश्य देख लेना चाहिये यद्यपि इस लेख में जो कुछ हम ने लिखा है वह सब बड़े २ सरकारी अफ़सरों के आधार तथा अनुभवी विद्वानों की सम्मत्यानुसार हिन्दी साहित्य के नाते तथा ऐतिहासिक दृष्टि से लिखा है तिस पर भी हम ने अपनी सम्मति स्वाधीन रक्खी है पुष्कर-

क्षेत्र में भोजक एक जाति है उस जाति के किसी सज्जन को यह हमारा लेख मिथ्या जान पड़ा था परन्तु उस के सुधार के लिये हम ने उन्हीं महाशय से चाहा था कि भोजक जाति की ओर से हमारे संगृहीत प्रमाणों की अपेक्षा प्रबल प्रमाण आजावें तो हम सहर्ष उचित सुधार करने के लिये तैयार थे परन्तु उस पुस्तक को प्रकाशित हुए आज ता० ८.३. १९१९ को १६ महीने व्यतीत हो चुके हैं और सैकड़ों ही उस की प्रतियें बाहर जा चुकी हैं परन्तु हमारे पास तनिक सी संकेत मात्र चर्चा भी पुष्कर के भोजकों की ओर से नहीं आयी इस से प्रमाणित होता है कि महकमे बन्दोबस्त के पिछले Extra Assistant Commissioner, एक्सट्राअसिस्टेन्ट कमिश्नर पं० महाराजकृष्ण अजमेर का लेख जो मि० J. D. Latouche जे.डी. लाटूस साहब बहादुर मोहतमिम बन्दोबस्त अजमेर की आज्ञानुसार अजमेर तवारीख में दर्ज है उस के अनुसार जो हम ने लिखा है कि भोजक लोग भोपत के वंश में से हैं जो जाति से मेर था जिस ने राज्य के बुरे प्रबन्ध से पुष्कर की खैरात लेना स्वीकार कर लिया जब से उस की सन्तान आज तक पुष्कर की मालिक बनी हुई है और धीरे २ यज्ञोपवीत पहन कर अपने आप को ब्राह्मण ठहराती है परन्तु धर्मशास्त्रानुसार न मेर जाति के लोगों को पुष्कर क्षेत्र में चारों वर्णों के यात्रियों से पाद पुजवाने चाहियें और न चारों वर्णों के लोगों को ही इन के पाद पूजने चाहियें।

देखो पुष्कर इतिहास पृष्ठ ६

इन पुष्कर के भोजकों के विषय में मौलवी जी श्री मुहम्मद मुरादअली जी चिराग् राज्यस्थान यन्त्रालय ने सरकारी बन्दोबस्त की रिपोर्ट के आधार पर पुष्कर विवर्ण छापा है उसके पृष्ठ १० में ऐसा लेख मिलता है कि जयपुर के स्वर्गवासी राजा सवाई जयसिंह जी महाराज पुष्कर स्नान को आये और तीर्थक्षेत्र पर अन्य दानों के

साथ २ अपनी पोषाक भी इन्हीं भोजक पुरोहितों को दान कर गये इनही भोजक पुरोहित का जंवाई जयपुर में सरावगियों के यहां सेवग था उस को उस के श्वसुर ने वह पोषाक देदी, एक दिवस वह ही सेवग उस पोषाक को पहिन कर अपने नियमानुसार सरावगियों के मृतक की अर्थी के आगे छड़ी लिये जा रहा था अचानक महाराज की सवारी भी उस ओर से निकली और महाराज की दृष्टि उस पोषाक पर पड़ी तब महाराज ने उसे बुलवाकर तहकीकात करायी जिस से पुष्कर से पोषाक उस के पास आने व उन की असली जातीयता तथा सरावगियों के सेवगों के संग उन का खान पान व बेटी व्यवहार व उन के वर्ण आदि की असलियत महाराज को सब कुछ प्रमाणित होने पर महाराज को निश्चय हुवा कि ये पुष्कर के भोजक पंडे लोग यथार्थ में ब्राह्मण नहीं हैं तब राजा ने उन को पुरोहिताई से अलग करके छोटी बस्ती के गौड़ सनाढय ब्राह्मणों को राज्य पुरोहित नियत किये और दान करके उन को आजीविकायें दिनी जिस के पट्टों की नकलों को देखने से निश्चय हुवा है कि मिती माह वदी ६ विक्रम सम्वत् १७८६ को जयपुर महाराज ने हीरा, देवीदास, और गोर्धन आदि भोजकों की राजपुरोहिताई खारिज करके तथा उन की, राज्य से मिली हुयी आजीविका को छीन कर उस का पट्टा पुष्कर क्षेत्र की छोटी बस्ती में रहनेवाले दुर्गा बेटा जयकिशन ब्राह्मण सनाढय तथा जीवराज बेटा सरूपमन ब्राह्मण गौड़, नन्दराम बेटा जोगीदास सनाढय, कुशला बेटा चंदा ब्राह्मण सनाढय आदिकों को लिख दियी तब से आजतक जयपुर महाराज के पुष्कर पुरोहित पुष्कर की छोटी बस्ती के रहनेवाले गौड़ व सनाढय चले आरहे हैं।

उपरोक्त पुस्तक के पृष्ठ १२ में भोजकों को शूद्र वर्ण में लिखा है।

इस ही तरह जोधपुर के स्वर्गवासी महाराज वख्तसिंह जी को जब यह सब हाल मालूम हुवा कि पुष्कर के भोजक पंडे ब्राह्मण नहीं हैं और उन के चरण पूजना हमारा कर्तव्य नहीं है तब उन्हों ने भी मिती चैत्र वदी ६ सम्वत् १७९२ के दिन हुक्म निकाला कि हमने हरसुख वेश बल्ला ब्राह्मण को तथा नत्था ब्राह्मण व जीवराज नरोतम आदि को पुरोहित बनाया और भोजक पुरोहित को हमने दूर किया और जो कोई सेवग ( भोजक ) उपरोक्त ब्राह्मणों से कोई बात की खेचल करें तो सेवकों को काइल कीजो । यह हुक्म मिती कार्तिक सुदी ८ संवत १७९७ का है ।

जब महाराज सवाई जयसिंह जी बहादुर ने पुष्कर की बड़ी बस्ती के रहने वाले भोजकों को राजपुरोहिताई से दूर किया और छोटी बस्ती के रहने वाले गौड़ सनाढ्यों को राजपुरोहित किया था तब बड़ी बस्ती के भोजक पंडों से महाराज ने आसाढ़ सुदी ५ संवत १७९१ को मुचलका नम्बरी ४ लिखवा लिया कि "हम को राजपूत कछवाहों की पुरोहिताई से कुछ सम्बन्ध नहीं रहा आगामी दखल अंदाजी नहीं करेंगे । इस पर अजमेर के सूबेदार हाकिम की मुहर भी है क्योंकि उस वक्त अमलदारी मुहम्मद शाह बादशाह का था और उस वक्त का अजमेर का हाकिम सूबेदार कहाता था ।

इस मुचल के में गोरधन स्यो जी आदि भोजकों ने यह लिख दिया है कि "अबतक हम जयपुर राज के तीर्थ पुरोहित थे परन्तु हमें भोजक जान कर महाराज ने हमें पुरोहिताई से अलग किया है और हमारी एवज घनश्याम व कुशलराम, दुर्गादास व जीवराज ( ब्राह्मण ) पुरोहित हुये हैं सो इस में दखल अंदाजी नहीं करेंगे और यदि इनके साथ कुछ करें तो हम सरकार के गुन्हगार समझे जावें । तारीख ३ सफर सन् ६—

पुष्कर क्षेत्र में दो बस्ती हैं छोटी बस्ती व बड़ी बस्ती या छोटा बास व बड़ा बास अतः बड़ी बस्ती में प्रायः इन्हीं भोजक पण्डों की प्रधान्यता है और छोटी बस्ती में गौड़ सनाढ्य ब्राह्मणों की, और आजकल दोनों ही पुष्कर क्षेत्र के तीर्थ पुरोहित हैं दोनों ही के पास पट्टे व फर्मान हैं परन्तु इन में भोजक लोग गौड़ सनाढ्यों से पुराने हैं इस का कारण यह है कि पूर्वकाल में जब महाराजा नाहड़ रावने पुष्कर क्षेत्र खुदवाया तब आजकल की तरह पुष्कर क्षेत्र की आमद बढ़ी चढ़ी नहीं थी और उस वक्त गूजर लोग ही वहां का दानादि लेते थे और फिर राज्य का कुप्रबन्ध देखकर भोजकों ने ही खैरात लेना स्वीकार कर लिया परन्तु लोगों का यह भी कहना है कि इन लोगों ने पुष्कर खोदने में राजा नाहड़ देव को बड़ी सहायता दियी थी इस से इन्हीं को तीर्थ पुरोहिताई का अधिकार मिला क्योंकि ये राज्य-कुप्रबन्ध से पुष्कर की खैरात लेते ही थे परन्तु जब धर्म अधर्म. विवेक अविवेक ऊंचता नीचता, तथा उचित अनुचित, व कर्तव्यता अकर्तव्यता का परिज्ञान राजावों को हुवा तब भोजकों को अनधिकारी पाकर उन्हें तीर्थ पुरोहिताई से अलग किया।

भारतवर्षीय श्रीमती गौड़ महासभा के पत्र ब्राह्मण समाचार मास अप्रैल सन् १६११ में लिखा है कि "महाराज जैपुर ने गौड़ ब्राह्मणों को यहां अपने गुरू बनाकर बसाया है पुष्कर में दो प्रकार के पंडा रहते है एक पारासर जो भोजक कहाते हैं" वहां गौड़ ब्राह्मण पंडों के मुखिया पं० सावित्रीप्रसाद जी पटेल, पं० हंसराज जी पटेल, पं० बालानन्द जी ओझा आदि आदि हैं।

बाबू योगेन्द्र नाथ जी M. A. D. L. एम० ए० डी० एल० अपने ग्रन्थ के पृष्ठ ५६६ में लिखते हैं।

Bhojak :- A Class of inferior Brhmans found in Rajputana who minister to the Jains as priests and partake of their hospitablity. अर्थात् भोजक

एक नीच श्रेणी के ब्राह्मण हैं जो राजपूताने में विशेष हैं और जैनियों के यहां सेवगी करते हैं तथा उन्हीं के यहां आदरणीय हैं। जयपुर राज मौज मंदिर पंडित सभा की व्यवस्था जो गौड़ दाधीचों के मुकद्दमे के फैसिले के पृष्ठ २० में लिखा है कि:—

" शिव पुराण में जिस सुदर्शन को श्राप हुआ था उसकी संतति गुजरात. मालवा आदि आदि देशों में तपोधन, भुंगर व भोजक नाम में विख्यात सुनते हैं "।

भारत वर्ष के प्रसिद्ध विद्वान मुंशी देवी प्रसाद जी सुपरिन्टेन्डेन्ट महकमा इतिहास जोधपुर अपने पत्र तारीख ६—४—१५ के में लिखते हैं कि " भोजक जाति का हाल गड़ बड़ है मैंने सेवग व भोजक को ब्राह्मणों में लिख दिया है इस से दूसरे ब्राह्मण गिल्ला करते हैं।

Copy of Para 47 of Mr. J. D. Latouche Esquire B. C. S. Report,

The population is of about 3759 and consists almost enterely of Brahmans. Of these there are to sects those of Bara Bas and those of Chhota Bas. The former are the older inhabitants and have held the lands of Pushkar in Jagir, since long before the Moghul Empire etc. etc.

Sawai Jai Singh of Jaipur is said to have investigated the claims of the rival sects and come to the conclusions that Brahmans of Bara Bas were not of pure descent to have appointed the others his purohits.

मा० मिस्टर जे० डी० लाटूश साहब बहादुर अपने बन्दोबस्त की रिपोर्ट. पैरा ४७ में लिखते हैं कि पुष्कर की लोक संख्या.

२७५० है जिस में विशेषता ब्राह्मणों की है जिन के दो भेद हैं छोटा बास व बड़ा बास, बड़े बास वाले पुराने वासी हैं जिन के पास जागीर के पट्टे वगैरः मुगल बादशाहों तक के हैं। सवाई जय सिंह जी महाराज जयपुर ने इन के ब्राह्मणत्व विषय में अनुसन्धान किया था जिस से महाराज को यह निश्चय हुआ कि बड़े बास के भोजक ब्राह्मणों की शुद्ध उत्पत्ति नहीं है अतएव महाराज ने दूसरे ( गौड़ सनाढ्य ) ब्राह्मणों को अपना पुरोहित नियत किया।

म० चन्द्रिका पृष्ठ ६ में लिखा हैं कि भोजक एक दूसरे और भी ब्राह्मण हैं जो बहुधा जैन मंदिरों की सेवा करते हैं व्यास भी कहाते हैं परन्तु उन से अपना कुछ सम्बन्ध नहीं। यह सूर्य्य द्विज पं० फतेहसिंह जी की है।

मारवाड़ मनुष्य गणना रिपोर्ट पृष्ठ २०५ में ऐसा लिखा है कि :—

काटी मूंडी कलारी बांदी वेश्या नगारी।
भोजक भाटन सोनारी नाथ कहे यह नेम से न्यारी ॥

अर्थात् लोगों की यह कहावत है कि लुहार, नाई, कलाल, बांदी, भगतन, ढोली, भोजक और सुनार आदि जातियें ये बे भरोसे की जातियें हैं अतः नाथ लोग इन को चेला नहीं करते हैं।

तवारीख जयसलमेर दिवान बहादुर महता नथमल जी मदारुमुहाम रियासत जयसलमेर लिखते हैं कि "पुष्कर में पंडे दो भांति के हैं एक बड़ी बस्ती दूसरी छोटी बस्ती, महाराजा साहब जयपुर जोधपुर और बादशाही सनदों से छोटी बस्तीवाले ( गौड़ सनाढ्य ) असल पंडे सावित हुये हैं न कि भोजक।

## ❋ शाकद्वीपी ❋

शाकद्वीपी ब्राह्मणों के सम्बन्ध में मुंशी किशोरीलाल जी रईस व मुंसिफ दर्जे दोयम अपने ग्रन्थ में लिखते हैं कि "ये लोग बनारस,

बिहार तथा तिरहुत व गंगा पार के आस पास बिहार प्रदेश में रहते हैं कनौजिये व सरवरिये ब्राह्मणों का कहना है कि ये लोग दान पात्र नहीं हैं और न यज्ञ व पूजा में आचार्य्य यानी पेश्वा होसके हैं।

द्विज समुदाय में धर्मशास्त्रानुसार गोत्रादि टाल कर विवाह होने का नियम है परन्तु इस के विपरीत शाकद्वीपी ब्राह्मणों में गोत्र की गोत्र में विवाह हो जाता है तथा :—

मिस्टर H. H. Risley census Commissioner एच० एच० रिस्ली मनुष्य गणना कमिश्नर अपने ग्रन्थ के पृष्ठ १५६ में लिखा है कि ये लोग गोत्र की गोत्र में तो विवाह कर लेते हैं पर "पर" टालते हैं। नदिया शान्तिपुर की पंडित कालेज के प्रधान भट्टाचार्य्य जी भी अपने ग्रन्थ के पृष्ठ ४८ में उपरोक्त गोत्र की गोत्र में विवाह की पुष्टि करते हैं। पं० महाराज कृष्ण एक्स्ट्रा असिस्टेन्ट कमिश्नर अजमेर कृत तवारीख में के पुष्कर इतिहास के पृष्ठ ६ से प्रमाणित होता है कि "लड़के का लड़का यानी पोता या लड़की की लड़की दोहिती का विवाह भोजकों में हो जाता है परन्तु यह द्विजत्व से विरुद्ध है।

इन के ७४ "पर" यानी अल्ल हैं और १२ गोत्र हैं यथा:—

| | | |
|---|---|---|
| १ मिहरांसु | ५ कश्यप | ६ सूर्य्यदत्त |
| २ वसु | ६ गर्ग | १० नल |
| ३ पारासर | ७ भृगु | ११ अर्कदत्त |
| ४ कोदिन्य | ८ भव्यमटी | १२ कौसल |

इन की पदवियें मिश्र-पाठक और पानड़े हैं। युक्तप्रदेश में इन की लोक संख्या करीब ७० हजार के है।

नोट:—यदि इन प्रमाणों से प्रबल प्रमाण किसी विद्वान के पास हों तो मंडल कार्य्यालय में आने पर उन पर उचित सम्मति प्रकाशित करदी जायगी जो कुछ संग्रह हुवा है निष्पक्षता पूर्वक प्रकाशित कर

दिया है। मग ब्राह्मणों के विषय में हमारे मित्र पं० जयलाल जी कवि कुछ लिख कर भेजना चाहते थे परन्तु उनकी प्रतीक्षा ही प्रतीक्षा में हम कई मास रुके रहे अतः विवश जो कुछ संग्रह हुवा है सर्वसाधारण की सम्मत्यर्थ उपरोक्त विवर्ण प्रकाशित कर दिये हैं।

**२१६ शासनी ब्राह्मण** :—यह उड़ीसा प्रान्त के दाक्षिणात्य समुदाय में के कुलीन ब्राह्मणों की एक सर्वोच्च शाखा है इन का जाति पद श्रोत्रिय और कुलीनों से भी बढ़चढ़ कर है इन के पास पूर्वकाल के हिन्दू महाराजावों के पट्टे व फर्मान हैं कि इन को सोलह गांव इनाम में मिले थे तब से आज तक वे इन के कब्जे में चले आरहे हैं इन ब्राह्मणों का पद उड़ीसा प्रदेश के सम्पूर्ण ब्राह्मणों से उच्च है इन लोगों की धन स्थिति तो साधारण है पर विद्या स्थिति भी कामधकाउ है।

Hunter's Imperial gazetteir of India Vol. X page 434. हंटर साहब की गजेटियर जिल्द १० वीं के पृष्ठ ४३४ में सरकारी अफसर बहादुर ने भी ऐसा लिखा है कि:—

They live on lands granted by former Rajas or by teaching private Students or as spirtual guides or mere rarely as temple priests. They are few in number, for the most part intolerable circumstenes though often poor, but held in such high estimation that a Srotriya Brahman will give a large dower in order to get his doughter married to one of them. But the culin who thus intermarries with a Stroriya looses some of his position among his own people The poor Brahman rarely stoops below the Srotriya the class immediately next to him for wife.

भा०—पूर्वकाल के राजावों से प्राप्त जमीन आदि पर ये लोग

गुजारा करते हैं; या अपने ही स्थान पर लड़कों को पढ़ा कर या गुरुपने से अथवा मन्दिरों में पुजारी रहकर अपना निर्वाह करते हैं, इन का समुदाय थोड़ासा है और यद्यपि ये बड़े धनाढ्य नहीं हैं तथापि प्रतिष्ठा में इतने बढ़े चढ़े हैं कि श्रोत्रिय लोग भी अपनी कन्या इन के यहां व्याहने में अपना अहोभाग्य समझ कर दायजे में बड़ी बड़ी रकमें इन्हें देते हैं। परन्तु कुलीन लोग जो इस तरह श्रोत्रियों के यहां व्याह करलें तो उन का पद कुलीनों में कुछ कम हो जाता है इस प्रकार से धनहीनों को श्रोत्रियों के नीचे, स्त्री के कारण, हो जाना पड़ता है

पुनः भट्टाचार्य्य जी अपने जाति निबंध के पृष्ठ ९१ में लिखते हैं। कि:—

Shashni Kulin or a Srotriya Brahman will rather live by begging than be engaged in any menial occupation.

अर्थात् शाशनी कुलीन व श्रोत्रिय ब्राह्मण, वृत्ति द्वारा दानादि लेकर तो निर्वाह करलेंगे परन्तु नीच धन्दे व नौकरियें नहीं करेंगे। इस से सिद्ध होता है कि ये एक उच्चकोटि के ब्राह्मण बंगाल में हैं।

**२९७ शंकर ब्राह्मण** :—इस जाति का विवर्ण अन्वेषणाधीन है।

**२९८ शुक ब्राह्मण** :—यह एक ब्राह्मण जाति है पद्मपुराण श्रीवेंकटेश महात्म्य के आधार से पता लगता है कि शुकदेव जी को १०८ मानस पुत्र हुये उन्हें शुकदेव जी ने वाहन के स्थान में अपने १०८ मानस पुत्रों को श्रीवेंकटेश जी की सेवा निमित्त दे दिये और अपने पुर का सम्पूर्ण धान्य भी नारायण के अर्पण कर दिया। ये ब्राह्मण किस देश में व कहां पर हैं, तथा किस ब्राह्मण सम्प्रदाय में हैं यह अन्वेषणाधीन है।

२११ शूद्र याजक :—यह भी एक ब्राह्मण जाति है इस में दो शब्द हैं (शूद्र+याजक) ये दोनों शब्द मिलकर शूद्रयाजक बनता है जो शूद्र याचक का अपभ्रंश रूप है; शब्दार्थ तो ऐसा होता है कि शूद्र जाति की याचना करने वाले यानी शूद्र जाति के यहां का दान पुण्य लेने वाले जो हैं वे शूद्र याचक कहाते हैं, शूद्रों का दानादि लेना ब्राह्मणों के लिये प्रायश्चित का हेतु लिखा है अतएव शूद्रों का दानादि लेने वाले ब्राह्मण नीच श्रेणी के ब्राह्मण समझे जाते हैं ऐसा करने वाले भारत वर्ष में सर्वत्र व सम्पूर्ण प्रकार के ब्राह्मण समुदायों में से हैं यथाः—

महाराष्ट्र ब्राह्मण समुदाय में पलाशे और अमीर ब्राह्मण शूद्रों के यहां का दानादि लेते हैं। द्रविड़ देश में हिन्दुओं में कैकालर व पटनु तथा कपड़ा बुनने वाली जातियें हैं उन के यहां का दानादि लेने वाले भी शूद्र याजक ब्राह्मण हैं। बंगाल में काला वणिक एक जाति है उन के हाथ का जलादि उच्च ब्राह्मण ग्रहण करते हैं परन्तु इन के यहां का दानादि स्वीकार करने वाले शूद्र याजक ब्राह्मण ही हैं, कुर्मी एक जाति है इन के यहां का दानादि लेने वाले भी शूद्र याचक ब्राह्मण कहाते हैं ऐसा भट्टाचार्य्य जी ने भी अपने ग्रन्थ के पृष्ठ २७२ में लिखा है। बंगाल प्रान्तस्थ मिदनापुर के जिले में कैवर्त एक जाति है इस के यहां का दानादि लेने वाले भी शूद्र याजक ब्राह्मण कहाते हैं। कहीं कहीं पर पारजी जाति के यहां का दान लेने वाले शूद्रयाजक ब्राह्मण समझे जाते हैं।

३०० शेटपाला :—यह सारस्वत सम्प्रदाय में सिंधी ब्राह्मणों का एक भेद है भट्टाचार्य्य जी ने अपने ग्रन्थ के पृष्ठ ५७ में लिखा है कि ये लोग सारस्वतों की तरह सेत्री व रोडाओं के यहां की बनी हुयी कच्ची रसोई जीमते हैं इन में कुछ थोड़े ही से लोग तो वैष्णव हैं अन्यथा विशेष समुदाय शाक्तिक हैं सिंधी ब्राह्मणों का विवर्ण लिखते हुये प्रोफेसर विल्सन साहब अपने जाति निबंध ग्रन्थ की जिल्द दूसरी के पृष्ठ १३७ तथा १३८ के आधारानुसार ये लोग गौ व प्याज

खिड़ियावों को छोड़कर भेड़, बकरी, बकरा, हिरन, नानाप्रकार के पक्षी तथा मछली आदि के खाने पीने वाले होते हैं ये लोग कादि लह-सुन तथा धर्मशास्त्र वर्जित अन्य शाकादि भी खाते हैं इन के यहां लोहाना वैश्यों के यहां की वृत्ति है ये लोग खेती व दुकानदारी भी करते हैं।

३०१ शेणवी :—यह एक दक्षिण देशीय ब्राह्मण जाति है इस के ब्राह्मणत्व विषय एक बड़ा विवाद है अर्थात् हमें दो प्रकार के प्रमाण मिले हैं जिन से ये ब्राह्मण व अब्राह्मण दोनों ही सिद्ध हैं प्रसिद्ध डाक्टर भाऊ दाऊजी, स्वर्गवासी मिस्टर जस्टिस तैलंग, स्वर्गवासी मिस्टर शंकर पांडुरंग पंडित सब शेणवी वंश भूषण थे इस ही तरह मिस्टर भंडार कर M. A. वाइस चेन्स्लर मुम्बई युनिवर्सिटी आदि आदि अनेकों महानुभाव उच्चपदस्थ लोग कई हैं।

इन के विषय एक महाराष्ट्र विद्वान अपने मरहाटी भाषा के ग्रन्थ ब्रा० भे० के पृष्ठ ७२ व ७३ में जो कुछ लिखा है उस का भावार्थ इस प्रकार से है कि " ये लोग अपने को गौड़ ब्राह्मण बतलाते हैं किसी २ ग्रन्थ कार ने ऐसा भी लिखा है कि जिस समय परशुराम जी महाराज ने कोकन देश बसाया था उस समय इन ब्राह्मणों को गौड़ बंगाला से बुलाया था ये सारस्वतों में से भी बताये जाते हैं, क्योंकि इन का आदि स्थान उत्तर देश कहा जाता है बंगाल में गौड़ ब्राह्मण मांस मछली खाते हैं तैसे ही दक्षिण में शेणवी लोग खाते हैं इन की बोली में बंगाली का मेल जोल सा भी मालूम होता है जिससे अनुमान होता है कि ये लोग यथार्थ में बंगाल के गौड़ ब्राह्मणों में से हैं परन्तु ब्रा० मा० प्रकरण २३ में इस जाति को सारस्वत ब्राह्मणोंकी एक जाति मानी है जैसे:-

शाणवीति द्वितीयस्तु भेदस्तेषामुदा हृतः।
तथाच कोंकणा इत्थं भेदा सन्ति ह्यनेकशः ॥२५॥

अर्थात् कोकन देश में रहने से दूसरा भेद शाणवी जानना तथा देश परत्वता से कोकन भी कहाते हैं पुनः लिखा है कि ६६ ग्रामों में इन का निवास होने से ये साष्टीकर कहाते कहाते षाणवी व षाणवी

तथा शेणवी कहाने लग गये। पुनः पंडित हरि कृष्ण शंकर राम जी शास्त्री ऐसा लिखते हैं कि:—

अधिकारं पराणवति ग्रामाणां चददौ किल।
एतद्ग्रामाधिकाराच्च पाराणवीत्युप नामकम् ॥३०॥
प्राप्तंहि तेन विप्रत्वं गच्छतीति न शक्यतांम्।
शुद्ध शाराणावी शब्दोऽयं देश पांड्यादि शब्दवत ॥३१॥

अर्थ छन्नु ग्राम का अधिकार मिला इस वास्ते छन्नु ग्राम का अधिकार पणवति है जिस ही से शेणवी नाम हुआ है ॥ ३० ॥

इस से यह न समझना कि इन का ब्राह्मणत्व जाता है परन्तु देसाई पांडे आदि शब्दवत् समझना चाहिये। ये सब लेख शेणवी जाति के ब्राह्मणत्व के पोषक हैं परन्तु पं० पांडोवा गोपाल जी इन के विषय में स्कन्द पुराण का नाम लिखकर ऐसा लिखते हैं कि:—

सूर्य वंशीय क्षत्रश्च पिताभवति यो नरः।
माता या ब्राह्मणी नारी सेणवै ज्ञाति रुच्यते ॥

अर्थात् किसी सूर्य्य वंशी क्षत्रिय पिता तथा ब्राह्मणी माता इन दोनों के संयोग से जो सन्तान हुयी वे शेणवी कहाये।

इस ही के आधारानुसार ऐसा लिखा है कि कर्नाटक देश में ३०० वर्ष हुये एक राम राजा था उस समय एक शेणवी ब्राह्मण ने सन्यास लिया परन्तु उस की चरचा फैली तदर्थ कोई २०० सन्यासी एकत्रित इस निमित्त हुये कि शेणवियों को सन्यास लेने का अधिकार है या नहीं? यह निश्चय हो चुकने पर मामला राजा के समीप गया और राजा ने उस शेणवी पर दंड कर के सन्यास छुड़वा दिया क्योंकि शास्त्र में सन्यास का लेना ब्राह्मण ही का अधिकार है अतः उस शेणवी पर राजा ने दंड भी किया था।
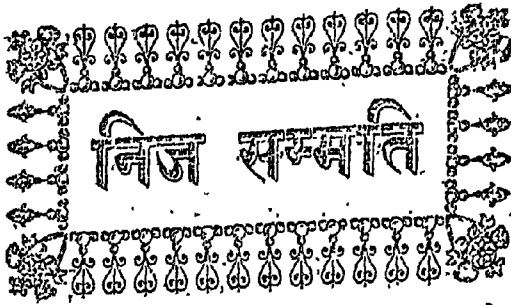
पलाशे ब्राह्मण जाति प्रकरण में भी बहुत कुछ विवर्ण शेणवी जाति सम्बन्ध में आया है तहां ही बहुत से हेतु देते हुये हम काशी आदि की व्यवस्थादि को न मानकर पलाशे व शेणवी जाति को शुद्ध ब्राह्मण जाति मान्ते हैं और इन को ब्राह्मणत्व के सम्पूर्ण कर्म करने का अधिकार देते हैं, विरुद्ध व समर्थन दोनों पक्ष केवल निष्पक्षभाव से लिखे हैं यदि हमारी सम्मति पर किसी को सन्देह हो तो वे सज्जन हम से शास्त्रार्थ कर सक्ते हैं ? क्यों कि जिस समय की वह व्यवस्था है उस समय इस देश में जातिदम्भ, व जातिमत्सरता व परस्पर भ्रातृकलह का बजार गर्म था "हम ऊंच व सम्पूर्ण संसार नीच" ये भाव देश में फैले हुये थे, अस्तु !

पांडोबा गोपाल जी एक महाराष्ट्र विद्वान ने अपने जाति निबंध मराठी भाषा के ग्रन्थ के पृष्ठ २१७ में ऐसा लिखा है कि:—

मालवण नामक ग्राम में एक समय शेणवियों के घर कोई यज्ञादि वेदोक्त कर्म हो रहा था तहां अध्वर्यु के स्थान पर शेणवी, ही बिराज रहे थे, ऋत्विग के पद पर विनायक जोषी, सदाशिव कृष्ण सोमण, व बाबा जी जनार्दन कामत आदि द्वारा ग्रह पूजन व यज्ञ कर्म चल रहा था, ग्राम के ब्राह्मणों ने यह देख कर कि ये शेणवी लोग अनधिकारी हैं और इन्हें ब्राह्मणों के सदृश षट्कर्म करने के अधिकार भी नहीं है ऐसी जाति का पुरुष अध्वर्यु के आसन पर कैसे बिराजा ? और इन ब्राह्मणों ने इन के यहां कैसे वेदोक्त कर्म कराया ? अतः उन तीनों ब्राह्मणों को ग्राम वालों ने जातिच्युत कर दिया इन तीनों में से एक दिन एक एक जन मन्दिर में दर्शनार्थ गये परन्तु उन्हें जाति पतित अप्रामाण्य

समझकर पुजारियों ने मंदिर से बाहिर कर दिया, अतः कृष्णा भट्ट अभ्यंकर ने अपने पास से रुपैये खर्च कर के अपना प्रायश्चित करा लिया, और रघुनाथ दिवाकर अभ्यंकर दोनों ने मिल कर अदालत में अपने खर्च की हानि की नालिश कर दियी तदर्थ बड़े २ विद्वानों की सम्मति एकत्रित कियी गयी।

## ॥ काशी विद्वज्जनानां सम्मतिपत्रम् ॥

स्वस्ति श्री नृपविक्रमशाके १८४४ वर्तमाने कीलक नाम सम्वत्सरे उदगयने वैशाख मासे शुक्लपक्षे स्वस्तिश्रीमत्सकलानुष्ठान तत्पर मुम्बापुरस्थ विद्वद्वर देशस्थ चित्तपावन कर्हाटक गुर्जर प्रभृतिक वाडवान्प्रति श्री काशीतो भट्टोपाख्यदादं भट्टादीना नतयः कुशलमुभयत्र वृत्तान्तस्तु तत्र भवद्देशे सासष्ठि कुशस्थलीज्ञातीयानां षट्कर्माभावोऽस्तीं त्याक्षेपः कृतस्तत्रवत्यैः परंत्वेते षट् कर्म्माधिकारिणो न भवंतीति वक्तुमशक्यं यतस्तावत्सन्यासो दृश्यते देशे सर्वत्राग्निहोत्रादि कर्म तेषामस्तीत्यपि विद्वन्मुखाच्छ्रूयते। अन्यच्च कमलाकर भट्ट पादैर तेषां ज्ञातिषु ये चतुर्थाश्रमिणस्तेषां महत्वं स्थापितम्। एते गौड़ान्तर्गताः ब्राह्मणा मान्या इति तत्पत्रं च दृष्टम्। सर्वज्ञातो कृत पाके भोजन व्यवहारोपि दृष्टः अनुष्ठानं चैतैः सह कुर्वन्ति ब्राह्मणाः। श्राद्धं चैतेषां चदे जायते। अतो युक्त्या परंपरागत व्यवहारेण। न नास्ति सन्देहो द्विजत्वे। इत्यलं। युक्ति कुशलेषु लेखनेन॥

सम्मतोयमर्थो भट्टोपाख्यानंतराम शर्म्मणः।
सम्मतोयमर्थो भट्टोपाख्य दादं भट्टस्य॥
संमतोयमर्थो धर्माधिकारि महीधर शर्म्मणः।
संमतोयमर्थो शेषो पाख्य वीरेश्वर शर्मणः॥
संमतोयमर्थो तारोपाख्य सखारामस्य।
सम्मतोयमर्थो दशपुत्रो पाख्य लक्ष्मण पंतस्य॥
सम्मतोयमर्थो पुरायस्तम्बो पाख्य वैजनाथस्य।

सम्मतोयमर्थो पौराणिको पाख्य आत्माराम भट्टस्य ॥
सम्मतोयमर्थो ज्योतिर्विदुनामक गुर्जर सिद्धेश्वरस्य।
सम्मतोयमर्थो शेषो पाख्य चक्रपाणेः ॥
सम्मतोयमर्थो जन्युपनाम्नो गंगारामस्य ।
संम्मतोयं वासुदेव भट्टस्य ॥
पत्र प्रमाण गंगाराम २ दीक्षित अयाचितोप नामक।
सम्मतोयमर्थ पुणयस्तम्बो पाख्य सोमनाथ शर्म्मण ॥
सम्मतोयमर्थो गंगाराम मोन्यो नामकस्य ।
सम्मतोयमर्थो देवो पाख्य महादेव शर्म्मणः ॥
सम्मतोयमर्थो केसरो पाख्य गणेश शर्म्मणः ।
अनुमतोयमर्थो नागेश शास्त्रिण आंध्रस्य ॥
समति बालकृष्ण दीक्षित अयाचित ।

A true Copy of the original made by Purshotam Ray.

(Signed) P. S. Maister Registrar
True Copy
(Signed) E. T. Richardson
E. P. Magistrate & T. P.

असल बर हुकुम रुजू पाहिली
असे ता० २६ अगस्त सन् १८६१
(मोडी सही) गोविन्द गनेश कारकून

## ❀ भाषार्थ ❀

मुकदमा नं० १३० सन् १८५१
रघुनाथ दिवाकर अभ्यंकर
कृष्ण भट्ट अभ्यंकर } वादी
चिन्तामणि विनायक जोशी-प्रतिवादी

नोटः—इस मुकदमे की असली नकलें सरकार से लियी हुयी भवानी विश्वनाथ कानविंदे मुम्बई के यहां मौजूद हैं।

इस मुकद्दमे में जो वादी ( मुद्दई ) हैं वे गांव के उपाध्याय हैं अतः प्रतिवादी ( मुद्दायलाह ) ने इन को देव मंदिर से बाहर किया अतः देव मन्दिर की शुद्धि का खर्च इन का पड़ा अतएव इन्हों ने नालिश कियी है।

इस मुकदमे का फैसला भी उपरोक्त काशी आदि की व्यवस्था के अनुकूल अर्थात् शेणवी जाति के विरुद्ध हुआ है पूरे पूरे कागजात प्राप्त होने पर पूर्ण विवर्ण सप्त खण्डी ग्रन्थ में देंगे।

**३०२ शैवपाञ्चाल** :—पाञ्चाल ब्राह्मणों के दो भेद होते हैं शैव पाञ्चाल और ब्रह्मपाञ्चाल अतः दोनों ही का विवर्ण इस पुस्तक में "पकार" की जातियों के साथ पाञ्चाल ब्राह्मण स्थम्भ में लिखा जाचुका है तहां देख लेना।
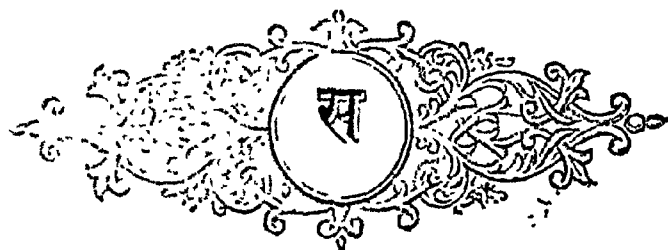
**३०३ सनाढ्य** :—वर्तमान काल में प्रायः गौड़ ब्राह्मणों में जो पुराने ढर्रे के महानुभाव सज्जन गण हैं उन्होंने अपना यह ही कर्तव्य समझ रक्खा है कि सनाढ्य ब्राह्मण कोई इतर ब्राह्मण जाति है और इन से गौड़ों को व्यवहार नहीं बढ़ाना चाहिये परन्तु इस पापमयी पृथा में कहां तक सत्य है ? पाठकगण इस सनाढ्य मीमांसा अध्याय से अनुमान कर सकेंगे क्योंकि सनाढ्य, गौड़, पल्लीवाल और तगा ये चारों गौड़ ही समुदाय के अन्तर्गत हैं जिन सब की पृथक पृथक मीमांसा पाठकों के अवलोकनार्थ हम ने कियी है यथा :—

(सनाढ्य मीमांसा)

पं० हरिकृष्ण शंकरराम जी जिन्हें इस संसार से स्वर्गलोक को गये भी आज संवत १९७१ में अनुमान १४ वां वर्ष है और जिन्होंने अपने देहान्त से १५ वर्ष पहिले अपने जाति निबन्ध ग्रन्थ के पृष्ठ ५५२ में ऐसा लिखा है कि :-

(१) सनाढ्या ब्राह्मणा श्रेष्ठास्तपसा दग्ध किल्विषाः
सच्छन्देन तपो आढ्यं तेनाढ्या ये द्विजोत्तमाः ॥८॥

अर्थात् सनाढ्य ब्राह्मण एक श्रेष्ठ ब्राह्मण हैं जो अपने तपबल, व सदाचार तथा कर्म धर्म से पवित्र होगये हैं यह पदवी व संज्ञा जो इन की हुयी वह केवल उन के तप प्रभाव से ही हुयी है क्योंकि शास्त्रों में सन् शब्द से तप का ग्रहण होता है आढ्य का अर्थ युक्त है अतः जो तप करके युक्त ब्राह्मण थे वे सनाढ्य कहाये । पुन :-

ते सनाढ्या द्विजा जाता ह्यादि गौड़ा न संशयः।
तेषां भोजन संबंधः कन्या सम्बन्ध एवच ॥९॥

अर्थात् निः सन्देह रूप से यह सनाढ्य ब्राह्मण समुदाय आदि गौड़ ब्राह्मण समुदाय में से ही है इस ही कारण से इन आदि गौड़ व सनाढ्यों के परस्पर खानपान व बेटी व्यवहार एक ही है ।

(२) इस ही आशय को लेते हुये मिस्टर एच एम इलियट साहब बहादुर भी उपरोक्त जाति निबंध की रचना से कोई पचास वर्ष पहिले ही लिख गये हैं ।

On the North-West the Sanadhya are met by the Gaur Brahmins, whose boundary line is also sufficiently difinite to admit of description.

H. M. Ellioti Supplementary Glossary.

उपरोक्त साहब बहादुर के लेख का भावार्थ यह ही है कि उत्तर पश्चिम में गौड़ व सनाढ्य सब एक ही हैं क्योंकि आगे चलकर इन्होंने अपने ग्रन्थ में बहुत कुछ लिखा है ।

( ३ ) मिस्टर सी० एस० डबल्यु० सी० कूक ने अपने ज्ञाति निबन्ध नामक ग्रन्थ के पृष्ठ २६७ में ऐसा लिखा है कि :—

It is derived from " San " " ansterity " and Adhya " wealth " a conjunction which applied to a Brahman would imply " One possessed of the wealth religious austerities".

See C. & T. Page 267.

भावार्थः—सनाढ्य नाम दो शब्दों के संयोग से बना है अर्थात् सन और आढ्य, जिस में सन का अर्थ तप और आढ्य का अर्थ धन है अर्थात् जिस ब्राह्मण समुदाय के पास तप धन है वह ब्राह्मण समुदाय सनाढ्य कहाया अथवा जिस ने धार्मिक तप धन का संग्रह किया है वह सनाढ्य कहाया ।

यह सनाढ्य शब्द दो शब्दों के योग से बना है अर्थात् सन और आढ्य मिलकर सनाढ्य हुआ । सन का अर्थ ब्रह्मतप और आढ्य नाम पूर्ण युक्त अर्थात् जो ब्राह्मण, ब्रह्मतप में पूर्ण थे व ब्रह्मतप युक्त थे वे सनाढ्य कहाये यथा :-

ब्राह्मं तपो ब्रह्मचर्यं, सनंच परमंतपः ।
ब्रह्मतेजो महा मूलं, सनत्वं नैकमाकरम् ॥

वैदिक कोषे

अर्थात् सन ब्रह्मतप का नाम है ।

पुन :-

अखण्डिते सन दाने, विधिपुत्र हरौ पुमान् ।
भृङ्गोर ब्राह्मतपसि, प्राज्ञेन्द्र चरुभक्षणे ॥

गोभिलीय शब्द हारावलि

इस से भी सिद्ध होता है कि सन ब्रह्मतप का वाची है अतएव जो ब्रह्मतप में युक्त हैं वेही सनाढ्य कहाये ।

पुन :-

साङ्गोपाङ्ग तपो ग्राह्य, सन शब्देन लक्षितम् ।
तस्य संसेवनाच्छुद्धः सनाढ्य इति कथ्यते ॥

अर्थात् सांगोपांग वेदवेदांगों को ब्रह्मचर्य्याश्रम द्वारा पढ़ना सन कहाता है और उस सन यानी ब्रह्मतप युक्त जो हैं वे सनाढ्य कहाते हैं।

अतएव जो चारों वेद छहों शास्त्र और १८ अठारों उपनिषदों के जानने वाले परम तपस्वी सत्यवादी, जितेन्द्रिय धर्मात्मा ब्राह्मण हैं वे सनाढ्य कहाये ऐसा सिद्ध हुआ इसलिये पूर्वकाल में जो ब्राह्मणों का समुदाय यादृश गुण सम्पन्न था। ऋषियों ने उन को सनाढ्य संज्ञा दियी थी। पुनः-

षणुदाने स्मृतोधातुर्धर्मपादस्तदिव्यये ।
सत्यं तपो दया चैव दाने नैव सुलक्षिताः ॥

तपस्सत्य दया दान, वाचकः सन शब्दकः ।
यत्र चैते धर्म्म पादाः सन् सनाढ्यस्स्मृतो बुधैः ॥

अर्थात् व्याकरण में षणुदाने धातु है यह दान वाचक है यहां दान से कहिये सत्य तप और दया का ग्रहण है अथवा दान कहिये ब्रह्मविद्या का दान अतएव जो ब्रह्मविद्या का दान करने वाले हैं वे सनाढ्य सिद्ध हुये।

यदि पक्षपात रहित विचार करें तो ऐसे गुण जिन ब्राह्मणों में हों वेही सनाढ्य कहे जासकते हैं। ऐसी दशा में प्रचलित सनाढ्यों के साथ ही कोई विशेषता नहीं रही। पुनः ऐसा भी लेख मिलता है कि :—

सनाढ्या ब्राह्मणा श्रेष्ठा तपसा दग्ध किल्विषाः ।
सच्छब्देन तपो ग्राह्यं तेनाढ्या ये द्विजोत्तमा ॥

सनाढ्य संहिते ।

अर्थात् सनाढ्य ब्राह्मण श्रेष्ठ हैं और तप करते करते पाप रहित होगये हैं सन शब्द से तप का ग्रहण करने से जो तप में रत हैं वे सनाढ्य ब्राह्मण हुये। परन्तु इस आधारानुसार प्रचलित सनाढ्य समुदाय पर स्वात्मप्रशंसा का दोष आता है।

पुन :—

ते सनाढ्या द्विजा जाता ह्यादि गौड़ान संशयः।
तेषां भोजन सम्बन्ध कन्या सम्बन्ध एवच ॥
आदि गौड़ेषु भवति स्ववर्गेच विशेषतः ।

ब्रा० मा० पृ० ५५३

आदि गौड़ ब्राह्मण ही सनाढ्य कहाये और जो २ आदि गौड़ ब्राह्मण महातप संयुक्त थे वे सनाढ्य कहाये बाकी आदि गौड़ रहे अतएव गौड़ों के मुख्य दो भेद हुये आदि गौड़ और सनाढ्य, इन दोनों में भोजन सम्बन्ध और कन्या विवाह सम्बन्ध भी परस्पर होते हैं अतएव गौड़ सनाढ्यों के परस्पर सम्बन्ध होना उचित ही है।

पुन :—

रामो दाशरथिः श्रीमान् पितुर्वचन गौरवात् ।
दण्डकारण्यकं गत्वा निवासमकरोत्पुरा ॥ १ ॥
आजौहि रावणं हत्वा सपुत्र बलवाहनम् ।
अयोध्यामग मच्छ्रीमान् सीतालक्ष्मण संयुतः ॥ २ ॥
ततो ब्रह्मवधाद्भीतो रामो यज्ञं चकारह ।
तत्र यज्ञे समाहूताश्चादि गौड़ा द्विजोत्तमाः ॥ ३ ॥
तेषां च वरणं चक्रे यज्ञे विपुल दक्षिणे ।
विप्राश्चकारयामासुर्यज्ञं विधिविधानतः ॥ ४ ॥
यज्ञान्तेऽवभृथं कृत्वा दक्षिणां दातुमुद्यतः ।
तत्र यज्ञे सार्द्ध सप्तःशतं ये ऋत्विजोभवन् ॥ ५ ॥

तेभ्यो रामः सार्द्ध सप्तशतं ग्रामान् ददौमुदा।
तेग्राम नाम्नांह्यद्यापि भुवि विख्यातकीर्तयः ॥ ६ ॥

ब० मा०

महाराज दशरथ जी के पुत्र श्रीरामचन्द्र जी महाराज ने अपने पिता की आज्ञा मानकर दण्डकारण्य वन में १४ वर्ष निवास किया ॥ २ ॥ फिर श्रीरामचन्द्र जी महाराज कुल सहित राक्षस लंकाधिपति रावण को मार कर सीता लक्ष्मण सहित अयोध्या को लौटे ॥ ३ ॥ अयोध्या में आकर श्रीरामचन्द्र जी महाराजने ब्रह्म राक्षस के बध की शुद्धि के निमित्त यज्ञारम्भ किया और उस यज्ञ में द्विजोत्तम आदि गौड़ ब्राह्मणों को बुलाया ॥ ४ ॥ फिर उन ब्राह्मणों का बड़ी २ दक्षिणा देने के अर्थ वर्ण किया उन वेदज्ञ आदि गौड़ श्रोत्रिय ब्राह्मणोंने विधिवत यज्ञ कराया ॥ ५ ॥ फिर यज्ञानन्तर राजा अवभृथ स्नान कर के वर्ण किये हुये ब्राह्मणों को दान देने को सन्नद्ध हुआ तब वहां साढ़े सात सौ यज्ञ कराने वाले ऋत्विज ब्राह्मण थे ॥ ६ ॥ इन सब प्रत्येक को राजा ने एक २ गांव दिया और उन २ गांवों के नामों से आजकल भी वे प्रसिद्ध हैं और उन सब को ऋषियों ने सनाढ्यों की पदवी दियां तब से आदि गौड़ ब्राह्मणों की एक शाख सनाढ्य हो गयी। इन प्रमाणों से भी आदि गौड़ व सनाढ्य एक ही सिद्ध होते हैं पुनः-

प्रमाणमित्यादि सस्तिशास्त्रे,
नामानि तस्येह लिखामिचाद्य।
ब्राह्मं तपो ब्रह्मधनं सनञ्च,
सत्त्व मैश्वर्यं परमं तपश्च ॥

अर्थात् शास्त्रों में अनेकों प्रमाण मिलते हैं जिन के आधारानुसार ब्राह्मतप के नाम ब्रह्मधन, सन, सत्त्व, ऐश्वर्य और परमतप ये ६ नाम हैं पुनः सन शब्द की उत्पत्ति विषय स० द० पृष्ठ ६ में लिखा है कि:-

स चिन्तयन् द्व्यक्षर मेक दाम्भ।
स्युपाश्रृणोद्विर्गदितं वचो विभुः॥

स्पर्शेषु यत्षोडश मेक विंश,
निष्किञ्चनानां नृपयद्धतं विदुः ॥ १६ ॥

ब्रह्म की समाधि में चिन्तमन करने से ब्रह्मा जी को दो अक्षर का शब्द दो बार सुनायी पड़ा जो स्पर्श संज्ञक वर्णों में सोलहवें तथा २१ वें अक्षर स और न हैं जिन दोनों का संयोग शब्द सन प्रसिद्ध हुआ।।

अतः सनाढ्यः सनकः सनन्दनः,
सनत्कुमारश्च विभुः सनातनः ।
सिद्धान्तमेतं नितरां वलोत्कटं,
कोवेन मन्ये तवुधोय आस्तिकः ॥

अर्थात् सनक, सनन्दन, सनत्कुमार और सनातन ये सर्वोच्च ऋषिगणों का नाम तप युक्त होने के कारण " सन " शब्द पर ही रक्खे गये हैं ।

ये वै मरीच्या त्रिविशिष्ट मुख्या,
वेधस्सुतास्तेपि सनाढ्य वर्य्याः ।
ब्राह्मेण युक्तास्तपसा यतस्ते,
मन्येत कोनाऽत्र सनं सपूर्णाम् ॥

ब्रह्मा जी के पुत्र मारीचि अत्रि वसिष्ठादि ब्राह्मतप से युक्त होने के कारण सनाढ्य ब्राह्मण हैं ।

श्री रामचन्द्र जी महाराज ने चित्रकूट में भरत जी के वहां पहुंचने पर ऋषिगणों को ऐसा कहा है कि :—

सर्वे सनाढ्यत्वमिता भवन्तः,
श्रीवामदेवादय एव विप्रा ।

ब्रुवन्तु यद्योग्य मिहाद्य कार्य्ये,
कथंतु कार्य्यद्भरतो नृपाज्ञाम् ॥

श्री वामदेव श्री जाबालि ऋषिगणों से श्रीरामचन्द्र जी महाराज बोले कि " आप सब ऋषिगण सनाढ्य पद को प्राप्त कर चुके हैं आप ही कहिये कि मेरी तरह पिता की आज्ञा मान कर भरत जी राज सिंहासन को क्यों नहीं स्वीकार करें ? अर्थात् पिता की आज्ञा से जिस तरह मैंने बनबास स्वीकार किया तैसे ही भरत जी को राजगद्दी स्वीकार करना चाहिये ।

तप वरिष्ठ गौड़ ब्राह्मणों का समुदाय जहां रहता था उस देश का नाम भी सनाढ्य देश प्रसिद्ध हुआ था अतएव कई कई ऐतिहासिक विद्वानों ने सनाढ्य देश एक देश माना है और यह नाम विशेषरूप से तपवरिष्ठ ब्राह्मणों के कारण से ही पड़ा प्रतीत होता है, बड़े २ उच्चतम कोटि के सरकारी अंगरेज अफसरों ने भी भारतवर्ष के एक भाग का नाम सनाढ्य देश माना है यथा मिस्टर इलियट साहब ने अपने ग्रन्थ में सनाढ्य देश की सीमा इस प्रकार लिखी है :—

They touch the Kanaujiyas on the North-West extending over Central Rohilkhand, and the part of the Upper and Central Duab from Pilibhit to Gwalior. The boundary lines runs from the North-West angle of Rampur, through Richa, Jahanabad, Nawabganj Barreilly, Faridpur to the Ramganga, thence through Salimpur and the borders of Mehrabad; thence down the Ganges to the borders of Kanauj, thence up the Kalinadi to the western border of Alipur Patti, through Bhaugaon, Sij Bibaman, and down the Jumna, to the Junction of Chambal.

see:-Sir H. M. Elliot's Supplementary Glossary.

अर्थात् सनाढ्य देश उत्तर से पश्चिम की ओर का कन्नोज प्रदेश से मिलता हुआ मध्य रुहेलखण्ड तथा मध्य दुआव से होते हुये पीलीभीत से ग्वालियर तक चला गया है। तथा रामपुर के कोने से लगता हुआ रीचा, जहानाबाद, नवाबगंज, बरेली, फरीदपुर से रामगंगा तक व रामगंगा से सलीमपुर सेहराबाद होता हुआ कन्नौज तथा कालीनदी के किनारे किनारे बढ़ता हुआ पश्चिम की ओर को अलीपुर पट्टी, भोगांव, सिज, और बीबामऊ से नीचे की ओर को बढ़ता हुआ जमुना व चम्बल के पास का देश सनाढ्य देश कहाता है।

वर्तमान में भी सनाढ्य ब्राह्मणों की विशेष बस्ती सरौली, सिओन्द्रा, नरौली, बहजोई, राजपुरा, धावाई, कोइल (अलीगढ़) चन्दोसी नोहजिल, मथुरा, कोसी आगरा, एटा, मैनपुरी, इटावा और बदायूं आदि आदि ज़िलों में हैं।

अतएव तपवरिष्ठ गौड़ ब्राह्मणों का देश सनाढ्य कहाया और उस ही सनाढ्य देश में निवास करने से आदि गौड़ ब्राह्मणों की ही देश परत्वता से अथवा तपयुक्तता से सनाढ्य संज्ञा हुयी ऐसा भी माना जा सक्ता इस से भी सिद्ध होता है कि गौड़ व सनाढ्यों में परस्पर कोई अन्तर नहीं है।

मिस्टर सी. एस विलियम क्रूक ने ऐसा लिखा है कि :-

There is also some Connection between the Sanadhya and Katya or Mahabrahman.

C. S. W. Crookes Tribe's & Castes. P. 269

अर्थात् सनाढ्य व कटहा (कट्टया) वा महाब्राह्मणों में भी कुछ सम्बन्ध है।

पाठक! यहां पर उपरोक्त कलेक्टर साहब बहादुर ने भी एक बड़ी भारी गलती कियी है जिस के कारण सनाढ्यों से द्वेषी समुदाय यह कहा करता है कि "सनाढ्य एक नीच ब्राह्मण हैं और हम गौड़ों को उन से नहीं मिलना चाहिये" परन्तु शोक इस के भावार्थ, फलितार्थ तथा तात्पर्य्य को न तो कलक्टर साहब ही समझे और न सनाढ्यों से द्वेषी समुदाय ने ही इस भाव को समझा वरन सहसा सना-

ढ्य ब्राह्मणों को छोटे मानने लगे. पर यह सरासर भूल व द्वेष युक्त वार्ता है क्योंकि बदायूं के ज़िले में कोट सलासी नामक परगने में एक क्षत्रिय राजा आदिसुर हुये हैं वे एक दिवस कहीं तीरथ यात्रा को जारहे थे अकस्मात् चलते २ राजा आदिसुर नाग देश में पहुंचे और तहां बीमार होगये, चिकित्सा के लिये हकीम वैद्यों की बुलावट हुयी और इलाज होने लगा पर कुछ आराम नहीं मालुम पड़ा, तब उस नाग देश के राजा ने अपने यहां के सनाढ्य ब्राह्मणों में से एक विचक्षण सद्वैद्य को महाराज आदिसुर के पास भेज दिया और उन वैद्य महाशय ने उन की चिकित्सा कियी, भगवान की कृपा ऐसी हुयी की उन सनाढ्य वैद्य जी के इलाज से राजा आदिसुर भले चंगे होगये। इस पर राजा वैद्यजी पर बड़े ही प्रसन्न हुये और इनाम में उन्हें गांव आदि जागीर देने के अतिरिक्त उन्हें "कष्टहा" की उपाधि दियी कि "आप बड़े बड़े कष्टों के दूर करने वाले हैं परन्तु इस शुद्ध शब्द का बिगड़ा हुआ रूप कटहा होगया और विद्या के अभाव से वे कहीं कटहा और कहीं कट्टया कहे जाने लगे जिसे भूल से लोगों ने महाब्राह्मण ही मान लिया और तदनुसार ही कलेक्टर साहब ने भी लिख मारा जिस से द्वेषी समुदाय को इस से बड़ी उत्तेजना मिली अन्यथा जैसा हम अपने "जाति अन्वेषण" प्रथम भाग नामक पुस्तक-जिस में ३५० जातियों का विवर्ण दिया गया है-उस में हम प्रमाणित कर चुके हैं कि पहिले इस देश में सर्वत्र संस्कृत ही बोली जाती थी तदनुसार राजा आदिसुर ने इन वैद्यराज जी को "कष्टहा" की उपाधि दियी थी जिस का अर्थ ऐसा होता है कि "कष्ट को दूर करने वाला" कष्ट का नाश करने वाला, कष्ट को मिटाने वाला ऐसा होता है, पर ऐसा सुअर्थ छिद्रान्वेषणी समुदाय क्यों लेने लगा था। भारत के अनंभाग्य से आज इस देश में पिता पुत्र से कलह करे भाई तो भाई का सर्वस्व डकार कर हड़प करजाने की चिन्ता में रहता है, पिता आर्य्यसमाजी तो पुत्र सनातन धर्मी, पति मूर्ति पूजक तो स्त्री मींयां मदार पूजक, पति मूर्ति भंजक तो स्त्री मूर्ति पूजक है, पति वैष्णव है तो स्त्री शैव सम्प्रदायी है, पिता शैवी तिलक करता है तो पुत्र रामानन्द शंख

चर्कोंकी दाखिल १११ रामफटाका लगाने वाला है और परस्पर एक दूसरे को अस्पर्शनीय अन्त्यज तुल्य समझते हैं ऐसी दशा में कतिपय गौड़, सनाढ्यों को एक छोटे व नीच ब्राह्मण मानें व बतलावें तो यह कोई नयी बात नहीं है, वरन उन लोगों की स्वाभाविक बात है अंतः देश के शुभचिन्तक नेतावों का कर्तव्य है कि जब गौड़ व सनाढ्यों के खानपान व विवाह सम्बन्ध भी विशेष रूप से होरहे हैं तो उन में परस्पर भेद मानना यह केवल अहंकार व जातिदम्भ तथा ऊंचता नीचता के भावों का परिणाम है अन्यथा सब एक ही हैं। हमने अपनी जाति यात्रा के भ्रमण में विशेष रूप से अनुभव किया है कि गौड़ व सनाढ्यों के सम्बन्ध का तांता ऐसे कठिन स्वरूप में उलझा हुआ है कि उस का सुलझाना एक असम्भव सी बात प्रतीत होती है। तिस पर भी तुर्रा यह है कि लोग सनाढ्यों के साथ खान पान नहीं करना चाहते तिस पर भी कलँगी यह चढ़ाते हैं कि "सनाढ्यों के साथ विवाह सम्बन्ध करना एक नीचता प्रदर्शक चिन्ह है" तिस पर भी दूनी समुदाय छत्र यह चढ़ाते हैं कि गौड़ व सनाढ्यों के परस्पर का खान पान दूर रखिये विवाह सम्बन्ध की तो चर्चा भी न कीजिये किन्तु जाति सुधार, देश सेवा, व विद्योन्नति के कामों में भी गौड़ व सनाढ्यों को मिल कर कार्य्य नहीं करना चाहिये ऐसी ही दशा श्रीमती गौड़ महासभा के १८ वें वार्षिकोत्सव के आगरे वाले जल्से पर हम ने आगरा निवासी कतिपय अदूरदर्शी गौड़ सज्जनों की कार्य्यवाही निजी ही देखी थी क्योंकि तारीख ३० दिसम्बर सन् १४ की रात्रि की अन्तरंग सभा में यह प्रस्ताव पेश हुआ कि "गौड़ व सनाढ्य तथा पल्लीवाल व तगा ब्राह्मण जो अपने तईं गौड़ ब्राह्मण होने का दावा करते हैं वे अपने कला कलाप से वास्तव में गौड़ ब्राह्मण हैं या नहीं"? इस सम्बन्ध में हमने उस ही समय अपने छोटे से भाषण द्वारा सभा के बीच में सज्जनगणों को समझा दिया था कि "गौड़ सनाढ्य वा पल्लीवाल आदि गौड़ ही हैं" परन्तु ढोलों की आवाज़ में तूती की आवाज़ कौन सुनता था क्योंकि इस विषय पर सभा में इतना विवाद बढ़ा कि ज्यों त्यों करके रात्रि के तीन बजे के उपरान्त तक केवल ६ प्रस्ताव पास हुये।

विशेष समय उपरोक्त प्रस्ताव में ही नष्ट हुआ क्योंकि थोड़े से विचार शील सज्जनों की बहुसंख्यक अदूर्दर्शी विघ्नकारी महात्माओं के सामने क्या चलसकी थी ? यहां तक कि वहां मल्ल युद्ध होने की तय्यारी होने लगी तदुपरान्त महासभा के प्रधान गौड़वंश शिरोमणि श्रीयुत परम माननीय श्री गोस्वामी किशोरीलाल जी ने इस जटिल प्रश्न को इस तरह से परिणित किया कि " इस विषय की जांच के लिये एक Selected Committee नैमित्तिक उपसभा नियत कियी जाय जो निश्चय करके यह निर्णय करे कि वास्तव में गौड़, सनाढ्य, पल्लीवाल और तगा आदि लोग जो अपने को गौड़ ब्राह्मण कहते हैं वे अपने कर्म कलाप से गौड़ ब्राह्मण हैं या नहीं" इस कमेटी में अनुमान २५ गौड़ सज्जन मेम्बर किये गये जिन में पंडित गोविन्द प्रसादजी बैरिस्टर अटला आगरा इस समिति के मंत्री नियत हुये और आग्रह पूर्वक सज्जनगणों ने मुझे हिन्दु जाति निर्णयकर्ता जानकर इस Selected Committee सेलेक्टेड कमिटी का सभासद किया, यद्यपि भारत वर्ष भर की हिन्दु जातियों के उद्धार का भार मुझ पर होने के कारण मैंने सभासद होने में उदासीनता भी प्रकट कियी थी तथापि भ्रातृसमुदाय के आग्रह से मुझे भी आज्ञा स्वीकार करनी ही पड़ी। अन्यथा मैं तो मनुष्य मात्र को अपना भाई समझकर लोकोद्धार पर तत्पर हूं- ।

संकीर्ण विचारों वाले कतिपय अदूरदर्शी गौड़ों के साथ में अपना जीवन नष्ट नहीं करना चाहता था ।

ग्रन्थकर्ता

---

**गुड़ खांय व गुलगुलों से परहेज**

पाठक वृन्द ! हमारी जाति यात्रा के भ्रमण में तथा सन् १९१४ के आगरे वाले गौड़ महासभा के उत्सव पर हम ने देखा कि कतिपय गौड़ सज्जन सनाढ्यों के नाम से ही चिड़ते हैं तब उन के साथ सम्मेलन व मैत्री कहां ? परन्तु हाय ! लिखते दुख होता है कि " गुड़खांय और गुलगुलों ( पूवों ) से परहेज़ ठीक यह ही दशा गौड़ सज्जनों की है कि अनेकों स्थानों में नहीं २ सैकड़ों

स्थानों में गौड़ सनाढ्यों का कच्चा पक्का खान पान एक, रहन सहन एक और बेटी व्यवहार भी एक तो अब कसर क्या रही? क्योंकि गौड़ व सनाढ्यों का तांता मकड़ी के जाले के सदृश फैला हुवा है ऐसी दशा में भी गौड़ सनाढ्यों से परहेज करें तब ही कहना पड़ता है कि गुड़ खावें और गुड़ के बने गुलगुले यानी पूवों से परहेज़ करें यह कब उचित हो सक्ता है।

हां कतिपय गौड़ जो सनाढ्यों से बहुत ही घृणा करते हैं यह उन का दोष नहीं है किन्तु उन की अनसमझी व ग़लत फ़ैमी है अर्थात् युक्त प्रदेश में इस नाम की दो जातियें हैं पूर्व कथित सनाढ्य ब्राह्मण व सनौढ़िया, परन्तु इन दोनों जातियों में पृथिवी आकाश का सा भेद है अर्थात् सनाढ्य जितने उच्च ब्राह्मण है उतनी ही सनौढिया जाति एक नीच जाति है जैसे :-

Mr. D. T. Robert's note in connection with the Police Comminion of 1890.

मिस्टर डी. टी रावर्ट साहेब ने १८९० की पुलिस कमीशन की रिपोर्ट में सनौढ़ियों के विषय में लिखा है कि:—

" A caste of Criminals in Bundelkhand.

सनौढिया जाति बुंदेलखंड की एक जुल्मीपेशा करने वाली जाति है अतएव सनोढियों को सनाढ्य नहीं मानाना चाहिये।

पुनः मिस्टर C. S. W. C. लेट कलेक्टर सहारनपुर अपने ग्रन्थ के पृष्ठ २७१ में लिखते हैं कि:—

"The Sanaurhiyas are not a caste but a confraternity recruted by the initiation of Promising boys of all castes except Sweepers and Chamars.

सनौढ़िया कोई अलग जाति नहीं है किन्तु सम्पूर्ण जातियों के युवकों का एक समुदाय है जिस में केवल भंगी व चमार तो नहीं सम्मिलित किये जाते हैं अन्य सब जातियों के बालक होते हैं, अतः सनाढ्य ब्राह्मण और सनोढिया अलग अलग हैं। बड़े बड़े अफ़सरों ने

इस जाति को उठाईगीरों का एक समुदाय लिखा है जिस में नैती ठाकुर, कंजर, अहीर, धीमर लुहार कुर्मी और धोबी आदि आदि सब ही तरह के लोग सम्मिलित हैं, ये लोग अव्वल नम्बर ठग व डाकू होते हैं दूर दूर चले जाते हैं तहाँ भिन्न भिन्न भेष व धन्दों में भले आदमियों की तरह लग जाते हैं और फिर मौका पाकर छापा मार लेते हैं, ये लोग भी अपने को सनोढिया कहते हैं और सनाढ्य ब्राह्मणों के गांवों में वस्र सनाढ्य ग्रामीण ब्राह्मण भी विद्या के अभाव से शुद्ध सनाढ्य शब्द का उच्चारण न कर सक कर अपने को कोई सनोढिया, कोई सनाढिया, कोई सनोढ़िया कोई सनवड़िया और कोई अपने को सनावड़ बतलाने लगते हैं ऐसी दशा में सनाढ्य व सनौढ़िया में जो भेद है उसे वे बिचारे ग्रामीण क्या समझें ! अतएव इस प्रकार की दुतरफी गलती ने कतिपय गौड़ों को भी भ्रम में डाल दिया और तद्वत वे लोग सनाढ्य व सनौड़िया इन दोनों भिन्न भिन्न जातियों को एक ही मान कर सनाढ्य ब्राह्मण समुदाय के साथ घृणा प्रकट करके परस्पर द्वेष करने लगे परन्तु यह उचित नहीं हुआ आशा है कि गौड़ बिरादरी इस पर विचार करेगी क्योंकि यह भिन्न भिन्न नीच जातियों का सनोढिया नामक समुदाय भी कहीं कहीं अपने को सनाढ्य ब्राह्मण बतलाता है जैसे सरकारी रिपोर्ट में लिखा भी है :—

They claim to be akins to the Sanadhya Brahmans.

अर्थात् ये लोग भी अपने को सनाढ्य ब्राह्मण होने का दावा करते हैं परन्तु इस आधारानुसार इस समुदाय को ब्राह्मण मान लेना व सम्पूर्ण सनाढ्य ब्राह्मणों को ही इन सनौढ़ियों के समान मान लेना एक बड़ी भारी भूल है अतएव श्रीमती गौड़ महासभा की सेलेक्टेड कमेटी की मेम्बरी की हैसियत से हमारी सम्मति में गौड़ व सनाढ्य एक ही हैं और इस उपरोक्त भूलवश सनाढ्यों के साथ किसी भी प्रकार की घृणा युक्त कल्पना करना एक मिथ्या अपवाद है ।

भेद व
उपभेद

सनाढ्य ब्राह्मणों के भेद व उपभेदों पर विचार करने से इन में कई तरह के भेद हैं १ साढ़े तीन घर, २ दस घर, इन में साढ़े तीन घर वाले सनाढ्य कुल उच्च हैं, ये लोग दस घर वालों के यहां की लड़की लेतो लेते हैं परन्तु उन्हें अपनी लड़की नहीं देते जिस का फल यह होता है कि साढ़े तीन घर वाले समुदाय को विवाहार्थ बहुत व सहज ही में लड़कियें मिल जाती हैं परन्तु दस घर वालों को नहीं। रुहेलखंड में ऐसा प्रसिद्ध है कि बदायूं के जिले में कोट सासनी एक पर्गना है जहां के राजा आदिसुर के यहां चार प्रसिद्ध पंडित थे उन में से एक पंडित जो मिसरजी कहाते थे उनके चार लड़के थे इन चारों को राजा ने चार गांव दिये जिन के नाम १ सराढा २ तारापुर ३ राहडिया और ४ भट्टा थे अतएव इन चारों ग्रामों के नामों से ये प्रसिद्ध हुये अर्थात् सराढा के मिश्र, तारापुर के मिश्र, राहडियाके मिश्र, और भट्टा के मिश्र कहाये। राजा के दूसरे पंडित संखधार थे इन के भी चार पुत्र थे, उन्हें भी राजा ने औनी, धमई, रिनाई और परसरा ये चारों गांव दिये जिनसे ये चारों प्रसिद्ध हुए। अर्थात् औनी के संखधार, धमई के संखधार, रिनाई के संखधार और परसरा के संखधार।

तीसरे पंडित को भी चारगांव राजा ने दिये यानी १ परा २ चंदाबली ३ पीपड़ा, और ४ ऊचड़ा, इन में से ऊचड़ा वाले तो त्रिगोरयत कहाते थे क्योंकि ये लोग त्रिवेदज्ञ थे और बाकी तीन गांव वाले पारासरी ही कहाये। चौथे पंडित के केवल दो पुत्र थे जिन को राजा ने डूंगरपुर और कटैया दिया इन के नामों से ये मिश्र कहा कर प्रसिद्ध हुये इस प्रकार ये चौदह गांव वाले पंडितों के वंशजों की साढ़ेतीन घर संज्ञा हुयी।

इन में एक भेद "इंडोतिया" है जिन्हें अकबर बादशाह ने ८४ ग्राम चम्बल नदी के किनारे दिये थे जिन्हें इंडोतगढ़ी चौरासी भी कहते हैं।

भाटेला भी इन में एक भेद है ये लोग एटा के जिले में विशेष हैं और यहां ये लोग प्रतिष्ठित हैं।

इटावे के जिले में रिधिया और भेड़ कुल के सनाढ्य हैं मान प्रतिष्ठा व विद्या में उच्च पद रखते हैं। औरैया में चौबे पदधारी सनाढ्य बहुत हैं। इन के पूर्वज वासुदेव बड़े प्रतापी हुये हैं, इन के वंशजों को बादशाह अकबर ने ग्राम दिये थे जो आजकल चौधरी कहाते हैं। चौदहवीं शताब्दी में जब बादशाह अलाउद्दीन ने रणथम्भौर का किला फतेह किया तब एक प्रसिद्ध पंडित हरिपन्त इटावे में मथुरा से आये थे वे भी सनाढ्य थे।

सनाढ्य ब्राह्मण सम्प्रदाय के अन्तर्गत एक भेद "बैलवार" भी है जो "बैल वाले" शब्द से बिगड़ कर बैल वार हो गया है अर्थात् पूर्वकाल में जब रेल नहीं थी तो ये ब्राह्मण लोग झुंडो के झुंड बैल रखकर उन बैलों द्वारा व्यापार किया करते थे तिस कारण से सर्वसाधारण लोग उन्हें "बैल वाले" कह कर पुकारते थे, व्याकरण के "रलयो डलयो श्चैव" आदि सूत्र द्वारा र व ल परस्पर बदल जाते हैं अतएव बैल वाले व बैलवारे ये दोनों एक ही शब्द हैं। अन्य सनाढ्यों की अपेक्षा इन में विद्या का अभाव है तथा कतिपय विद्वानों ने हमें यह भी विश्वास दिलाया है कि इन का अन्य सनाढ्यों के साथ खानपान व योनिसम्बन्ध आदि सब एक हैं।

अतएव उपरोक्त सम्पूर्ण प्रमाणों व हमारे भ्रमण के लोकमतानुसार हम सनाढ्य व आदि गौड़ ब्राह्मणों में कुछ भी भेद भाव नहीं मानते हैं बरन श्रीमती, गौड़महासभा को सम्मिति देते हैं कि" सनाढ्य महामण्डल के प्रस्तावानुसार श्रीमती गौड़ महासभा और सनाढ्य महामंडल दोनों संस्थाओं को एक कर के "ब्राह्मण मण्डल" नाम रखकर कार्य्य करना चाहिये।

श्रीयुत पं० भीमसेनजी शास्त्री,
वेदव्याख्याता यूनिवर्सिटी कलकत्ता,
तथा
सम्पादक "ब्राह्मण-सर्वस्व," इटावा।

NARSINGH PRESS—CALCUTTA.

( प्रथमतम )
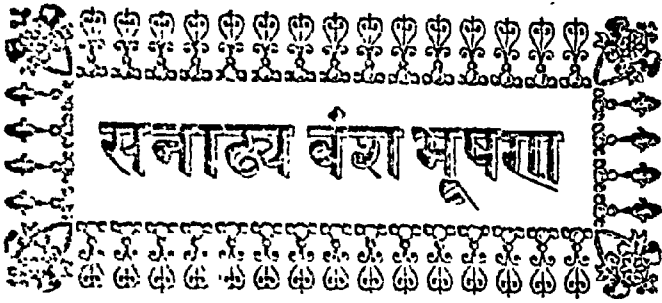
## वेद व्याख्याता श्रोत्रिय पं० भीमसेनजी शर्म्मा इटावा

पाठक! उपरोक्त चित्र में जिस सौम्य मूर्ति के आप दर्शन कर रहे हैं वे पं० भीमसेन जी शर्म्मा हैं, संस्कृत पठित समाज में कोई विरले ही मनुष्य ऐसे होंगे जिन्होंने आपका नाम आर्य्य सामाजिक वैभव में तथा सनातन धर्म्म महामण्डल के झंडे के नीचे न सुना हो, क्योंकि संस्कृत साहित्य का आप ने जो कुछ सेवा करके भारत वासियों का उपकार किया है यह किसी से छिपा हुआ नहीं है आप के पूर्वजों का निकास फर्रुखाबाद ज़िले के बेगपुर ग्राम से है। जहां अब भी इस ही घृत कौशिक मिश्र वंश के १५०० पन्द्रहसौ मनुष्य बसते हैं। किसी कारण विशेष से, आप के पूर्वजों में से पं० गंगाराम जी शर्म्मा मिश्र एटा के ज़िले में तहसील अलीगंज के ग्राम लालनपुर में आकर बसे थे, इन की पांचवीं पीढ़ी में पं० नेकराम जी शर्म्मा एक योग्य परोपकारी, गणितज्ञ हुये, इन्हीं के सुपुत्र उपरोक्त चित्र लिखित पंडित जी हैं। आपका जन्म विक्रम संवत १९११ के कार्तिक मास में हुआ था, परन्तु जब आप २॥ वर्ष के थे आप की माता का स्वर्ग वास होगया था, तब से आप माता विहीन रह जाने के कारण आप पर पिताजी का प्रेम अधिक बढ़गया था, साथ ही पिताजी आप को लालनकाल से गणित विद्या भी सिखाते रहते थे, कुछ काल पश्चात् आप वहां एक उर्दू मदरसे में भरती हुए और एक लाला जी से अल्पकाल में ही यथेष्ट उर्दू पढ़

ली थी। तत्पश्चात् आप के पिताजी ने आप को हिन्दी संस्कृत साहित्य की ओर लगाया और १६ वर्ष की आयु तक आप वहां ही इधर उधर संस्कृत के छोटे मोटे पुस्तक पढ़ते रहे, परन्तु यह समय स्वर्गवासी स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के उदय काल का था तदनुसार आपने फर्रुखाबाद में उच्च श्रेणी की एक संस्कृत पाठशाला खुलवायी थी उस की प्रशंसा सुन कर आप पठनार्थ विक्रम संवत् १९२९ के प्रारम्भ में फर्रुखाबाद पहुंच कर स्वामी जी की पाठशाला की अष्टाध्यायी श्रेणी में भरती हुए आप वहां कुल सवा चार वर्ष पढ़े परन्तु तीन वर्ष के काल में उस पाठशाला में तीन पंडितों की अदला बदली हुई इस असुविधा को देख कर आप अपने दो तीन सहपाठियों सहित काशी जाने के विचार से उद्यत हुए परन्तु ज्योंही पाठशाला के स्वामी सेठ निर्भयराम को यह समाचार ज्ञात हुवा त्यांही उन्हों ने स्वामी दयानन्द जी की आज्ञा की प्रतीक्षा न कर के मथुरा से विद्या मार्तण्ड पं० उदयप्रकाश जी को बुला लिया। श्री पं० उदयप्रकाश जी स्वामी दयानन्द जी के सहपाठी और सनातन धर्म्मी थे! जिन के यहां शुभागमन से आपने एक वर्ष में ही महाभाष्य, माघकाव्य, सस्वर वेद पाठ, पिंगल सूत्राष्टाध्यायी और चन्द्रालोक अलंकार आदि ग्रन्थों की सम्यक्पूर्ति कर ली थी अब पं० भीमसेन जी के मुख्य विद्या गुरु स्वर्गवासी पण्डित उदयप्रकाश जी कहे जा सकते हैं तथा अनेकांशों के उपदेश गुरु स्वामी दयानन्द सरस्वती जी थे।

इस के पश्चात् पं० भीमसेन जी पढ़ने के लिए काशी चले गए और वहां तीन विद्वानों से आपने १ वेदान्त (ब्रह्ममीमांसा) २ पूर्व मीमांसा और ३ न्याय दर्शन ये तीन ग्रन्थ पढ़े। इतने ही में स्वामी दयानन्द जी भी बनारस पहुंच गए और उन्होंने लक्ष्मीकुण्ड पर अपना प्रेस खोल कर उसका नाम वैदिकयन्त्रालय रक्खा और तदर्थ दो हज़ार रुपये प्रेस को चलाने के निमित्त एक सेठ के यहां जमा करा कर स्वामी दयानन्द जी ने प्रेस मेनेजर बाबू बख्तावरसिंह जी की अपेक्षा अधिक विश्वास पात्र आप ही को जाना और प्रेस के अर्थ रुपैये पैसे निकालने व जमा करने कराने का सर्वस्व अधिकार स्वामी

दयानन्द जी ने पं० भीमसेन जी को दिया था और जब जब आप स्वामी जी के साथ रहे प्रायः भण्डारा की चाबी आप ही के हाथ रहा करती थी, इस ही काल में पंडित जी काशी में रोगग्रस्त हो गए और इन्हें अपने घर लौट आना पड़ा इतने ही में स्वामी दयानन्द सरस्वती जी भ्रमण करते हुये आगरे आये और इधर पं० भीमसेन जी अपनी जन्मभूमि में आने से अच्छे हो चुके थे अतः स्वामी जी ने इन्हें आगरे बुला लिया था तहां २५) मासिक वेतन पर लेखक कार्य्य पर आप की नियुक्ति हुई स्वामी जी के साथ साथ आप भरतपुर, जयपुर होते हुए अजमेर आ पहुंचे तहां कार्य्यवश आपने स्वामी जी से छुट्टी मांगी पर छुट्टी न मिलने के कारण आप रुष्ट हो कर चले आए इन दिनों स्वामी जी का प्रेस काशी से उठ कर प्रयाग आ गया था तहां स्वामी जी के लिखने से पं० भीमसेन जी संशोधन कार्य्य करने के लिये पुनः ३०) मासिक पर यहां बुला लिये गए।

इस के पश्चात् फिर स्वामी दयानन्द जी ने आप को अपने पास बुला लिया सो आप शाहपुरे मसूदे, जोधपुर, होते हुए उदयपुर पहुंचे तहां स्वामी जी के साथ आप का कुछ बिगाड़ हो गया और आप अपने घर को चले आये, परन्तु कुछ काल के पश्चात् पुनः आप स्वामी जी के पास गए यह समय स्वामी दयानन्द जी की अन्तिम बीमारी व इस असार संसार को सदा के लिए छोड़ने का महाकाल था, परन्तु स्वामी जी के अन्तिम समय तक आप उन के साथ रहे अन्त को सम्वत् १६४० में स्वामी दयानन्द जी के स्वर्गारोहणान्तर आप अपने घर आकर पुनः प्रयाग चले गए और निज का प्रेस खोल कर अपने गुरु स्वामी जी के मिशन को चलाने को उद्यत हुए, तदनुसार आपने आर्य्य सिद्धान्त नामक मासिक पत्र निकाला और अनुमान १५ वर्ष तक आप आर्य्य समाज की अच्छी सहायता करते रहे यहां तक कि स्वामी दयानन्द के सिद्धान्तों को पुष्ट करते हुए सनातन धर्म्मी हिन्दुवों के बड़े २ प्रबल प्रश्नों का समाधान संस्कृत और हिन्दी में छपाते रहे तथा बड़े बड़े गूढ़ विषयों पर मीमांसा करते रहे और इन के होते हुए आर्य्य समाज ने स्वामी दयानंद जी को मरा हुवा नहीं समझा था। इस

ही काल में आप ने नौ उपनिषद भगवद्गीता, मनुस्मृती तथा अष्टा- ध्यायी पर भाष्य कर के बड़ा उपकार किया और जहां कहीं बड़े बड़े शास्त्रार्थ आर्य्य समाज व सनातन धर्म्म सभा में बड़े महत्व के होने वाले थे, तहां भी समाजों की ओर से सब से प्रथम आप बुलाये जाते थे, आप को डी. ए. वी. कालिज से १००) मासिक की नौकरी मिलती थी पर आपने उसे अस्वीकार किया इस ही तरह आर्य्य समाजों में जब मांसपार्टी व घासपार्टी का झगड़ा हुआ तब भी आपने जोधपुर में जाकर विजय प्राप्त कियी थी, तब वहां भी आप को १००) मा- सिक मिलने को कहा गया था पर उस समय आपने उसे भी अस्वी- कार किया।

पाठक वृन्द !

आपकी जीवनी के सार को समझने व शिक्षा प्राप्त करने के लिये आपके जीवन में परिवर्तन करने वाली चार मुख्य घटनायें है उन्हीं चारों घटनाओं व महत्व पूर्ण जटिल प्रश्नों के उत्तर निकल आने पर यह सहज ही में समझ में आजायगा कि इतने योग्य विद्वान के जीवन में सहसा इतना परिवर्तन क्यों हुआ ? वे चारों प्रश्न ये हैं –

१ आर्य्य समाजी क्यों व कैसे हुये ?
२ स्वामी दयानन्द जी के मत को क्यों छोड़ा ?
३ सनातन धर्म्मी क्यों हुये ?
४ आर्य्य समाज के विरोधी कैसे बन गये ?

इस प्रथम प्रश्न के उत्तर में पं० भीमसेन जी शर्म्मा का कहना यह है कि " दैव योग से १६ वर्ष की अवस्था से ही स्वामी दयानन्द के संग में हम पड़ गये उन्हीं के विचारों को बाल्यावस्था से सुना, जाना, उन्हीं की पाठशाला में पढ़े, उन्हीं का मत सुना इस कारण स्वामी दयानन्द जी के अनुयायी बने " *

* नोट:—जैसा कि हम पूर्व लिख आये हैं पं० भीमसेन जी स्वामी जी के पास लेखक व प्रेस में संशोधक भी २५) तथा ३०) मासिक पर

द्वितीय प्रश्न का उत्तर पं० भीमसेन जी यह देते हैं कि जब हमें व्याकरण, काव्य धर्म शास्त्रादि का कुछ कुछ बोध हुवा तभी से हमें स्वामी दयानन्दजी के मत में अनेकों सन्देह होनेलगे थे, इस ही कारण स्वामी दयानन्द जी के सहवास के समय अनेक बार उनकी शास्त्र विरुद्ध बातों का खण्डन से स्वामी दयानन्द जी के साथ हमारी खट पट होती रही, ऐसा होने पर भी हम यह मान्ते रहे कि यद्यपि स्वामी दयानन्द जी का मत स्मृति पुराणादि से विरुद्ध है तथापि वेदानुकूल होना सम्भव है, और वेदानुकूल है ऐसा विश्वास करके ही हम स्वामी दयानन्द जी के मत की सहायता करते रहे यद्यपि वेद को पढ़े समझे बिना ही हमने स्वामी दयानन्द जी के मत को वेदानुकूल मान लिया यह हमारी भूल थी। परन्तु चूरू निवासी सेठ माधवप्रसाद जी खेम का मंत्री आर्य्य समाज चूरू ने आप* से ४०००) रुपैयों के व्यय से यज्ञ करवाने की प्रार्थना कियी उसको स्वीकार करके तीन वर्ष तक आप* अनुसन्धान करते रहे कि यज्ञ का वास्तविक स्वरूप क्या है! इस ही अनुसन्धान में हमें निश्चय हुवा

---

बहुत समय तक रहे थे अतः ऐसा भी सम्भव हो सक्ता है कि आप स्वामी दयानन्द जी के अनुयायी नौकरी के लालच से ही बन गये हों तथा स्वामी जी का जो प्रायः जगह जगह व्याख्यान व शास्त्रार्थादि के अनन्तर धनादि द्वारा सत्कार होता रहता था तो यह भी सम्भव है कि आपको भी उन के सहवास से कुछ भेट पूजा मिलती रहती होगी अथवा स्वामी जी ही पंडित जी को वेतन के अतिरिक्त और भी कुछ देते लेते रहते होंगे यह ही कारण था कि पं० भीमसेन जी कई बार स्वामी जी के पास से चले आये और पुनः उन्हीं के पास फिर चले गये। अतः स्वामी जी के अनुयायी होने के ये कारण भी प्रतिष्ठित आर्य्य सामाजिक भाइयों ने हमें बतलाये हैं—कदाचित इन के आर्य्य समाजी होने का यही कारण हो? [ * 'हम' होना चाहिये-मुद्रक ]

यथार्थ में बड़े बड़े नामांकित व प्रतिष्ठित आर्यसमाजियों से अन्वेषण करने पर पंडित जी महाराज के आर्य्य समाज से अलग होने का कारण जो ज्ञात हुआ वह यह है कि " अग्निष्ठोम यज्ञ में आटे के मेषा मेषी (मेंढा मेंढी) बना कर इन पर ऊन लगवा कर यज्ञ में होम कर दिये थे तथा एक चन्द्रदत्त नामा विद्यार्थी जिस के साथ पंडित जी अपनी कन्या का सम्बन्ध करना चाहते थे उसे इस यज्ञ से अनुमान १०००) का माल, दिलाने की इच्छा से यज्ञ में मृतक श्राद्ध व पिंडदान करवाया अतः इन दोनों कृत्यों को इन्हीं पं० भीमसेन जी के शिष्य पं० ब्रह्मानन्द जी ने आर्य्य समाजिक वैदिक सिद्धान्त के विरुद्ध हिंसा परत्व कर्तव्य बतला कर शंका किये पर पंडित जी ने उस का प्रत्युत्तर नहीं दिया और टालमटोल बतला दिया तब पं० ब्रह्मानन्द ने यह सब वृत्तान्त आर्य्यमित्र नामक अखबार में छपवा कर पं० भीमसेन जी से उत्तर चाहा, फिर भी उत्तर नहीं मिला और यह चर्चा गर्मा गर्म फैलती ही चली गयी जिस के परिणाम में मान्यवर पं० भीमसेन जी व स्वर्गवासी स्वामी तुलसीराम का शास्त्रार्थ आगरे में हुवा जिस के प्रतिफल में, व इस हिंसा कांड की अपकीर्ति को मिटाने के अभिप्राय से पं० भीमसेन

---

धर्म के पोषक व जातियों के इतिहास लेखक तथा जाति निर्णय करने वाले हैं अतः हमें आर्य्य समाजी बतलाना पंडित जी की नितान्त भूल है। हां जो कुछ हमने लिखा है, वह हिन्दी साहित्य के नाते व ऐतिहासिक दृष्टि से निर्भीक भाव रखते हुये उपकार बुद्धि से लिखा है यद्यपि आर्य्य समाज से हमारा तनिकसा भी सम्पर्क नहीं है तथापि गुणी के गुणों की प्रशंसा करना व वैरी के भी गुणों को कृतज्ञता स्वरूप में प्रकट कर देना हम अपना परम कर्त्तव्य समझते हैं अतएव हम मुक्तकण्ठ से कहते हैं कि इस विक्रम सम्वत् १६०० की शताब्दी में लोक हितकारी वेदों का प्रचारक, संस्कृत विद्या का उत्तेजक तथा पृथिवी भर के मत मतान्तरों से टक्कर लेकर वेदों का महत्व बढ़ाने वाला भारत माता का सुपूत स्वामी दयानन्द सरस्वती का जैसा न कोई हुवा और न होगा, यह दूसरी बात है कि स्वामी दयानन्द के व हमारे सनातन हिन्दूधर्म के कतिपय सिद्धान्तों में मत भेद कुछ अवश्य है।

जी ने सन् १६०३ के दिल्ली दरबार में अपनी भूल स्वीकार किया, इस की चर्चा कुछ न्यून व अधिक तथ्य व अतथ्य आर्य्य सामाजिक अखबारों में फैली जिस से रुष्ट होकर आप सदा के लिये कट्टर सनातनी बन गये मानों भारत वर्ष भर के सनातन धर्म का दारमदार एक मात्र आप ही के इन शुभ दो कान्धों पर है अथवा हिन्दू धर्म की नय्या के पार लगाने वाले एक मात्र आप ही हैं, बाकी अन्य सब सनातन धर्मी सनातनी नहीं हैं, अस्तु !

परन्तु यज्ञ से पशुओं का होमना मांस मदिरा खाने पीने वाले वाममार्गियों का सिद्धान्त है न कि सनातन धर्म व आर्य्य सामाजिक वैदिक धर्म का, अतएव पंडित जी के इस कर्त्तव्य में हिंसा का समावेश तो हो ही गया था हां पंडित जी कल्पित आटे के मेंढा मेंढी व वाममार्गियों के मेंढा मेंढियों में यदि कुछ अन्तर था तो केवल इतना ही अन्तर था कि पं० भीमसेन जी के मेंढा मेंढी आटे के बनाये व ऊन लगे हुये जीव रहित होमे गये थे तो वाममार्गियों के साक्षात जीवित मेंढा मेंढी मांस लोहू व चर्बी सहित होमे जाते हैं, वाम मार्गियों के इस कर्त्तव्य में यथार्थ में हिंसा हुई तो पंडित जी के इस कर्त्तव्य में केवल हिंसा का संकल्प मात्र हुआ, अथवा नकल अवश्य हुयी। अस्तु ! बात वही हुई कि एक ने सीधी तरह से नाक पकड़ी तो दूसरे ने घुमा फिरा कर नाक पकड़ी।

यही मृत पितरों के पिण्डदान की बात सो भी हिन्दू व आर्य्य पबलिक भले प्रकार से जानती है कि पं० भीमसेन जी ने इन विषयों पर एक दो बार नहीं किन्तु सौ पचास बार सम्यक् प्रकार से विचार किया होगा और तदनुसार ही आप ने अपने आर्य्य सिद्धान्त मासिक पत्र द्वारा अनेकों बार सनातन धर्मियों के प्रश्नों के उत्तर दिये हैं, तथा सनातनियों के पेश किये हुये वेद मंत्रों के अर्थ भी अनेकों ही बार बदलकर अपने पक्ष को समर्थन किया होगा किन्तु आर्य्य समाजों के समक्ष भूल स्वीकार किये हुये के प्रकाश होते ही तत्काल आप को स्वामी दयानन्द के मत में बड़ी २ भूलें प्रतीत हो गयीं और एक दम आप सनातनी बन गये, खैर ! सुबह का भूला हुआ सांझ को भी

कोई नहीं था, असह्य होते पर भी हम स्वामी दयानन्द के अनर्थ को सहते सुन्ते रहते थे" *

* नोट:— पाठक विचारिये तो सही पंडित जी के इस उपरोक्त दोनों लेखों का क्या भाव है ? अर्थात् पंडित भीमसेन जी के विचारों में स्वामी दयानन्द जी एक मूर्ख मनुष्य थे, वे पंडित भीमसेन की जितनी भी संस्कृत नहीं जान्ते थे, क्या यह स्वात्म प्रशंसा नहीं है ? क्या हिन्दू व आर्य्य पबलिक इसको स्वीकार कर सक्ती है ? उपरोक्त प्रथम प्रश्न के उत्तर में पृष्ठ ५२१ में ( ऐसे ही ) मोटे टाइप में दिखला आये हैं कि वहां तो पंडित जी स्वामी दयानन्द के मत को वेदानुकूल मान्ते हैं तो यहां स्वामी दयानन्द को अर्थ का अनर्थ करने वाले बतलाते हैं तथा उस अनर्थ के ज्ञाता भी आप बनते हैं तो यह परस्पर विरुद्ध कैसा ? एक स्थान में दो तलवार कैसीं ? खैर। पुनः आप यह भी ऊपर कह रहे हैं कि " यद्यपि वेद पढ़े समझे बिना ही हमने स्वामी दयानन्द के मत को वेदानुकूल मान लिया था यह हमारी भूल थी" परन्तु इस ही के विरुद्ध आप चतुर्थ प्रश्न के उत्तर में स्वामी दयानन्द के अर्थ के अनर्थ को समझने वाले भी एक मात्र आप ही बन्ते हैं परन्तु जब आप वेद ही नहीं पढ़े व समझे थे तब स्वामी दयानन्द के अर्थ को अनर्थ आप कैसे कह सके हैं ? खैर वेतन के लालच से व रुपैये के लोभ से आप स्वामी दयानन्द के अर्थ के अनर्थ को असह्य होने पर भी सहते रहे तो उन के मरने के १५वर्ष पीछे तक आप पर किस का व क्या दबाव था ? जो आप स्वामी दयानन्द के अर्थ के अनर्थ को ही पुष्ट करते रहे ? और स्वरचित ग्रन्थों पर" स्वामी दयानन्द सरस्वती स्वामिना शिष्येण" ऐसा क्यों लिखते रहे ? क्या यह सब कृत्य लोभवश नहीं था ? अथवा हिन्दू व आर्य्य पबलिक को धोका देने की इच्छा से ऐसा किया गया था ? जब स्वामी जी के अर्थ के अनर्थ को आप पहिले ही से जान्ते थे तो स्वामी दयानन्द के मरने के १५ वर्ष पीछे तक आप उस अनर्थ को कैसे पुष्ट करते हुये सनातन धर्मियों को क्यों सताते रहे ? और हमारे परम पूजनीय हिन्दू धर्म्म के नेता ब्राह्मणों की गर्दनों पर आप कैसे आरा चलाते रहे ?

यह सब कुछ जो ऊपर कहा गया है यह तो पंडित भीमसेन जी के स्वहस्त लेखों पर तर्क वितर्क कर के विचार किया है परन्तु अब

---

पाषाणादि मूर्तिपूजन, मृतक श्राद्ध एक स्त्री के ११ पति तक का समर्थन और परम पावनी गंगा का कैसे खंडन करते रहे ? दुःख के साथ कहना पड़ता है कि "नौ सौ चूहे खाकर बिल्ली हज्ज को चली" ठीक इस ही तरह आज पंडित भीमसेन जी पक्के सनातनधर्मी बनते हैं और सत्य कहने व लिखने वाले को आप आर्य्यसमाजी बतलाते हैं सो कैसे ? जब हमने आप की जीवनी लिखकर आप के अवलोकनार्थ भेजी तो उसे देख कर आप बड़े बिगड़े और अपने कार्ड ता० १२-६ १५ के द्वारा आपने हमें समाजी मत के तथा स्वामीदयानन्द के पक्षपाती बतलाया, अस्तु ! परन्तु यह पंडित जी का भ्रममात्र था क्योंकि स्वामी दयानन्द जी का वैदिकप्रेस व वैदिकप्रेस कमैटी हम से इत-ना द्वेष रखती है कि हमारे मंडल के पुस्तक व कागज़ादि छपाई पर छापकर देना तो दूर रहा हमारे ग्रन्थों को कटाई लेकर Cutting Machine कटिंग मैशीन द्वारा काट कर देने से ही दूर भागती है इस आर्य्य सा-माजिक संकीर्णता का विवर्ण हम पूर्व लिख आये हैं वहां देख लेना चाहिये अतएव हमें आर्य्यसमाजी समझना भी पंडित जी की भूल है क्योंकि अंधे को अंधा कहना यद्यपि सत्य है तथापि यह कथन उसे रुचिकर न होगा तैसे ही हमारे जाति अन्वेषण प्रथम भाग में "आर्य्य जाति" की व्याख्या को देख कर जहां अनेकों आर्य्य समाजियों ने पत्र लिख कर हमें सत्यप्रकाशन का धन्यवाद दिया है और हमारे साथ सहानुभूति प्रकट किये, व कर रहे हैं, तैसे ही कतिपय संकरी बुद्धि के आर्य्य समाजी, व स्त्रियों के इच्छुक आर्य्य समाजी, व नौकरियों के कारण आर्य्य होने वाले आर्य्य समाजी, तथा हरिया नाय की तरह से हरिये उपदेशक, हरिये मास्टर, हरिये क्लार्क, हरिये प्रेस मैनेजर, और हरिये अध्यापक आदि आदि आदि अदूरदर्शी महा-त्मा गण हम से बहुत द्वेष करते हैं इस द्वेष का मुख्य कारण यह है कि आज कल अधिकांश आर्य्यसमाजी लोग वर्णाश्रम व जाति पांति को बिलकुल उठा ही देना चाहते हैं उस के विपरीत हम वर्णाश्रम

यथार्थ में बड़े बड़े नामांकित व प्रतिष्ठित आर्यसमाजियों से अन्वेषण करने पर पंडित जी महाराज के आर्य्य समाज से अलग होने का कारण जो ज्ञात हुआ वह यह है कि " अग्निष्टोम यज्ञ में आटे के मेषा मेषी ( मेढा मेढी ) बना कर उन पर ऊन लगवा कर यज्ञ में होम कर दिये थे तथा एक चन्द्रदत्त नामा विद्यार्थी जिस के साथ पंडित जी अपनी कन्या का सम्बन्ध करना चाहते थे उसे इस यज्ञ से अनुमान १०००) का माल, दिवाने की इच्छा से गया में मृतक श्राद्ध व पिण्डदान करवाया अतः इन दोनों कार्यों को स्वर्गीय पं० भीमसेन जी के शिष्य पं० ब्रह्मानन्द जी ने आर्य्य समाजिक वैदिक सिद्धान्त के विरुद्ध हिंसा परक कर्तव्य बतला कर शंका लिखी पर पंडित जी ने उस का प्रत्युत्तर नहीं दिया और टालमटोल बतला दिया तब पं० ब्रह्मानन्द ने यह सब वृत्तान्त आर्य्यसिद्ध नामक अखबार में छपवा कर पं० भीमसेन जी से उत्तर चाहा फिर भी उत्तर नहीं मिला और यह चर्चा गर्मा गर्म फैलती ही चली गयी जिस के परिणाम में नान्दवर पं० भीमसेन जी व स्वर्गवासी स्वामी तुलसीराम का शास्त्रार्थ आगरे में हुआ जिस के प्रतिफल में व इस हिंसा कांड की अपकीर्ति को मिटाने के अभिप्राय से पं० भीमसेन

---

धर्म के पोषक व जातियों के इतिहास लेखक तथा जाति निर्णय करने वाले हैं अतः हमें आर्य्यसमाजी बतलाना पंडित जी की नितान्त भूल है। हां जो कुछ हमने लिखा है, वह हिन्दी साहित्य के नाते व ऐतिहासिक दृष्टि से निर्भीक भाव रखते हुये उपकार बुद्धि से लिखा है यद्यपि आर्य्य समाज से हमारा तनिकसा भी सम्पर्क नहीं है तथापि गुणी के गुणों की प्रशंसा करना व वैरी के भी गुणों को कृतज्ञता स्वरूप में प्रकट कर देना हम अपना परम कर्तव्य समझते हैं अतएव हम मुक्तकण्ठ से कहते हैं कि इस विक्रम सम्वत् १९०० की शताब्दी में लोक हितकारी वेदों का प्रचारक, संस्कृत विद्या का उत्तेजक तथा पृथिवी भर के मत मतान्तरों से टक्कर लेकर वेदों का महत्व बढ़ाने वाला भारत माता का सुपूत स्वामी दयानन्द सरस्वती का जैसा न कोई हुआ और न होगा, यह दूसरी बात है कि स्वामी दयानन्द के व हमारे सनातन हिन्दूधर्म के कतिपय सिद्धान्तों में मत भेद कुछ अवश्य है।

घर वापिस आजावे तो वह भूला हुआ नहीं समझा जाता है ठीक वैसे ही पं० भीमसेन जी को संवत् १९५५ व ५६ में यानी ५५ वर्ष की आयु में यह सूझी कि स्वामी दयानन्द का मत वेद विरुद्ध और सनातन धर्म्म वेदानुकूल है अतः आप सनातन धर्म्मी हो गये लोगों को ऐसा ही निश्चय हुआ है, यदि अब हम आप को पक्का सनातन धर्मी ही मानें तो जो ५५ वर्ष की आयु तक आपने सनातन हिन्दू धर्म के देवी देवता प्रतिमा पूजन, मृतक श्राद्ध, गंगा स्नानादि तीर्थ यात्रा आदि आदिकों की निन्दा कर पेट करके जो लाखों हिन्दुओं के जी दुखाये हैं उस सब का प्रायश्चित्त पंडित भीमसेन जी ने क्या किया जिस से हम उन को सनातन धर्म्मी निस्सन्देह रूप से मान सकें यह ही हमें सन्देह है ?

पाठक वृन्द ! यह तो हुई पंडित जी की सामाजिक व धार्मिक अवस्था की चर्चा परन्तु इस के साथ साथ हम को छिद्रान्वेषिणी न हो कर के पंडित जी की विद्या बुद्धि और चातुर्यता से हमें शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये क्योंकि आप के सदृश विद्यानुरागी वेद को समझने वाले सदाचारी व विचक्षण विद्वान भारत में कोई कोई विरले ही मनुष्य होंगे अतएव हम अन्तः करण से आप को धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सके क्योंकि सन् १९५६ से वर्तमान सम्वत् १९७२ तक अर्थात् सोलह वर्ष से लगातार आप सनातन हिन्दू धर्म की सेवा कर रहे हैं जिस के प्रतिफल में संवत् १९१२ ईसवी के जुलाई मास से कलकत्ता विश्वविद्यालय के एम. ए. क्लास में २५० रुपैये मासिक पर उक्त पंडित भीमसेन जी शर्म्मा वेद व्याख्याता के पद पर सुशोभित हैं अतएव हम कह सके हैं कि भारत के संस्कृतज्ञ विद्वानों में सर्वोच्च पद प्राप्ति का सौभाग्य आप को ही मिला है आप के दो चिरंजीव सुपुत्र हैं, एक ब्रह्मदेव शर्म्मा ज्येष्ठ और वेदनिधि शर्म्मा कनिष्ट ये दोनों भी सदाचारी अधीत शास्त्र योग्य विद्वान हैं। हम आशा करते हैं कि आप लोग भी अपने पिता जी के सदृश देशोपकारी कार्यों में संलग्न रहेंगे । आज विक्रम सम्वत् १९७२ में पंडित भीमसेन जी ६१ वर्ष की आयु में होते हुये नम्बर १३८।२ हैरिसन रोड कलकत्ता में निवास करते हुये यदि

दिन विश्वविद्यालय में वेद का व्याख्यान करके छात्रों को शिक्षा दे रहे हैं ।

हम को दुःख के साथ कहना पड़ता है कि जिन आर्य्यसमाजों की पंडित जी ने ४५ वर्ष की आयु तक सहायता की, उन पंडितजी के साथ आर्यसमाजों ने कृतघ्नता स्वरूप में वैमनस्य बढ़ाकर अपने ही पैरों में कुल्हाड़ी मारली । कारण यह है कि सदैव से आर्य्यसमाजों में ब्राह्मणों का पलड़ा बहुत ही कमज़ोर व बाबू लोगों का तथा अन्य जातियों के लोगों का पलड़ा सदैव से भारी चला आरहा है तथा बाबू पार्टी Babu Party and Brahman Party और ब्राह्मण पार्टी के विचारों में सदैव से ही अन बन चली आरही है अतः पंडित भीमसेन जी शर्म्मा ब्राह्मण थे इसलिये उन का निर्वाह समाजों में सदा के लिये कब होसक्ता था ? आजकल तो बाबू पार्टी का और भी ज़ोर है और ब्राह्मण पार्टी एक कोने में घुसती चली जारही है कारण यह है कि सामाजिक ब्राह्मण पार्टी में विशेषता उन्हीं ब्राह्मणों की है जो घूम फिर कर हरिया बछी गाय की तरह से कोई हरिये से उपदेशक, कोई हरिये प्रेस मैनेजर, व कोई हरिये पंडित अनाथालयों व स्कूलों में तथा प्रेसों में काम करते हैं, तात्पर्य्य यह है कि उन विचारों को कोई न कोई धन्धा बाबू पार्टी के ही हाथ के नीचे करना पड़ता है ऐसी दशा में वे बाबू पार्टी के समक्ष क्या कह व कर सक्ते हैं ? अर्थात् कुछ भी नहीं । ऐसी स्थिति में पंडित भीमसेन जी, सरीखे अगाध विद्वान आजकल की बाबू पार्टी की हां में हां क्यों मिलाते ? अतएव पंडितजी का समाजों से पृथक हो जाना अच्छा ही हुआ, अस्तु ! भगवान आप को दीर्घायु करे जिस से हिन्दु जाति का कल्याण हो यही हमारी अन्तिम वासना है क्योंकि आपका जीवन ब्राह्मण सन्तान के लिये अनेकांशों में अनुकरणीय और आदर्श है । ओं शम् !

# सनाढ्य वंश भूषण

## पंडित जयदेव प्रसाद जी शर्मा

आप का शुभ जन्म मिती श्रावण शुक्ला ६ सोमवार संवत् १९२९ में विप्रवंशावतंस पण्डित राधाचरण के गृह में हुआ था आप के पिता जी यथा नाम तथा गुण ही थे अर्थात् आप ऐसे भगवद्भक्त थे कि आप का बहुकाल भक्ति मार्ग में ही जाता था आप ही के पुत्र उपरोक्त पंडित जी हैं, परन्तु काल चक्र की गति अति प्रबल है तदनुसार जब आप ६ वर्ष के थे आप की माता सदा के लिये आप को छोड़कर इस असार संसार से गमन कर गयीं थीं अतः आप का पालन पोषण आप की भूआ द्वारा गोवर्धन में हुआ था, पर जब आप १५ वर्ष के हुये आप के पिता जी आप को अपने ग्राम बल्देव जी में ले आये और आपका यज्ञोपवीत बड़े उत्साह व वेदोक्त विधि के साथ कराया गया था कुछ काल तक आप के पिता जी आप को अमरकोषादि पढ़ाते रहे पश्चात् पठन पाठन के लिये आप वृन्दावन चले गये तहां स्वल्प काल में ही आप ने व्याकरण, न्याय और काव्यादि पढ़कर एक अच्छी योग्यता प्राप्त कर लियी आप के विचार सदैव से अति पवित्र व निर्मल थे तदनुसार आपने वहां १९ वर्ष तक अवैतनिक अध्यापन का कार्य्य किया जिस के प्रति फल में आपने अनेकों विद्यार्थियों को परोपकार दृष्टि से पढ़ाकर योग्य विद्वान बना दिये आज कल आप अपनी जन्म भूमि श्री बल्देव जी की श्री बल-भद्र संस्कृत पाठशाला में अध्यापकी का कार्य्य कर रहे हैं तथा वहां के निवासियों को प्रायः सन्मार्ग प्रवृत्ति का उपदेश करते रहते हैं आप श्री निम्बार्क मतावलम्बि वैष्णव हैं, विरक्त हैं, सौम्य हैं तथा धर्म्म कार्य्यों में भाग लेते रहते हैं, कर्म्म काण्ड व छूत छात के विषय

में जैसा हम ने इन को एक सच्चा वैष्णव पाया दूसरा हमारे देखने में ऐसा नहीं आया, अतः भगवान आप को सदैव आनन्दित रक्खे जिस से ब्राह्मण जाति आप के जीवन व आचरणों का अनुकरण कर के लाभ उठावें ।

---

( तृतीय )

### पं० गंगावल्लभ जी आगरा

आप स्वर्गगामी पं० बांके बिहारीलाल जी तहसीलदार के पुत्र हैं इन का आदि स्थान सांठ जिला मथुरा था परन्तु अब अनुमान तीन सौ वर्ष से आप आगरे में विराजते हैं आप का जन्म मास दिसम्बर सन् १८६० को हुआ था अपनी बाल्यावस्था में आप एक तीव्र बुद्धि और होनहार बालक थे कालेज तक की शिक्षा प्राप्त कर के आप रेलवे में २०) रुपैये मासिक पर नकल नवीस हुये थे परन्तु Railway Service रेल की नौकरी की अपेक्षा सरकारी नौकरी के विशेष इच्छुक थे तदनुसार सन् १८८० में १०) रुपैये मासिक पर जूडीशीयल मुहर्रिर नियत हुये और सन् १८८५ तक के पांच वर्ष में आप ३०) रुपैये मासिक पर पहुंच गये, सन् १८८६ में ५०) रुपैये मासिक पर आप नायब तहसीलदार हो गये, सन् १८८९ में आप ६०) रुपैये मासिक पर पहुंच गये, और सन् १८९२ में तीन वर्ष के पश्चात् ही आप प्रथम श्रेणी के नायब तहसीलदार ७५) रुपैये मासिक पर होगये, चार वर्ष के पीछे सन् १८९७ में आप स्थानापन्न तहसीलदार १११) रु० मासिक पर होगये फिर चार वर्ष के पश्चात् सन १९०१ में आप १५०) रुपैये मासिक पर पक्के तहसीलदार होगये ।

देश हित, देश सेवा, और स्वजाति हित चिन्तकता से आप सदैव आर्द्र रहा करते थे तदनुसार सन १८८७ में आपने वहां गौ-रक्षिणी सभा स्थापित कराई सन १८९७ और १९०३ के बीच के समय में जब आप कालपी में थे पबलिक से चन्दा कर के अनेकों प्राचीन मन्दिर व मसजिदों का जीर्णोद्धार कराया।

सन् १९०३ में पेन्शन लेकर आपने अपने शेष जीवन को लोकोपकारी कार्य्यों में लगाना चाहा था कि इतने ही में आप को सिरोही दरबार से न्याय विभाग में उच्च पद प्रदान किया गया परन्तु लोकोपकारी कार्य्यों के सन्मुख आपको यह अपना स्वार्थ त्यागना पड़ा और आप को स्वजाति सेवा की सूझी और सनाढ्य जाति के उन्नत्यर्थ आपने भरसक प्रयत्न किया जिस के प्रतिफल में सनाढ्य जाति ने आप को स्वजाति रत्न समझा तदनुसार आप सनाढ्य महामंडल के अवैतनिक मंत्री नियत हुये विधवा सहायक परोपकारणी सभा आगरा के आप उपसभापति नियत हुये, जिस संस्था द्वारा आज ६० वा ७० सदाचारिणी विधवाओं का पालन पोषण हो रहा है।

इस के अतिरिक्त "सनाढ्योपकारक" मासिक पत्र के अवैतनिक सम्पादक व प्रबन्धकर्त्ता भी आप ही हैं, आपने अपनी राज भक्ति द्वारा "सनाढ्योपकारक" को Press act प्रेस एक्ट की जमानत से बचाया सन् १९११ से आप बराबर सनाढ्य मंडल का कार्य्य कर रहे हैं और आज कल आपने ही ब्राह्मण हाईस्कूल आगरा की नीव लगाई है अतएव ऐसे महापुरुषों का जीवन धन्य व अनुकरणीय है।

पाठक! धनाऽभाव से हम आप की विस्तृत जीवनी व फोटो न दे सके अतः क्षमार्थी हैं।

---

**३०४ सर्यूपारी** :—यह पश्चिमोत्तर प्रान्त की एक ब्राह्मण जाति है ये लोग कान्यकुब्ज सम्प्रदाय में से हैं. ये कहीं सर्जूपारी कहीं सर्यूपारी और कहीं सरवरिया ब्राह्मण कहाते हैं. यह नाम सर्यूनदी के किनारे वास करने से पड़ा है इस सर्यू नदी के नाम कई हैं यथा :—

देविका घर्घरा चैव सुपुराया सर्यूस्तथा ।
एतानि पुराय तीर्थानि हिमाद्रेः संप्रसुब्रुः ॥

अमर० कां० १ श्लो० ३६

अर्थात् देविका, घाघरा तथा सर्जू ये तीनों नाम एक ही हैं कारण ये हिमालय पर्वत से निकल कर पर्वत पर ही इन का संगम होगया है पुनः :—

सरय्वाश्चोत्तरे तीरे सारवम् लोक विश्रुतम् ।
ततः सर्वाः समुत्पन्नाः सारवा सम्प्रकीर्तिता ॥

सर्यू नदी के उत्तर तीर को लोक में सारव कहते हैं अतः उस पार के निवासी ब्राह्मणों की भी सारव संज्ञा हुयी अतएव इन्हीं का नाम सारवावारीण भी हुआ । इन के नामार्थ से भी सर्यूनदी के पार बसने वाले ब्राह्मण ऐसा भावार्थ निकलता है ।

**३०५ सप्तशति ब्राह्मण** :—यह बंगाल के ब्राह्मणों की एक जाति है इस का शब्दार्थ ऐसा माना जाता है कि सातसौ ब्राह्मण, यह " सप्तशत " का अपभ्रंश सप्तशति होगया है सन् ६०० ईस्वी में जब राजा आदि सुर ने यज्ञ किया था तब राजा ने युक्त-प्रदेश से ब्राह्मण विद्वानों को यज्ञ करने बुलाये थे कारण ये लोग वहां नीच श्रेणी के अपठित ब्राह्मण थे जो महेशपुर व नदिया के जिले में विशेष रूप से हैं पं० पांडोबा गोपाल जी अपने जाति

निबंध के पृष्ठ ८० में लिखते हैं कि ये लोग मांस मदिरा खाने पीने वाले हैं इन को लोग वहां बड़ी ओछी निगाह से देखते हैं अतः ये लोग अपनी जाति का नाम बतलाने में भी परहेज करते हैं जैसे युक्त प्रदेश में माहोर लोग अपना नाम माहोर से बदलकर मथुरिया कहने कहाने लगगये हैं तैसे ही ये लोग भी प्रायः अपने को राढ़ी ब्राह्मण बतलाते हैं । उस देश में इन ब्राह्मणों की जाति मर्य्यादा साधारण सी है इन में का विशेष समुदाय वाममार्ग को लिये हुये है, विद्यास्थिति भी इन की साधारण सी है ।

**३०६ सवालाखे** :—यह एक ब्राह्मणों की जाति है इन का समीपी सम्बन्ध सरवरिये ब्राह्मणों से बताया गया है इन के विषय में जा० भे० वि० सार नामक पुस्तक के पृष्ठ ७८ में ऐसा लिखा है कि " माधोगढ़ में राम नामक राजा था उस ने एक यज्ञ करना आरम्भ किया तहां यज्ञार्थ भोजनादि कार्य्य के लिये सवा लाख ब्राह्मणों की आवश्यक्ता हुयी तब सवालाख ब्राह्मण न मिलने के कारण जो अनेक जाति के लोग यज्ञ दर्शनार्थ आये थे उन्हें जनेऊ पहिनाकर ब्राह्मणों के साथ भोजन करा दिया तिस से इन का नाम सवालाखे पड़ा, ये कन्नौजियों की एक शाखा है इन का शरीर सम्बन्ध कन्नौजियों के साथ होता है ये लोग नीच श्रेणी में माने जाते हैं ये लोग रुपैया खरच करके कहीं कहीं सरवरियों के यहां विवाह सम्बन्ध भी करने लगे हैं, इस ही जाति के दूसरे लोग कहीं गंगापुत्र कहीं गयावाल व कहीं प्रयागवाल कहाते हैं इन के सम्बन्ध अन्य ब्राह्मणों के साथ नहीं होते हैं" इन का जातिपद व मान मर्य्यादा साधारण सी है ।

**३०७ सवाशे** :—यह महाराष्ट्र ब्राह्मणों की जाति का एक भेद है ये मध्य श्रेणी के कहाते हैं ये लोग व्यापार करते हैं और धन धान्य से पूरित हैं ये देशस्थ समुदाय में से हैं यह नाम

शुद्ध शब्द "सहवास" से बिगड़ कर बना है अर्थात् नीच जाति की स्त्री के साथ सहवास करने से ये सहवासी या सहवासे कहाते कहाते सवाशे कहे जाने लगे। माइसोर मनुष्यगणना रिपोर्ट पृष्ठ २२५ से इन के सम्बन्ध में ऐसा पता लगता है कि "पूर्व काल में एक ब्राह्मण को एक गुप्त धन का पता लगा परन्तु उसे बिच्छू दृष्टि आने लगे, तब आश्चर्य से उस ने एक बिच्छू पकड़कर अपने घर के सामने लटका दिया, इस के कुछ ही काल पश्चात् एक नीच जाति की स्त्री उस मार्ग से निकली और उस की दृष्टि इस बिच्छू पर पड़ी जो यथार्थ में सोने का था, उस स्त्री ने इस सब का कारण उस ब्राह्मण से पूछा तब उस ने सब कुछ उसे बतलाकर उस के साथ ब्याह कर लिया और फिर दोनों ने उस धन की प्राप्ति कर लिया तब इस की प्रसन्नता में उन्होंने एक ब्रह्मभोज बड़ी दक्षिणा सहित दिया, लोगों ने उसे नीच जाति की स्त्री के साथ विवाह कर लेने के कारण जाति से पतित कर दिया और दूसरे उस के साथियों को बन में रहना पड़ा अतएव इन का नाम सवाशे पड़ा"।

जा० भे० वि० सार नामक मरहाटी ग्रन्थ के पृष्ठ १०६ में जो कुछ लिखा है उस का व इस उपरोक्त लेख का भावार्थ तो मिलता है अर्थात् वह महाराष्ट्र ग्रन्थकार लिखते हैं कि एक देशस्थ ब्राह्मण एक चमार की अति रूपवती युवा लड़की पर मोहित होगया और उस के साथ विवाह कर लिया पुनः उसे धन प्राप्त हुआ और उसने लोभ देकर धोके से ब्राह्मणों को जिमा दिया जिस से इन का नाम सवासा पड़ा।

२०८ सांचोरा :—यह गुजराती ब्राह्मणों की एक जाति है सांचोरा एक ग्राम है तिस से इन का नाम सांचोरा पड़ा है ये लोग प्रायः सेवा वृत्ति नौकरी आदि करते रहते हैं।

**३०९ साठोदरा** :—यह गुजराती नागर ब्राह्मणों का एक भेद है गुजरात में सठोर एक गांव नर्मदा के किनारे है इन में कुछ ऋगवेदी ब्राह्मण भी हैं परन्तु शाखा इन की शुक्ल यजुर्वेद की माध्यन्दिनी है इन का मुख्य निवासस्थान आनन्द, अहमदाबाद, नदियाद और दवोई आदि हैं, इन में से कुछ लोग व्यापार करते हैं जो शेष भिक्षुक यानी गुरू हैं ये लोग प्रायः स्मार्त सम्प्रदायी हैं।

**३१० सान्नोदकी** :—पंजाब की यह एक ब्राह्मण जाति है, इन ब्राह्मणों की लोक संख्या कांगड़ा ज़िले में विशेष है, लोगों ने इस जाति को बहुत ही सामान्य स्थिति के ब्राह्मण बतलाये हैं, क्योंकि इन लोगों की मुख्य जीवन वृत्ति मृतक की मासिक श्राद्ध तिथि पर जीमना अर्थात् महीने की महीने होते खाना मात्र है, उधर इस कर्म्म को उच्च ब्राह्मण समुदाय नहीं करता है। कोई कोई विद्वान इस जाति को सन्यासी ब्राह्मण भी कहते हैं। इन की विद्या स्थिति व कर्म धर्म ब्राह्मणों के ही हैं। इस नाम का भावार्थ तो ऐसा प्रतीति होता है कि वह ब्राह्मण समुदाय जो एक साथ जल व अन्न का दान लेता है वह सान्नोदकी कहाया। ये लोग खान पान से शुद्ध होते हैं। कुछ लोगों का ऐसा भी कहना है कि ये लोग सापिण्डी में अभ्यागत की जगह जीमते हैं परन्तु इस का खंडन भी विश्वासनीय श्रोत द्वारा किया गया है अतएव यह द्वेषी समुदाय का कथन होने से मिथ्या प्रतीति होता है क्योंकि ये शुद्ध ब्राह्मण हैं।

**३११ स्मार्त** :—यह द्रविड़ ब्राह्मणों की एक जाति का भेद है ये लोग प्रायः शैव सम्प्रदायी ब्राह्मण हैं इन में कोई बहुत थोड़े ही शाक्तिक हैं ये लोग शंकराचार्य्य के श्रृंगेरी मठ के शिष्यानुवर्गी हैं इन के दो भेद हैं वैदिक स्मार्त और लौकिक स्मार्त, वैदिक स्मार्त वे कहाते हैं जिन का सर्वस्व कर्म वेदों पर ही निर्भर है और जो लौकिक हैं वे अपने साधारण ब्राह्मण वृत्ति से कार्य्य चलाते हैं इन

में लौकिकों की अपेक्षा वैदिकों की मान प्रतिष्ठा अधिक है परन्तु इन दोनों का परस्पर खान पान व विवाह सम्बन्ध बेरोक टोक होता रहता है। इन स्मार्त ब्राह्मणों का प्रसिद्ध कुल नाम " आयर " हैं, इन में दो प्रसिद्ध पदवियें हैं अर्थात् जिन के कुल में कभी कोई यज्ञ हुआ है वे दीक्षित कहाते हैं और बाकी शंकराचार्य्य सम्पदायी लोग शास्त्री कहाते हैं इन की चार श्रेणियें हैं।

१ वर्मा
२ बृहच्चारन
३ अष्ट सहस्र
४ संकेट

इन में वर्मा ब्राह्मणों के भी ५ भेद हैं यथा :—

१ चोला देस
२ वर्मा देस
३ सवायर
४ जवाली
५ एन्जे

इन पांचों का परस्पर खान पान एक है परन्तु विवाह सम्बन्ध एक नहीं स्वर्गवासी मत्तूस्वामी आयर जो कि मद्रास हाई कोर्ट के माननीय जज थे वे भी बर्मादेस ब्राह्मण थे ये केवल जज ही नहीं थे किन्तु सम्पूर्ण बातों में एक दीर्घ दर्शी विद्वान थे जिन की मृत्यु पर चीफ जस्टिस साहब ने अपने भाषण में इनका शोक इस प्रकार प्रकट किया था :—

" We are assambled here to express our very great regret at the loss we have sustained by the death of Sir T. Muttu Swami Ayar. His death is undoubtedly a loss to the whole Country and the Crown. A profound Hindu Jurist, a man with very execellent knowledge of English laid, with very great Strength of mind possessing that most useful quality in a Judge, Common sense; he was undoubtedly a great Judge, very unassuming in manners, he had great strength of mind and Independense of charactor, his judgements

हुयी तब जो ब्राह्मण इस देश में पैदा हुये वे सारस्वत ब्राह्मण कहाये और ये सारस्वत ब्राह्मण ही आदि ब्राह्मण हैं क्योंकि :—

सारस्वता कान्यकुब्जा गौड़ाः मैथिल उत्कला ।
पञ्चगौड़ समाख्याता विन्ध्यस्योत्तर वासिना ॥

स्कन्द पुराण सह्याद्रि खंडे

अर्थात् सारस्वत, कान्यकुब्ज, गौड़, मैथिल और उत्कल इन की पञ्चगौड़ संज्ञा हुयी । अर्थात् जहां ब्राह्मण गिनाये हैं वहां सब से पहिले सारस्वत शब्द आया है अतएव सब से आदि ब्राह्मण सारस्वत हैं ऐसा सिद्धान्त निकलता है क्योंकि ये लोग उस समय में महा विद्वान थे यथा :—

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशा दग्र जन्मना
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्व मानवा ॥ मनु० ॥

अर्थात् इस सारस्वत देश के ब्राह्मण ऐसे विद्वान थे कि पृथिवी भर के मनुष्यों को इन्होंने सम्पूर्ण विद्यायें सिखायीं । और येही सम्पूर्ण क्षत्रियों के राजगुरु व पुरोहित हुये क्योंकि :—

सारस्वतास्तु ये विप्राः क्षत्रिया णांपुरोहितः ।

भविष्योत्तरे

इस से भी सिद्ध होता है कि आदि ब्राह्मण सारस्वत हैं और क्षत्रियों का भी आदि स्थान यही सारस्वत देश था क्योंकि वैवस्वत मन्वन्तर की १९वीं त्रेता द्वापर की सन्धि में जब परशुराम जी ने पृथिवी को निःक्षत्रिय किया तो कुरुक्षेत्र (दिल्ली) में पांच तलाव खून के भराये थे जिसे आज " समन्त पञ्चक तीर्थ " कहते हैं अतएव क्षत्रियों का आदि स्थान भी पंजाब प्रदेशान्तर्गत सारस्वत देश ही था ।

ये लोग जीविकावश भिन्न २ शहरों में जाकर बसने लगे और वहां अपने २ शहर के नामानुसार थोक कहलाने लगे जैसे मुलतान के मुलतानिये, सिरोर के सिरोरिये, गुजरात के गुजरातिये आदि आदि ।

एक महाराष्ट्र देशीय विद्वान की ऐसी सम्मति है ।

" सारस्वत ब्राह्मण- हे लोक उत्तर हिंदुस्थानांत सर्व ठिकाणीं आहेत हीजात दुसऱ्या ब्राह्मण पेक्षा पुरातन आहे । तरी त्यांस दुसरी जातीचे ब्राह्मण लोक मत्स्य व मांस आहारी म्हणून नीच मानितात व त्यांचे बरोबर अन्नोदकाचा व्यवहार ही ठेवीत नाहींत "

जा० भे० वि० सा० पृ० ७६

अर्थः—सारस्वत ब्राह्मण- ये लोग उत्तरी हिन्दुस्तान ( पंजाब ) में सर्वत्र पाये जाते हैं और सम्पूर्ण ब्राह्मणों से पुरातन हैं अर्थात् आदि से ब्राह्मण ये ही हैं ये लोग मत्स्य मांसादि खाते हैं अतएव दूसरे ब्राह्मण लोग इन का भोजनादि करने से घृणा करते हैं तथा ये लोग क्षत्रियों के यहां का पक्का कच्चा भोजन करते हैं परन्तु हम देखते हैं कि यद्यपि यह कुरीति इस जाति में है तथापि बहुत से सारस्वत ब्राह्मण इन अभक्ष्य वस्तुओं का व्यवहार त्यागते जाते हैं और युक्त प्रदेश में आकर अपने में की कुप्रथाओं को दूर करते जाते हैं अतः सब ही एक से भी नहीं हैं ।

पुनः- एक बंगाली योग्य विद्वान ऐसा लिखते हैं कि:—

The Saraswats were divided into only two Sub castes namely the Banjais and the Mohyals.

( H. C. S: Page 55 )

सारस्वत ब्राह्मणों के दो भेद हैं १ बनजाई और २ मोहाल बामनजाई यह शब्द संस्कृत शुद्ध शब्द ब्राह्मण जयी का बिगड़कर बना है अर्थात्

संवत् १३४८ में दिल्ली के शाहनशाह अलाउद्दीन ने यह आज्ञा प्रचारित कियी थी कि " ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि उच्च जातियों को विधवा विवाह करना पड़ेगा । और जो न करेंगे वे दण्डित किये जावेंगे " इस आज्ञा का विरोध ५२ क्षत्रियों के कुलों ने किया और विजय प्राप्त कियी तब से उन क्षत्रिय वंशों की " बावन जयी " संज्ञा हुई जिस का बिगड़कर बावन जाई या बामन जाई हुआ यही बामन जाई भेद आजकल क्षत्रियों में अबतक बोंजाई आदि नामों करके प्रसिद्ध है । और जिन सारस्वत ब्राह्मणों ने अपने यजमान क्षत्रियों के साथ२ साथ२ धर्म्म विरुद्ध आज्ञा को नहीं मानी वे ब्राह्मण जयी या बामण जयी कहाये, क्योंकि सारस्वत ब्राह्मण क्षत्रियों के यहां की कच्ची रसोई पूर्व भी खाते थे और अब भी खाते हैं और अलाउद्दीन के समय सब एक साथ रहते थे उन का परस्पर दोनों कुलों का नाम बामन जाई होगया यानी बामन जायी क्षत्री भी हैं और सारस्वत ब्राह्मण भी हैं परन्तु बोंजाई यह शुद्ध शब्द " बाहुजयी " का बिगड़कर बना है अर्थात् वे क्षत्रिय जिन्होंने अपनी बाहु के बल से अलाउद्दीन की धर्म विरुद्ध आज्ञा पर विजय प्राप्त कियी वे बोंजाई क्षत्रिय कहाये ।

इस ही की पुष्टि में एक ग्रन्थकार लिखते हैं :—

The word Banjai seems to be a Corroupted from of the Sanskrit compound Bahu yaji which means a Brahmin who minister to many men. But the Saraswats Says that their common name Banjai is a Corroupted name of Bavanna jayi, which means the fifty two Victorious Clans ; and to account for the origin of this name they add they abtained this name by Setting at defiance an order of an Emperor of Delhi directing them to allow the remarriage of a widow.

( H. C. S. Page 55 Foot-note )

यह सांइन्स तत्व शास्त्र विद्या से पता लगता है कि भूकम्प के होने से सैकड़ों मील पृथिवी में नये २ मार्ग बनजाते हैं, बहुत से पदार्थ प्रायः लुप्त हो जाते हैं नदी व समुद्रों का जल भूकम्प के द्वारा सैकड़ों मीलों की दूरी पर उलट पुलट मार्ग ग्रहण कर लेता है जैसे चिल्ली के भूकम्प के विवर्ण को देखिये :—

बस इस ही तरह से जब सरस्वती का पता महाभारत में वैवस्वत मन्वन्तर की १६वीं त्रेता द्वापर की सन्धि में जब सरस्वती का पता लगता है तो विचार का स्थल है कि सरस्वती को बहते आज ७७ हज़ार वर्ष होगये तब इतने वर्षों में कितने भूकम्प हुये होंगे ? किन २ प्राचीन नामों का कितना २ अदल बदल हुआ होगा नदी व पर्वत अपने स्थानों से कहां तक हटे होंगे ये आप लोग अनुमान कर सकते हैं इसलिये सरस्वती का आदि स्थान पंजाब था और है यदि किञ्चित्तसा भेद हो तो हो भी सकता है अतएव पंजाब कश्मीर, सिंध व कुरुक्षेत्र ब्रह्मावर्त आदि देश की सारस्वत संज्ञा हुयी और उस देश के ब्राह्मण सारस्वत ब्राह्मण कहाये ।

पूर्वकाल में सरस्वती अति वेग से बहती थी यथा :—

एकाचेतत्सरस्वती नदीनां शुचिर्यती गिरिभ्यःआसमुद्रात्।
रायश्चेतन्ती भुवनस्य भूरेर्घृतं पयो दुदुहे नाहुषाय॥

ऋग० म० ७ सू० ६५

आयत्साकं यशसोवावशानाःसरस्वती सप्तथीसिन्धुमाता
याः सुष्वयंत सुदुघाः सुधारा अभिस्वेन पयसा पीप्यानाः

ऋ० मं० ६ अ०२ सू० ३७

इन मंत्रों में सरस्वती को सिंधुमाता कहा है अतएव यह पहिले बड़ी वेगवती पंजाब में थी उस ही से पञ्चनद निकला परन्तु बहुकाल के बीतने व मंदर आदि के फटने व भूकम्प आदिकों के होने से कदाचित सरस्वती की काया पलट जाना सम्भव है, जब ब्राह्मी सृष्टि

६५ चवो
६६ आलप
६७ आलपोत
६८ जयचंद
६९ टिट्टी
७० होले
७१ तिवाड़
७२ तिव ड़ी
७३ तहुंगा
७४ हंसधीर
७५ हाँसले
७६ लड्डुगल
७७ सूदन
७८ सुरन
७९ शालीवाहन
८० विरार
८१ लुब
८२ लाहद
८३ लकड़फाड़
८४ रति
८५ खितचोर
८६ चूनी
८७ ज्योतिषी
८८ ज्योति
८९ जठरे
९० टाड़
९१ उगवो
९२ त्रिगाणे
९३ तोले
९४ हरिये
९५ हरद
९६ सैर्जा
९७ सहजपाल
९८ संधी
९९ श्रीधर
१०० वरेवोतरे
१०१ वशिष्ठ
१०२ लालीवच्चे
१०३ लागड़िये
१०४ रमताल
१०५ चदन
१०६ चुखन
१०७ जल्ली
१०८ जलप
१०९ जघरे
११० टगले
१११ डंगवाल
११२ तेजपाल
११३ तोते
११४ हरी
११५ लद्दी
११६ संगर
११७ सनखोत्रे
११८ संगद
११९ श्रीढक्के
१२० व्यास
१२१ विनायक
१२२ रुद्र
१२३ लखनपाल
१२४ रतन्ये
१२५ चूड़ामन
१२६ छिव्वे
१२७ जेठक
१२८ जसख
१२९ झमान
१३० टखिक
१३१ ढंडे
१३२ तिनोनी
१३३ तिनमणी
१३४ हंसतीर
१३५ सुंदर
१३६ सांग
१३७ सोयरी
१३८ सोढी
१३९ शेतपाल
१४० विरद
१४१ वासुदेव
१४२ लद्दड़
१४३ रँगड़े
१४४ रूधंड़े
१४५ यशे
१४६ महे
१४७ मच्छ
१४८ मरुद
१४९ मज्जू
१५० मर्थी
१५१ भूत

ये लोग जीविकावश भिन्न २ शहरों में जाकर बसने लगे और वहां अपने २ शहर के नामानुसार थोक कहलाने लगे जैसे मुलतान के मुलतानिये, पिशोर के पिशोरिये, गुजरात के गुजरातिये आदि आदि ।

एक महाराष्ट्र देशीय विद्वान की ऐसी सम्मति है ।

" सारस्वत ब्राह्मण- हे लोक उत्तर हिन्दुस्थानांत सर्व ठिकाणी आहेत हीजात दुसऱ्या ब्राह्मण पेक्षा पुरातन आहे । तरी त्यांस दुसरी जाती चे ब्राह्मण लोक मत्स्य व मांस आहार मूळें नीच मानितात व त्यां बरोबर अन्नोदकाच व्यवहार ही ठेवीत नाहीत "

जा० भे० वि० मा० पृ० ७१

अर्थः—सारस्वत ब्राह्मण- ये लोग उत्तरी हिन्दुस्तान ( पंजाब ) में सर्वत्र पाये जाते हैं और सम्पूर्ण ब्राह्मणों में पुरातन हैं अर्थात् आदि से ब्राह्मण ये ही हैं ये लोग मत्स्य मांसादि खाते हैं अतएव दूसरे ब्राह्मण लोग इन का भोजनादि करने से घृणा करते हैं तथा ये लोग क्षत्रियों के यहां का पका कच्चा भोजन करते हैं परन्तु हम देखते हैं कि यद्यपि यह कुरीति इस जाति में है तथापि बहुत से सारस्वत ब्राह्मण इन अभक्ष्य वस्तुओं का व्यवहार त्यागते जाते हैं और युक्त प्रदेश में आकर अपने में की कुप्रथाओं को दूर करते जाते हैं अतः सब ही एक से भी नहीं हैं ।

पुनः- एक बंगाली योग्य विद्वान ऐसा लिखते हैं कि:—

The Saraswats were divided into only two Sub castes namely the Banjais and the Mohyals.

( H. C. S: Page 55 )

सारस्वत ब्राह्मणों के दो भेद हैं १ बनजाई और २ मोहाल बामनजाई यह शब्द संस्कृत शुद्ध शब्द ब्राह्मण जयी का बिगड़कर बना है अर्थात्

संवत् १३४८ में दिल्ली के शाहनशाह अलाउद्दीन ने यह आज्ञा प्रचारित कियी थी कि " ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि उच्च जातियों को विधवा विवाह करना पड़ेगा। और जो न करेंगे वे दण्डित किये जावेंगे " इस आज्ञा का विरोध ५२ क्षत्रियों के कुलों ने किया और विजय प्राप्त कियी तब से उन क्षत्रिय वंशों की " बावन जयी " संज्ञा हुयी जिस का बिगड़कर बावन जाई या बामन जाई हुआ यही बामन जाई भेद आजकल खत्रियों में बवनजा बोंजाई आदि नामों करके प्रसिद्ध है। और जिन सारस्वत ब्राह्मणों ने अपने यजमान क्षत्रियों के साथ लड़कर धर्म विरुद्ध आज्ञा को नहीं मानी वे ब्राह्मण जयी या बामन जयी कहाये, क्योंकि सारस्वत ब्राह्मण क्षत्रियों के यहां की कच्ची रसोई पूर्व भी खाते थे और अब भी खाते हैं और अलाउद्दीन के समय सब एक साथ रहते थे उन का परस्पर दोनों कुलों का नाम बामन जाई होगया यानी बामन जायी क्षत्री भी हैं और सारस्वत ब्राह्मण भी हैं परन्तु बोंजाई यह शुद्ध शब्द " बाहुजयी " का बिगड़कर बना है अर्थात् वे क्षत्रिय जिन्होंने अपनी बाहु के बल से अलाउद्दीन की धर्म विरुद्ध आज्ञा पर विजय प्राप्त किवी वे बोंजाई क्षत्रिय कहाये।

इस ही की पुष्टि में एक ग्रन्थकार लिखते हैं :—

The word Banjai seems to be a Corroupted from of the Sanskrit compound Bahu yaji which means a Brahmin who minister to many men. But the Saraswats Says that their common name Banjai is a Corroupted name of Bavanna jayi, which means the fifty two Victorious Clans ) and to account for the origin of this name they add they abtained this name by Setting at defiance an order of an Emperor of Delhi directing them to allow the remarriage of a widow.

( H. C. S. Page 55 Foot-note )

शब्द बमनजाई संस्कृत शब्द " वहुयाजी" से बिगड़कर बना प्रतीति होता है ।

( यह ग्रन्थकार महाशय का भ्रम है क्योंकि यह बामनजाई "वाहुयाजी" का अपभ्रंश नहीं है वरन वाहुजायी का है )।

परन्तु सारस्वत लोग ऐसा कहते हैं कि यह " बावनजायी " से बिगड़कर बना है अर्थात् धर्म्म विरुद्ध अलाउद्दीन की आज्ञा को उल्लंघन करके जिन ५२ क्षत्रिय कुलों ने विजय प्राप्त किये वे बामन जायी कहाये । और इन के पुरोहित सारस्वतों की भी यह ही संज्ञा हुयी ।

## इन बामन जाइयों के ये भेद हैं :—

| | | | |
|---|---|---|---|
| १ पराशर | १७ अग्निहोत्री | ३३ अंग्रफक | ४९ अचारज |
| २ नाद | १८ अल | ३४ अंगल | ५० आरी |
| ३ नाभ | १९ ईसर | ३५ ईसराज | ५१ रिषी |
| ४ प्रभाकर | २० परे | ३६ ओमे | ५२ कपाल |
| ५ नागर | २१ कुन्द | ३७ कलिन्द | ५३ कुसरित |
| ६ विन्दे | २२ कपाले | ३८ कुंड | ५४ कंडयारे |
| ७ धर्मी | २३ कलि | ३९ कायी | ५५ कल |
| ८ नारद | २४ कलहण | ४० कर्दम | ५६ कर्द्दम |
| ९ रथारे | २५ किरार | ४१ कोतवाल | ५७ कुरेतपाल |
| १० कुबेमर | २६ कलश | ४२ कुच्छ | ५८ कैजर |
| ११ दिड्रिये | २७ कोटपाल | ४३ कारडगे | ५९ काठपाल |
| १२ घाथी | २८ खट्वंग | ४४ खेती | ६० खोरे |
| १३ दगाले | २९ खिदड़िये | ४५ गंगाहर | ६१ गांदर |
| १४ तंगणवने | ३० गन्धी | ४६ गजेपु | ६२ गन्दे |
| १५ नगाले | ३१ गांधी | ४७ गुडेर | ६३ घोटके |
| १६ धंगपत्त | ३२ चनन | ४८ चित्रखोर | ६४ चून्नो |

| | | |
|---|---|---|
| १५२ भागत्रागी | १५३ पाधे | १५४ पाधि |
| १५५ पहोते | १५६ पन्व | १५७ ब्रम्मी |
| १५८ विजगाये | १५९ रत्तनपाल | १६० सुरवल |
| १६१ मेदद | १६२ मसोदरे | १६३ मोहन |
| १६४ भोग | १६५ भड़ोत | १६६ भाखाजी |
| १६७ पंजन | १६८ पलतू | १६९ थिपर |
| १७० पुष्करतन | १७१ भाहोने | १७२ विथड़े |
| १७३ मंडदर | १७४ मेहू | १७५ मंदहेर |
| १७६ मकावर | १७७ मागी | १७८ भटरे |
| १७९ भारथे | १८० पाल | १८१ पट्टू |
| १८२ पांढे | १८३ पठरू | १८४ ब्रम्हसुकुल |
| १८५ बन्नू | १८६ रनदेद | १८७ मधरे |
| १८८ कुपाल | १८९ मदरखम | १९० मैत्र |
| १९१ मंदार | १९२ भटैर | १९३ भाजी |
| १९४ मिटे | १९५ पुज | १९६ पुजे |
| १९७ पंटे | १९८ पठल | १९९ टोरे |
| २०० भाकरकोटे | | |

नोट :—यह सब भेद बाबू कृष्ण कुमार बमजाई सारस्वत ब्राह्मण ने लिखवाये हैं

सारस्वतों में १ उत्तम, २ मध्यम, ३ निकृष्ट, ४ निम्न, ५ अधम आदि कई श्रेणियें सुनी गयी हैं परन्तु हमने इन को नहीं मान कर इस विषय में कुछ नहीं लिखा है क्योंकि ये परस्पर द्वेष भाव पैदा करने वाली बातें हैं और स्वाभाविक पक्ष की अपेक्षा दूसरा और दूसरे की अपेक्षा तीसरा अपने को उत्तम बतलाता है और ऐसे ही परस्पर द्वेष युक्त शब्दों ने देश का नाश कर दिया। सारस्वतों में मुख्य ५ कुल हैं और उन प्रत्येक कुल के अलग २ कई भेद हैं।

## १ आद्यकुल की अढ़ाई घर के ५ भेदः—

१ मोहन्ते २ लेम्बा ३ झिंगन ४ जटेली ५ कुमड़िया।

## २ INFERIOR PAÑJ JATI.

## ॥ नीच पञ्चजाति ॥

१ फाजियां २ माजिया ३ कपूरिया ४ मंसूरिया ५ दर्गा ।

## ३ अष्टवंश

१ पाठक २ सोरी ३ तिवाड़ी ४ ललराज ५ ओनाबी ६ गोंद ७ कुर्मा
८ भारद्वाज ।

## ४ बरही ( बारह वंश )

| | | |
|---|---|---|
| १ काजिया | ५ नाग | ९ जगपाल |
| २ प्रभाकर | ६ चिमचोट | १० मार्गी |
| ३ लखनपाल | ७ नारद | ११ करानोजी |
| ४ पेरी | ८ लंगड़ | १२ मगार |

Inferior Banjai not comming within
the above groups.

## ५ नीच बनजाइयों के भेद जो उपरोक्त में से नहीं हैं

| | | |
|---|---|---|
| १ मेहरा | ५ मसलोज | ९ कंगुल |
| २ बासुदे | ६ मुदान | १० दहलार |
| ३ विजोरा | ७ सनक | |
| ४ रौंदे | ८ देरी | |

## ❀ गोत्र ❀

१ कुमड़ियों का गोत्र वत्स
२ जैतलों का गोत्र वात्स्य
३ झिंगण का गोत्र भारद्वाज
४ तिक्खे का गोत्र पाराशर
५ मोहले का गोत्र मुशल
६ लौडभ्रोओं का गोत्र गौतमस

७ बड़ा ओझा का गोत्र भारद्वाज

८ मोठ और<br>गुड़गीला } का गोत्र कौशिकस

९ बदर का गोत्र मुद्गलस

## ॥ प्रवर ॥

कुमड़ियों के पञ्चप्रवरः—१ भार्गव २ च्यवन ३ आप्नवान ४ और्व ५ जामदग्न्य।

जैतलियों के त्रिप्रवरः—१ आंगिरस २ गौतम ३ औशनस।

झिगण के त्रिप्रवरः—१ आंगिरस २ बार्हस्पत्य ३ भारद्वाज।

तिक्खे के त्रिप्रवरः—१ वसिष्ठ २ शक्ति ३ पराशर।

मोहले के त्रिप्रवरः—१ काश्यप २ अवत्सार ३ नैध्रुव।

नोटः—१ कुमड़िये २ जेतली ३ तिक्खे और ४ झिंगण इन चार कुलों का चार घर नाम भी है।

पुनः पांच भेद और एक सज्जन ने आगरे में बतलाये थे उन के नाम ये हैं:—

१ लुमड़िये २ पेनली ३ मोहले ४ पिक्खे और ५ पिंगण।

कुमड़ियों का एक भेद "खलखिच" कुमड़िया भी है कहते हैं कि बादशाह के दिवान ने एक बुढ़िया की इन्दे की रोटियें लेलियी थीं इस लिये बादशाह ने अपने दिवान की खाल खिचवा लियी तभी से खलखिच कुमड़िये कहाये।

## राजपूताने में सारस्वतों की ये खांपे हैं:—

१ लोढ़ ओझा २ बड़ा ओझा ३ गुड़गील ४ बदर ५ मोठ।

मारवाड़ में लोढ ओझा शंकरलाल के पास राज्य की तरफ से मंगसर सुदी २ संवत १५४६ का एक तांबापत्र है।

एक तांबापत्र श्रीपत के बेटे रिखबदेव जी ओझा के पास था इस दोनों का मर्माश यह है कि:—

सदा पुरोहित सेवड़ा, ओझा सेवग लोड़ ।
भट्ट मथेरण भट्वा धुर जाचक राठौड़ ॥

अर्थात् ओझे सेवग जोड, भट्ट मथेरण और भट्वा ये राठौड़ क्षत्रियों के आदि से पुरोहित व सेवग हैं। *

सारस्वत ब्राह्मणों में पान बिठाने के समय चांद श्रीदनी को घी पिलाते हैं बाकी सब रीति भांति अन्य द्विजों की सी है।

## ॥ खांप ॥

सारस्वतों की खांपें १५२ हैं परन्तु हमें अनेकों विद्वानों की सम्मति द्वारा २४८ खांपों का पता लगा है यथा :—

नं० १

| | | | |
|---|---|---|---|
| १ शारद | ५ काठ | ९ मिरट | १३ गच्चमे |
| २ लमनोज | ६ लई | १० मुकाती | १४ मदोते |
| ३ खेज | ७ धंटके | ११ रजोहर | १५ मिश्र |
| ४ संढ | ८ श्रौधर | १२ लाहर | १६ मैते |
| १७ मदोहे | २१ वाधले | २५ दजादजिये | २९ नाके |
| १८ मटोहें | २२ अरधियाज | २६ पटरू | ३० तोढ़ी |
| १९ मटरे | २३ अटोक | २७ पन्याज | ३१ धानिक |
| २० मकड़े | २४ मसूल | २८ पण्डित | ३२ दगर |
| ३३ झुम्मुटिंया | ३७ चिरणोज | ४१ गदोतरे | ४५ काजिये |
| ३४ झीज | ३८ झक्षोतर | ४२ सपड़ोदिये | ४६ कुम्मेटदे |
| ३५ दहाये | ३९ जंजरेइये | ४३ चिश्रमे | ४७ कमारोटे |
| ३६ होसे | ४० झुमाज | ४४ वंधिवल | ४८ मजे |

* See Marwar Census Report Page 197

नं० २

| | | |
|---|---|---|
| ५० डोगरे | ५४ सरमायी | ५७ पाधेदंदिये |
| ५१ पाधे | ५५ डुबे | ५८ पाधेघोड्ढलिये |
| ५२ ढोल | ५६ पाधे खिंदड़िये | ५९ खजूरिये |
| ५३ पालवैये | ५८ लखन पाल | ६० लडूरिये |

नं० ३

| | | | |
|---|---|---|---|
| ६१ मगोतरे | ६५ वैद्य | ६९ वंसवाल | ७३ डरवुआल |
| ६२ केसर | ६६ जब | ७० मोहन | ७४ बडयाल |
| ६३ नाद | ६७ दपे | ७१ छिब्बर | ७५ खजूरे प्रोहित |
| ६४ जट | ६८ ठपपे | ७२ पालिये | ७६ सपोलियेपाधे |

नं० ४

| | | | |
|---|---|---|---|
| ७७ भ्रंघोत्रे | ८३ सतोत्रे | ८४ पुरोन्न | ९० सपोत्रे |
| ७८ करोत्रे | ८४ भंगोत्रे | ८५ विल्हानोच | ९१ सुधालिये |
| ७९ कश्मीरीपंडित | ८५ यवगोत्रे | ८६ ललोत्रे | ९१ सुदाथिये |
| ८० केगिये | ८६ बनालपाधे | ८७ रैणा | ९२ पन्धोत्रे |
| ८१ मरैड | ८७ घड़ | ८८ मसोत्रे | ९३ महिते |
| ८२ टगोत्रे | ८८ पाराशर | ८९ मिश्र | |

नं० ५

| | | | |
|---|---|---|---|
| ९४ कटियाल् | १०६ गराढ़िये | ११८ पृथिवीपाल | १३० घरिभ्रोच |
| ९५ कर्नाठिये | १०७ घोड़े | ११९ पजाधू | १३१ भरंगोल |
| ९६ कुड़िद्दब्य | १०८ चम्म | १२० पंगे | १३२ भलोच |
| ९७ कश्री | १०९ चरगाट | १२१ फीनफण | १३३ भैनजरे |
| ९८ कमलिये | ११० जर | १२२ बगनापाल | १३४ भूरिये |
| ९९ फौड़े | १११ जरंघाल | १२३ वसनोते | १३५ भूत |
| १०० कुन्दन | ११२ जरड़ | १२४ बरात | १३६ मुघडे |
| १०१ ठपाधे | ११३ जस्रोत्रे | १२५ घड्कुलिये | १३७ मरोत्रे |
| १०२ उद्हिल | ११४ जजोत्रे | १२६ पिंघड़ | १३८ मगडोल |
| १०३ उत्रियाल | ११५ घछियाले | १२७ पटल | १३९ मनगोत्रे |
| १०४ कलन्द्री | ११६ चकोत्रे | १२८ नभोत्रे | १४० मणढियालिये |
| १०५ किरले | ११७ चन्दन | १२९ घमानिये | १४१ माथर |

| | | | |
|---|---|---|---|
| १४२ कानूनगो | १४९ जम्बे | १५७ थाली | १६६ धुधाद |
| १४३ कालिये | १५० झनगोत्रे | १५८ धनोत्रे | १६७ धयादो |
| १४४ कफनखो | १५१ झिम्बड़ | १५९ ग्रहिये | १६८ भूरे |
| १४५ खडोलू | १५२ भलू | १६० घरगोतू | १६९ लमोत्रे |
| १४६ खपोते | १५३ भावड़ | १६१ घच्छन | १७० लबंदे |
| १४७ खिचड़ियें | १५४ भापाडू | १६२ घटिदालिये | १७१ लम्बनपाल |
| १४८ गौड़पुरोहित | १५५ ठकुरे | १६३ धघोत्रे | १७२ लाहड़कन |
| * | पुरोहित | १६४ धट्टल | १७३ रेड़ायिय |
| * | १५६ डडोरिया | १६५ बिसगोत्रे | १७४ गोड़ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| १७५ रतनपाल | १८१ दुहाल | १८७ गन्धरपाल | १९३ गहिये |
| १७६ रजूनिये | १८२ दव्य | १८८ गल्दाल | १९४ सगदोल |
| १७७ रजूलिये | १८३ धन्मथ | १८९ गंकुलिये अगारे | १९५ सुक्त्रे |
| १७८ यंत्रधारी | १८४ थमनोत्र | १९० गुड्डे | १९६ सूदन |
| १७९ मच्छर | १८५ तिरपद | १९१ गुडलिये | १९७ ज्ञांत्र |
| १८० मखोत्र | १८६ डडोरिया | १९२ गरोत्र | * |

| | | |
|---|---|---|
| १९१ सर्लूण | २०२ सिंगाड़ा | २०६ सगाहोत्र |
| १९९ सिरसड़िये | २०३ सुथड़े | २०७ सेनहसन |
| २०० सुर्नचाल | २०४ सरमायी | २०८ सुहड़िये |
| २०१ सांगड़ा | २०५ सरोच | २०९ सोल्हे |
| * | * | २१० सागुथिये |

नं० ६

| | | |
|---|---|---|
| २११ वेद्वे | २१५ कुन्डु | २१९ दाड्गो |
| २१२ मिश्रकश्मीरी | २१६ पंचकरण | २२० पंडितकश्मीरी |
| २१३ दीक्षित | २१७ सोत्रि | २२१ ओसदि |
| २१४ मदिहाटी | २१८ नाग | २२२ आचारिये |

नं० ७

| | | |
|---|---|---|
| २२३ मैते | २३२ घावुड़ | २४१ खजूरे |
| २२४ पाधेखजूरे | २३३ छुतवन | २४२ चीगु |
| २२५ पनयालू | २३४ गलवड़ | २४३ रुक्खे |
| २२६ गुडरे | २३५ खरवध | २४४ पाधे |
| २२७ डुम्मू | २३६ चजपाले | २४५ महिते |
| २२८ घिष्टपोत | २३७ डेहोडी | २४६ पस्यर |
| २२९ मंगरूड़िये | २३८ प्रोतजड़दोट | २४७ डांगम.र |
| २३० पाधेसरांज | २३९ रांटिये | २४८ चियू |
| २३१ भनवाज | २४० रम्ने | ० |

## ❀ कुरीति ❀

The Baranjai are Saktik not only eat flesh but drink wine.

( H. C. S. Page 57 )

बावन जाई लोग शाक्त धर्मी होते हैं और मांस ही नहीं खाते वरन शराब भी पीते हैं।

A Saraswat Brahman cannot marry in his clan. But a marriage may take place within the Gotra, though such matrimony is strictly prohibited by the Shastras. ( H. C. S. P. 56 )

सारस्वत लोग अपने कुल में तो विवाह नहीं करते पर एक ही गोत्र में विवाह कर लेते हैं ऐसा विवाह शास्त्र द्वारा निन्दनीय है।

## सिंधी सारस्वत

All these classes* of Saraswatas are Sukla Yajurvedi. In using animal food they abstain

* १ श्रीधर २ बारह ३ बावन जाई ४ सीतापजास और ५ फयचंद।

from that of the Cow & tame fowls but eat sheep goats, deer, wild birds of most species and fish killed for them by others. They also eat onions and other Vegitables forbidden in the Smirties.

Wilson's Hindu Castes Vol. II P. 137. 138.

ये सब पांचों तरह के सारस्वत शुक्ल यजुर्वेदी हैं ये लोग मांसादि के सम्बन्ध गौ और पले हुये मुर्गी को छोड़कर हिरन, भेड़, बकरी तथा नाना भांति के जंगली पक्षी और दूसरों की मारी हुयी मछलियें तथा कांदा लहसुन आदि धर्म्म शास्त्र विरुद्ध खाते पीते हैं।

They are Generally inattentive to their Sectarian marks. They shave the crowne of their heads, but have two tufs above their ears.

ये लोग अपनी बिरादरी की चाल ढाल रीति भांति की कुछ परवाह न करके सिर की हजामत करवाते हैं तो कानों के ऊपर दो गुच्छे बालों के रख लेते हैं।

**३१३ सिखवाल** :—यह गौड़ सम्प्रदाय में छन्याति ब्राह्मणों की एक जाति है इन की लोक संख्या थोड़ी है विशेषतया ये लोग राजपूताने में हैं, लिखा है :—

**शृंगि पुत्रः पञ्चमोऽस्माच्छिखवाला द्विजातय।**

मा० मा० पृ० ४४६

अर्थात् पांचवां पुत्र शृंगी ऋषि था जिन की सन्तान सिखवाल ब्राह्मण कहायी ये लोग आचार विचार से शुद्ध हैं मांसादि अभक्ष्य पदार्थों के खाने की तो कथा स्पर्श व दर्शन मात्र में भी पाप समझते हैं इनकी विद्या स्थिती जयपुर में अच्छी है अन्यत्र साधारण सी है।

**३१४ सिंधी** :—यह ब्राह्मणों की जाति का देश परत्व भेद है पंजाब व सिंध की सीमायें मिली जुली ही हैं अतः सिंधी ब्राह्मणों में विशेष भाग सारस्वत ब्राह्मणों का ही है इन के पांच मुख्य भेद हैं यथा :—

१ श्रीकर २ धारडी ३ बावन जाई ४ शेटपाला और ५ कवचंदा ।

ये सब मांसाहारी ब्राह्मण हैं इन में वैश्नवों की संख्या तो बहुत ही न्यून है शेष विवर्ण "शेटपाला" जाति स्थम्भ में लिख आये हैं तहां देख लेना ।

३१५ सीहोरिया औदिच्य :—यह औदिच्य ब्राह्मणों की एक जाति है सीहोर नगर गुजरात में है तहां के निकास से ये सीहोरिये कहाये ।

३१६ श्रीमाली :—यह ब्राह्मणों की एक जाति है इन के विषय में स्कन्दपुराण कल्याण खंड में बहुत कुछ लिखा है तथा इन के सम्बन्ध में और भी बहुत सी सामग्री एकत्रित किथी है वह सब यहां स्थानाभाव से न लिख कर सूक्ष्म रूप से लिखते हैं हां सारांश मात्र सब ले लिया है ।

शिवजी ने गौतम जी को एकान्त तपस्या करने के लिये अर्बुदारण्य की वायव्य दिशा में अम्बक सरोवर बतलाया और उस का नाम गौतमाश्रम हुआ फिर विश्वकर्मा ऋषि ने वहां विशाल विशाल भवन निर्माण किये तब ब्रह्माजी ने वरदान दिया यथा :—

ततः श्रीमाल नाम्नातु लोके ख्यातमिदं पुरम्।
इति दत्वा वरं देव्यै तस्थुर्ब्रह्मादि देवतः ॥ ६४ ॥

स्कान्दे कल्याण खण्डे

अर्थात् ब्रह्माजी ने वर दिया कि हे देवी ! देवतावों की विमान माला से यह स्थान व्याप्त हुआ है अतः इस का नाम लोक में श्रीमाल क्षेत्र होगा । इस क्षेत्र में लक्ष्मी जी ने जिन ब्राह्मणों का पूजन किया वे श्रीमाली ब्राह्मण कहाये यहां विष्णु ने यह वर दिया है कि :—

श्रीरस्य जगतोमूलं देवानांच हितैषिणी ।
तस्यास्तुये द्विजामान्या स्तेभ्यो नाभ्यधिका भुवि ११

स्कान्दे

अर्थ :-इस जगत में जो श्रीमाली ब्राह्मणों की पूजा करेंगे उन की कामना हम पूरण करेंगे क्योंकि इन से अधिक कोई नहीं है।

बंगाल के प्रसिद्ध विद्वान बाबू योगेन्द्रनाथ जी एम. ए. डी. एल. अपने ग्रन्थ के पृष्ठ ६६ में इन के विषय ऐसा लिखते हैं कि :-

The Srimalis have a very high position wheather regarded from a religious or secular point of view. They minister as priests not only to the Srimali Baniyas, but to all the higher castes including the Brahmans of other classes.

धार्मिक व सामाजिक दोनों ही अवस्थावों को देखते हुये श्रीमाली ब्राह्मणों का पद बहुत ही उच्च है ये केवल श्रीमाली बनियों ही के यहां की वृत्ति नहीं करते हैं वरन सम्पूर्ण उच्च जातियों के यहां भी, यहां तक कि सम्पूर्ण प्रकार के ब्राह्मणों के यहां भी इन का मान्य होता है।

हम ने प्रायः देखा है कि राजपूताने के प्रसिद्ध ब्राह्मण १ श्रीमाली २ मेवाड़ा ३ पल्लीवाल ४ गौड़ ५ गूर्जरगौड़ ६-७ दाहिमा ८ खंडेलवाल ९ पारीख १० पोकरना ११ सांचोरा १२ देवास १३ सिखवाल १४ असोपा और १५ वागड़ा आदि आदि हैं इन सब की विद्यास्थिती विवेश कर के वेद विद्या स्थिती में सर्वोच्चपद हम ने इन्हीं श्रीमाली ब्राह्मणों का पाया अर्थात इन सब प्रकार के ब्राह्मणों में प्रायः वेद विद्या का अभाव पाया अर्थात् इन में कथा भागवत टेवा जन्म पत्री आदि के जानने वाले तो कई मिले परन्तु रुद्री दंडक व संहिता के जानने वाले हमें एक दो ही मिले यह ही नहीं यज्ञ में कुशकण्डिका कर्म के जानने वाले तो इन उपरोक्त ब्राह्मणों में हमें एक भी नहीं मिले परन्तु इन श्रीमाली ब्राह्मणों में प्रायः रुद्री दंडक तथा संहिता व कुश कंडिका कर्म के जानने वाले हमें कई मिले अतएव राजपूताने के ब्राह्मणों में हम भी इन को उच्चतम पद देते हैं।

प्राचीन इतिहास व शिला लेखों से श्रीमाल क्षेत्र का पता लगता है

श्रीमाल क्षेत्र

कि आज कल श्रीमाल का नाम भीनमाल है जिस के विषय में मिस्टर विल्सन प्रोफेसर मुम्बई ने अपने नियन्ध जिल्द दूसरी के पृष्ठ १०६ से १११ तक में भी श्रीमाल का दूसरा नाम भीनमाल लिखा है कि पहिले श्रीमाल एक नगर था उस ही को आज कल भीनमाल भी कहते हैं जो लूनी नदी व आबू के उत्तर पश्चिम के बीच में है।

Colonel Mr. Todd कालोनियल मिस्टर टाड अपने राज्यस्थान के इतिहास जिल्द २ के पृष्ठ ३३२ में लिखते हैं कि:—

Bhinmal is said to contain fifteen hundred houses very wealthy Mahajans or merchants used to reside here.

अर्थात् भीनमाल में पन्द्रह हज़ार बड़े धनाढ्य लक्ष्मीपात्र महाजनों के घे जो यहां रहा करते थे। पंडित हरिकृष्ण वेंकट राम जी ने अपने ग्रन्थ के पृष्ठ ६७ में धनवानों के घरों की संख्या एक लाख असठ हज़ार लिखी है पुनः—

आसीनेषु द्विजेन्द्रेषु तस्थौ लक्ष्मीश्च तत्पुरः।
अष्टोत्तर सहस्रस्य पद्मानां हेम मालिनां ॥ २२ ॥
दत्तां जलाधिपेनैव मालां वक्षसि बिभ्रती।
विशालेषु दलौघेषु दंपति प्रति बिम्बते ॥ २३ ॥

स्कान्दे

अर्थात् उस भिंडमाल ( भिनमाल ) प्रसिद्ध नाम श्रीमाल नगर में सब ३५००० ब्राह्मण बुलाये गये थे उनमें जो सर्व श्रेष्ठ थे उनके लिये वरुण देवता ने एक हज़ार आठ सुवर्ण कमल की माला दियीं और

वहां नाना प्रकार के गौदान, अन्नदान तथा सुवर्ण दान दिये गये थे उस प्रभाव से यह नगर इतना धनाढ्य होगया था कि बड़ी बड़ी लूट मार हो चुकने पर भी लाखों धनाढ्य घर होने की अपेक्षा १५००० धन कुवेरों के घरों का वहां होना टाड साहब ने भी लिखा है यही कारण है कि उस का नाम श्रीमाल रक्खा गया जिस का अर्थ भी ऐसा होता है कि श्री कहिये धन जहां मालोमाल होरहा है वह नगर श्रीमाल कहाया।

इस ही भीनमाल को कवियों ने भिल्लमाल भी लिखा है यानी सिरोही राज्यान्तर्गत कायद्रा के प्राचीन जैनमन्दिर में विक्रम सम्वत

शिला लेख

१०११ के शिला लेख में भिनमाल को कवियों ने भिल्लमाल भी लिखा है यथा :-

**श्री भिल्लमाल निर्यातः प्राग्वाटो वणिजांवरः ।**

इस आधारानुसार ऐसा सिद्धान्त निकलता है कि जब मारवाड़ व सिरोही में भीलों का राज्य हुआ तब इस भिनमाल का नाम भिल्लमाल होगया होगा।

Epigraphica Indica Vol IX P. 70 एपीग्राफिका इन्डिका जिल्द ९वीं के पृष्ठ ७० के लेखानुसार सूंधामाता चाहमान चाचिगदेव के विक्रम सम्वत १३१९ के शिला लेख से भी निश्चय होता है कि भिनाल का राजा भीमदेव हुआ था जिस ही के नाम पर इस क्षेत्र का नाम भिनमाल व भिल्लमाल होगया।

इन ब्राह्मणों के प्राचीन गोत्र भी कई है इन के विषय में कई लेख

गोत्र

मिले है यथा :—

| | | |
|---|---|---|
| १ सनकस | ५ वच्छस | ९ शांडिल्य |
| २ भारद्वाज | ६ उपमन्यु | १० मोद्गलस |
| ३ पाराशर | ७ गौतम | ११ चांद्रास |
| ४ कौशिक | ८ कश्यप | १२ लवणास |

१३ लवणास १४ वाजोद्रसन १५ कपिंजलस १६ हारित और १७ गिरोरांदिया ।

इन के भेद ये हैं :—

| | |
|---|---|
| १ काची श्रीमाली | ४ अहमदाबादी श्रीमाली |
| २ काठियावाड़ी श्रीमाली | ५ सूरती श्रीमाली |
| ३ गुजराती श्रीमाली | ६ खम्भाती श्रीमाली |

ये सब मुख्य मुख्य प्रदेश व नामी ज़िलों के नामों से ये भेद पड़े हैं अर्थात् श्रीमाल क्षेत्र से जो जाकर काठियावाड़ में बसे वे काठियावाड़ी कहाये और इस ही तरह सब जान लेना ।

इस जाति में बड़े बड़े नामी विद्वान व उच्च पदस्थ हुये हैं जैसे मिस्टर दलपतराम दाया भाई C. I. E. सी. आई. ई. भी अहमदाबादी श्रीमाली थे । महाकवि माघ भी श्रीमाली ब्राह्मण थे ।

**३१७ श्रीगौड़** :—यह गौड़ ब्राह्मण सम्प्रदाय का एक भेद है विशेष रूप से ये लोग मालवा तथा गुजरात प्रदेश में पाये जाते हैं इन का आदि निवासस्थान काश्मीर राज्यस्थ श्रीहट्ट नगर था परन्तु वहां दुष्काल पड़ने से ये लोग मालवा प्रदेश में आगये तहां ये गौड़ ब्राह्मण श्रीगौड़ कहाये अर्थात् लक्ष्मीपति गौड़ कहाये वा यों कहिये कि गौड़ ब्राह्मणों में जो विशेष धनाढ्य हुये वे श्रीगौड़ कहाये ।

इन श्रीगौड़ों के विषय में ऐसा लेख मिला है कि :—

खे नन्दे रुद्रवर्षे सहसित शुभगे वाणतिथ्यांच वारे
देवेज्ये राजराजो विजयमनुमहा सिंहनामा सुराज्यः।।
श्रीगौड़ ज्ञातिशुद्धिं कुलगुण गणना चार शुद्धिंच।
पद्मदेशे स्वेगुर्जरेयप्रकटित मकरोत्स्थापयित्वा सुवृत्तिम्।।

अर्थ :- विक्रम सम्वत ११६० के मार्गशीर्ष शुक्ल ५ गुरुवार के दिन बड़ा प्रतापी विजयसिंह राजा अपने गुजरात देश में दो सौ ब्राह्मणों को अच्छे २ गांव जागीर में देकर उन की उत्तम जीविका स्थापन कर के श्रीगौड़ ब्राह्मणों की ज्ञाति उन के शुद्ध आचार विचार को देखकर गुर्जर सम्प्रदाय में स्थापित किये अतः ये गुर्जर सम्प्रदायी कहाते हैं। इन के दो सम्प्रदाय हैं नूतनक्रम व जीर्णक्रम।

## गोत्र

| | | | |
|---|---|---|---|
| १ कुशकस् | ५ कृष्णात्रे | ९ अत्रि | १३ अत्रि |
| २ वत्सस् | ६ चंद्रात्रेय | १० मौद्गल | १४ वशिष्ठ |
| ३ कौशिक | ७ भरद्वाज | ११ यास्क | १५ पाराशर |
| ४ गर्ग | ८ कात्यायन | १२ शांडिल्य | १६ वामकक्ष |

३१८ सूर्यद्विज :—यह एक ब्राह्मण जाति है इन लोगों की लोक संख्या विशेष रूप से शाहजहांनाबाद, अनूपशहर, दिल्ली तथा भरतपुर आदि ज़िलों में है लोग इस जाति को प्रायः सूर्य्यध्वज कायस्थ समझ कर इन के ब्राह्मणत्व पर शंका करते हैं परन्तु यह उन के निर्मूल विचार व अंधपरंपरा का ला दृश्य प्रतीति होता है क्योंकि मुंशी किशोरीलाल जी रईस व मुंसिफ दरजे दोयम अपने जाति निबंध में ऐसा लिखते हैं कि :- " ये भी ब्राह्मण हैं इन के बारे में सिंहासन

पत्तीसी में भी लेख मिलता है इस ब्राह्मण वंश में प्राणवल्लभ नामक प्रसिद्ध सूर्य्य द्विज ब्राह्मण शाहजहांबाद में हुये हैं आदि आदि "।

मिस्टर योगेन्द्रनाथ जी M. A. D. L. एम. ए. डी. एल. अपने जाति निबंध के पृष्ठ १६० में लिखते हैं कि :-

"In the Bijnor District the Suryadhvajas claim to be Brahmans."

अर्थात् बिजनौर के ज़िले में सूर्यध्वज लोग अपने तईं ब्राह्मण होने का दावा करते हैं।

Mr. C. S. W. Crook B. A. Late Collector of Fyzabad.

मिस्टर सी. एस. विलियम क्रूक बी. ए भूतपूर्व फैजाबाद के कलेक्टर साहब अपने ग्रन्थ के पृष्ठ १६१ में लिखते हैं कि :-

They profess excessive purity and call themselves Sakadwipi or Scythian Brahmans.

ये लोग बहुत ही अधिक पवित्रता रखते हैं और अपने को शाकद्वीपी या सिदियन ब्राह्मण बतलाते हैं। परन्तु यह हमारा (ग्रन्थकर्ता का) मत नहीं है।

Rajputana Census Report Page 248.

राजपूताना प्रदेश की मनुष्य गणना रिपोर्ट पृष्ठ २४८ में ऐसा लिखा है कि,

Alwar and Bharatpore the Suraj Dhuj, who are a Kayastha Sect tried to return themselves

as Brahmans, and local feeling in Bharatpore is said to be in favor of the recognition of them as Brahman.

भा० अलवर और भरथपुर में सूरजधुज जोकि कायस्थों का एक भेद है वे ब्राह्मण होने का उद्योग कर रहे हैं और भरतपुर में सर्वसाधारण की सम्मति इन के ब्राह्मणत्व के अनुकूल है।

पाठक! मनुष्य गणना सुपरिन्टेन्डेन्ट व उर्दू अंग्रेज़ी के जानने वाले क्लर्क लोग तथा अन्य यूरोपियन अफ़सर लोग संस्कृत से अनभिज्ञ हैं वे सूर्य्यध्वज, सूर्य्यधुज, सूर्य्यध्वजा, और सूर्य्यद्विज इन चारों शब्दों में यथार्थ भेद न जानकर इन्हीं चारों शब्दों में से किसी ने कुछ लिखा है तो किसी ने कुछ लिखा है और इन को शुद्ध अशुद्ध जैसा समझ में आया लिखकर विवर्ण लिखना आरम्भ कर दिया है और "सब धान बाईस पंसेरी" के सदृश तौलकर कायस्थ व ब्राह्मणों में कुछ भी भेद न जानकर सूर्य्यद्विजों को भी सूर्य्यध्वज ही मानलिया और तद्वत उन्हें कायस्थ ही समझने समझाने लगे। परन्तु केवल यह दोष इन्हीं लेखकों का नहीं है किन्तु इस सूर्य्यद्विज जाति का भी है अर्थात् बादशाही ज़माने से इन्होंने संस्कृत विद्या को तिलाञ्जलि देकर फ़ारसी अरबी पढ़ना आरम्भ किया और इन में से बहुतेरे लोग अपने को सूर्य्यध्वज कायस्थ ही समझने लगे और इस तरह का ग़लत ख़याल अन्य समुदाय में भी फैलगया तद्वत ही उपरोक्त सुपरिन्टेन्डैन्ट साहब इन्हें कायस्थों का एक भेद कहते हैं परन्तु इन्हीं के लेखानुसार जब भरथपुर के सर्व साधारण समुदाय की सम्मति इन के ब्राह्मणत्व के अनुकूल है तो ये ब्राह्मण ही हैं ऐसा प्रमाणित होता है।

हमारा भी भरथपुर व अलवर आदि स्थानों में उपदेशार्थ व जाति अन्वेषणार्थ जाना हुआ था तहां प्रायः लोग इन्हें पंडित जी कहकर के

सम्बोधन करते थे वहां हमारे मण्डल की धर्मव्यवस्था सभा के सभ्यों में से भी हमें इन के ब्राह्मणत्व की पोषक सम्मतियें मिलीं अतः सूर्य ध्वज तो कायस्थ हैं और सूर्यद्विज ब्राह्मण हैं ऐसा हमें निश्चय हुआ है।

पं० हरिकृष्ण जी वंकटराम शास्त्री ने भी अपने ग्रन्थ के पृष्ठ ५२६ में लिखा है " सूर्य्यध्वजाश्च तच्छिष्या गुरुत्वे ते प्रकल्पिता " अर्थात् सौरभ ऋषि चित्र गुप्त के पुत्र को सूर्य्य मंडल में ले गया तिस से वे सूर्य्यद्विज ब्राह्मण कहाये।

इन का यह कहना कि " सूर्य्य के वीर्य्य से निक्षुभा में उत्पत्ति होने से सूर्य्य द्विज कहाये " उचित नहीं है क्योंकि सूर्य्य कोई आकार वाला तथा मनुष्यों की तरह से इन्द्रिय सम्भोग करने वाला नहीं है कि उस के वीर्य्य से सूर्य्य द्विज उत्पन्न हो जांय। हां इन की सूर्य्यद्विज संज्ञा होने का यह भी कारण विद्वानों ने बतलाया है कि जब भारत वर्ष में अविद्या फैली और परमात्मा के स्थान में धात्वादि की मूर्तियों के मंदिर बनने लगे उस समय के ब्राह्मण दाम लेकर पूजादि करने को एक पाप मयी शूद्रत्व बोधक कर्म समझते थे और ऐसे ही धर्म्म शास्त्र में लेख भी मिलते हैं अतः सूर्य्य के मंदिर की उपासना करना जिन ब्राह्मणों ने स्वीकार किया वे सूर्य्य द्विज कहाये ऐसा सिद्धान्त निकलता है।

जैसा कि उपरोक्त कलेक्टर साहब ने लिखा है यह बिलकुल सच है कि ये लोग बड़ी ही पवित्रता से रहते हैं हमें पता लगा है कि इन के यहां का नाई, ही अलग होता है उस ही से ये लोग हजामत बन वाते हैं और वह किसी दूसरी ऊंच व नीच किसी जाति के यहां हजा· मत बनाने नहीं जाता है ये लोग हलवाई के यहां की मिठाई पूरी व अन्य अन्न की कोई वस्तु ग्रहण नहीं करते हैं तथा मांस शराब आदि

से बिलकुल परहेज रखते हैं कांदा लहसुन आदि आदि शास्त्रवर्जित शाकादि भी नहीं ग्रहण करते हैं ये लोग बिना स्नान किये पीतल के बर्तनों को नहीं छूते हैं प्रायः ये लोग तांबे के पात्र विशेष रूप से काम में लेते हैं। इन का मुख्य गोत्र म्हेर है और अल्ह मिश्र, लदी, सोहल लूई आदि आदि हैं दोनों समय स्नान कर के सूती कपड़े खोल कर भोजन करते हैं कच्ची पक्की तथा सखरे निखरे का बहुत विचार करते हैं शास्त्राचारानुसार इन्हें रविवार के दिन व्रत करना चाहिये उस दिन नमक न खाकर एक समय भोजन द्वारा व्रतपालन करना चाहिये और उपस्थान के चारों मंत्र उद्वयंतमसस्‌ आदि आदि द्वारा सूर्य्य को खड़े होकर नित्य जल देना चाहिये इन के विषय बहुत कुछ लिखना है वह फिर कभी किसी अन्य भाग में लिखेंगे,

यह लोग अपने को शाकद्वीपी व मगब्राह्मण बतलाते हैं और उस की पुष्टि में भविष्यत पुराण का हवाला देते हैं परन्तु हम इन्हें शाकद्वीपी मानने को असमर्थ हैं क्योंकि भविष्यत पुराण थोड़े समय का ग्रन्थ है जिस में अनेकों विषयों की गाथायें व असम्बद्ध प्रलाप तथा मिथ्या स्वात्मप्रशंसा युक्त आख्यायिकायें भरी हैं जिससे अनुमान होता है कि अनेकों विषय लोगों ने अपने २ पक्ष में मिला दिये हैं। इस ही विषय को हमने अजमेर कालेजों के कतिपय शास्त्रियों से भी परामर्श कर लिया है।

हां हमें ऐसा निश्चय होता है कि सूर्य्य चन्द्रादि नव ग्रहों के मंदिरों की पूजादि उच्चतम कोटि के ब्राह्मण स्वीकार नहीं करते हैं और जैसे शनिश्चर के मंदिर की पूजा प्रायः डाकोत करते हैं और वे शनिश्चरिया व कहीं थावरिया कहाते हैं वैसे ही सूर्य्य की प्रतिमा व मंदिरों की सेवा करने वाले " सूर्य्य द्विज " कहाते हैं अतएव जिस ब्राह्मण वंश ने सूर्य्य की पूजा स्वीकार कियी थी वे सूर्य्य द्विज कहाये । इस

जाति की लोक संख्या अलवर, भरतपुर, अनूपशहर बदायूं आदि २ शहरों में विशेष रूप से है।

हमारी जाति यात्रा में लोगों ने इन का असली नाम सूर्य्यध्वज तथा इन का वर्ण कायस्थ बतलाया पर यह विवेक रहितता का कथन हमें ग्राह्य नहीं क्योंकि सूर्य्यध्वज और सूर्य्यद्विज ये दो जातियें हैं इन दोनों को एक ही मान लेना नितान्त भूल है, अर्थात् सूर्यध्वज तो कायस्थ हैं पर सूर्य्यद्विज ब्राह्मण वर्ण में हैं ऐसा हमें निश्चय हुवा है और ऐसा ही कतिपय विद्वानों ने भी लिखा है यथाः—

भक्तमाल नामक प्रसिद्ध ग्रन्थ में श्रीसूरदास मदन मोहन जी की जाति सूर्य्यद्विज ब्राह्मण लिखी हैं।

इस ही तरह वल्लभकुल सम्प्रदाय की २५२ वार्ता नामक ग्रन्थ में श्रीमुरारीदास जी और श्रीनारायण दास जी की जातियें सूर्य्यद्विज ब्राह्मण लिखी हैं।

वृन्दावन में मोहनी जी की टट्टी वालों की सम्प्रादाय के ग्रन्थ हरिदास वंशानुचरित्र के पृष्ठ ३८ में विहारन दास जी महाराज को सूर्य्यद्विज ब्राह्मण लिखा हैं।

अतएव ब्राह्मणों की एक संज्ञा सूर्य्यद्विज भी होती हैं ऐसा मान-लेना युक्ति संगत है।

**३११—सोमपुरा—** :—यह ब्राह्मण जाति है गुजरात प्रदेश में ये लोग विशेष हैं सोमपुर से निकास होने से सोमपुरा कहाये यथाः—

सोमेन च कृतो यज्ञः स्वपापस्य विशुद्धये ।
तत्र यज्ञे वृता येच ब्राह्मणाः परमोज्वला ॥ २४ ॥

तेभ्यः सोमपुरे सर्वं निवासार्थं ददौ मुदा ।
दक्षिणां स्वर्णरत्नाढ्यां दानानि विविधानिच ॥२५॥

सोमेन सोमपुर्यां वे स्थापितो ये द्विजोत्तमाः ।
ते वै सोमपुरा विप्रा विज्ञेया नात्र संशयः ॥ २६ ॥

ब्रा० मा० द० ५५६

भा० सौराष्ट्र देश में प्रभास पाटण सोमपुरी में सोमेश्वर महादेव के समीप चन्द्रमा ने अपना क्षय दोष दूर करनार्थ यज्ञ किया और यज्ञ में उत्तम तेजस्वी ब्राह्मणों का वरण किया फिर उन सम्पूर्ण ब्राह्मणों को सोमपुरी रहने के लिये दान दिया और स्वर्णरत्न की दक्षिणा दिया ऐसे सोमपुरी के रहने वाले "सोमपुरे ब्राह्मण" कहाये।

**३२० हरसोले** :—यह एक ब्राह्मण जाति है गुजरात प्रदेश में इस जाति की लोक संख्या साधारण सी है ये लोग गुजराती ब्राह्मणों में हैं यथाः—

गुर्जरे विषये चास्ति हरिश्चन्द पुरं महत् ।
तत्रस्थेन नृपेणैवकृतोयज्ञः सदक्षिणः ॥२०॥

ऋत्विजस्तत्रये जातास्तेभ्यो ग्रामं ददौ नृपः ।
सेवार्थं वणिजो वैश्यान् स्थापयामास प्रेमतः ॥२१॥

ग्रामनाम्नाच विख्याता ह्यभवन् वणिजस्तथा ।
ब्राह्मणा ग्राम नाम्नाच वेद शास्त्र विशारदाः ॥२२॥

स्कान्दे गयामहात्म्ये

अर्थः—गुजरात देश में हरिश्चन्द्रपुर नामक एक ग्राम है उस का बर्तमान प्रचलित नाम हरसोल है जो अहमदाबाद से ईशान दशा में २२ कोस की दूरी पर बसा है उस नगर के रहनेवाले राजाने यज्ञ किया तब यज्ञ में जो ऋत्विग हुये उन को राजा ने वह हरसोल दान किया और इन ब्राह्मणों की सेवा के लिये वैश्य (बनिये) स्थापित किये तब से वे ब्राह्मण हरसोले ब्राह्मण, व बनिये हरसोले बनिये नाम से प्रसिद्ध हुये । इन के गोत्रों के विषय में प्रमाण मिलता है कि:—

षड्गोत्राणि ब्राह्मणानां मुद्गलः कौशिकस्तथा ।
भरद्वाजश्च शांडिल्यः पाराशरस्तथा परः ॥

अर्थात् इन ब्राह्मणों के गोत्र ६ हैं, १ मुद्गल २ कौशिक, ३ भरद्वाज ४ शांडिल्य और पाराशर तथा एक और है ।

**३२१ हरियाणो गौड़** :—यह एक गौड़ ब्राह्मणों की जाति है हांसी हिसार भिवानी के आस पास का देश हरियाना कहाता है गौड़ ब्राह्मण जो हरियाना में जाकर बसे वे हरियाना गौड़ कहाये, इन लोगों का मुख्यधन्दा खेती करना है एक विद्वान की यह भी सम्मति है कि इनका शुद्ध नाम हलयान गौड़ था अर्थात् हल जिस से खेती होती है उस काष्ट यंत्र द्वारा निर्वाह करनेवाले गौड़ हलयाना गौड़ कहाते कहाते हरियाना गौड़ कहाने लग गये इन की विद्या स्थिति सामान्यसी है अर्थात् विद्या का अभाव सा है; इन के विषय में ऐसा भी विवर्ण मिलता है कि:—

चतुर्थं तुसुतं तस्य हारीताय ददौ ततः ।
गृहीत्वा गतवान सोऽपि देशे हर्याणके शुभे ॥२६॥

हारीतेश्वर सान्निध्ये हरितस्याश्रमे शुभे ।
हर्याणेशी यत्रदेवी वर्तते जगदाम्बिका ॥२७॥

ब्रा० मा० पृ० ५८३

अर्थात् ब्रह्मा ने चौथापुत्र हारीत ऋषि को दिया तब हारीत ऋषि पुत्र को लेकर हरयाणा देश में गये जहां हारीतेश्वर महादेव तथा हरियाणेशी देवी है तथा जहां हारीत ऋषि का आश्रम है तहां उस पुत्र का वंश हरियाना ब्राह्मण कहाये । इन लोगों की दशा हारीत

कृषि के समय में उत्तम थी परन्तु आजकल नौकरी भी विशेषतया करते हैं, साधारण जन सम्मति में ये लोग गौड़ ब्राह्मण हैं तो सही परन्तु इन में कर्म विवेक का अभाव होने से लोग इन्हें बागड़े ब्राह्मणों के सदृश मानते हैं। क्योंकि इन लोगों में विशेष रूप से विद्या का अभाव है अतएव मुख्यतया ये कृषी करके व नौकरी करके ही निर्वाह करते हैं मांस मद्यादि से परहेज करते हैं और वैष्णव सम्प्रदायी हैं।

**२२२ हले कर्णाटक** :—यह कर्णाटक ब्राह्मणों की जाति का एक भेद है ये लोग माइसोर राज्य में बहुत हैं परन्तु वहां इन का जाति पद बहुत ही छोटा है। वहां इन के ब्राह्मणत्व में भी सन्देह किया जाता है इन का मुख्य धन्दा कृषी तथा सरकारी नौकरियें हैं, लोग इन को घृणा की दृष्टि से देखते हुये इन को वहां "मराका" भी कहते हैं जिस का अर्थ मारनेवाले का है।

*Mysore Gazetteer Vol. 1 Page 341*

माईसोर गजेटियर जिल्द पहिली के पृष्ठ ३४१ में इन के विषय में ऐसा लिखा है कि "ये लोग ब्राह्मण होने का दावा करते हैं पर यथार्थ में ये ब्राह्मण नहीं माने जाते हैं ये हिन्दु सालिस पूजते हैं और अपने ललाट पर त्रिशूल धारण करते हैं माइसोर के दक्षिणी भागों में ये विशेष रूप से हैं बहुत से हसन जिले में भी हैं ये हाले कन्नाडिग तथा हाले कर्णाटक भी कहाते हैं और मरका इन का घृणित नाम भी

है ये शंकराचार्य्य के किसी शिष्य की सन्तान हैं" इन के बहिष्कृतत्व विषयक ऐसा लेख मिलता है कि "एक दिवस शंकराचार्य्य जी महाराज ने अपने शिष्यों की परीक्षा करने के लिये उन्हीं के सन्मुख ताड़ी पी लियी इस को देख कर शिष्यों ने सोचा कि जब गुरु जी ने ताड़ी पीयी तो हमारे पीने में भी कोई पाप नहीं है अतः वे भी निधड़क रूप से ताड़ी पीने लगे, किञ्चित काल के पश्चात् गुरु जी अपने शिष्यों को लेकर भिक्षार्थ निकले मार्ग में कसाई की दुकान पड़ी उस से भिक्षा मांगी पर उस के पास कुछ नहीं था सो उस ने भिक्षा में मांस दे दिया सो गुरु जी व शिष्य जी दोनों ने मांस खाया। धर्म-शास्त्रानुसार मांस व शराब के खाने पीने वाले रक्त तप्तलोह से शुद्ध हो सक्ते हैं तदनुसार शंकराचार्य्य जी एक लुहार की दुकान पर गये और उस से आरण का निकला लाल तप्त गर्म लोहा मांगा जिस को वे निगल गये और पवित्र हो गये परन्तु यहां शिष्य जी अपने गुरु की देखा देखी लाल गर्म लोहा नहीं निगल सके तब लज्जित होकर अभक्ष्यभक्षण की क्षमा चाही परन्तु शंकराचार्य्य जी ने अप्रसन्न होकर उन्हें पट ब्राह्मणों की पंक्ति से बाहिर होने का श्राप दिया।

३२३ हसानिग ब्राह्मण :—यह माइसोर प्रान्त की एक ब्राह्मण जाति है, माइसोर राज्य में हसन एक सूबा है वहां का निवास होने के कारण ये लोग हसानिग ब्राह्मण कहाते हैं। इन की जातिस्थिती व जाति पद वहां सामान्यतया साधारण है।

**३२४ हूबू ब्राह्मण :**—यह कनारी ब्राह्मणों की एक जाति है उत्तरी कनारे की ओर इन की लोक संख्या विशेष है ये लोग छोटी श्रेणी के ब्राह्मण कहाते हैं, इन का मुख्य धन्दा ज्योतिष विद्या तथा मन्दिरों का पुजारीपन है ॥ इति शुभम् ॥
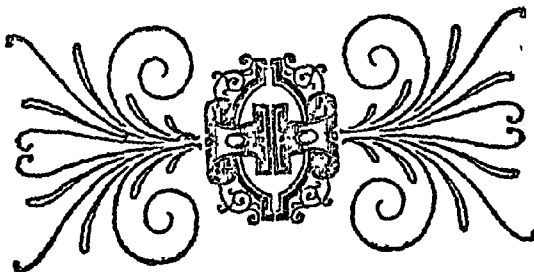
"यू० पी० आर्ट प्रिंटिंग वर्क्स" कासगंज में
मास्टर रघुनन्दनलाल के प्रबंध से छप कर
चैत्र शु० २ सं० वि० १९७२ को समाप्त हुआ।

# मण्डलस्थ सभासदों की
# नामावलि

( धर्म्मव्यवस्था सभा )

१ श्रीमान् पं० शिवदत्त जी शास्त्री महामहोपाध्याय व हेड संस्कृत प्रोफेसर ओरियान्टल कालेज लाहोर .... .... प्रधान

२ श्रीमान् पं० तुलाकीराम जी शास्त्री पंजाब भूषण, विद्यासागर, मेम्बर रायल एशियाटिक सोसाइटी और शास्त्री मेयोकालेज, अजमेर, उपप्रधान

३ जाति अन्वेषणकर्ता श्रोत्रिय पं० छोटेलाल शर्म्मा आनरेरी सनातनधर्मोपदेशक, मेम्बर अन्तरंग सभा व सिलेक्ट कमेटी गौड़ महासभा, ( फुलेरा ) .... महामंत्री

४ श्रीमान् विद्वद्वर्य्य दाधिमथ पं० गोवर्धन शर्म्मा नांवा मंत्री

| | | |
|---|---|---|
| ५ | श्रीमान् पूज्यपाद ब्रह्मचारी कृष्णानन्द जी पुष्कर | समासद |
| ६ ,, | पं० कल्याणदत्त जी ज्योतिषी नांवा | ,, |
| ७ ,, | ,, लक्ष्मीनरायण जी वैयाकरणी ,, | ,, |
| ८ ,, | ,, गणेशदत्त जी पौराणिक ,, | ,, |
| ९ ,, | ,, नरायनदास जी ज्योतिषी अधिष्ठाता व रचयिता सम्राट पंचांग अजमेर | ,, |
| १० ,, | स्वामी भास्करानन्द जी सरस्वती नरायना | ,, |
| ११ ,, | पं० शिवचन्द्र जी वैय्याकरणी सांभर | ,, |
| १२ ,, | ,, धन्नालाल जी मिश्र B. A. L. L. B. वकील हाईकोर्ट आगरा | ,, |
| १३ ,, | राजमान्य पं० वशिष्ठ जी धर्मशास्त्री महाराजाश्रित कृष्णगढ़ | ,, |
| १४ ,, | महात्मा वजनदास जी महाराज नरायना | ,, |
| १५ ,, | पं० बंसीधर जी शर्मा वैद्य सेवा ,, | ,, |
| १६ | श्रीमान् पं० श्याम लाल जी भागवती व वेदपाठी नारेड़ा (चूरू) | ,, |
| १७ ,, | ,, भागीरथ जी स्वामी वैद्यआयुर्वेद विद्यापीठ तथा आयुर्वेद महामंडल द्वारा सन्मान पत्र प्राप्त व उपमंत्री सनातन धर्म महासभा फर्रुखाबाद | ,, |
| १८ ,, | पुजारी मुकुन्द राम जी गौतम वंशोद्धारक फर्रुखाबाद | ,, |
| १९ ,, | श्रीयुत पं० सोमेश्वर जी गुजराती कुचामन | ,, |
| २० ,, | पं० आनन्दीलाल जी मिश्र भागवती साखून (जयपुर) | ,, |

२१ श्रीमान् पं० तेजोनरायन जी शास्त्री फर्रुखाबाद सभासद्

२२ काव्यरत्न श्रीयुत् पं० भरतमिश्र जी शर्म्मा उपदेशक
भारत धर्म महामण्डल" हेड पंडित राजपूत स्कूल,
तथा सरस्वती पाठशाला "छपरा" ,,

२३ श्री० पं० वनमाली जी शर्मा वेद व्याख्याता संस्कृत पाठशाला
कंस किला मथुरा ,,

२३-१ ,, जयदेवप्रसाद जी वैय्याकरणी सनाढ्य वंशमणि
अध्यापक बलभद्र संस्कृत पाठशाला बल्देव जि० मथुरा ,,

२४ प्रथमा, मध्यमा, साहित्याध्यापक श्रीयुत् पं० मुकुन्ददेव
शर्मा जी गवर्नमेन्ट हाई स्कूल मथुरा ,,

२५ न्यायशास्त्राचार्य श्रीयुत् पं० मठस्थ गणेशरामचंद्र शर्मा
डा० खानापुर जि० बेलगांव ,,

२६ ज्योतिर्विद् श्रीयुत् पं० अचलेश्वर जी कुचामन ब्रह्मपुरी ,,

२७ व्याकरण काव्य न्यायादि ज्ञाता श्रीयुत् पं० ब्रह्मदेव जी
शर्मा मिश्र मैनेजर "ब्रह्मप्रेस" इटावा ,,

२६ श्रीयुत् पं० शंकरदयालु जी शर्मा ब्रह्मभट्ट संस्कृत
पं० रघुवरदयालु शर्मा वैद्यशास्त्री नौघरा कानपुर ,,

२८ काशी साहित्याचार्य विद्यारत्न आयुर्वेद मार्तण्ड श्रीयुत्
पाठशाला नौघरा कानपुर ,,

३० मिश्रोपनामक श्रीयुत् पं० बद्रीप्रसाद जी ग्रन्थकर्ता
"ब्राह्मणोत्पत्ति भास्कर" तथा "रामाश्वमेधभास्कर"
सारस्वावारीण पुस्तकालय बनारस सिटी ,,

३१ श्रीयुत् पं० काशीनाथजी शर्मा मुहल्ला सदवाड़ा फर्रुखाबाद ,,

३२ श्रीयुत पं० बद्रीनाथ जी शास्त्री बी. ए. जयपुर सभासद्

३३ श्रीमान् पं० गंगाप्रसाद जी शास्त्री राजकीय संस्कृत पाठशालाध्यापक भरतपुर — सभासद्

३४ „ „ मधुसूदन जी भट्ट सनाढ्य वंशभूषण व पूर्व मंत्री सनातनधर्म सभा भरतपुर — „

३५ अधिकारी विद्यारत्न श्रीयुत् पं० जगन्नाथ दास जी जनरल Secretary आल इंडिया वैष्णव महासभा तथा सम्पादक वैदिक सर्वस्व भरतपुर — „

३६ परम माननीय पं० बाबूराम जी शुक्ल हैड पंडित एडेड स्कूल कन्नौज — „

३७ पं० गिरधर शर्म्मा नवरत्न सरस्वती भवन झालरापाटन

३८ पं० दानीराम जी शर्म्मा बल्देव मथुरा — „

## ( हिन्दू सार्व भौम प्रबंधकर्तृ सभा )

३९ श्रीमान् बाबू माताप्रसाद जी वर्म्मा आनरेरी मजिस्ट्रेट ईश्वरगंगी बनारस — सभासद्

४० श्रीमान् पं० फतेसिंहजी सूर्य्यद्विज प्राइवेट सेक्रेटरी दरबार भरतपुर — „

४१ श्री० विद्वद्वर्य्य बाबू हरिप्रसाद जी वैष्णव रईस चुनार जि० मिर्जापुर — „

४२ श्री० पं० शिवनारायण जी झा पल्टन नं० ६ झांसी — „

४३ श्री० पं० जैसीराम जी नम्बरदार, आलमपुर जि० अलीगढ़ — „

४४ „ „ दुर्गाप्रसाद जी शर्म्मा भांकरी जि० अलीगढ़ — „

४५ „ „ नन्दलाल जी गांव भांकरी जि० अलीगढ़ — „

४६ „ „ मधुसूदनलाल जी वैद्य बल्देव० मथुरा — „

४७ श्रीमान पं० धीरजलाल जी शर्म्मा मु० नगलामहासिंह जि. आगरा सभासद्
४८ ,, ,, घनश्यामलाल जी शर्म्मा बल्देव० मथुरा ,,
४९ ,, ,, इन्द्रमनमुखिया डा० बल्देव जि० मथुरा ,,
५० ,, ,, जगन्नाथ प्रसाद जी पैठगांव जि० अलीगढ ,,
५१ ,, ,, श्यामसुन्दरजी शारदाभवन लखनऊ ,,
५२ ,, ,, जे० पी० चौधरी काव्यतीर्थ हेड पंडित जर्मन मिशन स्कूल रांची ,,
५३ ,, बाबू ज्वालाप्रसाद जी क्लर्क पोस्टमास्टर जनरल्स आफिस नागपुर ,,
५४ ,, बाबू रामप्रसाद जी इन्स्पेक्टर डिस्ट्रिक्ट स्कूल रांची ,,
५५ ,, बाबू ढोराराम जी चूड़ामणि महतो मु० नखास पिंड जि० पटना ,,
५६ श्रीमान् बाबूलालचन्द जी प्रधान शि. जा. स. जयपुर ,,
५७ श्रीमान् मास्टर आनन्दीलाल जी जयपुर ,,
५८ ,, डाक्टर किशोरीलाल जी भरथपुर ,,
५९ ,, बाबू भूराराम जी महतो इन्स्पेक्टर रांची ,,
६० ,, बाबू लछमीनरायन जी उस्ता मेनेजर शि. जा. सभा जयपुर ,,
६१ ,, बाबू गोपीचन्द जी उस्ता जयपुर ,,
६२ ,, बाबू शिवप्रतापलाल जी उपमंत्री कमलापुरी वैश्य महा सभा दहियांव छपरा ,,
६३ ,, बाबूरामचन्द्र जी ठेकेदार भगाना नीमच ,,
६४ ,, बाबू रघुबीरप्रसाद जी मंत्री कमलापुरी महासभा दहिमांव छपरा ,,

६५ श्री० बाबू रामफलजी वकील भरथपुर ,,

६६ ,, बुद्धीलाल गोमतीप्रसाद ,, ,,

६७ ,, चैनसुख जी नाजरमल ,, ,,

६८ ,, ,, बाबू नाथूलाल जी दिवान जयपुर ,,

# सहायक सूची

श्रीयुत चौबे बैजनाथ जी रईस इटावा

श्रीयुत बाबू सुखोलाल वर्म्मा प्लीडर इटावा

श्रीयुत पं० शाह दुर्गाप्रसाद जी शर्म्मा पल्लीवाल गौड़ रईस सेमरा जि० आगरा

श्री० पं० खेतपाल जी शर्म्मा रईस मथुरा

श्री० डाक्टर ओंकारसिंह जी वर्म्मा भरतपुर

मिस्टर जी० वी० नायक एन्ड को मुम्बई

ठाकुर दिलीपसिंह जी जिमदार कौड़ियागंज जि० अलीगढ़

नोट :—जाति अन्वेषण प्रथम भाग में जो मंडल सहायक व सभासदों की नामावलि छपी है वह Cancel रद्द की जाकर सर्व साधारण की विज्ञप्ति के लिये उपरोक्त शुद्ध सूची पुनः मुद्रित करा दियी है।

निवेदक

श्रोत्रिय छोटेलाल शर्म्मा
महामंत्री हिं० ध० व० व्यवस्था मंडल

# उपयोगी निवेदन

पाठकों को सूचित किया जाता है कि वर्ण व्यवस्था कमीशन के २५१ प्रश्न जिन का उत्तर देना सम्पूर्ण हिन्दू जातियों का मुख्य काम रक्खा गया है जिस की चरचा प्रत्येक जाति के साथ हम अपने जाति अन्वेषण प्रथम भाग नामक ग्रन्थ में भी कर आये हैं और जो प्रश्न Reserve गुप्त रक्खे गये थे उन्हीं प्रश्नों को सर्व साधारण के लाभ के लिये उदारता पूर्वक छपवा देने का निश्चय हो गया है अतएव यह प्रश्नावलि शीघ्र ही मुद्रित करायी जावेगी जिस से प्रत्येक हिन्दू जातियें जिन्हें वर्म्मा शर्म्मा व गुप्त बनने की धुन सवार है उन्हें बहुत कुछ लाभ होगा और वे जातियें उपरोक्त प्रश्नों के उत्तर देकर मण्डल से अपनी वर्ण व्यवस्था ले सकेंगी।

लोक हितचिन्तक

श्रोत्रिय छोटेलाल शर्म्मा

# विचित्र वार्ता

## पत्रों की धूम

विदित हो कि हमारे मंडल कार्य्यालय में
प्रायः पत्रों की धूम रहा करती है पत्र प्रेरक महा-
शयगण एक पैसे का कार्ड मात्र लिख कर हम
से पूछा करते हैं कि " हमें आप ने किस वर्ण में
रक्खा है ? हमारी जाति किस वर्ण में है ? कृपया
हमारी जाति का विवर्ण लिख भेजियेगा ? हमारा
निकास व गोत्र प्रवरादि का विवर्ण क्या व कैसा
है ? आदि २ परन्तु ऐसे स्थलों पर वक्तव्य यह
है कि उत्तर के लिये पत्र के साथ )॥ का टिकट
आना चाहिये अन्यथा उत्तर नहीं दिया जायगा।

प्रायः ज्ञाति महानुभाव गण हम से मिलने
को आया करते हैं और अपनी जाति विषय में
सैकड़ों निरर्थक वार्तायें करके हमारा समय नष्ट
किया करते हैं अतएव ऐसी दशा में उन्हें ११)
मण्डल की भेट देने होंगे। व्यवस्था लेने वाले
महाशयों को ५१) मण्डळ फीस देनी होगी शेष
जानना हो तो सन्मुख व पत्र द्वारा पूछ सक्ते हैं।

महामंत्री

हमारे प्रिय ग्राहक अनुग्राहक पाठकों को सविनय सूचित किया जाता है कि कार्य्य की शीघ्रता व मांग पर मांग का तक़ाज़ा होने तथा प्रेस से हमारे सैकड़ों कोस की दूरी पर होने के कारण कई ऐसी भद्दी अशुद्धियें इस ग्रन्थ में रह गयीं हैं कि जिन के लिये हमें बड़ा दुःख है यद्यपि वहुत मोटी२ अशुद्धियों का तो शुद्धिपत्र भी नीचे दिया जाता है तथापि कतिपय अशुद्धियें छूट भी गयी हैं परन्तु इस ग्रन्थ के द्वितीय संस्करण में सब ही छोटी मोटी अशुद्धियें ठीक कर दी जावेंगी अतः योग्य पाठकों से आशा की जाती है कि वे शुद्धिपत्र को देखकर व पूर्वापर सम्बन्ध को मिला कर ग्रन्थ को पढ़ेंगे।

महामंत्री

| अशुद्ध | शुद्ध | पृष्ठाङ्क | पंक्ति |
|---|---|---|---|
| डाढ | डाढी | १६ | ७ |
| म | राय | ,, | ,, |
| [illegible] | अधीहि | ३१ | २ |
| [illegible] | ब्राह्मणों | ३४ | ११ |
| क्षोयाः | विज्ञेया | ४३ | ६ |

| अशुद्ध | शुद्ध | पृष्ठ | पंक्ति |
|---|---|---|---|
| Seneral | Several | ३६४ | १५ |
| को | का | ३६५ | ११ |
| नामक | ० | " | २८ |
| येह | यह | ३६८ | १ |
| सागे | सागे याप से | ३६६ | १४ |
| बहोत्तर | बहत्तर | ४१५ | ६ |
| मुकद्दम | मुकद्दमा | ४२४ | १ |
| Reipresentative | Representative | ४२७ | २७ |
| Vebic | Vedic | " | २८ |
| Architeet | Architect | " | २९ |
| विगढ | विगड़ै | ४४६ | २४ |
| Narth | North | ४५३ | १४ |
| Slossary | Glossary | " | १६ |
| म्फिमोनिया | म्फिमोड़िया | " | ६ |
| क्यातवा | क्यातया | ४५५ | १ |
| Inseriptions | Inscriptions | ४५८ | २८ |
| Lisf | List | ४६० | १२ |
| Tittles | Titles | ४६१ | १० |
| सिलेक्टर | सिलेक्ट | ४६३ | ४ |
| यजमानों का | यजमानों का रक्षक | ४६५ | २३ |
| पुरुत्त | पुरुत्व | ४६७ | २३ |
| सम्पूर्णा | सम्पूर्ण | ४७० | २ |
| Desesiptive | Descriptive | ४८० | ७ |
| Avcient | Ancient | ४८४ | ८ |
| सर्व | सर्वे | " | २५ |
| लिखा | लिखी | ४६० | ४ |
| Enterely | Entirely | " | १६ |
| Gazetteir | Gazetteer | ४६३ | १३ |

| अशुद्ध | शुद्ध | पृष्ठ | पंक्ति |
|---|---|---|---|
| गोधिलीय | गोभिलीय | ५०३ | २३ |
| Selected | Select | ५१२ | ७ |
| सेलेक्टेड | सेलेक्ट | ५१२ | १४ |
| Comminion | Commission | ५१३ | १४ |
| मूल | मूर्ख | ५२४ | ५ |
| सरटवा | सरथ्वा | ५३२ | ११ |
| साखम् | सारवम् | ५३२ | १२ |
| साखा | सारवा | ५३२ | ११ |
| Independense | Independence | ५३७ | २८ |
| विभ्रती | विभ्रति | ५४७ | १८ |
| ब्राह्मणानां | ब्राह्मणानां | ५६७ | १५ |
| कौशिकर | कौशिकः | ५६७ | १५ |
| ॥ ४० ॥ | ॥ १४० ॥ | " | १७ |
| ॥ ४१ ॥ | ॥ १४१ ॥ | " | २३ |

## नोटिस

विदित हो कि जाति अन्वेषण प्रथम भाग जिस में २५० जातियों का विवर्ण है और जिस ने हिन्दी साहित्य में बड़ा आदर पाया है तथा बड़े बड़े नामांकित विद्वानों ने अनेकों ही प्रशंसा पत्र हमारे पास भेजे हैं, भारत के प्रसिद्ध प्रसिद्ध सरस्वती आदि आदि समाचार पत्रों ने जिस की बड़ी ही उत्तम समालोचना किया है, ग्रन्थ में देश हितपिता के अनेकों विषयों का वर्णन है मूल्य २) डाक व्यय अलग ।

पता :- महामंत्री हिन्दू धर्मवर्ण व्यवस्था मंडल

फुलेरा ज़िला जयपुर

## व्यवस्था कैसे ! (लेगा ?)

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि जो जातियें मण्डळ से व्यवस्था लेने इच्छुक हों उन्हें मण्डळ की हिन्दू मान्‌ भौम प्र… कर्तृ सभा के सभासद होना चाहिये क्यों कि जाति निर्णय का विषय सब से प्रथम हिन्दू भौम प्रबंध कर्तृ सभा में पेश होगा और तहां पास होने पर फिर वही विषय धर्म व्यवस्था सभा में विचारार्थ प्रविष्ट होगा तहां जो कुछ निश्चय होगा वह ही व्यवस्था समझी जावेगी जिस प्रकार से विलायत में House of Commons & House of Lords नाम्नी पार्लियामेन्ट व लाट सभा से सम्पूर्ण विषय पास होते हैं तिस ही क्रम से मण्डळ में भी जाति निर्णय होगा।

जाति निर्णय के समय जिस जाति का विषय प्रवेश होगा तद्विषयक विरुद्ध व समर्थन पक्ष के सम्पूर्ण प्रमाण मेज़ पर रक्खे हुये होंगे उनका उत्तर देने व अपने पक्ष को समर्थन करने के लिये प्रत्येक हिन्दू जातियों के सज्जनों को मंडळ का सभासद होकर लाभ उठाना चाहिये सभासदी का मुद्रित फार्म मंडळ कार्य्यालय से मुफ्त मिलेगा।

महामंत्री